राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक – पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ६७

कविया करणीदानजी चारण कृत

सूरजप्रकास

भाग ३

प्र का श क

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ६७

कविया करणीदानजी चारण कृत

सूरजप्रकास

भाग ३

प्रकाशक

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत: अखिल भारतीय तथा विशेषत: राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर;
ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी;
निवृत्त सम्मान्य नियामक (ऑनरेरि डायरेक्टर),
भारतीय विद्याभवन, बम्बई; प्रधान सम्पादक,
सिंघी जैन ग्रन्थमाला, इत्यादि

ग्रन्थाङ्क ६७

कविया करणीदानजी चारण कृत

सूरजप्रकास

भाग ३

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कविया करणीदानजी चारण कृत

सूरजप्रकास

भाग ३

सम्पादक

श्री सीताराम लालस

वृहत् राजस्थानी शब्दकोशके कर्ता

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०२० | भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८५ | ख्रिस्ताब्द १९६३

प्रथमावृत्ति १००० | मूल्य- ९.७५

मुद्रक- श्री हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

RAJASTHAN PURATANA GRNATHAMALA

PUBLISHED BY THE GOVERNMENT OF RAJASTHAN

A series devoted to the Publication of Samskrit, Prakrit, Apabhramsa,
Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to
India in general and Rajasthan in particular.

★

GENERAL EDITOR

PADMASHREE JINVIJAYA MUNI, PURATATTVACHARYA

**Honorary Director, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur;
Honorary Member of the German Oriental Society, Germany;
Retired Honorary Director, Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay;
General Editor, Singhi Jain Series etc. etc.**

★ ★

NO. 67

SOORAJPRAKAS

of

Kaviya Karnidanji

★ ★ ★

Published

Under the Orders of the Government of Rajasthan

By

The Hon. Director, Rajasthan Prachya Vidya Pratisthana
(Rajasthan Oriental Research Institute)
JODHPUR (RAJASTHAN)

V. S. 2020] *All Rights Reserved* [*1963 A.D.*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सञ्चालकीय वक्तव्य

कविया करणीदानजी कृत "सूरजप्रकास" नामक महाकाव्य के प्रथम और द्वितीय भाग क्रमशः सन् १९६१ और १९६२ में राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला के ५६वें एवं ५७वें ग्रन्थाङ्कों के रूप में प्रकाशित किए जा चुके हैं। प्रस्तुत प्रकाशन के रूप में "सूरजप्रकास" का तृतीय एवं अन्तिम भाग उत्सुक पाठकों के सम्मुख पहुँच रहा है।

"सूरजप्रकास" के प्रस्तुत भाग में जोधपुर के महाराजा अभयसिंह और सरबुलन्दखां के मध्य हुए अहमदाबाद के युद्ध का विस्तृत और काव्यात्मक वर्णन है। सरबुलन्द ने युद्ध के प्रारम्भ में तीन दिन पर्यंत नगर में रहते हुए महाराजा की सेना पर भयंकर गोलाबारी की। तदुपरान्त चौथे दिन वह मैदान में आ कर महाराजा की सेना से लड़ा और उसी दिन अपनी पराजय जान कर पुनः नगर की ओर भाग गया। महाराजा ने तुरन्त ही सरबुलन्द का दमन कर अपनी विजय-घोषणा की। कवि ने युद्ध में भाग लेने वाले अनेक प्रमुख योद्धाओं का नामोल्लेख करते हुए उनकी वीरता का ओजस्वी वर्णन किया है जिससे काव्य का इतिहास की दृष्टि से भी महत्त्व हो गया है।

"सूरजप्रकास" के निम्नलिखित छन्द से प्रकट होता है कि महाराजा अभयसिंह की अहमदाबाद-विजय संवत् १७८७ की विजयदशमी, शनिवार के दिन हुई थी और युद्ध में प्रत्यक्ष दर्शन एवं अनुभव के आधार पर महाकवि ने एक ही वर्ष में इस महाकाव्य को पूर्ण कर लिया था और ग्रन्थ का परिमाण साढ़े सात हजार अनुष्टुप् श्लोकात्मक है।

सत्रैसै समत सत्यासियै, विजैदसमी सनि जीत।
वदि कातिक गुण वरणियौ, दसमी वार अदीत॥
वणियौ गुण इक वरस विच, उकति अरथ अणपार।
छद अनुस्टुप करिउ जन, सत पंच सात हजार॥
'अभा'तणी सुभ नजर अति, वधि छक सुकवि विधांन।
कुरब दांन लहियौ अधिक, कहियौ करणीदांन॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बृहत् राजस्थानी शब्द-कोष के कर्ता विद्वद्वर्य्य श्री सीतारामजी लाळस ने "सूरजप्रकास" जैसे महाकाव्य का सम्पादन विशेष मनोयोग एवं परिश्रमपूर्वक किया है। विद्वान् सम्पादकजी ने परिशिष्ट और भूमिका में ग्रन्थ सम्बन्धी आवश्यक ज्ञातव्य भी विस्तार से पाठकों की सुविधा के लिए लिखे हैं तदर्थ सम्पादकजी को हम हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

राजस्थानी भाषा के प्रस्तुत महाकाव्य का प्रकाशन भारत सरकार के वैज्ञानिक और सांस्कृतिक मन्त्रालय के आर्थिक सहयोग से आधुनिक भारतीय भाषा विकास योजना के अन्तर्गत हुआ है। तदर्थ हम भारत सरकार के प्रति आभार प्रकट करते हैं।

इस ग्रन्थ में प्रकाशनार्थ कविया करणीदानजी का चित्र महाराजा साहिब जोधपुर के निजी ग्रन्थ-भण्डार पुस्तक-प्रकाश में से ठाकुर श्री जयकृतसिंहजी, एडमिनिस्ट्रेटर के सौजन्य से और महाराजा अभयसिंहजी का चित्र राजस्थानी-शोध-संस्थान जोधपुर, से इसके सञ्चालक श्री नारायणसिंहजी भाटी के सौजन्य से प्राप्त हुआ है जिसके लिए हम दोनों ही महानुभावों को धन्यवाद देते हैं।

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक,
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी,
सं० २०२०, जोधपुर।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषय - सूची

		पृष्ठ
१	भूमिका	
२	जुधरो वरणण	१
३	हाथियांरा वखांण ...	५
४	घोड़ांरा वखांण ...	१०
५	महाराजा अभयसींघजीरै निज सवारीरै घोड़ा सूरज पसावरो वरणण ...	१७
६	तोपांरो वरणण ...	१६
७	जोधारांरो वरणण ...	१६
८	महाराजा अभैसींघजीरो वरणण ...	२२
९	सर बुलंदरा जोधारांरो वरणण ...	२५
१०	जुधप्रिय देवांरो वरणण ...	२६
११	सेनारो वरणण ...	३०
१२	जुधरो आरंभ ...	३५
१३	सर बुलंदरो जोधारांनू वकारणो ...	३६
१४	जुध-वरणण	४१
१५	जुधमें महाराजा अभैसींघजीरो वरणण ...	४४
१६	महाराजा अभैसींघजीरा जुधरो वरणण ...	४६
१७	महार्वासिंह चांपावत ...	४६
१८	कुसळसिंह चांपावत ...	५०
१६	करणसिंह चांपावत ...	५१
२०	जुधमें बरातरी तुलना ...	१०१
२१	फेर दूजो रूपक ...	१०१
२२	जोधा राठौड़	११२
२३	उदावत राठौड ...	११३
२४	जैतावत राठौड़ ...	१२१
२५	करणोत राठौड़ ...	१२३
२६	करमसोत राठौड़ ...	१२८
२७	चौहांन ...	१५३
२८	सोनगरा ...	१५५
२६	कछवाह ...	१५८
३०	देवड़ा ...	१५६
३१	मांगळिया ...	१६०
३२	पुरोहित केसरीसिंह ...	१६१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३३	चारणांरो जुध करणो	...	१६६
३४	ब्रांह्मण	...	१७३
३५	भण्डारी	...	१७४
३६	राजाधिराज बखतसींहजीरा जुधरो वरणण	...	१६६
३७	चांपावत	...	२११
३८	शेखावत	...	२१८
३९	उदावत	...	२२१
४०	करमसिहोत	...	२२३
४१	चोहान	...	२२६
४२	जादव-वंस	...	२२८
४३	विजयराज	...	२३५
४४	परिशिष्ट – १ नामानुक्रमाणिका	....	१
४५	परिशिष्ट – २ छन्दानुक्रमणिका	...	२४
४६	परिशिष्ट – ३ भौगोलिक टिप्पणिया	...	५२
४७	परिशिष्ट – ४ ऐतिहासिक पौराणिक और साहित्यिक व्यक्तियों पर टिप्पणियां	...	६९
४८	परिशिष्ट – ५ यवनराज्य की कुछ विशेष बातें	...	७५
४९	परिशिष्ट – ६ वंश-वृक्ष	...	७६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भूमिका

"सूरज प्रकास" की रचना जोधपुर-नरेश महाराजा अभयसिंह राठोड़ के दरबारी कवि कविराजा करणीदान ने ऐतिहासिक दृष्टिकोण से की। ग्रन्थ में भारत की प्राचीन परम्परा को ध्यान में रखते हुए मध्यकालीन संस्कृति के अन्तर्गत वीरता आदि का राजस्थानी भाषा के आकर्षक छंदों में अनूठा प्रदर्शन है। संपूर्ण ग्रंथ में वर्णन ऐसा धाराप्रवाह चलता है कि जिससे पाठकों की उत्कण्ठा निरन्तर अग्रसर होती जाती है। कवि महोदय ने यत्र-तत्र अपने पाण्डित्य का प्रदर्शन ऐसी दक्षता से किया है कि प्रायः कहीं पर भी मूल कथा से क्रम नहीं टूटा है।

कथानक

सर्व प्रथम मंगलाचरण में गणेश, सरस्वती, शिव, सूर्य तथा विष्णु की स्तुति की है। चूंकि राठौड़ सूर्यवंशी हैं, अतः ग्रंथारम्भ में सूर्यवंशी राजा इक्ष्वाकु से वंशावली प्रारम्भ करके राजा दशरथ के पश्चात् रामायण का संक्षिप्त वर्णन किया तदनन्तर श्रीराम के पुत्र कुश से राजा पुंज तक की वंशावली का वर्णन करने के पश्चात् राजा पुंज के तेरह पुत्रों का विवरण दिया है जिनसे राठौड़ों की तेरह शाखाएँ निकली हैं। पुंज के ज्येष्ठ पुत्र धर्मबिम्ब की चौथी पीढ़ी में कन्नौज के राजा जयचंद राठौड़ का उल्लेख किया है जो इतिहास-प्रसिद्ध पृथ्वीराज चौहान का समकालीन था, तथा इसी जयचंद की चौथी पीढ़ी में राव सीहा हुआ। सीहा के पुत्र आसथान ने गोहिलों को पराजित करके खेड़ (मारवाड़) पर अधिकार कर लिया था।

तत्पश्चात् रचयिता ने आसथानजी के वंशजों का क्रमशः इतिवृत्त लिखा है जिसके अन्तर्गत कई वीरता की घटनायें हैं। इसी वंश मे राव चूंडा, राव रिड़मल, राव जोधा (जोधपुर नगर का संस्थापक), राव सूजा, राव गाँगा, राव मालदेव तथा राजा उदयसिंह के संक्षिप्त वर्णन के साथ उसके वंशज सवाई राजा सूरसिंह, महाराजा गजसिंह तथा महाराजा जसवन्तसिंह (प्रथम) का अपेक्षाकृत विस्तृत हाल दिया है।

काबुल में महाराजा जसवन्तसिंह (प्रथम) के देहान्त के उपरान्त उनकी गर्भवती रानी से महाराजा अजीतसिंह का जन्म लाहौर में होता है, किन्तु इस समय जोधपुर राज्य पर बादशाह औरंगजेब का अधिकार हो जाता है। यहाँ पर ग्रन्थ में स्वामि-भक्त दुर्गादास राठौड़ के सतत प्रयत्नों द्वारा महाराजा अजीतसिंह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

का गुप्त रूप से पालन-पोषण, रक्षा तथा पुनः जोधपुर राज्य पर अधिकार करने का रोचक वर्णन है।

ग्रंथ के उत्तरार्द्ध में महाराजा अभयसिंह के जीवन की दो प्रमुख युद्ध-घटनाओं का वर्णन है, जिसमें प्रथम नागौर के युद्ध का संक्षिप्त तथा दूसरा अहमदाबाद विजय का विस्तृत हाल है। इस युद्ध के वर्णन के साथ ही ग्रंथ की समाप्ति हो जाती है।

चरित्र-चित्रण

कविराजा करणीदान जोधपुर-नरेश महाराजा अभयसिंह के आश्रित थे। उसका प्रस्तुत 'सूरजप्रकास' काव्य महाराजा की अहमदाबाद-विजय का युद्ध-वर्णन करने के ध्येय से लिखा गया था किन्तु कवि ने अपने इतिहास-ज्ञान का प्रदर्शन करने के लिये लगभग आधे ग्रंथ में महाराजा के पूर्वजों का वर्णन किया है। सूर्य-वंश में होने वाले प्रथम राजा इक्ष्वाकु से कन्नोज-नरेश जयचन्द राठौड़ तक की वंशावली और रामायण तथा राजा पुंज के तेरह पुत्रों का वर्णन इतना संक्षिप्त है कि किसी भी पात्र का चरित्र पूर्ण रूप से मुखरित नहीं हुआ है।

जयचन्द राठौड़ से महाराजा अभयसिंह के पितामह महाराजा जसवंतसिंह (प्रथम) तक का इतिवृत्त ऐतिहासिक दृष्टिकोण से लिखा गया है जिसमें कई पात्रों का संक्षिप्त तथा कई पात्रों का विस्तार से चित्रण किया है, किन्तु हम उन पात्रों के सर्वांगीण चरित्र-चित्रण पर विचार नहीं कर सकते। उसमें प्रायः उनके युद्ध-चातुर्य, दान, वीरता आदि पर ही प्रकाश डाला गया है; यथा, महाराजा अजीतसिंह तथा कवि के आश्रयदाता महाराजा अभयसिंह के युद्ध-कौशल, राज-नीति, दान, वीरता आदि का विशिष्ट चित्रण है।

प्रतिपक्षियों का चरित्र-चित्रण करते समय कवि ने शत्रुओं की शक्ति, राज-नीति, युद्ध-चातुर्य तथा अवसर पड़ने पर आत्म-समर्पण अथवा रण से भाग जाने का सजीव वर्णन किया है। कुछ पात्रों के चरित्र नीचे दिये जाते हैं।

महाराजा सूरसिंह :—

कवि ने सूरसिंह का चरित्र एक कुशल और वीर राजा के रूप में चित्रित किया है। बादशाह अकबर के दरबार में जब गुजरात के शासक मुजफ्फर के ज्येष्ठ पुत्र बहादुर (इसने गुजरात में लूट-मार शुरू कर दी थी) का दमन करने के लिये बीड़ा घुमाया जाता है तब किसी भी राजा की हिम्मत उस बीड़े को ग्रहण करने की नहीं होती है, केवल महाराजा हो जोशीले शब्दों में सम्राट अकबर को धैर्य देते हुए उस बीड़े को उठा लेते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भा सोह उमराव, अंब दीवांण अनाही।
मीर त्रुजक ज्यां मांहि, पांन फेरे पतिसाही॥
सब नटिया तिण समै, अवर उमराव अकाजा।
'सूर' पांन साहरा, जुड़ण लीधा महाराजा॥
ग्रहि पांन एम कहियौ अगंज, झट खग बौह बाहू झलूं।
मोकळूं पकड़ि मदफर मिलक, मुदफर रौ सिर मोकळूं।

[सू. प्र. भाग १, पृ. २६३]

इनकी वीरता के आगे गुजरात के लुटेरे भाग जाते हैं। इसी प्रकार दक्षिण में अमर चम्पू की बढ़ती हुई शक्ति से भयभीत होकर बादशाह अकबर महाराजा सूरसिंह को ही उसके विरुद्ध भेजते हैं और वे बड़ी कुशलता से अमर चम्पू को परास्त कर के स्वदेश लौटते हैं। सम्राट् अकबर के पश्चात् बादशाह जहाँगीर सिंहासनारूढ़ होते ही इन्हें अपने दरबार में बुलाता है और इनके गुणों की प्रशंसा करते हुए जालोर का परगना भेंट करता है। इन सब घटनाओं से इनका वीर-श्रेष्ठ होना प्रकट होता है।

कवि ने सूरसिंह को एक श्रेष्ठ योद्धा के साथ कुशल राजनीतिज्ञ और प्रतिशोध की भावना रखने वाला भी बताया है। इसका उदाहरण हमें इनके गुजरात की ओर जाते समय सिरोही के राव सुरताण से चन्द्रसेन के पुत्र रायसिंह को धोखे से मारने का प्रतिशोध लेने से मिलता है। इसके विपरीत इनके प्रमुख अमात्य गोविन्ददास भाटी ने इनके भाई के लड़के को मार डाला था, किन्तु गोविन्ददास के अत्यधिक गुणवान् होने के कारण उसको दण्ड नहीं देते और उसको प्रमुख अमात्य के पद पर बनाये रखते हैं। इस प्रकार उनमें अत्याचारियों और दुष्टों को दण्ड देने की और गुणवान की त्रुटि को भी क्षमा कर के उसके गुणों का सम्मान करने की भावना थी।

इन गुणों के साथ कवि ने महाराजा को दानवीर और उदार भी बताया है। जब वे गुजरात से लुटेरों का दमन कर के अतुल धन-राशि के साथ लौटते हैं तो अपने आश्रित कवियों और सामन्तों को धन और जागीरें देकर पुरस्कृत करते हैं।

महाराजा गजसिंह :

ग्रंथकर्ता ने महाराजा सूरसिंह के ज्येष्ठ पुत्र महाराजा गजसिंह को भी अपने पिता के समान श्रेष्ठ योद्धा, युद्धविद्या में दक्ष और राजनीति-कुशल बताया है। इसके अतिरिक्त कवि ने महाराजा का एक पितृभक्त, महान् शक्तिशाली आत्माभिमानी, धैर्यवान्, सहनशील, आत्म-विश्वासी तथा शाही खानदान के प्रति स्वामि-भक्त के रूप में भी चित्रण किया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाराजा की पितृ भक्ति :

जब महाराजकुमार गजसिंह को यह संदेश मिला कि उनके पिता दक्षिण में रोग-ग्रसित हो गये हैं तो उन्होंने जोधपुर की शासनव्यवस्था, जो उस समय बड़ी जिम्मेदारी का कार्य था, छोड़ कर तुरन्त ही दक्षिण की ओर रवाना हो गये किन्तु दुर्भाग्यवश सवाई राजा सूरसिंह का देहावसान इनके वहां पहुँचने के पूर्व ही हो जाने के कारण ये पिता के अन्तिम दर्शन नहीं कर सके। इनका राज्याभिषेक भी उस समय दक्षिण में ही हुआ।

महाराजा गजसिंह अपने समय के सबसे शक्तिशाली राजा थे। बादशाह जहांगीर ने सिंहासनारूढ़ होते ही जब महाराजा सूरसिंह का सम्मान करने के लिये उन्हें अपने दरबार में बुलाया तो महाराज कुमार गजसिंह भी उनके साथ थे। बादशाह महाराज कुमार से बहुत प्रभावित हुआ और जालोर उन्हें इनायत कर दिया, अर्थात् जालोर पर अपना अधिकार करने की इनको छूट दे दी। जालोर पर उन दिनों बिहारी पठानों का अधिकार था। महाराजकुमार गजसिंह ने दिल्ली से लौटते ही जालोर पर धावा बोल दिया। जिस जालोर को फतह करने में अल्लाउद्दीन को बारह वर्ष लगे थे तथा अत्यधिक सैन्य शक्ति व छल-कपट से काम लिया गया था उसी जालोर को महाराजकुमार गजसिंह ने केवल तीन मास में ही अपने अधिकार में कर लिया। कवि ने निम्न पंक्तियों में इस बात को प्रकट किया है—

लड़ि बारह बरस अलावदी, लखां दळां छळहूं लियौ।
त्रण मास मांय गजबंध तिकौ, 'जालंधर' गढ़ जीपियौ॥

सू. प्र. भाग १., पृ. २९६

यही नहीं, कई घटनाओं में कवि ने इनके असाधारण शौर्य का भी चित्रण किया है। जहांगीर के पुत्र शाहजादे खुर्रम ने, जो आगे चल कर शाहजहां के नाम से तख्त पर बैठा, विद्रोह कर दिया और उसने दक्षिण में बड़ी भारी सेना तैयार की। उसने महान् शक्तिशाली भीम सीसोदिया को अपनी ओर मिला लिया और स्वयं बादशाह बनने के लिये दिल्ली की ओर बढ़ा। बादशाह जहांगीर ने उसका मुकाबला करने के लिये शाहज़ादे परवेज के साथ आमेर नरेश मिर्जा राजा जयसिंह को उनके पास अधिक सेना होने के कारण फौज में आगे रखा गया। यह बात स्वाभिमानी गजसिंह को अपमानजनक लगी और वे अपनी टुकड़ी को अलग कर के एक ओर खड़े हो गये, तथा दूर से ही युद्ध के परिणाम की प्रतीक्षा करने लगे। इस प्रकार कवि ने यह प्रकट किया है कि महाराजा कितने स्वाभिमानी थे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भीम सीसोदिया के पराक्रम से आमेर नरेश मिर्जा राजा जयसिंह और शाहजादे परवेज की संयुक्त सेना में भगदड़ मच गई। कवि कहता है—

जाडां थंडां जियार, लोह आडां भड़ लागा ।
जेण वार 'जैसाह' भिड़ै, हरवळ दळ भागा ॥

सू. प्र. भाग २., पृ. ६

महाराणा प्रताप का पौत्र भीम भयंकर मार-काट करता हुआ आगे बढ़ा, शाहजादे खुर्रम की विजय निश्चित थी। उसी समय भीम सीसोदिया ने दूर से युद्ध का कौतुक देखने वाले रण-केसरी महाराजा गजसिंह को ललकारा। महाराजा ने बड़े धैर्य और आत्म-विश्वास के साथ अपने तीन हजार राजपूतों से खुर्रम और भीम सीसोदिया की विशाल वाहिनी का मुकाबला किया। शाहजादे खुर्रम की विजय पराजय में बदल गई और भीम सीसोदिया वीर गति को प्राप्त हुआ। इस विषय में कवि की निम्न पंक्तियां देखिये—

पाडियौ भीम खागां पछटि, गयौ खुरम लसि कुरंग गति ।
गहतंत एम जीतौ 'गजण', पूरब धर जोधांण पति ॥

सू. प्र. भाग २., पृ. ७

इस प्रकार कवि ने महाराजा गजसिंह को महान् धैर्यवान, सहनशील और आत्म-विश्वासी प्रकट किया है, क्योंकि भीम सीसोदिया के ललकारने पर ही उन्होंने अपनी छोटी सी सेना से उसको पराजित किया—इसके विपरीत भीम शाहज़ादे परवेज और आमेर नरेश मिर्जा जयसिंह की विशाल सेना से भी पराजित नहीं हुआ था।

इसी प्रकार महाराजा गजसिंह ने दक्षिण में अमर चम्पू को परास्त किया तथा दक्षिण के खिड़की गढ़, गोलकुण्डा, आहोर, सितारा आदि को विजय कर के बादशाही राज्य में मिला कर अपने पराक्रम और शाही खानदान के प्रति स्वामिभक्त होने का परिचय दिया तथा बादशाह द्वारा 'दळथंभण' की उपाधि से सम्मानित हुए।

महाराजा अजीतसिंह :—

ग्रन्थ में महाराजा अजीतसिंह का विशद वर्णन किया गया है, जो पुस्तक के सौ पृष्ठों से भी अधिक में पाठकों के समक्ष है। चूँकि बचपन में इनका पालन-पोषण वीर दुर्गादास राठौड़ की देख-रेख में गुप्त रूप से होता है, अतः इनकी बाल्य-क्रीड़ाओं का चित्रण नहीं किया गया है।

जब महाराजा कुछ योग्य हुए तो राजपूतों ने इनको अपना अग्रणी बनाया, अतः इससे इनका युद्ध विद्या में चतुर होने का प्रमाण मिलता है। उस समय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोधपुर पर औरंगजेब का अधिकार था। महाराजा अपने सरदारों के साथ इधर-उधर लूट-खसोट करते थे। मुगलों को हर प्रकार से तंग करते, उनकी रसद तक लूट लेते, गांवों से कर आदि वसूल करते। औरंगजेब के मरने पर इन्होंने जोधपुर पर अधिकार कर लिया, किन्तु इनका मुगलों से जूझना जारी रहा। इन्होंने अपने जीवन काल में सांभर, डीडवाना तथा कुछ दिनों के लिये अजमेर पर भी अधिकार कर लिया था। अतः कवि ने स्पष्ट कर दिया कि महाराजा आजीवन युद्ध करते रहे।

मुगलों के प्रति तीव्र वैमनस्य :—

इन पर मुगलों ने बहुत अत्याचार किये। महाराजा जसवन्तसिंह (प्रथम) का काबुल में देहावसान होने के लगभग तीन महीने बाद लाहौर में इनका जन्म हुआ। औरंगजेब ने जोधपुर राज्य को शाही सल्तनत में मिलाने तथा इनको मुसलमान बनाने के लिये दिल्ली बुला लिया किन्तु स्वामिभक्त वीर राठौड़ दुर्गादास की चतुराई से ये बचा लिये गये। इस समय इज्जत बचाने के लिये दिल्ली में दुर्गादास ने उनकी माताओं को तलवार के घाट उतरवा कर यमुना में बहा दिया। गुप्त रूप से बड़े होने के बाद कई लड़ाइयाँ लड़ कर उन्होंने अपना पैतृक राज्य मुगलों से पुनः प्राप्त किया। इन सब कारणों से वे मुगल सल्तनत को मटियामेट कर देना चाहते थे। सैयद बन्धुओं और बादशाह फर्रुखशियर में वैमनस्य हो जाने के कारण ये भी अपने सरदारों सहित दिल्ली पहुँचे। यहाँ पर कवि ने महाराजा की इस भावना का अच्छा चित्रण किया है। दिल्ली में प्रवेश करते समय इन्होंने अपनी शैशवावस्था में रक्षा करने वाले उन वीरों के समाधि-स्थान देखे जो इनकी रक्षार्थ मुगलों से लड़ते हुए वीर गति को प्राप्त हुए थे तथा इन्हें अपनी जन्मदात्री मां का भी स्मरण हो आया जिनका समाधि स्थान भी यहीं पर था। इनके हृदय में प्रतिशोध की भावना भड़क उठी और अपने मन में मुगलों का नाश करने की ठान ली। देखिये :—

समै जेण पतिसाह, दुगम बुद्धि काळ दबायौ।
'सैद' ग्रहण पतिसाह, आप भय चूक उठायौ।
खेध पड़ै चित खांन, खोद उज्जीर हुवा खळ।
सांभळि अलीहुसेन, दखिण हूँ आयौ सझै दळ।
पतिसाह ग्रहण जोधांण पति, पेखै मोसर पावियौ।
दइवांण 'अजौ' दळ सझि दिली, आप मुरादौ आवियौ॥

सू. प्र. भाग २, पृ. ७६. ७७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आइ दिली ईखिया, जोध चौतरा 'जसारां'।
सुजि 'अवरंग' सजी (....) इता खटके उण वारां।
जूना भड़ां जियार, कहै इण भांत हकीकत।
माति आदि जादम्म, मात अनि अठै खगां अत।
आइठांण देखि कथ सुणि 'अजै' धिखै क्रोध इम चित धरी।
असपति मारि मांडू अठै, एक कबरि असपत्तिरी॥
धख इम चख (....) धिखै, तांण मूछां खग तोलै।
भडा हूंत भूपाळ बहसि नाहर जिम बोलै।
खत्री खांडा धार, एह वायक अबखांणै।
जिकौ विरद उजवाळि, खूंद पलटौ खुरसांणै।
महि वैर वंस गोहरि मंडप, अवरंग' बहु कीधा इसा।
ताबूत (रा) वैर भूलै तिकै, कहै 'अजौ' राजा किसा।

सू. प्र. भाग २, पृ. ७७, ७८

अपने समय के सब से शक्तिशाली :—

इनके दिल्ली पहुँचने पर सैयद बन्धुओं और बादशाह फर्रुखशियर ने इनका अलग-अलग स्वागत किया। वे जानते थे कि जिधर शक्तिशाली महाराजा झुक जायेंगे वही पक्ष मजबूत हो जायगा। किन्तु महाराजा मुगलों से कभी प्रसन्न न थे अतः उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से सैयद बन्धुओं का ही पक्ष लिया जो हिन्दुओं के पक्षपाती थे। फलस्वरूप बादशाह फर्रुखशियर मारा गया। अतः कवि ने यह प्रमाणित कर दिया कि महाराजा उस समय में सब से शक्तिशाली थे।

धर्म रक्षक :—

यवनों के समय में राजपूत राजाओं ने जी जान से हिन्दू धर्म की रक्षा की थी। कवि ने महाराजा का एक कुशल धर्म-रक्षक के रूप में चित्रण किया है। सैयद बन्धुओं का पक्ष उन्होंने इस शर्त पर कर लिया कि बादशाह फर्रुखशियर को हटाते ही हिन्दुओं पर से जजिया कर हट जाना चाहिये, हिन्दू तीर्थ-स्थानों पर से कर हट जाना चाहिये, गो-वध बन्द होना चाहिये तथा मन्दिरों में होने वाली नियमित पूजा में किसी प्रकार की बाधा नहीं पड़नी चाहिये।

हम रहै नौकर होय, दिल आप बांधव दोय।
पलटां न वायक पेस, नहि तजां हुकम नरेस।
महाराज विच रहमांण, करि सौंस छिबी कुरांण।
तदि धरै दिल परतीत, इम बोलियौ 'अगजीत'।
हिंदवांण तीरथ होय, कर जठै न लगै कोय।
साळग्गरांम सिलाह, दै नहीं आसुर दाह।
जिग होय दुज जप जाप, आसुर करै न उथाप।
जिण मोह महि दुर जाय, ग्रहै तठै मन ह्वै गाय।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असुरांण सीस उपाड़ि, परसाद न सकै पाड़ि ।
प्रासाद नव नवा प्रमेस, हिंदवांण सभै हमेस ।
आगैं जु दियौ छुडाय, जेजियौ सुज मिट जाय ।
अर साह दरगह आइ, मह पूजहूँ महमाय ।
मिळ लाल कोट मभार, भालरां हुवै भणकार ।
परमळा धूप प्रकास, उदियात रवि अंब-खास ।—सू.प्र भाग २, पृ. ८१, ८२

× × ×

आ मिटण न दूं अनादि, मो थकां हिंदु अजादि ।

× × ×

सुणि कहै इम सयदांण, पर हुकम सरब प्रमांण ।
सभि एम तरह सलाह, दहुं गये 'सयद' दुबाह ।—सू.प्र. भाग २, पृ. ८३

इसी प्रकार अपने पैतृक राज्य जोधपुर पर अधिकार करते ही उन्होंने उन मसजिदों को तुड़वा डाला जो मंदिरों के स्थान पर बनाई गई थीं और वहाँ पुनः मंदिर बनवा दिये।

जब उन्होंने अजमेर पर अधिकार किया तो वहाँ पर गो-वध रोक दिया हिन्दू धर्मग्रन्थों के पाठ शुरू करवा दिये तथा मंदिरों में नियमित पूजा शुरू करवा दी।

राजस्थान के तत्कालीन नरेशों के सहायक :—

बादशाह बहादुरशाह ने आमेर नरेश जयसिंह से राज्य छीन लिया था। महाराजा अजीतसिंह ने अपने पैतृक राज्य मारवाड़ पर अधिकार करते ही तुरन्त सांभर और डीडवाना को विजय करते हुए आमेर पर अधिकार कर लिया और जयसिंह को पुनः वहाँ का राजा बना दिया।

बादशाह मुहम्मदशाह के समय में आमेर नरेश जयसिंह ने ईरानी यवनों को प्रेरणा देकर आगरे में अपनी ओर से निकोशियर को बादशाह घोषित कर दिया था। इस पर सैयद बन्धु और महाराजा अजीतसिंह ने दिल्ली से आगरे जा कर ईरानी मुगलों को मार भगाया और निकोशियर को कैद कर लिया। सैयद बन्धु जयसिंह से बहुत नाराज थे। उन्होंने आमेर पर चढ़ाई करने की ठान ली।

गढ लीध करि गज गाह, सुजि गहै नेकह साह'।
'जैसाह' दिस जमरांण, खळ चढै दळ खुरसांण ।।—सू.प्र. भाग २, पृ. ८५

राजा जयसिंह ने अपनी लज्जा बचाने के लिये महाराजा अजीतसिंह को पहले से ही पत्र लिख दिया—

सभि थाट कुरब सुथाळ, मो राखियौ 'अजमाल'।
वरियांम तीजी बार, अब नको अवर अधार ।।—सू.प्र. भाग २, पृ. ८६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यद्यपि सैयद बन्धु बदला लेना चाहते थे किन्तु महाराजा अजीतसिंह की सलाह के कारण वे उधर नहीं बढ़ सके—

सुण बयण इम सयदांण, उर धिखै क्रोध उफांण।
दिल मांहि लागौ दाह, 'अजमाल' कुरब उथाह।
सो लोप न सकै सैद, कथ कीध पहलां कैद।
कथ कहै तजै कस्रूर, जो हुकम पह मनजूर।

सू.प्र. भाग २, पृ. ८७, ८८

मेवाड़ के महाराणा जयसिंह और उनके पुत्र अमरसिंह में परस्पर गृह-कलह होने के कारण महाराणा भयभीत होकर मारवाड़ की ओर आ गये और महाराजा अजीतसिंह के पास सहायता का पत्र भेजा। उस समय जोधपुर पर औरंगजेब का अधिकार था और महाराजा अपने पैतृक राज्य के लिए जूझ रहे थे, किन्तु राणा की सहायता करना अपना कर्त्तव्य समझ कर दुर्गादास राठौड़ की अध्यक्षता में २५ हजार सशक्त सेना भेज कर पिता-पुत्र में संधि करवा दी और महाराणा को पुनः मेवाड़ के सिंहासन पर आसीन किया।

रांण राज तिण वार, जुगति धर वेध लगे जदि।
'अमर' कुमर मुरड़ियौ, तंत ऊथपै दियौ तदि।
जदि आयौ जैसिंघ, सरण कमधां तदि सब्बळ।
रांण मदति महाराज, दीध 'अगजीत' सबळ दळ।
तदि रांण 'जसौ' चाढ़ै तखति, कंवर नमे बांधै करां।
'जसराज' तणै कीधौ 'अजै', आंक एह उदिया पुरां।

सू.प्र. भाग २; पृ. ३६

इस प्रकार कवि ने महाराजा को किसी के संकट के समय में सहायता देने वाला बताया है।

कुशल राजनीतिज्ञ :—

नागौर के राव इन्द्रसिंह का पुत्र मोहकमसिंह महाराजा अजीतसिंह के विरुद्ध बादशाह फर्रुखशियर को बहकाता था, अतः महाराजा ने भाटी अमरसिंह के साथ कुछ सरदारों को गुप्त रूप से मारवाड़ से दिल्ली भेजा और मोहकम-सिंह को मरवा डाला। इसके अतिरिक्त दिल्ली के तख्त पर जितने भी बादशाह सैयद भाइयों ने बैठाये, उनके लिए उन्होंने महाराजा की मंत्रणा ली, अतः ये कुशल राजनीतिज्ञ सिद्ध होते हैं।

स्पष्ट है कि कवि ने महाराजा अजीतसिंह का चित्रण अपेक्षाकृत अधिक सफलता के साथ किया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाराजा अभयसिंह

इस ग्रन्थ की रचना महाराजा अभयसिंह के समय में ही हुई थी, अतः कवि ने महाराजा के जन्म-काल से लेकर अहमदाबाद की विजय तक इनके जीवन की विभिन्न घटनाओं का चित्रण बड़ी कुशलता से किया है। जन्म-कुंडली, नक्षत्रों, हस्तरेखाओं तथा अन्य ज्योतिष-सम्बन्धी विषयों का वर्णन करके महाराजा के भावी जीवन पर अच्छा प्रकाश डाला गया है।

बाल-चरित्र: —

चूंकि इनके पिता महाराजा अजीतसिंहजी ने अपने समय में कई बादशाहों को बदल दिया था, अतः बालक अभयसिंह भी इन बातों से प्रभावित हुआ। कवि ने इनके द्वारा खेले जाने वाले खेलों में इनका बादशाह बनाना, फिर हटाना, किले जीतना, युद्ध करना आदि बातों का वर्णन करके इनके बाल-चरित्र में उदीयमानता के लक्षण व्यक्त किए हैं। इसके लिए निम्न पंक्तियां देखिये—

तेजपुंज नृप सुतरा, हुवौ जस वेस झळाहळ।
सांईनां साथियां, मिळै खेलै मझि मंडळ।
हुवै बाळ हेक सा', विखम गढ़ कोट बणावै।
आप साह ऊपरा, 'अभौ' दळ बळ सझि आवै।
सझियास कोट गढ़ साहरा, धूम लूटि धन ऊधमै।
ऊगतौ भांण बाळक 'अभौ' राय आंगण इण विध रमै।

सू.प्र. भाग २, पृ. ४६, ५०

सिसु उथापि इक साह, साह सिसु अवर सथप्पै।
सिसु सुभड़ां हित सझै, पटै गढ देस समप्पै।
सिसु इक मंत्री सरूप, धार दफतर भर धारै।
सिसु दुज करै सरूप, एक सिसु कथा उचारै।
कवि होय एक सिसु गुण कहै, सांसण गज दै तिण समै।
ससि वेस 'अभौ' 'अगजीत' सुत, राय आंगण इण विध रमै॥

सू.प्र. भाग २, पृ. ५१

युवावस्था के प्रारम्भ में पराक्रम दिखाना:—

बादशाह मुहम्मदशाह महाराजा अजीतसिंह की बढ़ती हुई शक्ति से बहुत घबराया, क्योंकि उन्होंने अजमेर पर भी अपना अधिकार कर लिया था। अतः बादशाह ने उनका दमन करने के लिए तीस हजार यवन-दल के साथ मुदफर खां को भेजा। महाराजा अजीतसिंह ने राजकुमार को उसका सामना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करने के लिए भेजा। वे अपने पिता को पूर्ण विश्वास दिला कर रवाना हुए। कवि ने यहाँ पर अभयसिंह के शौर्य का सुन्दर चित्रण किया है—

रहौ अठे महाराज, आप आणंद उपाए।
बीड़ौ मो बगसिजै, जड़ूं मुदफर हूँ जाए।
जुड़ै त मारूं जवन, भांति बळ काय भजाऊं।
करि झट खंड कराळ, चाक खंड खंड चढ़ाऊं।

पुर नारनौळ साहिजां पुरां, दळि लूटूं दस देसनूं।
अजमेर सोच दियूं उवर, दिल्ली सोच दिलेसनूं।

सू.प्र. भाग २, पृ. ९८

राजकुमार अभयसिंह अपनी सेना के साथ तूफान की भाँति आगे बढ़ते हैं और मुदफर खां यवन दल के साथ भाग जाता है।

भजि गया बिण गज भार, हय थाट तीस हजार।
मिट लाज छाड़ि गुमांन, खड़ि गयौ मुदफर खांन।।

सू.प्र. भाग २, पृ. १०२

महाराज कुमार ने बादशाही गांवों को लूट लिया और उनमें आग लगा दी। लोग भय से घबराने लगे—

आवेस धकै अमास, उडि जाय गढ़ असि हास।
लूटंत संपति लाख, सरदांण ह्वै धण साख।।

सू.प्र. भाग २, पृ. १०३

× ×

अै सहर कौ ऊफांण, 'अभमाल' घेरे आंण।
चहुं तरफ थाट चलाय, लगाय वळ वळ लाय।।

धुबि झाळ झळ हळ धोम, हणमंत लंक जिम होम।
जाळीस सबळ पट जागि, आलीस आलिय आगि।।

सू.प्र. भाग २, पृ. १०३

यहाँ पर कवि ने महाराज कुमार की युवावस्था में होने वाली अपरिपक्व बुद्धि की ओर संकेत किया है, क्योंकि लूट-खसोट करना, गांव जला डालना आदि वीरोचित कार्य नहीं हैं। इस प्रकार के कार्यों के कारण इनका नाम धोकळसिंह पड़ा। सबको भयभीत करके तथा बहुत धन-माल लेकर ये अपने पिता से आकर मिले—

धन लूट कीधौ धांण, वधि नारनौळ विनांण।
चंड नयररा परचंड, दो नगर अै भुजदंड।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मांजिया जिके भुजाळ, 'अभमाल' विरद उजाळ ।
मंडियो न थकै मुगळळ, इम जोपियौ अभमल्ल ।।

धर साह धोकळ धींग, सो कहै धोकळ सींग ।
सझि साह मुलक सरद्द, मोसरां पहल मरद्द ।।

कुळ भांण विरद कहाय, जुध जीत तबल वजाय ।
इम हलै थाट अथाह, छिल उरस छिब 'अभसाह'।।

गाजतां गयंद गहीर, वाजतां नौबत वीर ।
आवियौ थाट अथाग, रंग हुवां उच्छब राग ।।

'अजमाल' सजि उच्छाह, गह-महत भड़ दरगाह ।
उणवार 'अभमल' आय, पह कीध वंदण पाय ।।

सुत तात मिळै सनेह, दो जांणि सूरज देह ।
अति पूर छक अमराव, पति करत वंदण पाव ।।

सू.प्र. भाग २, पृ. ११०, १११

अपने समय के सबसे शक्तिशाली राजा :—

महाराजा अभयसिंह भी सवाई राजा सूरसिंह, गजसिंह आदि अपने पूर्वजों के समान ही शक्तिशाली राजा थे। बादशाह मुहम्मदशाह ने सर बुलन्द को गुजरात का सूबेदार बना कर भेजा था। उसने वहाँ जाकर अपनी शक्ति बढ़ाई और स्वयं वहाँ का अधीश्वर बन बैठा। बादशाह बहुत चिंतित हुआ और उसने एक बहुत बड़ा दरबार किया—जिसमें बड़े-बड़े राजा, महाराजा, सामन्त, नवाब, अमीर आदि उपस्थित थे। बादशाह ने सर बुलन्द का दमन करने के लिये सभा में पान का बीड़ा घुमाया। सर बुलन्द की शक्ति का मुकाबिला करने के लिये कोई भी तैयार नहीं हुआ, आखिर महाराजा अभयसिंह ने ही बीड़ा उठा कर यह प्रतिज्ञा की कि मैं सर बुलन्द को झुका कर रहूँगा। इस आशय को कवि ने निम्न पंक्तियों में चित्रित किया है—

फिरै पांन साहरा, कितां हुवै ज्यांन थरत्थर ।
फिरै पांन साहरा, कितां निजरां न धरै कर ।
तुजक मीर कर तांन, केइक मसतांन कहावै ।
आंन आंन कथ कहै, पांन नह कोय उठावै ।
'अभमाल' विनां हिंदू असुर, दिल अंब खास दबावियौ ।
मेर गिर भार पांनां महीं, उण दिन निजरां आवियौ ।

× ×

नी लियै खांन निवाब, आंन न लियै अधपत्ती ।
तुजक मीर कर हूंत, पांन लीधा असपत्ती ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ग्रहे पांन निज करग, नजर कमधज्ज निहारै।
रहै एक ग्रौसरा, एम पतिसाह उचारै।
तद मुसलमांन हिंदू तणी, ग्रासंग किणहि न ग्राविया।
दईवांण देखि ग्रसपति दुचित, 'ग्रभमल' पांन उठाविया।

सू.प्र. भाग २, पृ. २४५, २४६

बीड़ा लै बोलियौ, कमध घातै मूंछां कर।
उछब करौ ग्रसपती, सोच मति धरौ दिलेसुर।
मारि सीस मोकळूं, काय पकड़ै पोहचाऊं।
ग्रजळ भाजि ऊबरै, मुगळ दळ गिरद मिळाऊं।

ग्रहमदाबाद हूंता ग्रसुर, एक दिवस मझि ऊथलूं।
बिण पत्रां रूंख जिम सिर बिलंद, करै दिली दिस मोकळूं।

सू.प्र. भाग २, पृ. २४७

स्वाभिमानी :—

यद्यपि महाराजा ग्रजीतसिंह ने बादशाह मुहम्मदशाह से संधि कर ली थी ग्रौर उसके ग्रनुसार महाराजकुमार ग्रभयसिंह दिल्ली गए थे। किन्तु वे पूर्ण-रूप से स्वाभिमानी थे। एक समय जब ये बादशाह मुहम्मदशाह के दरबार में गये ग्रौर बादशाह के बिलकुल समीप पहुँचे तो बादशाह के एक ग्रमीर ने इन्हें रोक दिया, इस पर इन्होंने ग्रति क्रोधित होकर ग्रपने स्वाभिमान की रक्षक कटार निकाली। उसी समय बादशाह ने तुरन्त ग्रागे बढ़ कर ग्रपने गले का मोतियों का हार इन्हें पहना दिया ग्रौर बड़ी कठिनाई से इनके क्रोध को शान्त करने में सफल हुग्रा। यदि वह ऐसा नहीं करता तो वही दृश्य उपस्थित होता जो बादशाह शाहजहाँ के दरबार में ग्रमरसिंह राठौड़ द्वारा हुग्रा था। कवि ने उनके इस गुण का चित्रण इस प्रकार किया है—

एक समै 'ग्रभमाल', एम ग्रावियौ पुजाए।
दुझल वार दूसरी, चढ़ण कटहड़ै चलाए।
ग्रनवह चढै ग्रमीर, साहजादां नह मौसर।
उठै चढै धर धोम, बहसि 'ग्रभमाल' बहादर।
गज तजै डांण ग्रन पह गुमर, तेज साह इसड़ो तठै।
ग्रटकियौ ग्रसुर तिण पर 'ग्रभै', जमदढ़कर धरियौ जठै॥

पेखि रोस पतिसाह, माळ मोतियां समप्पै।
बगसी भेजि सताब, ग्रांणि माळा सुज ग्रप्पै॥
मीर तुजक मारिवा, धिखै जमदढ़ कर धारै।
दुझल खांन दौरांस, पटाझर जिम पूंतारै॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असतुत करै बह करि अरज, जोड़ै हाथ जुहारियौ ।
असपती मौहर आंगणं 'अभौ' इण विध क्रोध उतारियौ ।।

सू.प्र. भाग २, पृ. १२६

महाराजा की भाषण-शक्ति :—

सर बुलन्द पर आक्रमण करने के लिए महाराजा ने सरस्वती के किनारे अपने सुभटों के समक्ष बड़ा जोशीला भाषण दिया । उन्होंने बताया कि ऋषि-महात्माओं की अपेक्षा वीरों को सहज ही में मोक्ष मिल जाता है । अपने लम्बे भाषण में उन्होंने कई ज्ञान की बातें बताईं और युद्ध में जीत की बाजी लगाने के लिए सरदारों को प्रोत्साहित किया । अतः कवि ने यह प्रमाणित कर दिया कि महाराजा भाषण-शक्ति में दक्ष होने के साथ साथ विद्वान भी थे—

इम रिख सिख हूं तांम उचारा ।
धुर छत्र मारग खांडा धारा ।
विधि सिख सुणि रिज कहै करूं विध ।
सूर जोड़ न हुवै तपसी सिध ।।

सू.प्र. भाग २, पृ. ३३९

× × ×

कळहणि सूर सांमरै कारण ।
ऽवै सुख तजै पलक मझि आरण ।
सूरां तेज इसौ दरसावै ।
इण विध तपसी जोड़ न आवै ।।

सू.प्र. भाग २, पृ. ३४०

× × ×

इम सूरो पति धरम इरादा ।
जोगेसरां सिधां हूं जादा ।
लड़ै नचिंत लोह नह लागै ।
जिकौ सूर तपसी सम जागै ।।

सू.प्र. भाग २, पृ. ३४३

शरणागतवत्सल और क्षमाशील :—

सर बुलन्द को परास्त करने में महाराजा के कई राजपूत योद्धा वीरगति को प्राप्त हुए, जिनका उन्हें बहुत शोक था, फिर भी सर बुलन्द महाराजा की शरण में आ गया तो उन्होंने क्षमा करके उसे छोड़ दिया और वह करारी हार से लज्जित होकर आगरा की ओर रवाना हो गया—

पड़ै पाय सिर बिलंद, जांणै सरणाय सधारां ।
म्हैं बंदा हुकम का, एम कहियौ उण वारां ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवर रखत अरबां, किले वंचिया अधिकारां।
जिकै किया सहौ निजर, किला सहित कोठारां।
जदि होय रूंख पतझड़ जिही, सुभड़ां विरिण दुख सालियौ।
आगरा दिसि सिर विलंद इम, हीरण मांरण होय हालियौ ।।

सू.प्र. भाग ३, पृ० २६४

इस प्रकार कवि ने महाराजा अभयसिंह का एक आदर्श राजा के रूप में चित्रण करने का सफल प्रयत्न किया है।

प्रति नायक :—

नायक की श्रेष्ठता प्रति नायक के बल का यथेष्ट वर्णन कर उस पर विजय प्रदर्शित करने से ही सिद्ध होती है। कवि ने अपने इस उत्तरदायित्व को ग्रंथ में यत्र तत्र पूर्ण रूप से निभाया है।

सर बुलन्द :—

अहमदाबाद का स्वतःसृष्ट नृपति सर बुलन्द, जिसको बादशाह गुजरात का सूबेदार नियुक्त किया था, बहुत शक्तिशाली था। उसने विद्रोहियों से मिल कर गुजरात में बहुत अत्याचार किये, लूट-मार की जिससे कि वहाँ की प्रजा बहुत दुखी हो गई। बादशाह के दरबार में गुजरात के एक संदेशवाहक की आर्तनाद को कवि ने निम्न कवित्त में प्रकट किया है—

ईरांनी अतपाक, दखिरण मिळ किया दुबाहां।
मंडिया जठै गनीम, जठै सहनक पतिसाहां।
आठ पहर रइयत्त, जहर पीधां समजावै।
लूट कहर करि लियै, सहर विवराळा गावै।
धन लियै मारि नांखै धणी, साथ होरण न दियै सती।
असपती सोच वधियौ अधिक, इसड़ी सुणै अजाजती ।।

सू.प्र. भाग २, पृ. २४२

सर बुलन्द का दमन करने के लिए बादशाह के दरबार में पान का बीड़ा घुमाया जाना और वहाँ पर उपस्थित सभी राजा, महाराजा, सामन्त, नवाब, अमीरों आदि का सर बुलन्द के विरुद्ध बीड़ा उठाने की हिम्मत नहीं करने का वर्णन कर के ग्रंथकर्ता ने उसके अत्यन्त शक्तिशाली होने की ओर संकेत किया है। इसके लिए पुस्तक के द्वितीय भाग पृष्ठ २४५-२४६ तथा २४७ के कवित्त दृष्टव्य हैं। इसके अतिरिक्त ग्रंथ की निम्न पंक्तियाँ भी देखिये—

बिहूं तांम बोलिया, साह अपखास सभावौ।
नरिंद खांन करि निजर, फिजर बीड़ा फिरवावौ।
फटै निसा फजरांन, अंब - दीवांण वणाया।
तखत बैठ सुरतांण, पांन हाजर पधराया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिर बिलंद खांन 'साहू' सहित, प्रासंग हुवै सु आवसी।
असमांन पड़ै थांभै अडर, श्रो नर पांन उठावसी।

सू.प्र. भाग २, पृ. २४२

सर बुलन्द की सेना में बारह हजार सैनिक तो यूरोपियनों की देख-रेख में ही थे तथा तोपें दागने का काम भी यूरोपियन करते थे। चार हजार 'सुतर नालें', तीन हजार 'रेहकले', तथा शक्तिशाली सेना के वर्णन से उसका बहुत चतुर और विजयाकांक्षी होने का प्रमाण मिलता है।

पहले तीन दिन तक सर बुलन्द राठौड़-वाहिनी के समक्ष नहीं आया और गोलाबारी करता रहा। अतः वह युद्ध-विद्या में दक्ष सिद्ध होता है।

नगर के प्रत्येक द्वार पर तोपें और सैनिकों का प्रबन्ध करके उसने अपनी नगर-रक्षा की भावना को प्रमाणित किया है।

अवसर पड़ने पर वह युद्ध-स्थल से भाग जाता था। इस प्रकार वह हिन्दुओं की तरह एक ही स्थान पर लड़ते-लड़ते प्रांण गंवा देना बुद्धिमानी नहीं समझता था। अपनी हार होते हुए देख कर उसने महाराजा अभयसिंह से संधि कर ली तथा उनकी शरण में आ कर आत्मसमर्पण कर दिया। तत्पश्चात् वह आगरे की ओर रवाना हो गया। इस भाव का चित्रण कवि ने निम्न पंक्तियों में किया है:—

पड़ै पाय सिर बिलंद, जांणै सरणाय सधारां।
म्हैं बंदा हुकम का, एम कहियौ उणवारां।
अवर रखत आरबां, किलै वंचिया 'अधिकारां'।
जिकै किया सहो निजर, किला सहित कोठारां।
जदि होय रूंख पतझड़ जिहौ, सुभड़ां विणिदुख सालियौ।
आगरा दिसी सिर बिलंद इम, हीण मांण होय हालियौ।

सू.प्र. भाग ३, पृ. २६४

अतः सर बुलन्द इतना शक्तिशाली और स्वाभिमानी होने के साथ-साथ अवसरवादी भी था।

अन्य चरित्रः—

कवि ने राजनीतिज्ञ, युद्ध-विद्या में चतुर और रणक्षेत्र में वीरगति प्राप्त करने वाले अनेक वीरों का परिचय भी ग्रंथ के अन्तर्गत यथा-स्थान यत्र-तत्र दे दिया है। पाठकों की सुविधा के लिये उनमें से कुछ का उल्लेख सूरजप्रकास की ऐतिहासिकता के अन्तर्गत करने का प्रयत्न किया गया है। सम्पूर्ण ग्रन्थ में स्त्री-पात्रों का अभाव ही है। केवल महाराजा जसवन्तसिंह (प्रथम) की रानियों

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

का प्रसंगवश उल्लेख मात्र है जिनकी इज्जत बचाने के लिये दिल्ली में वीर दुर्गादास राठौड़ ने उन्हें तलवार के घाट उतरवा कर यमुना में बहा दी थीं।

रस

कवि ने अपनी काव्यगत परम्परा के अनुसार सम्पूर्ण ग्रंथ में वीर रस तथा इसके मित्र वीभत्स, भयानक तथा रौद्र का अच्छा चित्रण किया है। वीर रस के अन्तर्गत युद्धवीर, दानवीर, दयावीर, धर्मवीर तथा प्रणवीर सभी का निर्वाह हुआ है।

वीर रस का निम्न उदाहरण देखिए—

बीड़ा लै बोलियौ, कमध घातै मूंछां कर।
उछब करौ असपती, सोच मति करौ दिलेसुर।
मारि सीस मोकळूं, काय पकड़े पौहचाऊं।
अहमदाबाद हूंता असुर, एक दिवस मझि ऊथळूं।
विण पत्रां रूंख जिम सिर विलंद,करे दिलीदिस मोकळूं।

सू.प्र. भाग २, पृ. २४७

यत्र-तत्र प्रसंगवश शृंगार, शान्त तथा करुण रस का भी वर्णन मिलता है। साहित्यिक दृष्टि से कवि का ध्यान रसों की ओर न जा कर ग्रंथ में ऐतिहासिकता को ध्यान में रखते हुए वर्णनात्मक इतिवृत्त लिखने की ओर ही रहा है। अतः सभी रस पूर्ण रूप से परिपाक नहीं हुए हैं।

शृंगार रस का निम्न उदाहरण देखिये—

सोळह मझि सिणगार, सोळह बीस आभरण सुंदरि।
वाजंत्र सझि विसतार, गांन संगीत करण मिळ गाइण।
मुगधा वेस प्रमांणं, लखि अति रूप उर-वसी लज्यत।
पय घूघर बंध पांणं, सझिया नमसकार सारदा।
ताल मृदंग तंबूर सुर वीणा, वीणा धरि सुंदरि।
हरखत नृपत हजूर, सझै सलांम अलाप कीध सुर॥

सू.प्र. भाग २, पृ. १५०

अलंकार

कवि ने जान-बूझ कर अलंकारों को लादने की चेष्टा नहीं की है, किन्तु स्वाभाविक रूप से अलंकारों का प्रयोग होता रहा है। अतः ग्रंथ में अलंकारों का अभाव भी नहीं है। कवि की वंश-परम्परा के अनुसार समूचे ग्रंथ में 'वयण सगाई' का भली भाँति निर्वाह हुआ है। इसी प्रकार अनुप्रास की झलक भी प्रायः मिल ही जाती है। वीप्सा भी यत्र-तत्र मिल जाता है। अर्थालंकारों के अन्तर्गत—उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि का प्रयोग ग्रन्थ में होता रहा है। अतः स्पष्ट है कि ऐतिहासिक ग्रंथ होते हुए भी कवि द्वारा अलंकारों का प्रयोग

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वाभाविक रूप से बराबर होता रहा है। निम्न उदाहरणों से उक्त कथन की पुष्टि करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

शब्दालंकार :—

वीप्सा – लघु-लघु सर कर धनक लघु, लघु वय बाळक लार।

सू.प्र. भाग १, पृ. २३

वयण सगाई – सम्पूर्ण ग्रंथ में इसका निर्वाह हुआ है।

अनुप्रास – ग्रन्थ में प्राय: सभी जगह किसी न किसी रूप में मिल जाता है।

अर्थालंकार :—

उपमा – क्रीड़ा विलास विध-विध करे, 'अभौ' इंद आडंबरां।

उत्प्रेक्षा – 'अजमल' जुहार बैठो 'अभौ', सनमुख तेज समीपियौ।
रघुनाथ जांणि रवि वंस रवि, दसरथि आगळ दीपियौ॥

छंद

ग्रंथ में संस्कृत, प्राकृत, राजस्थानी तथा हिन्दी के विभिन्न छंदों का प्रयोग प्राय: प्रसंगानुकूल किया गया है। युद्ध के लम्बे वर्णन के लिये त्रोटक, मोतीदाम, पद्धरी और कवित्त (छप्पय) को अधिक अपनाया गया है। निम्न छंदों का प्रयोग ग्रंथ में किया गया है—

१. **अम्रत गति (अमृत गति)** – यह राजस्थानी और हिन्दी दोनों में प्रयुक्त होने वाला छंद है। राजस्थानी के छंदशास्त्र के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'रघुवरजसप्रकास' व हिन्दी के 'छंदप्रभाकर' के अनुसार इसके प्रत्येक चरण में नगण, जगण, नगण तथा अंत में गुरु होता है। समूचे ग्रन्थ में केवल एक स्थान पर ही इस छंद का प्रयोग हुआ है जिसकी संख्या भी एक ही है, किन्तु इसमें उक्त लक्षण पूर्ण रूप से लागू नहीं होते हैं। इस छंद का दूसरा नाम त्वरित गति (त्वरित गति:) है।

२. **अरध नाराच (अर्द्ध नाराच)** – ग्रन्थ के प्रथम भाग में इसकी संख्या १४ है।

३. **इकतीसौ** – समूचे ग्रन्थ में इसकी संख्या एक है जो ग्रन्थ के दूसरे भाग में आया हुआ है।

४. **कलहंस** – इस छंद के लक्षण भिन्न-भिन्न आचार्यों ने भिन्न-भिन्न दिये हैं। ग्रन्थ के प्रथम भाग में इसकी संख्या सात है।

५. **कवित्त कुंडलियौ** – यह एक मात्रिक छंद है। रघुवरजसप्रकास के अनुसार इसमें प्रथम कुंडळिया की छ: पंक्तियां जो क्रमश: १३-११, १३-११, ११-१३, ११-१३, ११-१३, ११-१३ मात्राओं की होती हैं। अंतिम दो पंक्तियां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उल्लाला की होती हैं जिनमें क्रमशः १५-१३, १५-१३ मात्राएँ होती हैं। कुंडळिया के प्रथम चरण को उलट कर उल्लाला के अंतिम चरण में रखा जाता है किन्तु ग्रंथकर्त्ता ने कुंडळिया के प्रथम चरण को उल्लाला के अंतिम चरण में नहीं रखा है। ग्रंथ में इसकी संख्या एक है जो ग्रंथ के दूसरे भाग में है।

६. **कवित्त दौढौ** – केवल राजस्थानी का ही एक मात्रिक छंद है। राजस्थानी के प्राप्य छंदशास्त्रों में लक्षण नहीं देखे गये हैं किन्तु स्वर्गीय श्री हरिनारायणजी पुरोहित, जयपुर के मतानुसार इसमें छः पद रोला के तथा अंतिम दो पद उल्लाला के होते हैं। अतः इसमें साधारण छप्पय (कवित्त) से दो चरण अधिक होने के कारण यह कवित्त दौढ़ौ कहलाता है। समूचे ग्रंथ में इसकी संख्या आठ है।

७. **कुस विचित्रा** – यह एक अनिश्चित छंद है। छंदप्रभाकर में कुसुम-विचित्रा छंद दिया हुआ है किन्तु उससे इसके लक्षण मेल नहीं खाते हैं। समूचे ग्रंथ में इसकी संख्या केवल एक है।

८. **गाथा (गाहा)** – यह संस्कृत का आर्या छंद है। समूचे ग्रंथ में इसकी संख्या १२ है।

९. **गाथा चौसर (गाहा चौसर)** – यह राजस्थानी का एक मात्रिक छंद है। समूचे ग्रन्थ में इसकी संख्या केवल एक है जो ग्रन्थ के पहले भाग में है।

१०. **गीत त्रकुटबंध** – डिंगल (राजस्थानी) का एक गीत (छंद) विशेष। समूचे ग्रंथ में आठ द्वालों का एक गीत है जो ग्रन्थ के पहले भाग में है।

११. **गीत सांणोर** – राजस्थानी का एक गीत (छंद) विशेष। समूचे ग्रंथ में चार द्वालों का एक गीत है जो ग्रंथ के दूसरे भाग में है।

१२. **चंचली (चंचला)** – एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, जगण, रगण, जगण, रगण व लघु के क्रम से १६ अक्षर होते हैं। इसका दूसरा नाम चित्रा है। ग्रन्थ में उक्त लक्षण नहीं मिलने के कारण छंदोभंग दोष है। यथा—

SSS ।S। S। S S । S ।।S।
संपेखे झळाळ सूज पूजै भुजा पतिसाह
।SS। ।। S S S।S ।S। S।
दिलीहूत धर दावौ, ऊससे पठांण एक ।।

समूचे ग्रंथ में इसकी संख्या ५ है जो ग्रन्थ के प्रथम भाग में है।

१३. **छप्पय (षट्पद)** – इसको राजस्थानी में कवित्त कहते हैं समूचे ग्रन्थ में इसकी संख्या ३६४ है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. **झंपताळ (झपताल)** – एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १४ मात्राएं होती हैं और अंत में गुरु होता है। समूचे ग्रन्थ में इसकी संख्या १८ है जो ग्रन्थ के प्रथम भाग में है।

१५. **झूलणा** – यह एक मात्रिक छंद है। यह कई प्रकार का होता है। ग्रन्थ में प्रयुक्त छंद के अनुसार इसके प्रत्येक चरण में (१३+१०)=२३ मात्रायें होती हैं। ग्रन्थ में इसकी संख्या २४ है जो ग्रन्थ के प्रथम भाग में है।

१६. **तारक** – यह एक वर्ण वृत्त है। रघुवरजसप्रकास के अनुसार इसके प्रत्येक पद में चार सगण और अंत में गुरु होता है। ग्रंथ में प्रयुक्त इस छंद में छंदोभंग दोष है। यथा—

।। ऽ। ऽ। ।। ।। ऽऽ
वर बंधिय कुंभ घण तिण वारा

ग्रंथ में इसकी संख्या चार है जो ग्रन्थ के प्रथम भाग में है।

१७. **त्रोटक** – प्रत्येक पद में चार सगण वाला एक वर्णवृत्त है। समूचे ग्रन्थ में इसकी संख्या १४५ है।

१८. **दंग** – इस छंद के लक्षण अस्पष्ट हैं। ग्रंथ में इसकी संख्या २५ है।

१९. **दवावैत** – यह एक प्रकार का गद्य है जो दो प्रकार का होता है— एक शुद्ध-बंध अर्थात् पद-बंध जिसमें अनुप्रास मिलाया जाता है और दूसरा गद्य-बंध जिसमें अनुप्रास नहीं मिलाया जाता है।

२०. **दूहा** – समूचे ग्रन्थ में इसकी संख्या ९४ है।

२१. **नाराच** – एक वर्णवृत्त। इसका दूसरा नाम पंचचांमर भी है। ग्रंथ में इसकी संख्या ५७ है।

२२. **निसिपालिका** – यह एक वर्णवृत्त है। समूचे ग्रंथ में इसकी संख्या ८ है।

२३. **नीसांणी** – राजस्थानी का एक मात्रिक छंद जिसका दूसरा नाम शुद्ध जांगड़ी गरवत नीसांणी भी है। ग्रन्थ में इसकी संख्या २६ है।

२४. **नीसांणी हंसगति** – राजस्थानी का एक मात्रिक छंद जिसका दूसरा नाम रूपमाला है। ग्रंथ में इसकी संख्या १४ है।

२५. **पद्धरी** – एक मात्रिक छंद। ग्रंथ में इसकी संख्या २०० है।

२६. **बे-अक्खरी (द्वैक्षरी)** – एक मात्रिक छंद जिसका प्रयोग कवि ने अन्य छंदों की अपेक्षा अधिक किया है। ग्रंथ में इसकी संख्या ६५४ है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२७. **भुजंगी** – संस्कृत का भुजंगप्रयात वर्णवृत्त जिसकी संख्या ग्रन्थ में १५५ है।

२८ **मछिक, मछिका** – संस्कृत का मल्लिका वर्णवृत्त जिसकी संख्या ग्रन्थ में २० है।

२९. **मत-मातंग लीलाकर दंडक** – एक वर्णवृत्त जिसकी संख्या समूचे ग्रंथ में एक है।

३०. **मालती** – संस्कृत का एक वर्णवृत्त जिसकी संख्या ग्रन्थ में ११ है।

३१. **मोतीदाम** – चार जगण का एक सम वर्णवृत्त जिसकी संख्या ग्रंथ में ५८२ है।

३२. **रसावला** – एक मात्रिक छंद जिसकी संख्या समूचे ग्रंथ में १५ है।

३३. **रूपमाला** – यह एक मात्रिक छंद है। इसमें १४ और १० की यति से कुल २४ मात्राएँ होती हैं और अन्त में गुरु लघु होता है।

यह निसांणी हंसगति से भिन्न है। इसकी संख्या ग्रन्थ में तीन है।

३४. **रोमकंद** – डिंगल (राजस्थानी) का एक वर्णवृत्त। इसके प्रत्येक चरण में ८ सगण होते हैं जिसमें ९, ९, ८ और ६ वर्णों की यति से कुल ३२ वर्ण होते हैं। इसका प्रत्येक चौथा चरण समान होता है जिसके अंतिम आधे भाग की पुनरावृत्ति होती रहती है। राजस्थानी के प्राप्त छंद-शास्त्र के ग्रन्थों में इसका उल्लेख नहीं मिला है। ग्रंथ में इसकी संख्या ९ है।

३५ **विरवेखक** – एक वर्णवृत्त जिसको हिन्दी में विशेषक, नील, अश्वगति और लीला भी कहते हैं। समूचे ग्रन्थ में इसकी संख्या एक है।

३६. **विराज** – एक वर्णवृत्त जिसको हिन्दी में शंखनारी और सोमराजी भी कहते हैं। ग्रंथ में इसकी संख्या २५ है।

३७. **वैताळ** – एक मात्रिक छंद जिसको हिन्दी में कामरूप कहते हैं। ग्रंथ में इसकी संख्या एक ही है।

३८. **सवैया** – एक वर्णवृत्त जो समूचे ग्रंथ में एक ही है।

३९. **सारसी** – प्रत्येक चरण में १६ और १२ की यति के कुल २८ मात्राओं का एक राजस्थानी मात्रिक छंद जिसके मध्य में तीन बार अनुप्रास की आवृत्ति होती है तथा चरण के प्रारम्भ में और अंत में चार मात्राएँ होती हैं किन्तु ग्रंथ में प्रयुक्त छंद के चरण के आरम्भ में और अंत में प्रायः ५ मात्राएँ हैं। ग्रंथ में इसकी ३९ संख्या है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४० **सोरठा** – यह एक मात्रिक छंद है। समूचे ग्रंथ में इसकी संख्या १२ है।

४१ **हणूफाल** – यह एक मात्रिक छंद है। ग्रंथ में इसकी संख्या २५५ है।

प्रकृति - चित्रण

मध्य युग में कवियों का ध्यान प्रबन्ध काव्यों के रचने की ओर नहीं गया। वीर काव्य-धारा के जो नाम मात्र प्रबन्ध काव्य रचे गये उनमें प्रकृति प्रायः उपेक्षित रही है। इन ग्रन्थों में इतिवृत्तात्मकता, युद्ध-वर्णन, युद्धसामग्री, शौर्य-चित्रण, योद्धाओं तथा अन्य वस्तुओं की लम्बी सूचियाँ ही अधिक मिलती हैं। साज-सज्जा, राजसी ठाठ-बाट आदि की ओर ही कवियों का झुकाव अधिक रहा है। प्रकृति का थोड़ा बहुत रूप मिलता है, वह एक परम्परागत शैली का अनुकरण मात्र है। इस ग्रन्थ के रचयिता कविराज करणीदान भी प्रकृति का बिम्ब ग्रहण करने में असमर्थ रहे हैं।

उद्यानों का वर्णन करते हुए कवि ने अनेक वृक्षों के नाम दिये हैं। निम्न उदाहरण से स्पष्ट है—

> अंगूर सरदूं फळी अनेक बेलि। बेदांनै दाखां बेदांनै अनार।
> चिलकौचे बेह और सेबूंका विस्तार। स्रीफळ विदांम।
> और नींबू के लूंब। कमळा रेसमी नारंगी पैबंदूका हूंनर अदभूत।

उक्त वर्णन से कवि की असावधानी प्रकट होती है। सेव, नारियल, बादाम आदि का जोधपुर के उद्यानों में होना असम्भव था और इस समय भी ये वृक्ष यहां नहीं पाये जाते हैं। अतः यह परम्परागत शैली के अनुकरण करने का परिचायक है। यहां पर कवि वृक्षों की नामावली न देकर प्रकृति के स्वाभाविक दृश्य अंकित कर सकता था।

कई स्थानों पर कवि ने अतिशयोक्तिपूर्ण चित्रण भी किया है। यथा—

> अभै सागर, बाळ समंद दोऊ, मांन सरोवर जैसे।
> अम्रित के समुद्र तैंसे लहरूं के प्रवाह छाजै॥
> जिनका रूप देखे से छीर समुद्र का गुमर भाजै।

इन छोटे तालाबों की तुलना क्षीर सागर से करदी है जो अतिशयोक्तिपूर्ण है। यह सब होते हुए भी कवि ने कहीं-कहीं प्रकृति का स्वाभाविक चित्रण भी किया है। यथा—

> सघन गंभीर आरांमूं का पार नहीं आवै।
> आफताफ का तेज जिसकी छांह भेद जमीन लग न जावै।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऐसे ही जोधांण तैसे बगीचे । मंडोवर के बीच निवास !
जहां श्री महाराज के खड़ग जैतकारी,
काळै गोरे महाबीरूं भेरूं का बास ।
ऐसे बगीचूं का सिंगार सोभा का अथाग ।

यहां पर वृक्षों की सघनता के कारण सूर्य की किरणों का जमीन तक नहीं पहुँचना, उद्यानों की सुन्दरता आदि का वर्णन कर के कवि ने वास्तविकता को प्रकट करने का प्रयत्न किया है जो सराहनीय है। अतः यह स्पष्ट है कि कवि में बहुत सूझ-बूझ थी। यदि वह यथास्थान इस ओर बढ़ने का थोड़ा-सा यत्न और करता तो इस दृष्टि से भी ग्रंथ महत्वपूर्ण हो सकता था। कवि का मुख्य विषय इतिहास लिखना व महाराजा का युद्ध-वर्णन करना था, किन्तु ग्रंथ में कई स्थान ऐसे भी हैं जहां परम्परागत शैली को न अपना कर स्वाभाविक चित्रण किया जा सकता था।

शैली और भाषा

कवि ने ग्रंथ में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है, क्योंकि उसका प्रधान लक्ष्य ही महाराजा अभयसिंह के पूर्वजों का इतिवृत्त लिखना और महाराजा द्वारा अहमदाबाद-विजय के युद्ध का वर्णन करना था। पात्रों के संवादों का समावेश कर के तथा विभिन्न प्रकार के छंदों व गद्यवत दवावैत का प्रयोग कर के ग्रंथ को रोचक बनाने का प्रयत्न किया है।

ग्रंथ में नादात्मक एवं संयुक्ताक्षर-शैली का प्रायः बहिष्कार हुआ है। भाषा में अलंकारों को लादने का प्रयास नहीं किया गया है। अलंकार स्वाभाविक रूप से काव्य-प्रवाह में आते गये हैं। अतः नीरसता नहीं आ पाई है। ओज गुण की प्रधानता के साथ प्रसाद और माधुर्य का भी आभास होता है। कवि ने पात्रों के अनुरूप भाषा का रूप बदलने का प्रयत्न किया है, जैसे मुगल बादशाह का वर्णन या उसके द्वारा कुछ संवाद कहलाना है तो उसमें फारसी, अरबी और तुर्की के शब्दों का प्रायः प्रयोग किया गया है जो प्रशंसनीय है। निम्न उदाहरण हैं—

दसकत करै न मिळै दिवांणां, अरजी फरज मतालब ऊपर।
×
रबिल आल मीनां रहै।
×
मुनसफ़ खावौ मुलक, उतन जावौ सब रावत।
×
ईसफहां आसफां इलम फातमां उचारै।
महमंद इमांम कहि कहि मुगळ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूसरी कई भाषाओं का प्रयोग भी अलग-अलग उदाहरण के रूप में किया है, जो कवि के पाण्डित्य-प्रदर्शन का द्योतक है। मुख्यतः ग्रंथ की भाषा राजस्थानी ही है, जिसमें संस्कृत के तत्सम और तद्भव दोनों प्रकार के शब्दों का प्रयोग हुआ है। साथ ही राजस्थान के समीपवर्ती क्षेत्रों जैसे पंजाबी, सिंधी, मराठी आदि के शब्द भी यत्र-तत्र दृष्टिगोचर होते हैं।

जिस खड़ी बोली का परिमार्जित रूप आज हमारे समक्ष है, चारण कवि ने उसकी झलक दवावैत के अन्तर्गत दे दी है जो महत्त्वपूर्ण है। निम्न उदाहरण देखिये—

सिकार की चढ़ाई।
जिस बखत हवालगींरू नै सलांम बजाय असवारी का सराजांम सब हाजर किया।
किस किस तवह के कहि बताय।
घोड-बहलि माफे इक्के खासे सुखपाळ, मेघाडंबर होदूं सें गजराज।
साझू मैं झळूंस अनेक खास-वरदारूं नै धारि परिपंखी सजि आए।
मीर-सिकारी तिस बखत स्री महाराज सबज पौसाक पहरि।
आखेट व्रत के आवध धारे तीसरे नगारे के डंके रकेब पाव धारे।
बाज राज आरोह कैसे दरसावैं।
सूरज सपतास का सा सरूप नजर आवैं।

कवि ने प्रसंगानुसार वस्तुओं की लम्बी सूची तथा नामों की आवृत्ति भी की है। कहीं-कहीं ग्रंथ में पात्रों के नामों के स्थान पर उनके नाम के पर्यायवाची रख दिये गये हैं, जैसे समुद्रसिंह के नाम के स्थान पर समुद्र के पर्यायवाची रतनागर (रत्नाकर) शब्द रख दिया गया है—

जुड़ै 'रतनागर' भीम सुजाव,

सुमेरसिंह के लिये सुमेरु पर्वत का पर्याय 'गिरमेर' शब्द का प्रयोग कर दिया है—

विढै 'गिरमेर' समोभ्रम 'वैण'

इसी प्रकार चन्दनसिंह के लिये मलियागिर (मलियागिरी) प्रयुक्त हुआ है।

सुत 'मलियागिर' 'ऊदल' साह

कई स्थानों पर नाम के केवल आधे भाग का ही प्रयोग किया है, या नाम उलट कर रख दिया गया है जैसे उदयभांण नाम के स्थान पर केवल भांण शब्द ही लिख दिया है—

भटी इम 'भांण' बखांणत भांण

सू. प्र., भाग २, पृष्ठ १९६ से २०४ तक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निम्न उदाहरण में सुरतांणसिंह के लिये केवल 'सुरतांन' और पदमसिंह के लिये केवल 'पदम' ही रख दिया है––

'जुड़े 'सुरतांण' 'पदम' सुजाव' ।

सू.प्र.भाग ३, पृ. १४५

निम्न उदाहरण में 'उमेदसिंघ' के स्थान पर उसका उलटा 'सींघ उमेद' प्रयुक्त हुआ है—

जुड़ै खग गेंद जहीं तळ जोड़ ।
'अनावत' 'सींघ उमेद' अरोड़ ।।

सू. प्र. भाग ३, पृ. १२२

अल्पार्थ का प्रयोग अवज्ञा, मान-प्रतिष्ठा व प्रेम-प्रदर्शन के लिये होता है, जिसका प्रयोग कवि ने बाहुल्यता से किया है, जैसे केसरीसिंह पुरोहित के लिये कवि ने 'केहरियौ' लिख दिया है जो अवज्ञासूचक नहीं है—

सजै सिवड़ां पति दारण सूर,
पिरोहित 'केहरियौ' रस पूर ।

सू. प्र. भाग ३, पृ. १६१

अल्पार्थ के साथ ही महत्त्ववाची नामों का प्रयोग भी बराबर मिलता है, जैसे इसी केसरीसिंह के लिये ही 'केहर' महत्त्ववाची के रूप में प्रयुक्त हुआ है––

ददौ इण 'केहर' रौ दइवांण ।

सू. प्र. भाग ३, पृ. १६१

इसी प्रकार अन्य व्यक्तिवाचक शब्द के भी महत्त्ववाची शब्द प्रयुक्त हुए हैं, जैसे राजसिंह-राजड़, कुसळसिंह-कुसळेस, पृथ्वीसिंह-पीथल, प्रतापसिंह-पातल आदि ।

ग्रंथ में नामों की अत्यधिक तोड़-मरोड़ हुई है, चाहे वे किसी मनुष्य के नाम हों अथवा किसी स्थान विशेष के । एक ही नाम के अनेक रूपभेद प्रयुक्त हुये हैं, जैसे महाराजा अजीतसिंह के लिये कवि ने निम्न रूपभेदों का प्रयोग किया है—

अगजीत, अजण, अजन, अजन्न, अजमल, अजमलि,
अजमल्ल, अजमाल, अजा, अजीत, अजै अजो ।

इसी प्रकार महाराजा अभयसिंह के लिये––

अभपत, अभपति, अभयपती, अभमल, अभमल्ल, अभमाल, अभरज, अभसाह, अभा, अभियौ, अभै, अभैपति, अभैमल, अभैमाल, अभैयसिंह, अभैसाह अभैसिंघ, अभैसींघ, अभो ।

उक्त विवरण से स्पष्ट है कि ऐसे स्थलों को राजस्थानी भाषा-विज्ञान, व्याकरण, राजस्थानी संस्कृति आदि के पूर्ण ज्ञान के बिना समझना दुरूह हो जाता है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पादपूर्ति के लिये ग्रंथ में प्रायः 'ह', 'स', 'क' और 'य' अक्षरों का प्रयोग हुआ है। वेदों एवं संस्कृत साहित्य में भी 'ह' पादपूर्ति के रूप में प्रचुर मात्रा में आया है[१]। ग्रंथानुसार निम्न उदाहरण में 'क' अक्षर पादपूर्ति के लिये प्रयुक्त हुआ है :–

'उमेदक आगळि पांण अछेह'

सू. प्र. भाग ३, पृ. १२०

निम्न उदाहरण में 'य' अक्षर प्रयुक्त हुआ है—

'पतावत' गोपिय नाथ प्रचंड।

सू. प्र. भाग ३, पृ. १४७

इसी प्रकार निम्न उदाहरण में 'ह' अक्षर प्रयुक्त हुआ है—

'उमेदहवार लड़ै भड़ ओप'

सू. प्र. भाग २, पृ. १६१

कवि ने यथास्थान मुहावरों व लोकोक्तियों का प्रयोग कर के भाव को अधिक स्पष्ट और भाषा को सरस बनाया है—

' जिकौ करू' ऊजळौ, जंग करि लूंण 'जसा' रौ।

सू. प्र. भाग २, पृ. २७

यहां पर 'लूण ऊजळौ करणौ' मुहावरा है।

'दिली झोला खाए दळ।'

सू. प्र. भाग २, पृ. ४८

यहाँ पर 'झोला खाणौ' मुहावरा है।

'दीवौ कर देखजै इसी नह लाय अकारी'

सू. प्र. भाग २, पृ. २४१

यहाँ पर 'लायनै दीवौ कर देखणौ' लोकोक्ति है।

अंत में यह कहना होगा कि ग्रंथ में वर्णन की विशदता है। प्रायः सरल और स्वाभाविक शैली द्वारा भावों का समुचित उत्कर्ष दिखलाने में कवि महोदय पूर्ण रूप से सफल हुए हैं। ग्रंथ में राजस्थानी भाषा का अधिक निखरा हुआ तथा सरस रूप दिखलाई देता है।

---

१ (अ) नैव चक्रे मनः स्थाने वीक्षमाणो महाबलौ।
कपेः परमभीतस्य चित्तं व्यवससाद ह॥
सुग्रीवस्तु शुभं वाक्यं श्रुत्वा सर्वं हनूमतः।
ततः शुभतरं वाक्य हनूमन्तमुवाच ह॥
—बाल्मीकि रामायण, किष्किन्धा काण्ड, द्वितीय सर्ग, श्लोक ३. १९।

(आ) अमरकोश में भी इसका उल्लेख है—

तु हि च स्म ह वै पादपूरणे 'इत्यमरः'।

बाल्मीकि रामायण के बाद संस्कृत ग्रंथों में प्रायः इस प्रकार के प्रयोग नहीं मिलते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूरजप्रकास का ऐतिहासिक महत्त्व

कवि ने ग्रंथारम्भ में सूर्य वंश के प्रारंभिक राजा इक्ष्वाकु से महाराजा अभयसिंह के वंशसम्बन्ध को पुष्ट करने के लिये लम्बी कुल-तालिका दे दी है। इसके अन्तर्गत संक्षिप्त रामायण का वर्णन भी कर दिया है। तत्पश्चात् क्रम से चलते हुए आगे राजा पुंज के तेरह पुत्रों का वर्णन किया है और उसके बड़े पुत्र की चौथी पीढ़ी में कन्नौज नरेश जयचन्द राठौड़ का वर्णन किया है।

उक्त कुल-तालिका को ऐतिहासिक दृष्टि से देखने से हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि कवि ने केवल पुराणों का आश्रय लेकर ही यह सब कुछ लिख डाला है। अतः यह वर्णन सत्य है अथवा असत्य इसका निर्णय करना उक्त घटनाओं की पूर्ण ऐतिहासिक सामग्री के प्राप्त हुए बिना कठिन है। कवि ने कन्नौज के राजा जयचन्द राठौड़ का जो वर्णन किया है वह ऐतिहासिक दृष्टिकोण से प्रायः ठीक है। इसी जयचन्द राठौड़ का समकालीन पृथ्वीराज चौहान था।

यहाँ पहले हमें ग्रन्थ में दी हुई तिथियों की सत्यता के बारे में विचार करना है, यद्यपि कवि ने तिथियों का उल्लेख बहुत कम किया है।

सर्व प्रथम कवि ने राव जोधाजी द्वारा जोधपुर के किले के निर्माण की तिथि (श्रावणादि) वि० सं० १५१५ की ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी (१२ मई १४५९ ई०) का उल्लेख किया है जो ऐतिहासिक दृष्टि से ठीक है।

तत्पश्चात् कवि ने महाराजा अजीतसिंह के जीवन-चरित्र के अन्तर्गत जालोर में (श्रावणादि) वि० सं० १७५९ मार्गशीर्ष वदि १४ शनिवार (७ नवम्बर १७०२ ई०) को महाराजा अभयसिंह का जन्म होना लिखा है। यह तिथि भी सत्य है।

अहमदाबाद-युद्ध के अन्तर्गत कवि ने एक स्थान पर केवल सप्तमी, अष्टमी तथा नवमी का उल्लेख किया है। इनके साथ मास एवं संवत् नहीं दिया है किंतु आगे युद्ध विजय करने की तिथि से इनका सही अनुमान लगाया जा सकता है। सर बुलन्द ने पहले तीन दिन तक गोलाबारी की, उसने चौथे दिन मैदान में आ कर युद्ध किया और सायंकाल तक बहुत वीरता से लड़ा, फिर भी उसकी हार निश्चित हो गई। अतः वह युद्ध-स्थल छोड़ कर शहर की ओर चला गया। यह महाराजा की विजय का दिन था। इस तिथि को कवि ने स्पष्टतया ग्रंथ में अंकित किया है, यथा—

'सत्रैसे संमत सत्यासियै विजै दसमी सनि जीत'

सू. प्र. भाग ३, पृ. २७३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्पष्ट है कि (श्रावणादि) वि० सं० १७८७ की विजयादशमी शनिवार (१० अक्टूबर सन् १७३० ई०) को महाराजा विजयी हुए। अतः यह भी स्पष्ट हो गया कि उक्त तीन तिथियां वि० सं० १७८७ की आश्विन शुक्ला सप्तमी, अष्टमी और नवमी ७, ८ और ९ अक्टूबर सन् १७३० ई० हैं अर्थात् दोनों ओर से इन तीन दिनों में गोलाबारी हुई। चौथे दिन विजयादशमी थी। उसी दिन खुल्लमखुल्ला लड़ाई हुई और महाराजा विजयी हुए।

डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा[1] और पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ[2] ने महाराजा की विजय कार्तिक वदि ५ वि० सं १७८७ तदनुसार २० अक्टूबर सन् १७३० ई० लिखा है, किन्तु 'सूरजप्रकास' के ही समकालीन ग्रंथ 'राजरूपक' में महाराजा द्वारा अहमदाबाद विजय की तिथि विजयादशमी वि० सं० १७८७ (१० अक्टूबर सन् १७३० ई०) दी है। यथा--

"सतरै समत सत्यासियौ, आसू उज्जळ पक्ख।
विजै दसम भागा विचित्र, अभै प्रतिग्या अक्ख ॥"

इस प्रकार स्पष्ट है कि 'राजरूपक'[3] की उक्त पंक्तियां 'सूरजप्रकास' में दी हुई महाराजा के विजय के दिन की तिथि को सत्य प्रमाणित करती हैं।

'राज-रूपक' के रचयिता कवि वीरभांण रतनू और 'सूरजप्रकास' के रचयिता कविराजा करणीदान दोनों युद्ध में मौजूद थे और उन्होंने आंखों देखा हाल लिखा है, अतः डॉ० ओझा और रेऊ की अपेक्षा यह तिथि अधिक विश्वसनीय है। इसके अतिरिक्त प्रसिद्ध इतिहासकार कविराजा बाँकीदास[4] ने भी वि० सं० १७८७ की विजयादशमी (१० अक्टूबर सन् १७३० ई०) को ही महाराजा अभयसिंह की अहमदाबाद पर विजय होना लिखा है, अतः अब इस तिथि की सत्यता के बारे में किसी प्रकार के सन्देह को स्थान नहीं दिया जा सकता है।

महाराजा द्वारा अहमदाबाद विजय के एक वर्ष बाद कवि ने इस ग्रंथ को सम्पूर्ण कर दिया था। इस ग्रंथ-पूर्णता की तिथि को भी कवि ने महाराजा की

---

[1] डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा द्वारा लिखित 'जोधपुर राज्य का इतिहास' भाग २, पृष्ठ ६१५ तथा पृष्ठ ६१७ का फुटनोट।

[2] पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ द्वारा लिखित 'मारवाड़ का इतिहास' भाग १, पृष्ठ ३३८।

[3] देखो राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर में संग्रहीत हस्तलिखित 'राजरूपक' की प्रति संख्या १५६३० पृष्ठ ३६३ तथा गुटका संख्या १३७७९ पत्र सं. २७४।

[4] राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मंदिर जयपुर के ग्रन्थांक २१ 'बांकीदास री ख्यात' पृष्ठ ३९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विजय की तिथि के साथ ही अंकित कर दिया है। यथा—

सत्रैसै समत सत्यासियं, विजै दसमी सनि जीत।
वदि कातिक गुण वरणियौ, दसमी वार अदीत।
वणियौ ग्रंथ इक बरस विच, उकति अरथ अणपार।
छंद अनुस्टुप करिउ जन, सत पंच सात हजार।
'अभा' तणी सुभ नजर अति, वधि छक सुकवि विधांन।
कुरव दांन लहियौ अधिक, कहियौ करणीदांन॥

सू. प्र. भाग ३, पृ. २७३

उक्त छप्पय से स्पष्ट है कि कवि ने महाराजा के विजय-संवत् १७८७ की विजयादशमी (ई० सन् १० अक्तूबर १७३०) से लगभग एक वर्ष बाद कार्तिक कृष्णा दशमी रविवार को ग्रंथ लिख कर सम्पूर्ण किया। अतः यह वि० सं० १७८८ तदनुसार ई० सन् १७३१ ही हो सकता है।

घटनाओं की ऐतिहासिक प्रामाणिकता

जयचन्द के वंशज सीहा के पुत्र आसथान (जिसने मारवाड़ में राज्य स्थापित किया था) से लेकर कवि ने अपने आश्रयदाता महाराजा अभयसिंह के पिता महाराजा अजीतसिंह तक की वंश-तालिका के अन्तर्गत कई राजाओं का विस्तार से वर्णन किया है, जिसमें अजीतसिंह का वर्णन बहुत विस्तृत है।

यह वर्णन ऐतिहासिक दृष्टि से प्रायः ठीक जान पड़ता है। किन्तु, कुछ छोटी-मोटी घटनाओं के बारे में कहीं कहीं कवि की असावधानी भी प्रकट होती है। जैसे, राव जोधा के बाद उसका पुत्र राव सातल गद्दी पर बैठा। उसने (श्रावणादि) वि० सं० १५४५ से १५४८ तदनुसार ई० सं० १४८६ से १४९२ तक तीन वर्ष राज्य किया। वि० सं० १५४८ (ई० सं० १४९२) में मुसलमानों ने गाँव पीपाड़ से कुछ औरतों (तीजणियों)[1] का अपहरण किया। जब राव सातल को पता चला तो उसने गाँव कोसाणे में उन मुसलमानों को परास्त करके 'तीजणियों' को छुड़ाया। इस युद्ध में मीर घडूला नामक मुसलमान मारा गया। युद्ध में राव सातल बहुत घायल हो गया था। अतः कुछ दिन बाद वह भी मर गया और उसके कोई पुत्र नहीं होने के कारण जोधाजी का एक पुत्र राव सूजा गद्दी पर बैठा। यद्यपि राव सूजा ने राव सातल के साथ मुसलमानों से युद्ध किया[2] किन्तु मीर घडूला को मारने की घटना का सम्बन्ध राव सातल के राज्य

---

[1] डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा द्वारा लिखित 'जोधपुर राज्य का इतिहास', भाग १, पृष्ठ २६१ का तीसरा फुट नोट।

[2] डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा द्वारा लिखित 'जोधपुर राज्य का इतिहास', भाग १, पृष्ठ २६१–२६२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

काल से ही है। इस में कवि ने जोधाजी के बाद राव सूजा का ही राजा होना लिखा है और मीर घडूला[1] के मारे जाने की घटना का सम्बन्ध उसी से जोड़ दिया है। ग्रंथ में राव सातल का बिलकुल उल्लेख नहीं किया गया है, जिसका कारण कवि की असावधानी ही हो सकती है। आगे महाराजा अजीतसिंह तक का वर्णन इतिहास से प्राय: ठीक मेल खाता है।

महाराजा अभयसिंह के राज्याभिषेक के बाद से उनके द्वारा अहमदाबाद विजय तक का वर्णन करना ही कवि का मुख्य उद्देश्य था। अत: हम आगे इन्हीं घटनाओं की ऐतिहासिक विवेचना करने का प्रयत्न करेंगे।

महाराजकुमार अभयसिंह को दिल्ली भेजना

जब महाराजा अजीतसिंह ने नागौर के राव इन्द्रसिंह के पुत्र मोहकमसिंह को दिल्ली में मरवा डाला तो बादशाह फर्रुखशियर ने हुसेनअली के साथ महाराजा के विरुद्ध बहुत बड़ा यवन-दल भेजा। महाराजा ने हुसेनअली से संधि करली, जिसके अनुसार महाराजकुमार अभयसिंह को उसके साथ दिल्ली भेजा गया। बादशाह ने महाराजकुमार का समुचित स्वागत किया। यह घटना इतिहास-सम्मत है।

महाराजकुमार अभयसिंह को मुजफ्फरअली खां का सामना करने भेजना

ग्रन्थानुसार महाराजा अजीतसिंह की बढ़ती हुई शक्ति को दबाने के लिये बादशाह मुहम्मद शाह ने मुजफ्फरअली खां को शाही सेना के साथ भेजा। उस समय महाराजा अजीतसिंह अजमेर में बादशाह की तरह शान से रहते थे। महाराजा ने मुजफ्फरअली खाँ का सामना करने के लिये राजकुमार अभयसिंह को राठौड़वाहिनी के साथ भेजा। राठौड़ों के भय से मुजफ्फर खां भाग गया।

ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार वि० सं० १७७८ (ई० सं० १७२१ में बादशाह मुहम्मदशाह ने मुजफ्फरअली खाँ को अजमेर की सूबेदारी दी। महाराजा अजीतसिंह का दमन करने के लिये छ: लाख रुपये सेना के व्यय स्वरूप तय हुए, किन्तु उस समय उसे दो लाख ही मिले। बादशाह ने सोचा कि शाही सेना का अपने विरुद्ध आना सुन कर अजीतसिंह अजमेर छोड़ देगा किन्तु जब महाराजा ने ऐसा नहीं किया तो बादशाह ने मुजफ्फरअली खाँ को मनोहरपुर में ही ठहर जाने का फरमान भेजा। वहाँ वह तीन मास तक पड़ा रहा और उसके पास सेना आदि पर किया जाने वाला व्यय समाप्त हो गया। बादशाह

[1] देखो सूरजप्रकास भाग १, पृष्ठ २५२ का फुटनोट।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की ओर से भी सैनिकों के लिये वेतन वगैरह नहीं पहुँच सका। उसके सिपाही उसे छोड़ कर जाने लगे। आमेर नरेश जयसिंह ने उसे अपने पास बुला लिया। कुछ दिनों बाद उसने अजमेर की सूबेदारी का फरमान बादशाह के पास लौटा कर स्वयं फ़कीर बन गया।[१]

ग्रंथ में कवि ने महाराजकुमार अभयसिंह के भय से उसके भाग जाने का उल्लेख किया है। 'सूरजप्रकास' के साथ ही बने ग्रन्थ 'राजरूपक'[२] से भी इस कथन की पुष्टि होती है, किन्तु इस घटना के कुछ ही दिनों बाद महाराजा अजीतसिंह ने बादशाह के पास एक अर्जी[३] भेजी जिसमें उन्होंने लिखा "मुजफ्फरअली खाँ मेरे पास पहुँचा ही नहीं, मैं उसे अजमेर सौंप देता तथा राजकुमार अभयसिंह को मेवातियों से झगड़ा हो जाने के कारण नारनौल आदि पर भेजा था" अतः स्पष्ट है कि मुजफ्फरअली खाँ अभयसिंह के भय से नहीं भागा था।

महाराजा अजीतसिंह बहुत बड़े राजनीतिज्ञ थे। अतः यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उन्होंने बादशाह को खुश करने के लिए ही ऐसी अर्जी लिखी हो। मुजफ्फरअली खाँ के सामने धनाभाव की समस्या के साथ ही मुख्य कारण राठौड़ों का भय था। अतः 'सूरजप्रकास' और 'राजरूपक' पर अधिक विश्वास किया जा सकता है।

तत्पश्चात् महाराजकुमार अभयसिंह द्वारा नारनौल और शाहजहाँपुर आदि लूटे जाने की घटनायें इतिहास-सम्मत हैं।

महाराजकुमार अभयसिंह का दिल्ली जाना

नाहर खाँ के मारे जाने पर वि०सं० १७८० (ई०स० १७२३) में बादशाह ने शरफुद्दौला इरादतमंद खाँ के साथ आमेर नरेश जयसिंह तथा अन्य कई अमीरों का एक बहुत बड़ा यवन-दल महाराजा के विरुद्ध भेजा। इसमें लगभग बाईस बड़े-बड़े अमीर और राजा थे। महाराजा अजमेर के किले की रक्षा का भार नीबाज ठाकुर ऊदावत अमरसिंह पर छोड़ कर स्वयं जोधपुर आ गये। अमरसिंह ने कई दिन तक सामना किया। बाद में आमेर नरेश सवाई जयसिंह ने महाराजा और शाही सेनाध्यक्ष के बीच संधि करवा दी जिसमें महाराजकुमार

---

[१] डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा द्वारा लिखित 'राजपूताने का इतिहास', भाग २, पृष्ठ ५९३

[२] 'राजरूपक' पृष्ठ ५३४

[३] डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा द्वारा लिखित 'राजपूताने का इतिहास', भाग २, पृष्ठ ५९४–५९५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभयसिंह का दिल्ली जाना तय हुआ। यह घटना भी इतिहास-सम्मत है।

महाराजकुमार अभयसिंह का बादशाह के दरबार में कुपित होना

एक समय दिल्ली में महाराजकुमार अभयसिंह बादशाह मुहम्मदशाह के दरबार में गये। वहाँ बैठे हुए सभी बड़े बड़े उमरावों और अमीरों को पीछे छोड़ते हुए वे बादशाह के बिलकुल निकट पहुँच गये। उस समय वहाँ के एक अमीर ने इन्हें रोक दिया। इस पर उन्होंने क्रोधित होकर कटार निकाल ली। बादशाह मुहम्मदशाह, जो यह सब कुछ देख रहा था, तुरन्त सिंहासन पर से उठा और उसने तुरन्त अपने गले में पहना हुआ हीरों का हार इनको पहना दिया तथा अनुनय-विनय करके बड़ी कठिनाई से इनका क्रोध शान्त किया।

इस घटना का उल्लेख टॉड साहब ने भी किया है।[1] यद्यपि बहुत कम इतिहासकारों ने इस घटना का उल्लेख किया है किन्तु यह घटना असत्य प्रतीत नहीं होती है। राठौड़ राजकुमार के इस कार्य से हमें राठौड़ अमरसिंह द्वारा घटित बादशाह शाहजहाँ के दरबार की घटना का स्मरण हो जाता है।

महाराजा अजीतसिंह का मारा जाना

टॉड[2], ओझा[3], रेउ[4] तथा अन्य इतिहासकारों के अनुसार दिल्ली में महाराजकुमार अभयसिंह ने बादशाह के षड़यंत्र में फंस कर तथा आमेर नरेश जयसिंह के सिखाने से अपने पिता महाराजा अजीतसिंह को मारने के लिये अपने भाई बखतसिंह को लिखा। उसने (चैत्रादि) वि० सं० १७८१ आषाढ़ सुदि १३ तदनुसार २३ जून १७२४ ई० को जनाने में सोते हुए महाराजा को मार डाला।

'सूरजप्रकास' और 'राजरूपक' में केवल महाराजा के देहावसान का ही उल्लेख करके कवि मौन हो गये हैं। सम्भवतया राज्याश्रित होने के कारण इन ग्रंथों में ये कवि अपने इस कर्तव्य का पूर्ण रूप से पालन न कर के निष्पक्षता से पराङ्मुख रहे।

महाराजा अभयसिंह का राजतिलक

महाराजा अजीतसिंह की मृत्यु के समय राजकुमार अभयसिंह दिल्ली में थे। उनका राजतिलक भी दिल्ली में ही हुआ। इस अवसर पर बादशाह

---

१ टॉड राजस्थान, अनुवादित, पं० बलदेवप्रसाद मिश्र, मुरादाबाद, भाग २, पृष्ठ १५७–१५८

२ टॉड राजस्थान, अनुवादित, पं० बलदेवप्रसाद मिश्र, मुरादाबाद, भाग २, पृष्ठ १५८–१५९

३ डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा द्वारा लिखित राजपूताने का इतिहास, भाग २, पृष्ठ ६००

४ मारवाड़ का इतिहास, भाग १, पृष्ठ ३२७, पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चरित्रनायक महाराजा अभयसिंहजी (वि० सं १७८१ से १८०६)

(राजस्थानी शोध-संस्थान, जोधपुर के संचालक श्री नारायणसिंह भाटी के सौजन्य से प्राप्त चित्र)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुहम्मद शाह ने इन्हें उपहार भेंट किये और नागौर आदि परगने, जो महाराजा अजीतसिंह से ले लिये थे, इन्हें पुनः लौटा दिये। ऐतिहासिक दृष्टि से यह घटना ठीक है।

महाराजा अभयसिंह का नागौर पर आक्रमण करना और अपने अनुज बखतसिंह को वहाँ का स्वामी बनाना

नागौर पर उस समय राव इन्द्रसिंह का अधिकार था। महाराजा अभयसिंह ने उसको हरा कर अपने अनुज बखतसिंह को वहाँ का राजा बनाया।

ऐतिहासिक दृष्टि से महाराजकुमार अभयसिंह ने दिल्ली से जो पत्र लिखा था उसमें अपने अनुज बखतसिंह को यह प्रलोभन दिया था कि यदि तुम अपने पिता महाराजा अजीतसिंह को मार डालो तो मैं तुम्हें नागौर दे दूंगा। उसी के अनुसार बखतसिंह को वि० सं० १७८२ (ई० स० १७२५) में 'राजाधिराज' के खिताब के साथ नागौर का स्वामी बनाया गया[1]।

महाराजा का बादशाह के दरबार में पान का बीड़ा उठाना

जब बादशाह मुहम्मद शाह को यह मालूम हुआ कि सर बुलन्द गुजरात में दक्षिणियों से मिल गया है और स्वयं गुजरात का अधीश्वर बन गया है तो वह बड़ा भयभीत हुआ और एक दरबार किया जिसमें उस समय के बड़े-बड़े उमराव, नवाब, अमीर, राजा-महाराजा उपस्थित थे। बादशाह ने सर बुलन्द के विरुद्ध अपने दरबार में पान का बीड़ा घुमाया। सर बुलन्द की शक्ति का मुकाबिला करने के लिये किसी को भी हिम्मत बीड़े को छूने की नहीं हुई। महाराजा अभयसिंह ने बड़े उत्साह से बादशाह को धैर्य बँधाते हुए बीड़े को ग्रहण किया।

'राजरूपक'[2] से भी इस घटना की पुष्टि होती है। टॉड[3] साहब के अतिरिक्त किसी अन्य इतिहासवेत्ता ने इस घटना का उल्लेख किया हो, ऐसा देखने में नहीं आया है। यद्यपि टॉड साहब ने 'सूरजप्रकास' और 'राजरूपक' के आधार पर ही लिखा है, किन्तु यह घटना सत्य प्रतीत होती है, क्योंकि उस समय पान का बीड़ा घुमाये जाने की प्रथा थी।

---

[1] टॉड राजस्थान, अनुवादित, पं० बलदेवप्रसाद मिश्र, भाग २, पृष्ठ १७१

[2] राजरूपक, पृष्ठ ६५८,६५९

[3] टॉड राजस्थान, अनुवादित, पं० बलदेवप्रसाद मिश्र, मुरादाबाद, भाग २, पृष्ठ १७४,१७५, १७६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाराजा का बादशाह से बिदाई लेकर जोधपुर लौटना

दिल्ली से विदा होते समय बादशाह ने इन्हें कीमती उपहारों के साथ सेना के लिये व्यय आदि भी दिया।[1] महाराजा वहाँ से जयपुर आये। जयपुर नरेश सवाई जयसिंह ने इनका समुचित स्वागत किया। कुछ दिन जयपुर में ठहरने के पश्चात् ये मेड़ते आये और अपने अनुज बखतसिंह से मिले। तत्पश्चात् बखतसिंह को साथ लेकर जोधपुर आये।

इस बात की पुष्टि 'राजरूपक'[2] से भी होती है किन्तु कुछ इतिहासकारों ने महाराजा का दिल्ली से अलवर होते हुए अजमेर जाना और वहाँ का प्रबन्ध करके मेड़ते होते हुए जोधपुर जाना लिखा है।[3] अधिकांश इतिहासकारों ने इनका वि० सं० १७८६ में दिल्ली से जयपुर और वहाँ से मेड़ते होते हुए जोधपुर जाना ही लिखा है। अतः कवि का यह कथन इतिहाससम्मत है।

महाराजा का जोधपुर से गुजरात की ओर प्रयाण

दिल्ली से लौटने के पश्चात् महाराजा अभयसिंह अपने अनुज बखतसिंह के साथ जोधपुर में युद्ध की तैयारी करने में लग गये। सभी सामन्तों को फरमान भेज कर बुलाया गया। अश्वारोही सेना तैयार की गई। जब युद्ध की पूर्ण सामग्री के साथ सेना तैयार हो गई तो जोधपुर से रवाना हो कर कुछ विद्रोही जागीरदारों को दण्ड देते हुए सिरोही आये। सिरोही के राव उम्मेदसिंह देवड़ा ने महाराजा की अधीनता स्वीकार नहीं की थी, अतः महाराजा ने सिरोही को लूटने की आज्ञा दे दी। अन्त में राव उम्मेद ने अपनी पुत्री का डोला भेज कर संधि की। वहाँ से महाराजा सेना सहित पालनपुर आये। वहाँ का अधिकारी करीमदाद खां इनसे मिल गया। ये सब घटनायें इतिहाससम्मत हैं।

महाराजा का सर बुलन्द के पास पत्र भेजना

पालनपुर से महाराजा ने सर बुलन्द को एक पत्र लिखा जिसमें उसे समझाया कि बादशाह ने अहमदाबाद के सूबे पर मुझे नियुक्त किया है। अतः तुम शाही आज्ञा के अनुसार मुझसे मिलो, सारी शाही सम्पत्ति मेरे हवाले करो और किले तथा शहर से अपने डेरे उठा लो, यथा—

---

[1] बादशाह ने महाराजा को सेना के व्यय स्वरूप कितना रुपया दिया इसकी विवेचना हम आगे सेना के आंकड़ों के अन्तर्गत करेंगे।

[2] राजरूपक, पृष्ठ ६५६ से ६६४।

[3] पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ द्वारा लिखित मारवाड़ का इतिहास, भाग १, पृष्ठ ३३६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खत लिखिया दिस खांन, डकर धारै बजराई।
कहर गरीबों करण, मकर छाडो मुगळाई।
कांम फैल मति करौ, स्यांम भ्रम धरौ सिपाही।
सराजांम दौ सरब, तोपखांनां पतिसाही।
अहमदाबाद दीधौ अम्हां, सुणौ हुकम पतिसाह रौ।
मांमलौ तजौ आवौ मिळौ, किलौ सहर खाली करौ॥

सू. प्र. भाग २, पृ. २७६

टॉड साहब के अतिरिक्त किसी भी इतिहासवेत्ता ने इस पत्र का उल्लेख किया हो ऐसा देखने में नहीं आया है। अन्य इतिहासकारों के रुपये की हुण्डी व उसको नायब हाकमी की आज्ञा के साथ लिख दिया कि सम्भव हो सके तो अहमदाबाद पर अधिकार करलो। इस पर मुहम्मद खां ने गुजरातियों की सेना इकट्ठी की और मौका देखने लगा, किन्तु सर बुलन्द के आदमी नगर रक्षा के लिये अधिक सतर्क रहने लगे। उन्होंने दरवाजे वगैरह ईंटों से चुनवा दिये। अतः मुहम्मद खां सफल नहीं हो सका।[1] इस पत्र का उल्लेख कवि ने ग्रंथ में नहीं किया है।

महाराजा अभयसिंह का सर बुलन्द से युद्ध, सर बुलन्द का आत्म-समर्पण

युद्ध का वर्णन करते हुए कवि ने लिखा है कि पहले तीन दिन तक दोनों ओर से गोलाबारी होती रही, यथा—

मोरचां राड़ त्रण दिन मंडै, सूरां धरम सबाब रा।
आंम सम्हां कठठि चौड़ै उरड़ि, नरियंद झूळ नबाब रा।

सू. प्र. भाग ३, पृ. २६

तत्पश्चात् मैदान में लड़ाई हुई। दोनों तरफ के सुभट जम कर लड़े। आखिर सर बुलन्द की सेना के पांव उखड़ गये। दूसरे दिन सर बुलन्द ने महाराजा अभयसिंह के डेरे में उपस्थित होकर आत्म-समर्पण कर दिया। नींबाज ठाकुर अमरसिंह ने इस संधि में विशेष भाग लिया।

उपरोक्त वर्णन कुछ प्रशंसात्मक अवश्य है परन्तु ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार सर बुलन्द को महाराजा अभयसिंह के सामने आत्म-समर्पण करना पड़ा

---

[1] (अ) पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ द्वारा लिखित मारवाड़ का इतिहास, भाग १, पृ० ३३७।
(आ) डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा द्वारा लिखित राजपूताने का इतिहास, भाग २, पृ० ६१३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

था। बहुत से इतिहासकारों ने इस अवसर पर महाराजा और सर बुलन्द का परस्पर पगड़ी-बदल भाई बनने का उल्लेख किया है।

महाराजा द्वारा कंथाजी आदि मरहठों को परास्त करना

उज्जैन, सूरत आदि के शासक कंथाजी, पीलूजी आदि गुजरात में चौथ वसूल करने के लिये अहमदाबाद की ओर बढ़े, किन्तु महाराजा की सेना से परास्त होकर कंथाजी भाग गया।

ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार कवि के इस कथन की पुष्टि होती है और यह जाना जाता है कि महाराजा ने पीलूजी को, जो कंथाजी के स्थान पर चौथ वसूल करने के लिये अहमदाबाद की ओर बढ़ रहा था, अपने एक योद्धा लखधीर ईंदा को भेज कर धोखे से मरवा डाला।

बादशाह की ओर से महाराजा को उपहार भेजना

बादशाह मुहम्मदशाह के दरबार में महाराजा का वकील अमरसिंह भंडारी रहता था। उसने बादशाह को सर बुलन्द के परास्त होने और गुजरात पर महाराजा द्वारा पुनः शाही हुकूमत कायम करने की खबर सुनाई। इस पर बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ और उसने भरे दरबार में वाह-वाह शब्दों के साथ महाराजा की प्रशंसा की तथा महाराजा का मनसब आदि बढ़ाने के साथ उनके राज्य की वृद्धि की।

कवि के उक्त कथन की पुष्टि भी ऐतिहासिक दृष्टि से होती है। बादशाह ने असदुल्ला खां गुर्ज़बर्दार के साथ महाराजा के लिये उपहार-स्वरूप रत्नजटित सिरपेच, कलंगी, एक हाथी तथा खिलअत आदि भेजे।[1]

सेनाएँ

कविराजा करणीदान ने ग्रंथ में सेनाओं के आंकड़े बहुत कम दिये हैं। महाराजा अभयसिंह और उनसे सम्बन्धित पात्रों की सेनाओं के आंकड़े यत्र-तत्र दिये हैं। उनकी ऐतिहासिक प्रामाणिकता के बारे में आगे विचार किया जायगा।

मुजफ्फरअली खां की सेना

वि० सं० १७७८ (ई० स १७२१) में महाराजा अजीतसिंह बादशाह के समान शाही ठाट-बाट से अजमेर में रहने लगे, यथा—

---

[1] डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा द्वारा लिखित राजपूताने का इतिहास, भाग २, पृष्ठ ६२८।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गजसिंघ हुरो भारी गुमर, सरब करै असपक सुरंग ।
पतिसाह हुवो 'अजमाल' पह, दिली जेम तारा दुरंग ।।

सू. प्र. भाग २, पृ. ९६

कवि के कथनानुसार बादशाह मुहम्मदशाह ने मुज़फ्फरअली खां को तीस हजार शाही सेना के साथ महाराजा का दमन करने के लिये अजमेर की ओर भेजा था, यथा—

मंगळ क्रोध महमंद, साह प्रजळै दळ सब्बळ ।
खेधक मुदफरखांन, मुगळ तेड़ियौ महाबळ ।
तोरा फील तुरंग, बगसि आरबां खजांनां ।
तीस सहस ताबिन, असुर दळ दीध अमांनां ।
मुरतबौ हजारी हफत महि, पांन ग्रहतां पावियौ ।
इम विदा होय मुदफरअली, 'अजण' भूप दिस आवियौ ।।

सू. प्र. भाग २. पृ. ९७

कवि ने आगे फिर संकेत किया है कि मुज़फ्फरअली खां के साथ तीस हजार की सेना थी, यथा—

भजि गया बिण गज भार, हय थाट तीस हजार ।
मिट लाज छाडि ग्रुमांन, खड़ि गयौ मुदफरखांन ।।

सू. प्र. भाग २, पृ. १०२

इतिहासकारों के मतानुसार मनोहरपुर पहुँचते-पहुँचते मुज़फ्फरअली खां के पास केवल बीस हजार सेना जमा हो पाई थी ।[१]

बादशाह द्वारा महाराजा अभयसिंह को सेना के लिये व्यय आदि देना

ग्रंथानुसार महाराजा अभयसिंह को सर बुलन्द के विरुद्ध दिल्ली से विदा होते समय बादशाह मुहम्मदशाह ने उन्हें ताज, खंजर, तलवार, घोड़ा, हाथी तथा तोपखाने के साथ सेना के व्यय के लिये इकतीस लाख रुपये दिये ।

अन्य इतिहासकारों के अनुसार वि० सं० १७८६ में बादशाह मुहम्मदशाह ने महाराजा को अन्य उपहारों के अतिरिक्त सेना के व्यय के लिये १८ लाख रुपये और छोटी-बड़ी पचास तोपें दीं ।[२]

---

[१] (अ) डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा द्वारा लिखित राजपूताने का इतिहास, भाग २, पृष्ठ ५९३ ।

(आ) पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ द्वारा लिखित मारवाड़ का इतिहास, भाग १, पृष्ठ ३२१ ।

[२] (अ) Orient Longman : History of Gujrat (Commassariat).

[शेष टिप्पणी पृष्ठ ३८ पर]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

टॉड साहब ने 'सूरजप्रकास' के ही आधार पर इकतीस लाख रुपये दिये जाने का उल्लेख किया है।[1]

यहां पर यह विचार करना है कि कवि का ३१ लाख रुपये दिये जाने का कथन वास्तविक है या अतिशयोक्तिपूर्ण ।

ग्रंथ में कवि ने पहले गुजरात के सूबेदार हमीद खां के विद्रोही होने का उल्लेख किया है। बादशाह मुहम्मदशाह ने सर बुलन्द खां को गुजरात का सूबेदार नियुक्त किया और पचास हजार शाही सेना के साथ उसे हमीदखां के विरुद्ध भेजा। उस समय उसे सेना के व्यय-स्वरूप एक करोड़ रुपये दिये जाने का हुक्म हुआ, यथा—

> वाका सुणि असपती, कहर कोपियो भयंकर।
> विदा कीध सिरविलंद, दूठ समसेर बहादर।
> दीध कोड़ हिक दरब, दीध पच्चास सहंस दळ।
> सुजड़ खाग सिरपाव, 'मुसक' असि दीध मदग्गळ ।।
>
> सू प्र. भाग २, पृ. २३८,२३६

इतिहासवेत्ताओं के अनुसार भी सर बुलन्द को शाही सेना के साथ एक करोड़ रुपये दिये जाने का हुक्म मिलता है।[2] अत: सर बुलन्द को हमीद खां के विरुद्ध सेना के व्ययस्वरूप एक करोड़ रुपये का कवि का कथन अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं है। जब यह बात ठीक है तो सर बुलन्द के गुजरात में विद्रोही हो जाने पर महाराजा अभयसिंह को उसके विरुद्ध सेना के व्यय-स्वरूप इकतीस लाख रुपये दिये जाने का कथन अतिशयोक्तिपूर्ण कैसे हो सकता है।[3] अत: इस दृष्टि से कवि का कथन ठीक प्रतीत होता है।

(आ) इर्विन; लेटर मुगल्स, पृष्ठ २०५।
(इ) डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा द्वारा लिखित राजपूताने का इतिहास, भाग २, पृष्ठ ६१२।
(ई) पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ द्वारा लिखित मारवाड़ का इतिहास, भाग १, पृष्ठ ३३६।
(उ) जोधपुर की ख्यात के अनुसार १५ लाख रुपये सेना के व्यय स्वरूप मिले।

[1] टॉड राजस्थान, अनुवादित, पं० बलदेवप्रसाद मिश्र, मुरादाबाद, भाग २, पृष्ठ १७६।

[2] (अ) Orient Longman : History of Gujrat (Commassariat).
(आ) इर्विन : लेटर मुगल्स, पृष्ठ १८५-१८५।
(इ) टॉड राजस्थान, अनुवादित, पं० बलदेवप्रसाद मिश्र, मुरादाबाद, भाग २, पृष्ठ १७३।

[3] पं० गौरीशंकर हीराचंद ओझा द्वारा लिखित राजपूताने का इतिहास, भाग २, पृष्ठ ६१२ का प्रथम फुटनोट जिसमें 'सूरजप्रकास' के कथन को अतिशयोक्तिपूर्ण बताया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाराजा अभयसिंह की सेना

बादशाह ने व्यय के अतिरिक्त महाराजा के साथ कुछ शाही सेना भेजी या नहीं इसका पूर्ण स्पष्टीकरण ग्रंथ से नहीं होता है, यथा—

ताज कुलह सिरपेच, जरी तोरा जर कंबर।
खंजर जमदढ़ खड़ग, पमंग सिर पाव पटाभर।
'तई लोक ताबीन', तोपखानां गजबांणां।
सभ साह बगसीस, लाख इकतीस खजानां।
अहमदाबाद दीधौ उतन, असपति सोच उथालियौ।
ईखतां दोई राहां 'अभौ', होय विदा इम हालियौ।।

सू. प्र. भाग २, पृ. २४८

उक्त छप्पय में 'तई लोक ताबीन' से सेना के दिये जाने की कुछ ध्वनि अवश्य निकलती है किन्तु अस्पष्ट है।

सर बुलन्द खां से युद्ध करते समय महाराजा के पास कितनी सेना थी, ग्रंथ में इसका आंकड़ा नहीं मिलता है किन्तु कवि ने महाराजा की सेना का विस्तृत वर्णन किया है जिसके अन्तर्गत विभिन्न स्थानों की सेनाओं का महाराजा की सेना के साथ होना पाया जाता है। बादशाह से विदा होते समय महाराजा कुछ शाही सेना लेकर चले होंगे इसकी अस्पष्ट ध्वनि उक्त वर्णन के अनुसार ग्रंथ से निकलती है। महाराजा के भाई बखतसिंह और मारवाड़ के लगभग सभी सामन्तों की सेनाएँ भी महाराजा की सेना के रूप में साथ थीं। सिरोही के राव की भी एक टुकड़ी महाराजा के साथ हो गई थी। पालनपुर का अधिकारी करीमदाद खां भी महाराजा से मिल गया था। सिद्धपुर के निकट पहुँचने पर जवांमर्द खां और सफदर खां बाबी भी सर बुलन्द की कृपाओं को भुला कर महाराजा से मिल गये थे। वहीं पर 'कसबाती' मुसलमान और स्वर्गीय मोमिन खां का पुत्र मोहम्मद बाकिर भी गुप्त रूप से इनसे मिल गया था। सरदार मोहम्मद खां गोरनी को गुजरातियों की सेना भी बाद में इनके साथ शामिल हो गई थी। इन सब का उल्लेख कवि ने यथास्थान किया है किन्तु इनकी सेनाओं की संख्या नहीं दी गई है।

इर्विन 'लेटर मुगल्स' और लोंगमेन्स 'हिस्ट्री ऑफ गुजरात' के अनुसार महाराजा अभयसिंह ने जोधपुर और नागौर से बीस हजार कुशल अश्वारोही लेकर अहमदाबाद की ओर प्रयाण किया था। ग्रंथ में भी महाराजा की सेना के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के अश्वों का अलग-अलग वर्णन मिलता है। 'सहरुल-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुताखरीन' के अनुसार अभयसिंह ४०-५० हजार सेना लेकर गुजरात की ओर चले थे।[1]

अतः अनुमान लगाया जा सकता है कि महाराजा बीस सहस्र अश्वारोही लेकर चले होंगे। कुछ सहस्र अन्य सैनिक भी होंगे तथा अहमदाबाद पहुँचते-पहुँचते उनके पास लगभग ४०-५० सहस्र सेना हो गई होगी।

महाराजा की सेना के १२० बड़े-बड़े योद्धा और ५०० अश्वारोही सैनिक मारे गये तथा ७०० सिपाही घायल हुए, यथा—

भड़ पयदळ गज भिड़ज, पड़ै 'विलंद' रा अपारां।
न को पार घायलां, हुवा लोह में सुमारां।
उला भड़ एक सौ बीस, पड़िया जिण वारां।
पमंग पड़ै पंचसै, धमक सेलां खग धारां।
सात सै हुवा घायल सुभट, लड़ै 'अभै' जस ग्रद लियौ।
आजरा वार मझि पौहौ अवर, जुध इम किणँ न जीपियौ।।

सू. प्र. भाग ३, पृ. २६१

सर बुलन्द की सेना

ग्रंथ में सर बुलन्द की सेना के आंकड़े कई स्थानों पर भिन्न-भिन्न दिये हुए हैं किन्तु उनसे स्पष्ट नहीं कहा जा सकता कि सर बुलन्द के पास कुल कितनी सेना थी ?

सर्व प्रथम कवि ने सर बुलन्द की सेना का उल्लेख उस स्थान पर किया है जब बादशाह मुहम्मदशाह द्वारा विद्रोही हमीद खां का दमन करने के लिये पचास सहस्र सेना और उसके व्यय के लिये एक करोड़ रुपया देना तय कर के सर बुलन्द को गुजरात भेजा गया, यथा—

वाका सुणि असपती, कहर कोपियौ भयंकर।
विदा कीध सिरविलंद, दूठ समसेर बहादर।
दोध कोड़ हिक दरब, दीध पच्चास सहँस दळ।
सुजड़ खाग सिरपाव, मुसक असि दीध मद्गळ।
कत्ताबम मुरजल-मुलकका, दीध अराबा घण मुदित।
ईरांन विरद उजवाळनूं पांन दीध तूरांनपति।।

सू. प्र. भाग ३, पृ. २३८,२३९

---

[1] पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ द्वारा लिखित मारवाड़ का इतिहास, भाग १, पृ. ३४१ का फुटनोट।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक स्थान पर कवि ने बारह हजार सेना का उल्लेख किया है जिसके अन्तर्गत अलग-अलग टुकड़ियों के साथ यूरोपियन भी थे, यथा—

जुदा मिसल जंग हूंत, असल्ल विल्लायत वाळा।
इसड़ा बार हजार, चूंच चढ़िया कळिचाळा॥

सू. प्र. भाग ३, पृ. २७

एक स्थान पर कवि ने लिखा है कि सर बुलन्द की सेना में शीशा, बारूद, दो हजार तोपें आदि युद्ध की सामग्री के साथ चार हजार सुतर नालें, तीन हजार रेहकले, बारह हजार बंदूकें अथवा बंदूकधारी तथा तोपें चलाने वाले अंगरेज थे, यथा—

सीसा जांमंग सोर, भार गाडा बांणां भर।
चव हजार सुत्रनाळ, हवस उसताज बहादर।
त्रण हजार रहकळा, अरब उसताज अचूकां।
सुकर नरां बगसरां, बार हज्जार बंदूकां।
बि हजार तोप कठठी बडी, गोळमदाज फिरंगरा।
करि अजर क्रोध कीधा किलम, जबर मसाला जंगरा॥

सू. प्र. भाग ३, पृ. २८

ग्रंथ में एक स्थान पर पाया जाता है कि सर बुलन्द ने नगर के बारह दरवाजों के प्रत्येक द्वार पर दो-दो हजार बंदूकधारी तथा दस-दस तोपें रख दी थीं। इनके अतिरिक्त प्रत्येक बुर्ज और कंगूरे पर सैनिक तैनात कर दिये, यथा—

दुय दुय सहँस बँदूक, सहति बगसरां सकाजां।
तै दस दस भरि तोप, डहै बारह दरवाजां।
भुरज भुरज आरबा, दुगम जुथ गोळंदाजां।
मतिवाळां मेलिया, कंगुरे कंगुरे सकाजां।
फिरणिया चहूं तरफां फिरै, काळ रूप अरबा चकां।
काढ़ियां खगां किलकां करै, डका ढोल तबलां डकां॥

सू. प्र. भाग २, पृ. ३५०

उक्त छप्पय के अनुसार प्रत्येक द्वार पर दो-दो हजार के हिसाब से बारह दरवाजों पर २४ हजार तो बंदूकधारी ही थे तथा तोपें चलाने वाले, बुर्जों व कंगूरों पर तैनात सैनिक उनसे अलग थे।

कवि के कथनानुसार सर बुलन्द के एक सौ पालकीनशीन, आठ हाथीनशीन और तीन सौ ऐसे जो दीवाने-आम नामक सभा में जाते समय सम्मान के अधिकारी थे, मारे गये। साथ ही ४४६३ सैनिक भी मारे गये। इनके अतिरिक्त युद्ध में कितने ही घायल हुए। यथा—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इम जीतौ 'अभमाल' वार नव जाए।
लूटि आरबां लिया लूटि, असि गज बहौ लाए।
'विलंद' तणा बाढ़िया, रूक झाटां रवदायण।
च्यार सहस च्यारसै, असी तेरा असुरायण।
जिण मझि विवरौ जुदौ, मुगळ पड़ि रूप मयंदा।
सौ पालखीनसीन आठ असवार गयंदा।
अै पड़ै साह जांणै इसा, आवै आंम दीवांणमें।
ताजीमतणा भड़ तीनसै, घणा अवर घमसांणमें॥

भड़ पयदळ गज भिड़ज, पड़ै विलंद रा अपारां।
न कौ पार वायलां, हुवा लोह में सुमारां।

सू. प्र. भाग ३, पृ. २६१

महाराजा द्वारा वि० सं० १७८७ की कार्तिक वदि २ को शाही दरबार में स्थित अपने वकील के नाम लिखे गये पत्र से प्रकट होता है कि सर बुलन्द के हजार-बारह सौ आदमी मारे गये और सात-आठ सौ घायल हुए।

इसी पत्र में पहले यह भी उल्लेख है कि सर बुलन्द ने दशमी के दिन ८ हजार सवारों और १० हजार पैदल सिपाहियों से अर्थात् कुल १८ हजार से महाराजा की सेना पर हमला किया था।[1]

अत: हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि सर बुलन्द के पास लगभग ५० सहस्र सेना होगी। २४ हजार तो उसने केवल दरवाजों पर ही तैनात कर दी। कुछ सहस्र बुर्जों और कंगूरों पर तथा १८ सहस्र से महाराजा पर आक्रमण किया। अत: इस प्रकार कुल ५० सहस्र के लगभग सेना हो जाती है। कवि ने भी सर्व प्रथम यही उल्लेख किया है कि सर बुलन्द पचास सहस्र सेना लेकर हमीद खां के विरुद्ध दिल्ली से गुजरात की ओर चला था। इस प्रकार ग्रंथ में दिये हुए आंकड़े विश्वसनीय जान पड़ते हैं।

'सूरजप्रकास' ऐतिहासिक और साहित्यिक दृष्टि से अपने ढंग का एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। जोधपुरनरेश महाराजा मानसिंह इस ग्रंथ से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने इस ग्रंथ में उल्लिखित सभी घटनाओं के चित्र बनवा दिए, जिनमें से अधिकांश जोधपुर महाराजा साहिब के 'पुस्तकप्रकाश' में आज भी उपलब्ध होते हैं।

---

[1] पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ द्वारा लिखित, मारवाड़ का इतिहास, भाग १, पृष्ठ ३३९-३४० का फुटनोट।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इस ग्रंथ का इतना प्रचार हुआ कि मारवाड़ के अधिकांश जागीरदारों और चारणों के पास तथा जैनसंग्रहालयों में इसकी अनेक हस्तलिखित प्रतियां मिलती हैं।

महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इस ग्रंथ का रचयिता कविराजा करणीदान महाराजा अभयसिंह का राज-कवि था। उसने अहमदाबाद युद्ध में स्वयं भी भाग लिया था।

हम कह सकते हैं कि पाठकों को सही इतिहासज्ञान कराने में यह ग्रंथ बहुत उपयोगी सिद्ध होगा।

सूरजप्रकास के ऐतिहासिक पात्र

पात्रों की दृष्टि से जब ग्रंथ की जांच की जाती है तो ज्ञात होता है कि कवि ने ग्रंथ में अत्यधिक पात्रों का उल्लेख किया है। कई मुख्य पात्र तो ऐसे हैं जिनका सम्पूर्ण विवरण इतिहास में प्राप्त होता है किन्तु कई ऐसे भी हैं जो ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं, किन्तु उनकी जानकारी अभी तक प्राप्त नहीं हो सकी है। युद्ध के अन्तर्गत कवि ने कई योद्धाओं के केवल नाम गिना दिये हैं, उनमें से कई ऐसे हैं जो उस समय अवश्य प्रसिद्ध होंगे किन्तु इस समय उनके बारे में प्रकाश डालना तब तक दुर्लभ हो गया है जब तक उनसे सम्बन्धित ऐतिहासिक सामग्री प्रकाश में नहीं आ जावे। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि पौराणिक वंश-तालिका के अलावा कवि ने जितने भी पात्रों का उल्लेख किया है वे ऐतिहासिक दृष्टि से ठीक जान पड़ते हैं। स्त्री पात्र सम्पूर्ण ग्रंथ में नहीं के बराबर हैं। नीचे ग्रंथ में आये हुए खास-खास पात्रों का संक्षिप्त परिचय दिया जाता है—

अम्बर चंपू

यह बड़ा पराक्रमी शासक हुआ। इसका पूरा नाम मलिक अम्बर था। यह जाति का हब्शी था। यह अहमद नगर राज्य का प्रधान मन्त्री था। अहमद नगर का राज्य मुगल सम्राट अकबर के अधिकार में जाने पर यह उस राज्य के बहुत से भाग का स्वतन्त्र शासक बन बैठा और उपद्रव करने लगा। ग्रंथानुसार बादशाह अकबर ने जोधपुर नरेश सवाई राजा सूरसिंह को इसका दमन करने के लिये दक्षिण में भेजा और इन्हें अपने कार्य में सफलता मिली।

जहांगीर के शासन-काल में अम्बर को दबाने के लिये पुनः महाराजा गजसिंह को भेजा गया। उन्होंने भी इसका दमन कर के शान्ति स्थापित की। वृद्धावस्था

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

में इसने मुगलों से लिये हुए प्रदेश शाहजहाँ को सौंप दिये। यह वि.सं. १६८३ (ई.स. १६२६) में अस्सी वर्ष की अवस्था में मृत्यु को प्राप्त हुआ।

अकबर (बादशाह)

जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर का जन्म ई.स. २३ नवम्बर १५४२ को हुमायूं की पत्नी हमीदाबानू के गर्भ से अमरकोट में हुआ था और ई.स. १५५६ में कालानूर में इसका राज्याभिषेक हुआ। उस समय भारत की स्थिति सोचनीय थी और अकबर के अधिकार में पंजाब का थोड़ा सा भाग था। इसने अपनी बुद्धिमानी से बैरामखाँ के पंजे से निकल कर अपने राज्य की स्थिति को दृढ़ बनाने का प्रयत्न किया। ई.स. १५५६ में पानीपत के दूसरे युद्ध के बाद हेमू का अंत हो गया और दिल्ली में मुगल सत्ता स्थापित हो गई। उसके बाद ही आगरे पर भी अकबर का आधिपत्य हो गया। अकबर एक महत्त्वाकांक्षी सम्राट था और सम्पूर्ण भारत में अपनी सत्ता कायम करने की कामना करता था। इसी कामना से अकबर ने राजपूतों के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ा और जोधपुर के स्वामी सवाई राजा सूरसिंह को गुजरात की रक्षा का भार सौंपा। गुजरात पहुँच कर इन्होंने मुजफ्फर के उपद्रव को दबाया और वह गुजरात छोड़ कर भाग गया। दक्षिण के उपद्रवों को भी दबाने के लिये अकबर ने सवाई राजा सूरसिंह को भेजा था। इन्होंने अम्बरचम्पू को भगा कर दक्षिण में शान्ति स्थापित की थी। अकबर विद्वानों का आदर करता था। इसकी सभा के नवरत्न इतिहास-प्रसिद्ध हैं। सम्राट अकबर अपनी योग्यता के कारण ही इतिहास में अकबर महान् के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

अकबर (शाहजादा)

औरंगजेब उत्तरकालीन मुगल सम्राट था। उसके कुल पाँच पुत्र थे। इन्हीं पुत्रों में सबसे बड़ा सुल्तानमुहम्मद था। अकबर औरंगजेब का चौथा पुत्र था। यह मारवाड़ पर आक्रमण करने वाली शाही सेना का सेनापति था। दुर्गादास ने मारवाड़ के उद्धार के लिये अपनी चतुराई से शाहजादा अकबर को अपनी ओर मिला लिया और नाडोल में राठौड़ सरदारों ने उसका बादशाह होना घोषित कर दिया। किन्तु बाद में औरंगजेब की चालाकी से वह असफल रहा और अपने कुटुम्ब और माल असबाब को लेकर राठौड़ों की शरण में चला गया। कई दिन मारवाड़ में रहने के बाद अकबर अपने परिवार सहित हज् करने चला गया। हज करके ईरान आ गया और वहीं पर ईस्वी सन् १७०६ में उसका देहान्त हो गया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अज–

राव सीहाजी का सबसे छोटा पुत्र और सोनग का छोटा भाई था। अज ने अपनी सेना सहित द्वारिका की यात्रा की, वहाँ पहुँचने पर शंखोद्धार के चावड़ा राजा ने इसका बहुत स्वागत किया और अमूल्य वस्तुएँ भेंट कीं।

अजौ (अर्जुन गौड़)-

यह मारोठ के स्वामी विट्ठलदास गौड़ का पुत्र था और बादशाह शाहजहाँ के प्रमुख दरबारियों में था। वि. सं. १७०१ में राव अमरसिंह राठौड़ ने बादशाह के प्रमुख दरबारी सलावत खाँ को अपशब्द कहने पर आम दरबार में कटार से मार डाला। उसी समय अर्जुन गौड़ ने तथा अन्य व्यक्तियों ने अमरसिंह पर आक्रमण कर उसे मार दिया किन्तु अमरसिंह ने भी वार कर के इसका कान काट लिया। धरमत के युद्ध में महाराजा जसवन्तसिंह के साथ रह कर इसने अपने अतुल शौर्य का परिचय दिया और वीरता के साथ युद्ध करता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ।

अनोपसिंह (भण्डारी अनोपसिंह)–

यह राय भण्डारी रघुनाथसिंह का पुत्र था। यह बड़ा बहादुर, रण-कुशल तथा नीतिज्ञ था। संवत् १७६७ में महाराजा अजीतसिंह द्वारा जोधपुर का हाकिम नियुक्त किया गया। उस समय हाकिम पर सिविल और मिलिटरी (Civil and Military) दोनों कामों का उत्तरदायित्व रहता था, जिसको इसने पूरी तरह से निभाया। वि.सं. १७७२ में इसको नागौर का मनसब मिला, तब महाराज ने इसको व मेड़ते हाकिम भण्डारी पेमसिंह को नागौर पर अमल करने के लिये भेजा। राठौड़ इन्द्रसिंह दोनों हाकिमों का मुकाबिला करने के लिये आगे बढ़ा। घमासान युद्ध हुआ। फलस्वरूप इन्द्रसिंह की फौज भाग गई और भण्डारी अनोपसिंह की विजय हुई। इन्द्रसिंह को अब नागौर खाली कर बादशाह के पास दिल्ली जाना पड़ा। वि.सं. १७७६ में फर्रुखशियर के मारे जाने के बाद फौज के साथ अहमदाबाद भी इसको भेजा था। वहाँ भी इसने बड़ी बहादुरी दिखलाई थी।

अफगान खां–

यह बादशाह मुहम्मद शाह की राज्य सभा के अमीर-उमरावों में था। इसके पूर्व शाही सेना का सेनापति था। मुगल साम्राज्य के शत्रुओं का दमन करने के लिये यह अनेक युद्धों में भाग ले चुका था। नादिरशाह के आक्रमण के समय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अफगान खां सिन्ध का सूबेदार था। तदनन्तर बादशाह की राजसभा के राज-मंत्रियों में सम्मिलित कर लिया गया था। सर बुलन्द खां के विरुद्ध अहमदाबाद के युद्ध में जाने का निमन्त्रण इसे भी दिया गया था, किन्तु इसने स्वीकार नहीं किया।

अभयकरण—

यह राठौड़ वीर दुर्गादास का पुत्र था और सर बुलन्द खाँ के विरुद्ध अहमदाबाद के युद्ध में महाराजा अभयसिंह के साथ था। यह सेना की एक टुकड़ी का नायक था। भद्र के किले पर लगाये गये पाँच मोर्चों में से एक मोर्चे पर अभयकरण (कर्णोत) चाँपावत महासिंह तथा भागीरथदास आदि थे। ई. सन् १७३० ता. १० अक्टोबर को शेरसिंह मेड़तिया (सरदारसिंहोत) के मोर्चे पर भयंकर आक्रमण होने पर अभयकरण उसकी सहायता को गया था और इसने अतुल साहस और वीरता का परिचय दिया था। इसी मोर्चे पर यह घायल हो गया था किन्तु बचा लिया गया था।

अभरामकुली (इब्राहीमकुली खां)-

यह शाही सेना के मुख्य सेनापति सुजात खाँ का भाई था, और महाराजा अभयसिंह के विश्वासपात्र व्यक्तियों में से एक था। यह मालवा, सूरत और अहमदपुर का सूबेदार (गवर्नर) था। बड़ा योग्य राजनीतिज्ञ तथा रणकुशल व्यक्ति था, किन्तु किन्हीं आन्तरिक कारणों से हमीद खाँ इससे शत्रुता रखता था।

पेशवा ने अपनी छः हजार सेना के साथ मालवा पर आक्रमण कर दिया तो इब्राहीम कुली खाँ ने बड़ी वीरता से पेशवा की सेना से मुकाबिला किया। किन्तु हमीद खाँ की चालाकी से इसी युद्ध में पेशवा व हमीद खाँ के व्यक्तियों ने इब्राहीमकुली खाँ की हत्या कर डाली।

अमरसिंह (महाराणा अमरसिंह द्वितीय)-

यह अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् वि.सं. १७५५ में गद्दी पर बैठा। इसका जन्म वि.सं. १७२९ में हुआ था। यह बहुत तेज स्वभाव का था। गद्दी-नशीनी के समय डूंगरपुर, बांसवाड़ा और प्रतापगढ़ के राजाओं ने महाराणा को नजरें नहीं भेजीं। अतः कुपित होकर महाराणा ने उन पर चढ़ाई करके १ लाख ७५ हजार रुपया वसूल किया। यह आबू पर कब्जा करना चाहता था परन्तु जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह को मदद से यह स्थान देवड़ों से नहीं ले सका। पिता-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुत्र की अनबन हो जाने से यह अपने पिता से अलग रहता था। पहले ये एक-दूसरे के विरोधी थे किन्तु महाराजा अजीतसिंह ने पिता-पुत्र का मेल करवा दिया।

इसने अपने राज्य में अनेक सुधार किये। इसके एक राजकुमार और एक राजकुमारी थी। इसकी मृत्यु वि.सं. १७६७ में हुई।

अमरसिंह (राव अमरसिंह राठौड़)–

यह जोधपुर के महाराजा गजसिंह का ज्येष्ठ पुत्र था। इसका जन्म वि.सं. १६७० पौष सुदि ११ (ई.सं. १६१३ ता. १२ दिसम्बर) को राणी सोनगरी के गर्भ से हुआ था। हठी और उद्दण्ड होने के कारण महाराजा इससे अप्रसन्न रहता था और अपने छोटे पुत्र जसवन्तसिंह पर अधिक प्रेम रखता था। महाराजा अपने छोटे पुत्र को ही राज्य का उत्तराधिकारी बनाना चाहता था। इसलिये वकील भगवानशाह जसकरण ने बादशाह को कह कर अमरसिंह के नाम मनसब और नागौर की जागीर लिखवा ली। इस पर वह राजसिंह कूंपावत और पन्द्रहसौ सवारों के साथ बादशाह की सेवा में चला गया। बादशाह शाहजहाँ के समय में इसने अनेक युद्धों में शाही सेना के साथ रह कर अपनी वीरता का परिचय दिया, किन्तु वि.सं. १७०१ में इसने बादशाह के प्रमुख दरबारी सलावत खां को मार डाला और उसी समय इसे भी अर्जुन गौड़ तथा बादशाह के अन्य व्यक्तियों ने आक्रमण कर के मार डाला।

अमरसिंह (ऊदावत ठाकुर अमरसिंह)–

यह वि.सं. १७६७ में गद्दी पर बैठा। यह महाराजा अजीतसिंह के समय में महावीर पुरुषों की गणना में था। बादशाह मुहम्मदशाह को भी इसके सामने मुंह की खानी पड़ी। इसी बीच अहमदाबाद का सूबेदार सर बुलन्द खां स्वतन्त्रता से शासन करने लगा और बादशाह की आज्ञा की अवहेलना करने लगा। उसका दमन करने के लिए बादशाह ने महाराजा अभयसिंह को गुजरात का सूबेदार नियत किया। अतः महाराजा ने अहमदाबाद के लिये प्रस्थान कर दिया और ठाकुर अमरसिंह पीछे सेना लेकर पहुँचा। रास्ते में ईडर विजय किया। अहमदाबाद पहुँचते ही भयंकर युद्ध हुआ। सर बुलन्द के बहुत से मनुष्य मारे गये, बहुत से पकड़े गये, इससे नबाब का बल घट गया और उसने अपना प्रतिनिधि भेज कर महाराजा से अमरसिंह को अपने पास भेजने के लिए कहा। अमरसिंह सर बुलन्द से मिला और महाराजा से उसकी संधि करवा दी।

अमरसिंह (भंडारी)

इसके पिता का नाम खींवसी भंडारी था जो कि महाराजा श्री अजीतसिंह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तथा महाराजा श्री अभयसिंह के समय जोधपुर का दीवान था। यह भी महाराजा अभयसिंह के शासनकाल में (वि.सं. १७६६ से १८०१ तक) जोधपुर का दीवान रहा था। अहमदाबाद के युद्ध के समय यह दिल्ली में महाराजा अभयसिंह का वकील था। यह बहुत बुद्धिमान, चतुर और अपने समय का महान् राजनीतिज्ञ था।

अमीर उलउमरा–

यह बादशाह मुहम्मदशाह के विश्वासपात्र व्यक्तियों में से था और जोधपुर के महाराजा अभयसिंह का मित्र था तथा बादशाह के बारह हजारी मनसबदारों में था। इसने महाराजा अभयसिंह को सर बुलन्द खां के विरुद्ध अहमदाबाद पर आक्रमण करने के लिये उत्साहित किया था और गुजरात (अहमदाबाद) की सूबेदारी की सनद महाराजा अभयसिंह के नाम लिखवा दी गई थी।

अली मोहम्मद खां–

यह अहमदाबाद के सूबेदार सर बुलन्द खां के विश्वासपात्र व्यक्तियों में था। यह एक अनुभवी योद्धा तथा सेना के प्रमुख सेना-नायकों में था। सर बुलन्द ने इसे शहर के रेशम के प्रमुख व्यापारी गंगादास के पास एक लाख रुपया वसूल करने के लिये भेजा। इसने गंगादास से १ लाख और कुशालचन्द से साठ हजार रुपया वसूल किया। इस प्रकार अली मोहम्मद खां ने सर बुलन्द के लिये रकम वसूल की। यह महाराजा अभयसिंहजी के साथ युद्ध होने के समय पश्चिमी भाग की सेना का प्रमुख योद्धा था और उसी युद्ध में काम आया।

अली बरदी खां–

यह बादशाह मुहम्मदशाह के दरबार के प्रमुख उमरावों में से एक था। यह बड़ा बहादुर, रण-कुशल एवं कुशल राजनीतिज्ञ था। इसकी वीरता और नीतिज्ञता से प्रसन्न होकर बादशाह बहादुरशाह ने इसको लाहौर का सूबेदार बना दिया था। बाद में बंगाल की व्यवस्था सुधारने के लिये इसे बंगाल का गवर्नर (सूबेदार) बना दिया गया था। इसके पूर्व यह शाही सेना का सेनापति था और अनेकों युद्धों में भाग लेकर अपनी वीरता का परिचय दे चुका था।

यह जोधपुर के महाराजा अभयसिंह का मित्र था। इसने बंगाल में अपना स्वतन्त्र शासन स्थापित कर लिया था।

आबिद अली खां (आबद अली खां)–

यह अहमदाबाद के सूबेदार सर बुलन्द खां के विश्वासपात्र सेना-नायकों में

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

था। यह घुड़-सवार सेना की एक टुकड़ी का सेनापति था। यह हाथी पर सवार हो कर अपने भाई जमाल खां के साथ युद्ध-भूमि में बड़ी वीरता से लड़ा। इसने युद्ध में ऐसी बहादुरी दिखाई कि मारवाड़ी सेना पीछे हटने लगी। किन्तु समय ने पलटा खाया और इन दोनों भाइयों को, जो एक ही हाथी पर सवार थे, घेर लिया गया और आबिद अली खां को मार डाला।

इतमादुल्ल (इतमादुद्दौला)–

यह बादशाह मुहम्मदशाह के विश्वासपात्र व्यक्तियों में था। **रफीउद्दौला** की मृत्यु के उपरान्त सैयद बन्धुओं की सहायता से रोशनअख्तर मुहम्मदशाह के नाम से ई.सं. १७१९ में दिल्ली का बादशाह बना। सिंहासन पर बैठते ही इसने सैयद भाइयों के चंगुल से निकलने का प्रयास आरंभ कर दिया और इतमादुद्दौला की मदद से षड़यन्त्रकारियों द्वारा हुसेनअली का वध करवा दिया व उसके भाई अब्दुल्ला को युद्ध में परास्त कर इसने बन्दी बना लिया। इसके बाद इसको बादशाह ने अपना वजीर बनाया। परन्तु वह अधिक दिनों तक जीवित नहीं रहा और ई.सं. १७२२ में मृत्यु को प्राप्त हो गया।

इरादतमंद खां–

इसका पूरा नाम शर्फुद्दौला इरादतमंद खां था। यह बादशाह मुहम्मदशाह के विश्वासपात्र सेवकों में था। बादशाह ने इसको महाराजा अजीतसिंह पर चढ़ाई करने के लिये नियुक्त किया। इसको प्रसन्न करने के लिये इसका मनसब ७००० जात और ६००० सवार का कर दिया। ई.सं. १७२३ में इसको प्रस्थान की आज्ञा मिल गई और शाही खजाने से खर्च के लिये दो लाख रुपये दिये गये।

महाराजा जयसिंह, मुहम्मद खां बंगस, राजा गिरधारी आदि शाही अमीरों को भी इसके साथ शरीक होने की आज्ञा मिली। शाही सेना के आगमन से पूर्व ही महाराजा अजीतसिंह अजमेर से रवाना होकर सांभर होते हुए जोधपुर चले गये। जून सन् १७२३ में इरादतमंद खां ने अजमेर में प्रवेश किया।

इन्द्रसिंह (राव इन्द्रसिंह, नागौर)–

इसका जन्म वि.सं. १७०७ की जेठ सुदि १२ को दक्षिण में बुरहानपुर में हुआ था। वि.सं. १७३३ में अपने पिता रायसिंह की मृत्यु के बाद यह नागौर का अधिकारी बना। बादशाह औरंगजेब ने इसको पाँच हजारी जात और दो हजार सवारों का मनसब दिया था। महाराजा जसवंतसिंह की मृत्यु के बाद अपने पुराने बैर का बदला लेने के लिये राव इन्द्रसिंह को बादशाह ने राजा के खिताब

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

के साथ जोधपुर का शासन-भार सौंप दिया था। परन्तु महाराजा के स्वामि-भक्त नौकरों व सरदारों के आगे इन्द्रसिंह की एक न चली। वि.सं. १७७३ में महाराजा अजीतसिंह ने इन्द्रसिंह से नागौर छीन लिया। किन्तु वि.सं. १७८० में बादशाह ने नागौर का अधिकार पुनः इन्द्रसिंह को दे दिया। महाराजा अभयसिंह ने वि.सं. १७८२ में इन्द्रसिंह पर हमला कर के नागौर अपने छोटे भाई बखतसिंह को दे दिया। इन्द्रसिंह दिल्ली चला गया, जहाँ बादशाह ने उसे सिरसा, भटनेर, पूनिया और बैहणी-वाल के परगने जागीर में दिये। वि.सं. १७८६ में दिल्ली नगर में इन्द्रसिंह का देहान्त हो गया।

उम्मेदसिंह–

राव छत्रसाल के बाद मानसिंह सिरोही का राजा बना। गद्दी पर बैठते ही इसने अपना नाम उम्मेदसिंह रख लिया। अहमदाबाद विजय को जाते हुए महाराजा अभयसिंह सिरोही ठहरा और सिरोही को लूटने की आज्ञा दे दी। इसके सिपाही सिरोही को लूटने लगे तब सिरोही के राव उम्मेदसिंह ने अपनी पुत्री का विवाह महाराजा से कर उससे संधि कर ली और अपनी फौज महाराजा के साथ भेज दी।

औरंगजेब (बादशाह)–

यह बादशाह शाहजहाँ का पुत्र था। इसका जन्म २४ अक्टूबर १६१८ ई. को मुमताज महल के गर्भ से दाहद में हुआ था। इसने उज्जैन के युद्ध में महाराजा जसवन्तसिंह राठौड़ को पराजित किया, धौलपुर के पास शाहशुजा को हराया, ईश्वर को साक्षी कर के मुराद से मित्रता की और उसे मरवा डाला, पिता को बन्दीघर में डाल दिया और ऐसे ही अनेक काम कर के बादशाही प्राप्त की। यह आतंकवादी बादशाह था। इसने हिन्दुओं पर मनमाना अत्याचार किया। जजिया कर लगाया। मन्दिर तुड़वाये। हिन्दूओं को मुसलमान बनाया। महाराजा जसवन्तसिंह को मरवाने के लिये षड़यंत्र रचे। इसने महाराजा जसवन्तसिंह के पुत्र अजीतसिंह के साथ दुर्व्यवहार किया। इसी के कारण अजीतसिंह को लम्बे समय तक इधर-उधर भटकना पड़ा। यह जोधपुर राज्य पर अधिकार करना चाहता था। किन्तु उसकी यह इच्छा पूर्ण नहीं हुई। ई.सं. १७०७, ३ मार्च में इसका देहावसान हो गया।

कंठराज (कंथाजी)–

यह मरहठों की सेना का सेनानायक था। इसका पूरा नाम कंथाजी कदम बांडे था। मरहठों द्वारा गुजरात पर आक्रमण करने के समय इसने साहसपूर्ण भाग

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लिया था। महाराजा अभयसिंह का अहमदाबाद पर अधिकार होने के समय कंठ चांपानेर (उज्जैन) का शासक था। इसने विजय की कामना से अहमदाबाद पर आक्रमण किया। इसके साथ पीलू और आनंदराव की सेनाएं भी थीं। किन्तु महाराजा अभयसिंह की विजय हुई और कंठा भाग कर दक्षिण में निजामुलमुल्क के पास चला गया।

कनीराम (कूंपावत ठाकुर कनीराम)–

यह ठाकुर रामसिंह के बाद अपने पिता का उत्तराधिकारी हुआ। बागी चांदावत दौलतसिंह को मार कर महाराजा अभयसिंह द्वारा आसोप बहाल करवाई। वि.सं. १७८७ में अहमदाबाद में सर बुलंद खां से युद्ध हुआ जिसमें कूंपावत कनीराम साथ था। महाराजा अभयसिंह की इस पर पूर्ण कृपा थी। महाराजा अभयसिंह की मृत्यु के बाद रामसिंह गद्दी पर बैठा किन्तु इनमें छिछोरपन होने के कारण कनीराम जोधपुर से आसोप चला गया। वि.सं. १८०८ में बखतसिंह ने जोधपुर पर अधिकार कर लिया। वि.सं. १८०९ में ही महाराजा बखतसिंह का विष-प्रयोग से जयपुर राज्य के गाँव सींधोली में देहान्त हो गया। तब उनका पुत्र विजयसिंह जोधपुर के राज्यसिंहासन पर बैठा। इसी वर्ष इन्हीं महाराजा ने ठाकुर कनीराम को बीकानेर से बुलाया। कनीराम ने आजन्म महाराजा विजयसिंह की सेवा की। वि.सं. १८३२ में जोधपुर में ही इसका स्वर्गवास हो गया। दाह-संस्कार कागा बाग में हुआ। कागा में इसकी छत्री बनी हुई है।

कमरुद्दीन खां–

यह बादशाह मुहम्मदशाह के प्रधान सलाहकारों में से एक था। यह बादशाह के प्रधान वजीर निजामुल-मुल्क का विश्वासपात्र व्यक्ति था। यह योग्य तथा अनुभवी व्यक्ति था। बादशाह ने जिस समय सर बुलन्द खां के विद्रोही हो जाने पर उसके विरुद्ध विद्रोह को दबाने और उसको पदच्युत करने का प्रस्ताव रखा उस समय कमरुद्दीन खां भी राजसभा में मौजूद था। यह जोधपुर के महाराजा अभयसिंह के हितैषियों में था और उनसे मित्रता का व्यवहार रखता था।

करण (महाराणा करणसिंह)–

यह महाराणा अमरसिंह का पुत्र और राणा प्रताप का पौत्र था। इसका जन्म वि.सं. १६४० श्रावण शुक्ला १२ (ई.स. १५८३ ता० १ अगस्त को) हुआ था। उस समय दिल्ली का बादशाह जहाँगीर था। उसने शाहजादे खुर्रम को मेवाड़ विजय के लिये सवाई राजा सूरसिंह के साथ भेजा और राजकुमार गजसिंह को सादड़ी का थाना सौंपा गया। शाही सेना ने मेवाड़ को चारों तरफ से घेर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लिया, राणा ने विजयी होना असंभव जान कर संधि प्रस्ताव रखा। इस पर वि० सं० १६७१ (ई० सन् १६१४) में महाराजकुमार गजसिंह राजकुमार करण को लेकर अजमेर आये। बादशाह जहांगीर, जो उस समय अजमेर में ही था, से मिला दिया और सुलह करवा दी। महाराणा करणसिंह वि०सं० १६७६ (ई० सन् १६२०) में गद्दी पर बैठा और वि० सं० १६८४ (ई० सन् १६२७) में इसका देहान्त हो गया।

करणसिंह (चांपावत)

यह पाली के ठाकुर राजसिंह का पुत्र बड़ा वीर, पराक्रमी तथा युद्ध-कुशल व्यक्ति था। यह महाराजा अभयसिंह की सेना की एक टुकड़ी का सेनानायक था। महाराजा ने अहमदाबाद के युद्ध के समय शहर पर गोलाबारी करने के लिये ५ मोर्चे कायम किये थे, जिनमें पहले मोर्चे पर यह था। वि० सं० १७८७ आश्विन सुदि १० (ई० सं० १७३० ता० १० अक्टूबर) शनिवार को सर बुलन्द ने शेरसिंह (सरदारसिंहोत के मोर्चे पर आक्रमण किया। अभयकरण और चांपावत करण उसकी (शेरसिंह) सहायता को गये। घमासान युद्ध हुआ जिसमें मुसलमानों के ३०० आदमी और महाराजा की सेना के चांपावत करण, मेड़तिया भोपसिंह, जोधा हठीसिंह, धांधल भगवानदास और पुरोहित केसरीसिंह लड़ते हुए वीर गति को प्राप्त हुए।

करणीदान (बारहठ करनीदान)–

यह बारहठ केसरीसिंह का छोटा पुत्र था। यह बड़ा बुद्धिमान था। जब महाराजा अभयसिंह ने नागौर का राज्य राव अमरसिंह के पोते इन्द्रसिंह से छीन कर अपने भाई बखतसिंह को दे दिया तब यह अवसर पाकर महाराजा बखतसिंह के पास चला गया। कुछ दिनों बाद गुजरात के नबाब सर बुलंद खां पर महाराजा अभयसिंह ने चढ़ाई की तो उस समय करनीदान महाराजा बखतसिंह के साथ था। युद्ध में अत्यधिक पराक्रम दिखाने पर महाराजा बखतसिंह ने इसको रामस्या गांव दे दिया। वि०सं० १८०८ में जब महाराजा बखतसिंह महाराजा रामसिंह को जोधपुर से निकाल कर मारवाड़ के अधिपति हो गये तब करनीदान को मूंदियाड़ का पट्टा दिया और सिरायत सरदारों के बराबर मान दिया।

करीमदाद खां–

यह बादशाह मुहम्मदशाह के विश्वासपात्र व्यक्तियों में था। इसे पहले पालनपुर का फौजदार बना कर भेजा गया था। इसकी महाराजा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभयसिंह से मित्रता थी। महाराजा अभयसिंह ने अहमदाबाद पर चढ़ाई करने के लिये अपनी सेना सहित जोधपुर से कूच किया, जिस समय वे पालनपुर के पास पहुँचे तो इसने उनका खूब स्वागत किया। यही करीमदाद खां बाद में पालनपुर का स्वतंत्र शासक बन कर नबाब बन गया। इसने महाराजा अभयसिंह की सहायता के लिए अहमदाबाद के युद्ध में अपनी सेना को सर बुलंद खां के विरुद्ध लड़ने के लिए भेजी थी।

किशनसिंह (महाराजा किशनसिंह)–

यह मोटा राजा उदयसिंह का ८ वां पुत्र था। इसने ई० सन् १६६६ में अपने नाम से किशनगढ़ राज्य की स्थापना की। यह बड़ा वीर, रणकुशल और अपनी धुन का पक्का थ। इसके तीन पुत्रों में से भारमल के पुत्र रूपसिंह ने रूपनगर बसाया था। भाटी 'गोयन्ददास' ने, जो महाराजा सूरसिंह का विश्वासपात्र था व जोधपुर राज्य का दीवान था, किशनसिंह के भतीजे गोपालदास का वध कर दिया था। उसका बदला लेने के लिए किशनसिंह ने अजमेर की हवेली पर हमला कर के भाटी गोयंददास को मार दिया। इससे नाराज होकर राजकुमार गजसिंह ने भी पीछा कर के किशनसिंह को उसके साथियों सहित मार डाला।

कुंभा (महाराणा कुंभा)–

यह महाराणा मोकल का पुत्र था और उसकी मृत्यु के बाद वि०सं० १४९० में राजगद्दी पर बैठा। इसके बालिग होने तक राज्य-कार्य की देखभाल मंडोवर के स्वामी रणमल्ल राठौड़ करता था। यह महाराणा बड़ा यशस्वी, वीर, विद्वान् और प्रतापी हुआ जिसने कुंभलगढ़ और आबू पर अचलगढ नामक स्थान बनवाये और मालवा के बादशाह मुहम्मद तुगलक को युद्ध में पराजित कर के पकड़ लिया व ६ मास कैद में रख कर उससे दंड लेकर छोड़ा। इसका स्मारक चित्तौड़ के किले में विद्यमान है। वि०सं० १५२५ में यह अपने ज्येष्ठ पुत्र ऊदा के हाथ से मारा गया।

कुसलसिंह (ऊदावत कुंवर कुशलसिंह)–

इसका स्वर्गवास पिता की मौजूदगी में ही हो गया था। यह अपने पिता के साथ महाराजा अजीतसिंह की सेवा में रहा करता था। कुंवर कुशलसिंह दिल्ली में भी महाराजा के साथ था। इसने कुंवर पद में ही अनेकों वीरता के काम किये थे। जब अजमेर का सूबेदार जगरामगढ़ और ब्यावर पर कब्जा करने की नियत से सेना लेकर आया तो कुंवर कुशलसिंह ने उसका सामना किया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महा घोर संग्राम हुआ जिसमें अनेक मुगल वीरों को मार कर बड़ी वीरता से लड़ता हुआ वह वीरगति को प्राप्त हुआ।

केशरीसिंह पुरोहित–

यह जोधपुर राज्य के खेड़ापा का महापराक्रमी जागीरदार था। इसने अपनी योग्यता से ही यह जागीर प्राप्त की थी। इसके पूर्वज तिवरी के जागीरदार थे। यह पुरोहित दलपत का पौत्र था जो महाराजा जसवन्तसिंह (प्रथम) के साथ धरमत (उज्जैन) के युद्ध में औरंगजेब के विरुद्ध लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ था। इसके पिता का नाम अखैसिंह था। पुरोहित केशरीसिंह गुजरात (अहमदाबाद) के युद्ध में महाराजा अभयसिंह के साथ था। अहमदाबाद नगर तथा भद्र के किले पर पांच मोर्चे लगाये गये। केसरीसिंह दूसरे मोर्चे पर था। सर बुलन्द खां ने ई० सं० १७३० ता० १० अक्टूबर को दूसरे मोर्चे पर आक्रमण किया। घमासान लड़ाई हुई जिसमें सर बुलन्द के ३०० आदमी और महाराजा की सेना के पुरोहित केसरीसिंह, हठीसिंह, भोमसिंह, करण, भगवान आदि वीर युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए।

केशरीसिंह बारहठ–

यह गुरड़ाई का जागीरदार था। यह गांव इसको महाराजा जसवन्तसिंह प्रथम द्वारा प्राप्त हुआ था। महाराजा जसवन्तसिंह की मृत्यु के बाद जब मारवाड़ पर मुगलों का आधिपत्य हो गया तब इसका गाँव भी मुगलों के अधिकार में चला गया। यह महाराजा अजीतसिंह के दल में शामिल हो गया तथा आजन्म महाराजा की सेवा करता रहा। जब जोधपुर पर महाराजा का अधिकार हो गया तब इसको अपना गाँव गुरड़ाई भी वापिस मिल गया। इसके गोरखदान और करणीदान दो पुत्र थे जो महाराजा अभयसिंह के साथ अहमदाबाद के युद्ध में शामिल हुए थे।

खान दौरान–

यह बादशाह मुहम्मद शाह के समय में मीर बक्शी के उच्च पद पर आसीन था और महाराजा अभयसिंह के विश्वासपात्र व्यक्तियों में था। इसने दिल्ली में महाराजा का शानदार स्वागत किया था। इसी की सलाह से बाहशाह ने महाराजा को गुजरात का सूबेदार बनाया था। नादिरशाह के आक्रमण के समय खानदौरान अपनी सेना सहित कर्नाल के युद्ध में शरीक हुआ। भीषण संग्राम हुआ जिसमें मुगल सेना बुरी तरह पराजित हुई और यह अपने ८००० सैनिकों सहित वीरगति को प्राप्त हुआ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खींवसी भंडारी–

यह महाराजा अजीतसिंह के विश्वासपात्र व्यक्तियों में से था। मुगल सम्राट फर्रुखसियर पर इसका बड़ा प्रभाव था। ग्रन्थ सूरजप्रकास के अनुसार हिन्दुओं पर से जजिया कर छुड़वाने में इसने महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया था। यह जोधपुर राज्य की तरफ से वर्षों तक मुगल दरबार में रहा था। फर्रुखसियर की हत्या के बाद इसने दिल्ली पहुँच कर नबाब अब्दुला खां की सम्मति से मुहम्मदशाह को दिल्ली के तख्त पर बैठाया। महाराजा अभयसिंह के शासनकाल में भी यह जोधपुर का दीवान रहा था। इसका पुत्र अमरसिंह अहमदाबाद के युद्ध के समय दिल्ली में जोधपुर महाराजा की ओर से वकील था।

खुरम (शाहजादा खुर्रम)–

यह जहाँगीर का तीसरा पुत्र था। इसका जन्म १५९२ ई० में लाहौर में हुआ था। खुर्रम बड़ा ही योग्य तथा प्रभावशाली व्यक्ति था। जहाँगीर उसे प्राणों से अधिक प्रिय समझता था। जब ई० स० १६०६ में जहाँगीर खुसरो के विद्रोह को शान्त करने के लिए गया तब खुर्रम को ही राजधानी की सुरक्षा का भार सौंपा गया। खुर्रम ने अनेक अच्छे कार्य किये। उसी के परिणामस्वरूप जहाँगीर ने इसे शाहजहाँ की उपाधि दी। शाहजहाँ ने दक्षिण की स्थिति को, जो बिगड़ चुकी थी, सम्भालने में सफलता प्राप्त की। इससे प्रसन्न होकर उसे उच्चतम शाही सेना का सेनापति बना दिया। उसे बहुत उत्तम जागीर प्रदान की। इसने महावत खां को अपनी ओर मिला लिया और शहरयार का अन्त कर के बादशाह बन गया। बादशाह बनते ही इसने संदिग्ध व्यक्तियों को हटा दिया और अपने विश्वसनीय व्यक्तियों को राजसेवा में नियुक्त किया। ऐसे योग्य शासक की मृत्यु ७४ वर्ष का होने के बाद १६६६ ई० में हो गई।

गोयंददास (भाटी गोविंददास)–

मारवाड़ के इतिहास में इसका नाम उल्लेखनीय है। यह नागार के पास गांव भांडवे के भाटी मानसिंह का पुत्र था। सुरतांण मानावत इसका सहोदर था। भाटी गोविंददास ने प्रधान के पद पर आसीन होकर राज्य का प्रबन्ध शाही ढंग पर कर दिया। इससे मारवाड़ के नरेशों और सरदारों का संबंध स्वामी-सेवक सा हो गया। शादी-गमी के समय ठकुरानियों के अंतःपुर में आने-जाने की प्रथा उठ गई। इन्होंने रणमल्ल के वंश के जागीरदारों के लिये दाईं तरफ और जोधाजी के वंश के जागीरदारों के लिए बाईं तरफ का स्थान नियुक्त किया। राज कार्य के लिए दीवान, बख्शी, हाकिम, दरोगा और पोतेदार आदि नियुक्त किये। मेवाड़-दमन के समय राजकुमार गजसिंहजी के साथ जा कर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भाटो ने महाराणा को बादशाह से संधि करवाई। एक समय भाटी गोविंददास अजमेर में महाराजा सूरसिंहजी के साथ था जहाँ किशनसिंहजी ने अपने भतीजे गोपालदास का बदला लेने के लिए इसकी हवेली में घुस कर इसको मार डाला।

गोरखदांन (बारहठ गोरखदान)–

यह बारहठ केसरीसिंह का ज्येष्ठ पुत्र था। पिता की मृत्यु के बाद यह रूपावास में रहा। यह महाराजा अभयसिंह के कृपापात्रों में था और अहमदाबाद के युद्ध के समय महाराज के साथ था। इसको सेवाओं से प्रसन्न होकर महाराजा अभयसिंह ने इसको पाली परगने का केरला गांव प्रदान किया। इसके एक ही पुत्र अमरसिंह था जो महान् प्रतिभासंपन्न व्यक्ति था।

गोरधनसिंह (कूंपावत राठौड़ गोरधनसिंह)–

यह चंडावल ठाकुर चांदसिंह का पुत्र था। यह ठिकाना महाराजा सूरसिंह ने इसके पिता चांदसिंह को वि० सं० १६५२ में इनायत किया था। जिस समय महाराजा गजसिंह ने भोमसिंह सीसोदिया को युद्ध में मारा था उस समय यह महाराजा गजसिंह का प्रमुख योद्धा था। वि० सं० १७१४ में उज्जैन के पास फतियाबाद के मुकाम पर शाहजादा मुराद और औरंगजेब बादशाहत के लोभ से आ खड़े हुए। उस समय शाही सेना के सेनापति कासिम खां और महाराजा जसवन्तसिंह थे। कासिम खां बदल कर औरंगजेब के पक्ष में हो गया। इस पर भी महाराजा जसवन्तसिंह ने औरंगजेब के साथ घोर संग्राम किया जिससे शत्रुओं के नाकों दम हो गया। इस युद्ध में कूंपावत राठौड़ गोरधनसिंह चांदसिंहोत ने घोर संग्राम किया और कई शत्रुओं को मार गिराया और अपनी सेना की रक्षा की। अन्त में यह स्वयं भी इसी युद्ध में लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त हुआ।

चाचा और मेरा–

ये दोनों भाई महाराणा खेता की पासवान एक खातण के गर्भ से पैदा हुए थे। ये दोनों भाई बड़े वीर, पराक्रमी और रणकुशल योद्धा थे। एक बार महाराणा मोकल द्वारा किसी वृक्ष का नाम और गुण पूछने पर बहुत क्रोधित हो गये, और अवसर पाकर महाराणा मोकल को मार डाला। उस समय राव रणमल्ल मंडोवर में थे। मोकल के मारे जाने का समाचार सुनते ही राव ने पगड़ी उतार कर साफा बाँध लिया और प्रतिज्ञा की कि चाचा और मेरा को मार कर ही पगड़ी बाँधूंगा। इसके बाद ५०० सवारों के साथ पई के पहाड़ों पर आक्रमण किया किन्तु उनको काबू में नहीं ला सका। बाद में गमेती भील के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुत्रों की सहायता से इन पर आक्रमण किया। चाचा और मेरा मारे गये और चाचा का पुत्र इक्का भाग कर मांडू के बादशाह महमूद की शरण में चला गया।

जगरामसिंह (ऊदावत)

इसका जन्म वि० सं० १६६६ में रास ठिकाने म हुआ था। इसका पिता विजयराम सवाई राजा सूरसिंह की सेवा में रहता था। यह बड़ा महत्त्वाकांक्षी था। युवावस्था में इसे नया ठिकाना स्थापित करने की प्रबल आकांक्षा हुई। विक्रमी सं० १७३५ में बर के पूर्व में जगरामगढ़ नामक दुर्ग बनाया और अजमेर के शाही खालसे को तंग करने लगा। इससे तंग होकर अजमेर के सूबेदार ने संधि कर के अपने पास बुला लिया। अजमेर में रह कर इसने मेरों व मेवों के उपद्रव को शान्त किया। तत्पश्चात् दिल्ली चला गया। वहां कुछ दिन रहने के बाद मयूर के मारने की शिकायत में एक यवन का हाथ काट डाला और दिल्ली को छोड़ कर उदयपुर चला आया। तत्कालीन महाराणा ने इसको जागीर देनी चाही परन्तु इसका ध्यान मारवाड़ के बालक महाराजा अजीतसिंह की तरफ आया, अतः यह मारवाड़ में आ गया और महाराजा अजीतसिंह की सेवा में रहते हुए अनेक युद्धों में भाग लिया। वि० सं० १७६५ में महाराजा अजीतसिंह ने इसको नीमाज का ठिकाना इनायत किया। वि० सं० १७६७ में इसका देहावसान हो गया।

जफरजंग (खानखाना जफरजंग)-

यह बादशाह मुहम्मदशाह के विश्वासपात्र व्यक्तियों में था और उस समय पंजाब और लाहौर का सूबेदार था। सर बुलन्द खां के विरुद्ध गुजरात (अहमदाबाद) पर आक्रमण करने का प्रस्ताव बादशाह ने इसके सम्मुख भी रखा था किन्तु इसने अपनी असमर्थता प्रकट कर अस्वीकार कर दिया।

जफरयारबर खां-

यह शाही दरबार का मुखिया था। जिस समय सर बुलन्द खां के विद्रोह को दबाने की वार्ता खास दरबार में चली, यह भी खास दरोगा के पद पर था और दरबार में उपस्थित था। बादशाह ने सर बुलन्द खां के विरुद्ध अहमदाबाद पर आक्रमण करने का इसको आदेश दिया, किन्तु इसने अस्वीकार कर दिया।

जमालअली खां (जमाल खां)-

यह सर बुलन्द की सेना का सेनापति था। अहमदाबाद के युद्ध में, जो महाराजा अभयसिंह के साथ हुआ था, इसने बड़ी वीरता दिखाई थी। यह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इतनी वीरता से लड़ा कि मुसलमानों का पलड़ा भारी दिखने लगा तथा महाराजा की सेना पीछे हटने लगी और सर बुलन्द खां की सेना उन्हें पीछे ढकेलती गई। परन्तु कुछ समय बाद महाराजा अभयसिंह की सेना आगे बढ़ने लगी और सेनापति जमाल खां के हाथी को घेर लिया, जहाँ वह लड़ता-लड़ता वीर गति को प्राप्त हुआ।

जयसिंह (मिर्जा राजा)-

यह जयपुराधीश राजा मानसिंह का प्रपौत्र था। इसका जन्म ई० स० १६११ में हुआ था और ई० स० १६२१ में केवल १० वर्ष की अवस्था में राज्याभिषेक हुआ। ई० स० १६२८ में सम्राट शाहजहाँ ने इसका विशेष आदर किया। मुगल साम्राज्य की वृद्धि के लिये विविध स्थानों पर युद्धों में अपनी वीरता का परिचय दिया। शाहजहाँ ने खुर्रम के विरुद्ध परवेज के साथ मिर्जा राजा जयसिंह को सेनापति बना कर भेजा था। यह बात स्वाभिमानी महाराजा गजसिंह को बुरी लगी। अतः वह एक ओर खड़े होकर युद्ध का परिणाम देखने लगे। जयसिंह की सेना भीम सीसोदिया के सामने टिक नहीं सकी और भाग गई। उस समय गजसिंह ने उसका मुकाबला करके भीम सीसोदिया को मार डाला। ई० स० १६६७ ई० में बुरहानपुर में इसकी मृत्यु हुई।

जयसिंह (महाराणा)-

इसका जन्म वि० सं० १७१० पौष वदि ११ को हुआ था। यह अपने पिता की मृत्यु के बाद वि० सं० १७३७ में मेवाड़ का स्वामी हुआ। महाराणा राजसिंह की मृत्यु के समय से मेवाड़ मुगल दल से घिरा हुआ था। महाराणा जयसिंह ने मारवाड़ के महाराजा अजीतसिंह से मिल कर भेद नीति का अनुसरण किया और शाहजादा मुअज्जम को अपनी ओर मिला लेना चाहा किन्तु सफलता नहीं मिली। इसके बाद इसने अकबर को अपनी ओर मिलाया। शाहजादा अकबर ने जब महाराणा से मिल कर अपने को बादशाह घोषित किया तब महाराणा ने मांडलगढ़ को पुनः अपने अधिकार में कर लिया। वि० सं० १७३८ में महाराणा ने बादशाह औरंगजेब से संधि करली। इसके बाद औरंगजेब दक्षिण में चला गया और लगातार २५ वर्ष मरहठों से लड़ता रहा। इसी बीच महाराणा जयसिंह और उनके पुत्र अमरसिंह द्वितीय में गृह-कलह हो गया। उस समय महाराजा अजीतसिंह ने बीच-बचाव कर के पितापुत्र में परस्पर मेल करवा दिया। ठीक इसी समय महाराणा जयसिंह ने अपने छोटे भाई गजसिंह की पुत्री का विवाह मारवाड़ के महाराजा अजीतसिंह से

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर दिया । महाराणा ने कई तालाब आदि बनवाये, जिनमें जयसमुद्र उल्लेखनीय है । ऐसे सुयोग्य राणा की मृत्यु वि० सं० १७५५ में हुई ।

जयसिंह (महाराजा सवाई जयसिंह)–

यह आमेर का राजा बड़ा यशस्वी और भाग्यशाली हुआ है । इसका जन्म वि० सं० १७४५ और राज्याभिषेक वि० सं० १७५६ में विष्णुसिंह के मरने के पश्चात् काबुल में हुआ था । यह काबुल में राज्य-सिंहासन-संस्कार से सम्पन्न होने के पश्चात् भारत में आकर दक्षिण में बादशाह औरंगजेब के पास गया तो औरंगजेब ने इसके दोनों हाथ पकड़ लिए और इससे कहा कि तू अब क्या कर सकता है ? उस समय यह बाल्यावस्था में ही था, फिर भी अपनी प्रत्युत्पन्न बुद्धि से बादशाह से कहा कि मैं अब सब कुछ करने में समर्थ हूं, क्योंकि मर्द जब स्त्री का एक हाथ पाणिग्रहण के समय पकड़ता है तो वह उसे जीवन भर निभाता है और उसे बहुत से अधिकार देता है, और जहांपनाह ने मेरे दोनों हाथ पकड़ लिए हैं, इससे मुझे पूर्ण विश्वास है कि मैं अब अन्य राजा-महाराजाओं से बढ़ कर हूं । इस पर बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ और इसको सवाई राजा की उपाधि से विभूषित किया ।

इसी सवाई राजा जयसिंह की पुत्री से महाराजा अभयसिंह ने अपना विवाह मथुरा में जाकर किया था जिससे जोधपुर के सामन्त-गण महाराजा से नाराज होकर जोधपुर की तरफ आ गये थे । जिस समय महाराजा अभयसिंह ने सर बुलन्द को परास्त करने का बीड़ा बादशाह के दरबार में उठाया था और बाद में जब मारवाड़ की तरफ रवाना हुए थे तो मारवाड़ आते समय ये जयपुर होकर सवाई जयसिंह से मिल कर आये थे ।

महाराजा सवाई जयसिंह ने अपने नाम से वि० सं० १७८४ में जयपुर नगर बसाया । हिन्दी का प्रसिद्ध कवि बिहारी इसी के दरबार का रत्न था । इस महाराजा का देहावसान खून के बिगड़ जाने के कारण वि० स० १८०० को हुआ ।

जहांगीर (बादशाह)–

इसका जन्म वि० स० १६२६ तदनुसार ई० सन् १५६९ में आमेर के राजा भारमलजी की पुत्री के गर्भ से फतहपुर सीकरी में महात्मा शेखसलीम चिश्ती के मकान पर हुआ । कहते हैं कि बादशाह अकबर को यह पुत्र महात्मा शेखसलीम चिश्ती के आशीर्वाद से ही प्राप्त हुआ था, अतएव महात्मा शेखसलीम चिश्ती के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए शाहजादे का नाम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुहम्मद सुल्तान सलीम रखा गया। इसकी शिक्षा बैराम खां के पुत्र अब्दुल-रहीम खानखाना के द्वारा हुई।

यह न्यायप्रिय, उदार तथा वीर था परन्तु साथ ही इसमें क्रूरता, भीरुपन आदि विरोधी गुण भी थे। ई० स० १६०५ में यह ३६ वर्ष की अवस्था में नूरुद्दीन मुहम्मद जहांगीर बादशाह गाजी की उपाधि को धारण कर के आगरे में सिंहासनारूढ़ हुआ।

दक्षिण में जब मलिक अम्बर स्वतंत्र हो गया था तब बादशाह जहाँगीर ने जोधपुर के महाराजा गजसिंह को अम्बर के बढ़ते हुए प्रभाव को दबाने के लिए भेजा था। उसमें महाराजा गजसिंहजी विजयी हुए। मलिक अम्बर पराजित हुआ। इस विजय से प्रसन्न होकर बादशाह जहांगीर ने महाराजा गजसिंह को दल-थंभन की उपाधि से विभूषित किया।

जहाँदारा शाह–

ई० स० १७१२ में मुईजुद्दीन बहादुर शाह का सबसे बड़ा पुत्र जहाँदारा शाह के नाम से जुलफिकार खां व महाराजा अजीतसिंह की सहायता से गद्दी पर बैठा। यह बड़ा ही अयोग्य, आरामतलब, विलासी तथा व्यभिचारी शासक था। इसने जुलफिकार खां को अपना प्रधान बनाया। बादशाह लाहौर से दिल्ली पहुँच कर लाल कुंवर के प्रेम में अनुरुक्त हो गया। नूरजहाँ की तरह लालकुंवर ने भी शासन को बागडोर अपने हाथ में रखने का प्रयास किया। किन्तु उसी समय बंगाल के गवर्नर फर्रुखसियर ने महाराजा अजीतसिंह व सैयद बन्धुओं की सहायता से जहाँदाराशाह व जुलफिकार खां की हत्या करवा कर दिल्ली का शासन अपने हाथ में ले लिया और सिंहासन पर बैठ गया।

जाफर खां–

यह बादशाह मुहम्मद शाह की राज्यसभा का उमराव था। बादशाह ने इसे सर बुलन्द खां के विरुद्ध अहमदाबाद की सूबेदारी देने के लिए कहा, किन्तु इसने मंजूर नहीं किया। इसने महाराजा अभयसिंह से अनुनय-विनय कर के अहमदाबाद की सूबेदारी का परवाना महाराजा के नाम लिखवा दिया। यह लाहौर का सूबेदार भी रह चुका था। यह महाराजा अभयसिंह का विश्वासपात्र मित्र था, किन्तु महाराजा की वीरता व निर्भयता के कारण उससे सशंकित भी रहता था।

जुलफगार (जुलफिकार खां)–

यह बादशाह जहांदारा शाह का विश्वासपात्र व्यक्ति था। यह ईरानी था। बादशाह जहांदार शाह धन और सेना के अभाव में भी महाराजा अजीतसिंह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोधपुर तथा इस जूलफिकार खां की सहायता तथा सहानुभूति के कारण अजीमुश्शान को युद्ध में पराजित कर सका और बाद में अजीमुश्शान को मार कर दिल्ली के तख्त पर बैठा। इसने जुलफिकार खां को अपना मंत्री बनाया किन्तु कुछ दिनों के बाद ही सैयद भाइयों की सहायता से जहांदार शाह और जुलफिकार खां मारे गए और फर्रुखसियर बादशाह बना जो बंगाल का गवर्नर था।

तरीन खां (तरियन खां)–

यह अफगान सरदार था और इसके साथ ही एक अफगान सरदार और था जिसका नाम सैयद कयूम था। ये दोनों बड़े वीर तथा रण-कुशल थे। ये दोनों अपने अरबी घोड़ों पर सवार हो कर अहमदाबाद के युद्ध में लड़ रहे थे जहाँ वीर गति को प्राप्त हुए। जमालअली खां इनके शवों को शहर में ले आया। तरीन खां महाराजा अभयसिंह के विरुद्ध अहमदाबाद में फौज की एक टुकड़ी का सेनापति था। इसने अहमदाबाद के युद्ध में अपनी प्रबल वीरता का परिचय दिया था।

तुरराबाज खां (तुराबाज बक्श)–

यह बादशाह मुहम्मद शाह के बारहहजारी मनसबदारों में था और बड़ा वीर, उत्साही, नीतिज्ञ तथा कुशल व्यक्ति था। यह शाही सेना का सेनापति था और अनेक युद्धों में अपना रण-कौशल दिखा चुका था, फिर भी सर बुलन्द खां की शक्ति के सन्मुख यह भयभीत हो गया और अहमदाबाद पर आक्रमण करने के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

दलेल खां–

यह लाहौर का सूबेदार था तथा शाही दरबार के मीर उमरावों में यह मुख्य था। बादशाह ने सर बुलन्द खां के विरुद्ध अहमदाबाद पर जाने का प्रस्ताव इसके सम्मुख रखा पर इसने अस्वीकार कर दिया।

दांनयाल (शाहजादा)

यहसम्राट अकबर का छोटा पुत्र था। शाहजादा मुराद की मृत्यु के बाद इसे दक्षिण का सूबेदार बना कर भेजा था और उसकी सहायता के लिये सवाई राजा सूरसिंह को साथ भेजा था, किन्तु थोड़े ही समय बाद इसकी मृत्यु हो गई।

दारासाह (दारा शुकोह)–

यह बादशाह शाहजहाँ का ज्येष्ठ पुत्र तथा उत्तराधिकारी था। यह इलाहाबाद, पंजाब, मुलतान आदि सूबों का शासक रह चुका था। अनेकों प्रांतों

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

का शासन कर उसने पर्याप्त अनुभव प्राप्त कर लिया था और अधिकतर शाहजहाँ के पास ही रहता था। ई० स० १६५८ के उत्तराधिकार युद्ध में पराजित होकर भागा किन्तु औरंगजेब के सहयोगियों द्वारा पकड़ा जाकर कैद कर दिया गया और अन्त में उसकी हत्या कर दी गई।

दुरगादास (राठौड़ वीर दुर्गादास)–

राठौड़ वंश के इतिहास में वीर दुर्गादास का नाम अमर रहेगा। इस वीर ने मुगल सम्राट औरंगजेब के द्वारा मारवाड़ का राज्य खालसे किये जाने पर औरंगजेब से कई युद्ध कर मारवाड़ का राज्य सुरक्षित रख कर अपनी असामान्य वीरता और रण-चातुरी के अतिरिक्त आदर्श स्वामिभक्ति और देश-प्रेम का परिचय दिया। इसका पिता आसकरण महाराजा जसवन्तसिंह की नौकरी करता था। इसकी माता से प्रेम न होने के कारण दोनों मां-बेटे आसकरण से पृथक् लुणावा गांव में रहते थे। कुछ दिन बाद महाराजा ने दुर्गादास को भी अपनी सेवा में रख लिया। यह जसवन्तसिंह की मृत्यु के बाद उसके पुत्र अजीतसिंह को शाही सेना के घेरे से निकाल कर मारवाड़ ले आया और समय आने पर अजीतसिंह को मारवाड़ राज्य का अधिकारी बनाया।

वीर दुर्गादास की मृत्यु उज्जैन में क्षिप्रा नदी के किनारे पर हुई।

दौलत खां–

यह नागौर का शासक (नबाब) था। राव गाँगा के चाचा शेखा ने इसकी (खाँजादा दौलत खां) सहायता से वि. सं. १५८५ (ई० सन् १५२६) में जोधपुर पर चढ़ाई की। इसका समाचार मिलते ही गांगा ने सेवकी (गांव) तक आगे बढ़ कर उसका सामना किया। युद्ध होने पर 'शेखा' मारा गया और दौलत खां भाग कर नागौर चला गया।

द्वारकादास दधवाड़ियौ–

प्रसिद्ध कवि माधोदास दधवाड़िया का पुत्र तथा जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह का कृपा-पात्र और राज्य में प्रतिष्ठित मुसाहिब भी था। इसने पिता की भांति डिंगल के श्रेष्ठ कवियों में स्थान प्राप्त किया था। इसने महाराजा अजीतसिंह के जीवनकाल में ही वि. सं. १७७२ में 'महाराजा अजीतसिंह री दवावैत' नामक ग्रंथ की रचना की। इससे प्रसन्न होकर महाराजा ने इसको जैतारण तहसील का बासनी गांव प्रदान किया। इसकी अन्य फुटकर रचनाएँ भी प्राप्त होती हैं। यह जैसा कवि था वैसा ही वीर भी। यह अहमदाबाद के युद्ध में महाराजा अभयसिंह के साथ था और वहां युद्ध में बड़ी बहादुरी के साथ लड़ा और घायल हो कर बच गया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाहर खां–

यह बादशाह मुहम्मद शाह के विश्वासपात्र आदमियों में से था। फर्रुख-सियर के समय में यह साधारण व्यक्ति था। किन्तु परिश्रम के बल से यह दीवानगी के पद तक पहुँच गया था। ई. स. १७२१ में यह सर्व प्रथम सांभर का फौजदार बना कर भेजा गया था। इसके बाद ई. स. १७२२ के अन्त में सांभर को फौजदारी के साथ ही अजमेर का दीवान नियुक्त कर दिया गया। भंडारी खींवसी इसको साथ लेकर अजमेर गया। नाहर खां के साथ इसका भाई रुहेल्ला खां भी था। इन्होंने अजमेर के निकट पहुँच कर राठौड़ों के डेरों के निकट ही अपना डेरा दिया। ये राठौड़ों को अपना मित्र समझते थे। दूसरे दिन ही राठौड़ों ने आक्रमण कर दोनों भाइयों को मार डाला और उनका बहुत-सा सामान लूट लिया।

निकोसियर–

यह औरंगजेब का पौत्र और अकबर का पुत्र था और आगरे के किले में कैद था। रफ़ीउद्दौला की मृत्यु के बाद महाराजा अजीतसिंह और सैयद भाइयों की सहायता से दिल्ली में मुहम्मद शाह बादशाह बना दिया गया। उस समय आगरे में सेन नामक नागर ब्राह्मण ने निकोसियर को कैद से निकाल कर महाराजा जयसिंह, राजा भीम हाडा, चूड़मन जाट, छबीलेराम नागर आदि की सहायता से ई० सन् १७१९ में आगरे में बादशाह घोषित कर दिया और उसके नाम का सिक्का जारी किया। इसके कुछ दिन बाद हुसेनअली खां ने इसके विरुद्ध आगरे की तरफ प्रस्थान किया। वहाँ पहुँच कर उसने घेरा डाल कर मोर्चे लगाये और कुछ ही दिनों के बाद निकोसियर को पकड़ कर कैद कर लिया गया।

निजामुल-मुल्क–

यह बादशाह मुहम्मद शाह के विश्वासपात्र व्यक्तियों में प्रमुख था। ई० सन् १७२० में बालापुर के निकट होने वाले युद्ध में इसने अपनी वीरता का अच्छा परिचय दिया था, इसीसे इसको निजामुलमुल्क की उपाधि मिली। उस समय सैयद भाइयों का पतन आरम्भ हो गया था और उनके स्थान पर निजामुलमुल्क की धाक स्थापित हो गयी थी। वह दक्षिण के ६ सूबों का शासक बना दिया गया। वह बड़ा ही चालाक तथा उच्चकोटि का कूटनीतिज्ञ था। यह मरहठों में फूट उत्पन्न करना चाहता था। ऐसे व्यक्ति की चालों को निष्फल बनाने की क्षमता बाजीराव पेशवा में ही थी। जब महीपतराव को चौथ वसूल करने से मना कर दिया तब बाजीराव ने नये मुगल सम्राट से चौथ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वसूल करने का अधिकार प्राप्त कर लिया। इस प्रकार निजाम की सारी चाल विफल हो गई। बाद में मराठा सरदारों को शाहू के विरुद्ध भड़काना शुरू किया पर इसमें भी निराश होना पड़ा। इसने धीरे-धीरे दक्षिण में अपना राज्य स्थापित कर लिया।

पिलु (पिलाजी)–

यह मरहठों की सेना का सेनापति था और खांडेराव दाभाड़े का प्रतिनिधि था। यह सोनगढ़ का शासक और भीलों एवं कोलियों का मददगार था। इसने बड़ौदा और डभोई पर भी अपना अधिकार कर लिया था। खांडेराव की विधवा पत्नी उमाबाई ने चौथ उगाहने के लिए पीलाजी को नियुक्त किया। यह बड़ी भारी सेना लेकर चौथ उगाहने के लिए डाकोर नामक स्थान में पहुँचा। यह सुन कर महाराजा अभयसिंह भी सेना के साथ उससे लड़ने के लिए चला किन्तु प्रकट रूप से छल-कपट करने में प्रवीण व्यक्तियों को सन्देश देने के बहाने पीलाजी के पास भेजा और अवसर पाकर मारने की आज्ञा दी। इसी के अनुसार ईंदा लखधीर ने डाकोर पहुँच कर पीलाजी को धोखे से मार डाला।

फरखसेर (फर्रुखसियर)–

बहादुरशाह के बाद उसका पुत्र मुईजुद्दीन जहांदारशाह के नाम से दिल्ली के तख्त पर बैठा। इसके केवल ग्यारह माह के निन्दनीय शासन के बाद फर्रुखसियर, जो बहादुरशाह के पुत्रों में मुईजुद्दीन जहांदारशाह के छोटे भाई अजीमुश्शान का पुत्र था तथा बहादुरशाह के शासनकाल में बंगाल का गवर्नर था, सैयद बन्धुओं की मदद से जहांदारशाह की हत्या करवा कर दिल्ली के सिंहासन पर बैठा। यह भी बड़ा अयोग्य निकला। इसमें न बुद्धि थी न चरित्र-बल। यह बड़ा भीरु तथा दुर्बल शासक था। दृढ़ संकल्प का इसमें सर्वथा अभाव था। यह सैयद बन्धुओं के परामर्श पर कार्य करता था और इन्हीं के हाथ की कठपुतली हुआ था। राजपूतों, सिखों, मरहठों, जाटों और मुसलमानों के साथ भी इसका सम्बन्ध ठीक नहीं था। यहाँ तक कि कालान्तर में सैयद बन्धुओं से भी इसका संबंध खराब हो गया और वे एक दूसरे के शत्रु बन गये। फलस्वरूप मरहठों की सेना के साथ सैयद हुसेनअली का दिल्ली पर आक्रमण हुआ और फर्रुखसियर कैद कर लिया गया। ई० सं० १७१९ में उसकी हत्या करवा दी गई। इस प्रकार फर्रुखसियर की जीवनलीला समाप्त हुई।

बखतसिंह (महाराजा)–

यह महाराजा अजीतसिंह का पुत्र और महाराजा अभयसिंह का छोटा भाई था। इसका जन्म वि० सं० १७६३ की भादों वदि ७ को हुआ था। वि० सं०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७८२ में महाराजा अभयसिंह ने इसको 'राजाधिराज' की पदवी देकर नागौर का स्वामी बना दिया। इसने मारवाड़ में उत्पात करने वाले आनन्दसिंह, रायसिंह और किशोरसिंह आदि का दमन किया था। अपने भ्राता अभयसिंह को गुजरात अहमदाबाद की सूबेदारी मिलने पर सर बुलन्द खाँ के विरुद्ध २० हजार की सेना के साथ अहमदाबाद के युद्ध में सम्मिलित हुआ और युद्ध में अतुल शौर्य का परिचय दिया। यह बड़ौदा युद्ध में महाराजा अभयसिंह के साथ था। इसके अलावा बीकानेर, मेड़ता, जयपुर आदि के अनेक युद्धों में भाग लेकर इसने अपनी वीरता का परिचय दिया था। वि० सं० १८०६ में अपने भ्राता महाराज अभयसिंह की मृत्यु के बाद वि० सं० १८०८ में अपने भतीजे महाराजा रामसिंह को हरा कर जोधपुर की गद्दी पर अधिकार कर लिया।

बलू (वीरवर बलू चांपावत)

यह पाली ठाकुर गोपालदास का पुत्र था। इसके ८ पुत्र थे। भिन्न-भिन्न स्थानों पर आठों भाई जाति, मान-मर्यादा, स्वधर्म और स्वदेश-रक्षा के लिए युद्धों में काम आये। राव अमरसिंह को देश-निकाला होने पर यह उनके साथ रहा। बाद में नागौर और नागौर से बीकानेरनरेश कर्णसिंह के पास आ गया। यहाँ भी दुष्ट पुरुषों के कारण टिक नहीं सका और उदयपुर चला गया। वहाँ से यह दिल्ली आ गया। बादशाह ने इसका खूब आदर किया और इसको पांच सौ घोड़ों का नायक बना दिया और वहां सुख से रहने लगा। कुछ समय बाद आगरे में राव अमरसिंह के शव को लाने के लिए अपने ५०० सवारों को लेकर पहुँचा और अमरसिंह का शव लाकर हाड़ी रानी को दिया व उसे सती होने में सहायता दी। इसी युद्ध में यह काम आया।

बुधसिंह (राव बुधसिंह)

यह बूंदी के राव अनिरुद्धसिंह का ज्येष्ठ पुत्र था। लाहौर में अनिरुद्धसिंह की मृत्यु हो जाने के बाद बुधसिंह को बूंदी का राज्य-सिंहासन प्राप्त हुआ। बुधसिंह कुछ दिन बादशाह औरंगजेब के बीमार पड़ने पर औरंगाबाद चला गया। बादशाह औरंगजेब की इच्छानुसार इसने बहादुरशाह को बादशाह बनाने का विचार कर के उसका पक्ष लिया। राव बुधसिंह शाह आलम की प्रधान सेना का नेता था। धौलपुर के युद्ध में इसने अतुलनीय साहस और शूरवीरता का परिचय दिया। उसी के फलस्वरूप बादशाह ने इसको रावराजा की पदवी के साथ अपना परम मित्र बना लिया। अन्त तक यह मित्रता अचल रही। बादशाह बहादुर शाह की मृत्यु के बाद आमेर का महाराजा जयसिंह, जोधपुर का

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाराजा अजीतसिंह और सैयद बन्धुओं की चाल से बुधसिंह को गद्दी से उतारने का प्रयत्न रहा और वे सफल हुए।

वीरविनोद के अनुसार बुधसिंह का वि० सं० १७९६ वैशाख कृष्णा तृतिया को बेगूं से तीन कोस की दूरी पर बाघपुरा में देहावसान हो गया।

बुरहानुलमुल्क-

यह बादशाह मुहम्मद शाह के खास व्यक्तियों में था और शाही दरबार का खास दरोगा था। यह बड़ा वीर, नीति-कुशल व्यक्ति था। वीरम गांव (झालावाड़) के युद्ध में यह शाही सेना का प्रधान सेनापति था। वीरम गांव का परगना खालसा होने पर बुरहानुल-मुल्क की सिफारिश से ही यह परगना इसके प्रीति-भाजन बहराम खाँ के नाम कर दिया गया। यह अनेकों युद्धों में भाग ले चुका था।

भाऊ कूंपावत-

यह कान्हसिंह (किसनसिंह) का पुत्र और गजसिंहपुरा के ठाकुर मुकनसिंह का छोटा भाई था। कूंपावत भावसिंह राव अमरसिंह राठौड़ के विश्वासपात्र सेवकों में था। राव अमरसिंह की मृत्यु के बाद इसके सैनिकों ने बादशाही सेना से मुकाबला किया, जिसमें मुख्य तीन थे—

(१) कूंपावत राठौड़ भावसिंह। (२) चांपावत बलू राठौड़। (३) व्यास गिरधर पोहकरणा ब्राह्मण जिनमें से बलू राठौड़ और व्यास गिरधर तो काम आ गये और कूँपावत भावसिंह घायल होकर बच गया। अमरसिंह का सारा सामान इसके पास रहता था। इसने सारा सामान राव अमरसिंह के छोटे बेटे ईसरसिंह के पास पहुँचा दिया। इसी भावसिंह का पुत्र इन्द्रभाण वि० सं० १७३७ में अजमेर से ७ मील दूर पुष्कर में तहवरखांन की सेना के साथ राठौड़ों के युद्ध में वीर गति को प्राप्त हुआ।

भीम सीसोदिया-

यह महाराणा प्रताप का पोता था। इसके पिता राणा अमरसिंह के हाथ से उदयपुर निकल जाने के कारण चावंड के अभेद्य पहाड़ों में परिवार सहित यह विपत्ति के दिन बिता रहा था। एक दिन राणा ने शत्रु को हाथ बताने की बात भीम से कही। सुनते ही आज्ञाकारी भीम उसी दिन अपने दो हजार सवारों को लेकर ठीक अर्द्ध रात्रि के समय शत्रु सेना को चीरता हुआ सदर ड्योढी पर जा पहुँचा और ऐसी तलवार बजाई कि सैकड़ों तुर्कों को घास की तरह काट डाला। जहाँ शाही थाने लगते वहीं पर संग्राम करता। जब राणा की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बादशाह से संधि हो गई तब भीम शाही दरबार में रहने लगा। जहाँगीर ने खुश होकर इसको टोडे का परगना जागीर में देकर 'राजा' की उपाधि दी। भीम शाहजादा खुर्रम के साथ रहने लगा। खुर्रम से बादशाह के नाराज हो जाने पर भीम खुर्रम की सेना के हरावल में रहता था। वि० सं० १६८१ में हाजीपुर में खुर्रम और परवेज के बीच भयंकर युद्ध हुआ। इसमें भीम शत्रु दल को चीरता हुआ परवेज के हाथी तक पहुँच गया। परवेज की सेना में भगदड़-सी मच गई, किन्तु उसी समय जोधपुर नरेश महाराजा गजसिंह से इसका युद्ध हुआ और यह वीर गति को प्राप्त हुआ।

महासिंह चांपावत (माहवसिंह)–

यह पोकरण का ठाकुर था। अहमदाबाद के युद्ध के समय वि० सं० १७८७ आश्विन सुदि ७ को महाराजा अभयसिंह ने अहमदाबाद तथा भद्र के किले पर पाँच मोर्चे लगाए। उनमें से एक मोर्चे पर अभयकरण (कर्णोत) चांपावत महासिंह (पोकरण का) तथा भागीरथदास आदि थे। इसने इस मोर्चे पर महान् वीरता का परिचय दिया और शत्रुसेना के छक्के छुडा दिये। यह महान् वीर, साहसी और रण-कुशल व्यक्ति था।

मुकनदान दधवाड़ियौ–

'सूरजप्रकास' के रचयिता के कथनानुसार यह केसोदास दधवाड़िया का पुत्र था। यह महाराजा अभयसिहजी का कृपा-पात्र था। यह कवि भी था और महान् वीर भी। सर बुलन्द खां के साथ जो अहमदाबाद का युद्ध हुआ उसमें मुकनदान महाराजा अभयसिंह के साथ था। इसने उस युद्ध में अपनी महान् वीरता का परिचय दिया जिससे प्रसन्न होकर महाराजा अभयसिंहजी ने इसको बिलाड़ा तहसील का कूंपड़ावास गांव दिया जो अब भी इसके वंशजों के अधिकार में है।

मुजफर खां–

यह पराक्रमी, नीतिज्ञ और रणकुशल व्यक्ति था। मुजफ्फर खाँ अनेकों बार युद्धों में अपनी वीरता का परिचय दे चुका था। यह बारह हजारी मनसबदार था। बादशाह ने इसके सामने सर बुलन्द के विरुद्ध जाने का प्रस्ताव रक्खा किन्तु इसने अस्वीकार कर दिया। मुजफ़्फर खाँ अजमेर का शासक भी रह चुका था। यह पहले तो जोधपुर के महाराजा अभयसिंह से नाराज सा रहता था किन्तु फिर महाराजा की वीरता व रण-कुशलता के कारण मित्र बन गया था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुजफ्फरअली खां–

यह बादशाह मुहम्मदशाह के योग्य सेनापतियों में था। जब महाराजा अजीतसिंह से अजमेर का सूबा हटाया गया तब सर्व प्रथम यही सूबेदार बनाया गया। उसने अजमेर आने का विचार किया किन्तु धन की कमी के कारण नहीं आ सका। इसको छः लाख रुपये मिलने की आज्ञा हुई किन्तु उस समय दो लाख से अधिक नहीं मिल सके। पर इसने उतने ही में २०००० सैनिक एकत्रित कर लिये। इसी में रुपया समाप्त हो गया। महाराजा अजीतसिंह ने अजमेर खाली नहीं किया और अपने ज्येष्ठ पुत्र अभयसिंह को मुजफ्फरअली खां का सामना करने के लिए भेजा। इसी समय ई० स० १७२१ में दिल्ली से यह आज्ञा पहुँची कि यह मनोहरपुर से आगे न बढ़े। यह यहाँ तीन मास पड़ा रहा। रुपया न मिलने से सिपाही भाग खड़े हुए। मुजफ्फरअली खां आंबेर पहुँच कर सारे शाही फरमान व खिलअत आदि लौटा कर फकीर हो गया।

मुरशिदकुली खां–

यह बड़ा वीर, साहसी तथा नीति-कुशल व्यक्ति था। यह शाही सेना का सेनापति तथा लाहौर का सूबेदार रह चुका था। बादशाह मुहम्मदशाह ने इसके सामने सर बुलन्द के विरुद्ध अहमदाबाद पर आक्रमण करने का प्रस्ताव रक्खा, किन्तु इसकी हिम्मत नहीं हुई।

मुराद (शाहजादा)–

यह शाहजहाँ का सबसे छोटा पुत्र था। इसका जन्म ई० स० १६२४ में हुआ। यह गुजरात तथा मालवे का सूबेदार रहा। यह बड़ा वीर तथा साहसी था। इसमें सिंहासन प्राप्त करने की इच्छा तो थी किन्तु उसको पूर्ण करने के लिये कूटनीतिज्ञता तथा सतर्कता न थी। इसने भी उत्तराधिकार के लिये प्रयत्न प्रारम्भ किया और ई० स० १६५७ में अहमदाबाद में अपने आपको सम्राट घोषित कर दिया। उस समय औरंगजेब बड़ी सावधानी तथा सतर्कता से कार्य कर रहा था। उसने मुराद के पास एक पत्र भेज कर उसको अपनी ओर मिला लिया। उसने लिखा कि पंजाब, अफगानिस्तान, काश्मीर तथा सिन्ध के प्रान्त तुम्हें मिलेंगे और शेष पर औरंगजेब शासन करेगा। धरमत के युद्ध ने मुराद और औरंगजेब की शक्ति को दृढ़ बना दिया। औरंगजेब ने मुराद को बादशाह बनाने का लालच दिया। सामूगढ़ के युद्ध के उपरान्त मुराद बादशाह घोषित कर दिया गया। किन्तु ई० सन् १६६० में मुराद को एक दावत में शराब पिला कर कैद कर लिया और ग्वालियर के दुर्ग में भेज दिया जहां उसका वध करवा दिया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुहम्मदशाह (बादशाह)–

इसने १७१६ से १७४८ ई० तक शासन का कार्य किया। यह सैयद भाइयों और महाराजा अजीतसिंह की सहायता से गद्दी पर बैठा। इसका पूर्व का नाम रोशन अख्तर था। इसे मुगलसाम्राज्य का विनाश अपनी आंखों से देखना पड़ा। सिंहासन पर बैठते ही इसने षड़यंत्र रच कर सैयद भाइयों का वध करवा दिया। निजामुलमुल्क जैसे योग्य दीवान को पद से हटा कर अयोग्य व्यक्तियों को अपना दीवान बनाया। यह अनुभवशून्य, विलासप्रिय तथा निकम्मा शासक था। यह अपने योग्य तथा अनुभवी सेवकों के परामर्श की उपेक्षा कर चाटुकारों तथा चापलूसों की बातों का विश्वास करता था। इसके समय में शासन का कार्य इस प्रकार चलने लगा मानो यह बच्चों का खेल हो। साधारण जनता भूखों मरने लगी। इसके कुशासन से सूबों के गवर्नर अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने लगे। मुगलसाम्राज्य पर चारों ओर से विपत्तियों के बादल उमड़ने लगे। विदेशी आक्रमणों की आँधियाँ चलने लगीं। मुगलसाम्राज्य का दीपक बुझने लगा। ई० स० १७४८ में मुहम्मदशाह की मृत्यु हो गई।

मोकल (महाराणा)–

यह वि० सं० १४५४ में गद्दी पर बैठाया गया। कुछ समय तक राज्य का प्रबन्ध चूंडा करता रहा किन्तु चूंडा के मेवाड़ से चले जाने पर राज्य का समस्त कार्य राव रिड़मल (रणमल्ल) राठौड़ को सौंप दिया गया। रावजी ने वहाँ राठौड़ों को सभी उच्च पद प्रदान कर दिये। बालिग होने पर राज्य का कार्य मोकल ने अपने हाथ में लिया और जहाजपुर (मेवाड़) के पास फीरोजशाह से युद्ध हुआ जिसमें फिरोजशाह पराजित होकर भागना पड़ा। यह महाराणा वि० सं० १४६० में महाराणा लाखा के पासवानिये पुत्रों चाचा और मेरा के द्वारा धोखे से मारा गया।

मोहकमसिंह–

यह नागौर के राव इन्द्रसिंह का पुत्र था। यह बादशाह फर्रुखसियर के पास उसके सिंहासनारूढ होने पर दिल्ली गया और महाराजा अजीतसिंह के विरुद्ध उसको भड़काया। इसने जोधपुर का राज्य प्राप्त करने के लिये ही यह प्रयत्न किया था। इसकी सूचना दिल्ली रहने वाले जोधपुर के वकीलों ने महाराजा को दी। महाराजा ने अपने विश्वासपात्र सामन्तों को भेष बदलवा कर मोहकमसिंह को मारने के लिये दिल्ली भेजा। वे दिल्ली पहुँचे और अवसर की प्रतीक्षा करने लगे। एक दिन सायंकाल को मोहकमसिंह किसी नवाब के यहां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से मातमपुर्सी कर के लौट रहा था तो रास्ते में ही उसे मार डाला। यह घटना वि० सं० १७७० भाद्रपद सुदि ५ की है।

मोहम्मद खां बंगस–

यह बादशाह मुहम्मदशाह के विश्वासपात्र सेवकों में था। यह मालवा का गवर्नर था। यह योग्य व्यक्ति था और कुशल राजनीतिज्ञ था। निजाम के लिखने के अनुसार यह नरबदा के किनारे अपने सेनापति के साथ मरहठों का मुकाबिला करने के लिए अपनी सेना सहित आ डटा। जब महाराजा अजीतसिंह ने आमेर पर अधिकार कर लिया और शाही शान-शौकत से रहने लगा तो बादशाह मुहम्मदशाह ने इरादतमंद खां को शाही फौज देकर महाराजा का दमन करने भेजा। उसके साथ कई अमीरों को भी भेजा जिसमें मोहम्मद खां बंगस भी शामिल था। इसने अहमदाबाद के युद्ध में भी अपनी सेना सहित महाराजा अभयसिंह के साथ भाग लिया था।

रघुनाथसिंह (भंडारी)–

यह महाराजा अजीतसिंह के शासनकाल में एक महाशक्तिशाली पुरुष हो गया है। यह दीवानगी के उच्च पद पर प्रतिष्ठित था। इसमें शासन-कुशलता और रण-चातुर्य का अद्भुत संयोग था। इसने गुजरात में महाराजा की ओर से अनेक युद्धों में भाग लिया था और बड़ी कुशलता से सेना का संचालन किया था। महाराजा अजीतसिंह ने इसकी सेवाओं से प्रसन्न होकर इसे कई प्रमाणपत्र प्रदान किये थे। इसके अतिरिक्त इसने शाही दरबार में महाराजा की ओर से बड़े-बड़े कार्य किये। महाराजा अजीतसिंह को इसकी योग्यता पर बड़ा विश्वास था। इसने महाराजा की अनुपस्थिति में कुछ समय तक मारवाड़ का शासन भी किया था जो निम्न दोहे से प्रकट होता है—

करोड़ां द्रव्य लुटायौ, हौदा ऊपर हाथ।
अजौ दिली रौ पातसा, राजा तूं रघुनाथ॥

रतनसी भण्डारी–

यह महाराजा अभयसिंह के विश्वासपात्र सेनानायकों में था। यह बड़ा वीर, राजनीतिज्ञ, व्यवहारकुशल और कर्तव्यपरायण सेनापति था। मारवाड़ राज्य के हित के लिये इसने बड़े-बड़े कार्य किये। वि० सं० १७९३ में महाराजा अभयसिंह रतनसी भंडारी को गुजरात की गवर्नरी का कार्यभार सौंप कर दिल्ली चले गये थे। तब इसने बड़ी योग्यता के साथ इस कार्य को किया। इसको अनेक युद्ध करने पड़े थे। देश में चारों ओर अशान्ति छाई हुई थी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मरहठों का जोर दिन पर दिन बढ़ता जा रहा था। ऐसी विकट परिस्थिति में सफलता प्राप्त करना रतनसिंह जैसे चतुर और वीर योद्धा ही का काम था।

रफीउद्दाराजात–

बादशाह फर्रुखसियर की हत्या करवा देने के बाद महाराजा अजीतसिंह और सैयद भाइयों की सहायता से इसको दिल्ली के सिंहासन पर बैठा दिया गया। यह शाही खानदान का साधारण व्यक्ति था और सैयद भाइयों के हाथ की कठपुतली बना हुआ था। सिंहासनारूढ़ होने से पूर्व ही राजयक्ष्मा रोग से पीड़ित था। ई० स० १७१६ में केवल दो मास शासन करने के बाद ही यह गद्दी से उतार दिया गया और इसके एक सप्ताह बाद ही इसका देहान्त हो गया।

रफी-उद-दौला–

यह रफी-उद-दाराजात का बड़ा भाई था। उसको सिंहासन से उतार देने के बाद सैयद भाइयों और महाराजा अजीतसिंह की सलाह से रफी-उद-दौला को शाहजहाँ द्वितीय के नाम से सिंहासन पर बैठा दिया गया। यह नाम मात्र का ही बादशाह था। राज्य की वास्तविक सत्ता सैयद भाइयों के हाथ में थी। सिंहासन पर बैठने के कुछ ही दिन बाद पेचिश की बीमारी से इसका भी परलोकवास हो गया परन्तु सैयद भाइयों की मिलावट से सम्राट की मृत्यु को नौ दिनों तक गुप्त रखा गया।

राजसिंह बारहठ–

यह रूपावास का जागीरदार था। यह महाराजा गजसिंह की सेवा में रहता था। वि० सं० १६७४ में जिस समय जालोर का किला बिहारी पठानों से फतह किया था उस समय यह भी साथ था। इसकी वीरता से प्रसन्न होकर महाराजा ने इसको गांव रूपावास प्रदान किया था। इसके बाद नागौर के राव अमरसिंह ने भी एक गांव, जिसका नाम बाइली था, अपनी जागीर नागौर में से दिया था परन्तु यह गांव थोड़े दिन तक ही रहा। बारहठ राजसिंह के चार बेटे थे— (१) नाराजी (२) भीमसिंह (३) मुकंददास और (४) विजैराम।

रायसिंह–

यह जोधपुर नरेश राव चन्द्रसेन का ज्येष्ठ पुत्र था। इसका जन्म वि० सं० १६१४ की भादों सुदि १३ (ई० स० १५५७ की ६ सितम्बर) को हुआ था। पिता की मृत्यु के समय यह काबुल में था। इसके अनुज उग्रसेन और आसकरण चौसर खेलते हुए मारे गए, तब सरदारों ने इसको पैतृक राज्य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्भालने के लिए लिखा। राव रायसिंह बादशाह की आज्ञा पाकर वि० सं० १६३६ (ई० स० १५८२) में सोजत पहुँच कर गद्दी पर बैठा। साल भर बाद वि० सं० १६४० में बादशाह अकबर की आज्ञा से सिरोही के राव सुरतान पर आक्रमण कर दिया। सुरतान भाग कर आबू के पहाड़ों में चला गया, परन्तु कुछ दिन के बाद शाही सेना के गुजरात की ओर चले जाने पर राव सुरतान ने बची हुई सेना पर रात को अचानक आक्रमण कर दिया और निःशस्त्र राव रायसिंह चारों ओर से घिर जाने के कारण युद्ध करते हुए वीर गति को प्राप्त हुआ। इसका बदला सवाई राजा सूरसिंह ने गुजरात की ओर जाते हुए सिरोही के गांवों को लूट कर और सुरतान से बहुत-सा रुपया वसूल कर के लिया।

रुस्तमअली खां–

यह बादशाह मुहम्मदशाह का छोटा भाई था और बड़ा ही वीर और नीतिज्ञ था। यह सूरत का शासक तथा बड़ौदा व पीपलाद का फौजदार था। हमीद खां के बागी होने पर उसको काबू में लाने के लिए सेना तैयार करने का बादशाह ने हुक्म दिया। हुक्म पाते ही रुस्तमअली खां ने १५००० घुड़ सवार और २०००० अन्य सेना तैयार की। उसी समय मरहठों का हमला गुजरात पर हो गया। पिलाजी हमीद खां से मिल गया। किन्तु रुस्तमअली खां ने ४००० पैदल सेना के साथ आक्रमण कर दिया। हमीद खां बुरी तरह से हारा। उसकी सारी जायदाद रुस्तमअली खां ने अपने कब्जे में करली। शान्ति स्थापित करने व शहर की देखभाल हेतु एक टुकड़ी मुहम्मद बाकिर के आधिपत्य में लगा दी। किन्तु मरहठों की मदद से हमीद खां ने पुनः रुस्तमअली खां को घेर लिया। यहीं बसू गांव के पास लड़ता हुआ यह मारा गया। रुस्तमअली खां का सिर अहमदाबाद ले जाया गया और धड़ बसु गांव में ही जला दिया गया।

रुस्तम जंग–

यह दिल्ली के बादशाह मुहम्मदशाह के उच्चकोटि के उमरावों में से एक था। जिस समय महाराजा अभयसिंह को अहमदाबाद की सूबेदारी मिली थी उस समय यह शाही अफसर था और वहीं बादशाह की सभा में मौजूद था। इससे भी बादशाह ने सर बुलन्द के विरुद्ध अहमदाबाद जाने का अनुरोध किया था पर इसकी हिम्मत नहीं हुई और इसने उस बात को टाल दिया। तब महाराजा अभयसिंह ने सर बुलन्द को बादशाह के चरणों में झुकाने का प्रण कर वहां से प्रस्थान किया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रोशनउद्दौला–

यह एक शाही अफ़सर था। कारणवश महाराजा अभयसिंह पर इसकी नाराजगी हो गई थी, जिससे उसने महाराजा को मारने का निश्चय किया, किन्तु बादशाह ने महाराजा को बुला कर समझा दिया था। यह वीर, बुद्धिमान, चतुर और राजनीतिज्ञ था। अहमदाबाद की सूबेदारी के समय हैदरकुली खाँ के मनमाने आचरण से बादशाह नाराज हो गया था। उस समय रोशनउद्दौला ने बादशाह को समझा कर हैदरकुली खाँ को माफी दिलवा दी और उसे अजमेर की सूबेदारी तथा सांभर की फौजदारी दिलवा दी।

रोहिल्ला खां–

यह अजमेर के नये सूबेदार नाहर खां का भाई था। नाहर खां बादशाह मुहम्मदशाह की सेना की एक टुकड़ी का फौजदार था। यह महाराजा अजीतसिंह के विरुद्ध फौज लेकर अजमेर पर आया था। किन्तु महाराजा के दीवान भंडारी खींवसी की चतुराई से इसने राठौड़ों के डेरों के पास ही अपना डेरा लगाया जहाँ अचानक राठौड़ों ने आक्रमण कर इसे ई० स० १७२३ के जनवरी मास में नाहर खां के साथ मार डाला।

विजयराज (भण्डारी)–

यह भण्डारी खेतसी का पुत्र था। यह उन ओसवाल मुत्सद्दियों में विशेष स्थान रखता है जिन्होंने जोधपुर राज्य के इतिहास को अपनी सेवाओं द्वारा गौरवान्वित किया। पहले-पहल यह जोधपुर नरेश महाराजा अजीतसिंह द्वारा मेड़ते का हाकिम नियुक्त किया गया। दिल्ली के उत्तराधिकारयुद्ध में इसने महाराजा की आज्ञा से जोधपुर से ससैन्य जाकर शाहजादे फर्रुखसियर का पक्ष लिया था।

बादशाह मुहम्मदशाह ने महाराजा अभयसिंह को गुजरात का सूबेदार बना कर सर बुलन्द का दमन करने के लिए भेजा। महाराजा अपने दल-बल सहित जोधपुर से रवाना हुआ। उस समय महाराजा की फौज के तीन भाग किए हुए थे। एक महाराजा अभयसिंह के अधिकार में, दूसरा महाराजा के भाई राजाधिराज बखतसिंहजी के अधिकार में और तीसरा भण्डारी विजयराज के अधिकार में था। इसने अहमदाबाद के युद्ध में अपनी बुद्धि और रणकुशलता का अच्छा परिचय दिया। यह हमेशा महाराजा का कृपा-पात्र रहा।

विजयसिंह–

यह आंबेर के महाराजा विष्णुसिंह का द्वितीय पुत्र और आमेरपति सवाई

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जयसिंह का सौतेला भाई था। महाराजा सवाई जयसिंह ने अत्यन्त उपजाऊ बसवा का प्रदेश अपने भाई विजयसिंह को दे दिया था। किन्तु सौतिया डाह के कारण विजयसिंह की माता अपने पुत्र को राजा बनाना चाहती थी, अतः उसने बादशाह के प्रधान मंत्री कमरुद्दीन खाँ को अपनी ओर मिला लिया। इसने बादशाह को समझा-बुझा कर आमेर की सनद विजयसिंह के नाम लिखवा दी। परन्तु खान दौरान के द्वारा यह सूचना जयसिंह को मिल गई। इस पर सवाई जयसिंह ने अपनी चतुराई से विजयसिंह को आमेर के किले में बुला कर कैद कर लिया।

विष्णुसिंह (महाराजा)–

राजा रामसिंह की मृत्यु के पश्चात् उसका पौत्र विष्णुसिंह आमेर की गद्दी पर बैठा। इसके पिता कृष्णसिंह की मृत्यु दक्षिण के युद्ध में पहले ही हो चुकी थी। इसका जन्म वि० सं० १७२८ में और राज्याभिषेक वि० सं० १७४६ में हुआ था। उस समय यह अपने दादा रामसिंह के साथ काबुल में था। वहाँ से यह बादशाह की आज्ञा पर अपने देश को लौट आया। कुछ दिन यहाँ रहने के बाद यह पुनः वि० सं० १७५५ को शाहजादा मुअज्ज़म के साथ काबुल गया। वहाँ पहुँचने पर पठानों के साथ भयंकर युद्ध हुआ। इसने युद्ध में बड़ी बहादुरी दिखलाई। वि० सं० १७५६ में काबुल में ही इसका देहावसान हो गया। इसके दो पुत्र थे—बड़ा जयसिंह और छोटा विजयसिंह।

वीकमसी–

यह राव सीहा का पौत्र और अज का पुत्र था। यह अपने पिता के साथ द्वारिका की ओर गया। वहाँ का स्वामी चावड़ा विक्रमसेन था। ग्रंथ सूरज-प्रकास के अनुसार जलदेवी ने वीकमसी को स्वप्न दिया कि मैं यहाँ की भूमि तुझे देती हूँ, तूं चावड़ा विक्रमसेन का सिर काट कर मुझे चढ़ा। इसके अनुसार वीकमसी ने चावड़ा राजा वीक्रमसेन का सिर काट कर देवी को चढ़ा दिया और उस प्रदेश पर अपना अधिकार कर लिया। उसका सिर काटने के कारण इसके वंशज वाढेल राठौड़ कहलाये।

सग्रादत खाँ–

यह बादशाह मुहम्मद शाह के समय में गोलन्दाज दल का सेनापति था। महाराजा अभयसिंह ने जिस समय सर बुलन्द को हरा कर बादशाह के चरणों में झुकाने की प्रतिज्ञा की थी उस समय यह सग्रादत खां सभा-स्थान पर मौजूद था। इसने ही महाराजा को अहमदाबाद की चढ़ाई के समय शाही

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तोपखाना से तोपें और गोलन्दाज दिये थे। यही बाद में अवध का सूबेदार बना कर भेज दिया गया। सआदत खाँ ने मुहम्मदशाह के समय में ही पूर्व में अपनी स्वतन्त्र सल्तनत कायम कर ली थी और अवध का नबाब बन गया।

सफदर जंग–

नादिरशाह के आक्रमण के बाद अमीरों तथा सरदारों में पारस्परिक संघर्ष आरंभ हो गया था। उस समय बुरहानुलमुल्क बादशाह के विश्वासपात्र व्यक्तियों में था। यह महाराजा अभयसिंह से भयभीत रहता था और उसकी खिलाफत भी करता था। यह बुरहानुलमुल्क नादिरशाह के आक्रमण के समय मारा गया और इसके स्थान पर इसका पुत्र सफदर जंग अवध का सूबेदार घोषित कर दिया गया। यह बड़ा योग्य व्यक्ति था। बाद में यही सफदर जंग अवध का स्वतन्त्र शासक बन गया और मुहम्मदशाह की आज्ञाओं का उल्लंघन करने लगा।

सम-साम-उद्दौला (शम्सामुद्दौला)–

यह बादशाह के विशेष विश्वासपात्रों में था। यही राज्य का मीरबक्सी था जो कि समस्त राजकीय कर्मचारियों और सैनिकों को वेतन बांटता था। यह स्वयं भी बड़ा ही वीर, नीतिकुशल व कट्टर मुसलमान था। जोधपुर के महाराजा अभयसिंह से उसकी वीरता के कारण मित्रता रखता था। जिस समय महाराजा ने सर बुलन्द के विरुद्ध पान का बीड़ा उठाया उस समय बादशाह की आज्ञा के अनुसार जो रकम महाराजा को देनी निश्चित हुई थी वह अठारह लाख रुपये इसी सम-साम-उद्दौला द्वारा दिये गये थे। यह महाराजा की प्रतिज्ञा के समय सभा-स्थान पर मौजूद था।

सर बुलन्द खाँ–

यह बादशाह मुहम्मद शाह के विश्वासपात्र व्यक्तियों में था। इसकी वीरता से प्रसन्न होकर बादशाह ने इसे मुबारिजुमुल्क की उपाधि दी और उसी समय गुजरात (अहमदाबाद) की सूबेदारी निजामुलमुल्क से हटा कर सर बुलन्द खाँ के नाम लिख दी। उस समय निजामुलमुल्क का चाचा हमीद खाँ सहायक के रूप में अहमदाबाद में कार्य करता था। सर बुलन्द वीर, राजनीतिज्ञ और चतुर व्यक्ति था। कुछ समय के बाद यह अहमदाबाद का स्वतन्त्र शासक बन बैठा और धन एकत्रित करने के लिय मनमाना अत्याचार करने लगा जिसकी खबर फरियाद के रूप में बादशाह के पास पहुँची। इस पर बादशाह ने अहमदाबाद का सूबा सर बुलन्द से हटा कर महाराजा अभयसिंह को दे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिया। महाराजा अपने दल-बल सहित अहमदाबाद पहुँचा। घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध में सर बुलन्द ने अपनी पराजय का अनुमान लगा कर आत्म-समर्पण कर दिया और आगरे की ओर रवाना हो गया। गुजरात से जाने के साथ ही इसका जगत में नाम लुप्त हो गया। यह चुस्त और साहसी भी था किन्तु उसे हमेशा अपने में कमी महसूस होती थी। वह खर्चे के मामले में बहुत लापरवाह तथा अधिक खर्चीला था। इसीलिये दिल्ली पहुँचने पर इसे अपने कर्जदाताओं से बचने के लिये मकान की चहारदीवारी में ही बन्द रहना पड़ा। इसकी मृत्यु १९ जनवरी १७४७ को ६९ वर्ष की आयु में हो गई।

सलावत खाँ

यह बादशाह शाहजहाँ का प्रमुख दरबारी था और बादशाह के विश्वास-पात्र व्यक्तियों में से था। यह नागौर के राव अमरसिंह राठौड़ से द्वेष रखता था। इसने राव अमरसिंह को आम दरबार में 'गंवार' कहा था। अमरसिंह जैसे स्वाभिमानी और सत्यप्रिय राठौड़ को यह शब्द अप्रिय लगा जिससे उसने तत्क्षण ही 'सलावत' पर कटार का वार कर मार डाला।

साहजहाँ (शाहजहाँ)-

यह बादशाह जहांगीर के पुत्रों में सब से अधिक बुद्धिमान, चतुर और योग्य था। इसका पितामह सम्राट अकबर महान् इसको सब से अधिक प्यार करता था तथा सदा अपने पास रखता था। उत्तराधिकार के लिये इसको भी अपने भाइयों से संघर्ष करना पड़ा था।

शाहजहां ६ फरवरी १६२८ ई० में आगरे में अबुलमुजफ्फर शिहाबउद्दीन मुहम्मदसाहिब-ए-किरान शाहजहां बादशाह गाजी के नाम से सिंहासनारूढ़ हुआ।

इसके समय में पूर्ण शान्ति थी। कई इतिहासकार इसके समय को मुगल साम्राज्य का स्वर्णकाल मानते हैं। शाहजहाँ को इमारतें बनवाने का बहुत ही शौक था। इसने कई सुन्दर इमारतें बनवाईं जिनमें ताजमहल जगत-विख्यात है। यह अपनी बेगम मुमताजमहल से बहुत प्रेम करता था और उसी की स्मृति में इसने ताजमहल बनवाया।

शाहजहाँ को अपने अंतिम समय में बहुत कष्ट झेलना पड़ा। इसके पुत्रों में उत्तराधिकार के लिये संग्राम छिड़ गया। यह अपने बड़े पुत्र दारा को सम्राट बनाना चाहता था। दारा उस समय दिल्ली में ही था। इसका दूसरा पुत्र शूजा बंगाल का गवर्नर था, तीसरा औरंगजेब दक्षिण में और चौथा मुराद गुजरात

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

में गवर्नर था। इन सबने अपने को अलग अलग सम्राट घोषित कर दिया। औरंगजेब ने चालाकी से मुराद को फुसला कर अपनी तरफ मिला लिया। बादशाह ने शुजा को रोकने के लिये जयपुर नरेश मिर्जा राजा जयसिंह को भेजा तथा औरंगजेब और मुराद दोनों का सामना करने के लिए जोधपुर नरेश महाराजा जसवन्तसिंह (प्रथम) को भेजा। उज्जैन के पास धरमत नामक स्थान पर जसवन्तसिंह और दोनों शाहजादों में युद्ध हुआ। शाही फौज के सेनापति कासिम खां ने, जो औरंगजेब को चाहता था, महाराजा को धोका दिया। इस प्रकार विजयी औरंगजेब आगे बढ़ा और उसने दारा को परास्त कर के शाहजहां को अपने महल में कैद कर दिया। औरंगजेब अपने तीनों भाइयों का खातमा कर के दिल्ली के तख्त पर बैठा। शाहजहां को साढ़े सात वर्ष तक कारागार में कठोर यातनाएं सहनी पड़ीं। बुढ़ापे में उसकी पुत्री जहांनआरा ने उस की सेवा करके उसके भग्न हृदय को शान्त्वना दी। अन्त में २२ जनवरी १६६६ ई० को शाहजहां की जीवन-लीला समाप्त हो गई और वह अपने पुत्र के बंधनों से मुक्त हो गया। शाहजहाँ को मुमताजमहल के पार्श्व में ताजमहल में दफनाया गया।

साहू

यह महाराष्ट्र के निर्माणकर्ता वीर शिवाजो का पोता व शम्भाजी का पुत्र था। इसका शासनकाल ई० सन् १७०८ से ४९ तक रहा। शाहू अपनी माता तथा अन्य सम्बन्धियों के साथ १६८९ ई० में कैद कर लिया गया। मई सन् १७०७ में आजम के द्वारा मुक्त कर दिया गया। अब शाहू अपने पितामह के राज्य पर मुगल सम्राट के सामन्त के रूप में शासन करने लगा। शाहू के महाराष्ट्र में प्रवेश करते ही बहुत से मरहठे सरदार इससे आ मिले किन्तु ताराबाई ने विरोध किया। शाहू के व्यक्तित्व में एक विचित्र आकर्षण था। इसका स्वभाव कोमल तथा दयालु था। इसमें उच्चकोटि की आचार-व्यवहार की सभ्यता थी। शाहू ने सन् १७०८ में ताराबाई की सेना को पराजित कर सतारा पर अपना अधिकार कर लिया। इसने ४१ वर्ष तक शासन किया और पेशवाओं के नेतृत्व में मरहठा साम्राज्य की द्रुतगति से अभिवृद्धि हुई। अतः शाहू की गणना महाराष्ट्र के महान् शासकों में होती है। सन् १७४९ में शाहू की मृत्यु हो गई और सारी मराठा शक्ति पेशवा के हाथ में आ गई।

सुजात खां (शुजात खां)

यह गुजरात के सूबेदार शेख मुहम्मदशाह फारूखी के प्रमुख अधिकारी 'काजिमबग' का पुत्र था और बड़ा वीर तथा नीतिज्ञ था। ई० सन् १७२० में

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हैदरकुली खां गुजरात का शासन सुजात खां को सौंप कर चला गया था। उसके स्थान पर निजाम स्वयं गुजरात का सूबेदार बन गया और हमीद खां को गुजरात में अपना प्रतिनिधि नियुक्त कर दिया किन्तु सुजात खां ने शाही दरबार में हमीद खां का पक्ष कमजोर देखा तो उस पर चढ़ाई कर दी और अपनी सेना को अलग-अलग टुकड़ियों में विभक्त कर दिया। जब वे शहर के निकट पहुँचे तो बिखरी हुई टुकड़ियों पर मरहठों ने आक्रमण कर दिया जिससे सुजात खां की सेना तितर-बितर हो गई। सुजात खां ने एक तरफ अपना मोर्चा लिया किन्तु हमीद खां मौका पाकर ऊपर आ धमका और सुजात खां पर तीरों और भालों से वार करने लगा। इस प्रकार सुजात खां को मार डाला गया।

सुरतांन (सिरोही के राव सुरतान)-

यह राव लाखा का प्रपौत्र तथा भाण का पुत्र था। राव मानसिंह के बाद सिरोही की गद्दी पर बैठा, किन्तु कुल अधिकार बीजा देवड़ा के हाथ में था। इसने सुरतान के काका सूजा रणधीरोत को मरवा डाला। बीजा स्वयं सिरोही का राजा बनना चाहता था पर उसका मनोरथ पूर्ण नहीं हुआ और कल्ला राजा बना दिया गया किन्तु कुछ दिन बाद ही सरदारों ने कल्ला को हटा कर दुबारा सुरतान को सिरोही का राजा बनाया। इसने चन्द्रसेन के पुत्र रायसिंह को रात्रि के समय अचानक आक्रमण कर मार डाला था। गुजरात जाते समय महाराजा सूरसिंह को रायसिंह के मारे जाने का खयाल आ गया और उन्होंने बदला लेने के लिए सिरोही और उसके गाँवों को लूटने की आज्ञा दे दी। यह देख सुरतांन घबराया और बहुत-सा रुपया महाराजा की भेंट कर उनसे सन्धि कर ली।

सूजा (शाह शुजा)-

यह बादशाह शाहजहां का द्वितीय पुत्र और बंगाल का सूबेदार था। बंगाल में विद्रोह कर देने पर आमेर के मिर्जा राजा जयसिंह को इसके विरुद्ध भेजा। उसने जाकर शाहजादे शुजा को परास्त कर दिया। बाद में राज्य प्राप्ति के लिए आगरे पर अधिकार प्राप्त करने की कामना से बंगाल से चल पड़ा। पर इस उत्तराधिकार युद्ध में पराजित होकर अराकान की ओर भाग गया और वहीं पर आराकानियों द्वारा मारा गया।

सूरजमल

यह सांदू गोत्र का चारण और नाथा का पुत्र था। यह महाराजा जसवन्त-सिंह के साथ काबुल में था, किन्तु महाराजा की मृत्यु के बाद औरंगजेब बादशाह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की आज्ञा से महाराजा जसवंतसिंह के दल के साथ दिल्ली आ गया। इसी दिल्ली के युद्ध में महाराजा अजीतसिंह की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ।

शेखअल्लाह यार–

यह अहमदाबाद के सूबेदार सर बुलन्द खां के विश्वासपात्र सेवकों में से था। युद्ध के समय यह किले का रक्षक बनाया गया था। शेखअल्लाह यार ने अपने साथियों की सलाह से फाटकों को चुनवा दिया और स्थान-स्थान पर रक्षक नियत कर दिये और घेरे के लिये सामान एकत्रित करने लगा। शेख-अल्लाह यार, जिसको शहर की चौकसी व रक्षा का भार सौंपा था, पूरी सतर्कता व सावधानी से कार्य करता था। यह बड़ा वीर, नीतिज्ञ तथा रण-कुशल व्यक्ति था और अहमदाबाद के युद्ध में राजाधिराज बखतसिंह से लड़ता हुआ मारा गया।

सेखा (राव शेखा)–

यह राव सूजा का द्वितीय पुत्र था। अपने भाई बाघा की इच्छानुसार शेखा ने अपना अधिकार छोड़ बाघा के ज्येष्ठ पुत्र वीरम को राज्य का उत्तराधिकारी बनाने की अनुमति दी थी। परन्तु सरदारों ने चुपचाप गांगा को गद्दी पर बैठा दिया। इसीसे राव शेखा बहुत नाराज हुआ और जोधपुर का राज्य प्राप्त करने के लिये नागौर के नबाब दौलत खां और हरदास ऊहड़ की सहायता से वि० सं० १५८५ (ई० स० १५२९) में जोधपुर पर चढ़ाई की। राव गाँगा और बीकानेर के राव जैतसी भी अपनी सेना सहित युद्ध-क्षेत्र में आ डटे। घमासान युद्ध हुआ। दौलत खां भाग गया और शेखा लड़ता हुआ वीर-गति को प्राप्त हुआ। शेखा महान् वीर, त्यागी और साहसी व्यक्ति था।

सैयदउद्दीन (ख्वाजा सैयदउद्दीन)–

बादशाह मुहम्मदशाह के प्रधान मंत्री निजामुलमुल्क के विश्वासपात्र व्यक्तियों में था। निजामुलमुल्क के दक्षिण में चले जाने के बाद इसने अपना प्रभाव बढ़ाने का प्रयत्न किया और यह प्रधान राज-मंत्रियों की श्रेणी में आ गया। किन्तु यह अधिक दिनों तक शाही दरबार में टिक नहीं सका, और बादशाह मुहम्मदशाह के कुप्रबन्ध से नाराज होकर दक्षिण में निजामुलमुल्क के पास चला गया।

सैयद बन्धु–

भारतीय इतिहास में हसनअली खां तथा हुसैनअली खां सैयद, सैयद-बन्धु (भाइयों) के नाम से पुकारे जाते हैं। ई० सन् १७१२ से १७२० तक के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समय को मुगलकाल में सैयद बन्धुओं का समय कह सकते हैं। इस समय में सम्राटों को बनाना, बिगाड़ना इनके बायें हाथ का खेल था। इनका पिता सैयद अब्दुल्ला खां मियाँ औरंगजेब के शासनकाल में बीजापुर तथा अजमेर का सूबेदार रह चुका था। फर्रुखसियर ने इन्हीं की सहायता से सिंहासन प्राप्त किया था, अतः हसन (अब्दुल्ला) को प्रधान मंत्री और हुसेन को प्रधान सेनापति नियुक्त किया। इस प्रकार सेना तथा शासन दोनों पर इनका नियंत्रण हो गया। ये बड़े ही वीर, योग्य तथा दृढ़प्रतिज्ञ थे। हिन्दुस्तानियों के साथ इनकी अधिक सहानुभूति थी। ये हिन्दू-विरोधी-नीति के घोर विरोधी थे। रतनचन्द नामक हिन्दू व्यापारी को इन्होंने अपना दीवान नियुक्त किया। दुर्ग के सेनाध्यक्षों तथा पदाधिकारियों की नियुक्ति का अधिकार भी इन्हें था। इस प्रकार इन्होंने उत्थान की सीमा पार कर ली थी। अब इनको नीचा दिखाने के लिये सम्राट ने कूटनीति से काम लेना आरम्भ किया और इनके विरुद्ध षड़यन्त्र रचने लगा, जिसका पता इनको लग गया और इन्होंने जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह से मित्रता कर उसको अपनी ओर मिला लिया तथा फर्रुखसियर की सत्ता को समाप्त करने का निश्चय कर लिया। फलतः वह पकड़ लिया गया और अन्धा करके कारागार में डाल दिया गया और कुछ दिन बाद ई० सन् १७१९ के अप्रेल मास में उसका वध कर दिया गया। उसके बाद सैयद भाइयों और महाराजा अजीतसिंह ने रफी-उद-दाराजात और रफीउद्दौला को क्रमशः नाम मात्र का सम्राट बनाया। इनके बाद सैयद भाइयों ने मुहम्मदशाह को सिंहासन पर बैठाया। इसी के समय में इनका पतन हो गया और ई० सन् १७२० में कुछ षड़यंत्रकारियों ने हुसेनअली का वध कर दिया। भाई की मृत्यु का समाचार पाते ही हसनअली (अबदुल्ला) बदला लेने के लिये सेना एकत्रित करके चला परन्तु बादशाह की सेना से युद्ध में पराजित होकर कैद कर लिया गया। कारागार में ही ई० सन् १७२२ में उसकी मृत्यु हो गई।

सोनग–

राव सोहाजी का दूसरा पुत्र और आसथान का छोटा भाई था। इसने अपने बड़े भाई आसथान की सहायता से ईडर (गुजरात) के (कोली जाति के) राजा सामलिया सोड़ को मार कर ईडर राज्य प्राप्त किया था। ईडर का राजा होने के कारण ही सोनग के वंशज ईडरिया राठौड़ कहलाये।

हमीद खां–

यह बादशाह मुहम्मद शाह के वजीर निजाम-उल-मुल्क का चाचा था। बादशाह मुहम्मदशाह ने जोधपुर नरेश महाराजा अजीतसिंह को गुजरात की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूबेदारी से हटा कर हैदरकुली खां को वहाँ का सूबेदार बनाया। हैदरकुली खां बादशाह के वजीर निजाम से शत्रुता रखता था। जब वह गुजरात का स्वतंत्र शासक बनने का प्रयास करने लगा तो निजाम को उसे वहाँ से हटाने में सफलता प्राप्त हुई। निजाम स्वयं गुजरात का सूबेदार बन गया और अपने चाचा हमीद खां को गुजरात में अपना प्रतिनिधि नियुक्त कर दिया।

निजाम बादशाह मुहम्मदशाह से प्रसन्न नहीं रहता था, अतः उसने दक्षिण में जाकर हैदराबाद को अपने अधिकार में कर लिया और वहां का स्वतंत्र शासक बन बैठा और उसका चाचा हमीद खां भी गुजरात का स्वतंत्र शासक बन गया।

हमीद खां ने अहमदाबाद में बहुत अत्याचार किये। वह कंथाजी, पीलाजी आदि मरहठों से मिल गया। इसका दमन करने के लिये बादशाह ने शुजाअत खां, इब्राहीमकुली खां, रुस्तमअली खां आदि मुगलों को सेना सहित भेजा किन्तु हमीद खां बड़ा चालाक, बुद्धिमान, नीतिज्ञ व दूरदर्शी था। उसने मरहठों की सहायता से एक एक कर के बादशाह के भेजे हुए सब मुगलों को मार डाला और उनकी सेनाओं को भगा दिया। अन्त में बादशाह मुहम्मदशाह ने एक विशाल दल के साथ सर बुलंद खां को गुजरात का सूबेदार बना कर भेजा। हमीद खां ने उसका मुकाबिला किया किन्तु अपनी पराजय का अनुमान कर के अहमदाबाद को छोड़ कर दक्षिण को ओर चला गया।

हरदास ऊहड़ (ऊड़)-

यह मोकलोत के २७ गांवों सहित कोढणा (कोरणा) का स्वामी था। यह जोधपुर राज्य की लक्कड़ चाकरी नहीं करता था, केवल आकर मुजरा कर जाता था, इसलिये कुँवर मालदेव इससे अप्रसन्न रहता था, अतः हरदास का पट्टा ज़ब्त कर लिया। इस समाचार को सुन कर वह सोजत में वीरमदेव के पास चला गया और गांगा का साथ छोड़ कर रायमल से जा मिला। यह जोधपुर का राज्य वीरम को दिलाने के पक्ष में था, अतः यह शेखा से जा मिला। यह बड़ा ही वीर, स्वाभिमानी और निर्भीक व्यक्ति था। यही नागौर के नबाब दौलत खां को शेखा की सहायतार्थ लाया था। इसी युद्ध में राव शेखा और हरदास ऊहड़ लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

हैदर कुली खाँ-

यह बादशाह बहादुर शाह, फर्रुखसियर और मुहम्मद शाह के समय में शाही सल्तनत का वफादार रहा। इन बादशाहों के शासनकाल में सर्व प्रथम ई० सन् १७१५ से १७१८ तक सूरत बन्दरगाह का शासक रहा। हैदर कुलीखां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बादशाह मुहम्मदशाह के विश्वासपात्र सेनापतियों में था। इसके कार्यों से प्रसन्न होकर बादशाह मुहम्मद शाह ने हैदर कुलीखां को भी छः हजारी जात व सवार दो अस्पहसि अस्पह का मनसब और नासिर जंग का खिताब भी दिया और हरावल व तोपखाना का अफसर बनाया। जब हसनपुर के पास अबदुल्ला खां की फौज से मुकाबला हुआ तो हैदरकुली खां ने तोपखाने से ऐसे गोले बरसाये कि अब्दुल्लाह खां की फौज में खलबली-सी मच गई और बहुत से आदमी जान बचा कर भागे। पिछली रात तक एक लाख सवारों में से कुल सतरह अठारह हजार सवार अब्दुल्ला खां के साथ बाकी रह गये। इस विजय से हैदर कुली खां का प्रभाव बढ़ गया। इसके बाद इसे जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह पर भी चढ़ाई के लिये तैयार किया किन्तु महाराजा अजीतसिंह ने अहमदाबाद की सूबेदारी का इस्तीफा भेज कर अजमेर को अपने कब्जे में रखा, अहमदाबाद की सूबेदारी हैदर कुलीखां को मिल गई।

जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है कि ग्रंथ में कवि महोदय ने कई पात्रों के नामों का आधा भाग अथवा उनके नामों को भिन्न-भिन्न रूपों में अंकित किया है। ग्रंथ में उनका केवल उल्लेख मात्र ही है। अतः ग्रंथ के आकार को ध्यान में रखते हुए ऐसे पात्रों का पूर्ण परिचय न दे कर केवल नामावली ही नीचे दी जाती है।

सूरज प्रकास, भाग ३, में आये हुए महाराजा अभयसिंह की सेना के प्रमुख योद्धाओं की नामावली

अखमाल अनावत १५०
अखमाल करमसोत महोक का पुत्र १३३
अखै (अखौ) चेलौ १६४
अखौ १४७
अखौ अणदावत ११०
अखौ उदावत बछराज का पु. १२०
अखौ धनराज का पु. १४३
अखौ धांधल १८६
अखौ प्रिथीराज का पु. १५०
अचळेस सांवळ का पु. ८६
अजबेस उदावत रूपसिंह का पु. १२८
अजबेस वैरण का पु. ६३
अजबेस चौहान १५३
अजब्ब राजड़ का पु. १४६
अजौ करमसोत जसावत १३२
अजौ केहरी का पुत्र १४८
अजौ जगमाल का पु. १५०
अजौ सिवदांन का पु. १४८
अजौ हरिनाथ का पु. १४६
अज्जब्ब जगावत ६३
अणंद गहलोत १६१
अणंद रांम का पु. ११६
अणंदेस हररूप का पु. ७१
अणदेस भोज का पु. १३७
अणदौ करणोत तेज का पु. १२७
अणदौ बारी १६५
अनपाळ सांवतसाह का पु. ६५
अनोप किसनेस का पु. ६०
अनोप जोधा बद्रीदास का पु. ११२
अनोप द्वारावत १०६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनोप मेघ का पुत्र १३७
अनोप हुल अजबावत १६१
अनो उगरावत १५१
अनो जगरांम का पु. ९३
अनो देवड़ो जैत का पु. १६०
अनो रूप का पु. १४७
अनो सहसावत १४०
अन्नपाळ किसोर का पु. १३८
अभैमल लाल का पु. ६५
अभो (अभ, अभा, अभमाल) करणोत
दुरगावत १२३, १२५, १२६
अभो जैत का पु. ७३
अमरेस रूप का पु. १५३
अमरेस लखधीर का पु. ५८
अमरेस सोनगरा मोहण का पु. १५७
अमांन मनोहरदास का पु. १३३
अम्मर अनावत ६४
अम्मर धनावत ५८
अम्मरसिंघ गोयंद का पु. ६२
अम्मरसींग पातल का पु. १५१
अम्मरसींघ सोनगरा सतावत १५७
अरिज्जण साह रतनेस का पु. ८९
आणंद फतावत ६४
आणंदरांम घासी का पु. १८४
आणंदसिंघ राघावत ९५
आणंदसी वाघावत ६३
आसकरन्न १०५
आसई(ड़ो) चेलो १९४
इंदो देवड़ो १५९
भांण करमसोत गजसींघ का पु. १३४
इंद्रभांण जोध(सिंघ) का पु. १३६
इंद्रसाह जैतावत जयसाह का पु. १२२
इंद्रसिंघ हरियंद का पु. ९३
इनतुल्ला १९४
ईस भुंभावत ७१
ईसर माधावत ७६
उगरेस प्रताप का पु. १५३
उदय नाथ का पुत्र १२९
उदैचंद व्यास ७३
उदैसींघ रावत १८४
उदो ५९
उदो करमसोत अणदेस का पु. १३३
उमेद ७४
उमेद अणदावत ११८
उमेदक ९७
उमेद करणोत १२८
उमेद व्रजपाळ का पु. १४६
उमेदसींघ अनावत १२८
उमेदहू करमसोत १३
उमैद ५७
उरजण सादल का पु. १२३
उरज्जणसिंघ ७५
ऊद चेलो १९४
ऊदभांण रणछोड़ का पु. १४३
ऊद लखावत १३१
ऊद सूजा का पु. ५३
ऊदल ६७
ऊदल करमसोत १२९
ऊदल जोगावत १९१
ऊदल देवड़ो मलियागिर (चंदनसिंह) का
पु. १६०
ऊदलसाह मलियागिर (चंदनसिंह) का
पु. १६०
ऊदल हठि का पु. १२३
करन्न उदावत परताप का पु. ११८
करन्न पीथावत ११०
करीम पड़दार १९५
कलियांण गोवरधन्न का पु. ६१
कलियांण जैतमालोत १३५
कलियांण माला का पु. ५३
कलो उदावत हरनाथ का पु. ११९
कलो दलसाह का पु. ६१
कलो सिवदान का पु.
कसमीर खांन २५९

कांन, कांन्ह, कूंपावत रांम का पुत्र ६६, ६७
काजम २५९
कायम खां ३
किशन चेलो १९४
किसनेस ५५
किसनेस करणोत तेज का पु. १२८
किसनेस सोनगरा दलसाह का पु. १५६
किसन्न ५४
किसन्न करमसोत गोरधनोत १३३
किसोर ऊदल का पु. ६०
कीरतसिंघ जगावत ९४
कुजरक बंग २५६
कुसळेस कछवाह चंद्रभांण का पु. १५८
कुसळेस चांपावत नाथ का पु. ५०, ५१
कुसळेस भूम (भोमसिंह) का पु. ८६
कुसळेस मेघ का पु. १३७
कूंप रांमसिंह का पु ५८
कूंभ साहिब का पु. ९१
केहर भगवांन का पु. १५२
केहर वीठल का पु. ११०
केहर हरो का पु. ९७
केहरी ५८
केहरी ५९
केहरी हरी का पु ११९
क्रन (किसनसिंह या करणसिंह) ५७
क्रन्न रसा(रासा)वत १४६
क्रन्न विजावत १३५
खगेस नाहर का पु. ९१
खड़गेस जसकरण का पु. १३१
खड़गेस जसकरण का पु. १३१
खांन बहलोल २५६
खीम करमसोत गिरद्धरदास का पु. १३२
खीम मांगळियो १६०
खीवकरन्न देवकरण का पु. १४७
खेतल गूजर १९३
खेम १३५
खेम (खीम) फतावत ७५, ७६
ख्युसाळचंद पंचोळी १८२
ख्वाजा बगस १९४
गंग १३७
गजसाह करन्न का पु. ९७
गजसाह भोज का पु. ७४
गजसाह साहिब भांण का पु. १५२
गजो अनावत १४७
गजो हरियंद का पु. ६६
गाजी साह केहरी का पु ११०
गाहड़मल व्यास १७३
गिरमेर (सुमेरसिंह) देव का पु. ४९
गुणदास विहारी का पु. १४३
गुमांन करमसोत हठी का पु. १३४
गुमांन कुसळेस का पु. ९०
गुमांन जोध का पु. १००
गुमांन विहारी का पु. १०९
गुमांनसिंह करमसोत १३४
गुमांन हठीसिंह का पु. १०६
गुलमीर सयद ३
गुलहुसन २५६
गोकळ करमसोत गिरद्धरदासका पु. १३१
गोकळदास मेहता १८३
गोपाळ महता १८३
गोपियनाथ पतावत १४७
गोपीनाथ करमसोत १३२
गोपीनाथ जैतावत पतावत १२३
गोपै(पो) चेलो १९४
गोयंददास ९८
गोवरधन्न चौहांन हरिनाथ का पु. १५५
ग्यांन माहव का पु. १०९
चंद (देवीचंद) मुहणोत १७८
चंद जोगावत ६६
चंद विहारियदास का पु. १५०
चंद स्यांम का पु. १४३
चत्रभुज चंद का पु. ७१
चूहड़खांन ८१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चैनकरण करणोत दुरगावत १२७
चैन पिराग कछवाह का पु. १५८
छतौ नरसिंघ का पु. ६२
छतौ रांम का पु. ७०
जग-जोधा सांवळ का पु. ११२
जगतेस अजबेस का पु. १४७
जगतेस देवड़ा जैत का पु. १६०
जगतेस भाऊ का पु. ८६
जगनाथ भोज का पु. १३६
जगरांम रांम का पु. ६१
जगराज साहिब खां का पु. ६५
जगरूप केहर का पुत्र ६८
जगसाह नाहर का पुत्र ६०
जगौ मधावत १५१
जमसेरखांन २६४
जमांन मेघ का पु. १३७
जयदेव सुभावत १६२
जयरांम वीठू (चारण) १७२
जयसाह कछवाह केहर का पु. १५८
जलाल नगारची राजू का पु. १६५
जल्लाल १६४
जवांन जोगावत १०४
जवांन सोनगरा दुज्जणसींघ का पु. १५७
जसक्रन साहिब खां का पु. ६५
जसराज गोयंद का पु. १४०
जसराज पड़िहार १६१
जसराज मुकंदेस का पु. ८५
जसा जैत का पु. ८६
जसावत जीवणदास १५१
जसौ उदावत ११५, ११६
जसौ सिवदान का पु. १४६
जालिमसाह भगवंत का पु. ६७
जीवण उदावत १४५
जीवणदास अनावत ५१
जीवणदास जसावत १५१
जीवणदास सांवळ का पु. ६४
जीवणदास सिंधल बीठल का पु. १४३
जीवणदास सिरदार का पुत्र ८८
जीवण हठी का पु. ६६
जीवणौ बारी (बारी) १६५
जुंझार हरियंद का पु. १४७
जुरावर उदावत जोग का पु. १२०
जुरावर उदावत रेण का पु. ११६
जुरावर कछवाह तेज का पु. १५६
जुरावरसिंघ (जुरा) जोधा कुसळावत ११२
जैत अनावत ६७
जैत उदावत १०४
जैत करमसोत लखधीर का पु. १३१
जैत गहलोत १६१
जैत देवड़ौ जगावत १५६
जैत सूर का पु. ८५
जैमल साह राजड़ का पु. १२३
जोध उदावत अजबावत ११८
जोध उदावत लाखा का पु. ११६
जोध करमसोत कलावत १३३
जोरावर ऊदल का पु. ६८
जोरावर रामचंद्रेस का पु. ६६
जोरावर साह रासावत ५६
जोरावर सिंघ अणंद का पु. ६३
जोरावरसिंघ जसावत ६१
जोरावरसिंघ फतावत १०८
जोरावरसिंह पदम्म का पु. ६६
जोरौ अणदावत ६६
जोरौ हरनाथ का पु. ६८
झुंझार मेघ का पु. १४८
झूंझार वीरम का पु. ६२
झूझ फतावत १४८
ठाकुरसीह गुजर सांमावत १८५
डूंगर नाहर का पु. १४६
डूंगर सेज ब्रदार १६४
डूंगरसिंह हिमतसिंह का पु. ७४
ताज मुसलमान १६४
तिलोक भाउ का पु. ६४

तुलछियदास १६२
तेज केहरी का पु. १३७
तेज (हणूमत जाति) जेठवो १६३
तेज जेतावत सादल का पु. १२१
तेज परताप का पु. ११२
तेज लाल का पु. १००
तेज सबळेस का पु. ५७
तेजो करमसोत लाल का पु. १३१
थांन भाखर का पु. १३६
दयाळ खीची पाल का पु. १८४
दळकन्न करणोत जसकन्न का पु. १२८
दळसाह कांन्ह का पु. ७७
दळसाह भंडारी थांन का पु. ११७
दळसाह सोनगरा हरि का पु. १५५
दलौ ५२
दलौ अणदेस का पु. ६३
दलौ अमरावत १०७
दलौ करमसोत कांन्ह का पु. १४१
दलौ जयसींघ का पु. १४६
दलौ परताप का पु. ६०
दांणियदास बहादुर का पु. ६२
दांन सांमत का पु. ६८
दुरंग कुसळेस का पु. ७४
दुरजणसींग चौहान सबळावत १५५
दुरज्जण नाहर का पु. १४१
दुरज्जण सबळेस का पु. १०६
देदल देवड़ौ करणावत १६०
देवकरन्न जगतावत ६६
देवकरन्न बिहारी का पु. ६४
देव कुसळेस का पु. ६५
देव सुरतावत १४६
देवीचंद उदावत गोयंददास का पु. ११८
देवीचंद मुहणोत १७८
दौलत साह पंचोळी
दौलतसिंघ देवड़ौ जसावत १५६
दौलतसींघ ईसर का पु. ६५
द्वरौ (द्वारौ) मुकंदावत १४०
धनरूप भंडारी १७७
धनियौ चेलौ १६४
धनौ उदावत गोवरधनोत १२०
धींग साहिब का पु. ६१
नदलाल रिणछोड़ का पु. १८१
नथम्मल १६१
नरायणदास कुसळेस का पु. ६०
नरौ धांधल १८६
नरौ जैंतमालोत मुकनेस का पु. १३५
नरौ विजयपाळ का पु. ६०
नवलखांन २६४
नाथ उदावत दीपावत १२०
नाथ चौहान अजावत १५४
नाथ जसावत ६६
नाथौ अमरावत १४५
नाहर कन्न का पु. १०४
नाहर खां १६१
नाहरखांन करमसोत १३१
नाहरखांन चारण उदावत १६६
नाहरखांन नरावत १३६
नाहरखांन जैतावत जोरावरसींघ का पु. १२१
नाहर फतावत ५६
नाहरसाह जैत का पु. १५२
नाहरसाह जैंतमालोत मोहण का पु. १२१
नाहरौ नगारची १६५
निजरू पड़दार १६५
पतौ इंद्रभांण का पु. १४५
पतौ (परताप) जोधौ भीम का पु. १००, १०२, १०३
पतौ महरांण का पु. १११
पदम जोरावर उत ७३
पदमेस ८३
पदमेस चंद का पु. १४०
पदमेस दुरज्जणसींघ का पु. १२३
पदमेस साहिब खां का पु. ५६
पदमेस सूर का पु. १५२

पदम्म १९२
पदम्म दलावत १०७
पदम्म सगतावत ५७, ५८
परियाग सूर का पु. ६१
पातल वैणावत ६५
पातल साह गोकळ का पु. १४९
पातौ १०३
पाहड़सींघ उदावत कुसळावत ११८
पीथल भाऊ का पु. ६३
पीथल मांन का पु. ६०
पीथल सरदारसिंह का पु. ७०
पीर सा, १९५
पीरोज·········
पूरणसींघ १३६
पेम कन्हावत ९६
पेम जुगावत ११९
पेम जैतावत रांम का पु. १२१
पेम राजड़ का पु. ५७
पेम सदावत ९५
प्रताप गहलोत १९१
प्रथिसिंघ कूंपावत फतावत ७०
फकीर जोधदास का पु. ८८
फतमाल १४८
फतमाल उग्रसेण का पु. १५३
फतमाल नाथ का पु. ६३
फतैचंद दिपावत १७३
फतौ जैतावत गोरधनोत १२१
फतौ झूंझावत १०४
फतौ देवियसींघ का पु. ५९
फतौ परताप का पु. ५९
फैजुला १९४
बंकीयदास १४२ देखो वंकौ, वांकौ ऊहड़ १४१
बखत भाऊ का पु. ६९
बखतसी मघावत १५१
बखतावर ८२
बखतेस ९१, ९३, ९५
बखतेस खिड़ियौ चारण अमरा का पुत्र १७१
बखतेस दलावत ७३
बखतेस पड़िहार १९२
बखतेस पीथल का पु. ४६
बगसौ बहादुर का पु. ७२
बछराज मुहणोत १७८
बद्रियसिंघ देवावत ७१
बद्री ९८
बद्रीदास १४०
बलूखांन १९४
बहादुर जीवण का पु. १२०
बहादुर जैतावत पतावत १२२
बहादुर पीथलउत ९५
बहादुर सबळेस का पु. ९२
बहादुरसाह जोग का पु. १५२
बहादुर साह सिवावत ९५
बहादुरसींघ ९१
बहादुर सेजग्रदार १९४
बाघ तेज का पु. १४७
बालकिसन पंचोळी (बगसी) हरियंद का पु. २१
बिहारीदास त्रीकम का पु. १९१
भगवंत कन्न का पु. ७६
भगवांन करमसोत लाल का पु. १३३
भगवांन धांधल १८९
भव (भाऊ) जैतावत गोरधनोत १२१
भांण १०८
भांण जैत का पु. ६०
भांण जैतावत हरि का पु. १२३
भांण बाघ का पु. १०९
भांण महवेचा रावल १३५
भागवंत ८३
भागवंत किरतेस का पु. ९१
भारथ कछवाह सूर का पु. १५९
भीम १३९
भीम धवेचा अमरावत १३४

भीमाजळ मोकल का पुत्र ८५
भैरव नाहर का पु. ५०
भोम मेड़तियो ८७
मदन्न ऊद का पु, ६४
मधौ करणोत १४६
मनूप देव क्रनोत १४८
मनौ १९३
मवातीखांन १९५
महक्रन्न करणोत जैत का पु. २१५
महपति चेलौ १९५
महम्मद सेख का पु. १६६
महरांण १६६, १७०
महिक्रन्न भाखर का पु. १५१
महिरांण कछवाह १५६
महोकमसींघ स्यांम का पु. १००
मांडण करमसोत जसावत १३३
मांन उदावत ११७
मांनड़ खां ८१
मांन पड़दार १९२
मांन फतावत १५०
माधव जसावत ७३
माधवदास हुजदार १८४
माधव साह चौहान मुरारिय का पु. १५४
माधवसींग ऊद का पु. १११
माधव सोनगरा सतावत १५७
माल कछवाह जगावत १५८
मालनाथ का पु. १०८
माल पड़िहार १९२
माल सतावत १४६
माहव क्रन्न का पु. ११० १३७
माहव चांपावत ४९
माहव जसावत १४८
माहव पंचोळी १८२
माहव मांन का पु. ८८
माहव साह केहरी का पु. १०९
माहव साह परसावत १३७
माहियदास १७७
मुकंद उदावत ११८
मुकंद कचरावत १२८
मुकंद धांधल १८९, १९०
मुकंदेस चौहान सूर का पु. १५४
मुकदेस मघावत ६४
मुकंदो १५१
मुकनेस जोग का पु. १३६
मुकन्न कुंभ का पु. ७४
मुकुंद सहसावत १५१
मुजायद खां १९४
मुरळी चेलौ १९५
मुहकम भारमलोत भूपति का पु. १३९
मेघ किसन्न का पु. १३६
मोकमसींघ जगावत १४७
मोहकम जगन्नाथ का पु. ५७
मोहणसींघ उदावत १२०
मोहणसींघ कछवाह अखावत १५९
मोहनदास ऊद का पु. १०८
मौहक्कम रतनसेन का पु. ६१
रघुनाथ करमसोत जसावत १३२
रघुनाथ धवेचा ७८
रघुनाथ रूप का पु. १२१
रघुनाथ रोहड़िया बारहठ जसराज का पु. १६८
रघू खड़गेस का पु. ७
रतन चौहान कुजावत १५४
रतनागर (रत्नाकर=समुद्रसिंह) भीम का पु. ७
रतनेस मौहोकम उत ९६
रसौ (रासौ) चौहान अजबेस का पु. १५४
रहम तुल्ला २५३
रांम कलावत ८६
रांम कूंपावत ५८
रांमचंद्रेस व्यास
रांम जगराम का पु. १३६
रांम तिलोक का पु. ६०
रांम नाहर का पु. १५२

रांम भाऊ का पु. १५२
रांम माधावत ६३
रांम विजावत ८८
रांमौ सगतेस का पु. ७२
रांमौ सबळावत ६८
राज खां १९५
रायसिंघ ९९
रायसिंघ घीव का पु. ६५
रासौ करमसोत कलियांण का पु. १३१
रूप राजड़ का पु. ९९
रासौ खेतल का पु. १५०
रासौ माहव का पु. ७३
रिणछोड़ चौहान सूर का पु. १५४
रिणछोड़ घांधू १९३
रुघौ ईसर का पु. १३१
रूप तेजावत ५६
रूप नरावत १५०
रूप ऊदावत राजड़ का पु. ११३
रूप विजावत १५०
रैण राजड़ का पु.
रैण विजावत १३५
रैण रैणायर ओसवाल १७९
रैणायर जगनाथ का पु. ५७
रोसन अलाह
लखधीर ठाकुरसी का पु. १७७
लखौ १९३
लखौ उदावत १२०
लखौ हरियंद का पु. १४६
लाल १५३
लाल भाणदावत १५०
लाल किसनावत ७२
लाल जगावत १५०
लाल जैत का पु. १००
लाल पड़िहार १९२
लाल व्यास १७३
लालौ सगतावत ५४
वंकौ ऊहड़ १४१
वखत चौहान कुसळावत १५४
वखत सूर का पु. ९३
वखतावर ७९
वखतेस करनेस का पु. ६५
वखतेस जैत का पु. १४६
वखतेस माहप का पु. ५६
वखतेस वीठळदास का पु. ९६
वनराज भूंभ का पु. ८६
वनिराज कन्ह का पु. ८६
वछराज दीप का पु. ९५
वछौ वारी (बारी) १९५
वांकौ ऊहड़ १४१
विजपाळ नरपाळ का पु. १३७
विजपाल माहव का पु. १४८
विजपाळ रूप का पु. १४१
विजौ १९३
विजौ पदमेस का पु. १४६
विजौ वारी (बारी) १९५
विरमांण जसावत १४८
विसनेस सकतेस का पु. १३४
विसन्न ५८
विहारीय दूद का पु. १५१
विहारी खां १९३
विहारीदास वाघ का पु. १०४
विहारी वारी (बारी) १९५
वीठळदास आणंद का पु. १३३
वीर सबळावत १५३
वैण गिरमेर (सुमेरसिंह) का पु. १३५
वैरियसाल सोनगरा हठी का पु. १५७
व्रंदावनदास १३८
संगौ (सांगौ) परताप का पु. १३३
संगौ (सांगौ) भगवांन का पु. १३८
संग्रांम साहिब का पु. १४५
सकतेस ९२
सकत्त करमसोत वीठलऊत १३३
सगतेस ५२
सगतेस खेम का पु. ६४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सगतेस भगवांन का पुत्र १४८
सगतेस सांमत का पु. १५३
सगतेस हरनाथ का पु. १०५
सतिदांन खिड़ियो चारण १७१
सत्रसाल गोरधन्न का पु. १२२
सत्रसाल सदावत ६२
सदो कुसळावत १४३
समेळ सुरावत ६०
सरदार जोध का पु. ६६
सरदार फतमाल पु. ७०
सरदार रूप का पु. ८८
सरफखां (त्रिधो) १६५
सरूप सांमतसिंघ का पु. ७६
सलेम (सलीम) १०३
सवाइय अम्मरसिंघ का पु. ११०
सवाइय उदावतमांन का पु. ११६
सवाइय माहव का पु. ११०
सवाइयसिंघ उदावत विजावत का पु. ११६
सवाइयसींघ (सींघ सवाइ) जोधो जसावत ११२
सवाइसिंघ अभावत ८६
सांम कुसळेस का पु. ७२
सांमत मांहव का पु. १३२
सांमत सदावत १००
सांमत सूर का पु. १४८
सांम मोहकावत ६४
सांवळदास पड़िहार १६१
सांवळदास भगवांन का पु. ७६
साहब विहारी का पु. १३६
साहसमल पतावत ५६
साहिब खांन १३६
साहिबखांन अजावत ७४
साहिबखांन मांगळियो अमरावत १६१
साहिबखांन सूजावत १४१
साहिबखांन सोनगरो दलावत १५७
साहिबसिंघ जोधावत १०४
साहिबसींघ अजावत १६१
सिंघ उमेद (उमेदसिंघ) अजावत १२२
सिंघ संग्राम (संग्रामसिंघ) जैतावत दलावत १२२
सिंभू कुसळावत ६६
सिधक्रन करणोत अभयकरण का पु. १२८
सिरदार उदावत भाउ का पु. १२१
सिरदार कुसळेस का पु. १५२
सिरदार जैतावत गरीबदास का पु. १२३
सिरदार जोध का पु. ६६
सिरदार रूप का पु. १०७
सिरदार सेर का पु. ७७
सिरदार सेर का पु. ६८
सिरदार हरियंद का पु. ७६
सिवक्रन खेम का पु. १२७
सिव खेतल का पु. १४६
सिवदांन इंद्रभांण का पु. १२२
सिवदांन उदावत सबळेस का पु. ११८
सिवदांन करमसोत केसव का पु. १३२
सिवदांन जसावत १०६
सिवदांन हरियंद का पु. १४२
सिवसाह करमसोत माहव का पु. १३१
सिवो करमसोत परियाग का पु. १३४
सिवो चंद का पु. ७३
सिवो वारी (बारी) १६५
सीदक्क १६५
सुंदर गूजर १६३
सुंदरदास श्रणदावत १०६
सुजांण भायल रतनागर का (समुद्रसिंह) पु. १६१
सुभरांम उदावत जगरांम का पु. ११६
सुभो (सुभक्रन, सुभसाह) जसावत चारण १६६
सुभो पड़िहार १६१
सुरत कुसळेस का पु. ७७
सुरतांण पदम का पु. १४५
सुरतांण सांमत का पु. ७२
सुरतेस दलसाह का पु. ७४
सुरतेस रघुनाथ का पु. ६०

सुरतेस रूप का पुत्र ६३
सुरेस (इंद्रसिंह) ७४
सुरौ अणदेस का पु. ६१
सूजड़(ड़ौ) चेलौ १६४
सूर आणंद का पु. ६१
सूरजमल बारहठ १७१
सूरजमाल अखावत १४६
सूरजमाल जैतावत फतावत १२३
सूरजमाल पीथावत १३६
सुरजमाल सुंदर का पु. १४६
सूरज वाघावत ६२
सूर नाहर का पु. १४५
सूर मुकंद का पु. ५३
सूर राजड़ का पु. १४६
सूरतसिंघ जसावत १४६
सूरतसींघ अनावत १३८
सूरतसींघ उदावत सबळावत १२०
सूरतसींघ जगावत १४०
सेख १६५
सेर ७६, ८०, ८१, ८३
सेर जोध का पु. ७६
सोभ विजावत ६२
हठमाल किसोर का पु. १०५
हठमाल सुरतांण का पु. ६५
हठी कलियांण का पु. ६४
हठीखांन १६४
हठी चत्रभुज का पु. ८६
हठी मांडण का पु. ६४
हठी रिणछोड़ का पु. ६२
हठी सबळेस का पु. ७४
हठी सूर का पु. १४४
हदौ उदावत ११३
हदौ मांगळियौ गोरधनोत १६०
हमीर वारी (बारी) १६५
हरकिसन्न मांन का पु. ६०
हरदास मांगळियौ १६३
हरनाथ अबदार १६३
हरनाथ उदावत जीवणदास का पु. १२०
हरनाथ केसरी का पु. ५८
हरनाथ भगवांन का पु. ७१
हरनाथ माहव का पु. ११०
हरसींघ हरिनाथ का पु. ७७
हरि ६३
हरि चेलौ १६४
हरिभांण भगवांन का पु. ७१
हरियंद १६३
हरियंद अखमाल का पु. ८६
हरियंद पंचोळी १८२
हरियंद लाल का पु. १५३
हरिरांम महवेचौ माहव का पु. १२०
हरि सबळेस का पु. १६०
हळवाह (बलभद्रसिंह) १४६
हळवाह (बळरांम) रिणछोड़ का पु. १६२
हळिरांम (बळरांम) द्वरावत १५०
हिंद भाउ का पु. १५८
हिंदवसिंघ पतावत ६०
हिंदाळ दीप का पु. ७७
हिंदाळ नाथ का पु. ८६
हिंदाळ पेम का पु. १६०
हिंदाळ भागचंदोत १३८
हिंदाळ हरि का पु. १५२
हिमतसींघ चौहांन दलावत १५४
हिमतेस अजब्ब का पु. ६०
हिमतेस सोनगरौ दुरज्जणऊत १५७
हिम्मत सुजावत १५२
हिंरदयरांम मांगळियौ भागचंदोत १६०

सूरज प्रकास भाग ३ में आये हुए राजाधिराज बखतसिंह की सेना के प्रमुख वीरों की नामावली.

अखौ भोज का पु. २०४
अणदौ अमरावत २०६
अणदौ दुरगावत २२६
अणदौ गहलोत देवराज का पु. २३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणदौ वनराज का पुत्र २२६
अनपाळ माहव का पु. २०२
अलपाळ सगत का पु. २१३
अभौ नाथ का पु. २१६
अभौ मंडळी भारहमल का पु. २२५
अभौ सेखावत अणदावत २१६
अमांन जोग का पु. २१०
इंद्रसींघ चौहान लाल का पु. २२७
सर किसनावत २१६
ईसर चौहान तेजलऊत २२८
ईसर दौढियदार २३४
उदैसिघ वेण का पु. २०८
ऊद उदावत प्रताप का पु. २२१
ऊदल २०६
ऊदल कलावत २२३
ऊदल किसनावत २२३
ऊदल दौलतसाह का पु. २०८
कनकौ रूप का पु. २१२
करणौ अणदावत २१६
करणौ सेखावत हरिनाथ का पु. २२०
करन जोधौ झुझार का पु. २१५
करनौ अनपाल का पु. २१७
करन्न तेज का पु. २०१
कलौ नरपाल का पु. २३३
कल्यांण धांधल २३३
काबिलसींघ पीथल का पु. २१०
कासिम २२१
कुसळौ सांवळदास का पु. २२८
केहर ऊद का पु. २२६
केहरियौ अजावत २२२
केहरी इंद का वंशज २३२
खीम अचळावत २१०
खीम कांन्ह का पु. २२३
खीम क्रन उदावत किरतेस का पु. २२२
खेम करन्नि जादव जगमाल का पु. २२८
गिरधीर पडिहार २३४
गिरमेर (सुमेरसिंह) दलावत २१०
गुमांन कूंपावत खड़गावत २१५
गुमांन जादव जसावत २२६
गुमांन जैत का पु. २१०
गुमांन जोग का पु. २१०
ग्यांन सेखावत दलावत २१८
चतुरेस पतावत २०२
चैन उदावत सुभरांम का पु. २२१
जगतौ जैत का पु. २१५
जगतौ मुकंदावत २२४
जगतौ लखधीर का पु. २१४
जवांन कूंपावत सांमत का पु. २२४
जसावतसिंह चौहान २२६
जसौ ईसर का पु. २०७
जसौ पंचमुख (पंचायण) का पु. २११
जसौ सहांणिय २३३
जसौ सेखावत २१६
जीवण जोगीदास का पु. २०२
जुरावर कूंपावत २१३
जैत अखा का पु. २०७
जैत गोकुळदास का पु. २११
जैत सेखावत भाऊ का पु. २२०
जोध जगरूप का पु. २२४
जुझार जादव गिरमेर (सुमेरसिंह) का पु. २२८
झुझार वरसींघ का पु. २११
झूझ सेखावत चंद्रभांण का पु. २१८
तेज चांपावत अचळावत २१२
तेज सेखावत हरिनाथ का पु. २२०
तेज चौहान रांम का पु. २२७
दल क्रन्न प्रताप का पु. ११७
दलसाह जोधौ जगतेस का पु. २१५
दलौ करणोत २१७
दलौ मुकंदावत २०२
दलौ ऊहड़ सुंदरउत २२५
दांन सुजांण का पु. २१२
दूजण सेखावत २१६
देवक्रनोत २०१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवक्रनोत रांम का पुत्र २११
देवियसींघ कूंपावत सांमतऊत २१४
धनौ पंचोळी २३३
धनौ सेखावत नथलऊत २१८
धीर चौहांन दलावत २२७
धीरज लाल का पु. २१७
नंदलाल व्यास २३३
नरसींघ फतावत २१८
नवलौ हिरदेस का पु. २२३
नाथ सहांणिय २३३
नाहर जादव भीम का पु. २२९
पतौ चांपावत नादलऊत २१३
पतौ नाहरऊत २०२
पतौ महक्रन्न का पु. २०१
पतौ सेखावत राजड़ऊत २२०
पदमेस किरतेस का पु. २०८
पदमौ चांपावत अनपाल का पु. २१२
पदमौ दलावत २२२
पदमौ रतनावत २०८
पदम्म दलसाह का पु. २०९
पाहड़ २२३
पीथ सांदू शाखा का चारण सबळावत २३१
पेम मछरीक (चौहान) मघावत २०२
फतमाल जयतेस का पु. २१०
फतौ सोनंगिरौ हरि का पु. २३२
बखतेस करणेस का पु. २१६
बखतौ सदमाल का पु. २२३
बखतौ सांमळऊत २१०
बगसौ दूद का पु. २१७
बदरौ धावड़ २३३
बहाबर चांपावत सुजांण का पु. २१३
बहादर चौहांन हींदव सींघाबत २२८
बाघ अनोप का पु. २१२
बाघ सेखावत २१९
बुधौ बखतावत २०९
भवांनियदास रूप का पु. २२७
भारतसींघ २१६
भीम कूंपावत हठावत २१४
भूप करमसोत मेघ का पु. २२४
भोप सेखावत सुजांण का पु. २१९
मधौ (माधौ) करणोत २२२
मनरूप २०७
महरांण हरी का पु. २१६
महिक्रन्न पंचोळी २३२
महिरांण २०८
महुऔ लाल का पु. २२७
माहव चारण २३१
मोहव ऊहड़ सुंदरऊत २२५
माहव सेखावत पीथल का पु २१९
मुहकौ चवांण २२६
मोकम कांन्ह का पु. २०६
मोड उदावत गिरमेर (सुमेरसिंह) का पु. २२१
मोहण चौहान सूर का पु. २०६
रघुनाथ कूंपावत रांम का पु. २१४
रांम जैत का पु. २०४
रांम सहसावत २०७
रांम सेखावत किसोर का पु. २१८
रांम सेखावत सूरजमाल का पु. २१९
राजड़ चौहान अजब का पु. २२७
रूप चौहान कुसळावत पूरबियौ २२६
रूप सेखावत रतनावत २१९
लखधीर सेखावत सुजांण का पु. २१९
लखौ ऊहड़ हरियंद का पु. २२५
लाल जसक्रन का पु. २१४
लाल रांमचंदोत २०८
लाल सेखावत झूफ का पु. २१८
लाल हरींद का पु. २३३
विजपाल सुजांण का पु. २३२
विजैमल पुरोहित माहव का पु. २२९
विसनेस २०१
विसनौ चांपावत रघुनाथ का पु. २१२
विहारियदास करमसोत २२४
सगतेस अणदेस का पु. २०१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सरदार लखधीर का पु. २११
सरदार सांमत का पु. २१६
सलो कांन्ह का पु. २०८
सवाइय २१७
सवाइय मांन का पु. २१४
सांगण सबलावत २२२
सांवळ जादव सूर का पु. २२८
साहिबखां चौहान अबदार २३४
साहिब नाथ का पु. २०६
साहिब मांगळियो २३२
सिंभू उदावत हरनाथ का पु. २२४
सिरदार अनपाळ का पु. २१०
सिरदार नवलावत
सिवदांन गिरमेर (सुमेरसिंह) का पु. २०४
सिवदांन मनरूप का पु. २०६
सिवसिंघ सेखावत रामसिंघ का पु. २२०
सिबसींघ जादव २२६
सिवो सेखावत भाऊ का पु. २२०
सिवो हरनाथ का पु. २११
सुजांण धांधल २३३
सुद्रसेण जादव कला का पु. २२८
सुद्रसेण सेखावत सूर का पु. २१६
सुभसाह जैत का पु. २२४
सुरतांण जोध का पु. २१५
सुरनाथ २१७
सुरता क्रन्न का पु. २०२
सुरतो हरियंद का पु. २११
सूर मधावत २२६
सूर मुकंदावत २१३
सूरज मांगळियो २३४
सूरजमाल मेड़तियो सिरदार का पु. २०३, २०४
सूर हरींद का पु. २२७
सूरिजमाल २०१
सेर सोढ़ का पु. २१८
हरिंद भवसिंघ का पु. २०४
हरियंद जैत का पु. २२६
हरियो २०५
हरिलाल व्यास २३३
हिमतेस बखतेस का पु. २०६
हिमतेस सदावत २१२
हिमतो कूंपावत बाघ का पु. २१४
हिमतो मांडणोत २१३
हिमतो रांम का पु. २२२
हिमतो सहांणिय २३३
हिम्मतसींघ जादव जगमाल का पु. २२६

सूरज प्रकास भाग ३ में आये हुए विजयराज भण्डारी की सेना के मुख्य योद्धाओं की नमावली

अखो मांन का पु. २४४
अभमल दांन का पु. २४४
किसनों प्रथिराज का पु. २४१
केहरी भीम का पु. २४२
केहरी सुखराज का पु. २४२
क्रन्न कूंपावत
गजण सवाइ का पु. २३८
गजबंध लाल का पु. २३८
गुलाब हठमाल का पु. २४०
जगपति अरजण का पु. २४२
जसो संभव का पु. २४२
जालम (जालमो जालिमां) केहरी का पु. २३७
जोध इंद्रसिंह का पु. २३८
तेज गोकुळदास का पु. २७१
दलो पदमावत २३८
देवो कांन्ह का पु. २४४
धीरजसींघ अमर का पु. २४१
नाथ रघुनाथ का पु. २४५
पदम (पदमैं) कछवाह २४७
पातल चौहान अभा का पु. २४५
बुध रांम का पु. २४४
भगवंत केहरी का पु. २४१
भगोत भावसिंघ का पु. २४२
भूपाल देवीसींघ का पु. २४२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महिरांण भागवत का पु. २४७
मांन अनोप का पु. २४४
मांनड़ कांन्ह का पु. २४५
मोहकम अमर का पु. २४४
रतन रांम का पु. २४१
राजड़ै (राजड़ो) किसन का पु. २४४
लाल किसनेस का पु. २४५
बिसनेस कछवाह अना का पु. २४६, २४७
बैरो भैरव का पु. २४३
सकतौ ब्रिंदावन का पु. २४५
सगतेस गोकळदास का पु. २४०
सत्रसाल इंद्रसिंघ का पु. २३७
सरूप २४२
सवाइय राजसी का पु. २४५
सवाई सुरत का पु. २४०
सांमत (सांमतसींघ) २३६
सांमत किसन का पु. २४४
सांमत गोकुळदास का पु. २४१
सादूळसी २४२
सालिम बहादुर का पु. २४०
सालिमो सरदार का पु. २३६
सिभूसिंघ २३८
सिवपति हठी का पु. २३८
सुरतेस सेर का पु. २३८
सुरतेस अखमाल का पु. २४१
सेरसाह २४१
हरकिसन अभमल का पु. २४५
हिंदव बहादर का पु. २४३
हिम्मतसिंघ रांम का पु. २४४
हींदुव अखमल का पु. २४३

ग्रंथ की भूमिका को समाप्त करने के पूर्व मैं राजस्थान प्राच्य-विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के सम्मान्य संचालक पद्मश्री जिन विजयजी मुनि, पुरातत्त्वाचार्य के प्रति आभार प्रदर्शित करता हूं कि उन्होंने साहित्य की इस अमूल्य निधि का जो ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत ही महत्त्वपूर्ण है, सम्पादन करने की सत्प्रेरणा दी।

ग्रंथ-सम्पादन में राजस्थान प्राच्य-विद्या-प्रतिष्ठान, जोधपुर के उप-संचालक श्री गोपाल नारायणजी बहुरा, एम. ए. ने समय समय पर मार्ग-निर्देशन कर सहायक ग्रन्थों के अध्ययन में सहयोग देकर तथा ग्रंथ में कविराजा करणीदान व महाराजा अभयसिंह के चित्र प्राप्त करने में जो सहयोग दिया उसके लिये मैं पूर्ण कृतज्ञ हूं। साथ ही श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया को भी धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने ग्रंथ के प्रूफ-संशोधन में सहयोग दिया।

—सीताराम लालस

रोडला भवन
जोधपुर

श्रावणी तीज, सं० २०२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहायक ग्रंथों की सूची

१ आसोप का इतिहास—पं० रामकरण आसोपा।
२ उदयपुर राज्य का इतिहास—डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा, भाग १-२।
३ औरंगजेबनामा—मुंशी देवीप्रसाद।
४ जोधपुर राज्य का इतिहास—डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा, भाग १-२।
५ जोधपुर राज्य की ख्यात—हस्तलिखित, हमारे संग्रह की।
६ टॉड राजस्थान, हिन्दी अनुवाद—पं० बलदेवप्रसाद मिश्र।
७ तवारीखे-पालनपुर—सैयद गुलाब मियां कृत।
८ नीमाज का इतिहास—पं० रामकरण आसोपा।
९ नैणसी की ख्यात—काशी नागरी प्रचारिणी सभा।
१० भारत का बृहद इतिहास, द्वितीय भाग (द्वितीय खंड)—प्रो० श्रीनेत्र पाण्डेय, एम ए., एल-एल. बी.
११ मारवाड़ का इतिहास—महामहोपाध्याय पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ, प्रथम भाग।
१२ मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास—पं० रामकरण आसोपा।
१३ राज रूपक—वीरभाण रतनू कृत।
१४ राज विलास—मान कवि कृत, नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस।
१५ लेटर मुगल्स—ईर्विन।
१६ वंश भास्कर—कविराजा सूरजमल मीसण।
१७ वीर विनोद—महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदास कृत, भाग १-२।
१८ हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब—यदुनाथ सरकार।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

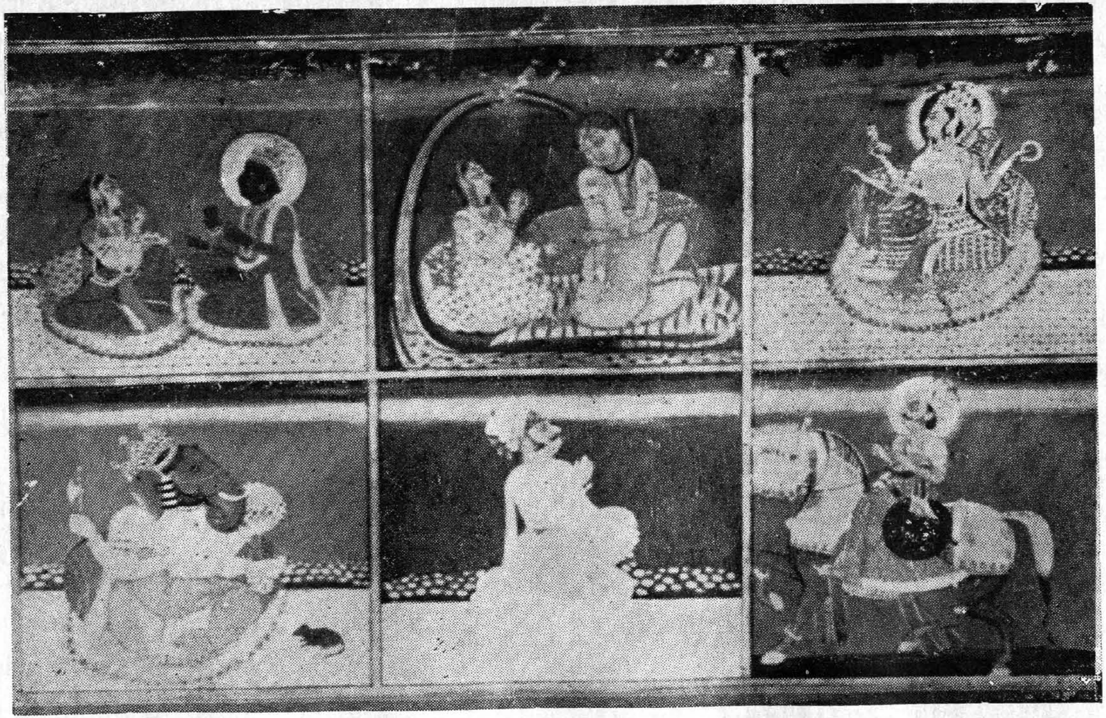

गणपति श्रीपति रावरिपति, सुमिरि शारदा भान।
पञ्चदेव पूजा निरत, कविया करणीदान॥

(महाराजा साहिब जोधपुर के निजी ग्रन्थ-भण्डार "पुस्तक प्रकाश" में से ठाकुर जयकृतसिंहजी, एडमिनिस्ट्रेटर के सौजन्य से प्राप्त चित्र)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कविया करणीदांनजी विजैरांमोतरौ कह्यौ

सूरजप्रकास

भाग ३

जुधरौ वरणण

कवित्त– 'अभमल' जयचँद अेम, सबळ दळ लियां[1] सकाजा।
सहर नदी उपरास, मँडे डेरा महाराजा[2]।
विदा किया[3] जिण वार, जोध करि[4] वीर जगाया।
किलां सिरै कमधजां, लड़ण मोरचा लगाया।
विकराळ तोप[5] चोळां-वदन, छट[6] धूंवा[7] रव[8] छावियौ[9]।
जुध पड़ै[10] रीठ ओळां ज्युंहीं[11], गोळां-अंबर-गाजियौ[12]॥ १
ग्रीव[13] पड़ै सिर गुड़ै, भड़ां धड़ पड़ै भिड़ज्जां[14]।
कोट पड़ै कंगुरां[15], भूक हुय[16] पड़ै भिड़ज्जां[17]।
छाजा पड़ै अछेह, मँडप उडि पड़ै महल्लां[18]।
मुगळांणियां[19] अमाप, पड़ै[20] आधांन दहल्लां[21]।

---

१ ख. ग. लीयां। २ ख. माहाराजा। ग. महाराजां। ३ ख. कीया। ४ ख. किरि। ग. किर। ५ ग. दोप। ५ ख. ग. छूटि। ७ ख. धूवां। ग. धुवा। ८ ग. रवि। ९ ख. छाजीयौ। १० ख. ग. गडे। ११ ख. ग. जही। १२ ख. गाजीयौ। १३ ख. ग. ग्राव। १४ ग. भिड्झ्भं। १५ ख. ग. कांगुरां। १६ ख. ग. होय। १७ ख भुरज्जां। ग. भुरझ्भां। १८ ग. महिलां। १९ ख. मुगलांणीयां। २० ग. पड़ि। २१ ग. दहलां।

---

१. चौळां-वदन – जोशमें लाल मुख किए हुए। छट – शीघ्र। रव – रवि, सूर्य। छावियौ – आच्छादित हो गया।

२. ग्रीव – गर्दन। भिड़ज्जां – घोड़ों। भूक – चूर्ण, नाश। अमाप – अपार। आधांन – गर्भ। दहल्लां – आतंक।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पनँगेस[1] पड़ै कँध कोम पर, धोम आराबां धड़हड़ै ।
तड़फड़ै पड़ै[2] मछ[3] नीर[4] तिम[5], पड़ै दमँग गोळा पड़ै ॥ २
राकस जिम रवदाळ, कमँध कपिराज सकाजा ।
वीर 'अभौ' बखतेस, रांम लछमण जिम राजा[6]* ।
विध[7] रांवण सिरविलँद, उहिज[8] चित धरै[9] इरादौ[10] ।
जुड़ै पहल इँद्रजीत, जेणि[11] विध[12] साहिबजादौ ।
लंक जिम[13] वाद अहमँद लियण[14], लख गोळां झड़ लागियौ[15] ।
वमरीर अभायण जुध विखम, जुध रांमायण जागियौ[16] ॥ ३
सातम[17] निसा सरब्ब[18], अनै निसदिन असटम्मी[19] ।
अमासमा[20] घण उडै, ज्वाळ गोळां नभ जम्मी[21] ।
नमि तिथ[22] कड़क निहाव, धोम सौगुणां अँधारां ।
ओळां जिम मँडि[23] उरड़, असण[24] गोळां अणपारां[25] ।
अड़ड़ाट[26] नाद वैराट[27] अज, घट्ट[28] जांणि दूजौ[29] घड़ै ।
वरसाळ झाळ गौळां[30] वहनि, प्रळैकाळ छौळां[31] पड़ै ॥ ४

---

१ ख. ग. पनगेस । २ ग. प्रतिमें यह शब्द नहीं है । ३ ख. मछि । ४ ग. जहांनीर । ५ ख. ग. तपि । ६ ग. राज । *यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।
७ ख. ग. विधि । ८ ख. वोहीज । ग. बोहीज । ९ ख. धरे । १० ख. अरादौ । ११ ग. जेण । १२ ख. ग. विधि । १३ ख. ग. जेम । १४ ख. ग. लोयण । १५ ख. ग लागीयौ । १६ ख. जागीयौ । ग. जागीयो । १७ ख. सातिन । ग. सातीम । १८ ख. सरब्ब । १९ ख. ग. असवमी । २० ख. अम्हांसम्हां । ग. अम्हसम्हां । २१ ख. ज्जमी । २२ ख. तिथि । २३ ख. मंभि । २४ ख. ग. असणि । २५ ख. उणपारां । २६ ख. अडडाट । ग. उडदाट । २७ ख. वैंराज । २८ ख. ग. जद । २९ ग. दूजो । ३० ख. गोला । ३१ ग. छोळां ।

---

२. **पनँगेस** – शेषनाग । **कोम** – कूर्मावतार, कच्छपावतार । **धड़हड़ै** – आवाज होती है । **मछ** – मत्स्य । **दमँग** – अग्निकण ।

३. **कपिराज** – हनुमान, सुग्रीव । **इरादौ** – विचार । **साहिबजादौ** – शाहजादा । **वाद अहमँद** – अहमदाबाद । **वमरीर** – जबरदस्त । **अभायण** – वह ग्रंथ जिसमें महाराजा अभयसिंहका चरित्र-वर्णन है ।

४. **अमासमा** – एक दूसरेके सम्मुख । **नभ** – आकास । **कड़क** – जोर । **निहाव** – प्रहार, प्रहारकी ध्वनि । **असण** – तीर, बाण । **अड़ड़ाट** – ध्वनि विशेष । **अज** – ब्रह्मा, कुम्भकार । **वरसाळ** – वर्षा । **वहनि** – अग्नि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धिकतां[1] इम[2] रिण[3] धोम, 'अभै' विलँदनूं कहाए।
जिम तै[4] लिखे[5] जबाब[6], अेम लड़ि चौड़ै[7] आए।
चाक[8] पहल चाढ़िया[9], जुड़ण चौगांन जमींरां।
अबै कोट लैं[10] ओट, अेह[11] नह सरत[12] अमीरां[13]।
सुणि एम वचन प्रजळे[14] असुर, इसौ[15] तेज दरसावियौ[16]।
वमरीर वाघ वतळावियौ[17], जांणै नाग खिजावियौ[18] ॥ ५

जमरूपी जिणवार, एक गोळौ[19] गढ़ि आए।
तन बगसी[20] तन तोड़ि, अळग ले गयौ[21] उडाए[22]।
दरह् हुवो *खळ दळां, भांण[23] विण जेम तपोभ्रम[24]।
गरद हुवौ* 'गुलमीर', 'सयद'[25] 'कायम्म'[26] समोभ्रम।
सिर विलँद[27] एह कथ सांभळी, खबरदार दक्खी[28] खड़ै[29]।
गुलमीर खांन उडै[30] गयौ, साहि निवाजस[31] सांकड़ै ॥ ६

सुत बगसी[32] साधियौ[33], ◈आप सुत सुणे डरायौ।
मण हजार सोरमै, जांणि सुरमुक्ख[34] जगायौ[35]◈।

---

१ ख. धिषतां। २ ख. ग. यम। ३ ख. ग. रण। ४ ख. ग. तै। ५ ग. लिषै। ६ ख. ग. जुवाव। ७ ग. चोडै। ८ ख. ग. चाकि। ९ ख. चाढ़ीया। १० ख. लीय। ग. लीयै। ११ ख. येह। १२ ख. सरति। ग. रीत। १३ ख. समीरां। १४ ग. प्रजलै। १५ ग. इसो। १६ ख. दरसावीयौ। १७ ख. वतलावीयौ। १८ ख. षीजावीयौ। १९ ख. गोलो। २० ख. वगसी। २१ ख. ग. गयो। २२ ख. उडाए। ग. उडायै।

*···*चिन्हांकित पंक्तियाँ ख. प्रतिमें नहीं हैं।

२३ ग. भोंण। २४ ग. तमोभ्रम। २५ ख. ग. सैद। २६ ख. ग. कायम। २७ ख. विलं। २८ ख. दष्पी। ग. दषी। २९ ख. पडै। ३० ख. उडे। ग. उडै। ३१ ग. निबाजस। ३२ ख. ग. वगसी। ३३ ख. साभीयौ। ग. साभियौ। ३४ ग. सुरमुष। ३५ ग. जगायो। ◈···◈चिन्हांकित पंक्तियां ख. प्रतिमें नहीं हैं।

---

५. **धिकतां** – क्रोधाग्निमें प्रज्वलित। **अभै** – महाराजा अभयसिंह। **चाक···चाढ़िया** – उत्तेजित किए। **जुड़ण** – भिड़ना, टक्कर लेनेको, युद्ध करनेको। **दरसावियौ** – दिखाई दिया। **खिजावियौ** – कुपित किया।

६. **बगसी** – (?) **गरद** – ध्वंस, संहार। **गुलमीर** – गुलमीरखां नामक सर बुलंदका योद्धा। **सांभळी** – सुनी। **दक्खी** – कही। **सांकड़ै** – संकटमें।

७. **साधियौ** – (?)। **सोरमै** – बारूदमें। **सुरमुक्ख** – अग्नि, आग।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'विलँद' तांम वीफरे[1], धूत दाढ़ी[2] कर धारै[3] ।
ईसफहां[4] आसफां[5], 'इलम फातमां[6] उचारै[7] ।
महमँद इमांम कहि कहि मुगळ, असिमर ग्रहि करिमुख[8] अरण ।
ताकीद[9] कीध सांजति करण[10], किलम[11] राड़[12] चौड़ै[13] करण ।। ७

सुणे कीध 'अभसाह', किलम[14] ताकीद[15] हुकम्मां ।
बिहुंवै फौज नकीब, तांम फिरिया[16] हमतम्मां[17] ।
खुरासांण हिंदवांणा[18], करै साजित[19] जँग कारण ।
तदि किसड़ा गज तुरँग, दुझल सुर आसुर दारण[20] ।
करि[21] चाळ[22] वीर सांजति[23] करै, घणा जोमहूंता[24] घणा ।
किण भांति तरफ दहुंवां[25] कहूं, तिकै[26] रूप चहुंवां[27] तणा ।। ८

---

१ ग. वाफरै । २ ग. डाढ़ी । ३ ख. धारे । ४ ग. इसफंहां । ५ ख. ग. आसपां । ६ क. फातणं । ७ ख. उचारे । ८ ख. मुषकरि । ग. मुषकर । ९ ख. ताकीत । १० ख. ग. तणी । ११ ग. कलम । १२ ख. ग. राडि । १३ ख. चोडै । १४ ख. ग. कलह । १५ ख. ताकीत । १६ ख. फरीया । ग. फिरिकै । १७ ख. हमतंम्मां । ग. हमत्तमां । १८ ख. हींदवांण । १९ ख. ग. साजति । २० ख. ग. दारुण । २१ ख. ग. कलि । २२ ख. चारु । २३ ग. साजनि । २४ ख. ग. जोमहुंता । २५ ख. दहुंवौं । ग. दहूंवां । २६ ख. ग. तिके । २७ ख. चहुवां । ग. चहूवां ।

---

७. **वीफरे** – कुपित होता है । **धूत** – धूर्त, दुष्ट । **दाढ़ी***धारै** – जिस प्रकार हिन्दू अपनी श्मश्रु पर ताव देते हैं उसी प्रकार मुसलमान युद्धादिके समय अपनी दाढ़ी पर हाथ धरते हैं । **ईसफहां** – (?) । **आसफां** – (?) । **इलम** – इल्म, साना । **फातमां** – मुहम्मद साहबकी कन्या जो हजरतअलीकी पत्नी और हसन तथा हुसेनकी माता थी । **महमँद** – इस्लाम धर्मके प्रवर्तक, अरबके प्रसिद्ध पैगम्बर मुहम्मद । **इमांम** – मुसलमानोंमें धर्मशास्त्रका ज्ञाता और विद्वान, धार्मिक नेता, पथ-प्रदर्शक । **असिमर** – तलवार । **अरण** – अरुण, लाल । **सांजति** – (?) ।

८. **बिहुंवै** – दोनों । **साजित** – तैयारी । **दहुंवां** – दोनों । **चहुंवां** – चारों ओरसे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सालांणरा सुचंग, सिंघल दीपरा सकाजा।
*महा[1] चीन मुलकरा, रज कजळीवनि[2] राजा।
रैवा तटि[3] बींभरा[4]*, रांन[5] रूपरा गिरंदां।
केक[6] मुळावाररा[7], केक[8] पाररा समुंदां[9]।
बहगिरा[10] फिरँग पूरब्बरा[11], आरकट्टरा उंजरा[12]।
पँच गजी पीठरा धीठ पिंड, काळ रूप घण[13] कुंजरा[14] ॥ ९

छंद पद्धरी : हाथियांरांरा वखांण

दहुंवै दळ मैंगळ इसा दूठ।
विण अ्रैब[15] पठा मद छौळ[16] वूठ।
घण पावस नीभर गिरँद घाट।
परनाळ[17] वहै[18] मद पंच[19] पाट ॥ १०
चख आरण[20] धिखता रूप चोळ[21]।
क्रीड़ा[22] करंत मधुकर कपोळ[23]।
पोगरप[24] लाग लळवळ[25] अनूप।
रागरा रीभिया[26] नाग रूप ॥ ११

---

१ ख. ग. माहा। २ ख. ग. कजलीवन। ३ ख. तट। ४ ख. ग. विंभरा।
*····*चिन्हांकित पंक्तियां ख. प्रतिमें दुबारा आई हुई हैं।
५ ख. ग. रंग। ६ ख. केयक। ७ ग. मलावार। ८ ख. ग. केयक। ९ ख. समुदां। ग. समदां। १० ख. वौहौगिडा। ग. बौहौगिडा। ११ ख. पूरव्व। ग. पूरब। १२ ख. ग. वूंजरा। १३ ख. घणा। १४ ख. कूंजरा। १५ ख. ग. अ्रैव। १६ ग. छोळ। १७ ख. ग. पंडनाळ। १८ ग. बहै। १९ ख. पांच। २० ग. अरण। २१ क. चौळ। २२ ग. क्रीळा। २३ क. कपौळ। २४ ख. पौगलप। ग. पोगरप। २५ ख. ललचल। ग. ललवल। २६ ख. रीभीया।

---

९. **सुचंग** – श्रेष्ठ। **सिंघल दीपरा** – एक द्वीप जो भारतवर्षके दक्षिणमें हैं, सिंहलद्वीप। **कजळीवनि** – एक प्राचीन वनका नाम जहां पर हाथी बहुतायतसे पाये जाते थे। **बींभरा** – विंध्याचल पर्वतके।

१०. **मैंगळ** – हाथी। **दूठ** – जबरदस्त। **पठा** – युवा। **छौळ** – धारा, प्रवाह। **वूठ** – वर्षा (?)। **पावस** – वर्षा ऋतु। **नीभर** – भरना। **घाट** – बनावट। **परनाळ** – मकानकी छतसे पानी नीचे गिरनेका नाला।

११. **धिखता** – प्रज्वलित। **चोळ** – लाल। **क्रीड़ा** – खेल। **मधुकर** – भौंरा। **पोगरप** – हाथीकी सूंड पर। **लळवळ** – मुड़ती है। **रीभिया** – खुश, हर्षित।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गातरा जिके तम सिखर गात ।
जातरा अमोलक भद्रजात ।
दंतरा ठिलां ढाहिक[1] दुरंग ।
ऊधरा चाचरा मसत अंग ।। १२

तन रूप घटा भाद्रवतणास ।
घेरिया[2] फौजदारां[3] घणास* ।
प्पूतारै[4] मारै[5] गडां[6] पांण ।
इण विध[7] बैसारै[8] नीठ आंण[9] ।। १३

झाटकि रूमालां[10] गिरद झाड़ि[11] ।
पैछौळ कीध जिम घण पहाड़ि[12] ।
मसळूंद[13] करां हाथळ मळेस[14] ।
जांमळे पाक तत्ते जळेस ।। १४

अै'पहल[15] तेल फेरै[16] अरोह[17] ।
बह[18] दीध आंमलांतणा[19] बौह[20] ।
सझि किया[21] इंद्र धांनख[22] सरीस ।
सिंदूर जँगालां तिलक सीस ।। १५

---

१. ख. ढाहक । २ घेरीया । ३ ग. फोजदारां ।
*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।
४ ख. पौतारे । ग. पोंतारे । ५ ख. मारं । ६ ख. गणां । ७ ख. विधि ! ८ ख. वैसारे । ग. वेसारे । ९ ख. आणि । १० ख. ग. रूमालां । ११ ख. ग. झाड । १२ ख. पहाड़ । ग. पाहाड़ । १३ ख. ग. मसरूद । १४ ख. मसेल । १५ ख. ग. रूपहल । १६ ख. ग. फेरे । १७ क. अरोहे । १८ ख. ग. वौहौ । १९ ग. आलमांतणा । २० ख. वोह । ग. बोह । २१ ख. ग. कीया । २२ ग. धानेष ।

---

१२. तम – अंधेरा, श्यामता । तम सिखर – काला पहाड़ । भद्रजात – श्वेत रंगका हाथी । ठिलां – टक्कर । ढाहिक – गिराने वाला । ऊधरा – ऊंचा उठा हुआ । चाचरा – भाल, ललाट ।

१३. भाद्रवतणास – भादों मासके । फौजदारां – महावतों । प्पूतारे – जोश दिलाते हैं । गडां – गंडस्थल । पांण – हाथ । बैसारै – बैठाते हैं ।

१४. गिरद – गर्द, धूलि । मसळूंद – मसल कर । करां – हाथों, सूंडों । जांमळे – एक साथ कर दिये ।

१५. बौह – सुगंध, महक ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंठळ वूठाळू[1] रूपकंध[2] ।
बंधिया[3] किलावा चमरबंध[4] ।
तहमद्द[5] भूल कसि घंट तांम ।
जंगी धरि[6] हवदां पूठि जांम ।। १६
आरांम राड़ियां[7] छक उपाट ।
घण भीड़[8] नाड़ियां[9] चंड[10] घाट ।
घण लोह भार पक्खर[11] घुमाय ।
ओपै जिम पाहड़ पंख आय ।। १७
औद्राव[12] तणा[13] घण[14] के अपाल ।
ढळकाय चाचरां भमर ढाल ।
गड़ सिलह ससत्र कसियां[15] गरूर ।
सिर चढ़िया[16] महावत[17] महासूर[18] ।। १८
धर फरर चढ़े नीसांण धार ।
परचंड मही - मुरतब अपार ।
कसि नौबत[19] धारक चढ़े[20] केक ।
अन[21] हौद मेघ - डंबर अनेक ।। १६

---

१ ग. वूगलूं । २ ख. रूपकांधि । ग. जिम रूपकांधि । ३ ख. वांधिया । ग. वाधिया । ४ ख. वांधि । ग. बांधि । ५ ख. ग. तहनमंद । ६ ग. धर । ७ ख. ग. राड़ीयां । ८ ख. ग. भीडि । ९ ख. नाडीयां । १० ख. ग. प्रचंड । ११ ख. ग. पष्यर । १२ ख. औद्राण । ग. ओद्राण । १३ ख. ग. तवा । १४ ख. ग. घड । १५ ख. ग. कसीयां । १६ ख. चढ़ीया । ग. चढ़ि । १७ ख. ग. माहावत । १८ ख. माहासुर । १९ ख. ग. नौवति । २० ग. चढ़ि । २१ ख. ग. अनि ।

---

१६. **कंठळ** – हाथीके कंठका आभूषण । **किलावा** – कलाप । **चमरबंध** – (?) । **तहमद्द** – कमरसे लपेटनेका कपड़ा या अंगोछा, लूंगी, तहमद ।

१७. **नाड़ियां** – हाथीकी अम्मारी कसनेका मोटा रस्सा विशेष । **चंड** – प्रचंड, महान । **पक्खर** – हाथीका कवच ।

१८. **औद्राव तणा** – आतंकके, भयके । **सिलह** – कवच । **गरूर** – जबरदस्त ।

१९. **नीसांण** – झंडा । **मेघडंबर** – मेघाडंबर, छत्रविशेष ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मगरूर हौद[1] जँगियां[2] मझार[3] ।
धुर चढ़े अरब हथिनाळ[4] धार ।
साझंदा केयक बंध साधि ।
बह[5] वीजळ[6] सूंडाडंड[7] बांधि ॥ २०

तै भारण बारह मण[8] सतोल[9] ।
खंभारण लंगर दीध खोल ।
जदि थापल[10] बोलै[11] विरद[12] जांम ।
तपसी जिम खोलै[13] पलक तांम ॥ २१

तरियलां नजर आंणै[14] तयार ।
दौड़िया[15] हाक करि डाकदार ।
लंगरां खळकतां हले लार ।
दोळा गिलौळ गड चरखदार ॥ २२

एहड़ा गयँद खुटहड़[16] अरोड़ ।
जमदूत भूत अवधूत[17] जोड़ ।
धावंत खुन[18] कज्यूं[19] उरड़ धाव ।
नख तांम गिलोळां पड़ि निहाव ॥ २३

---

१ ग. हौदा । २ ख. ग. जंगियां । ३ ख. ग. मंझार । ४ ख. हथनालि । ग. हथनाळ । ५ ख. वहौ । ग. बहु । ६ ग. बीजळ । ७ ग. सूंडादंड । ८ ख. मस । ९ ख. णतोल । १० ख. थापलि । ग. हाथल । ११ ख. ग. बोले । १२ ग. वीरज । १३ ख. ग. षोले । १४ ख. ग. आंणे । १५ ग. दोडिया । १६ ख. षुटहक । ग. षुटहड । १७ ख. ग. अवधूत । १८ ख. ग. षूंन । १९ ख. ग. कजि ।

---

२०. **धुर** – प्रथम । **हथिनाळ** – तोप विशेष । **वीजळ** – तलवार । **सूंडाडंड** – हाथीकी सूंड ।

२१. **खंभारण** – हाथीके बांधनेका स्थान । **लंगर** – हाथीको पैरसे बांधनेकी जंजीर ।

२२. **तरियलां** – (?) । **डाकदार** – मस्त हाथीको राह पर लाने वाले घुड़सवार जिनके हाथमें साट होता है । **खळकता** – ध्वनि करते समय । **दोळा** – चारों ओर । **गड** – भाला विशेष जिसे मस्त हाथीको सीधा करनेके लिए डाकदार हाथी पर मारते हैं । **चरखदार** – मस्त हाथीको सीधा करनेका चरख नामक उपकरण रखने वाला ।

२३. **खुटहड़** – जबरदस्त, उद्दंड । **अरोड़** – न रुकने वाला । **जोड़** – समान, तुल्य । **निहाव** – प्रहार, चोट ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रौद्रांण भचक[1] भालां गरीठ ।
धारक्क[2] बहै गज बाज[3] धीठ[4] ।
धड़हड़ै[5] धोमां - रव चरख धोम ।
बणि[6] धोम अंधारव गोम बोम[7] ।। २४

कत्तक्क[8] हार कळहळ कहाक ।
हुय[9] धता धतां[10] धत वीर[11] हाक ।
नव्बाब[12] अनै दरगह नरंद ।
गहतंत एम आंणे गयंद ।। २५

कवित्त–खळळ सँकळ मद खळळ, मसत घूमंत मदग्गळ[13] ।
मेघ - डमर[14] नीसांण, मही - मुरतबां झळाहळ ।
प्रचँड लोंह पाखरां, चोळबोळां[15] चखचोळां[16] ।
जँगी हवद जकड़िया[17], तवा[18] खळकिया[19] कपोलां ।
हथनाळ[20] दगण आरब[21] हसम[22], माहुत[23] चढ़िया मैंगळां ।
देवळां तरा[24] धर करि[25] दुगम, जँगम जूथ वीभाजळां[26] ।। २६

---

१ क. भबक । २ ख. धारक्ख । ग. धारक । ३ ख. ग. वाग । ४ ख. दीठ । ५ ख. ग. धड़हड़ । ६ ख. ग. बणि । ७ ख. ग. बोम । ८ ख. ग. कौतक्क । ९ ख. ग. होय । १० ख. धताधता । ग. धत्ताधत्ता । ११ ख. ग. धत वीर । १२ ख. नव्वाव । ग. नबाब । १३ ग. मदगाळ । १४ ख. ग. डंबर । १५ क. चौळबौळां । १६ क. चौळां । १७ ख. जडकीया । ग. जडिकया । १८ ग तबा । १९ ख. षडकीया । ग. षडकिया । २० ख. ग. हथनालि । २१ ख. आरव । ग. अरब । २२ ख. ग. हमस । २३ ग. मावत । २४ ग. तरां । २५ ख. ग. किर । २६ क. वीजाजळां ।

---

२४. **रौद्रांण** – भयंकर । **भचक** – प्रहार, प्रहारकी ध्वनि । **गरीठ** – जबरदस्त, हाथी । **धड़हड़ै** – ध्वनि करते हैं । **धोमां-रव** – धुंएकी आवाज । **धोम** – अग्नि ।

२५. **कळहळ** – कोलाहल । **कहाक** – ध्वनि ।

२६. **खळळ** – जंजीरके हिलनेकी ध्वनि या जल-प्रवाहकी ध्वनि । **सँकळ** – शृंखला । **मदग्गळ** = मत्कल – हाथी । **मेघ डमर** – मेघाडम्बर नामक छत्र । **नीसांण** – झंडा । **चोळबोळां** – पूर्ण लाल । **चखचोळां** – जोशमें लाल नेत्र किये हुए । **तवा** – हाथीको ललाट पर युद्धके समय धारण कराया जाने वाला उपकरण । **हथनाळ** – बंदूक । **दगण** – दागने पर, दागनेको । **आरब** – तोप । **हसम** – सेना, फौज । **मैंगळां** – हाथियों । **जंगम** – चलने वाला । **वीभाजळां** – विंध्याचल पर्वत ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घोड़ांरा वखांण

छंद पद्धरी– ऊपना असिल अैराक अंग ।
तै बलख खेत आरब तुरंग ।
अन्नेकम[1] को तेजह अथाहि ।
मोमना[2] चेचि[3] कहि तुरँग माहि ।। २७

रुमहरी हुसेना बाद[4] राति ।
जिण[5] अरब मांहि वळि[6] नौख जाति ।
खंधारी उतन खंधार खेत ।
लख लख मुलवारी मोल[7] लेत ।। २८

बेखता[8] ताव मुज नस्सबाज ।
बह[9] डसिय[10] दंत तन गुरज बाज[11] ।
खित तुरकी आलातीन खेत ।
बाला[12] मुसैद रोसनी[13] बेत । २९

चहनई हरेवी रूप चंग ।
तारीफ रंग तौफा[14] तुरंग ।
दुरकेबा[15] केयक[16] जमी दोज[17] ।
चितरांम लिखीजै इसा चोज[18] ।। ३०

---

१ ख. ग. अनेकम । २ ख. मोमता । ३ ख. ग. चेच । ४ ख. ग. वाद । ५ ग. जिन । ६ ग. बलि । ७ ख. मूल । ८ ख. वेषता । ग. भेषता । ९ ख. वौहो । ग. बौहो । १० ख. ग. डसीय । ११ ख. ग. वाज । १२ ख. ग. वाला । १३ ग. रोसवी । १४ ख. ग. तोफा । १५ ख. ग. दुरकेवा । १६ ख. ग. केइक । १७ ख. दौज । १८ ग. चौज ।

---

२७. ऊपना – उत्पन्न हुए । अैराक – तेज । खेत – उत्पत्ति-स्थान । आरब – अरब देश ।

२८. भिन्न २ घोड़ोंके उत्पत्ति स्थानोंके नाम हैं ।

२९. बेखता – दिखाई देता है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोवनरा ताजी च्यार साल ।
पँच दोक[1] दिनां[2] पौरस अपाल ।
धुर केक माळवी सरस धज्ज ।
भीमड़ाथ[3] थळी वाळा भिड़ज्ज ।। ३१
कूदणा कछी छेकै कुरंग ।
तत्ता[4] स्रब[5] तुरँगांहूं तुरंग ।
कठियांण[6] भुजनगर खेतकाज ।
बेखता[7] तता कपिहूंत बाज[8] ।। ३२
घण घाव[9] घटै नह पांण घाट ।
धुर खेत ऊपना[10] जिके धाट[11] ।
उण धाट खेत मझि बळि[12] आधि[13] ।
बप[14] तेज बगारा[15] तुरँग[16] बाधि[17] ।। ३३
तुरियंद[18] जिसा[19] रथ आपताप[20] ।
मुरधरा खेतरा बळ[21] अमाप ।
राड़द्रह[22] अनै माहेव[23] रासि[24] ।
बह[25] मोल रूप बळवँत हुबासि ।। ३४

---

१ ख. दोय । २ ख. विना । ३ क. भिभड़ाथ । ४ ख. ग. ताता । ५ ख. श्रव । ग. थव । ६ ख. कटीयांण । ७ ख. ग. वेखता । ८ ख. वाज । ९ ख. ग. धाव । १० ग. उपना । ११ ख. घाट । १२ ख. ग. बळ । १३ ख. ग. असाधि । १४ ख. वष । ग. वप । १५ ख. ग. वंगारा । १६ ग. तुरंगि । १७ ख. ग. वाधि । १८ ख. ग. तुरीयंद । १९ ख. ग. जसा । २० ख. ग. आफताप । २१ ख. वल । २२ ख. राउद्रह । २३ ख. महिए । ग. सहिस्रै । २४ ख. ग. वरास । २५ ख. वौहो । ग. वोहो ।

---

३१. **ताजी** – घोड़ा । **भीमड़ाथ** – रंग विशेषका घोड़ा । **थळी** – मारवाड़ राज्य । **भिड़ज्ज** – घोड़ा ।

३२. **कछी** – कच्छी घोड़ा । **तत्ता** – बहुत तेज । **कठियांण** – काठियावाड़ी घोड़ा । **बाज** – घोड़ा ।

३३. **पांण** – प्राण, शक्ति, बल । **घाट** – कम । **धाट** – ऊमरकोट प्रान्तका नाम ।

३४. **तुरियंद** – घोड़ा । **आपताप** – आफताब, सूर्य । **अमाप** – अपार । **राड़द्रह** – मारवाड़ राज्यांतर्गत एक प्रान्तका नाम । **माहेव** – बाड़मेर जिलेका प्राचीन नाम । **हुबासि** – घोड़ा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लाखौरी[१] सुरँग अजूब[२] लैंत ।
किसमसी साह ज्यांनूं[३] कुमैत ।
तेलिया[४] मुहा संदळी[५] तुरंग ।
सोसनी सबज हंसा[६] सुरंग ।। ३५

रोसनी बिदांमी[७] पेस रूंद ।
कागड़ा हंस चकवा कबूंद[८] ।
गुलजार बौज[९] अबलक्ख[१०] गात ।
सिँदळी[११] अनै सरंगा सुभात ।। ३६

बहु[१२] अबरस[१३] मुसकी अर सँजाब ।
बौरता[१४] केहरी पेस बाब[१५] ।

---

१ ग. लाषेरी । २ ख. अजूव । ३ ख. जानूं । ग. मूजानु । ४ ख. ग. तेलीया । ५ ग. संदनी । ६ ग. हूंजा । ७ क. विदांनी । ८ ख. ग. कवूंद । ९ ख. बोज । ग. बोज । १० ख. ग. अबलष्य । ११ ख. ग. सुदली । १२ ख. ग. वहौ । १३ ख. ग. अवरस । १४ ख. वोरता । ग. बोरता । १५ ख. वाव ।

---

३५. **लाखौरी** – रंग विशेषका घोड़ा । **सुरँग** – लाल रंगका घोड़ा । **अजूब** – (?) । **किसमसी** – किश्मिशके रंगका घोड़ा जो शालिहोत्रके अनुसार शुभ माना जाता है । **कुमैत** – एक प्रकारका शुभ रंगका घोड़ा । **तेलिया** – तिलके तेलके रंगका घोड़ा । **संदळी** – हल्के पीले चंदनके रंगका घोड़ा । **सोसनी** – बेंगनके रंगसे मिलते रंगका घोड़ा, जो शुभ माना जाता है । **सबज** – हरे घासके रंगसे मिलते रंगका घोड़ा, सब्ज, यह अति शुभ माना जाता है । **हंसा-सुरंग** – सफेदी लिए हुए हल्के लाल रंगका घोड़ा जो शुभ माना जाता है ।

३६. **रोसनी** – घोड़ेका रंग विशेष । **बिदांमी** – बिदामके रंगका घोड़ा । **पेस रूंद** – (?) । **कागड़ा** – सफेदी लिए हुए हल्की श्यामताके रंग वाला घोड़ा विशेष (?) । **हंस** – सफ़ेद रंगका घोड़ा । **चकवा** – चक्रवाक पक्षीके रंगका घोड़ा जो अत्यन्त मांगलिक व शुभ माना जाता है । **कबूंद** – (?) । **गुलजार** – रंग विशेषका घोड़ा । **बौज** – शुभ रंगका घोड़ा, इसका दूसरा नाम बौजलखी भी है । **अबलख** – चितकबरा घोड़ा, इसका दूसरा नाम बौजलायी भी है । **सिंदली** – शुभ रंगका घोड़ा । **सरंगा** – (?) ।

३७. **अबरस** – शुभ रंगका घोड़ा । **मुसकी** – मुश्कके रंगका घोड़ा । **सँजाब** – संजाफ – आधा लाल, आधा सफ़ेद या आधा लाल, आधा सब्ज घोड़ा । **बौरता** – शुभ रंगका घोड़ा । **केहरी** – सिंहकेसे रंगका घोड़ा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कासनी ताफता पँच कल्यांण ।
सूलहरी[1] चंपा पट[2] सिचांण[3] ।। ३७

जिलहरी आबनूंसी जमंद ।
मुरहरी हरी[4] सेली समंद ।
आवै न पार कहता अथंग ।
रँगजीत[5] कबूतरतणा रंग ।। ३८

नखउलट कटोरा सम अनोप ।
अँग नळी नीकळी[6] चित्र ओप[7] ।
बाजुवां[8] सुछट तायक वळाक[9] ।
चाकां द्रुनाब पींडा[10] सचाक ।। ३९

सुजि ताम्र तुंड कंधा समाथ ।
बाजोट उवर अइयाळ[11] बाथ ।

---

१ ख. सुलहरी। ग. सुनहरी। २ ख. ग. पट्टी। ३ ग. सीचांण। ४ ख. हरी हरी। ५ ख. रंगजिता। ग. रंगिजिता। ६ ख. ग. नीसळी। ७ ख. वोप। ग. वोय। ८ ख. ग. वाजुवां। ९ ग. बलाक। १० ख. ग. पीडा। ११ ख. ग. ईयाल।

---

३७. **कासनी** – कासनीके फूलोंके रंग वाला घोड़ा। **ताफता** – चमकदार रेशमी कपड़े जैसे रंगका घोड़ा। **पँच कल्यांण** – मांगलिक घोड़ा जिसका शिर (माथा) और चारों पैर सफेद हों और शेष शरीर लाल, काला या किसी अन्य रंगका हो। **सूलहरी** – यहां सुनहरी शब्द होना ठीक अर्थ बैठता है, रंग विशेषका घोड़ा। **चंपा** – चंपा फूलके से रंगका घोड़ा। **सिचांण** – सिचान नामक पक्षीके समान रंगका घोड़ा।

३८. **जिलहरी** – रंग विशेषका घोड़ा। **आबनूंसी** – आबनूस वृक्षकी लकड़ीके समान अत्यन्त श्याम रंगका घोड़ा। **जमंद** – जामुनके रंगका घोड़ा। **मुरहरी** – (?)। **हरी** – रंग विशेषका घोड़ा। **सेली समंद** – एक प्रकारका शुभ घोड़ा। **अथंग** – अपार, असीम।

३९. **अनोप** – अनुपम। **बाजुवां** – पार्श्वों। **चाकां** – (?)। **पींडा** – पशुओंके पिछले पैरका ऊपरी भाग। **सचाक** – चक्रके समान गोलाईयुक्त।

४०. **ताम्र तुंड** – (?)। **समाथ** – समर्थ, मजबूत। **बाजोट** – काठ या पत्थरकी बनी हुई चौकी जिस पर भोजनका थाल रखते हैं। **उवर** – वक्षस्थल। **अइयाळ** – घोड़ेकी गर्दनके बाल। **बाथ** – बाहु-पाश।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केहास बिहूं[1] धजरंग कन्न[2] ।
प्रतहास[3] गौसरिप[4] चहर[5] पन्न[6] ।। ४०

दुजराज नयण ससि बीज डाच ।
मल्लूक पसम मुखमल कुमाच ।
झमरूख[7] चमर[8] सिखराळ[9] झाट ।
सुजि ओछ[10] पड़छ आसण सुघाट ।। ४१

दै[11] उवर टकर ढाहै दुरंग ।
तदि दूहूं दळां इसड़ा तुरंग ।
अति लीण[12] लोह पतिध्रमी[13] आंण ।
लहि[14] ठांम ठांम चाढ़ै[15] लगांण ।। ४२

पांडवां खुरहरां झपट पाय ।
तदि मिळै[16] हाथळां ओप ताय ।
ओपै[17] दुसमाजां[18] तन उतंग ।
आरसी भळक काढ़ियां[19] अंग ।। ४३

---

१ ख. ग. विहूं । २ ख. कंन्न । ग. कंन्ह । ३ ख. प्रतिसाह । ग. प्रतिसाद । ४ ग. गोसरिप । ५ ख. ग. चौहौर । ६ ख. पंन्न । ७ ख. झंम्मरुख । ग. झमरुरुष । ८ ख. चंम्मर चमर । ग. वाल चमर । ९ ख. तथा ग. प्रतियोंमें यह शब्द नहीं है । १० ख. ग. ओछ्र । ११ ग. दे । १२ ख. लाण । ग. लोयण । १३ ग. प्रतिध्रमी । १४ ख. ग्रहि । ग. ग्रहो । १५ ख. ग. चाढ़े । १६ ख. ग. मिले । १७ ख. ओपे । ग. औपै । १८ ख. ग. दुसमालां । १९ ख. काढ़ीया ।

---

४० केहास – कैसा । धजरंग – ध्वजाके समान नोंकदार । कन्न – कर्ण, कान । प्रतहास – (?) । गौसरिप – (?) । चहर – (?) । पन्न – (?) ।

४१. दुजराज – द्वितियाके । ससि – चन्द्रमा । मल्लूक – कोमल । पसम – बाल । मुखमल – कपड़ा विशेष । कुमाच – कपड़ा विशेष । झमरूख – घने बालों वाला । चमर – पूंछ (?) । सिखराळ – (?) । ओछ – कम, छोटा । पड़छ – घोड़ेकी चाल विशेष । आसण – घोड़ेकी पीठका वह स्थान जहां पर सवार बैठता है । सुघाट – सुन्दर, दृढ़ ।

४२. ढाहै – गिरा देते हैं । पतिध्रमी – स्वामी-भक्त । लगांण – लगाम (?) ।

४३. पांडवां – शरीर (?) । खुरहरां – घोड़ेकी पीठ या शरीरका मैल उतारनेका उपकरण । हाथळां – हथेलियां । दुसमाजां – (?) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तहदार . गादियां[1] धरे तांम ।
जग जोतिम दाखल जूळ[2] जांम ।
कळबूत[3] रजत सोव्रन सकाज[4] ।
सिकळात[5] मुखम्मल[6] फिरँग साज ।। ४४

तै पीठ धार[7] तांणैस[8] तंग ।
रेसमी जोड़ अणपार रंग ।
ऊकड़ा[9] भीड़ि[10] दुहुं कड़ा आंणि ।
जड़किया[11] मलै तर[12] नाग जांणि ।। ४५

बँध जोट दीध कसि जेर बंध ।
सझि पेसबंध कमसार[13] संध[14] ।
लोहाळ रिंछाईपै[15] लगाय ।
घण घूघराळ पाखर घुमाय[16] ।। ४६

कसि सिरी गड़द[17] निस[18] संध[19] कीध ।
डोरियां[20] बांधि[21] गजगाह दीध ।

---

१ ख. गीयां । २ ख. ग. फूल । ३ ख. ग. कळवूत । ४ ग. काज । ५ ग. सकलात । ६ ख. ग. मुषमल । ७ ख. धारि । ८ ख. ग. तांणेस । ९ ख. ऊकढ़ा । ग. ऊकटा । १० ग. भीड । ११ ख. जडकीया । १२ ख. तदि । ग. तरि । १३ ग. कमसिर । १४ ग. सझ्झि । १५ ख. ग. रिंछालीयै । १६ ख. घुंमाय । ग. धुमाय । १७ ख. प्रतिमें यह शब्द नहीं है । ग. गरद । १८ ख. ग. नोस । १९ ख. दिट । ग. दढ़ । २० ख. डोरीयां । २१ ग. बांध ।

---

४४. **तहदार** – मोटी (?) । **जोतिम** – (?) । **जूळ** – (?) । **रजत** – चांदी, रौप्य । **सोव्रन** – सोना । **सिकळात** – कीमती ऊनी वस्त्र विशेष, सिक्लात । **फिरँग साज** – जीनके उपकरण जो युरोपियन ढंगके थे (?) ।

४५. **ऊकड़ा** – जीनके साथ कसा जाने वाला चमड़ेका फीता । **मलै तर** – चंदनका वृक्ष । **जांणि** – मानों ।

४६. **जेर बंध** – (?) । **पेसबंध** – (?) । **घूघराळ** – घुंघरूयुक्त ।

४७. **सिरी** – (?) । **गड़द** – (?) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीखां भर[1] लंबी माळ वीख ।
तै घांम एवियां[2] चूच[3] तीख ॥ ४७

ऐबियां[4] मझै[5] लागति उदार ।
दुति तीर वेग के राहदार ।
औदकै निजर निज छांह आय ।
जुड़तां गज चाचर[6] चढ़ै जाय ॥ ४८

मझि खगां[7] झाट खेल्है[8] मलंग[9] ।
आफळै अणी पर धार अंग ।
पवन रा कुटंबी[10] वेग पांण[11] ।
उडुंड[12] सिध गुटका जिम उडांण ॥ ४९

खैंग[13] सहज्ज[14] मझि डांण खाय ।
अदफरां गिरां[15] ठहरंत आय ।
बाजां[16] दळ दहुंवै[17] जेण[18] वार ।
ऐसा[19] कीया[20] हाजर तयार ॥ ५०

---

१ ग. भरि । २ ख. एबीयां । ग. ऐबीवां । ३ ख. बूंच । ग. बूच । ४ ख. एवीयां । ग. एंवीयं । ५ ग. मंडे । ६ ख. ग. चाचरि । ७ ख. खगि । ८ ग. षेलै । ९ क. मजंग । १० ख. ग. कुटंबी । ११ ग. षांण । १२ ख. ग. उडंड । १३ क. खैंह । १४ ख. ग. हज । १५ ग. प्रतिमें यह शब्द नहीं है । १६ ख. ग. वाजिंद । १७ ख. ग. दुहुंवै । १८ ख. जेणि । १९ ख. ग. एरसा । २० ग. किया ।

---

४७. **वीखां** – घोड़ेकी चालोंमेंसे एक चाल, इसे संस्कृतमें वीखा कहते हैं । **माळ वीख** – घोड़ेकी एक चाल । **चूच** – (?) ।

४८. **तीर वेग** – तीरके समान तेज चलने वाला । **राहदार** – राह नामक चाल विशेषसे चलने वाला । **औदकै** – चौंकते हैं । **जुड़तां** – भिड़ने पर, टक्कर लेने पर । **चाचर** – भाल, ललाट ।

४९. **मलंग** – छलांग, कुदान । **पवन…पांण** – तेज गतिसे चलनेसे घोड़े वायुके कुटुम्बी जैसे मालूम होते हैं । **उडुंड…उडांण** – घोड़े मानों सिद्धि-प्राप्त महात्माओंके गुटके हैं, जिन्हें हाथमें लेते ही तुरन्त ही अभीष्ट स्थान पर पहुंच जाते हैं ।

५०. **खैंग** – घोड़ा । **अदफरां गिरां** – पहाड़ोंके मध्य भाग तक । **बाजां** – घोड़ां ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुहौ[1] – इसा[2] बाजि[3] दहुँवै वळां[4], सो कवि कहै[5] सकाज ।
असवारी कजि आंणियौ[6], बरण[7] कियौ[8] इक वाज ।। ५१

महाराजा अभयसींघजीरै निज सवारीरै घोड़ा सुरजपसावरौ वरणण

छप्पै– नख अहिरण[9] धज नळी, कळी बाजू पींडा चक ।
बजै नास बांसळी[10], ताव वीजळी छळी तक ।
औछ[11] पड़छ रवि अंग, चंमर भमर सुर[12] चंम्मर ।
केकी ग्रीव कसस्सि[13], तिकर[14] लंकी कब्बूतर[15] ।
सिख दीप स्रवण मुख बीज ससि, चूर[16] स्यांम मूरति चसम ।
सुखपाळ चाल उर ढाल सम, पनँगयाळ मुखमल पसम ।। ५२

---

१ ख. कवित्त छप्पै ।। प्रथम दूहो । ग. कवित छप्पै प्रथम दुहो । २ ख. ग. यसा । ३ ख. दुहुंवै । ग. दूहूवै । ४ ख. दलां । ग. दल । ५ ख. कहे । ६ ख. ग. आंणीयो । ७ ख. ग. वरण । ८ ख. ग. किसौ । ९ ख. ग. अहरणि । १० ख. ग. वंसली । ११ ख. ग औछ । १२ ख. प्रतिमें यह शब्द नहीं है । १३ ख. ग. कसीस । १४ ख. ग. तिकरि । १५ ख. ग. कबूतर । १६ ख. ग. चुरस ।

---

५१. **बाजि** – घोड़ा । **कजि** – लिए । **आंणियौ** – लाया गया ।

५२. **अहिरण** – लोहका चौकोर खंड जिस पर लोहार या सोनार गर्म धातुको रख कर पीटते हैं । यहां घोड़ेके सुमोंकी दृढ़ता व कठोरताके लिए कविने प्रयोग किया है । **धज** – ध्वज, ध्वजा डंड । **नळी** – पैरके घुटनेके नीचेका सीधा भाग । **कळी** – समान । **चक** – चक्र, गोल, वर्तुल । **नास** – नाक । **बांसळी** – बांसुरी, मुरली । **ताव** – तेजी । **वीजळी** – विद्युत । **पड़छ...अंग** – (?) । **चमर** – पूंछ । **भमर** – घने बालों-युक्त । **सुर चंम्मर** – सुरा गायके पूंछके बालोंका बना हुआ चंवरके समान । **केकी** – मयूर, मोर । **ग्रीव** – गर्दन । **तिकर** – समान । **लंकी कब्बूतर** – कबूतर जो बहुत चंचल होता है और कुलांचे अधिक खाता है, इसकी घोड़ेकी चंचलतासे उपमा दी जाती है । **स्रवण** – श्रवण, कान । वि० वि०—घोड़ेके कानोंको दीपक शिखाकी उपमा दी जाती है । **बीज** – द्वितीया । **चूर स्यांम** – शालिगरामकी मूर्ति जिसकी घोड़ेकी आंखसे उपमा दी जाती है । **चसम** – चश्म, नेत्र । **सुखपाल चाल** – चलनेमें घोड़ा ऐसा आराम देने वाला है मानों सुखपाल नामक वाहनमें बैठे हों । **उर ढाल** – घोड़ेके वक्षस्थलका भाग ढालके समान चौड़ा है । **पनँगयाळ...पसम** – घोड़ेके गर्दनके बाल नागके समान और शरीरके बाल मखमलके समान कोमल हैं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निज सरीक पवनरौ, धाव धखपँख जिम धावै ।
कमठ पूठि[1] अहि कमळ, धमक चवबँधा धुजावै ।
पड़ै कोट उर टकर[2], पड़ै[3] गज धकै अपारां ।
जळ धारां मछ जेम, धसै सामौ[4] खग धारां ।
हमगीर जिकौ[5] वागां हकां, सिंधुर[6] ऊपर[7] सेर सौ ।
सूरज पसाव[8] अैराक सुध[9], सूरज तुरंगा एर सौ ।। ५३

लोह डाच धरि लीण[10], मळे हाथळ दुसमालां ।
फिरँग साज झड़फियौ[11], पँडव[12] छोडियां[13] अपालां ।
उछटि[14] डोर[15] ऊपरा, बेव[16] करतौ[17] बिसतारै[18] ।
पै उठाय दांहिणौ[19], अंग दांहिणौ निहारै ।
सपतास नहीं इण सारिखौ[20], जोय सूर[21] इम[22] जांणियौ[23] ।
सूरजपसाव साकति सजे[24], इण विध[25] हाजर आंणियौ[26] ।। ५४

---

१ ग. पूठ । २ ग. टक्करि । ३ ग. षडै । ४ ख. ग. सांम्हौ । ५ ख. जिको । ६ ख. ग. सींधुर । ७ ग. उपर । ८ ग. पसा । ९ ग. सुध । १० ग. लीन । ११ ख. झडफीयौ । १२ ग. पंडवि । १३ ख. ग. छोडीयौ । १४ ख. उछट । ग. ऊछट । १५ ग. डौर । १६ ख. ग. वेव । १७ ग. करतो । १८ ख. विसतारै । ग. विस्तारै । १९ ग. दांहणौ । २० ग. सारीषौ । २१ ख. सूरिज । ग. सूरज । २२ ग. ईम । २३ ख. जांणीयौ । २४ ख. ग. सझे । २५ ख. ग. विधि । २६ ख. आंणीयौ ।

---

५३. **धाव** – गति, दौड़ । **धख पँख** – गरुड़ । **कमठ… कमळ** – इस घोड़ेकी पीठ कच्छपावतारकी पीठके समान है और शिर शेषनागके शिरके समान है । **धमक** – चलनेसे पैरकी होने वाली आहट । **चवबँधा** – चारों ओर, चारों दिशाओंमें । **पड़ै…खग धारां** – इस घोड़ेकी वक्षस्थलकी टक्कर लगनेसे बड़े बड़े गढ़ ढह जाते हैं और बड़े बड़े हाथी गिर जाते हैं । युद्धस्थलमें तलवारोंके प्रहारोंके सम्मुख इस प्रकार टूट पड़ता है मानों मत्स्य जलमें तेजीसे गिरता हो । **सिंधुर** – हाथी । **अैराक** – घोड़ा । **हमगीर… …एरसौ** – यह घोड़ा हल्ला होने पर युद्ध भूमिमें सदैव आगे रहने वाला है और हाथियोंके टक्कर मारनेमें सिंहके समान है । यह महाराजा अभयसिंहजीका घोड़ा सूरज-पसाव सूर्य भगवानके घोड़े सप्ताश्वके समान है ।

५४. **डाच** – मुख । **फिरँग साज** – यूरोपियन ढंगकी घोड़ेकी जीन आदि । **पँडव** – (?) । **अपालां** – बेरोक । **डोर** – लगाम । **बेव** – वेग, गति (?) । **साकति** – घोड़ेकी जीन ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तोपांरौ वरणण

जळां धोय ऊजळां, काट काढ़िया[1] अराबां।
बळि भैंसा बाकरां, रंग चाढ़िया[2] सराबां।
चँडे चँडे कहि चरच[3], मँडे चित्रांम सिंदूरां।
थँडे सोर थेलियां[4], भरे गोळां भरपूरां।
अति खेवि[5] धूप आसावरी, रूप सकति वायण[6] रुखी।
धमजगर अगर[7] तोपां धरी, मगर सूर[8] नाहर मुखी॥ ५५

जोधारांरौ वरणण

करि सनांन भ्रम करै[9], धरे[10] भ्रम[11] ध्यांन स्यांमध्रम।
काया जोग अनेक, भोग माया तजि विभ्रम[12]।
अचवि गंग जळ उजळ[13], उजळ[14] पौसाक अधारे।
सभे झळाहळ सार, ईस[15] निज मंत्र उचारे[16]।
भाराथ रमायण भागवत, कथा पवित्र[17] धरि धरि करां।
धरि मरण नेम सिर परि[18] धरां[19], तुररा तुळसी[20] मंजरां॥ ५६
एक ताछ इण भांति[21], नीमणायत भड़ निडुर[22]।
तपसी सिध भड़[23] अइह[24], तियां[25] धरि अंगां बगतर[26]।

---

१ ख. काढ़ीया। ग. काटिया। २ ख. चाढ़ीया। ३ ख. ग. चरचि। ४ ख. थैलीयां। ग. थैलियां। ५ ग. षेव। ६ ख. वायणि। ग. वयणि। ७ ख. प्रतिमें यह शब्द नहीं है। ८ ख. सूर सूर। ९ ख. करे। १० ग. धरै। ११ ख. ध्रम। १२ ख. वीभ्रम। १३ ग. उझ्झल। १४ ख. ऊजळ। १५ ख. ग. इसट। १६ ग. उचारै। १७ ख ग. पत्र। १७ ग. पर। १९ ख. ग. धरे। २० ख. तुरसी। २१ ग. भांत। २२ ख. ग. निडर। २३ ख. तथा ग. प्रतिमें यह शब्द नहीं है। २४ ख. ग. सवत्रएहै। २५ ख. तीयां। २६ ख. वग्गतर। ग. वगतरां।

---

५५. **काट** – जंग। **अराबां** – तोपों। **बाकरां** – बकरों। **रंग** (?)। **चरच** – पूजा कर के। **थँडे** – घुसेड़ कर, दबा कर। **धमजगर** – युद्ध।

५६. **भ्रम** – परम, विष्णु, ईश्वर। **विभ्रम** – भ्रममें डालने वाला। **अचवि** – आचमन कर के। **अधारे** – धारण कर के। **झळाहळ** – देदीप्यमान, तेजस्वी। **सार** – अस्त्र-शस्त्र, तलवार। **ईस** – महादेव। **भाराथ** – महाभारत ग्रन्थ।

५७. **एक ताछ** – एक ही प्रकारका। **नीमणायत** – मजबूत, दृढ़

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झले[1] टोप सिर[2] झलम[3], राग मौज़ां[4] कर हाथळ।
आवध[5] कसि करि अमल, झले साबळ झाळाहळ।
बजरंग[6] घाट काळा विकट, दुरत थाट जमदूत सा।
कर[7] जोम गयण[8] औघस[9] करै, धोम नयण अबधूत[10] सा॥ ५७

बीज बचां[11] बांणिकां, भरे तीरा भूथारण[12]।
खर[13] जमदढ़ खग खरा[14], दुगम बांधै भड़ दारण[15]।
जकड़ि छुरा खंजरा, कसै वह[16] साज बंदूकां[17]।
ढळक[18] अलीबँध ढाल, अरण[19] मुख[20] वणिक अचूकां।
बरबरै[21] रोस चढ़िया[22] बिखम[23], परचँड चामँड[24] पूत सा।
करि जोम आभ[25] औघस करै, धोम नयण अबधूत सा॥ ५८

रछिक[26] गऊ[27] दुजराज[28], सील गंगेव कहावै।
एक लखां आंगमै, एक लख अँगम[29] न आवै।

---

१. ख. झटे। २ ख. सिरि। ३ ख. झिलम। ४ ख. मौंजा। ग. मोजां ५ ग. आवधि। ६ ख. ग. वजरंग। ७ ख. ग. करि। ८ ख. गय। ९ ख. औपस। ग. ओधस। १० ख. ग. अवधूत। ११ ख. ग. वचां। १२ ग. भोथारण। १३ ख. ग. पर। १४ ख. ग. परा। १५ ग. दारुण। १६ ख. ग. वहौ। १७ ग. बांदूकां। १८ ख. ढलिक। ग. ढ़ळकि। १९ क. अणिक। २० ख. मुखि। ग. मुषो। २१ ख. ग. वरवरै। २२ ख. चढ़ीया। २३ ख. ग. विखम। २४ ग. चामुंड। २५ ख. ग. वोम। २६ ग. रक्षिक। २७ ख. गउ। २८ ग. द्विजराज। २९ ग. मन अंग।

---

५७. **झले** – धारण कर के। **टोप······झिलम** – युद्धके समय धारण करनेका टोप। **राग······हाथळ** – पैरोंमें लौहके बने मोजे तथा हाथोंमें लौहके बने दस्ताने धारण किये। **बजरंग** = वज्र + अंग – मजबूत। **दुरत** – भयंकर। **गयण** – आकास। **औघस** – घर्षण। **धोम** – अग्नि, आग, लाल।

५८. **बांणिकां** – आकार, प्रकार। **भूथारण** – तर्कश, तूणीर। **जमदढ़** – कटार विशेष। **दुगम** – दुर्गम्य, भयंकर। **दारण** – जबरदस्त। **अलीबँध** – पीठ पर ढाल बांधनेका बंधन जो वक्षस्थल पर कसा जाता है। **अरण** – अरुण, लाल। **बरबरै** – जोशमें ना। **चामँड-पूत-सा** – भैरवदेव के समान। **आभ** – आसमान।

५९. **रछिक** – रक्षक। **गंगेव** – गाङ्गेव, भीष्म पितामह। **आंगमै** – पराजित करता है, वशमें करता है। **अँगम** – वशमें होना, पराजित होना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साच वीव[1] जुध समै, मोह धारै नह माया ।
करै टूक पति कांम, काच सीसी जिम काया ।
नरनाह नटै[2] पलटै नहीं, मेरग्गिर[3] मजबूत[4]-सा ।
करि[5] जोम वोम औघस[6] करै, धोम नयण अबधूत-सा[7] ।। ५६

तीन पहर[8] रवि तपै, जियां[9] ऊपर[10] जग जांणै ।
स्यांम[11] सुछळि म्रत[12] सभ्रिण[13], अधिक उच्छब[14] चित आंणै* ।
खग झाटां[15] खेल्हबा[16], राव जम ऊपरि रूठै ।
माथै[17] त्रण[18] मेल्हतां[19], आगि[20] झाळां बळि ऊठै ।
नेहड़ा जोड़ अछरां[21] नयण, जुध[22] हणमत पथ जेहड़ा ।
नवसहँस तणा कर बहसि नर, उरस छिबै[23] भड़ एहड़ा ।। ६०

इम त्रिहुंवै घड़ अडर, भीच मगरूर 'अभा'रा ।
फतै करण ऊफणै[24], उरै[25] बंब रै[26] वरारा ।
तुरां चढ़ै[27] तिण वार, वडी फौजरा[28] बहादर[29] ।
हाजर पैदल हुवा, धिकत[30] तोडा धूमंगर[31] ।

---

१ ख. ग. वाच । २ ग. भटै । ३ ख. ग. मेरगिर । ४ ख. ग. मजवूत । ५ ख. ग. कर । ६ ग. ओघस । ७ ख. ग. अवधूतसा । ८ ख. पौहौर । ग. पोहर । ९ ख. जीयां । १० ग. उपरि । ११ ग. सांम । १२ ग. मृत । १३ ग. सभ्रण । १४ ग. उछब ।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

१५ ग. जाटां । १६ ख. षेल्हवा । ग. षेलवा । १७ ग. माथे । १८ ख. त्रिण । ग. तृण । १९ ग. मेलतां । २० ग. आग । २१ ग. अपछर । २२ ख. ग. जुधि । २३ ख. ग. छिवै । २४ ख. ऊफतै । २५ ख. ग. वरै । २६ ख. वंव । २७ ग. चढ़े । २८ ग. फोज । २९ ख. वाहा । ग. वाहादर । ३० ख. ग. धषत । ३१ ख. ग. धूमंधर ।

---

५९. वोम – व्योम, आसमान ।

६०. स्यांम – स्वामी । सुछळि – लिए, युद्धमें । सभ्रिण – सिद्ध करने वाला । नेहड़ा – स्नेह । हणमत – हनुमान । पथ – पार्थ, अर्जुन । नवसहँस तणा – महाराजा अभयसिंह ।

६१. भीच – योद्धा । मगरूर – गर्वीला, अभिमानी । अभा – महाराजा अभयसिंह । तोडा – बंदूक या तोप छोड़नेका पलीता । धूमंगर – अग्नि, आग ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दरगाह थाट गह मह दुरति[1], लोह घाट[2] जुध जै[3] लभै ।
सोळ[4] प्रकार मँत्र पढ़[5] सकति, उण वेळा पूजी 'अभै' ।। ६१

सिलै[6] ससत्र[7] कसि सूर, विडँग[8] चढ़ियौ 'विजपाळौ' ।
तुरां चढ़े तिणवार, लोक पौरस[9] लंकाळौ ।
सात सहँस[10] असवार, च्यार सहँस[11] पैदल चलि[12] ।
गाढ़पूर दरगाह अयौ[13], जांणै[14] दधि ऊभळि[15] ।
काळरी निजर[16] किलमांण[17] परि[18], तेज जोर[19] अणताळरी[20] ।
भाळरी बूंग[21] पौरस भळळ[22], विकट[23] फौज[24] विजपाळरी ।। ६२

महाराजा अभैसींघजीरौ वरणण

पूजि सकति 'अभपती'[25], सुरँग चिलतह साधारै[26] ।
हटां[27] जड़े[28] हूंडियां[29], वीर पौरस वाधारै[30] ।
झले टोप सिर झिलम, पेच यक[31] पेच[32] करै[33] पर ।
धूप र किर[34] धारियौ[35], सिहर भम्मर सहस्सकिर[36] ।

---

१ ख. ग. दुरत । २ ख. ग. भाट । ३ ख. ग. जय । ४ ख. ग. सोलह । ५ ख. ग. पढ़ि । ६ ख. ग. सिलह । ७ ख. ग. सस्त्र । ८ ग. विडंगि । ९ ख. ग. पौरसि । १० ख. ग. सहस । ११ ख. ग. सहस । १२ ख. चली । १३ ग. आयौ । १४ ख. जाणे । १५ ग. उभळि । १६ ख ग नजर । १७ ख. ग. किलमां । १८ ख. ग. परा । १९ ख. जोम । ग. जोण । २० ख. अणताजरी । २१ ख. ग. बूंग । २२ ग. झलल । २३ ग. बिकट । २४ ग. फोज । २५ ग. अभपति । २६ ख. साधारे । २७ ख. ग. हठां । २८ ग. जडै । २९ ख. हूडीयां । ग. हूडियां । ३० ख. ग. वाधारे । ३१ ख. ग. इक । ३२ ग. पेट । ३३ ख. ग. कसे । ३४ ख. ग. किरि । ३५ ख. धारीयो । ३६ ख. सहसक्कर । ग. सहँसक्कर ।

---

६१. **दरगाह** – दरबार । **गह मह** – भीड़ । **अभै** – महाराजा अभयसिंह ।

६२. **सिलै** – सिलह, कवच । **विडँग** – घोड़ा । **विजपाळौ** – विजयराज भंडारी । **तुरां** – घोड़ों । **लंकाळौ** – वीर । **गाढ़पूर** – समर्थ, शक्तिशाली । **ऊभळि** – उमड़ कर । **किलमांण** – यवन, मुसलमान । **अणताळ** – असीम । **बूंग** – (?) । **भळळ** – तेजपूर्ण ।

६३. **चिलतह** – कवच । **धूप** – तलवार । **सिहर** – शिखर । **सहस्सकिर** – सूर्य ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बुगलार[1] भीड़[2] वाढ़ौ[3] बहसि[4], जमदढ़ खग साजां जकड़ि ।
भूथांण[5] कसे भुह[6] मूंछ भिड़ि, पांण तांण सांकळ[7] पकड़ि ।। ६३

हाळबोळ[8] छकहूंत, हले असि चढ़ण झळाहळ ।
इम[9] दीसै उण वार, समँद मथसी साहँसबळ[10] ।
बिय[11] सामँद[12] बंधसी[13], काय लेसी लँक[14] जुध कर ।
काय हणमँत जिम कमँध, ग्रहे लेसी द्रोणागिर ।
द्रगपाळ[15] कैद करसी दुझलि[16], इसौ[17] तेज दरसावियौ[18] ।
रवि सिहर प्रगट हुय[19] जेण खड़[20], 'अभमल' बाहर[21] आवियौ[22] ।। ६४

खमा खमा बोलता[23], लोक लारां अणपारां ।
आप गयण तोलतौ[24], भुजां पौरस[25] छक भारां ।
सझे तांम सल्लांम[26], वंस[27] खटतीस वरग्गां[28] ।
सिध जांणै[29] सँकरनूं, करै[30] आदेस करग्गां[31] ।
पय धरि रकेब चढ़ियौ[32] पमँग[33], 'अभमल' छक इसड़ै उरड़ ।
सपतास[34] चढ़े[35] किर[36] सहँसकिर[37], गोविंद करि चढ़ियौ[38] गुरड़[39] ।।६५

---

१ ख. बुलगार । ग. बुलगार । २ ख. भीडि । ३ ग. वाढ़ो । ४ ख. ग. वहसि । ५ ग. भूथांन । ६ ख. भौंह । ग. भौह । ७ ख. सांवल । ग. साबल । ८ ख. हलावोल । ९ ख. ग. यम । १० ख. सहंसव्वल । ग. सहसबळ । ११ ख. ग. काय । १२ ख. ग. समंद । १३ ख. ग. बांधसी । १४ ख. क । १५ ख. द्रिगपाल । ग. दिगपाल । १६ ख. ग. दुझल । १७ ग. इसो । १८ ख. दरसावीयौ । १९ ख. ग. होय । २० ख. रुष । ग. रूष । २१ ख. ग. वाहरि । २२ ख. आवीयौ । आवियो । २३ ग. वोलतो । ग. बोलतो । २४ ग. तोळतो । २५ ग. पोरस । २६ ख. ग. सलांम । २७ ख. वंग । २८ ग. वरगां । २९ ख. जांणे । ग. जांण । ३० ग. करे । ३१ ग. करगां । ३२ ख. चढ़ीयौ । ग. चढ़ियो । ३३ ख. पमंगि । ३४ ख. सयतास । ३५ ग. चढ़ं । ३६ ख. ग. किरि । ३७ ख. सहसकर । ग. सहसकरि । ३८ ख. चढ़ीयौ । ३९ ग. गरुड ।

---

६३. बुगलार – (?) । भूथांण – तर्कश । भुह – भौंहों । भिड़ि – स्पर्श कर के ।

६४. हळाबोळ – पूर्ण । छकहूंत – जोशसे, उमंगसे । बिय – दूसरा । सांमँद – समुद्र । काय – या, अथवा । दुझलि – वीर, योद्धा । सिहर – शिखर, बद्दल । खड़ – घोड़ा चला कर ।

६५. आदेस – नमस्कार, प्रणाम । करग्गां – हाथोंसे । पय – पैर, चरण । रकेब – घोड़ेकी काठीके साथ बांधा जाने वाला पावदान । पमँग – घोड़ा । इसड़ै – ऐसे । उरड़ – साहस, बल । सपतास – सप्ताश्व । किर – मानों । सहँसकिर – सूर्य, भानु ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होय सिंधू[१] दळ हले, तूर वाजतां त्रँबाळां।
बेलां[२] कठठे[३] बिकट[४], तोप हमलां दंताळां।
करि[५] बँदूक[६] पायकां, ज्वाळ धिकता[७] जांमंगां[८]।
पांति जजर पेड़ियां[९], भांति[१०] छेड़िया[११] भुजंगां।
वरियांम सिलह पोसां[१२] विचै, भुजां 'अभै' नभ भेटियौ[१३]।
तदि[१४] जांणि भांण[१५] ग्रीखम तणौ[१६], काळी घटा लपेटियौ[१७]॥ ६६

चिलतह झिलम चढ़ाय[१८], ससत्र[१९] अँग कसे सचेळा।
चढ़ि रेंवंत[२०] पसाव[२१], 'वखत'[२२] आयौ जिण[२३] वेळा।
तिलक छाप तुलिछिका[२४], माळ[२५] धारियां[२६] महाबळ[२७]।
हरवळ लखमण हुवौ[२८], 'अभा' रघुपति च[२९] आगळ।
मुख मूंछ[३०] अणी भूंहार मिळ[३१], अरण वदन छक ऊफणै[३२]।
व्रजराज उपासक[३३] जिण[३४] वखत, दीठां (हिज) आवै देखणै॥ ६७

१ क. सिध्ध। ग. सीधू। २ ख. वेला। ग. बेळा। ३ ख. कठटे। ४. ख. ग. विकट। ५ ख. ग. कर ६ ख. ग. वंदूक। ७ ख. धिषतां। ग. धिषता। ८ ख. जामंगा। ग. जामंगां। ९ ख. ग. पेडीयां। १० ग. भांत। ११ ख. छेडीयां। ग. छोटियां। १२ ग. पोस। १३ ख. भेटीयां। ग. भेटियो। १४ ग. तदे। १५ ख. भांणि। १६ ग. ग्रीखम-तणो। १७ ख लपेटीयौ। १८ ख. वढ़ाय। १९ ख. ग. सस्त्र। २० ख. रेबंत। ग. रेवंत। २१ ख. ग. पसाय। २२ ग. बषत। २३ ख. ग. तिण। २४ ख. ग. तुळसिका। २५ ग. माळा। २६ ख. धारीयां। २७ ख महावल। २८ ख. हुवो। २९ ख. ग. चं। ३० ख. मुंछ। ३१ ख. ग. मिळि। ३२ ख. उफणे। क. ख. ऊजणे। ३३ ख. ग. उपासिक। ३४ ख. ग. तिण।

६६. तूर – वाद्य विशेष। त्रंबाळां – नगाड़ों। बेलां – तरंग, हिलोर। हमलां – हमलों, टक्करों। दंताळां – हाथियों। जांमंगां – पलीतों। जजर – यमराज। वरियांम – वीर, योद्धा। सिलह पोसां – अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित। अभै – महाराजा अभयसिंह। नभ – आकाश। भेटियौ – स्पर्श किया। लपेटियौ – आवेष्ठित किया।

६७. चिलतह – कवच। झिलम – युद्धके समय शिर पर धारण करनेका टोप। सचेळा – श्रेष्ठ, बढ़िया। रेंवंत – घोड़ा। पसाव – (?)। वखत – महाराजा बखतसिंह। लखमण – लक्ष्मण। रघुपति – श्री रामचन्द्र भगवान। आगळ – आगे। अणी – नोंक। भूंहार – भौहों। अरण = अरुण – लाल। छक – जोश, उत्साह। ऊफणै – उबाल खाता है। व्रजराज – श्रीकृष्ण। वि० वि०—महाराज बखतसिंहजीके व्रजराजका इष्ट था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पखरैतां ध्वज पूर, सिलह ससत्रां[1] रिण साजा ।
उभै सहँस आपरा, साथि[2] सांमंत सकाजा ।
त्रिय[3] सहंस ताबीन[4], दीध महाराज[5] पायदळ ।
उभै सहँस उमराव, बँधव जतनेत[6] सहँसबळ ।
अगिवांण हुवा चक्र आक्रखे[7], रमा कंथ चढ़ि गुरड़[8] रथ[9] ।
हरवळां मुहर[10] हरवळ हुई, वाघ अरोहक[11] वीसहथ[12] ।। ६८
'गिरधर' 'रतन' गरूर, वणे[13] हरवळ 'विजपाळौ ।
कड़ाजूड़ कठठियौ[14], ऐम दळ 'अभमल' वाळौ ।

सर बुलंदरा जोधारांरौ वरणण

उठो[15] 'विलँद' दळ असुर, बंधि[16] मुगरबां जनेबां ।
पेसकबज खंजरां, जकड़[17] वणिया[18] रणजेबां[19] ।
सभि अलीबंध[20] सिलहट सपरि[21], धिख[22] चख गिड़कँध धांखिया[23] ।
पाघड़ाबंध ओळा[24] प्रचँड, अंध जेम[25] उपड़ांखिया[26] ।। ६९

१ ख. ग. सस्त्रां । २ ग. साथ । ३ ख. त्रए । ग. त्रण । ४ ख. ग. तावीन । ५ ख. ग. माहाराज । ६ ख. ग. जतनैत । ७ ग. आक्रषैं । ८ ख. ग. गरुड । ९ ख. ग. रथि । १० ख. मौहौरि । ग. मोहर । ११ क. अरौहक । १२ ख. ग. वीसहथि । १३ ख. वले । १४ ख. कठटीयौ । ग. कठटियो । १५ ग. उठि । १६ ख. ग. बांधि । १७ ख. जकडि । १८ ख. वणीयां । १९ ख. रणजेवां । ग. रणजोवां । २० ख. अंलीवंध । २१ ख. सपर । ग. सफर । २२ ख. धिसि । २३ ख. धाषीया । २४ ख. औला । २५ ख. ग. जोम । २६ ख. ग. उपडांषीया ।

---

६८. **पखरैतां** – कवचधारी घोड़ा । **ध्वज** – (?) । **उभै** – दो । **सहँस** – सहस्त्र । **त्रिय** – तीन । **ताबीन** – आधीन, मातहत । **पायदळ** – पदाति, पैदल सेना । **अगिवांण** – अगाड़ी, अग्र । **चक्र** – विष्णुका शस्त्र, सुदर्शन चक्र । **आक्रखे** – धारण किए हुए । **रमा कंथ** – विष्णु । **वाघ अरोहक** – सिंह पर सवारी करने वाली । **वीसहथ** – बीस भुजा वाली, देवी, दुर्गा ।

६९. **गिरधर** – गिरधरदास भंडारी । **रतन** – रत्नसिंह भंडारी । **मुगरबां** – विशेष प्रकारकी तलवारें । **जनेबां** – तलवारों । **रणजेबां** – तलवारें विशेष । **सिलहट** – एक खास प्रकारका कपड़ा जिसकी ढालें बहुत बढ़िया और मजबूत बनती हैं । **सपरि** – ढाल । **गिड़कँध** – प्रचंड शरीरधारी, शक्तिशाली । **पाघड़ाबंध** – (?) । **ओळा** – श्रेष्ठ, उत्तम । **अंध** – अंधकासुर नामक दैत्य जो दिति और कश्यपका पुत्र था । इसके सहस्त्र शिर थे, यह अंधक इसलिए कहलाया कि देखते हुए भी मदके मारे अंधोंके समान चलता था । **उपड़ांखिया** – जोशीला, गर्वोन्मत ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इक भाटी[1] आवखी, पियै[2] दुब्बार[3] सराबां[4] ।
भैंसा आधा भखै, बोट[5] नुकळमै कबाबां ।
डंड[6] सहत[7] करि दुरत[8], रवद काचा पळ रौळै[9] ।
मण बारह[10] मुदगरां, त्रणा जेही[11] ऊ तोलै[12] ।
भोळै[13] परत्र[14] जम[15] भूपरै[16], पिंड[17] जांणै अहि पांखिया[18] ।
विण[19] सुरसबंध[20] भक्खी[21] विखम, अंध कंध उपड़ांखिया[22] ॥ ७०

कितां कसे[23] अैराक, ऊंच पौसाकां ऊपर ।
अरि[24] ओळां[25] पाघड़ां[26], कुलँग जूंगा[27] बहु[28] जब्बर[29] ।
सिलह कितां नखसिवख, करे जवनां कळिचाळां ।
इम कसिया[30] अैराक, मगजवदळां[31] मतिवाळां ।
करि करि कुरांण पांनां[32] करग[33], रवद[34] जांणि जद[35] रूठिया[36] ।
बे बे कबांण[37] भूथांण[38] बँध[39], आसमांण[40] छिब[41] ऊठिया[42] ॥ ७१

---

१ ख. ग. भाठी । २ ख. पीयै । ३ ख. दुव्वार । ४ ख. ग. सरावां । ५ ख. ग. वोट । ६ ख. ग. दंड । ७ ख. ग. सहस । ८ ख. दुरित । ९ ख. ग. रोलै । १० ख. ग. वारह । ११ ख. जैही । १२ ग. उतोलै । १३ ख. ग. भोलै । १४ ख. ग. पड़ंत । १५ ख. ज । १६ ख. वूतरै । ग. भूतरै । १७ ख. पंड । १८ ख. पाषीयाँ । १९ ख. विधि । २० ख. सूरसवध । ग. सूरसवंध । २१ ख. ग. भषी । २२ क. वपडांषिया । २३ ख. कसै । २४ ख. ग. पर । २५ ख. औला । २६ ख. पाषडां । २७ ख. ग. जुगा । २८ ख. वहु । २९ ख. झवर । ग. जबर । ३० ख. कसीया । ३१ ख. ग. मगजवालां । ३२ ग. पना । ३३ ख. ग. करगि । ३४ ग. रबद । ३५ ग. जम । ३६ ख. रूठीया । ३७ ख. ग. कवांण । ३८ ग. भूथांनि । ३९ ख. वधि । ग. बंधि । ४० ग. आसमांणि । ४१ ख. ग. छवि । ४२ ख. ऊठीया । ग. उठिया ।

---

७०. **भाटी** – शराब निकालनेकी भट्टी । **आवखी** – पूर्ण । **बोट** – टुकड़ा, खंड । **नुकळमै** – शराबके साथ खानेकी चीज, गजक । **दुरत** – जबरदस्त, भयंकर । **पळ** – मांस । **रौळै** – हजम कर जाते हैं । **मुदगरां** – मुग्दर । **भोळै···पांखियां** – उनके देखनेसे भ्रममें यमराज जैसे दिखाई देते हैं और वे श्याम शरीरके ऐसे प्रतीत होते हैं मानों बिना परों वाले कृष्ण-सर्प हों ।

७१. **अैराक** – घोड़ा (?) । **कुलँग** – कुलाह, मुकुट । **जूंगा** – जोंगा, बड़ा । **कळिचाळा** – योद्धा, वीर । **रवद** – यवन ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चढ़ै[1] एम कळिचाळ, पूर पखराळ पमंगां ।
अति झड़त्त[2] अगताळ, दुवै चख[3] झाळ[4] दमंगां[5] ।
नजर[6] ठाळ[7] करि निहँग, समळ ऊताळस उड्डी ।
पड़ै[8] चोट पंखाळ, बाळ[9] बंधीयक[10] बड्डी[11] ।
विकराळ जोम छकिया[12] वहै, देव मनिख[13] अहि नँह[14] डरै ।
रिणताळ[15] आळ माटै[16] रवद, काळ चाळ[17] पकड़ै[18] करै ।। ७२

जुदा[19] मिसल[20] जगहूंत[21], असल[22] विल्लायत[23] वाळा ।
इसड़ा बारहजार, चूंच चढ़िया[24] कळिचाळा ।
चहचहती चीवरी, जेम वांणी मुख जंपै ।
दळ जाहर देखतां, करी नाहर उर कंपै ।
जमरूप केस भूरा जरद, रुख सिचांण[25] सांमळ[26] रुखा ।
चख चोळ नजर कहरी चुगल, मुगळ[27] बाज[28] बहरी[29] मुखा ।। ७३

गहि बँदूक[30] फिरँगांन[31], मेघ डंबर[32] मझि मंडे ।
च्यार कबांण[33] मुसैद, च्यार तरगस[34] चवडंडे ।

---

१ ख. ग. चढ़े । २ ख. ग. झडतां । ३ क. छख । ४ ग. झाळा । ५ ख. ग. दुमंगां । ६ ग. निजर । ७ ख. वाल । ग. बाळ । ८ ख. ग. पाडै । ९ ख. ग. वाळ । १० ख. वंधीयक । ग. बंधियक । ११ ख. वड्डी । ग. व्वडी । १२ ख. छकीया । १३ ख. ग. मनषि । १४ ख. ग. नह । १५ ख. ग. रणताल । १६ ग. मटै । १७ ख. वाळ । १८ ख. पकडे । १९ ख. ग. जुदी । २० ग. निसल । २१ ख. गजहूंत । ग. जमदूत । २२ ग. असलि । २३ ख. विल्लायति । ग. विलायति । २४ ख. चढ़ीया । २५ ग. सीचांण । २६ ख. संम्मल । ग. सम्मल । २७ ख. मुषल । २८ ख. वाज । २९ ख. ग. वहरी । ३० ख. वंदूक । ग. दबूष । ३१ ख. फिरगांन । ग. फिरंगान । ३२ ख. ग. डंवर । ३३ ख. कवांण । ३४ ख. ग. तरकस ।

---

७२. पखराळ – कवचधारी घोड़ा । अगताळ – अपार । दमंगां – अग्निकण । ठाळ – देख कर । निहँग – आकाश । जोम – जोश । रिणताळ – युद्ध । आळ माटै – कौतुकमें, खेलमें । चाळ – वस्त्राञ्चल ।

७३. चूंच – पूर्ण । चीवरी – एक पक्षी विशेष जो रात्रिमें ही बोलता है जिसकी बोली भयावह समझी जाती है । सिचांण – बाज, एक शिकारी पक्षी । सांमळ – चील । कहरी – भयावह, आफत पैदा करने वाला । बहरी – एक शिकारी पक्षी ।

७४. मुसैद – (?) । तरगस – तर्कश ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

टोप सबज[1] चिलतहै, धरै[2] समसेर जमंधर।
फजर पढ़े[3] फातिया[4], असुर चढ़िया[5] गज ऊपर।
कसमसे घाट अहि कोम कँध, भोम पाट लग्गौ[6] भवण[7]।
चढ़ि रीस जांणि[8] रांवण[9] चढ़े, रांमहूंत धमचक करण[10]॥ ७४
सीसा जांमँग सोर, *भार गाडा बांणां भर।*
चव हजार सुत्रनाळ[11], हबस[12] उसताज बहादर[13]।
त्रण[14] हजार रहकळा, अरब उसताज अचूकां।
सुकर नरां बगसरां[15], बार[16] हज्जार[17] बँदूकां[18]।
बि[19] हजार तोप कठठी[20] बडी, गोळमदाज[21] फिरंगरा।
करि अजर[22] क्रोध कीधा किलम, जबर[23] मसाला जंगरा॥ ७५
चढ़े सेख चँदवळां, मुगळ वर[24] गोळज[25] गोळां।
रचे गोळ राफजी[26], सयद पाठांण हरोळां।
मँडे अराबां[27] मुहरि[28], वीर नीसांण[29] वजाया।
अली अली कहि असुर, एम सांमुहा[30] चलाया।

---

१ ख. सवज। २ ख. ग. धरे। ३ क. चढ़े। ग. पढ़ै। ४ ख. फातीया। ५ ख. चढ़ीयौ। ग. चढ़ियो। ६ ख. लगा। ग. लगो। ७ ख. ग. भमण। ८ ग. जांण। ९ ख. ग. रांमण। १० ख. ग. रमण।

*ख. तथा ग. प्रतियोंमें—'भार वांणां गाडा भर।'

११ ख. ग. सुत्रनाळि। १२ ख. ग. हवस। १३ ख. ग. वहादर। १४ ख. ग. त्रिण। १५ ख. ग. वगसरां। १६ ख. ग. वार। १७ ग. हजार। १८ ख. वंदूकां। ग. बंदूषां। १९ ख. ग. वि। २० ख. कठटे। ग. कठठे। २१ ख. गोलंदाज। २२ ख. अरज। २३ ख. ग. जजर। २४ ख. ग. वर। २५ ख. गौजल। ग. गौळज। २६ ग. राषजो। २७ ख. सरावा। २८ ख. मौहोरि। ग. मौहौरि। २९ ख. निसांण। ३० ख. सातुहां।

---

७४. **सबज** – उत्तम, श्रेष्ठ, सब्ज। **चिलतहै** – कवच। **फातिया** – प्रार्थना, फातहा। **अहि** – शेषनाग। **कोम** – कच्छपावतार। **भवण** – भ्रमित। **धमचक** – युद्ध।

७५. **सुत्रनाळ** – ऊँट पर रख कर चलाई जाने वाली बंदूक जो साधारण बंदूकसे बड़ी होती है। **त्रण** – तीन। **बगसरां** – मुसलमानों। **बि** = द्वि – दो।

७६. **चँदवळां** –सेनाका पीछेका भाग, चंदावल। **गोळज**– सेनाका मध्य भाग। **राफजी** – शीया मुसलमान। वि०वि० – शीया मुसलमानोंका वह दल जिसने हजरत अलीके लड़के जैदका साथ छोड़ दिया था—सिर्फ इसी कारणसे सुन्नी लोग इस शब्दका प्रयोग शीया लोगोंके लिए उपेक्षापूर्वक करते हैं। **हरोळां** – सेनाका अग्र भाग, हरावल। **मुहरि** – अगाड़ी, आगे। **अली** – ईश्वरका एक नाम। **असुर** – यवन। **सांमुहा** – सम्मुख, सामने।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मोरचां राड़ि त्रण[1] दिन मँडे[2], सूरां धरम सबाबरा।
आंमसम्हा[3] कठठि[4] चौड़ै[5] उरड़ि[6], नरियँद झूळ नबाबरा[7] ॥ ७६

जुधप्रिय देवांरौ वरणण

साकणि डाकणि सकति, सकति चवसठी समोसरि[8]।
समळ महा[9] सिध सकति, सकति वायणी[10] सिकौतरि[11]।
मँगळ धमळ[12] उदमाद[13], करै नाचै किलकारै।
जैत जैत 'जोधांण', एम मुख[14] वचन उचारै[15]।
'अभमाल' लड़ै[16] 'सिर विलँद'हूं[17], घणा मुगळ खग[18] घावसी।
जेचंद[19] जिमाड़ी[20] अटक जिम, जीमण आज जिमाड़सी[21] ॥ ७७

वीरभद्र गणराज, सहत[22] पारबती संकर[23]।
खिल[24] नारद खेचरा, भूत भूचरा भयंकर।
त्रहकै[25] तूर त्रंबाळ[26], चंड कळिचाळ[27] त्रहक्कै[28]।
बकै[29] वीर-वैताळ[30], ग्रीध[31] बेताळ[32] गहक्कै[33]।

---

१ ख. ग. त्रिण। २ ग. मंडै। ३ ख. ग. अमसम्हां। ४ ख. ग. कठटि। ५ ख. चोडै। ६ ख. ग. उरड। ७ ख. नवावरा। ग. नबावरा। ८ ख. ग. समौसर। ९ ख. माहा। १० ख. ग. वायण। ११ ख. ग. सीकोतर। १२ ग. धवल। १३ ग. उदमदा। १४ ख. मुषि। १५ ख. उवारे। १६ ख. ग. लडे। १७ ख. सीरविलंदूंहूं। १८ ख. षगि। ग. षल। १९ ख. ग. जयचंद। २० ग. जिमाडि। २१ ग. जीमाडसी। २२ ग. सहित। २३ ख. संकरि। २४ ख. लिषि। ग. षिलि। २५ ख. ग. त्रहके। २६ ख. त्रंबाल। ग. तंबाळ। २७ ग. कळिकाळ। २८ ख. चहक्के। ग. चहकै। २९ ख. ग. वके। ३० ख. वेताळ। ३१ ग. गीध। ३२ ख. विकराल। ग. वंकराळ। ३३ ख. गहक्के। ग. गहकै।

---

७६. **सबाबरा** – किसी वस्तुके मध्यका वह भाग जिसमें वह बहुत उत्तम जान पड़े; प्रारम्भका, श्रेष्ठताका। **आंमसम्हा** – परस्पर एक दूसरेके सम्मुख। **झूळ** – समूह।

७७. **समोसरि** – समान, तुल्य। **समळ** – साथ। **वायणी** – (?)। **मँगळ धमळ** – मांगलिक गायन। **उदमाद** – हर्ष, आनंद। **किलकारै** – तेज आवाज करता है। **जैत जैत** – विजय हो, विजय हो।

७८. **खेचरा** – आकाशचारी। **भूचरा** – भूमि पर चलने वाले। **त्रहक्कै** – वाद्य बजते हैं। **तूर** – वाद्य विशेष। **त्रंबाळ** – नगाड़ा। **चंड** – रणचंडी, दुर्गा। **कळिचाळ** – योद्धा, युद्ध तथा युद्धप्रिय देवगण। **वीर** – युद्धप्रिय देव विशेष जिनकी संख्या राजस्थानीमें ५२ मानी जाती है। **बेताळ** – देव विशेष।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झणणाट[1] नाद नूपर[2] झँझर[3], सुर वाजँत्र सैतीसमौ ।
रँभ हूर रथां ढंकियौ[4] अरक, मँडि ब्रहमँड[5] बावीसमौ ।। ७८

हैदळ पैदळ हसत[6], हले दळ बळ[7] हीलोहळ[8] ।
उदध सात उलटियां[9], जांणि बारह[10] घण वद्दळ[11] ।
रज[12] झांखौ[13] किरणाळ[14], कमळ जहराळ लटक्कै[15] ।
चोळ भाळ चापड़ै, कमँध रवदाळ कटक्कै[16] ।
त्रंबाळ नाद रौद्रव तदिन[17], विखम दहूं[18] दळ[19] वाजिया[20] ।
सझि छपन कोड़ि जांणै[21] सघण, एकणि[22] साथ अग्राजिया[23] ।। ७९

सेनारौ वरणण

भुजंगी— इसा[24] थाट ईरांन[25] नौ कोट[26] ऽवाळा[27] ।
चढ़े आविया[28] चापड़े बंधि[29] चाळा[30] ।
छकां ऊफणै बूग[31] लोहां छछोहां[32] ।
धिखै[33] कैरवां[34] पांडवां जेम[35] धौहां[36] ।। ८०

---

१ ग. टणणाट । २ ख. नूपुर । ग. भूपर । ३ ग. झझ । ४ ख. टंकीयौ । ग. ढंकियौ । ५ ग. ब्रह्मंड । ६ ख. ग. हसति । ७ ख. ग. वळ । ८ ग. हिलोहल । ९ ख. उलटीयां । १० ख. ग. वाहरह । ११ ख. ग. वादळ । १२ ग. रजं । १३ ख. झंषौ । ग. ढंको । १४ ख. किरनाळ । ग. झिणनाळ । १५ ख. लट्टके । ग. लटके । १६ ख. कट्टके । ग. कहके । १७ ख. ग. तदनि । १८ ख. दुहूं । ग. दुहू । १९ ख. चल । ग. बल । २० ख. वाजीया । ग. वाझिया । २१ ख. ग. जांणे । २२ ग. एकण । २३ ख. अग्राजीया । २४ ख. ईसा । २५ ग. इरान । २६ ख. कोट । २७ ख. वाला । ग. वाळां । २८, ख. ग. आवीया । २९ ख. धांधि । ग. वाधि । ३० ख. वाला । ग. वालां । ३१ ख. ग. वूंग । ३२ क. छछौहां । ३३ ख. ग. धिषे । ३४ ग. केरवां । ३५ ख. प्रतिमें यह शब्द नहीं है । ३६ ख. प्रतिमें यह शब्द नहीं है ।

---

७८. **झँझर** – पैरोंमें धारण करनेका स्त्रियोंका आभूषण विशेष । **अरक** – सूर्य ।

७९. **हैदळ** – घुड़सवार । **हसत** – हस्ती, हाथी । **हीलोहळ** – समुद्र । **झांखौ** – धूलि-आच्छादित जो स्पष्ट नहीं दिखाई देता हो । **किरणाळ** – सूर्य, भानु । **कमळ** – शिर । **जहराळ** – शेषनाग । **लटक्कै** – लचक रहे हैं । **चापड़ै** – युद्धस्थलसे । **रवदाळ** – मुसलमान । **रौद्रव** – भयंकर ।

८०. **नौ···ऽवाळा** – नवकोटी मारवाड़के अधिपतिके । **चाळा** – उत्पात, युद्ध । **बूग** – (?) । **छछोहां** – तेज ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहंकार नब्बाब[1] दज्जोण[2] अेहौ[3] ।
जठै हिंदवां[4] नाथ पाराथ जेहौ ।
हुबेवा[5] चढ़े जांणि क्रोधाळ होवै ।
दसेकंध[6] बांणावळी[7] रांम दोवै[8] ॥ ८१

किलम्मेस[9] राजा तणा भीच[10] कोपै ।
इसी रीस बेवै[11] दळां मांहि ओपै ।
भिगे जांणि सामंद्ररी हेक झाळी ।
अनै[12] दूसरी तीसरी[13] नैण ऽवाळी[14] ॥ ८२

उठी धू 'विलंदेस' आयौ अछायौ ।
अठी हूंत राजा अभैसिंघ आयौ ।
किलम्मेस वाळा उठी झूल काळा ।
अठी आवळा-झूळ भूपाळ वाळा ॥ ८३

ढळक्कै[15] गजां चम्मरां[16] क्रीब[17] ढालां ।
झळक्कै[18] अणी भम्मरां[19] त्रीछ भालां ।
खळक्कै[20] सिलै[21] पाखरां राड़ि खंगी ।
जळक्कै[22] विचै धोम-सी दीठ जंगी ॥ ८४

---

१ ख. नवाव । ग. नबाब । २ ख. दइझेण । ग. दजोण । ३ ख. एहो । ४ ख हींदुवां । ग. हींदवो । ५ ख. हुवेवा । ग. हुवैवो । ६ ख. दसैकंध । ग. दसकंध । ७ क. बांणवळी । ८ ग. दोवै । ९ ख. किलंमेस । ग. किलमेस । १० ख. ग. जोध । ११ ख. वेवै । ग. बेवै । १२ ग. अना । १३ ख. तीसरां । ग. तीसरा । १४ ख. ग. वाळी । १५ ख. झलकै । ग. ढ़ळकै । १६ ख. चंमरां । ग. चमरां । १७ ख. ग. क्रीछ । १८ ख. भल्लकै । ग. भळकै । १९ ख. भंमरां । ग. भमरां । २० ग. षळकै । २१ ख. ग. सिल्है । २२ ख. जल्लकै । ग. जलूकै ।

---

८१. दज्जोण – दुर्योधन । दसेकंध – रावण । बांणावळी – धनुर्विद्यामें प्रवीण, बाणोंकी पंक्ति ।

८२. किलम्मेस – बादशाह । भीच – योद्धा ।

८३. उठी धू – उस तरफसे । विलंदेस – सर बुलंद । अछायौ – जोशपूर्ण । झूल – दल । काळा – वीर, योद्धा । आवळा-झूळ – सुसज्जित ।

८४. चम्मरां – (?) । क्रीब – (?) । ढालां – हाथियोंके ललाट पर युद्धके समय धारण कराया जाने वाला उपकरण । झळक्कै – चमकते हैं । त्रीछ – तीक्ष्ण । खळक्कै – खलखलकी ध्वनि करते हैं । सिलै – कवच, सिलह । धोम-सी – अग्नि जैसी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लळक्कै[1] गजां पोगरां[2] नाळ[3] लोभा ।
भळक्कै[4] मुखां सूरमां भांण सोभा ।
गुड़ै बे[5] दळां आगळा[6] तोप गाडा ।
जठै बांण[7] गोळां सराजांम जाडा ।। ८५

भयाणंख गाडा किता जूंग[8] भारू ।
दळां गोळियां[9] पूर सांमांन[10] दारू ।
जळाबोळ[11] हीलोळ हालंत जाडा ।
अणी आरबां[12] पूरबां थाट आडा ।। ८६

अरोहै[13] कितां जूंग बेछाड़ अंगा[14] ।
चखां चोळबोळां[15] हथां[16] रांम चंगां[17] ।
तठै दूंग[18] तूटै धिखै आग[19] तोड़ां ।
घणूं नाळ[20] ताळां वजै नास घोड़ां ।। ८७

झड़ै फींण घोड़ां मुखे सेत झारा ।
तिकै जांणि ऊगा धरा वीज[21] तारा ।

---

१ ख. ग. लळकै । २ ग. पौगरां । ३ ख. ग. नाग । ४ ख. ग. भळकै । ५ ख. वे । ग. वैदळां । ६ ख. आगला । ग. अगळा । ७ ख. ग. वांण । ८ ख. गुंज । ग. जूग । ९ ख. ग. गोलीयां । १० ख. सामान । ग. सामांन । ११ ख. जलावोल । १२ ख. आरवां । ग. आरंवां । १३ ख. ग. अरोहे । १४ ग. अंगी । १५ ख. चोलबोलां । १६ ख. ग. हथा । १७ ग. चंगी । १८ ख. दोग । ग. दौंग । १९ ख. ग. आगि । २० ख. नाग । २१ ख. वीचि ।

---

८५. **लळक्कै···लोभा** – हाथियोंकी सूंडें (पोगरां) कोमलताके कारण इधर-उधर लचकती या मुड़ती है, भौंरे इसे कमलकी नाल समझ कर लोभायमान हो रहे हैं । **सराजांम** – सामान । **जाडा** – घना, बहुत ।

८६. **जूंग** – ऊँट । **भारू** – वजनी, भार ढोने वाले । **दारू** – बारूद । **जळाबोळ** – समुद्र । **हीलोळ** – तरंग, लहर ।

८७. **बेछाड़** – चंचल, उद्दण्ड । **चखां···चंगां** – उन योद्धाओंके नेत्र जोशमें लाल हैं और हाथोंमें बड़ी-बड़ी बंदूकें (रामचंगा) हैं । **दूंग** – अग्निकण । **धिखै** – प्रज्वलित हो रहे हैं । **आग-तोड़ां** – बंदूकें या तोपें छोड़नेके पलीते । **नास** – नाक, नाकका रंध्र ।

८८. **फींण** – फेन । **सेत** – श्वेत । **झारा** – बूंद, कण ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उठै हाथियां[1] ऊपरा धज्ज[2] उड्डी[3] ।
गिरां ऊपरा ऊछळे[4] जांणि[5] गुड्डी[6] ।। ८८

थटै[7] सामँद्रां[8] हाथियां[9] पाळि[10] थाई ।
उभै जम्मरी[11] जांणि[12] जम्मात[13] आई ।
धरां गूजरां देववा[14] क्रोध धीठा ।
दुवै धूमरां फील नीसांण दीठा ।। ८९

उठी राफजी आविया[15] च्यार यारी ।
अठी[16] बैसनां[17] साखतां[18] अग्रकारी ।
परा ऊचरै[19] नांम चौवीस पीरां[20] ।
धरै ध्यांन औतार[21] चौवीस धीरां[22] ।। ९०

उठै[23] ईसफां आसफां[24] नांम आखै ।
दुवै काळिका चंडिका अेह दाखै ।
कतेबां[25] कलम्मां[26] उचारै[27] कुरांणां ।
पढ़ै भारथां[28] भागवंतां पुरांणां ।। ९१

---

१ ख. ग. हाथीयां । २ ग. धज । ३ ख. ग. ऊडी । ४ ग. ऊछळे । ५ ग. जांण । ६ ख. ग. गुडी । ७ ख. थटां । ग. थट । ८ ख. सामंद्रां । ग. सामंद्र । ९ ख. ग. हाथीयां । १० ग. पाळ । ११ ग. जासरी । १२ ग. जांण । १३ ग. जमात । १४ ख. दाविवा । ग. दीविवा । १५ ख. आवीया । १६ ग. उठी । १७ ख. वैसनां । ग. वैसना । १८ ख. साकंत । ग. साकता । १९ ख. ऊच्चरै । ग. उच्चरै । २० ख. पीरं । २१ ग. ओतार । २२ ख. धीरं । २३ ख. ग. उवै । २४ ख. आसपां आसपां । ग. आसपां । २५ ख. कतेवां । २६ ख. कल्लंमां । ग. कल्लोमां । २७ ख. ग. उच्चारै । २८ ग. भारथं ।

---

८८. धज्ज – ध्वजा । गिरां – गिरों, पर्वतों । गुड्डी – पतंग ।

८९. धरां गूजरां – गुजरातकी भूमि । धूमरां – समूह । फील – हाथी ।

९०. औतार – अवतार ।

९१. कतेबां – धर्म-शास्त्रों, किताबों । कलम्मां – वे वाक्य जो मुसलमान धर्मके मूल मंत्र हों, कलमा । भारथां – महाभारत ग्रंथ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवांणां परां ता[1], चलां[2] सौख वागी ।
लखे[3] हूर रंभा वहै वादि[4] लागी ।
उपाड़ै किता मारका खैंग[5] आगा ।
लड़ेवा[6] जिकां सीस गैणाग[7] लागा ।। ६२

असीलां रसी रेहियां[8] हाथ आंणै ।
तसीसां करै जोस कावांण तांणै ।
सरीखां अमीरां तणा जोध सूरा ।
पियै[9] आकला राड़ि नूं[10] क्रोध पूरा ।। ६३

वहै हैमरां[11] सौख[12] जांणै[13] विवांणै[14] ।
जुझाऊ[15] घटा भाद्रवा जेम जांणै[16] ।
दखै[17] नांम अल्लाह[18] दे हाथ दाढ़ी ।
चवै रांम मूंछां वळे भ्रूंह[19] चाढ़ी ।। ६४

किलम्मां[20] अनै वाद लागौ[21] कनौजां ।
फबै[22] आय चाकै चढ़ी दोय फौजां ।। ६५

---

१ ख. ग. रा । २ ख. ग. तलां । ३ ग. लखै । ४ ख. ग. वाद । ५ ख. ग. थैंग । ६ ग. लडैवा । ७ ख. गै । ग. गैणागि । ८ ख. रोहीयां । ग. रोहियां । ९ ख. पीए । ग. पिए । १० ग. नौ । ११ ग. हेमरां । १२ ख. ग. सोक । १३ ख. जांणे । १४ ख. विवाणे । ग. विवांणे । १५ ख. जोझाउं । ग. जोजावू । १६ ख. जांणे । १७ ख. दषे । १८ ग. अलाह । १९ ख. ग. भौंह । २० ख. किलंमां । ग. किलमा । २१ ग. लागो । २२ ख. फवे । ग. फवै ।

---

६२. **विवांणां** – विमानों, वायुयानों । **सौख** – पशुओं, वायुयानों आदिके तेज चलनेसे होने वाली ध्वनि । **लखे** – देख कर । **खैंग** – घोड़ा । **गैणाग** – आकाश, गगनांगण ।

६३. **असीलां** – एक प्रकारका शस्त्र । **तसीसां** – हाथों । **कावांण** – कमान, धनुष । **आकला** – तेज ।

६४. **हैमरां** – हयवरों, घोड़ों । **जुझाऊ** – वीररस पूर्ण । **दखै** – कहते हैं । **चवै** – कहते हैं ।

६५. **किलम्मां** – मुसलमानों । **वाद** – युद्ध । **कनौजां** – राठौड़ों ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुधरो आरंभ

कवित्त– धर अंबर क्रम[1] धोम, घटा डंबर रज घुम्मट[2] ।
हाक वीर है हींस[3], भूल नेवर झणणाहट ।
भाला बह[4] भळहळै, जेण[5] वेळा[6] जुध जीपक ।
जांणै घर घर[7] जगै, दीपमाळा मझि[8] दीपक ।
दहुं[9] वळां[10] तोप लग्गी दगण, रूप काळ डाचा रुखी ।
रवि प्रळै काज[11] जांणै रसम, ज्वाळ[12] झाळ ज्वाळामुखी ।। ६६

धुबै[13] आरबां[14] धोम, गाज रौद्रव गमगम्मैं ।
प्रथमी गयण पताळ, धमक औद्रव[15] धमधम्मै* ।
उदधि सुजळ ऊझळै, हेम प्रघळै[16] जळ हल्लै ।
दइत[17] लाग नर देव, दसै द्रगपाळ[18] दहल्लै ।
ऊडता[19] भिड़ै छूटै उडै, असण जेम गोळा अखत ।
अनेक[20] जांण छूटै अरक[21], नवेलाख तूटै नखत ।। ६७

दगै नाळ रवदाळ, जड़ै विकराळ जँजीरां ।
कमँध दळां कळिचाळ, उडै झळ नाळ अँगीरां[22] ।

---

१ क. ख. कह । २ ख. घूंमट । ३ ख. हैसीस । ग. हैहीस । ४ ख. वौहौ । ग. बोहौ । ५ ख. जेणि । ६ ख. वेलां । ७ ग. घरि घरि । ८ ख. सझि । ९ ख. दुहु । ग. दुहू । १० ख. वलां । ग. बला । ११ ख. ग. काल । १२ ग. ज्वाळा । १३ ख. ग. धुवै । १४ ख. आरवां । १५ ग. ओद्रव ।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं हैं ।

१६ ख. प्रयलै । १७ ख. दईत । १८ ग. द्रिगपाळ । १९ ग. उडता । २० ग. अनेक । २१ ख. जूटै । २२ ख. अंगिरा ।

---

६६. **डंबर** – समूह । **है** = हय – घोड़ा । **हींस** – घोड़ेकी हिनहिनाहटकी ध्वनि । **नेवर** – घोड़ेके घुटनेके ऊपर धारण कराया जाने वाला आभूषण । **भळहळै** – चमकते हैं । **जीपक** – जीतने वाला, विजयी । **डाचा** – मुख । **रसम** – रश्मि, किरण ।

६७. **धुबै** – छूटती हैं । **आरबां** – तोपों । **रौद्रव** – भयंकर । **गमगम्मै** – इधर - उधर, चारों ओर । **औद्रव** – भयंकर । **हेम** – हिमालय पर्वत । **दहल्लै** – भयभीत होते हैं । **असण** – वज्र । **अखत** – अक्षत ।

६८. **नाळ** – तोप । **रवदाळ** – मुसलमान ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धर अंबर धड़हड़ै[1], छिपां धूमर भर छाए।
रज अंबर[2] अरड़ाव[3], जेठ रति जिम चढ़ि जाए[4]।
विचि तिमर घोर गोळा वहै, जाजुळ[5] मंगळ[6] जोतिरा।
अम्हसम्हां जांणि[7] लागा उडण, सिखर मुकति साजोतिरा ॥ ९८
प्रळैकाळ घण परै[8], असण घण घोर अँगारां।
सुणिजै[9] नह अनि सबद, निसह रिण[10] तूर नगारां।
दुगम[11] वळां[12] दारुवां[13], दुहूं तरफां दरसाई।
जांणै घर घर[14] ज्वाळ, लंक हणमंत[15] लगाई[16]।
पखरैत जरद घटका पड़ै, रटकां गोळां रीठरा।
हाथियां[17] सीस कुटका[18] हुवै[19], मटका जांण[20] मजीठरा ॥ ९९
रांमचँगा रहकळां, चलै गोळा कळिचाळक।
कबडी[21] जांणिक[22] करै, कुंवर[23] पावकरा बाळक[24]।
गडा जेम गोळियां[25], रीठ वाजै धोमारव।
खेलै[26] जांण[27] खिदौत[28], भळक करि करि निज[29] भाद्रव।

---

१ ख. धरहडै। २ ख. डंवर। ग. डंबर। ३ ख. अरडावै। ४ ग. जायै। ५ ग. जाजुलि। ६ ग. मंगलि। ७ ग. जांण। ८ ख. ग. पडै। ९ ख. ग. सुणजे। १० ख. ग. रण। ११ ग. दुरम। १२ ख. ग. झलां। १३ क. ख. दारावां। ग. दारवां। १४ ग. घरि घरि। १५ ग. हनूमंत। १६ ग. लगाइ। १७ ख. हाथीयां। १८ ख. गुटका। १९ ग. हुवा। २० ख. जांणि। २१ क. कडवी। २२ ख. जांणे। ग. जांणै। २३ ख. ग. कुवर। २४ ख. ग. वाळक। २५ ख. गोलीयां। २६ ख. षेल्है। २७ ख. जांणि। २८ ख. ग. षिदोत। २९ ख. ग. निस।

---

९८. **धड़हड़ै** – कंपायमान होता है, ध्वनित होता है। **छिपां** – रात्रि। **धूमर** – धुंआ। **अरड़ाव** – ध्वनि विशेष। **मंगळ** – अग्नि, रक्त वर्ण। **अम्हसम्हां** – आमने-सामने। **मुकति साजोतिरा** – सायुज्य मुक्ति जिसमें जीवात्मा परमात्मामें लीन हो जाता है।

९९. **निसह** – रात्रि। **दारुवां** – बारूदों। **पखरैत** – कवचधारी घोड़ा। **जरद** – कवच या कवचधारी योद्धा। **रटकां** – टक्करों। **रीठरा** – प्रहारोंके। **मटका** – मिट्टीका बना बड़ा पात्र।

१००. **रांम चँगा** – एक प्रकारकी बड़ी बंदूक। **कबडी** – एक प्रकारका खेल। **गड़ा** – गिरते हुए वर्षाके जमे हुए गोले, ओला। **धोमारव** – (?)। **खिदौत** – खद्योत, जुगनू। **भळक** – चमक-दमक।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

समसेर बांण छूटै समर, श्रो श्रोपम इण नाचनै[१]।
परियांण[२] जांण[३] छूटै[४] पनँग, जावै[५] चंदण[६] बावनै[७] ॥ १००

उण मौसरि 'अभमाल', सूर हाकलै सकाजा।
अणी कढ़ा[८] टाळिया[९], रांम जांणै[१०] कपिराजा।
सीह जांण[११] सादूळ, एक साथै[१२] बह[१३] आया।
जटी वीरभद्र जिसा, जांणि बह[१४] वीर जगाया।
काढ़ियां[१५] खगां मुजरा[१६] करै, भौंह[१७] मूंछ[१८] अणियां[१९] भिड़ी।
सूरजपसाव[२०] आगै सझै[२१], इम त्रिहुं वागां ऊपड़ी ॥ १०१

धमकनाळ धर धसकि, थाट परबत थरसल्ले[२२]।
कमठ सेस भिड़[२३] कमठ, दाढ़ दाढ़ाळ दहल्ले[२४]।
परां सौक[२५] पक्खरां[२६], धमक[२७] वागी धजराजां।
अनळ पंख उड्डिया[२८], गिलण जांणै[२९] गजराजां।

---

१ ख. भावनै। २ ख. ग. परआय। ३ ख. जांणि। ४ ख. ऊडे। ग. ऊडै। ५ ख. ग. जाए। ६ ख. चंदणि। ७ ख. वांवनै। ग. वावनै। ८ ग. काढ़। ९ ख. टालीया। १० ख. ग. जांणे। ११ ख. जाणि। १२ ख. ग. साथे। १३ ख. वहौ। ग. बहौ। १४ ख. वहो। ग. बहौ। १५ ख. काढ़ीयां। १६ ग. मुंरा। १७ ख. ग. भौह। १८ ख. ग मूछ। १९ ख. ग. अणीयां। २० ख. सूरिजपसाव। ग. सूरजिपसाव। २१ ग. सझै। २२ ग. थरसलै। २३ ख. ग. भिडि। २४ ख. दहक्के। ग. दहलै। २५ ख. ग. सोक। २६ ख. ग. पाषरां। २७ ख. ग. धमस। २८ ख. ऊडीया। ग. ऊडिया। २९ ख. ग. जांणे।

---

१००. **परियांण** – पंखधारी। **पनँग** – सर्प।

१०१. **मौसरि** – अवसर पर। **हाकलै** – जोश दिलाता है, उत्तेजित करता है। **सादूळ** – शार्दूलसिंह। **जटी** – जटाधारी। **सूरजपसाव** – महाराजा अभयसिंहके निज सवारीके घोड़ेका नाम।

१०२. **थरसल्ले** – कम्पायमान हो गये। **कमठ** – शिर। **दाढ़ाळ** – वराहावतार। **सौक** – पक्षियोंके या तीरों, बाणों आदिके तेज चलने पर होने वाली ध्वनि। **धजराजां** – घोड़ों। **अनल पंख** – एक प्रकारका बड़ा पक्षी विशेष जिसके विषयमें कहा जाता है कि यह सदैव आकाशमें उड़ा करता है और वहीं अंडे देता है। इसका अंडा पृथ्वी पर गिरनेके पूर्व ही फूट जाता है और बच्चा निकल कर आकाशमें उड़ता हुआ अपने मां-बापसे जा मिलता है। इसकी खुराक हाथी मानी जाती है। यह हाथीको चोंचमें पकड़ कर आकाशमें उड़ जाता है। **गिलण** – निगलनेके लिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धुबि[1] नास फड़ड़[2] रज धूसरड़[3], रथ अछरां मग रोकिया[4] ।
नाळां निहाव गोळां निहसि[5], झाळां दिसि असि झोकिया[6] ॥ १०२

मोतीदांम– दहूं[7] वळ[8] घोर त्रंबागळ[9] डाक ।
हुवै रिणताळ[10] दहूं[11] वळ[12] हाक ।
धुवां रज डंबर[13] अंबर[14] धार ।
अमावस भाद्रव जेम अँधार ॥ १०३
उडै झळ मंगळ चाळ अँगार[15] ।
प्रळै घण बांण कुहक्क[16] अपार ।
पड़ै घड़[17] तूट[18] अधौअध पाट ।
घड़ंतौड़ जांणि भुले विध[19] घाट ॥ १०४
कसी सत बांण[20] जुवांण कबांण[21] ।
बिहूं[22] वळ छूटत फूटत बांण ।
उठै अँग नारँग छींछ[23] अपार ।
फिरंगिय[24] जांणि[25] पतंग फुँहार ॥ १०५
उठै[26] घण सायक मेघ 'विलंद' ।
अयौ[27] किर गोकळ ऊपरि इंद ।

---

१ ख. ग. धुवि । २ ग. फरड । ३ ग. धूसरडि । ४ ख. रोकीया । ५ ख. ग. निहस । ६ ख. झोकीया । ७ ख. दुहुं । ग. दुहू । ८ ग. बल । ९ ख. त्रंबागल । १० ख. ग. रणताळ । ११ ख. दूहु । ग. दुहू । १२ ग. बल । १३ ख. डंब्बर । १४ ख. अंब्बर । १५ ग. अंधार । १६ ख. ग. बांण कहौक । १७ ख. घट । ग. धड । १८ ख. तूटि । १९ ग. विधि । २० ख. ग. पांण । २१ ख. ग. कवांण । २२ ख. बिहूं । २३ ख. छाछ । ग. बीछ । २४ ख. फिरंगीया । ग. फुरंगीय । २५ ग. जांण । २६ ख. उठे । २७ ख. आयो ।

---

१०२. निहाव – तोपकी ध्वनि ।

१०३. त्रंबागळ – नगाड़ा । डाक – ध्वनि । वळ – ओर, तरफ । भाद्रव – भादों मास ।

१०४. बांण कुहक्क – एक प्रकारकी तोप ।

१०५. जुवांण – जवान । नारँग – रक्त, खून । छींछ – फव्वारा । फिरंगिय – फिरंगी देशकी बनी तलवार (?) । पतंग – सूर्य (?) ।

१०६. सायक – तीर, बाण ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झरां झँगरां[1] वजि पावक झौंक[2] ।
सरां वजि तीड[3] परां जिम सौक[4] ॥ १०६

चलै सर[5] वेधि सिलै[6] घट चोळ ।
भिणै[7] पट[8] जांणि समीर झकोळ ।
घणा सर पार हुवै बरघल्ल[9] ।
सौ सौ सर गात रहै अधसल्ल ॥ १०७

झुकै[10] धर हैमर सूर झुंझार[11] ।
भमै किर साख तिडां[12] दळ भार ।
इसी[13] सर[14] सौक नक्यूं[15] अटकाय ।
आयौ 'अभपत्तिय'[16] बाज उडाय ॥ १०८

इती कहतां गुण लग्गिय[17] वार ।
इती नह वार लगी उणवार ॥ १०९

सरबुलंदरौ जोधारांनूं वकारणौ

छप्पै[18]—बार[19] हजार बँगाळ[20], 'विलँद' तिण वार वकारे ।
करि कबांण[21] टंकार, धाव सांमा[22] पग धारे[23] ।

---

१ ख. भिगरां । ग. झीगरां । २ ख. ग. झोक । ३ ग. टीड । ४ ख. ग. सोक । ५ ख. सिर । ६ ख. सल्है । ग. सिल्है । ७ ख. ग. झीणै । ८ ग. पटि । ९ ख. ग. वरघल्ल । १० ख. झूकै । ११ ख. जुझार । १२ ख. ग. तोडां । १३ ख. इसै । १४ ख. सिर । १५ ग. नक्यौ । १६ ख. अभपतीय । १७ ख. लग्गीय । ग. लगीय । १८ ख. ग. छपै । १९ ख. ग. वार । २० ख. वंगाल । २१ ख. ग. कवांण । २२ ख. साम्हां । ग. सम्हा । २३ ग. धारै ।

---

१०६. **झरां झँगरां** – झाड़ी समूह । **पावक** – अग्नि । **झौंक** – ध्वनि, आवाज विशेष । **सरां** – बाणों, तीरों । **सौक** – पक्षियोंके तीरों आदिके तेज चलनेकी ध्वनि ।

१०७. **सर** – तीर । **सिलै** = सिलह – कवच । **घट** – शरीर । **समीर** – हवा । **झकोळ** – झोंका । **बरघल्ल** – बड़ा छेद । **अधसल्ल** – मध्यमें, बीचमें ।

१०८. **झुकै······भार** – युद्धस्थलमें सैकड़ों घोड़े (हैमर) और योद्धागण इस प्रकारसे भिड़ रहे हैं मानों खड़ी फसल पर टिड्डी दल मंडरा रहा है । **बाज** – घोड़ा ।

११०. **बँगाळ** – मुसलमान । **वकारे** – उत्साहित किये । **धाव** – आक्रमण ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चढ़ि हाथी चालियौ[1], सयद[2] कायम्म[3] सरीनह।
चढ़ि हाथी चालियौ[4], तांम पठांणा[5] 'तरोनह'।
बारहां[6] तणा सैयद[7] बिहूं[8], चढ़ि हाथियां[9] चलाविया[10]।
अल्लोजनाद[11] आवधअली[12], अली अली करि आविया[13] ॥ ११०

वंकि[14] पटां फुलहथां[15], 'सोरि'[16] खिलकार[17] कुसत्री[18]।
तस[19] कसीस लेजमां[20], जजर गत्ती जाजत्री[21]।
ज्यांन मढ़ी बज्जरं[22], भूर-दाढ़ा[23] चव[24] फेरां।
भौंह चढ़ी मौसरां, हाथ कड्ढी समसेरां।
इलमां कुरांण कहि कहि अली, वदै[25] वींद[26] हूरां वरण।
हाबस्स[27] खेल जैहीं हरख, मुसलमांन बहसे[28] मरण ॥ १११

कोट[29] तोप कमधजां, जिकै[30] लोपै[31] जमरांणां।
कोट लोप[32] रहकळां, बोह[33] लोपै[34] झड़ बांणां।
सौक[35] पड़ै[36] सायकां, सेल धमरोळ सताबां[37]।
मिळै लोह मारकां, नरिंद[38] हरवळां नबाबां[39]।

---

१ ख. चालीयौ। २ ख. ग. सैद। ३ ख. ग. कायम। ४ ख. चालीयौ। ५ ख. ग. पाठांण। ६ ख. वारहा। ७ ख. ग. सईयद। ८ ख. विहूं। ग. वहूं। ९ ख. हाथीयां। १० ख. चलावीया। ११ ख. ग. अलीजमाल। १२ ख. अवादअली। ग. आवदअलो। १३ ख. आवीया। १४ ख. वांकि। ग. वांक। १५ ख. फुलहतां। १६ ख. ग. सेर। १७ ख. ग. षिल्हार। १८ ख. ग. कुस्सती। १९ क. कतीस। २० क. लेनमां। २१ ख. जाजती। ग. जाइझती। २२ ख. वज्झरां। ग. वजरां। २३ ख. ग. भूर दढ्ढी। २४ ग. चवां। २५ ख. वरणे। ग. वणे। २६ ख. वाद। २७ ख. ग. हावसं। २८ ख. ग. वहसे। २९ ग. कोटि। ३० ख. ग. जिके। ३१ ख. लोपे। ३२ ग. रोप। ३३ ख. वोह। ग. वोहो। ३४ ख. ग. लोपे। ३५ ख. ग. सोक। ३६ ख. पडे। ३७ ख. सतावां। ३८ ग. निरंद। ३९ ख. नवावां। ग. नबावां।

---

११०. **अली** – (?)।

१११. **वंकि** – एक प्रकारकी तलवार। **पटां** – तलवारें विशेष। **फूल हथां** – तलवारें। **खिलकार** = खिल्हार – खेलाड़ी। **तस** – हाथ। **कसीस** – प्रत्यंचा चढ़ाना। **लेजमां** – एक प्रकारकी कमान। वि. वि. – फारसीमें धनुष चलानेके निमित्त अभ्यास करनेके निमित्त बनी हुई नरम और लचकदार कमानको लेज़म कहते हैं, कविने यहां कमानके अर्थमें प्रयोग किया है। **जजर** – वज्र, भयंकर। **भूर-दाढ़ा** – यवन, मुसलमान। **चव फेरां** – चारों ओर। **मौसरां** – श्मश्रु, मूंछ।

११२. **धमरोळ** – प्रहार। **सताबां** – तेज, शीघ्र।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समसेर सिलहपोसां सिरै, उडि रत वहै अचप्पळां[1] ।
जुध जांणि[2] पतँग वरसंत जळ, वसँत रमै घण वीजळां ॥ ११२

जुध वरणण

दोढ़ौ[3]–समँद[4] 'विलँद' दळ सबळ, अथग आवियौ[5] 'अभैमल' ।
उण वेळा सुर असुर, झळळ लोहां भिड़[6] ऊजळ[7] ।
पमंग[8] भांण-पसाव[9], पमँग पखरैतां पाड़ै ।
मुगळां खगि 'अभमाल'[10], झिलम सहिता सिर झाड़ै ।
अंत खुरां[11] उळझतां, दियै[12] असिपाव दतूंसळ ।
'अभौ'[13] खाग आछटै, कहर विहरै कूंभाथळ ।
अम्हसम्हा[14] हजारां[15] आहुड़ै[16], धोम पड़ै खागां धजर ।
घड़ियाळ[17] जांणि वज्जै[18] घणी, गढ़ लंका फज्जर[19] गजर ॥ ११३

छप्पै–इम लड़तां ऊमरां[20], अरज कीधी जिण वारां[21] ।
वाग थंभ[22] इकवार, हाथ देखिजे हमारां ।
भड़ परखण भूपाळ, तांम ऊभौ[23] असि तांणै ।
रांमायण रघुनाथ[24], जोध परख कपि जांणै[25] ।
सैंफळै[26] लड़ै भड़ असुर सुर, जड़ै सेल[27] खागां जरक ।
कौतक[28] जेण[29] देखै कळह, *ऊभौ रथ थांभे अरक ॥ ११४

---

१ ख. अच्चपला । ग. अचपळा । २ ग. जांण । ३ ग. दोढ़ौ । ४ ख. कमंद । ग. समद । ५ ख. आविणै । ग. आवीयौ । ६ ख. ग. भिड़ि । ७ ख. ऊझल । ग. उझल । ८ ख. ग. पम्मग । ९ ग. भांणपस्साव । १० ख. अभमाल । ग. अभिमाल । ११ ख. षरा । १२ ख. दीयै । १३ ख. अभैं । ग. अभो । १४ ख. अम्हासम्हां । १५ ख. हजरां । १६ ग. आडै । १७ ख. घडीयाल । १८ ग. वजै । १९ ख. ग. फजर । २० ख. ग ऊबरां । २१ ख. ऊणवारां । ग. उणवारां । २२ ख. ग. थांभि । २३ ख. उभो । २४ ख. ग. रुघनाथ । २५ ख. जांणे । २६ ख. सैपड़ै । २७ ग. सैल । २८ ख. ग. कौतग । २९ ख. ग. तेण । *ख. तथा ग. प्रतियोमें— रथ थांभै ऊभो अरक ।

---

११२. **सिलह पोसां** – जिरहबख्तरसे सुसज्जित । **रत** – रक्त, खून । **अचप्पळां** – तेज । **पतँग** – (?) । **वीजळां** – तलवारों ।

११३. **भांण पसाव** – सूरजपसाव नामक महाराजा अभयसिंहका घोड़ा । **झाड़ै** – काटता है । **अंत** – आंतें । **दतूंसळ** – हाथीके बाहर निकले हुये दांत । **कहर** – कोप । **विहरै** – विदीर्ण करता है, काटता है । **अम्हसम्हा** – एक दूसरेके अभिमुख । **धोम** – प्रहार, तेज प्रहार । **धजर** – भाला । **फज्जर** – प्रातःकाल । **गजर** – प्रातःकालके घंटेकी आवाज ।

११४. **सैंफळै** – अस्त्र-शस्त्रों सहित (?) । **जरक** – प्रहार, चोट । **अरक** – सूर्य ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रसावला– जूडिए[1] जूंगरा[2], धरै[3] ध्रोहं[4] धरा ।
जांणिजै[5] जम्मरा[6], भड्ड[7] रौसं[8] भरा ॥ ११५

करब्बाहै[9] करा, साबळा सौंसरा ।
तन्न[10] बग्गत्तरा, पंजरा सप्परा ॥ ११६

आछटै अज्जरा[11], करिमाळक्करा[12] ।
फूटरा फूटरा, चाचरा फाचरा ॥ ११७

डाडरा वीहरा[13], स्रोणरा डाल्हरा ।
गूंदरा मांसरा, अंतरा[14] ह्वै गरा ॥ ११८

भूलपै झंझरा, पंक्खणे[15] सप्परा ।
धुब्बि[16] धोमध्धरा[17], बक्करा[18] बीफरा ॥ ११९

कटीए[19] कल्लरा, लूडता[20] लालरा ।
भौमि हौदब्भरा[21], गज्ज[22] नारंगरा ॥ १२०

---

१ ख. जूडीए । ग. जूडिये । २ ख. ग. गूजरां । ३ ख. ग. धर । ४ ख. ग. द्रोह । ५ ख. जांणजे । ग. जांणजं । ६ ग. जंमरा । ७ ख. ग. भड । ८ ख. रोस्स । ग. रोस । ९ ख. वाहै । ग. बौहौ । १० क. तंन्न । ११ ग. अजरा । १२ ख. करमालकरा । १३ ख. विःहरा । १४ ख. आंतरा । १५ ख. ग. पंषणे । १६ ख. धुव्वि । ग. धुवि । १७ ख. धोमंधरा । ग. धोमधरा । १८ ख. वकरा । १९ ख. कट्टीय । ग. कटिए । २० ग. लाडता । २१ ख. ग. भरा । २२ ख. ग. गज ।

---

११६. **करा** – कृपान, तलवार । **साबळा** – भाला विशेष । **सौंसरा** – (?) । **तन्न** – शरीर । **सप्परा** – (?) ।

११७. **अज्जरा** – जबरदस्त । **करिमाळक्करा** – तलवारके । **फूटरा** – ठीक, सुन्दर । **चाचरा** – मस्तक । **फाचरा** – खंड, टुकड़ा ।

११८. **डाडरा** – वक्षस्थल । **वीहरा** – विदीर्ण होकर । **स्रोणरा** – शोणितका, रक्तका । **डाल्हरा** – (?) । **गूंदरा** – चर्बीके, मांसपिंडके । **अंतरा** – आंतोंके । **गरा** – ढेर ।

११९. **झंझरा** – (?) । **पंक्खणे** – (?) । **सप्परा** – (?) । **धुब्बि** – तेज होकर, जोशमें आकर । **धोमध्धरा** – युद्ध । **बक्करा** – (?) । **बीफरा** – (?) ।

१२०. **कटीए** – कटे ए अथवा कटिके (?) । **कल्लरा** – जबड़ेके । **लूडता** – लड़खड़ाता हुआ (?) । **गज्ज** = गंज – ढेर । **नारंगरा** – रक्तके ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पिंड[1] नाळप्परा, भब्भकै[2] भंभरा।
रत्र पत्रब्भरा[3], चौसटी[4] चंडरा॥ १२१
त्रक्ख[5] मेटत्तरा, पिवै[6] नीरंपरा[7]।
बीरन्या[8] तब्बरा[9], किल्लकारक्करा[10]॥ १२२
उड्डि[11] सीसं उरा[12], पिड़ं[13] चक्काफरा[14]।
धरि[15] फूलध्धरा[16], जांणि पंकज्जरा[17]॥ १२३
आवता अधंरा[18], सीस[19] लै सँक्करा[20]।
जोग[21] अइज्जरा[22], कंठ हारक्करो॥ १२४
सूरमां[23] चौसरा, आवरै[24] अच्छरा[25]।
आसुरा[26] अड्डुरा[27], वरां[28] हूरं वरा[29]॥ १२५

---

१ ख. ग. पड। २ ख. भब्भकै। ग. भभकै। ३ ख. ग. भरा। ४ ग. चौसठी। ५ ख. ग. त्रष। ६ ख. ग. पीयै। ७ ख. ग. नीरप्परा। ८ ख. वीरन्य। ९ ख. त्यवरा। ग. नृत्यवरा। १० ख. ग. किलक्वारकरा। ११ ख. ग. उडि। १२ ख. ग. अरा। १३ क. फिड। ख. पिंड। ग. फिड। १४ ख. ग. चक्वफरा। १५ ख. ग. धर। १६ ख. ग. फूलध्धरा। १७ ख. पंक्वजरा। ग. पक्वजरा। १८ क. अधरा। १९ ख. ग. सिर। २० ख. सि संकरा। ग. ले संकरा। २१ ख. जोगंद। ग. जोगइं। २२ क. फज्जरा। ग. अजरा। २३ ख. ग. सूरिमा। २४ ग. अबरै। २५ क. अज्जरा। २६ ख. ग. असुरा। २७ ख. ग. अडरा। २८ ख. ग. वर। २९ ख. हूरव्वरा। ग. हूरवरां।

---

१२१. **नाळप्परा** – (?)। **भब्भकै** – उमड़ते हैं। **भंभरा** – शस्त्र-प्रहारसे होने वाले बड़े-बड़े घाव। **रत्र** – रक्त, खून। **पत्रब्भरा** – देवियोंके खप्पर भर रही हैं।

१२२. **त्रक्ख** – तृषा, प्यास। **बीरन्या** – युद्धप्रिय देव। **तब्बरा** – पात्र विशेष। **किलकारक्करा** – हर्षध्वनि।

१२३. **उड्डि··पंकज्जरा** – शस्त्र-प्रहारोंसे शिर कट कर खंड-खंड होकर भूमि पर गिर रहे हैं। वे गिरे हुए शि-रखंड इस प्रकार शोभायमान हो रहे हैं मानो कमलकी पंखुड़ियें गिरी हों।

१२४. **आवता····हारक्करा** – युद्ध-भूमिमें तलवारोंके प्रहारोंसे शिर कट रहे हैं। उन्हें भगवान रुद्र ऊपर ही ऊपर भूमि पर गिरनेके पहिले ही उठा कर अपनी मुंडमाला कर लेते हैं।

१२५. **चौसरा** – पुष्पहार। **आसुरा** – मुसलमान। **हूरं** – अप्सरा, परी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कढ़्ढ़[1] धूबक्करा[2], धड़ं नृत्तध्धरा[3] ।
करी[4] घावक्करा[5], विड्ड[6] रूपव्वरा[7] ।। १२६
केतरा राहरा, केय[8] रूखक्करा[9] ।
छक्किया[10] छोहरा[11], लग्गिया[12] लोहरा ।। १२७
घूमवै[13] घूमरा[14], मंत्र[15] ज्यूं[16] मद्दरा ।
कँध पाव उड़ै[17] कर कोपरा[18] धुकै छकै लौटै धरा ।। १२८
वरियांम 'अभा' 'सिर विलँदरा',
एम[19] करै जुध ऊमरा[20] ।। १२९

दुहा[21]–इम[22] धिकतां[23] रिण[24] ऊमरा[25], धड़ छँट[26] खळखग धार ।
सौ पावँडा[27] नरेस हूं, वधि[28] पहुंता[29] जिण वार[30] ।।१३०

जुधमें महाराजा अभैसींघजीरौ वरणण

मोतीदांम– वधे[31] छक पौरस दूजिय[32] वार[33] ।
झड़ै[34] नर तूजिय[35] वाग झलार ।

---

१ ख. वढ़ि । ग वढ़्ढ़ । २ ख. ग. धूवक्करा । ३ ख. ग. नृतिधरा । ४ ख. ग. करि । ५ ख. घाकक्क । ६ ख. ग. विडि । ७ ख. ग. बरा । ८ ख. ग. केई । ९ ख. ग. रूषक्करा । १० ख. छकीया । ग. छक्कीया । ११ ख. ग. छौहरा । १२ ख. लगीयां । ग. लगीया । १३ ख घूंमवै । ग. घूमवै । १४ ख. घंमरा । ग घूमरा । १५ ख. मन । ग. मत । १६ ख. ज्यौं । ग. ज्यो । १७ ग. उडे । १८ ख. ग. कोप । १९ ख. एक । २० ख. ऊंवरा । ग. उवरा । २१ ख. दूहा । ग. दोहो । २२ ख. ग. यम । २३ ख. ग. धिषतां । २४ ख. ग. रण । २५ ख. ऊंवरा । ग. ऊबरा । २६ ख. ग. छत । २७ ख. पावडा । ग. पांवडा । २८ ख. विधि । २९ ख. पौहौता । ग. पोहोता । ३० ख. ग. उणवार । ३१ ग. वधं । ३२ ख. ग. दूजीय । ३३ ग. वारा । ३४ ख. झाडे । ३५ ख. ग. तूजीय ।

---

१२६. कढ़्ढ़ – निकाल कर । धूबक्करा – हाथमें तलवार लेकर अथवा शिर कट जाने पर । धड़ं···रूपव्वरा – धड़ भूमि पर नृत्य करता है । इस प्रकार घावोंसे परिपूर्ण शरीर भयावह प्रतीत होता है ।
१२७. केतरा – केतुके । राहरा – राहुके ।
१२८. घूमरा – समूह । कोपरा – कुर्पर, कूर्पर, कोहनी, घुटना ।
१२९. ऊमरा – सरदार, योद्धा ।
१३०. धिकतां – क्रोधमें प्रज्वलित होते हुए । छँट – कट कर ।
१३१. छक – जोश, उत्साह । झड़ै – वीर-गति प्राप्त होते हैं । तूजिय – धनुष अथवा घोड़ा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजा गयणाग छिबै चढ़ि रोस ।
'जोधा' हर सूर भयंकर जोस ।। १३१

उगा[1] मुख बारह[2] दीत उदार ।
भिड़े[3] तिणवार मुंछार[4] भुंहार ।
जोए[5] जुध[6] रीस चढ़ी[7] वरजागि ।
उठी घ्रत सींचिय[8] जांणिक आगि ।। १३२

'विलंद' निबाब[9] परा वरियांम[10] ।
रुठौ[11] किर रांवण ऊपर रांम ।
अयौ कँस ऊपर[12] केसव एम ।
जाळंधर सीस जटाधर जेम ।। १३३

धरे असुरां दळ ऊपर[13] धंख ।
पेखे जिम नाग कुळां धखपंख ।
इयै[14] असुरां दळ क्रोध उफांण[15] ।
जुए[16] गज जूथ कँठीरव जांण[17] ।। १३४

'अजावत' साबळ हाथ उपाड़ि ।
फबै[18] नरसिंघ जिसौ खँभफाड़ि[19] ।

---

१ ख. उग्ग । ग. ऊगा । २ ख. ग. वारह । ३ ग. भिड़े । ४ ख. सुछार । ५ ग. जोये । ६ ख. जुांध । ७ ख. वढ़ी । ८ ख. ग. सीचीय । ९ ख. नवाव । ग नबाब । १० ख. वरीयाम । ११ ख. रूठौ । ग. रूठो । १२ ख. ऊपरि । १३ ख. ऊपरि । १४ ख ईषे । ग. ईषै । १५ ख. उफांणि । ग. ऊफांण । १६ ख. ग. जूए । १७ ख. ग. जांणि । १८ ख. फवे । १९ ग खँभफारि ।

---

१३१. गयणाग – आसमान । जोधा – जोधपुर नगरके संस्थापक राव जोधा । हर – वंशज ।

१३२. दीत – आदित्य, सूर्य । मुंछार – श्मश्रु । भुंहार – भौहें । वरजागि = (व्रजा + अग्नि – वज्राग्नि ।

१३३. जाळंधर – एक पौराणिक असुरका नाम । जटाधर – महादेव ।

१३४. धंख – क्रोध, गुस्सा । पेखे – देखे । धखपंख – गरुड़ । कँठीरव – सिंह ।

१३५. नरसिंघ – नृसिंहावतार ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुरांगुर[1] रूप इसैं 'अभसाह' ।
निलागर[2] थापलियौ[3] नरनाह ॥ १३५

'चौंडा' हर तांम करे[4] चख चोळ ।
गाढ़ांगुर वाग उपाड़िय[5] गोळ ।
अैराकिय[6] धावत खाग[7] उपाड़[8] ।
परां लगि जांणि[9] उडंत पहाड़ ॥ १३६

बहै[10] अंतरिक्ख[11] अरोहक[12] बाज ।
खड़े[13] हरि जांणि चढ़े खगराज ।
पमंग अफाळि सुरज्ज[14] - पसाव ।
रोळा मझि[15] मेलियौ[16] मारवै[17] राव ॥ १३७

महाराजा अभैसींघजीरा जुधरौ वरणण

दिये कपि डांण उडांण[18] दमंग ।
पड़ै[19] उर चोट[20] मतंग पतंग[21] ।
करै धज साबळ वाह कमंध ।
कड़ाधड़ फूटि[22] पड़ै गिड़कंध ॥ १३८

---

१ ख. सूरांगुर । २ ख. ग. नीलागर । ३ ख. थापलीयौ । ४ ग. करि । ५ ख. ग. उपाडीय । ६ ख. अैराकीय । ७ ख. वाग । ग. वागि । ८ ग. उपाड़ि । ९ ख. जांण । १० ख. ग. वहै । ११ ख. ग. अंतरीष । १२ ग. अरोहिक । १३ ख. ग. षडै । १४ ख. सूरिज्ज । ग. सूरज पसाव । १५ क. तझि । १६ ख. मेलीयौ । ग. मेलियो । १७ ख. मारुव । ग. मारवा । १८ ख. ऊफांण । १९ ख. ग. पाडै । २० ग. चौट । २१ ख. ग. पमंग । २२ ख. फूठि ।

---

१३५. **सुरांगुर** – आर्याधिपति, यह शब्द महाराजा अभयसिंहके लिए विशेषण रूपसे प्रयोग किया गया है । **निलागर** – महाराजा अभयसिंहका घोड़ा । **थापलियौ** – उत्साहित किया ।

१३६. **चौंडा** – राव चूंडा । **तांम** – तब । **गोळ** – सेना । **अैराकिय** – घोड़ा ।

१३७. **अंतरिक्ख** – अन्तरिक्ष, आसमान । **अरोहक** – सवार । **बाज** – घोड़ा । **हरि** – विष्णु । **खगराज** – गरुड़ । **अफाळि** – झौंक कर । **सुरज्ज-पसाव** – महाराजा अभयसिंहके घोड़ेका नाम । **रोळा** – युद्ध । **मारवै राव** – मारवाड़के अधिपति महाराजा अभयसिंह ।

१३८. **कपि डांण** – वानरके समान छलांग । **दमंग** – अग्निकरण । **मतंग** – हाथी । **पतंग** – ध्वजा (?) । **धज** – भाला विशेष । **वाह** – प्रहार । **कड़ाधड़** – कवचधारी । **गिड़कंध** – प्रचंडकाय, गिरिस्कंध, पहाड़ के शिखर के समान ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिल्है अँग पाखर बाज दुसार ।
धरा मझि जाय गडै चवधार[1] ।
जड़े इम काढ़त सेल जरूर ।
पड़ै रत छौळ चढ़ै दिन[2] पूर ।। १३९

धकध्धक[3] स्रोण चँडी[4] पत्र[5] धार ।
डकड्डुक[6] पीवत लेत डकार ।
तवै[7] रिख ह्रास अदोत तमास ।
सँपेखत[8] वाग कसे सपतास ।। १४०

डोहै[9] रवदाळ झकोळि डँडाळ ।
कढ़ी खिज झाळ जिसी किरमाळ[10] ।
अड़ै चहुंवै[11] दळ[12] मीर अथाग ।
खिवै 'अभमाल' चहूवळ[13] खाग ।। १४१

भुजां दुय[14] च्यारि भुजां बळ भूप ।
रचै गज ग्राह[15] स्त्रियावर[16] रूप ।
वहै खग साबळ[17] तांत[18] विनांण ।
कटै जरदांण[19] जुवांण केकांण ।। १४२

---

१ ख. ग. जवधार । २ ख. ग. नदि । ३ ख. धक्कधक । ग. धकधक । ४ ख. चंडि । ५ क. रल । ६ ख. ग. डक्कडक । ७ ख. तव्वै । ८ ख. ग. सपेषत । ९ ख. डोले । ग. डोहे । १० ख. ग. करिमाल । ११ ख. चिहुवै । १२ ख. ग. वल । १३ ग. चहूंबळ । १४ ख. ग. दोय । १५ ख. ग. गाह । १६ ख. ग. श्रीयावर । १७ ख. सावण । ग. साबण । १८ ख. ग. तंत । १९ ग. जरदांन ।

---

१३९. सिल्है – कवच । दुसार – आर-पार । रत – रक्त, खून । छौळ – धारा ।

१४०. धकध्धक – तेज द्रव प्रवाहकी ध्वनि । स्रोण – शोणित, रक्त । पत्र – देवीका खप्पर, पात्र । डकड्डुक – द्रव पदार्थ पीनेसे होने वाली ध्वनि । डकार – उद्‌गार । तवै – कहता है । रिख – नारद ऋषि । सँपेखत – देखता है । सपतास – सूर्यका सप्ताश्व-नामक घोड़ा ।

१४१. डोहै – विलोड़ित करता है, रौंदता है । रवदाळ – यवन, मुसलमान । झकोळि (झकझोर कर ?) । डँडाळ – वह शस्त्र जिसको पकड़नेके लिए डंडा लगाया जाता है, यथा : भालादि । खिज झाळ – कोपाग्नि किरमाळ – तलवार ।

१४२. च्यारि भुजां – चतुर्भुज, विष्णु । स्त्रियावर – सीतापति श्रीरामचन्द्र । विनांण – समान, तुल्य । जरदांण – कवच, कवचधारी योद्धा । जुवांण – जवान । केकांण – घोड़ा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नरां सिणगार धरै जुध नेत[1] ।
करै खळ[2] राहतणी परि[3] केत ।
वहै[4] खग एम[5] फबै वरियांम ।
रांमायण मांहि फबै जिम रांम ।। १४३

'अभैमल' आगळ[6] जोध अपार ।
वधै[7] वध खाग[8] वहै[9] जिणवार ।
कटै सिलहक्क कड़ा कसणक्क ।
भभक्क डबक्क[10] स्रोणक्क भभक्क ।। १४४

खैंगक्क उचक्क[11] खाटक्क[12] खगक्क[13] ।
काटक्क[14] कटक्क झाटक्क झटक्क ।
बिजक्क[15] बळक्क[16] जुरक्क[17] जरक्क ।
सेलक्क धमक्क भचक्क सहक्क ।। १४५

फौजक्क[18] रोसक्क फारक्क फरक्क ।
हूरक्क वरक्क हुवै[19] खळ हक्क ।

---

१ ग. नैत । २ ख. पण । ३ ग. पर । ४ ख. ग. वाहै । ५ ग. ऐम । ६ ग. आगळि । ७ ख. ग. वधे । ८ ख. ग. घाव । ९ ख. ग. करै । १० ख. डवक्क । ग. उवक्क । ११ ग. उचवक । १२ ग. घाटक । १३ ख. ग. घटक्क । १४ ग. काटक । १५ ख. ग. वोजक्क । १६ ख. ग. वलक्क । १७ ख. जुरक । १८ ख. फोजक्क । १९ ग. हुवै ।

---

१४४. **सिलहक्क** – कवच । **कसणक्क** – बंध । **भभक्क** – उभड़ना क्रियाका भाव । **डाबक्क** – डूबते समय ध्वनि होनेकी क्रिया । **स्रोणक्क** – शोणित, रक्त ।

१४५. **खैंगक्क** – घोड़ा । **खाटक्क** – ढाल । **खगक्क** – तलवार । **काटक्क** – जबरदस्त, शक्तिशाली । **कटक्क** – सेना । **झाटक्क** – प्रहार । **झटक्क** – (?) । **बिजक्क** – तलवार । **बळक्क** – लचक, मोड़ । **जुरक्क** – प्रहार । **जरक्क** – झटका । **सेलक्क** – भाला । **धम्मक** – ध्वनि विशेष । **भचक्क** – प्रहार या प्रहारकी ध्वनि ।

१४६. **फौजक्क** – सेनाका । **रोसक्क** – जोश । **फारक्क** – झंडा । **हूरक्क** – अप्सरा, परी । **वरक्क** – वरण करने वाला, वीर । **खळ** – शत्रु । **हक्क** – हांक, तेज आवाज ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

सीसक्क सभक्क हारक्क हरक्क[1] ।
ग्रिधक्क[2] गहक्क गूंदक्क[3] गटक्क[4] ॥ १४६

वीरक्क नचक्क सभक्क सबक्क ।
चोळक्क पियक्क कळिक्क[5] चहक्क ।
करक्क हाडक्क गुडक्क[6] कड़क्क[7] ।
खिवै खँजरक्क पड़ै खरड़क्क ॥ १४७

ओरै[8] असि आरण[9] धोम अताळ ।

माहवसिंह चांपावत

चांपावत[10] सूर लड़ै चमराळ[11] ।
चखां करि 'माहव'[12] पावक चोळ ।
धड़ां[13] खळ सेल करै धमरोळ ॥ १४८

भुजां बळ[14] पाथ समोभ्रम भूप ।
रौदां दळ ढाहत अंतक रूप ।

---

१ ग. रक्क । २ ख. ग. ग्रीभक्क । ३ ख. ग. गूदक्क । ४ ख. गट्टक्क । ग. गट्टक्क । ५ ख. कालिक्क । ६ ख. ग. गूडक्क । ७ ख. करक्क । ८ ख. ओरे । ९ ग. आरणि । १० ख. चंपावत । ११ ख. चमर। । १२ ख. मांहव । १३ क. धरां । १४ ख. ग. वळ ।

---

१४६. **सीसक्क** – वीर-गति प्राप्त वीरोंके शिर । **सभक्क** – तैयार करता है । **हारक्क** – मुंड-माला । **हरक्क** – महादेव, हर । **ग्रिधक्क** – गिद्ध । **गहक्क** – आवाज करते हैं । **गूंदक्क** – मांसपिंड । **गटक्क** – निगलते हैं ।

१४७. **वीरक्क** – युद्ध-प्रिय देव जो रुद्रके अवतार माने जाते हैं । **नचक्क** – नृत्य करते हैं । **सबक्क** – आगे बढ़ते हैं सब (?) । **चोळक्क** – रक्त, खून । **पियक्क** – पीते हैं । **कळिक्क** – कालिका, रणचंडी । **चहक्क** – चूसती है । **करक्क** – रीढ़की हड्डी । **हाडक्क** – हड्डियें । **गुडक्क** – संधिस्थानकी हड्डी, मांससहित हड्डी । **कड़क्क** – ध्वनि विशेष अथवा शक्ति । **खिवै** – चमकते हैं । **खँजरक्क** – शस्त्र विशेष । **खरड़क्क** – प्रहारका निशान ।

१४८. **आरण** – युद्ध । **धोम** – क्रोधाग्नि । **अताळ** – तेज । **चांपावत** – राठौड़ राव चांपाके वंशज । **चमराळ** – मुसलमान । **चखां** – नेत्रों । **माहव** – माहवसिंह चांपावत । **धमरोळ** – प्रहार, युद्ध ।

१४९. **पाथ** – पार्थ, अर्जुन । **समोभ्रम** – पुत्र । **रौदां** – यवनों । **ढाहत** – संहार करता है, मारता है । **अंतक** – यमराज ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाहै खग वींद जिहीं[1] चढ़ि थांन ।
धरा नवकोट[2] सिरै परधांन ।। १४६

कुसळसिंह चांपावत

हरौळांयहूंत[3] हरौळ हठाळ ।
तठै 'कुसळेस' वधे[4] रिणताळ[5] ।
धरा[6] बळ[7] क्रोध ओरै[8] धजराज ।
जिसी विध[9] सामँद वीच[10] जिहाज ।। १५०

सिल्है[11] घट वेधत वाहत[12] सेल ।
खेलै[13] जिम होळिय[14] फागण[15] खेल ।
सांमा[16] खळ आवत वीजळ साहि ।
मिळै[17] जिम सोर उडै झळ माहि ।। १५१

चढ़ै खळ हीक तुरी उर चोट ।
काळाहळ भूस हुवै व्रज कोट ।
सेलाळ जरद्द[18] मरद्द[19] सकाज ।
वेधै वज्र भाखर पाखर बाज ।। १५२

---

१ ख. जीही। २ ग. नवकोटि। ३ ख. ग. हरोलांही। ४ ग. बंधे। ५ ख. गणताल। ६ ग. धरै। ७ ख. ग. बल। ८ ख. ओरे। ९ ख. ग. विधि। १० ख. बीचि। ११ ग. सिल्हे। १२ ख. वाहतै। १३ ख. षेल्है। १४ ख. ग. फागण। १५ ख. ग. होलीय। १६ ख. साम्हां। ग. सम्हां। १७ ख. मिले। १८ ग. जरद। १९ ग. मरद।

---

१४९. वींद – दूल्हा। थांन – उमंग, जोश। धरा नवकोट – मारवाड़।

१५०. हरौळांयहूंत हरौळ – सेनाके अग्र भागमें युद्ध करने वालोंमें भी आगे रहने वाला। हठाळ – अपनी हठीला। कुसळेस – कुशलसिंह चांपावत। रिण ताळ – युद्ध। धजराज – घोड़ा।

१५१. सिल्है – कवच। वेधत – छेद करता है। होळिय···खेल – होलिका पर खेला जाने वाला खेल जिसे गेहर भी कहते हैं। वीजळ – तलवार। साहि – सम्हाल कर, धारण कर। झळ – अग्नि, आगकी लपट।

१५२. हीक – प्रहार। तुरी – घोड़ा। काळाहळ – अत्यन्त श्याम। भूस – कवच। सेलाळ – भालाधारी। जरद्द – कवच। भाखर – पर्वत। बाज – घोड़ा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोही धखधक्क[1] वभक्कत[2] लाल ।
पड़ै धर जांणि[3] पतंग पखाळ ।
गोळां जिम ढाहि खळां गज गाहि ।
वधे जुध कीध गजां सिर वाहि ।। १५३

कुंभाथळ[4] वेधि कढ़ै धजकूंत[5] ।
हौदां मझि मीर हणै खगहूंत ।
करै इम 'नाथ' तणौ 'कुसळेस' ।
वडै परमांण अनै लघुवेस ।। १५४

करणसिह चांपावत

जठै 'करनाजळ' क्रोध अथाग ।
ओरै[6] असि जांणि धिखंतिय[7] आग[8] ।
दावानळ गोळिय[9] घाट दुसार ।
हुवां खग वाहत जांणि हजार ।। १५५

चहूं दळ[10] मेछ करै खग चोट[11] ।
कळं नह धूहड़ मैंगळ[12] कोट ।
सुतन्नस[13] राजड़ भांण सुतन्न[14] ।
करै जुध कन्नतणी[15] पर कन्न[16] ।। १५६

---

१ ख. धकधक्क । ग. धकधक । २ ख. वभकत । ग. भभकत । ३ ग. जांण । ४ ख. कूंभाथल । ५ ख. कुंत । ग. कूत । ६ ख. ओरे । ७ ग. धिषंतीय । ८ ख. ग. आगि । ९ ख. गोलीय । १० ख. वल । ग. बळ । ११ ग. चौट । १२ ख. मैमड । ग. मैमंट । १३ ख. सुतत्रस । १४ ख. सुतंन । ग. सुतन । १५ ख. कंन । ग. कनं । १६ ख. कंन । ग. पर कन ।

---

१५३. धखधक्क – द्रव पदार्थका तेज प्रवाह या प्रवाहकी ध्वनि । वभक्कत – उमड़ता है । पतंग – (?) । पखाळ – चमड़ेका बहुत बड़ा थैला जिसमें पानी भर कर ऊंटों, व भैंसों पर लाद कर लाते हैं । वाह – प्रहार ।

१५४. कुंभाथळ – हाथीका कुम्भस्थल । धजकूंत – भालेकी नोंक या अग्र-भाग । वडै – महान, बड़ा । अनै – और । लघुवेस – लघु वयस, छोटी आयुका ।

१५५. करनाजळ – करणसिह चांपावत । धिखंतिय – प्रज्वलित ।

१५६. धूहड़ – राव धूहड़का वंशज, राठौड़ । मैंगळ – हाथी । सुतन्नस – पुत्र । राजड़ – राजसिह चांपावत जो पालीका ठाकुर था । भांण – उदयभाण । कन्नतणी – राजसिह चांपावत पुत्र करणके । पर – शत्रु । कन्न – कुंतीपुत्र कर्ण ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अखाहर वाहत खाग उनंग[1] ।
जुड़ै जिम भारथ दारुण[2] जंग ।
वळोवळ लूंबत रोद्र व्रजाग ।
भिड़ सुजि सूर हुवै दुय[3] भाग ।। १५७

गाहै[4] नर हैमर[5] गैमर गाहि ।
महाबळ[6] नीठ पड़ै[7] जुध माहि ।
वरै[8] रँभ बैसि[9] रथां रण विंद[10] ।
अधौअध राज लियै[11] सुरइंद ।। १५८

तुरी जुध मेळि लड़ै 'सगतेस'[12] ।
नतीठ धसै[13] जिम पंड[14] नरेस ।
तोड़ै दळ मुग्गळ[15] खाग तरास ।
जुजट्ठळ[16] जेम लिये[17] जसवास[18] ।। १५९

'दलौ' असि झौकि[19] लड़ै दइवांण[20] ।
खगां झट[21] थाट हणै खुरसांण ।

---

१ ख. ग. उमंग । २ ग. दारण । ३ ख. ग. दोय । ४ ख. गाहे । ५ ग. हेमर । ६ ख. माहावल । ७ ख. पडे । ८ ख. वरे । ९ ख. वैसि । ग. वेसि । १० ख. ग. व्यंद । ११ ख. लीयो । ग. लियो । १२ ख. सकतेस । १३ ख. ग. धसे । १४ ख. पव । १५ ख. मूगल । ग. मुगल । १६ ख. जुजिठल । ग. जुजिष्टल । १७ ख. लीम । ग. लीयौ । १८ ख. वास । १९ ख. झोकि । ग. झोक । २० ख. दईवांण । २१ ख. झटि ।

---

१५७. अखाहर – अखयसिंहके वंशज । उनंग – नंगी । वळोवळ – चारों ओरसे । लूंबत – आक्रमण करते हैं । रोद्र – मुसलमान । वज्राग – जबरदस्त, वज्रकी अग्निके समान ।

१५८. हैमर – घोड़ा । गैमर – हाथी । गाहि – ध्वंस कर के । अधौअध – पूर्ण आधा । सुरइंद – सुरेंद्र, इंद्र ।

१५९. तुरी – घोड़ा । सगतेस – शक्तिसिंह । नतीठ – घोड़ा, वीर । तरास – (काटना, तराशना ?) । जुजट्ठल – युधिष्ठिर । जसवास – यश, कीर्ति ।

१६०. दइवांण – वीर । थाट – दल, समूह । खुरसांण – मुसलमान ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धरै[1] मन स्यांमध्रमौ रिणधक्ख ।
लखां सिर ओरवियौ[2] अबलक्ख[3] ।। १६०

हृणै[4] खग झाट अमीर हरौळ ।
चुरै[5] खळ गोळ अनेक चँदौळ[6] ।
उभै रँगि[7] सेल अनै तरवार ।
पुगौ[8] तरि मीर घड़ां नदि पार ।। १६१

सुजाहर[9] सूर 'मुकंद' सुतन्न ।
धरा इक तेज कहै[10] धनिधन्न[11] ।
सुजावत[12] 'ऊद'[13] ग्रहै[14] खग सूर ।
रमै[15] रिण[16] बाळ दसा मगरूर ।। १६२

चावा[17] खळ[18] मुग्गळ[19] भांजि अछंग ।
जुड़ै भड़ वाघ बचा जिम जंग ।
करां खग काढ़ि अफाळि[20] केकांण ।
करै जुध 'माल' तणौ[21] 'कलियांण'[22] ।। १६३

---

१ ख. ग. धरे । २ ख. वोरवियो । ग. वोरवियौ । ३ ग. अबलषा । ४ ख. ग. हृणे । ५ ख. ग. चूरे । ६ ग. चंदोल । ७ ग. रंग । ८ ख. पूगौ । ग. पूगो । ९ ख. ग. सूजाहर । १० ग. कहे । ११ ख. धनधंन्न । ग. धनधन्न । १२ ख. ग. सूजावत । १३ ग. उद । १४ ख. ग्रहे । १५ ख. ग. रमे । १६ ख. ग. रण । १७ ख. ठावा । ग. छावा । १८ ख. षग । १९ ख. ग. मूगल । २० ग. आफाळि । २१ ग. तणो । २२ ख. कलीयांण ।

---

१६०. **स्यांमध्रमौ** – स्वामीके प्रति कर्त्तव्य । **रिणधक्ख** – युद्धकी इच्छा वाला । **सिर** – ऊपर । **ओरवियौ** – झोंक दिया । **अबलक्ख** – चितकबरे रंगका घोड़ा ।

१६१. **चुरै** – ध्वंस करता है, संहार करता है । **गोळ** – सेना । **चँदौळ** – सेनाके पीछेका भाग, चंदावल ।

१६२. **सुजाहर** – सूजाका वंशज । **मुकंद** – मुकंदसिंह । **धनिधन्न** – धन्य-धन्य, वाह-वाह । **सुजावत** – सूजाका वंशज । **ऊद** – उदयसिंह ।

१६३. **चावा** – प्रसिद्ध । **अछंग** – (पूर्ण ?) । **वाघ** – व्याघ्र, सिंह । **अफाळि** – झोंक कर । **केकांण** – घोड़ा । **माल** – मालसिंह । **कलियांण** – कल्याणसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करै घण[1] झाटक लोह् कराळ ।
दुवै दुव टूक हुवै रवदाळ ।
समोभ्रम[2] 'नाहर' 'भैरव' सूर ।
मिळे[3] असि झूझ करै मगरूर ॥ १६४
खतां[4] अँगि तीर फरक्कि[5] पँखार ।
धड़ा[6] छत मेघ[7] घणा छत्रधार[8] ।
बळाभख[9] मेलि तुरी गह[10] बौह[11] ।
'लालौ'[12] 'सगतावत' ढाहत[13] लौह[14] ॥ १६५
जुड़ंत 'जसावत' आगि ब्रजागि ।
लोहां झट[15] खेलत अंबर[16] लागि ।
'पाबू' जिम सूर 'किसन्न'[17] प्रमांण ।
दियै काळमी[18] जिम[19] नीलिय[20] डांण ॥ १६६
वहै[21] खग 'धूहड़' सीस विहार ।
धुजट्टिय[22] सीस जिसी गंगधार ।

---

१ ग. लोह् । २ क. समौभ्रम । ३ ख. ग. मेले । ४ ख. षतअंग । ग. षतेअंग । ५ ख. फरकि । ग. फेरकि । ६ ख. ग. धड़ । ७ ख. ग. भेछ । ८ ख. ग. षगधार । ९ ख. बलभाष । ग. बलभषि । १० ग. गज । ११ ख. वोह् । ग. बोह् । १२ ख. लालौ । ग. लालो । १३ ख. ग. वाहत । १४ ख. ग. लोह् । १५ ख. षट । १६ ख. अंबरि । ग. पारस । १७ ख. किसंन्न । १८ ख. ग. कालवी । १९ ग. वम । २० ख. नीलीय । ग. नांभियै । २१ ग. बहै । २२ ख. ध्रिजट्टीय । ग. ध्रितदियै ।

---

१६४. **झाटक** – प्रहार । **टूक** – खंड । **रवदाळ** – मुसलमान । **समोभ्रम** – पुत्र । **नाहर** – नाहरसिंह । **भैरव** – भैरवसिंह । **झूझ** – युद्ध ।

१६५. **खतां अँगि** = खतंग – एक प्रकारका तीर विशेष । **पँखार** – तीरका वह स्थान जहांसे वह प्रत्यंचा पर चढ़ाया जाता है । **छत्रधार** – राजा । **लालौ** – लालसिंह । **ढाहत** – प्रहार करता है । **लौह** – शस्त्र ।

१६६. **अंबर** – आसमान । **पाबू** – प्रतिज्ञावीर राठौड़ पाबू । **किसन्न** – किसनसिंह । **काळमी** – प्रतिज्ञावीर राठौड़ पाबूकी घोड़ीका नाम । **नीलिय** – रंग विशेषकी घोड़ी । **डांण** – गति, चाल ।

१६७. **धूहड़** – राव धूहड़का वंशज, राठौड़ । **विहार** – विदीर्ण कर के । **धुजट्टिय** – शिव, महादेव, धूर्जटी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कटै खग झाट अनेक किलम्म[1] ।
झड़ै सिर तांम सहेत[2] झिलम्म[3] ।। १६७

तियां इम सोभं फबैं रिणताळ ।
महा-तर[4] तूट[5] पड़ंत मुहाळ ।
सिलैबँध[6] ढाहत वाहत सार ।
सजे[7] नृप[8] जांणिक[9] सूरसिकार[10] ।। १६८

इखै[11] रथ थांभि[12] अदीत अचंभ ।
थयौ 'किसनेस' हुतासण थंभ ।
घणा सिर सेल सहे[13] खग घाव ।
वरे[14] रँभ चौसर कीध वणाव ।। १६९

रिमां खग झाट घणा[15] गँज[16] राळि ।
तरै 'किसनेस' पड़ै रिणताळि[17] ।
चढ़ै[18] रथ हीर जड़ाव चमीर ।
वरै[19] सुरलोक विचै नर वीर ।। १७०

---

१ ख. किल्लंम । ग. किल्लम । २ ग. सहित । ३ ख. झिल्लंम । ग. झिलम । ४ क. ख. महीतर । ५ ख. तूटे । ६ ख. ग. सिल्हैबंध । ७ ख. ग. सझै । ८ ख. ग. नृप । ९ ग. जांणक । १० ख. सूरसिक्कार । ११ ख. ईषै । १२ ग. थंभ । १३ ख. हसे । १४ ख. बणे । ग. वरै । १५ ग. घण । १६ ख. रंग । १७ ख. रणतालि । ग. रिण-तळि । १८ ख. चढ़े । १९ ख. वसे । ग. वसै ।

---

१६७. **किलम्म** – मुसलमान । **झड़ै** – कट कर गिरते हैं । **झिलम्म** – युद्धके समयमें शिर पर धारण करनेका टोप ।

१६८. **सोभं** – शोभा, कांति । **महा-तर** = महातरु – बड़ा वृक्ष । **मुहाळ** – मुंहकी ओर, औंधा मुंह । **सिलैबँध** – अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित । **ढाहत** – गिरता है । **सार** – तलवार ।

१६९. **इखै** – देखता है । **अदीत** – आदित्य, सूर्य । **अचंभ** – आश्चर्यमें । **किसनेस** – किसन-सिंह । **हुतासण** – अग्नि । **चौसर** – पुष्पहार ।

१७०. **गँज** – समूह । **राळि** – गिरा कर । **तरै** – तब । **रिणताळि** – युद्ध-स्थल । **चमीर** – सोना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रिमां दळ सीस 'तेजावत'[1] रूप ।
धुवै[2] खग भांण प्रळै जिम धूप ।
सहे[3] खग सूर 'हरिंद' सुतन्न ।
अयौ[4] जिम भारथ पंड अजन्न ।। १७१

उपाड़ैइ[5] वीर[6] वज्रंग[7] अराधि ।
सिरूं[8] खत्रवाटतणी घण साधि ।
खळां सिर झाड़ि फुलै[9] हथखंड[10] ।
डोहै[11] दळ फेर[12] तुरी चक्र डंड[13] ।। १७२

वहै[14] झट[15] औझट[16] त्रीछण वाढ़ ।
डोरी जिम घाव करै जमदाढ़ ।
ढहै[17] नर हैमर गैमर[18] ढाल ।
मलां सहसां जिम 'साहँसमाल'[19] ।। १७३

'पतावत' सूर लड़ै अणपाल[20] ।
करै खग झाट खळां दळ काळ ।
वाहै[21] खग[22] 'माहव'रौ 'वखतेस' ।
पाड़ै खळ सीस करै सिरपेस[23] ।। १७४

---

१ ख. तिजावत । २ ख. धुवैं । ३ ख. ग. साहे । ४ ख. आयौ । ग. आयो । ५ ख. अपाडय । ग. अषाडय । ६ ख. बीर । ७ ख. बज्रंग । ८ ख. ग. सरूं । ९ ख. फुल्लं । १० ख. हैथषंड । ११ ख ग. डोहे । १२ ख. फेरि । १३ ग. दंड । १४ ख. ग. वाहे । १५ ग. झड । १६ ग. औझड । १७ ख. ग. ढाहे । १८ ग. मैंर गैमर । १९ ग. सैंहसमाल । २० ख. अनपाल । २१ ख. बाहे । २२ ख. ष । २३ ख. ग. सिवपेस ।

---

१७१. **रिमां** – शत्रुओं । **हरिंद** – हरिसिंह । **पंड अजन्न** – पांडु पुत्र अर्जुन ।

१७२. **झाड़** – काट कर । **डोहै** – विलोड़ित करता है, मंथन करता है । **तुरी** – घोड़ा ।

१७३. **झट** – प्रहार । **औझट** – भयंकर, तेज । **त्रीछण** – तीक्ष्ण । **वाढ़** – शस्त्रका पैना भाग । **जमदाढ़** – कटार । **ढहै** – गिरते हैं, वीर-गति प्राप्त होते हैं । **हैमर** – घोड़ा । **गैमर** – हाथी । **ढाल** – युद्धके समय हाथीके मस्तक पर धारण कराया जाने वाला उपकरण । **साहँसमाल** – सहसमल ।

१७४. **अणपाल** – बेरोकटोक, निशंक । **माहवरौ** – महावीरसिंहका । **वखतेस** – बखतसिंह ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

तठै 'सबळेस' समोभ्रम[1] 'तेज' ।
जुड़ै खग झाट करै नह जेज ।
भाऊसुत[2] सूर 'उमैद'[3] भुजाळ ।
रमै[4] खग झाट हणै[5] रवदाळ ॥ १७५

'रैणायर'[6] 'मोकम'[7] वाहत रूक[8] ।
उभै जगनाथ[9] सुतन्न[10] अचूक[11] ।
सुरापण[12] धार[13] खत्रीपण[14] सीम ।
भिड़ै[15] जुध जांणि[16] 'अरज्जण'[17] 'भीम' ॥ १७६

समोभ्रम[18] 'राजड़' पेम सकाज ।
बाहै[19] खग ओरि[20] घड़ा विच[21] बाज ।
कणैठिय[22] कन्न[23] तणौ[24] कमधज्ज[25] ।
इसी कुळवट्ट[26] किसौ[27] अचरज्ज[28] ॥ १७७

जड़क्कत[29] लोह कड़क्कत[30] संध ।
करै खग झाट 'पदम्म'[31] कमंध ।

---

१ ख. समौभ्रम । २ भावूसुत । ग. भावुसुत । ३ ख. ग. उमेद । ४ ख. रमें । ५ ख. हणे । ६ ख. रेणायर । ७ ख. मौकम । ग. मोहौकम । ८ ग. रूक्क । ९ ग. जगन्नाथ । १० ख. सुतंन्न । ग. सुतंन । ११ ख. अचूक । १२ ख. ग. सूरायण । १३ ख. ग. धूर । १४ ख. षत्रीवम । ग. षत्रीवट । १५ ख. भीडै । १६ ग. जांण । १७ ख. अरिज्जण । ग. अरिजण । १८ क. समौभ्रम । १९ ख. वाहे । ग. वाहै । २० ख. वोरि । ग. ओर । २१ ख. बिचि । ग. विचि । २२ ख. ग. कणैठीय । २३ ख. ग. कंन । २४ ख. ग. तणो । २५ ग. कमधज । २६ ख. कुलवाकि । ग. कुळवाट । २७ ग. किसो । २८ ख. अचिरज्ज । ग. इचरज । २९ ख. ग. सडक्कत । ३० क. जडक्कत । ग. कडकत । ३१ ख. पदंम । ग. पदम ।

---

१७५. **सबळेस** – सबलसिंह । **समोभ्रम** – पुत्र । **तेज** – तेजसिंह । **जेज** – विलंब । **भाऊसुत** – भाऊसिंहका पुत्र । **उमैद** – उम्मेदसिंह । **भुजाळ** – वीर ।

१७६. **रैणायर** – रणछोड़दास । **मोकम** – मोहकमसिंह । **रूक** – तलवार । **जगनाथ** – जगन्नाथसिंह । **सुतन्न** – पुत्र । **अचूक** – निशंक । **सुरापण** – शौर्य । **अरज्जण** – पांडु-पुत्र अर्जुन ।

१७७. **राजड़** – राजसिंह । **पेम** – पेमसिंह । **बाज** – घोड़ा । **कणैठिय** – कनिष्ठ, छोटा भाई । **कन्न** – करणसिंह । **अचरज्ज** – आश्चर्य ।

१७८. **जड़क्कत** – प्रहार करता है । **कड़क्कत** – टूटता है । **संध** – संधि-स्थान । **पदम्म** – पदमसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रिमां 'सगतावत'[1] वाढ़त[2] रीस ।
आई भरि[3] पत्र दियंत[4] असीस ॥ १७८

अड़ै[5] 'लखधीर' तणौ[6] 'अमरेस' ।
जरू खग झाट हणै जवनेस ।
रचै जुध कूंप समोभ्रम[7] 'रांम' ।
वहै खग वाढ़[8] दियै[9] वरियांम[10] ॥ १७९

समोभ्रम[11] 'केहरि' पाथ समाथ ।
हिचै 'किरमाळ' झटां[12] 'हरनाथ' ।
'धनावत' 'अम्मर' कोप धियाग[13] ।
खळां घट भूक करै झट खाग ॥ १८०

'दलावत' सूर 'विसन्न'[14] दुझाल ।
लोहां अरि ढ़ाहि[15] करै धर लाल ।
'उदौ'[16] 'अरिजन्न'[17] तणौ[18] अणभंग ।
जठै खग वाहि[19] हणै[20] खळ जंग ॥ १८१

---

१ ख. सगताव । २ ख. बाढ़त । ३ ग. भर । ४ ख. दीयंत । ५ ग. लड़ै । ६ ग. तणो । ७ क. समौभ्रम । ८ ख. ग. वाव । ९ ख. ग. दीयै । १० वरीयांम । ११ क. समौभ्रम । १२ क. झळां । १३ ख. ग. धीयाग । १४ ख. विसंन्न । १५ ख. टाहि । ग. ढ़ाह । १६ ख. लदौ । ग. ऊदो । १७ ख. अरिजंन्न । १८ ग. तणो । १९ ग. बोह । २० ग. हिणै ।

---

१७८. आई – दुर्गा, रणचंडी । **असीस** – आशीर्वाद ।

१७९. लखधीर – लखधीरसिंह । **अमरेस** – अमरसिंह कूंपावत । **जरू** – दृढ़ । **जवनेस** – यवनेश, बादशाह । **कूंप** – कूंपावत शाखाका राठौड़ । **रांम** – रामसिंह ।

१८०. केहरि – केसरीसिंह । **पाथ** – पार्थ, अर्जुन । **समाथ** – समर्थ । **हिचै** – युद्ध करता है । **किरमाळ** – तलवार । **झटां** – प्रहारों । **धनावत अम्मर** – धनसिंहका वंशज अमरसिंह । **धियाग** – अधिक, असीम । **भूक** – ध्वंस, नाश ।

१८१. विसन्न – विशनसिंह । **दुझाल** – योद्धा । **अरि** – शत्रु । **ढाहि** – संहार कर, मार कर । **उदौ** – उदयसिंह । **अरिजन्न** – अर्जुनसिंह । **तणौ** – तनय, पुत्र । **अणभंग** – वीर ।

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

तई दळ देखि पटाभ्रर तेम ।
अयौ[1] जुध 'केहर'[2] केहरि[3] श्रेम ।
धड़ां खळ टूक करै धँख[4] ध्रोह ।
लियै[5] घण बोह 'जसव्वँत'[6] लोह ॥ १८२

जुड़ै वरवा[7] रँभ ऊछब[8] जांणि ।
पयौ[9] नहि काळ सु लेख प्रमांणि[10] ।
'फतौ'[11] 'परताप' सुतन्न[12] अफेर ।
सत्रां दळ सोस खमै[13] समसेर ॥ १८३

समोभ्रम 'साहिबखांन' सकाज ।
लोहां 'पदमेस' लड़ै[14] कुळ लाज ।
समोभ्रम[15] देवियसिंघ[16] सधीर ।
धुबै[17] खग झाट 'फतौ'[18] 'रणधीर' ॥ १८४

पँजा खग झाट 'फतावत' पांणि ।
जुड़ै जुध[19] 'नाहर' नाहर जांणि[20] ।
सत्रां दळ सीस[21] 'जोरावर साह' ।
'रासावत' लोह करै रिमराह[22] ॥ १८५

---

१ ख. आयौ । ग. आयो । २ ख. ग. केहरि । ३ ख. केहरी । ४ ख. धक । ग. धष । ५ ख. लीयै । ग. लियै । ६ ख. जसावत । ग. झळाहल । ७ ख. बरिवा । ग. वरिवी । ८ ख. ग. उछब । ९ ख. पायौ । ग. पायो । १० ग. प्रमांण । ११ ग. फतो । १२ ख. सुतन । ग. सुतंन । १३ ख. विषै । ग. षिवै । १४ ग. पड़ै । १५ क. समौभ्रम । १६ ख. ग. देवीयसिंघ । १७ ख. धुबे । ग. धुवै । १८ ग. फतो । १९ ख. जुधि । २० ग. जांण । २१ ख. सीसि । २२ ख. रिमसाह ।

---

१८२. तई – शत्रु । पटाभ्रर – हाथी । केहर – केसरीसिंह । केहरि – केशरी । बोह – आनन्द, रसास्वादन ।

१८३. पयौ – प्राप्त हुआ । फतौ – फतेहसिंह । परताप – प्रतापसिंह । सुतन्न – पुत्र । अफेर – वीर, योद्धा । समसेर – तलवार ।

१८४. पदमेस – पदमसिंह । फतौ – फतेहसिंह ।

१८५. नाहर – नाहरसिंह । जोरावर साह – जोरावरसिंह । रासावत – रासाका वंशज ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुड़ै सुत 'ऊदल' पौरस[1] जोर ।
करै खग घाव निहाव 'किसोर' ।
'दलौ'[2] 'परताप' सुतन्न[3] दुझाल ।
ढाहै खग झाट[4] खळां गज ढाल ।। १८६

समोभ्रम[5] 'पेम' 'हिंदाळ' सकाज ।
निजोड़त मुग्गळ[6] थाट[7] नराज[8] ।
वडा खळ खाग हणै वरदैत[9] ।
जुड़ै इम[10] 'भांण' समोभ्रम 'जैत' ।। १८७

तठै रुघनाथ तणौ[11] 'सुरतेस' ।
रिमां खग झाट करै घण रेस ।
सुतन्न तिलोक[12] तिलोक सराह ।
वधेवध[13] 'रांम' करै खग वाह ।। १८८

जुड़ै[14] 'कुसळेस' तणौ खग जास ।
दावानळ रूप नरायणदास[15] ।
जठै[16] हरकिसन्न[17] 'मांन' सुजाव ।
घणा[18] रवदाळ हणै खग घाव ।। १८९

---

१ ग. पौरिस । २ ग. दलो । ३ ख. सुतन । ग. सुतंन्न । ४ ख. दाट । ५ क. समो-भ्रम । ६ ख. मूगल । ग. मौंगळ । ७ ख. ग. झाट । ८ ख. वाराज । ग. नाराज । ९ ख. ग. विरदैत । १० ग. इ । ११ ग. तणो । १२ ग. तीलोक । १३ ख. वधे-वधि । ग. वधैवधि । १४ ख. जुडे । १५ ग. नराइण । १६ ग. जठे । १७ ख. किस्सन । ग. किसन । १८ ख. घणौ ।

---

१८७. पेम – पेमसिंह । निजोड़त – दूर करता है, काटता है । नराज – तलवार । वरदैत – वीर, यशस्वी । भांण – सूरजभाणसिंह ।

१८८. सुरतेस – सूरतसिंह । रिमां – शत्रुओं । रेस – पराजय । तिलोक – तिलोकसिंह । तिलोक – तीनों लोक । सराह – प्रशंसा करते हैं । वधेवध – बढ़-बढ़ कर ।

१८९. मांन – मानसिंह । सुजाव – पुत्र । रवदाळ – मुसलमान ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अड़ै सुत गोवरधन्न[1] अठेल[2] ।
खगां 'कलियांण'[3] रमै जुध खेल ।
उठै खग वाहत वीर[4] अरौध[5] ।
जोरावरसिंघ[6] 'जसावत' जोध. ।। १६०

करै करिमाळ झटां पति[7] कांम ।
जळाहळ 'रांम' तणौ 'जगरांम' ।
विजूजळ झाट करै जिण वार ।
सुरौ[8] 'अणँदेस'[9] तणौ[10] सिरदार ।। १६१

सुतां[11] 'रतनेस' मौहक्कम[12] सूर ।
रिमां[13] खग झाट हणै मगरूर ।
'कलौ' दलसाह तणौ[14]* दइवांण[15] ।
मिळै खग झाट छिबै असमांण[16] ।। १६२

---

१ ख. गोवरद्धन । ग. गोवरधन । २ ख. अठ्ठेल । ग. अठेल । ३ ख. कलीयांण । ४ ख. बीर । ५ ख. ग. अरोह । ६ ख. जोरावसिंघ । ७ ग. पटि । ८ ख. सूरौ । ९ ख. ग. अणदेस । १० ग. तणो । ११ ख. ग. सुतं । १२ ख. महोकम । ग. माहोकम । १३ ग. रमै । १४ ख. तणं । १५ ख. ग. कलिचाल । १६ ग. असमांन ।

*ख. तथा ग. प्रतियोंमें यहां पर निम्न पंक्तियां और मिली हैं—

'रमै चंद्रहास भमै रवदाल ।
दिवो सगतेस तणौ दईवांण ।।'

---

१६०. अठेल – पीछे न हटने वाला, वीर । कलियांण – कल्याणसिंह । जुध – योद्धा, वीर ।

१६१. करिमाळ – तलवार । जळाहळ – तेजस्वी । रांम – रामसिंह । जगरांम – जगरामसिंह । विजूजळ – तलवार । सुरौ – वीर । अणँदेस – आनंदसिंह । सिरदार – सरदारसिंह ।

१६२. रतनेस – रतनसिंह । कलौ – कल्याणसिंह । दलसाह – दलसिंह । दइवांण – वीर ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झळाहळ 'वीरमऊत' 'झुंझार'[1]* ।
भिड़ै खग झाट सराहत भार ।
'छतौ'[2] नरसिंघ तणौ[3] छक छोह ।
लगावत खांन दळां सिर लोह ।। १६३

'हठी' रिणछोड़ तणौ[4] करि हाक ।
पछट्टत[5] खाग हणै पिसणाक ।
'विजावत'[6] 'सोभ' लड़ै छक वाधि[7] ।
ओ झाड़त[8] वीजळ[9] क्रोध असाधि ।। १६४

अड़ै भड़ 'रायमलौत'[10] अजब्ब[11] ।
गाहै खग[12] वीजळ झाट गजब्ब[13] ।
'वाघावत'[14] 'सूरज' गौ विकराळ ।
तरासत मीर खगां रिणताळ ।। १६५

समोभ्रम[15] 'गोयँद'[16] अम्मरसिंघ ।
धड़च्छत[17] मेछ घण खगधिंग[18] ।

---

१ ख. ग. झुझार । *यहांसे आगे ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न पंक्तियां और मिली हैं—

'करूर गुमांन सुतन किसोर, जुटै षग झाटां हूंवर जोर ।
रूपावत अमर ढ़ाल वरूथ, जूटै षग झाट करै षळ जूथ ।
अनौ जुध रूप तणौ दईवांण, भिडै षग झाट सराहत भांण ।'

२ ग. छतो । ३ ग. तणो । ४ ग. तणो । ५ ख. पछाट्टत । ग. पछटत । ६ ख. बिजावत । ७ ग. बांधि । ८ ख. छाडत । ग. ओछाडत । ९ ख. बीजळ । १० ख. ग. रायमलोत । ११ ख. अजब्व । १२ ख. मल । १३ ख. गजब्व । १४ ख. बाघावत । १५ क. समौभ्रम । १६ ग. गौयँद । १७ ख. ग. धड़छत । १८ ख. ग. षगधींग ।

---

१६३. **वीरमऊत** – वीरमसिंहका पुत्र । **झुंझार** – झूझारसिंह । **छतौ** – छत्रसिंह । **छक** – उत्साह ।

१६४. **हठी** – हठीसिंह । **पछट्टत** – प्रहार करता है । **पिसणाक** – शत्रु । **वीजावत** – विजयसिंहका वंशज । **सोभ** – सौभाग्यसिंह । **झाड़त** – काटता है । **विजाळ** – तलवार । **असाधि** – अपार ।

१६५. **अजब्ब** – अजबसिंह । **गजब्ब** – भयंकर । **सूरज** – सूरजसिंह । **तरासत** – काटता है ।

१६६. **गोयँद** – गोविंदसिंह । **धड़च्छत** – काटता है । **मेछ** – मुसलमान । **खगधिंग** – जबरदस्त, शक्तिशाली ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोरावरसिंघ 'अणँद' सुजाव ।
पछट्टत[1] खाग जड़ै अहि पाव ॥ १६६
जगावत' अज्जब[2] जैत जुहार ।
पड़ै खळ घूमर खाग प्रहार ।
समोभ्रम 'वैण'[3] विढ़ै[4] 'अजबेस' ।
करै खग वाह[5] हणै किलमेस ॥ १६७
'भाऊ'[6] सुत[7] 'पीथल' 'भीम' भुजाळ[8] ।
उठै खग वाहण[9] लूण उजाळ ।
'वाघावत'[10] आणँदसी जिण वार ।
धमोड़त सेल वहै[11] खग धार ॥ १६८
मँडे जुध 'नाथ' तणौ[12] 'फतमाल' ।
तई खग झाड़ि भरै रत ताळ ।
'दलौ' 'अणँदेस' 'सुतन्न'[13] दुगांम[14] ।
'हरी' खळ ढाहत[15] पूरत हांम ॥ १६९
'माधावत' रांमसि[16] लोह मराट ।
झपेटत मीर थटां खग झाट ।

---

१ ग. पछटत । २ ग. अजब । ३ ख. वेण । ४ ख. विटै । ग. विढ़ै । ५ ख. ग. वाहत । ६ ख. भावू । ग. भाव । ७ ख. सुर । ८ ग. दुजाल । ९ ख. वाहत । १० ख. बाघावत । ११ ख. बहै । १२ ख. ग. तणै । १३ ख. सुतंन । १४ ख. दुगम । १५ ख. ग. वाढ़त । १६ ख. ग. रामसी ।

---

१९६. **अणँद** – आनंदसिंह । **सुजाव** – पुत्र । **अहि** – नाग, हाथी ।

१९७. **अज्जब** – अजबसिंह । **वैण** – वेणीसिंह । **अजबेस** – अजबसिंह । **किलमेस** – मुसलमान ।

१९८. **पीथल** – पृथ्वीराज । **भीम** – भीमसिंह । **आणँदसी** – आनंदसिंह । **धमोड़त** – प्रहार करता है ।

१९९. **रत** – रक्त, खून । **ताळ** – मैदान, तालाब । **खळ** – शत्रु । **ढाहत** – संहार करता है । **हांम** – अभिलाषा ।

२००. **मराट** – जबरदस्त । **झपेटत** – प्रहार करता है । **मीर** – यवन, मुसलमान । **थटां** – समूह, दल ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समोभ्रम[1] 'मांडण' दारुण[2] सूर ।
हठी खळ मीर वरावत[3] हूर ।। २००
'चौळावत' मीर झटां खग चौज ।
'फतावत' 'आणँद' आणँद[4] फौज ।
भिड़ंत पटैत इसा[5] जुध भेद ।
अगै भड़ जूटत भूप 'उमेद' ।। २०१
'अनावत'[6] 'अम्मर' खाग उनाग ।
भिड़ै जरदैत करै दुय भाग ।
करै खग झाटत देवकरन्न[7] ।
'विहारिय'[8] संभ्रम चोळ वरन्न[9] ।। २०२
सराहत सूर हथां खग[10] मे'स[11] ।
'मघावत' लोह करै 'मुकँदेस' ।
समोभ्रम[12] 'सांवळ'[13] झौकि[14] हुबास[15] ।
दियँ[16] खग झाटक जीवणदास[17] ।। २०३
निजोड़त मेछ धरे[18] खत्र नेम ।
खगां 'सगतेस'[19] समोभ्रम[20] 'खेम' ।

---

१ क. समौभ्रम । २ ख. दारण । ३ ख. बरावर । ४ ख. ग. डोहत । ५ ग. इता । ६ ख. अंनावत । ग. अन्नावत । ७ ग. देवकरंन । ८ ख. ग. बिहारीय । ९ ख. बरन्न । ग. वरन । १० ख. पष । ११ ख. सेस । १२ क. समौभ्रम । १३ ख. सांमल । १४ ख. ग. झोकि । १५ ख. ग. दुवास । १६ ख. दीयँ । १७ ख. दीवणंदास । १८ ग. धरँ । १९ ख. ग. सगतेस । २० क. समौभ्रम ।

---

२००. **मांडण** – मांडणसिंह । **हठी** – हठीसिंह । **वरावत** – वरण करवाता है । **हूर** – परी, अप्सरा ।

२०१. **पटैत** – वीर, योद्धा । **अगै** – पहिले, पूर्व ।

२०२. **अम्मर** – अमरसिंह । **उनाग** – नंगी । **जरदैत** – कवचधारी योद्धा । **विहारिय** – बिहारीसिंह । **संभ्रम** – पुत्र । **चोळ** – लाल । **वरन्न** – वर्ण, रंग ।

२०३. **मे'स** – महेश, महादेव । **सांवळ** – श्यामलसिंह । **हुबास** – घोड़ा । **झाटक** – प्रहार ।

२०४. **निजोड़त** – काटता है । **मेछ** – मुसलमान । **खत्र** – क्षत्रियत्व । **खेम** – खेमसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धारूंजळ जोध समोभ्रम* धींग[1] ।
सूरां खळ चूर करै रायसींघ ।। २०४

तई भड़ साहिबखांन* सुतन्न ।
केवी खग चूर करै 'जसक्रन्न'[2] ।
समोभ्रम साहिबखांन* सकाज ।
रिमां खग घाव करै 'जगराज' ।। २०५

सहै[3] खग संभ्रम 'सांमतसाह'[4] ।
विढ़ै 'अनपाळ' करै हथ वाह[5] ।
सझै करिमाळ झटां समरेस ।
विढ़ै[6] 'करनेस'[7] तणौ[8] 'वखतेस' ।। २०६

'ऊदावत' सांम लड़ै अवनाड़ ।
धड़ा[9] अवझाड़ करै धज फाड़ ।
'अभैमल' 'लाल' सुजाव अबीह ।
सत्रां खग ढाहत ज्यूं गज सीह ।। २०७
'वैणावत'[10] 'पातल' वीजळ[11] वाह[12] ।
मोड़ै गज बाज खळां गज-गाह ।

---

*चिन्हांकित पद्यांश ग. प्रतिमें नहीं है ।

१ ख. धींघ । ग. धीघ । २ ग. जसक्रन ।

*चिन्हांकित पद्यांश ख. प्रतिमें नहीं है ।

*चिन्हांकित पद्यांश ख. प्रतिमें नहीं है ।

३ ख. साहे । ग. साहै । ४ ख. सामंतसा । ५ ख. बाह । ६ ख. विढ़े । ७ ख. ग. करणेस । ८ ग. तणो । ९ ख. धडां । १० ख. बेणावत । ११ ख. प्रतिमें यह शब्द नहीं है । १२ ख. बाह ।

---

२०४. धारूंजळ – तलवार । चूर – ध्वंस ।

२०५. तई – (?) । केवी – शत्रु ।

२०६. संभ्रम – पुत्र । सांमतसाह – सामंतसिंह । हथ वाह – प्रहार । करिमाळ – तलवार । समरेस – युद्ध ।

२०७. अवनाड़ – योद्धा । धड़ा – दल । अवझाड़ – ध्वंस । लाल – लालसिंह । सुजाव – पुत्र । अबीह – निडर ।

२०८. वीजळ – तलवार । वाह – प्रहार । गज-गाह – ध्वंस, संहार ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'गजौ' हरियंद[1] तणौ[2] अवगाढ़ ।
वडा[3] जरदैत हणै खग वाढ़[4] ॥ २०८

'चांपावत' एम[5] लड़ै किळचाळ ।
कूंपावत[6] वाहत खाग कराळ ।
तिकै कुळ सूरज 'कांन' सतेज ।
जोए[7] खळ[8] थाट करै नह जेज[9] ॥ २०९

जई धख वा मारण[10] जोम ।
धिखै[11] चख दारण आरण धोम ।
घड़ा जमरूप भयंकर घाट ।
भिड़ै[12] धज मूंछ अणींस भुंहाट[13] ॥ २१०

तई भुज[14] साबळ कीध त्रिभाग ।
वहै[15] असि उप्रमतौ असि[16] वाग ।
अयौ[17] असुरांण दळां मझि एम ।
ज्वाळानळ[18] रू घ्रत[19] ऊपर[20] जेम ॥ २११

वेधे[21] दळ मुग्गळ[22] कूंत वहेत[23] ।
सिल्है घट पाखर बाज सहेत ।

---

१ ग. हरींद । २ ग. तणो । ३ ख. बडा । ४ ख. बाट । ग. वाह । ५ ख. ऐम । ६ ख. ग. कूंपावत । ७ ग. जोऐ । ८ ख. षग । ९ ग. जंज । १० ख. स्मरण । ११ ख. धिषे । १२ ख. भिडे । १३ ग. मुहाट । १४ ख. भड । १५ ख. बहै । १६ ख. ग. मझि । १७ ख. आयौ । ग. आयो । १८ ख. ग. जालंनळ । १९ ख. घ्रित । ग. घ्रित । २० ख. ऊपरि । २१ ख. बैधै । ग. विधे । २२ ख. मूगगल । ग. मुगल । २३ ख. बहेत ।

---

२०८. अवगाढ़ – वीर । जरदैत – कवचधारी योद्धा ।

२०९. किळचाळ – वीर । कूंपावत – राव कूंपाके वंशज, राठौड़ोंकी एक उपशाखा । कांन – कानसिंह ।

२१०. वारण – हाथी (?) । आरण – अरुण, लाल । धोम – क्रोधाग्नि । घड़ा – सेना । घाट – बनावट । भुंहाट – भौंहों ।

२११. त्रिभाग – एक प्रकारका भाला । उप्रमतौ – तेज । असुरांण – बादशाह, मुसलमान ।

२१२. सिल्है – कवच । बाज – घोड़ा ।

Jain Education International	For Private & Personal Use Only	www.jainelibrary.org

जुथां[1] विहराय[2] गजां परि जाय ।
वहै[3] जिम लाय झकोळिय वाय ।। २१२

हौदां[4] मझि लोह[5] करै[6] करि हाक ।
महारिख[7] देखि हुवै मुसताक ।
हिलोळि छडाळ ग्रहै[8] चँद्रहास ।
तछै घण मीर कलम्म[9] तरास[10] ।। २१३

कितां भड़[11] सीस पड़ै भड़ केक ।
हुवै[12] अधफाड़ पड़ै भड़ हेक[13] ।
उडै[14] अधसीस वहै तरवार[15] ।
आधा तरबूजतणी उणहार ।। २१४

समोभ्रम[16] 'रांम' अदीत सराह ।
वधै[17] इम कांन्ह करै खग वाह[18] ।
ओरै असि 'ऊदल'[19] जंग अथाह ।
निजोड़त[20] मीर[21] खगां नर नाह ।। २१५

---

१ ग. जूथां । २ ख. बिराय । ३ ख. बहै । ४ ग. होदां । ५ ख. लौह । ६ ख. कारे । ७ ग. महारिषि । ८ ख. ग. ग्रहे । ९ ख. ग. कलम । १० ग. तराछ । ११ ख. ग. धड़ । १२ ग. हूवै । १३ ग. ऐक । १४ ख. उडे । १५ ख. तरवारि । १६ ख. ग. समौभ्रम । १७ ख. बधं । १८ ख. बाह । १९ ख. वूदल । २० क. निजौडत । २१ ग. मार ।

---

२१२. विहराय – विदीर्ण कर के । लाय – दावाग्नि । झकोळिय – आघात पा कर । वाय – हवा ।

२१३. महारिख – महर्षि नारद । मुसताक – मस्त । हिलोळि – हिला कर । छडाळ – भाला । चँद्रहास – तलवार । तछै – तत्क्षण है । घण – बहुत । मीर – सरदार । कलम्म – मुसलमान । तरास – (काट कर ?) ।

२१४. उणहार – सूरत, शक्ल ।

२१५. रांम – रामसिंह । अदीत – आदित्य, सूर्य । कांन्ह – कानसिंह । निजोड़त – काटता है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जड़क्कत[1] सेल भिदै[2] जरदाळ[3] ।
कड़क्कत[4] कंध वहै[5] किरमाळ[6] ।
दादौ[7] जिण 'गोवरधन्न'[8] दुभाल ।
ढाहै 'गजसाह' अगै गजढाल ।। २१६

'अभैंमल' अग्र 'फतावत' अेम ।
जुड़ै भड़ जाहर नाहर जेम ।
'रांमौ'[9] 'सबळावत'[10] वाहत रूक ।
भभक्कत स्रोण हुवै[11] खळ भूक ।। २१७

पियै[12] रत पत्त चँडी भरपूर ।
सुरां[13] गुर हाथ वखांणत सूर ।
टळै नह 'रांम' खत्रीवट टेक ।
उडावत लोह अमीर अनेक ।। २१८

वहै[14] रत पूर नदी जिम वार ।
तुटै निज सीस घणी तरवांर ।
उपै[15] खग टूक लोही मझि एम ।
जळाधर वीच[16] कळाधर जेम ।। २१९

---

१ ख. जड़कत । २ भिडै । ३ ग. जडदाल । ४ ख. ग. कडकत । ५ ख. बहै । ६ ख. ग. करिमाल । ७ ख. दादो । ८ ख. गोवरधंन । ग. गोवरधन । ९ ग. रामो । १० ख. सबळाउत । ११ ग. हुै । १२ ख. ग. पीयै । १३ ख. सूरां । १४ ख. बहै । १५ ख. ग. वोपै । १६ ख. ग. वीचि ।

---

२१६. **जड़क्कत** – प्रहार करता है । **जरदाळ** – कवच । **कड़क्कत** – कट-कटकी ध्वनि करते हैं । **वहै** – चलती है । **दादौ** – पितामह । **गोवरधन्न** – चंदावल ठाकुर गोरधनसिंह ।

२१७. **रांमौ** – रामसिंह । **रूक** – तलवार । **भभक्कत** – उमड़ता है । **स्रोण** – रक्त, खून । **भूक** – ध्वंस, नाश ।

२१८. **रत** – रक्त, खून । **पत्त** – पात्र, खप्पर । **वखांणत** – प्रशंसा करता है । **सूर** – सूर्य । **टेक** – प्रण, प्रतिज्ञा ।

२१९. **वार** – पानी । **उपै** – शोभित होता है । **टूक** – खंड । **जळाधर** – बादल । **कळाधर** – चंद्रमा ।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

वढ़ै[1] वप वीजळ[2] खंड विहंड ।
पड़ै[3] धर तांम किया[4] रत-पिंड[5] ।
तई वर[6] रंभ रथां चढ़ि तांम ।
रहै[7] धर कीत वसे स्रग[8] 'रांम' ।। २२०

करै खगझाट हणै किलमांण ।
भिड़ै 'भगवांन' तणौ 'हरिभांण' ।
सारां[9] झक बौळ[10] करंत सनांन ।
अड़ी खँभ 'भांण'[11] छिबै असमांन[12] ।। २२१

तई[13] 'हरभांण'[14] पछट्टत[15] तेग ।
वहै असमांन[16] छटा करि[17] वेग[18] ।
तिसा जम बाळ कलिंद्रि तरंग ।
बगत्तर[19] पोस उडंत बरंग ।। २२२

जोरावरसिंघ 'पदम्म'[20] सुजाव ।
घटां जरदैत थटै खग घाव ।
समोभ्रम[21] 'भाऊ' 'बखत्त'[22] सकाज ।
तई खग झाट हणै सिरताज ।। २२३

---

१ ख. बढ़े । २ ख. बीजळ । ३ ख. पडे । ४ ख. ग. कीया । ५ ख. ग. रतप्पंड । ६ ख. ग. वरि । ७ ख. रहे । ८ ख. श्रुग । ग. श्रुगि । ९ क. सिरी । १० ख. ग. बोळ । ११ ख. बांण । १२ ग. असमांण । १३ ग. तइ । १४ ख. हरिभांण । ग. हारेभांण । १५ ग. पछटत । १६ ख. ग. असमांनि । १७ ख. ग. किरि । १८ ख. बेग । १९ ख. बग्गतर । ग. वगतर । २० ख. ग. पदम । २१ क. समीभ्रग । २२ ख. ग. बष्षत ।

---

२२०. **वढै** – कटते हैं । **वप** – वपु, शरीर । **वीजळ** – तलवार । **रत-पिंड** – युद्धमें वीरगति प्राप्त होते हुए वीरोंका अपने रक्तसे मिट्टीके साथ पितरोंके लिए पिंड बनाना । **धर** – भूमि । **स्रग** – स्वर्ग ।

२२१. **किलमांण** – यवन, मुसलमान । **भगवांन** – भगवानसिंह । **हरभांण** – सूरजभाणसिंह । **सारां** – तलवारों । **झक बौळ** – तरबतर । **अड़ी खँभ** – जबरदस्त । **भांण** – सूरजभाण । **छिबै** – स्पर्श करता है ।

२२२. **हरभांण** – सूरजभाणसिंह । **तेग** – तलवार । **छटा** – बिजली । **कलिंद्रि** – कालंद्री, यमुना । **बगत्तर पोस** – कवचधारी । **बरंग** – खंड, टुकड़ा ।

२२३. **पम्मद** – पदमसिंह । **सुजाव** – पुत्रव । **बखत्त** बखतसिंह । **सकाज** – लिए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुरै[1] 'फतमाल' तणै सिरदार ।
दुसै घट साबळ कीध दुसार ।
अणी[2] धड़ कट्टि[3] फबै फळ एम ।
जाळीमझि हत्थ सुहागणि जेम ॥ २२४

जठै प्रथिसिंघ[4] पराक्रम जागि ।
लड़ै भड़ धूहड़ अंबर लागि ।
पछट्टत मुग्गळ[5] रूप प्रहार ।
किलक्कत वीर[6] जयज्जयकार[7] ॥ २२५

दियँ[8] खग झाट 'फतावत' दोय ।
हुता[9] जुध भांण अचंभम होय ।
भाई 'बिहूं'[10] कूंप हरागज भार ।
'अरिज्जण'[11] भीम तणी उणहार[12] ॥ २२६

जुड़ै 'सिरदार' तणौ[13] वरजाग[14] ।
खळां सिर 'पीथल' वाहत खाग ।
'छतौ' भड़ 'रांम' सुतन्न छछोह ।
लोहां पहराक[15] हणै झट लोह ॥ २२७

---

१ ख. ग. सूरै । २ ख. अरा । ग. अरी । ३ ख. ग. कूटि । ४ ख. प्रिथिसिंघ । ग. प्रथिसिंघ । ५ ख. ग. मूंगल । ६ ख. बीर । ७ ख. ग. जयजयकार । ८ ख. दीयैं । ग. दीये । ९ ख. ग. हुंता । १० ख. दुहूं । ग. दुहू । ११ ग. अरिजण । १२ ख. उणहार । ग. अणुहार । १३ ग. तणो । १४ ग. वरजागि । १५ ग. लहरीक ।

---

२२४. **दुसार** – इस ओरसे उस ओर तक, आर-पार । **फळ** – भालेकी नोंक, शस्त्रकी नोंक ।

२२५. **पछट्टत** – पटकते हैं, गिराते हैं । **किलक्कत** – हर्षपूर्ण ध्वनि करते हैं । **जयज्जयकार** – जय-जयकी ध्वनि ।

२२६. **अचंभम** – आश्चर्ययुक्त । **कूंपहरा** – राव कूंपाके वंशज, राठौड़ ।

२२७. **सिरदार** – सरदारसिंह । **वरजाग** – जबरदस्त । **पीथल** – पृथ्वीराज । **छतौ** – छत्रसिंह । **रांम** – रामसिंह । **छछोह** – तेज । **लोहां पहराक** – अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित । **झट** – प्रहार । **लोह** – शस्त्र ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सझै खग झाट हणै खळ साथ ।
हिचै 'भगवांन' तणौ[1] 'हरनाथ' ।
तठै 'करनौत'[2] लड़ै खग ताह[3] ।
थटां मझि सामँत अंगद थाह[4] ॥ २२८

'चत्रूभुज'[5] 'चंद' तणौ विरचाळ[6] ।
दियै[7] खग झाट हिणै[8] रवदाळ ।
'देवावत' बद्रियसिंघ[9] दुगांम ।
करै खग झाट खत्रीवट[10] कांम ॥ २२९

जुड़ै 'रतनागर' 'भीम' सुजाव ।
दियै[11] खग झाट खळां सिर दाव ।
'उदावत'[12] 'वक्खत' जै अवसांण ।
खँडाहळ झाट[13] हणै खुरसांण ॥ २३०

पछट्टत[14] लोह थटां पँडवेस ।
अड़ै 'हररूप' तणौ[15] अणँदेस[16] ।
'झुंझावत'[17] 'ईस' दियै[18] खग झाट ।
पड़ै खळ थाट चढ़ै धर पाट[19] ॥ २३१

---

१ ग. तणो । २ ख. करणोत । ग. करणोत । ३ ख. ताहि । ग. साहि । ४ ख. ग. थाहि । ५ ख. चत्रुभुज । ग. चत्रभुज । ६ ख. ग. बंधिचाल । ७ ख दीयै । ८ ख. ग. हणे । ९ ख. बद्रीयसिंघ । १० ग. षत्रीवटि । ११ ख. दीयै । १२ ख. ऊदावत । १३ ख. ग. थाट । १४ ख. ग. पछाटत । १५ ग. तणो । १६ ख. ग. अणदेस । १७ ख. ग. झूझावत । १८ ख. दीए । १९ ख. ग. पाठ ।

---

२२८. **करनौत** – करणोत शाखाके राठौड़ ।

२२९. **विरचाळ** – वीर, योद्धा । **हिणै** – ध्वंस करता है । **रवदाळ** – यवन, मुसलमान । **दुगांम** – वीर, जबरदस्त ।

२३०. **रतनागर** – समुद्रसिंह । **भीम** – भीमसिंह । **उदावत** – उदावत शाखाका राठौड़ । **खँडाहळ** – तलवार । **खुरसांण** – यवन, मुसलमान ।

२३१. **पँडवेस** – बादशाह, यवन । **अणँदेस** – आनंदसिंह । **ईस** – ईश्वरीसिंह । **पाट** – ढेर, समूह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खहै 'खड़गेस' तणौ 'रघु'[1] खीज ।
वाहै[2] खग जांणि अकाळिय[3] वीज[4] ।
सझै[5] 'कुसळेस' तणौ जुध सांम ।
निजोड़त मीर खगां वड नांम[6] ।। २३२

'कलौ'[7] सिवदांन तणौ[8] कळमूळ[9] ।
झकौळत वीजळ[10] मुग्गळ[11] झूळ ।
'हरौ'[12] किसनावत 'लाल'[13] हठाळ ।
खहै खग झाट वहै[14] रत-खाळ ।। २३३

लड़ै 'बगसौ'[15] घण वाहत[16] लोह ।
बहादरऊत[17] धसै गजबोह ।
अहंमद खेत वड़ै अवसांण ।
सझै जुध 'सांमत'रौ सुरतांण ।। २३४

बाहै घण खाग घणीस[18] बुहाड़ि[19] ।
पड़ै[20] रिण[21] नींठ घणां खळ पाड़ि ।
परी[22] वर[23] होय विमांण[24] पधारि ।
मिळै[25] सुरधांम आरांम मझारि ।। २३५

---

१ ग. रघू । २ ख. बाहै । ३ ख. अकालीय । ४ ख. बीज । ५ ख. सझे । ६ ख. ताम । ७ ग. कलो । ८ ग. तणो । ९ ख. ग. कलिमूळ । १० ख. बीजळ । ११ ख. मूगल । ग. मंगळ । १२ ख. हरं । ग. हरी । १३ ख. णाल । १४ ख. बहै । १५ ग. बगसो । १६ ख. बाहत । १७ ख. बाहादरवूत । ग. बाहादरधूत । १८ ख. घणीसा । १९ ख. वाहाडि । ग. वहाडि । २० ख. पडे । २१ ख. ग. रण । २२ ख. परा । २३ ख. वरि । २४ ख. बिमांण । २५ ख. मिले ।

---

२३२. **खहै** – भिड़ता है, युद्ध करता है। **खड़गेस** – खड्गसिंह। **रघु** – रघुनाथसिंह। **खीज** – क्रोप कर के। **अकाळिय** – असामयिक। **वीज** – बिजली।

२३३. **कलौ** – कल्याणसिंह। **कळमूळ** – योद्धा, वीर। **झकौळत** – प्रक्षालन करता है। **वीजळ** – तलवार। **झूळ** – समूह। **हरौ** – हरीसिंह। **लाल** – लालसिंह। **हठाळ** – अपने हठ पर दृढ़ रहने वाला। **रत-खाळ** – खूनका नाला।

२३४. **बगसौ** – बगसीराम। **बहादरऊत** – बहादुरसिंहका वंशज। **गज बोह** – गज-व्यूह। **अहंमद** – अहमदाबाद। **सांमत** – सामंतसिंह। **सुरतांण** – सुल्तानसिंह।

२३५. **नींठ** – कठिनतासे। **परी** – अप्सरा। **वर** – पति। **सुरधांम** – स्वर्ग।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रिमां खग झाट[1] हणै जमरूठ ।
तठै 'बखतेस' 'दलावत' तूठ[2] ।
हवै 'सुरतांण' तणौ 'हठमाल' ।
झटां[3] खग खेलत सूर दुझाल ।२३६
'अभौ'[4] भड़ 'जैत' तणौ अवनाड़ ।
*करै खग झाटक[5] थाट[6] किंवाड़[7] ।
जोरावरऊत 'पदम्म'[8] अजागि* ।
'उदावत'[9] खाग खळां सिर आगि ॥२३७
'जसावत' 'माधव' दारण जोम ।
हिचै खग झाट करै खळ होम ।
'रांमौ' 'सगतेस' तणौ करि रीस ।
सत्रां चँद्रहास तरास तसीस ॥२३८
'रासौ' जुध 'माहव'रौ मछराळ ।
रमै खग झाट खळां विकराळ[10] ।
'अनावत'[11] 'अम्मर' सम्मर आय ।
घणा खळ ताय[12] हणै खग घाय ॥२३९
समोभ्रम[13] 'चंद' 'सिवौ'[14] धुबि[15] सार ।
वरावत हूर रिमां जुध वार ।

---

१ ख. झाटि । २ ख. ग. दूठ । ३ झट । ४ ख. ग. अनौ । ५ ग. झाटकि । ६ ग. थट । ७ ग. किवाट । ८ ग. पदम । *···*ये दो पंक्तियां ख. प्रतिमें नहीं हैं । ९ ख. कवत । १० विकराल । ११ ख. अन्नावत्त । १२ ग. ताहि । १३ क. समौभ्रम । ग. समोभ्रम । १४ मिवो । ग. सिवो । १५ ख. ग. धुवि ।

---

२३६. रिमां – शत्रुओं । जमरूठ – यमराजके समान रुष्टमान । तूठ – (?) ।
२३७. जैत – जैतसिंह । अवनाड़ – वीर ।
२३८. दारण – जबरदस्त । जोम – जोश । हिचै – युद्ध करता है । होम – ध्वंस । चँद्रहास – तलवार । तरास – काटता है । तसीस – हाथोंसे ।
२३९. रासौ – रायसिंह । माहवरौ – माहवसिंहका । मछराळ – वीर । अम्मर – अमरसिंह । सम्मर – युद्ध ।
२४०. समोभ्रम – पुत्र । चंद – चंद्रसिंह । सिवौ – शिवदानसिंह । धुबि – युद्ध कर के । सार – तलवार । वरावत – वरण कराता है । हूर – अप्सरा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'हठी' 'सबळेस' समोभ्रम[1] हेक ।
निजोड़त वीजळ[2] खांन[3] अनेक ॥ २४०

तणै[4] 'दलसाह' तणौ 'सुरतेस' ।
सत्रां खगधार ध्रमंत 'सुरेस' ।
तई खग वाहत 'कुंभ'[5] सुतन्न ।
करै खग झाटक सूर 'मुकन्न'[6] ॥ २४१

बडा[7] खळ रूक[8] हणै अणबीह ।
सझै 'हिमताउत' डूंगरसींह ।
अैराक जराक कराक अथाह ।
समोभ्रम[9] 'भोज' लड़ै 'गजसाह' ॥ २४२

खहै 'अजबावत' साहिब - खांन ।
उडै खग झाट छिबै असमांन ।
दिपै 'कुसळेस' सुतन्न[10] 'दुरंग' ।
सत्रां खग झाट तरंग सुरंग ॥ २४३

पटायत[11] सूर इता[12] परमांण[13] ।
जुड़ै इम[14] अग्र[15] 'उमेद' 'सुजांण'[16] ।

---

१ क. ग. समोभ्रम । २ ख. बीजष । ग. बीजल । ३ ख. लांन । ४ ग. तठै । ५ ख. कूंभ । ६ ख. मुक्कंन । ग. मुक्कन । ७ ग. वडा । ८ ग. रूप । ९ ख. समोभ्रम । १० ख. सुतंत्र । ग. सुतंन । ११ ख. पटाइत । १२ ग. इतै । १३ ख. परमांणि । १४ ख. ग. इण । १५ ख. अग्रि । १६ ख. सुजांणि ।

---

२४०. **हठी** – हठीसिंह । **निजोड़त** – काटता है । **वीजळ** – तलवार ।

२४१. **तणै** – तनय, पुत्र । **सुरतेस** – सुरतसिंह । **सुरेस** – इन्द्रसिंह । **कुंभ** – कुंभकरण । **मुकन्न** – मुकुनसिंह ।

२४२. **रूक** – तलवार । **अणबीह** – निडर, निशंक । **अैराक** – तलवार । **जराक** – प्रहार । **कराक** – क्रंदन, चिल्लाहट । **भोज** – भोजसिंह । **गजसाह** – गजसिंह ।

२४३. **खहै** – युद्ध करता है । **अजबावत** – अजबसिंहका पुत्र । **छिबै** – स्पर्श करता है । **कुसळेस** – कुशलसिंह । **दुरंग** – दुर्गादास । **सुरंग** – रक्त, लाल ।

२४४. **पटायत** – पट्टाधिकारी । **जुड़ै** – भिड़ते हैं । **उमेद** – उम्मेदसिंह ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

उरज्जणसिंघ[1] 'पदम्म'[2] सुजाव[3] ।
घणा खळ ढाहत वीजळ[4] घाव ।। २४४

वाहै[5] खग[6] मुग्गळ[7] वारोवार[8] ।
हुवौ[9] सिर पंकज पंख - हजार ।
तई[10] सर सेल तेगां[11] भर[12] तेम ।
जई फब[13] गात कँथा सिध - जेम ।। २४५

अरीथट हूर वराय[14] अनेक ।
अरी झल लोह वरी[15] रँभ एक[16] ।
जरै द्रव[17] देह करै जसवास[18] ।
विमांण[19] अरोहि करै[20] स्रुगवास[21] ।। २४६

हुवै घण मुग्गळ[22] ग्रीखम हेम ।
खहै[23] खग झाट 'फतावत'[24] 'खेम' ।
'मधा'हर फील हणै जुध माह[25] ।
सदा सिव भांण करंत[26] सराह[27] ।। २४७

---

१ ग. उरजणसिंघ । २ ख. ग. पदम । ३ ग. सूजाव । ४ ख. ग. बीजळ । ५ ख. बाहै । ग. वाहे । ६ ख. ग. षल । ७ ख. मूगल । ग. मुगल । ८ ख. बारोहीबार । ग. वारोहीवार । ९ ग. हुवो । १० ख. ग. तइ । ११ ख. ग. लगां १२ ख. भरि । १३ ख. ग. फबि । १४ ग. बराय । १५ ख. बरी । ग. वीर । १६ ख. येक । १७ ख. ग. द्रब । १८ ग. जसवासा । १९ ख. बिमांण । २० ख. कीयो । ग. कियो । २१ ख. श्रुगिव्वास । ग. श्रूगिवास । २२ ख. मूगल । ग. मुगल । २३ ख. वहै । २४ ख. वतावत । २५ ख. ग. माहि । २६ ख. ग. कहंत । २७ ख. ग. सराहि ।

---

२४४. **पदम्म** – पदमसिंह । **सुजाव** – पुत्र । **ढाहत** – गिराता है, मारता है । **बीजळ** – तलवार ।

२४५. **पंकज** – कमल । **पंख-हजार** – सहस्रदल कमलके समान । **कँथा** – फटे-पुराने चिथड़ोंकी बनी गुदड़ी जिसे फकीर धारण करते हैं ।

२४६. **अरीथट** – शत्रु-दल । **हूर** – अप्सरा । **जसवास** – यश, कीर्ति । **विमांण** – विमान, वायुयान ।

२४७. **फतावत खेम** – फतेहसिंहका वंशज खेमसिंह । **मधाहर** – माधोसिंहका वंशज । **फील** – हाथी । **सराह** – प्रशंसा, तारीफ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुबाह[1] अनेक लड़ै थट दोय ।
कमंधांय[2] 'खीम' जिसौ नह कोय[3] ।
समोभ्रम सांमतसिंघ सरूप ।
रिमां खग झाट हणै जमरूप ॥ २४८

'मधावत' 'ईसर' लोह मराट ।
घणा खम झाट तछै खळ घाट ।
करै खग झाट उफांण किरोध ।
जुड़ै[4] जुध 'सेर' समोभ्रम[5] 'जोध' ॥ २४९

सुतन्न[6] 'हरिंद' लड़ै 'सिरदार' ।
पवै[7] खग जांणिक[8] बज्र प्रहार ।
रिमां करि नास बांणास[9] रँगेस ।
समोभ्रम[10] 'भाउ'[11] लड़ै[12] 'जगतेस' ॥ २५०

हिचै[13] चँद्रहास रचै रिख हास ।
सुतां[14] 'भगवांन'ज सांवळदास ।
जुटै करमाळ[15] झळां 'जगवंत' ।
अड़ीखँभ 'कन्न'[16] तणौ[17] 'भगवंत' ॥ २५१

---

१ ख. ग. दुहाव । २ ख. ग. कमंधज । ३ ग. कोई । ४ ग. जुडे । ५ क. समौभ्रम । ६ ७ ग. विवै । ८ ग. जांणक । ९ ख. बांणास । ग. वाणास । १० क. समौभ्रम । ११ ख. भाऊ । ग. भोज । १२ ख. ग. जुडै । १३ ख. हिवै । ग. हिवे । १४ ख. ग. सुतं । १५ ख. करिमाल । १६ ख. ग. कांन्ह । ७१ ग. तणो ।

---

२४८. दुबाह – वीर, योद्धा । थट – सेना । कमंधांय – राठौड़ोंमें । खीम – खीमसिंह । हणै – संहार करता है ।

२४९. मधावत ईसर – माधोसिंहका पुत्र ईश्वरीसिंह । मराट – जबरदस्त । तछै – संहार करता है । उफांण – उबाल । किरोध – क्रोध । सेर – शेरसिंह । समोभ्रम – पुत्र । जोध – जोधसिंह ।

२५०. हरिंद – हरिसिंह । सिरदार – सरदारसिंह । पवै – पवंत । जांणिक – मानों । बांणास – तलवार । भाउ – भाउसिंह । जगतेस – जगतसिंह ।

२५१. हिचै – प्रहार करता है । चँद्रहास – तलवार । रिख – नारद ऋषि । भगवांन – भगवानसिंह । करमाळ – तलवार । अड़ीखँभ – जबरदस्त । कन्न – किसनसिंह । भगवंत – भगवंतसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धमोड़त साबळ[1] मुग्गळ[2] धींग ।
सुतां[3] हरिनाथ जके हरसींघ[4] ।
दियै[5] खग भाटक रूप दुरत्त ।
सुतां[6] 'कुसळेस' कँठीर सुरत्त ॥ २५२

वडा[7] उजबक्क[8] हणै खग वाह ।
समोभ्रम 'कान्ह' लड़ै 'दलसाह' ।
समोभ्रम 'दीप' 'हिंदाळ' सधीर[9] ।
वधेवधि[10] लोह करै नर वीर[11] ॥ २५३

विढै जुध मेड़तिया जुध वेर[12] ।
सिरै[13] 'सिरदार' समोभ्रम[14] 'सेर' ।
'अभैमल' चाड जिके[15] बह[16] वार ।
धरा जुध कीध फतै[17] खग धार ॥ २५४

'अभा' छळि मेड़तनैर अभंग ।
जितौ[18] अरियांण हुंतौ[19] कर जंग ।
घणा महरात[20] हणै खग घाय ।
जितौ[21] बह[22] जंग बळा[23] मभि[24] जाय ॥ २५५

---

१ ग. मुगल । २ ख. मूंगल । ग. साबल । ३ ख. सु । ग. सुत । ४ ख. हुरिसींघ । ग. हरिसंघ । ५ ख. दीयै । ६ ख. ग. सुतं । ७ ख. बडा । ८ ग. वजवक्क । ९ ग. सधी । १० ग. वधेविधि । ११ ख. बीर । १२ ख. बेर । १३ ग. सिरे । १४ क. समोभ्रम । १५ ख. जिके । १६ ख. वहौ । ग. बही । १७ ग. फते । १८ ख. ग. जीतौ । १९ ख. हुंता । ग. हुता । २० ख. महिरात । २२ ख. जीतौ । ग. जीतो । २२ ख. बहौ । ग. बहु । २३ ग. वळा । २४ ग. मंजि ।

---

२५२. धमोड़त – प्रहार करता है । धींग – वीर । दुरत्त – भयंकर । कुसळेस – कुशलसिंह । कँठीर – सिंह ।

२५३. उजबक्क – तातारियोंकी एक जाति अथवा इस जातिका व्यक्ति । कान्ह – कानसिंह । दीप – दीपसिंह । हिंदाळ – हिंदालसिंह । वधेवधि – बढ़-बढ़ कर ।

२५४. विढै – वीर-गतिको प्राप्त करते हैं, युद्ध करते हैं । मेड़तिया – राठौड़ वंशकी एक शाखा । वेर – समय । सिरदार – सरदारसिंह । सेर – शेरसिंह मेड़तिया । चाड – रक्षा ।

२५५. मेड़तनैर – मेड़ता नगरके । अभंग – धीर । अरियांण – शत्रु । बळा – (अग्नि ?) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सझै खग झाटक कूंडळ साथ ।
निजोड़[1] धवेच[2] हणै[3] रघुनाथ ।
अहमंद कोट करै[4] अणबीह ।
दावानळ जंग सवा त्रण[5] दीह ।। २५६

चौथै[6] दिन खाग झळां[7] कळिचाळ ।
काळादळ[8] रोद्र[9] हणे विकराळ ।
मारे[10] खळ मुग्गळ[11] साबरमत्त[12] ।
रतै[13] रँग कीध उझेळ रगत्त[14] ।। २५७

चौड़ा[15] मझि आय वधे छक चाहि ।
मँडे दुय[16] राड़ि हिके दिन मांहि ।
उगांतिय[17] मौसर[18] क्रोध उफांण ।
भयंकर जेठ जिसौ मधि भांण ।। २५८

मारू हथि एम कढ़ी किरमाळ[19] ।
झळाहळ काळतणै[20] हथ झाळ ।
तठै पखरैत हकालि तोखार ।
वमल्लिय[21] भार खँचे[22] जिणवार ।। २५९

---

१ ख. निजोडि । २ ख. धवैच । ३ ख. हणे । ४ ख. करे । ५ ख. त्रिण । ६ ख. चोथै । ७ ख. झटां । ग. झाटां । ८ ख. कालानल । ९ ख. ग. रौद्र । १० ग. मारै । ११ ख. मूंगल । ग. मुंगल । १२ ख. ग. सावरमति । १३ ख. ग. रातै । १४ ख. ग. रगति । १५ ग. चौडै । १६ ख. दोया । ग. दोय । १७ ख. उगंतीय । ग. ऊगंतिय । १८ ग. मोसर । १९ ख. करिमाल । २० ग. काळतणो । २१ ख. ग. वमालीय । २२ ग. षंचै ।

---

२५६. **झाटक** – प्रहार । **कूंडळ** – धनुष । **निजोड़** – काटता है । **धवेच** – राठौड़ वंशकी धवैचा शाखाका व्यक्ति । **अहमंद** – अहमदाबाद । **दावानळ** – दावाग्नि । **सवा**··· **दीह** – सवा तीन दिन ।

२५७. **काळचाळ** – वीर । **रोद्र** – यवन । **साबरमत्त** – साबरमती नदी । **रतै** – लाल । **उझेळ** – तरंग । **रगत्त** – रक्त, खून ।

२५८. **मँडे** – रच दिये । **राड़ि** – युद्ध । **उगांतिय मौसर** – श्मश्रुके बाल निकलते समय । **उफांण** – उबाल । **जेठ** – जेष्ठ मास । **मधि** – मध्य ।

२५९. **मारू** – वीर राठौड़ । **कढ़ी** – निकली । **किरमाळ** – तलवार । **तठै** – वहां । **पखरैत** – कवचधारी घोड़ा या योद्धा । **तोखार** – घोड़ा । **वमल्लिय** – (?) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झपट्टत नाळ[1] दमंग झळास ।
करै 'वखतावर'[2] नट्ट कळास ।
ओरे[3] असि वाहत खाग अपार ।
'विलंद' 'विलंद' कहै जिण वार ।। २६०

धरा[4] जरदैत पड़ै खग धार ।
उडै धड़ फाड़[5] जनेउ उतार ।
रिमां कँधि 'सेर' करै घण रीस ।
सझै खग झाट उडै बहु[6] सीस ।। २६१

सहेत[7] झिलम्म[8] पड़ै घमसांण ।
जाळी[9] मझि कीर मतीरह[10] जांण ।
आगै भड़ 'सेर' सिरै अमराव[11] ।
उठी 'तरियन्न'[12] सिरै अधिकाव ।। २६२

जमात समेत[13] दुहूं जमरांण ।
मिळे[14] घमसांण छिबै[15] असमांण ।

---

१ ख. ताल । २ ख. बषतावर । ३ ख. ओरै । ग. ओरें । ४ ख. धडा । ग. धडां । ५ ग. फाट । ६ ख. ग. बहों । ७ ख. राहैत । ८ ख. झिल्लंम । ग. झिलम । ९ ख. जांली । १० ग. मतीरहि । ११ ख. ग. उमराव । १२ ख. ग. तरियंन्न । १३ ख. ग. सहेत । १४ ख. मेले । ग. मिलै । १५ ख. छिवे । ग. छिबै ।

---

२६०. **झपट्टत** – झपटते हैं, तेज दौड़ते हैं । **नाळ** – घोड़के सुमके नीचे लगाया जाने वाला वृत्ताकार उपकरण । **दमंग** – अग्निकरण । **झळास** – चमक, आगकी लपट । **वखतावर** – बख्तावरसिंह ।

२६१. **धरा** – पृथ्वी । **जरदैत** – कवचधारी योद्धा । **उडै···उतार** – तलवारोंके प्रहारोंसे योद्धाओंके शरीर ठीक उसी स्थानसे बराबर कटते हैं जहां पर उनके शरीर पर यज्ञोपवीत धारण किया रहता है । **रिमां** – शत्रुओं । **सेर** – शेरसिंह मेड़तिया ।

२६२. **झिलम्म** – युद्धके समय शिर पर धारण करनेका टोप विशेष, शिरस्त्राण । **घमसांण** – युद्ध । **जाळी** – जाल, फंदा । **कीर** – तोता । **मतीरह** – हिंदवानी नामक वर्षा ऋतुमें होने वाला तरबूजके आकारका लता फल विशेष । **तरियन्न** – तरयनखां नामक यवन । **अधिकाव** – विशेषता ।

२६३. **जमरांण** – यमराज । **घमसांण** – युद्ध । **छिबै** – स्पर्श करते हैं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अम्हौ[1] सम्ह सायक फूटि अपार ।
धड़ा धमरोळ पड़ै चवधार ।। २६३
पछट्टत[2] खग्ग राठौड़[3] पठांण ।
भयंकर कौतिग[4] देखत भांण ।
रूणंझण[5] नेवर हूवर[6] रंभ[7] ।
उठै[8] हसि नारद होय अचंभ ।। २६४
लोही वभकंति[9] खगां झट[10] लागि ।
उडै झळ जांणि खँडी वन[11] आगि ।
लडायक 'सूर' जिसौ बहलीम[12] ।
भणै[13] ज 'तरीन' तणौ 'अभरीम' ।। २६५
खड़ै असि 'सेर' दिसो[14] चढ़ि खाग[15] ।
'निजायक' जांणि खिजायक[16] नाग ।
आवंतौहि[17] झेलि[18] पठांण अफेर ।
सांम्है[19] सिर खाग[20] लगाइय[21] 'सेर' ।। २६६
तई अधसीस बढ़ै तह-ताज[22] ।
कियौ[23] सिव खप्पर[24] जीमण काज ।

---

१ ख. ग. अम्हो । २ ख. पछटत । ग. पछंटत । ३ ग. राठोड । ४ ख. कौतक । ग. कौतग । ५ ख. ग. रणंझण । ६ ख. ग. हूर । ७ ख. बरंभ । ग. बरंभ । ८ ख. उठुं । ९ ख. ग. भभकंत । १० ख. झटि । ११ ख. बन । १२ ख. ग. वहलीम । १३ ख. ग. भणे । १४ ख. दिली । १५ ख. ग. षाग । १६ ख. ग. षिजायक । १७ ख. आवंतां १८ क. जेल । १९ क. सम्हैं । २० ख. ग. षाग । २१ ख. ग. लगाईय । २२ ख. साज । २३ ख. ग. कीयौ । २४ क. पक्खर ।

२६३- अम्हौ सम्ह – परस्पर एक दूसरेके अभिमुख । सायक – तीर । धड़ा – शरीर । धमरोळ – प्रहार कर के । चवधार – भाला विशेष ।

२६४. रुणंझण – जेवरोंकी ध्वनि । नेवर – पैरमें धारण करनेका स्त्रियोंका एक आभूषण । हूवर – परी । रंभ – अप्सरा । अचंभ – आश्चर्ययुक्त ।

२६५. वभकंति – उमड़ता है । खँडी वन – एक प्राचीन वन जिसे अर्जुनने जलाया था ।

२६६. खिजायक – कुपित ।

२६७. जीमण – भोजन या भोजन करनेके लिए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहे खग[1] दीर्घ पठांण समाथि[2] ।
हुई खग[3] झाट[4] कमंधज हाथि[5] ।। २६७

हिचै[6] 'कुसळाहर' घायल होय ।
दूजी[7] खग[8] झाट किया[9] बंट दोय ।
जोये[10] 'अभरांम' विहंडज[11] जवांन ।
खहै[12] खग[13] 'मांनड' 'चूहड़-खांन'[14] ।। २६८

वाहै[15] खग[16] चूहड़-खांन[17] विक्राळ ।
नाराजक बाजतणौ मुहिनाळ[18] ।
आ वाहि पठांण सकै न उभारि ।
तितै भड़ 'सेर' वाही तरवारि ।। २६९

खड़ै[19] हंस भोम[20] पड़े कटि खांन[21] ।
उडे[22] सिर वीज[23] पड़ी असमांन ।
'सेरा'[24] मुहरै[25] भड़ सेर समांन ।
खगां[26] हणियौ[27] जुधि 'मांनड़-खांन'[28] ।। २७०

सभै भड़ तीन लखे[29] सरियन्न ।
तठै गज हूल कियौ[30] तरियन्न[31] ।

---

१ ख. ग. षाग । २ क. समाथ । ३ ख. ग. षग । ४ क. हाथ । ५ ख. ग. झाटक ६ ख. हिवे । ग. हिचे । ७ ख. ग. दूजा । ८ ख. ग. षग । ९ ख. ग. कीया । १० क. ख. जोए । ११ ग. बिहंज । १२ ख. ग. षहे । १३ ख. ग. खाग । १४ ख. चूहड़-षांन । १५ ख. बाहे । ग. बाहै । १६ ख. ग. षग । १७ ख. ग. चूहड़षांन । १८ क. ग. मुहनाळ । १९ ख. ग. षड़ै । २० ख. भौम । ग. भूम । २१ ख. ग. षांन । २२ ख. डडो । २३ ख. बीज । २४ ख. सेर । २५ ख. ग. मोहरै । २६ ख. ग. षगां । २७ क. हणि । ख. हणीयौ । २८ क. मांनह खांन । २९ ख. लषे । ३० ख. ग. कीयौ । ३१ ख. तरीयंन्न ।

---

२६७. झाटक – प्रहार ।

२६८. हिचै – युद्ध करता है, भिड़ता है । विहंडज – कट कर । खहै – युद्ध करता है ।

२६९. नाराजक – तलवार । बाजतणौ – घोड़ेके ।

२७०. खड़ै – प्रयाण करते हैं । हंस – प्राण । भोम – भूमि । मुहरै – अगाड़ी ।

२७१. हूल – प्रहार ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'मधा'हर मेड़तिया[1] जमरांण ।
प्रळै झळ रूप 'तरीन' पठांण ।। २७१

कसीसत टंक - अढार - कबांण ।
परी अह[2] रूप ध्रवै सिर पांण ।
धणी खग[3] झाट करै घण घाय ।
लगी किर वंसतणै[4] वन लाय ।। २७२

दियै[5] 'बखतावर'[6] मांकड़ डांण ।
खगां[7] झट 'सेर' हणै खुरसांण[8] ।
अळूझत बाज[9] खुरां[10] मझि अंत ।
मंथै खुरदेत[11] गजां मयमंत[12] ।। २७३

वधै[13] 'तरियतन्नणौ'[14] सबछेक ।
हौदा[15] मझि खाग[16] लगाइय[17] हेक ।
जठै खग[18] तंत ज्यूंही वही[19] जाय ।
खड़ा[20] भड़ घूम चंकरिय[21] खाय[22] ।। २७४

तिकै सिर ईस लियै[23] मुसताक ।
पड़ै छक जांणिक फूल पियाक ।

---

१ ख. मेड़तिया । २ ख. अंह । ३ ख. ग. षग । ४ ख. बांस । ग वांस । ५ क. दिए । ख. दीयै । ६ ख. बखतावर । ७ ख. ग. षगां । ८ ख. ग. षुरसांण । ९ ख. बाझ । ख. बाज । १० ख. ग. षुर । ११ ख. ग. षुर । १२ क. मददंत । ख. मदमंत । १३ ख. बधे । १४ ख. तरीयम्नतणै । १५ ग. होदा । १६ ख. ग. षाग । १७ ख. ग. लगाईय । १८ ख. ग. षग । १९ ख. बहि । ग. वुही । २० ख. ग. षड़ा । २१ ग. चक्केरीय । २२ ख. ग. षाय । २३ ख. लेए । ग. लिए ।

---

२७२. **कसीसत** – धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाते हैं । **टंक'' कबांण** – एक प्रकार का धनुष विशेष । **घाय** – प्रहार । **किर** – मानों । **लाय** – दवाग्नि ।

२७३. **मांकड़** – वानर । **डांण** – छलांग । **खुरसांण** – यवन । **अंत** – आंतें । **मयमंत** – मदमस्त ।

२७४. **ईस** – ईश, महादेव । **मुसताक** – मस्ती, हर्ष । **छक** – तृप्त । **जांणिक** – मानों । **फूल** – शराब । **पियाक** – पीने वाला ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किता घट फूट लुटै[1] हिचकंत ।
कबूतर लोटण[2] जेम करंत ।। २७५

उबासत[3] सीस लड़ै धड़ एक ।
इसी विध[4] घाट कुघाट अनेक ।
वहै धज साबळ खाग[5] विहार[6] ।
सभ्झै[7] जुध खांन[8] पड़ै[9] सरदार ।। २७६

पड़ै भड़ लोहांइ[10] खेत[11] पचीस ।
अणी घमसांण पणी इक - वीस ।
सहेत 'तरीन'[12] जुदा धड़[13] सीस ।
'तरीन' पठांण पड़ै चवतीस[14] ।। २७७

पावै कुण पात कहै गुणपार ।
विढ़ै[15] भड़ 'सेर' इसौ उणवार ।
महाभड़[16] सूर लड़ै 'पदमेस' ।
रमै खग झाट हसंत रिखेस ।। २७८

विचै खळ थाट करै असिवेव[17] ।
दिपै जिम भारथमै सहदेव[18] ।

---

१ ख. ग. लूटे । २ ग. लोटण । ३ ग. उवासत । ४ ख. बिधि । ५ ख. बहे । ६ ख. बिहार । ७ ख. सभ्झे । ८ ख. ग. षांन । ९ ख. पडे । १० ख. लोदीय । ग. लोधीय । ११ ख. ग. षेत । १२ ग. तरीयन । १३ ख. भड़ । १४ ख. चवबीस । १५ ख. बिढ़ै । ग. विडै । १६ ख. ग. महाबळ । १७ ग. असिवैव । १८ ग. सहदैव ।

---

२७६. उबासत – (पड़े हुए ?) । घाट – घट, शरीर । कुघाट – क्षत-विक्षत, खराब । धज – भाला । विहार – विदीर्ण करके ।

२७७. खेत – युद्ध-भूमि । अणी – अनीक, सेना अथवा इस । घमसांण – युद्ध ।

२७८. पात – पात्र, कवि । विढ़ै – युद्ध करता है । पदमेस – पदमसिंह । रिखेस – ऋषीश, नारद ऋषि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कढ़ै जरदाळ अमीर कराळ ।
'कलावत' लोह करै कळिचाळ ॥ २७९
जठै खग वाहृत[1] दारुण 'जैत' ।
पड़ै जरदैत घणा पखरैत ।
धसै[2] दळ मूगळ[3] कीध विधूंस ।
रुद्रगण[4] दक्षतणै[5] जिग रूस ॥ २८०
सांम्है सिर खाग वही घमसांण ।
जिकौ[6] अधचंद्र भळक्कत जांण[7] ।
भबांमिय[8] दीव्र सिंदूरज[9] भाळ ।
भळाहळ जांणि[10] त्रिती चख भाळ ॥ २८१
पेचां मझि स्रोण वहै अणपार ।
जटा गंग जांणिक[11] धार[12] हजार[13] ।
वघंबर जेम सिलै[14] विकराळ[15] ।
मँडै[16] गळि माळ जिका रुँडमाळ ॥ २८२
नँदी[17] गण जेम तुरंग निहंग ।
जोगारँभ आठ सझै रिण जंग ।

१ ख. बाहृत । २ ख. ग. धसे । ३ ग. मुगळ । ४ ख. ग. रौद्रगण । ५ ख. ग. दछ्पतणौ । ६ ख. ग. जिको । ७ ग. जांणै । ८ ख. ग. भवांनीय । ९ ख. ग. संदूरज । १० ग. जांणि । ११ ख. जांणि । १२ ख. त्रिती । १३ ख. चखभाल । १४ ख. ग. सिलहै । १५ ख. बिकराल । १६ ख. ग. मंडे । १७ क. नदी ।

२७९. जरदाळ – कवच । कलावत – कल्याणसिंहका पुत्र या वंशज । कळिचाळ – योद्धा ।
२८०. वाहृत – प्रहार करता । जैत – जैतसिंह । जरदैत – कवचधारी योद्धा । पखरैत – पखर(कवच जो घोड़ा या हाथी पर डाला जाता है)धारी घोड़ा या हाथी । विधूंस – विध्वंस । रुद्रगण – महादेवके गण । दक्ष – दक्ष प्रजापति जो सतीका पिता तथा शिवका स्वसुर था । जिग – यज्ञ । रूस – रुष्ट होकर ।
२८१. भळक्कत – चमकता है । जांण – मानों । भळाहळ – चमकयुक्त, देदीप्यमान । जांणि – मानों । त्रिती – तृतीय । भाळ – ललाट ।
२८२. पेचां – पगड़ीकी लेपटों । स्रोण – शोणित, खून । जांणिक – मानों । वघंबर = (व्याघ्र+अंबर) – व्याघ्र चर्म । सिलै – सिलह, कवच । गळि – कंठमें, गलेमें ।
२८३. नँदी गण – शिवके द्वारपाल बैलका नाम जिस पर महादेव सवारी करते हैं । तुरंग – घोड़ा । निहंग – योद्धा, वीर । जोगारँभ – योगाभ्यास ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दळै खग[1] 'सूर' तणौं विरदैत[2] ।
जटाधर रूप कियां[3] भड़ 'जैत' ।। २८३

'भिमाजळ'[4] 'मौकलऊत'[5] भिड़ंत ।
धमोड़त[6] सेल[7] सिलै[8] उधड़ंत ।
घणा रत छूटत फूटत घाट ।
मजीठकि जांणि[9] ढुळै रँगमाट[10] ।। २८४

सुरां[11] गुर 'रायमलौत'[12] सकाज ।
जुटै 'मुकँदेस' तणौ 'जसराज' ।
लोही भिल[13] रंग तुरी धज लाल ।
उभेलत सेल[14] अमीर उथाल ।। २८५

पमंग वछेक करै अणपार ।
उडावत[15] लोह झटां असवार ।
जरद्द मरद्द 'र पाखर जंग ।
पड़ै कटि अंग अरद्ध[16] पमंग ।। २८६

'जसौ' खग वाहत[17] यूं वहि[18] जात ।
घरां दुय[19] जांण[20] वँटी घरवात[21] ।

---

१ ख. ग. षल । २ ख. बिरदैत । ३ ख. कीयौ । ग. कीयां । ४ ख. ग. भीमाजल । ५ ख. ग. मौकमऊत । ६ ख. ग. धमौडत । ७ ख. सेल्ह । ८ ख. सिल्है । ९ ख. लांणि । १० ग. रंगमाटि । ११ ख. ग. सूरां । १२ ग. रायमलोत । १३ ख. ग. झिलि । १४ ग. प्रतिमें यह शब्द नहीं है । १५ ख. उदावत । १६ ग. अरध । १७ ख. बाहत । १८ ख. बहि । १९ ख. ग. दोय । २० ग. जांणि । २१ ख. घरबात ।

---

२८३. दळै – ध्वंस करता है । बिरदैत – विरुदधारी, यशस्वी । जटाधर – महादेव ।

२८४. भिमाजळ – भीमसिंह । मौकलऊत – मौकलसिंहका पुत्र । धमोड़त – प्रहार करता है । सिलै – कवच । उधड़ंत – फटता है । रत – रक्त, खून । घाट – शरीर । ढुळै – गिरता है ।

२८५. सुरां गुर – वीर, योद्धा । भिल – तरबतर हो कर । तुरी – घोड़ा । धज – भाला ।

२८६. पमंग = (प्लवंग) – घोड़ा । जरद्द – कवच । अरद्ध – आधा ।

२८७. जसौ – जसवंतसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कलावत 'रांम' लड़ै कळिचाळ ।
दियै[1] खग झाट पड़ै रवदाळ ।। २८७

वढ़ै[2] रत[3] फेरत[4] कीच विलम्म[5] ।
काळी मढ़ि[6] बाकर जेम[7] किलम्म[8] ।
समोभ्रम[9] 'जैत' 'जसा'[10] समकाज[11] ।
लड़ै खग झाट लियां[12] कुळ लाज ।। २८८

पछाड़त जंग अमीर पमंग[13] ।
अड़ै इम रूप 'रूप'हरौ अणभंग ।
सझै[14] खग सेल सकौ[15] रिणसाज ।
विढ़ै[16] भड़ 'झूंझ'[17] तणौ 'वनराज'[18] ।। २८९

धारूजळ झाट धुबै[19] निरधूंम[20] ।
भिड़ै[21] 'कुसळेस' समोभ्रम 'भूंम'[22] ।
भारा खग तूटत ऊपर भाळ ।
मुड़ै नह सूर लड़ै मतिवाळ[23] ।। २९०

घणा धड़[24] पै हथ सोभत घाव ।
वणै[25] नर[26] नाहर रेख वणाव ।

१ ख. ग. दीयै । २ ख. बढ़ै । ३ ख. ग. तड । ४ ख. ग. फंरत । ५ ख. विलंब । ग. विलंस । ६ ख. मटि । ग. मंढ़ि । ७ ख. नेम । ८ ग. किलंम । ९ क. समीभ्रम । १० ग. जुसा । ११ ख. मसकात । ग. मसकाज । १२ ख. ग. लोयां । १३ ख. ग. पवंग । १४ ख. ग. सभ्रै । १५ ख. ग. सको । १६ ख. बिढ़ै । १७ ख. जूझ । ग. भूझ । १८ ख. बनराज । १९ ख. ग धुवै । २० ग. निरधूंप । २१ ख. भिडे । २२ ख. ग. भूप । २३ ग. मतवाळ । २४ ग. घणाघण । २५ ख. ग. वणे । २६ ख. जिज ग. जिम ।

२८७. **रवदाळ** – यवन ।

२८८. **वढ़ै** – बढ़ता है । **रत** – रक्त, खून । **कीच** – पंक, दलदल । **विलम्म** – भाला विशेष (?) । **काळी** – कालिका देवी । **मढि** – मंदिर, स्थान । **बाकर** – बकरा । **किलम्म** – मुसलमान । **समोभ्रम** – पुत्र । **जैत** – जैतसिंह । **जसा** – जसवंतसिंह ।

२८९. **रूपहरौ** – रूपसिंहका वंशज । **अणभंग** – वीर । **सझै** – संहार करता है । **सकौ** – सब । **झूंझ** – झूंझारसिंह । **तणौ** – पुत्र, तनय ।

२९०. **धारूजळ** – तलवार । **धुबै** – प्रज्वलित होता है (?) । **भूम** – भोमसिंह । **भारा** – समूह । **मतिवाळ** – मस्त ।

२९१. **घणा** – बहुत ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुटै[1] इम[2] 'दूद'हरौ चढ़ि जोम ।
भळाहळ[3] खाग पछट्टत[4] 'भोम' ।। २९१

सत्रां अधघाट कितां अधसंध ।
करै अधसीस उडै अधकंध ।
इसी विध[5] फूल अणी अवझाड़ ।
रचै[6] धसि गोळ भयंकर राड़ ।। २९२

खासा गज खांन तणा सिर खीज ।
वहै[7] खग जांणिक वादळ वोज[8] ।
उडै गजसूंड चढ़ै असमांण[9] ।
जाए अहि उड्डि[10] मळै गिर[11] जांण[12] ।। २९३

वहै[13] सर साबळ धार विहार ।
वढ़े[14] चुखचुक्ख हुवौ जिण[15] वार ।
धारूजळ वाहि[16] वहाय[17] नृधोम[18] ।
भिड़े[19] इम 'भोम' पड़ै[20] भड़ 'भोम' ।। २९४

---

१ ख. जूटै । ग. जूडै । २ ग. यम । ३ ख. भाळाहल । ४ ग. पछटत । ५ ख. बिधि । ग. विधि । ६ ख. रचे । ७ ख. बहै । ८ ख. बीज । ९ ख. ग. असमांणि । १० ख. ग. ऊडि । ११ ख. ग. तर । १२ ख. ग. जांणि । १३ ख. बहे । १४ ख. बडे । क. वढ़ै । १५ ख. ग. तिण । १६ ख. बाहि । १७ ख. बहाय । १८ ख. ग. नृधोम । १९ क. भिडै । २० ख. पडे ।

---

२९१. दूद – राव दूदा जिसके वंशज मेड़तिया राठौड़ हैं । हरौ – वंशज । पछट्टत – प्रहार करता है । भोम – भोमसिंह ।

२९२. सत्रां – शत्रुओं । फूल – तलवार । अवझाड़ – काट कर । धसि – बलात् घुस कर । गोळ – सेनाका मध्य भाग ।

२९३. खासा गज – राजा या बादशाहकी निजी सवारीका हाथी । खीज – कोप करके । वीज – बिजली । अहि – सर्प । मळै गिर – मलयगिरि ।

२९४. सर – तीर । धार – तलवार । वढे – कट कर । चुखचुक्ख – खंड-खंड । धारूजळ – तलवार । भिड़े – युद्ध करके । भोम – भोमसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वरे[1] रैंभ बैसि[2] झळूस बिमांण[3] ।
चले रँगराग हुतां चमरांण ।
परी[4] भरि देत अम्रत्त[5] पियाल* ।
लियै[6] छक भूम हुवै[7] रँग लाल ॥ २०५

मिळै[8] गळबांहि[9] परी मतवाळ[10] ।
वसै[11] स्रगि[12] सोवन धांम विचाळ ।
रमै खग झाट करै चँड[13] रास ।
सुतां[14] 'सिरदार' स[15] जीवणदास ॥ २९६

जुड़ै गज बाज[16] घिखै गजगाह ।
'बिजावत' 'रांम' करै खग वाह[17] ।
फबै सुत जोधहदास 'फकीर' ।
मँडै खग झाट खँडे बह[18] मीर ॥ २९७

जुड़ै भड़ 'माहव' 'मांन' सुजाव ।
हुवै घण[19] वीजळ[20] घाव निहाव ।

---

१ ख. बरे । क. वरै । २ ग. वैसि । ३ ख. बिमांण । ४ ख. परि । ५ ग. अमृत ।
*ख. प्रतिमें यह पंक्ति निम्न प्रकार से है—
'परि भरि अम्मृत देत पियाल ।'
६ ख. लीयै । ७ ग. हूवै । ८ ख. ग. मिले । ९ क. गजबांह । १० ख. मतिवाळ । ११ ख. बसे । १२ ख. ग. श्रृगि । १३ ख. रंग । १४ ख. ग. सुतं । १५ ग. सु । १६ ग वाज । १७ ख. बाह । १८ ख. बहौ । ग. वोहौ । १९ ख. पण । २० ख. बीजल ।

---

२९५. बैसि – बैठ कर । झळूस – जलसा । चमरांण – चँवर । पियाल – प्याला । छक – नृत्य । भूम – भूमि ।

२९६. गळबांहि – कंठालिंगन, बाहुपाश । परी – अप्सरा । मतवाळ – मस्त । स्रगि – स्वर्ग । सोवन धांम – सुवर्ण-प्रासाद । विचाळ – वीच । चँड – रणचंडी । रास – नृत्य ।

२९७. घिखै – तेज रूपसे होता है । गजगाह – युद्ध । खग वाह – तलवारका प्रहार ।

२९८. जुड़ै – भिड़ता है । माहव – माहवसिंह । मांन – मानसिंह । सुजाव – पुत्र । निहाव – प्रहार ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विढ़ै[1] खग 'कन्ह'[2] तणौ 'वनिराज'[3] ।
सुतां[4] 'अखमाल'[5] 'हरिंद' सकाज ॥ २९८
रुकां झट भूक करै चमराळ[6] ।
चलै नह 'चंदहरौ' कळिचाळ[7] ।
तणौअम हिंदव'[8]- सिंघ[9] तराज ।
सत्रां खग वाहत[10] जोध सकाज ॥ २९९
सुतां 'रतनेस' अरिज्जणसाह[11] ।
थटां खळ घावत लोह अथाह ।
सवाईयसिंघ 'अभावत' सूर ।
करै खग झाटक जंग करूर ॥ ३००
सझै खळ[12] 'सांवळ'रौ[13] 'अचळेस' ।
मथा खळ ऊडत लेत महेस ।
चत्रूभुज[14] नंद 'हठी' कळिचाळ ।
रिपां[15] खग वाहत[16] झाळ बराळ[17] ॥ ३०१
दियै[18] खग झाट निसाट दुझाळ ।
हिचै जुध 'नाथ' सुजाव हिंदाळ ।

---

१ ग. वढ़ै । २ ख. ग. कांन्ह । ३ ख. ग. वनराज । ४ ख. ग. सुतं । ५ ख. अघमाल । ग. अषमाल । ६ ख. चमरास । ७ क. चळिचाळ । ८ ख. ग. हींदव । ९ ख. सींघ । १० ख. बाहत । ११ ग. अरिजण । १२ ख. ग. षग । १३ ख. ग. सांमल रौ । १४ ख. ग. चत्रभुज । १५ ख. रिषां । ग. रिमां । १६ ग. बाहत । १७ ग. वराळ । १८ ख. दीयै

---

२९८. कन्ह – कानसिंह । वनिराज – बनराजसिंह । अखमाल – अक्षयसिंह हरिंद – हरिसिंह ।

२९९. रुकां – तलवारों । झट – प्रहार । भूक – ध्वंस । चमराळ – यवन, मुसलमान । चंदहरौ – चंद्रसिंहका वंशज ।

३००. रतनेस – रतनसिंह । अरिज्जणसाह – अर्जुनसिंह । थटां – सेनाएँ । घावत – संहार करता है ।

३०१. सांवळ – सांवलसिंह । अचळेस – अचलसिंह । मथा – मस्तक । नंद – पुत्र । हठी – हठीसिंह । झाळबराळ – आग-बबूला ।

३०२. निसाट – असुर, मुसलमान । दुझाल – योद्धा । हिचै – संहार करता है । नाथ – नाथूसिंह । सुजाव – पुत्र । हिंदाळ – हिंदूसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुटै[1] जुध[2] 'नाहर' रौ 'जगसाह' ।
उडावत लोह कहै रवि वाह ।। ३०२

उठै 'कुसळेस' तणौ[3] दईवांन ।
गाढ़ांगुर वाहत खाग 'गुमांन' ।
मिळै[4] जुध 'पीथल' संभ्रम 'मांन' ।
तई खग खांन हणै मुसतांन ।। ३०३

अरी खग झाटत धोम अमेळ ।
सुरावत[5] दूठ लड़ंत 'समेळ' ।
'नरौ' वजपाळ' तणौ नरनाह ।
विढ़ै[6] सिलहैत लड़ै[7] खगवाह ।। ३०४

उठै 'किसनेस' सुतन्न 'अनोप' ।
अड़ै खग *झाट चढ़ै कुळ ओप ।
जठै[8] 'हिमतेस' 'अजब्ब' सुजाव ।
करै* खग वाहतणौ[9] अधिकाव ।। ३०५

---

१ ख. जुटे । २ ख. जुधि । ३ ग. तणो । ४ ख. मिले । ५ ख. ग. सूरावर ।
६ ख. बिढ़ै । ७ ख. ग. हणै । ८ ग. जुडै ।
*...*चिन्हांकित पंक्तियां ख. प्रतिमें नहीं हैं ।
९ ख. बाहताणो ।

---

३०२. नाहर – नाहरसिंह । जगसाह – जगतसिंह । रवि – सूर्य । वाह – शाबाश ।

३०३. कुसळेस – कुशलसिंह । दईवांण – वीर । गाढ़ांगुर – योद्धा, वीर । गुमांन – गुमानसिंह । पीथल – पृथ्वीराज अथवा पृथ्वीसिंह । संभ्रम – पुत्र । मांन – मानसिंह । तई – शत्रु, आततायी । मुसतांन – मुस्तानिस, अभ्यस्त ।

३०४. अरी – शत्रु । झाटत – प्रहार करता है । धोम – (?) । अमेळ – शत्रु । सुरावत – सूरसिंहका वंशज । दूठ – जबरदस्त । समेळ – समेलसिंह । नरौ – योद्धाका नाम । विजपाळ – विजयसिंह । बढ़ै – युद्ध करता , काटता है । सिलहैत – कवचधारी । खग वाह – योद्धा, राजपूत ।

३०५. किसनेस – किसनसिंह । अनोप – अनोपसिंह । ओप – कांति, तेज । हिमतेस – हिम्मतसिंह । अजब्ब – अजबसिंह । सुजाव – पुत्र । अधिकाव – अधिकता, अधिक ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणीकढ़[1] 'सूर' तणौ[2] 'परियाग' ।
खळां[3] थट ढ़ाहृत वाहृत[4] खाग ।
समोभ्रम 'आणँद' 'सूर' संग्रांम ।
करै खग भाटक दाटक कांम ।। ३०६
जटा[5] रुद्र क्रोध खगां जगवंत ।
भिड़ै 'किरतेस' तणौ 'भगवंत' ।
समोभ्रम 'साहिब' 'कुंभ'[6] सतोल ।
डोहै[7] दळ मुग्गळ[8] खाग अडोळ ।। ३०७
धुबै[9] खग[10] भाट डंकां वजि धीह ।
अड़ै 'अभऊत'[11] तणौ अणबोह ।
धसै जुध 'साहिब' संभ्रम धींग[12] ।
सभै खग भाट बहादरसींघ[13] ।। ३०८
खगां भट 'नाहर' नंद 'खगेस' ।
विभाड़त खांन[14] थटां 'बगतेस' ।

---

१ ख. ग. अणीकट । २ ग. तणों । ३ ख. षालां । ४ ख. बाहृत । ५ ख. जडा । ग. जुड़ा । ६ ख. ग. कूंभ । ७ ख. डोहे । ८ ख. मूगल । ग. मुगळ । ९ ख. धुबि । ग. धुवै । १० ख. षगि । ११ ख. ग. अभवूद । १२ ख. ग. धीघ । १३ ग. बहादरसिंघ । १४ क. थांन ।

---

३०६. **अणीकढ़** – चुनिदा (?) । सूर–सूरसिंह । **परियाग** – प्रयागसिंह । **थट** – समूह, दल । **ढ़ाहत** – संहार करता है । **वाहृत** – प्रहार करता है । **समोभ्रम** – पुत्र । **आणँद** – आनंदसिंह । **सूर** – सूरसिंह । **संग्राम** – संग्रामसिंह । **भाटक** – प्रहार । **दाटक** – जबरदस्त, महान ।

३०७. **रुद्र** – महादेव । **जगवंत** – जगाता हैं, प्रज्वलित करता है । **किरतेस** – कीरतसिंह । **भगवंत** – भगवंतसिंह । **साहिब** – साहिबसिंह । **कुंभ** – कुंभकरण । **सतोल** – समान । **डोहै** – ध्वंस करता है । **अडोळ** – अटल ।

३०८. **धुबै** – जोशमें आता है, प्रहार करता है । **डंका** – नगाड़ों । **धीह** – नगाड़ेकी ध्वनि । **अभऊत** – अभयसिंहका पुत्र । **तणौ** – पुत्र । **अणबोह** – निडर, वीर । **साहिब** – साहिबसिंह । **संभ्रम** – पुत्र । **धींग** – जबरदस्त ।

३०९. **खगां भट** – तलवारोंके प्रहारों । **नाहर** – नाहरसिंह । **नंद** – पुत्र । **खगेस** – खड़गसिंह । **विभाड़त** – ध्वंस करता है, संहार करता है । **खांन** – मुसलमान, नर बुलंद । **बगतेस** – बखतसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झळाहळ खाग खळां सिर झाड़ि ।
रचै 'सत्रसाल' 'सदावत' राड़ि ॥ ३०९

मांमौ[1] 'सत्रसाल'तणौ मगरूर ।
सझै[2] 'सकतेस' महाभड़[3] सूर ।
सेखावत[4] वाहत[5] खाग सिघाळ ।
चाढ़ै[6] जळपूर चवद्दह[7] चाळ ॥ ३१०

'अभम्मल'[8] भूप 'उमेद' अभंग ।
जुड़ै कछवाह 'विजावत'[9] जंग ।
कियौ[10] धर गूजर पांणि प्रकास ।
अखै नवकोट धरा जसवास ॥ ३११

'बाहादरऊत'[11] सक्रोध[12] बहास ।
दियै[13] खग झाटक 'दांणियदास'[14] ।
खगां खुरसांण विभाड़त खूर ।
तां[15] 'सबळेस' 'बहादर' सूर ॥ ३१२

---

१ ग. मौंमौं । २ ग. सझे । ३ ख. ग. महाजुध । ४ ख. सेषाव । . बाहत । ६. ग. चढ़ै । ७ ख. ग. चव्वदह । ८ ख. ग. अभैमल । ९ ख. बिजावत । १० ख. कीयौ । ग. कीयो । ११ ग. बाहादरउतम । १२ ग. क्रोध । १३ ख. ग. दीयै । ख. दाणीयादास । ग. दाणीयदास । १४ ख. ग. सुतं ।

---

३०९. **झाड़ि** – प्रहार करके । **सत्रसाल** – शत्रुशाल । **सदावत** – शार्दूलसिंहका वंशज । **राड़ि** – युद्ध ।

३१०. **मगरूर** – गर्वपूर्ण । **सकतेस** – शक्तिसिंह । **सेखावत** – कछवाहा वंशकी एक शाखा । **सिघाळ** – वीर, योद्धा । **जळ** – तेज, आब, कांति । **चवद्दह** – चौदह । **चाळ** – (मंजिल ?) ।

३११. **अभम्मल** – महाराजा अभयसिंह । **उमेद** – उम्मेदसिंह । **अभंग** – वीर । **जुड़ै** – भिड़ता है, युद्ध करता है । **विजावत** – विजयसिंहका वंशज । **धर गूजर** – गुजरात देश । **पांणि** – हाथ । **अखै** – अक्षय । **नवकोट** – मारवाड़ । **जसवास** – कीर्ति, यश ।

१२. **सक्रोध** – क्रोधपूर्ण । **बहास** – जोशमें आकर । **झाटक** – प्रहार । **खुरसांण** – मुसलमान । **विभाड़त** – संहार करता है । **खूर** – समूह, दल । **सबळेस** – सबलसिंह । **बहादर** – बहादुरसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिल्है खग वाढ़त[1] खांन सरीर ।
समोभ्रम 'सूर' 'वखत्त'[2] सधीर ।
उभेळत साबळ जंग अथाह ।
'रासाउत'[3] खांन भिड़ै रिमराह ।। ३१३

धमोड़त[4] सेल गजां परि धाव ।
जुड़ै 'इंद्रसिंघ'[5] 'हरिंद' सुजाव ।
रमै 'मोहकावत' ग्रोभड़ रूक ।
भिड़ै 'भगवंत' पड़ै खळ[6] भूक ।। ३१४

दुसै खग झाट पड़ै दुरतेस ।
समोभ्रम 'रूप' लड़ै[7] 'सुरतेस' ।
'अनौ' 'जगरांम' सुजाव अभंग ।
जरू खग झाट पड़ै खळ जंग ।। ३१५

तई पर 'सांवत' क्रोध[8] अताळ ।
करै 'बखतेस' झटां किरमाळ ।
जुड़ै सुत 'भोज' खगां जमरांण ।
घणा जरदैत पड़ै घमसांण ।। ३१६

---

१ ख. बाढ़त । २ ख. ग. बष्पत । ३ ख. रासावत । ग. रसावत । ४ क. धमोडत ।
५ ख. इंद्रसींघ । ६ ख. षग । ७ ख. पडै । ८ ख. ग. कोप ।

---

३१३. **सिल्है** – कवच । **वाढ़त** – काटता है । **सूर** – सूरसिंह । **वखत्त** – बखतसिंह । **रासाउत** – रायसिंहका वंशज । **रिमराह** – शत्रुओंको सीधा करने वाला रिपु राहु ।

३१४. **धमोड़त** – प्रहार करता है । **हरिंद** – हरिसिंह । **सुजाव** – पुत्र । **मोहकावत** – मोहकमसिंहका वंशज । **ओभड़** – भयंकर । **रूक** – तलवार । **भगवंत** – भगवतसिंह । **भूक** – ध्वंस ।

३१५. **दुरतेस** – (दुष्ट ?) । **रूप** – रूपसिंह । **सुरतेस** – सूरतसिंह । **अनौ** – अनाड़सिंह । **जरू** – दृढ़, जबरदस्त ।

३१६. **सांवत** – सामंतसिंह । **अताळ** – तेज । **बखतेस** – बखतसिंह । **झटां** – प्रहारों । **किरमाळ** – तलवार । **भोज** – भोजराजसिंह । **जमरांण** – यमराज । **जरदैत** – योद्धा । **पड़ै** – वीर-गतिको प्राप्त होते हैं । **घमसांण** – युद्ध ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तठै सुत 'भाउ'[१] लड़ंत 'तिलोक' ।
झटां खग दैत कहै रवि झोक ।
महाबळ[२] 'ऊद' सुजाव 'मदन्न'[३]
विढ़ै[४] खग झाट सिंदूर वदन्न[५] ।। ३१७

'जगावत' कीरतसिंघ[६] व्रजागि ।
लड़ै खग चोट[७] खळां धख लागि ।
हठी 'कळियांण' तणौ[८] करि हाक ।
पछट्टत[९] रूक झटां पिसणाक ।। ३१८

तठै 'मोहकावत'[१०] 'सांम' सतेज ।
मँडै[११] खग झाट उपाट मजेज ।
गाढ़ागुर 'देव'[१२] तणौ[१३] गिरमेर ।
सत्रां सिर झाट दियै[१४] समसेर ।। ३१९

धमोड़त[१५] सेल सिलै[१६] बँध धींग ।
समोभ्रम[१७] 'ईसर' दौलतसींघ[१८] ।

---

१ ख. भाऊ । २ ख. महावल । ३ ख. मद्दंन । ग. मदंन । ४ ख. बिढै । ५ ख. वद्दंन । ग. वदन । ६ ख. वीरर्तासघ । ग. कीरर्तिसिघ । ७ ग. चौट । ८ ग. तणो ९ ख. ग. पछंटत । १० क. ख. मौहोकावत । ११ ग. मंडे । १२ ख. ग. देद । १३ ग. तणो । १४ ख. दौयै । १५ ख. ग. धमौडत । १६ ख. सिल्है । १७ ग. समौभ्रम । १८ ग. दोलर्तासघ ।

---

३१७. **भाउ** – भाउसिंह । **तिलोक** – तिलोकसिंह । **रवि** – सूर्य । **झोक** – शाबाश, धन्य-धन्य । **ऊद** – उदयसिंह । **सुजाव** – पुत्र । **मदन्न** – मदनसिंह । **विढ़ै** – कटता है । **सिंदूर वदन्न** – लाल मुख ।

३१८. **जगावत** – जगरामसिंहका वंशज । **व्रजागि** – वज्राग्नि, वीर । **धख** – जोश, जलन । **हठी** – हठीसिंह । **कलियांण** – कल्याणसिंह । **हाक** – जोशकी आवाज । **पछट्टत** – प्रहार करता है । **पिसणाक** – शत्रु ।

३१९. **मोहकावत** – मोहकमसिंहका वंशज । **सांम** – शामसिंह । **मँडै···झाट** – युद्धमें तलवारोंके प्रहार करता है । **उपाट** – (उछालता है, उखाड़ता है ?) । **मजेज** – शीघ्र (?) । **देव** – देवीसिंह । **गिरमेर** – सुमेरु पर्वत ।

३२०. **धमोड़त** – प्रहार करता है, मारता है । **सिलैबँध** – कवचधारी योद्धा । **धींग** – जबरदस्त । **ईसर** – ईश्वरीसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समौ[1] 'बखतैस'[2] न ह्वै अनि[3] सौत[4] ।
नगै खग खांन हणै करणोत[5] ॥ ३२०

बिढ़ै[6] खग भाट करै असि बेव ।
दिपै[7] 'कुसळेस' समोभ्रम 'देव' ।
'गौदावत' रौद खगां गजगाह ।
'सिवावत' 'सूर' बहादर[8] साह ॥ ३२१

जुड़ै[9] छक छोह[10] कँठीरव जेम ।
पछट्टत[11] खाग 'सदावत' 'पेम' ।
तछै[12] घड़ मेछ खगां तह ताज ।
रचै जुध 'दीप' तणौ 'वछराज' ॥ ३२२

लोहां भट बाढ़त[13] रौद लगस्स ।
'बहादर'[14] 'पीथलऊत' बँगस्स ।
'राघावत'[15] आणंदसिंघ[16] दुबाह ।
विभाड़त[17] मुग्गळ[18] बीजळ बाह ॥ ३२३

---

१ ग. समो । २ ग. वषतेस । ३ ख. ग. अन्य । ४ ख. ग. सोत । ५ क. करणोत । ६ ग. विढ़ै । ७ ग. दिये । ८ ख. बाहादर । ९ जुटै । १० ख. ग. छौह । ११ ख. ग. पछटत । १२ क. तचै । १३ ख. वाढ़त । १४ ख. बाहादर । ग. वहादर । १५ ख. ग. द्वारावत । १६ ख. आणंदसींघ । १७ ख. बिभाड़त । १८ ख. मूंगल । ग मुगल ।

---

३०२. **समौ** – समान, सम्मुख या सामसिंह । **बखतैस** – बखतसिंह । **करणोत** – राठौड़ करणके वंशज ।

३२१. **बेव** – (भेद ?) । **दिपै** – शोभायमान हो रहा है । **कुसळेस** – कुशलसिंह । **समोभ्रम** – पुत्र । **देव** – देवीसिंह । **रौद** – मुसलमान । **गजगाह** – युद्ध, योद्धा । **सिवावत** – शिवसिंहका वंशज । **बहादरसाह** – बहादुरसिंह ।

३२२. **कँठीरव** – सिंह । **पछट्टत** – प्रहार करता है । **सदावत** – शार्दूलसिंह का वंशज । **पेम** – प्रेमसिंह । **तछै** – काटता है, संहार करता है । **घड़** – सेना । **मेछ** – म्लेछ, यवन । **दीप** – दीपसिंह ।

३२३. **लगस्स** – लम्बायमान सेनादल । **बहादर** – बहादुरसिंह । **पीथलऊत** – पृथ्वीसिंहका वंशज । **बँगस्स** – मुसलमान । **बीजळ** – तलवार । **बाह** – प्रहार ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अड़ै 'रतनेस' 'मौहौकम'ऊत ।
धुबै[1] खग झाळ फबै[2] अबधूत[3] ।
समोभ्रम वीठळदास सधीर ।
विढै[4] 'वखतेस'[5] खगां नर वीर[6] ॥ ३२४

'कन्हावत' 'पेम' रमै खग क्रोध ।
'जसावत' 'नाथ' करै रिण[7] जोध[8] ।
जोरावर 'रांमचंद्रेस' सुजाव ।
तठै खग वाहत[9] पावक ताव ॥ ३२५

'सिभू' 'कुसळावत' वीजळ[10] सूर ।
मिरंबर[11] घाय हणै मगरूर ।
चखां धिख चोळ 'जोगावत' 'चंद' ।
वाहै[12] खग ढाहत[13] थाट 'विलंद'[14] ॥ ३२६

तई खग झाट जुदा सिर तन्न ।
करै 'जगतावत' देवकरन्न[15] ।

---

१ ख. धुवे । ग. धुवै । २ ख. फवै । ३ ख. ग. अवधूत । ४ ख. बिढ़ै । ५ ख. ग. बषतेस । ६ ख. बीर । ७ ख. ग. रण । ८ ख. धोम । ९ ख. व्वाहत । १० ख. बीजल । ११ ख. मीरंबर । ग. मीराबर । १२ ख. बाहे । ग. बाहै । १३ ख. व्वाढ़त । ग. वाढ़त । १४ ख. बिलंद । १५ ख. करंन्न ।

---

३२४. रतनेस – रतनसिंह । धुबै – प्रज्वलित होता है । फबै – शोभा दे रहा है । अबधूत – मस्त ।

३२५. कन्हावत – कानसिंह का पुत्र । पेम – प्रेमसिंह । जसावत – यशवंतसिंहका वंशज । नाथ – नाथूसिंह । जोरावर – जोरावरसिंह । रांमचंद्रेस – रामचंद्रसिंह । पावक – अग्नि । ताव – जोश ।

३२६. सिभू – शंभूसिंह । कुसळावत – कुशलसिंहका वंशज । वीजळ – तलवार । मिरंबर – बड़े २ यवन योद्धा । घाय – प्रहार । मगरूर – गर्वपूर्ण । चखां – नेत्रों । धिख – प्रज्वलित हो कर । जोगावत – जोगसिंहका वंशज । चंद – (?) । थाट – सेना । विलंद – सर बुलंद ।

३२७. तन्न – शरीर ।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

महोबतसिंघ[1] तणौ मछराळ ।
सझै झट वीजळ[2] 'स्यांम'[3] सिघाळ[4] ।। ३२७
जठै[5] 'गजसाह' 'करन्न'[6] सुजाव ।
विभाड़त[7] मेछ खगां वनराव[8] ।
जुड़ं खग झाट 'अनावत' 'जैत' ।
बहादर[9] रौंद[10] हणै बिरदैत ।। ३२८
'पतावत' हिंदुवसिंघ[11] प्रचंड ।
खहै खग झाट थटां खट खंड ।
सुतं 'भगवंतज' 'जालिमसाह' ।
सझै खग झाट उडंत सनाह[12] ।। ३२९
'हरी' सुत 'केहर' जूटत हेक ।
अरी थट खाग वहंत अनेक ।
सझै जुध एह पटायत[13] सीह ।
'उमेदक' जोध अगै अणबीह[14] ।। ३३०
त्रंबागळ[15] धीह त्रहत्रह तूर ।
'कलावत' जंग करंत करूर ।

---

१ ख. महौबतसींघ । २ ख. बीजल । ३ ख. सांम । ४ ख. सिघाल । ५ ग. जुटै । ६ ख. करंन्न । ग. करंन । ७ ख. बिभाडत । ८ ख. बनराव । ९ ख. बाहादर । ग. वहादर । १० ख. ग. रौद । ११ ख. हींदुवसींघ । १२ ख. सन्नाह । १३ ख. ग. पटाइत । इ४ ख. अणवीह । १५ ख. त्रंवागल । ग. त्रांबागळ ।

---

३२७. मछराळ – वीर, तेजस्वी । स्यांम – शामसिंह । सिंघाळ – वीर ।

३२८. गजसाह – गजसिंह । करन्न – करणसिंह । वनराव – सिंह, वीर । अनावत – अनाड़सिंहका वंशज । जैत – जैतसिंह । रौंद – मुसलमान । बिरदैत – यशस्वी, वीर ।

३२९. पतावत – राठौड़ वंशकी पातावत शाखा या इस शाखाका व्यक्ति । भगवंतज – भगवतसिंह । जालिमसाह – जालमसिंह । सझै – प्रहार करता है ।

३३०. हरी – हरिसिंह । केहर – केसरीसिंह । पटायत – वह जिसके पास बड़ी जागीर हो । सीह – (?) । उमेदक – उम्मेदसिंह । जोध – योद्धा (पुत्र ?) । अणबीह – निडर ।

३३१. त्रंबागळ – नगाड़ा । धीह – नगाड़ेकी ध्वनि । त्रहत्रह – नगाड़े या तूर नामक वाद्यकी ध्वनि । तूर – वाद्यविशेष । कलावत – कल्याणसिंहका वंशज ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वहै[1] असवार अनेक व्रहास ।
दियै[2] खग भाटक 'गोयंददास' ।। ३३१
'कलावत' लोह करै कळिचाळ[3] ।
'बद्री' करिमाळ हणंत बँगाळ ।
'जोरौ'[4] हरनाथ तणौ जमरांण ।
खहै खग भाट ढहै[5] खुरसांण ।। ३३२
'जोरावर' 'ऊदल'[6] संभ्रम जोध ।
वहै[7] किरमाळ कराळ विरोध ।
खगां वजि[8] धूखळ[9] ढाहत खांन ।
दमंगळ सामंत संभ्रम 'दांन' ।। ३३३
रिमां घट चोळ करै खग रूप ।
रचै जुध 'केहर'रौ[10] 'जगरूप' ।
पछट्टत[11] मुग्गळ[12] सेल प्रहार ।
सभै जुध 'सेर' तणौ सिरदार ।। ३३४
समोभ्रम[13] 'वीठळ'[14] 'केहर'[15] सूर ।
बँगाळक खाग उडै घण बूर ।

---

१ ख. बढ़ै । ग. वढ़ै । २ ख. दीयै । ३ ख. ग. कलिचाल । ४ ग. जोरो । ५ ख. डहै । ग. डोहै । ६ ग. उदल । ७ ख. बहै । ८ ख. ग. वलि । ९ ख. ग. धोषल । १० ग. केहरि रौ । ११ ख. ग. पछंटत । १२ ख. मूगल । ग. मुगल । १३ क. ग. समौभ्रम । १४ ख. बीठल । १५ ख. केहरि ।

---

३३१. व्रहास – घोड़ा ।

३३२. कळिचाळ – योद्धा, वीर । बद्री – बद्रीसिंह । करिमाळ – तलवार । बँगाळ – मुसलमान । जोरौ – जोरावरसिंह । खहै – नाश करता है, युद्ध करता है । ढहै – वीरगति प्राप्त होते हैं । खुरसांण – यवन ।

३३३. जोरावर – जोरावरसिंह । ऊदल – उदयसिंह । संभ्रम – पुत्र । कराळ – भयंकर । धूखळ – युद्ध, (तीक्ष्ण ?) । ढाहत – काटता है, मारता है । खांन – मुसलमान । दमंगळ – युद्ध । सामंत – सामंतसिंह । दांन – दानसिंह ।

३३४. रिमां – शत्रुओं । घट – शरीर । चोळ – लाल । केहर – केसरीसिंह । जगरूप – जगरूपसिंह । सेर – शेरसिंह । सिरदार – सरदारसिंह ।

३३५. समोभ्रम – पुत्र । वीठळ – वीठलदास । बँगाळक – मुसलमान । बूर – ध्वंस ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धमोड़त[1] सेल उझेल दुधार ।
समोभ्रम 'रूप' भिड़ै 'सरदार' ।। ३३५

'जोरौ'[2] 'अणदावत' 'जैत' 'जुहार' ।
सत्रां[3] घट[4] सीस बजावत सार ।
'हठी' सुत 'जीवण' पौरस[5] हूंस[6] ।
रमै[7] खग झाट डँडेहड़ रूंस[8] ।। ३३६

जुड़ै 'रायसिंघ' चढ़ै घण जोस[9] ।
रमै झट तेग 'अनावत' रोस ।
समोभ्रम 'राजड़' रूप समाथ ।
हईदळ वाढ़त वीजळ हाथ ।। ३३७

विरांण[10] सरूप कियां[11] जिणवार ।
समोभ्रम 'जोध' लड़ै 'सिरदार' ।
गिळै[12] सिर भूक हुवौ[13] अवगाढ़[14] ।
वही[15] खग झोक खत्रीवट वाढ़[16] ।। ३३८

भिदे हँस ऊप्रम मंडळ भांण ।
महाभड़ जोति मिळै[17] रहमांण ।

१ ख. ग. धमौड़त । २ ग. जोरो । ३ ग. सत्र । ४ ख. धड । ग. घड । ५ ख. पोरस । ६ ख. ग. हौंस । ७ ग. रमे । ८ ख. ग. रौंस । ९ ख. रोस । १० ख. ग. वीरांण । ११ ख. कीयां । ग. कीयै । १२ ख. ग. गोलै । १३ ख. ग. हुवो । १४ ख. अणगाढ़ । १५ ख. बाही । १६ ख. बाढ़ । १७ ग. मिलै ।

३३५. **धमोड़त** – मारता है । **दुधार** – दो धार वाला भाला । **रूप** – रूपसिंह ।

३३६. **जोरौ** – जोरावरसिंह । **अणदावत** – आनंदसिंहका वंशज । **जैत** – जैतसिंह । **जुहार** – जुहारसिंह । **बजावत** – प्रहार करता है । **सार** – तलवार । **हठी** – हठीसिंह । **जीवण** – जीवणसिंह । **हूंस** – उत्साह, अभिलाषा । **रूंस** – रोमाञ्चकारी प्रकार (?) ।

३३७. **अनावत** – अनाड़सिंह । **राजड़** – राजसिंह । **रूप** – रूपसिंह । **समाथ** – समर्थ । **हईदळ** – अश्व-दल, घुड़-सेना ।

३३८. **विरांण** – भयंकर, भयावह । **समोभ्रम** – पुत्र । **जोध** – जोधसिंह । **सिरदार** – सरदारसिंह । **भूक** – ध्वंस, नाश, चूर-चूर । **अवगाढ़** – वीर, छलनी, लथपथ, शराबोर (?) । **झोक** – धन्य धन्य । **खत्रीवट** – क्षत्रियत्व ।

३३९. **हँस** – प्राण । **ऊप्रम मंडळ** – विष्णु-मंडल । **महाभड़** – महाभट, महायोद्धा । **रहमांण** – ईश्वर ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समोभ्रम 'जोध' 'गुमांन' सधीर ।
विढ़ै[1] तरवार खळां विमरीर ।। ३३६
'सदावत' 'सांमत' स्यांम सनाह ।
सझै[2] खग वाह[3] बिराह[4] सराह ।
धमोड़त[5] सेल सिल्है[6] बँध धींग ।
समोभ्रम 'स्यांम'[7] 'महोकमसींघ'[8] ।। ३४०
चलै मदमत्त[9] पटाझर चाल ।
लड़ै खग 'तेज' समोभ्रम[10] 'लाल' ।
इता जुध मेड़तिया[11] उमराव ।
रमै रिण खेल वडा[12] रिणराव ।। ३४१
धुबै[13] रणधोम अणी घण धार ।
उडै[14] रत छौळ[15] अपार अपार ।
जोधा भड़ जंग करै जिणवार ।
सिरै सुत भीम 'पतौ' सिरदार ।। ३४२

---

१ ख. बिढ़े । ग. वढ़ं । २ ग. सझे । ३ ख. बाह । ४ ख. ग. विराह । घ. विरोह । ५ ख. ग. धमौडत । ६ ग. सिलै । ७ ख. ग. सांम । ८ ख. मौहौकर्मसिंघ । ग. महो-कर्मसिंघ । ९ ख. खममंत । १० ख. समौभ्रंम । ११ ख. ग. मेडतीया । १२ ख. बडा । १३ ख. धुबे । ग. धुवे । १४ ख. वुडै । ग. वुडे । १५ ग. छोल ।

---

३३९. **गुमांन** – गुमानसिंह । **विमरीर** – जबरदस्त ।

३४०. **सदावत** – शार्दूलसिंहका वंशज । **सांमत** – सामतसिंह । **स्यांम** – स्वामी । **सनाह** – रक्षा । **सझै···सराह** – तलवारका प्रहार करता है तब दोनों राह (हिंदू और मुसलमान) उसकी प्रशंसा करते हैं । **धमोड़त** – प्रहार करता है । **सिल्है बँध** – अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित, कवचधारी । **धींग** – योद्धा, वीर । **स्यांम** – श्यामसिंह ।

३४१. **मदमत्त** – मदोन्मत्त, मस्त । **पटाझर** – हाथी । **तेज** – तेजसिंह । **लाल** – लालसिंह । **मेड़तिया** – मेड़ताके शासक राठौड़ राव दूदाके वंशजोंकी एक उपशाखा । **रिणराव** – योद्धा, वीर ।

३४२. **धुबै** – क्रोधमें प्रज्वलित हो रहे हैं । **रणधोम** – युद्धाग्नि । **अणी** – अनीक, सेना । **रत** – रक्त, खून । **छौळ** – प्रवाह, धारा । **सिरै** – श्रेष्ठ । **भीम** – भीमसिंह । **पतौ** – प्रतापसिंह ।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

भिड़ै मुख मूंछ[1] अणी भुंवहार[2] ।
धरे[3] हथ रौळवियौ[4] चवधार ।
वणै[5] मुख चोळ छिबै[6] व्रहमंड ।
'पतै' अस[7] हाकलियौ[8] परचंड ।। ३४३

युद्धमें बरातरी तुलना

लगै[9] सर स्रोण जगै[10] लहराज ।
सजे[11] अंग जांण कसूंबल साज ।
जमातिय[12] जोध जमातिस[13] जांन ।
वजै सुर सिंधव[14] राग विधांन[15] ।। ३४४
लाडी जिम रौद घड़ा वप[16] लेख[17] ।
दुसै अस गाजि[18] सगां[19] जिम[20] देख[21] ।
अयौ[22] जिम[23] वीच[24] तुरी असवार ।
आवै जिम तोरण वींद[25] उदार ।। ३४५

फेर दूजौ रूपक

झाळाहळ[26] साबळ वाहत झूल ।
सदासिव वाहत[27] जांणि त्रसूळ[28] ।

---

१ ख. मुंछ । २ ख. ग. भंवहार । ३ ग. धरै । ४ ख. रौळवीयौ । ग. वियो । ५ ख. बणे । ग. वणे । ६ ख. छिवे । ग. छिवै । ७ ख. ग. असि । ८ ख. ग. हाकलीयौ । ९ ख. ग. लगे । १० ख. ग. जगे । ११ ख. ग. सझे । १२ ख. ग. जमातीय । १३ ग. जमाजिस । १४ सीधुव । ग. सीधव । १५ ख. बिधान । १६ ख. बप । १७ ख. ग. लेखि । १८ ख. गाज । १९ ख. समां । २० ख. झिम । २१ ख. ग. देषि । २२ ख. आंयौ । ग. आयो । २३ ख. रण । ग. रिण । २४ ख. बीच । २५ ख. बींद । २६ ख. ग. झळ । २७ ख. बाहत । २८ ख. त्रिश्रूल । ग. त्रिसूल ।

---

३४३. **भुंवहार** – भौहों । **रौळवियौ** – घुमा कर प्रहार किया । **चवधार** – भाला । **चोळ** – लाल । **छिबै** – स्पर्श करता है । **व्रहमंड** – आकाश । **पतै** – प्रतापसिंह । **हाकलियौ** – हांका, तेज गतिसे चलाया ।

३४४. **स्रोण** – शोणित, खून । **लहराज** – (?) । **जांण** – मानों । **कसूंबल** – लाल रंग । **साज** – घोड़ेकी जीनके उपकरण । **सुर** – स्वर, आवाज । **सिंधव** – वीर रसका राग ।

३४५. **लाडी** – दुल्हिन । **रौद घड़ा** – यवन सेना । **वप** – वपु, शरीर । **दुसै अस** – शत्रु-दलके घुड़ सवार । **सगां** – समधी । **तुरी** – घोड़ा । **वींद** – दूल्हा ।

३४६. **झालाहल** – देदीप्यमान । **साबळ** – भाला विशेष । **वाहत**– प्रहार करता है । **झूल** – समूह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जठै उछटैं खळ सेल जड़ंत ।
पटै[1] चढ़ि जांणि कनह[2] पड़ंत ।। ३४६
महाबळ[3] मुग्गळ[4] ढाहि अमाप ।
पटाझर सेल जड़ 'परताप' ।
ओपै[5] रत चाचर घाव उफांण[6] ।
खुलै[7] गिर जांणिक मांणिक खांण[8] ।। ३४७
खत्री गुर खापहुता[9] खळकाय ।
धारूजळ[10] काढ़िय[11] सेल धपाय ।
अड़ै खग झाट अँगोअँग आप ।
पड़ै खळ थाट लड़ै 'परताप' ।। ३४८
*धड़च्छत[12] फांक उडै खळ धूठ[13] ।
सिरा चाचरार[14] जड़ी[15] लग सूठ[16] ।

१ ग. पड़े । २ क. कनंक । ३ ख. माहाबल । ४ ख. मूगल । ग. मुगल । ५ ख. ग. उपै । ६ ख. उफांणि । ७ ख. ग. षुले । ८ ख. षांणि । ग. षांन । ९ ख. खापहूंत । ग. खापहूता । १० ख. ग. धरूजल । ११ ख. ग. कढ़ीय ।

★···★यहांसे आगे चिन्हांकित पंक्तियां तो ग. प्रतिमें नहीं मिली हैं किन्तु कुछ दूसरी पंक्तियां मिली हैं जो क. तथा ख. प्रतियोंसे मेल नहीं खाती हैं, वे निम्न हैं—

'अनौ हरनाथ तणौ अवनाड, विढै विचत्रां धड षागि विभाड ।
जठै षग वाहि वरै करि जोस, पछाडत मीर वगतर पौस ।
कटै किलमांण हुवै रत कीच, ^विटै इक जोध षलां दळ वीच ।'

^यह पंक्ति पृष्ठ १०५ (पृष्ठके पाठान्तरका नोट देखिए)के पाठान्तरके अनुसार निम्न प्रकार है—
'बढे इक वाज तठे रिण बीच ।'

१२ ख. धडछत । १३ ख. धूत । १४ ख. क. चचरार । १५ ख. जाडी । १६ ख. सूत ।

३४६. **उछटैं** – उछलते हैं, कटते हैं । **जड़ंत** – प्रहार करता है । **पटै** – पटा नामक खेल ।

३४७. **ढाहि** – मार कर, काट कर । **अमाप** – अपार । **पटाझर** – हाथी । **जड़ै** – प्रहार करता है । **रत** – रक्त, खून । **चाचर** – भाल, ललाट, मस्तक । **जांणिक** – मानों । **मांणिक** – मानिक्य ।

३४८. **खत्री गुर** – वीर, योद्धा । **खापहुता** – तलवारके म्यानसे । **खळकाय** – प्रहार कर के । **धारूजळ** – तलवार । **सेल** – भाला । **धपाय** – तृप्त करके । **पड़ै** – वीर-गति प्राप्त होते हैं । **थाट** – सेना ।

३४९. **धड़च्छत** – प्रहार करता है । **फांक** – यहां 'खाप' शब्द होना चाहिये जिसका अर्थ तलवार भी होता है । **धूठ** – वीर । **चाचरार** – भाल, ललाट । **जड़ी** – प्रहार किया । **लग** – तक, पर्यन्त । **सूठ** – (?) ।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

दियै[1] अधसीस अधै[2] मुख[3] दंत[4] ।
भिना[5] चितरांम अधा घट भंत[6] ।। ३४९

दड़ां जिम सीस उडै[7] खग[8] दाव[9] ।
धड़ां पर बाज करै ग्रग[10] धाव ।
खुरां मझि अंत अळूझत खेत[11]* ।
कडै[12] कपि डांण चढ़ै[13] गज केत ।। ३५०

*बछेक बछेक 'पतै'[14] जिणवार ।
सझै[15] घण मेछ खगां सिरदार ।
'सलेम' 'अली महमंद' सधीर ।
मारे खग झाटक दोय अमीर ।। ३५१

सुहै[16] इण भांति लड़ै समराथ ।
'पातौ' जिम भारथ मांझल[17] पाथ ।
हिचै इम एक[18] अनेकह होय ।
कहै गुण पार न पावत कोय* ।। ३५२

---

१ ख. दोसै । २ ख. अधै । ३ ख. मुखि । ४ ख. दांत । ५ ख. भीना । ६ ख. भांत । ७ ख. अधै । ८ ख. मुखि । ९ ख. दांत । १० ख. मृग । ११ ख. घाव । १२ ख. करै । १३ ख. कडै ।

*...*चिन्हांकित पंक्तियां ग. प्रतिमें नहीं हैं ।

१४ ख. पमै । १५ ख. सझै । १६ ख. सोहै । १७ ख. मांझलि । १८ ख. हेक ।

---

३५०. **दड़ा** – गेंदों । **दाव** – प्रहार । **धड़ां** – वीर-गति प्राप्त वीरोंके शरीर । **बाज** – घोड़ा । **धाव** – दौड़, चाल । **अंत** – अंतड़िएँ । **खेत** – युद्ध-स्थलमें । **कडै** – पास, निकट । **कपि** – वानर । **डांण** – कुदान, छलांग । **केत** – केतु, ध्वजा ।

३५१. **पतै** – प्रतापसिंह । **सझै** – संहार कर दिये । **मेछ** – म्लेच्छ, यवन । **सिरदार** – सरदारसिंह । **सधीर** – धैर्यवान, वीर । **झाटक** – प्रहार ।

३५२. **सुहै** – शोभा देता है । **समराथ** – समर्थ, शक्तिशाली । **पतौ** – प्रतापसिंह । **भारथ** – भारत, युद्ध । **मांझल** – मध्यमें । **पाथ** – पार्थ, अर्जुन । **हिचै** – युद्ध करता है, युद्धमें काटता है । **गुण** – कीर्ति, यश ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मँडै खग झाट दियै कवि[1] मौज ।
'फतौ' खळ सीस उडावत फौज ।
सझै[2] वर[3] हूर वजै रथ सौक[4] ।
'झुंझावत'[5] झूंझ करै रवि झोक[6] ।। ३५३

धमंधम हैखुर सेस धुजाव ।
जुटै खग 'नाहर' 'क्रन्न'[7] सुजाव ।
जुड़ै खग 'लाल' समोभ्रम 'जैत' ।
'उदावत'[8] 'जैत'[9] लड़ै अखड़ैत ।। ३५४

'जोधावत' 'साहिबसिंघ'[10] सुजोस ।
रिमां तरवार[11] हणै घण रोस ।
उडावत[12] लोह धरे[13] खत्र आघ ।
विहारियदास[14] समोभ्रम 'वाघ' ।। ३५५

वहै[15] खग रौद हणै जुध वेर ।
'फतौ' सिवदांन सुतन्न[16] अफेर ।

---

१ ख. ग. सिव । २ ख. सझे । ३ ख. बर । ४ ख. ग. सोक । ५ ख. ग. झूझावत । ६ क. झोक । ७ ख. क्रंन । ग. क्रन । ८ ख. ऊदावत । ९ ख. ग. देद । १० ख. ग. साहिबसींघ । ११ ख. तरवारि । १२ ग. उदावत । १३ ख. धरै । १४ ख. बोहारीयदास । ग. विहारीयदास । १५ ख. बाहै । ग. वाहै । १६ ख. ग. सुतन ।

---

३५३. **मँडै...झाट** – तलवारोंसे युद्ध करता है । **फतौ** – फतहसिंह । **उडावत** – काटता है । **वर** – पति । **हूर** – परी, अप्सरा । **सौक** – तेज गतिसे आकाशमें वायुयानादिके चलनेकी ध्वनि विशेष । **झुंझावत** – झूंझारसिंहका वंशज । **झूंझ** – युद्ध । **रवि** – सूर्य । **झोक** – शाबाश ।

३५४. **धमंधम** – घोड़े आदिके वेगसे चलनेसे भूमिके कंपनकी ध्वनि । **हैखुर** – घोड़ेके टाप । **सेस** – शेषनाग । **धुजाव** – कंपन । **जुटै** – भिड़ता है । **नाहर** – नाहरसिंह । **क्रन्न** – करणसिंह । **सुजाव** – पुत्र । **जुड़ै** – भिड़ता है, टक्कर लेता है । **लाल** – लालसिंह । **समोभ्रम** – पुत्र । **जैत** – जैतसिंह । **उदावत** – राठौड़ोंकी उदावत शाखाका व्यक्ति । **अखड़ैत** – योद्धा ।

३५५. **जोधावत** – जोधाका वंशज । **रिमां** – शत्रुओं । **रोस** – रोष, कोप । **खत्र** – क्षत्रियत्व, क्षत्रिय । **आघ** – मान्य, सम्मान । **वाघ** – वाघसिंह ।

३५६. **रौद** – मुसलमान । **वेर** – समय । **फतौ** – फतहसिंह । **अफेर** – न मुड़ने वाला, वीर ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विढ़ै[1] रिण[2] वीच[3] जवांनिय[4] वेस[5] ।
तठै हरनाथ तणौ[6] 'सगतेस' ।। ३५६

तठै 'हठमाल' 'किसोर' सुतन्न[7]* ।
केवी खग झाटत[8] 'आसकरन्न'◈ ।
जुटै[9] खग झाट 'हठी' जिणवार ।
'हठी' सिर वाजत[10] खाग हजार ।। ३५७

'जोगावत' धार धसंत[11] 'जवांन'[12] ।
सझै[13] जिम तापस गंग सिनांन[14] ।
उडै[15] जरदैत वजै[16] खग एम ।
जई मझि फज्जर[17] गज्जर[18] जेम ।। ३५८

---

१ ख. बिढ़ै । ग. वढ़ै । २ ख. रण । ३ ख. ग. बीच । ४ ख. ग. जवांनीय । ५ ख. बेस । ६ ग. तणो । ७ ख. सुतंन्न । ग. सुतंन ।

*यहांसे आगे ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न पंक्तियां मिली हैं—

'मिले झड लोह षगां वड मन ।।
वरा छक जूटत घाट वराड़ ।
अनो हरनाथ तणौ अवनाड ।।'

नोट – ख. प्रतिमें यहांसे आगेकी पंक्तियां वे हैं जिनका पाठान्तर पृष्ठ १०२ में दिया जा चुका है । उन पंक्तियोंके अतिरिक्त भी इस ख. प्रतिमें उनसे आगे कुछ पंक्तियां और मिली हैं जो निम्न हैं किन्तु ये सब ग. प्रतिमें नहीं मिली हैं । ग. प्रतिमें जो मिली थीं उनका पाठान्तर पृष्ठ १०२ पर दिया जा चुका है, वहां पर ये पंक्तियां ख. प्रतिमें नहीं मिली थीं किन्तु यहाँ पर ख. प्रतिमें वे ही पंक्तियां मिल गई हैं । इनके अतिरिक्त ख. प्रतिमें कुछ और पंक्तियां यहाँ पर मिली हैं जो ग. प्रतिमें यहां पर नहीं हैं, वे निम्न हैं—

'रूकां झट हीक पाडै पषरैत । जिकै असि आप चढ़ै करि जैत ।।
बषांणत भांण 'त्रिषे' गज वोह । 'अनो' हरनाथ तणौ अंगि लोह ।।'

८ ग. झाड़त ।

◈यहां पर इससे पहले इस पंक्तिके ऊपर ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न पंक्ति मिली है—
'तठै 'विरतो' चंद्रभांण सुतंन्न ।'

९ ख. जुडै । १० ख. बाजत । ११ ग. धासंत । १२ ख. जघान । १३ ख. ग. सझे । १४ ख. ग. सनांन । १५ ख. उठै । १६ ख. बजै । १७ ग. फजर । १८ ग. गझ्झर ।

---

३५६. जवांनिय वेस – युवावस्था । सगतेस – शक्तिसिंह ।

३५७. हठमाल – हठीसिंह । किसोर – किशोरसिंह । सुतन्न – पुत्र । केवी – शत्रु । हठी – हठीसिंह ।

३५८. जोगावत – जोगसिंहका वंशज पुत्र । धार…जवांन – जोगसिंहका वंशज जवानसिंह जब युद्ध में प्रवेश करता है । तापस – तपसी । फज्जर – प्रात:काल । गज्जर–प्रात:काल बजने वाले घंटे पर होने वाले प्रहार, या प्रात:काल बजने वाला घंटा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जठै धर[1] सीस पड़ै उडि[2] जांम ।
तठै असि झोकि लड़ै धड़ तांम ।
महारत[3] मुंड विहंड[4] हसंत ।
धरा मझि रुंड[5] वितुंड[6] धसंत ।। ३५६
हुई घड़ खाग झटां धड़ हेक ।
किया[7] धड़ आप सरीख अनेक ।
किरम्मर[8] तीर वहै[9] घण[10] कूंत ।
हसै रिख नारद पौरस हूंत[11] ।। ३६०
घड़ी दुय[12] एम करै[13] घमसांण ।
वरै[14] रँभ प्रांण चढ़ैस[15] विमांण[16] ।
वसै स्त्रुगि 'धूहड़' सीस वरीस ।
सिरै रुंडमाळ कियौ[17] हर सीस ।। ३६१
इखे[18] पित ऊपर[19] लोह अपार ।
करै खग झाट 'गुमांन' कुंवार[20] ।
धारूजळ मुग्गळ[21] तूटत ध्रुंह ।
विढ़े[22] 'अभमुन्य'[23] ज्यूंही[24] चक्रव्रूंह ।। ३६२

---

१ ख. उडि । ग. उड । २ ख. ग. धर । ३ ख. ग. हकारत । ४ ख. विहंड । ५ ख. ग. रुंड । ६ ख. ग. वितूंड । ७ ख. कीया । ८ ख. ग. करिमर । ९ ख. बहै । ग. वहै । १० ख. घसा । ११ ख. कौतिकहूंत । ग. कौतकहूंत । १२ ख. ग. दोय । १३ ख. ग. करे । १४ ख. बरे । ग. वरे । १५ ख. ग. चढ़ेस । १६ ख. बिमांण । १७ ख. कीयौ । १८ ख. ईषे । ग. इषे । १९ ख. ग. ऊपरि । २० ख. कुवार । २१ ख. ग. मूंगल । २२ ख. बिढ़ै । २३ ख. ग. अभमुंन्नि । २४ ख. ग. प्रतियोंमें यह शब्द नहीं है ।

---

३५६. **जांम** – समय, पहर । **मुंड** – मस्तक । **रुंड** – धड़ ।

३६०. **हुई घड़** – घुड़-सेना । **झटां** – प्रहारों । **किरम्मर** – तलवार । **कूंत** – भाला ।

३६१. **घमसांण** – युद्ध । **रँभ** – अप्सरा । **स्त्रुगि** – स्वर्गमें । **धूहड़** – राव धूहड़के वंशज, राठौड़ । **वरीस** – प्रदान करने वाला । **सिरै** – श्रेष्ठ ।

३६२. **इखे** – देख कर । **गुमांन** – गुमानसिंह । **धारूजळ** – तलवार । **विढ़े** – वीर गति प्राप्त हुआ । **अभमुन्य** – अभिमन्यु ।

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

जोए लुघ[1] ऊपर[2] भाजि[3] न जाय[4] ।
घणी कुळ लाज लड़ै[5] घण घाय ।
जिसी[6] विध[7] बाळक[8] ह्वै भ्रगराज[9] ।
गिणै नह बेस[10] हणै गजराज ।। ३६३
झडै खगथाट लोहां झिलमिल्ल[11] ।
तेगां मुंह घाट हुवौ[12] तिलतिल्ल[13] ।
सुतौ रिण सेज[14] परी वर सूर ।
हुई घण मीर किया[15] वर हूर ।। ३६४
चढ़े रथ नेह 'हठी' वर[16] चाहि ।
मिळे[17] स्रुगि इंदर[18] मिंदर माहि ।
जठै खळ भूक हुवै हय जम्म ।
'दलावत' वाहत[19] खाग 'पदम्म'[20] ।। ३६५
वहै[21] खग वीज[22] ज्युंहीं[23] खग[24] वूठ ।
'दलौ'[25] 'अमरावत' जूटत दूठ[26] ।
करै खग झाट चंडी जयकार ।
समोभ्रम 'रूप' लड़ै 'सिरदार' ।। ३६६

---

१ ख. लुप । ग. लघु । २ ख. उंम्मर । ग. उमर । ३ ख. भागि । ४ ग. जाई । ५ ग. लडे । ६ ग. जिसि । ७ ख. विधि । ग. वि । ८ ख. वालक । ९ ख. ग. मृगराज । १० ग. वेस । ११ ख. ग. झिलझिल्ल । १२ ग. हुम्रो । १३ ख. ग. तिलतिल । १४ ख. ग. सेझ । १५ ख. ग. कीया । १६ ख. ग. सुत । १७ ग. मिलै । १८ ग. रंदर । १९ ख. बाहत । २० ग. पद्दम्म । २१ ख. बहै । २२ ख. बीज । २३ ख. ग. जहीं । २४ ख. ग. घण । २५ ग. दलो । २६ ख. दुठ ।

---

३६३. भ्रगराज – मृगराज, सिंह । बेस – वयस, आयु ।

३६४. लोहां झिलमिल्ल – घावोंमें तरबतर हो कर । रिण सेज – रण-शय्या । परी – अप्सरा । मीर – मुसलमान, बड़ा मुसलमान सरदार । हूर – अप्सरा ।

३६५. हठी – हठीसिंह । भूक – चूर-चूर, ध्वंस । दलावत – दलसिंहका वंशज । पदम्म – पदमसिंह ।

३६६. वीज – बिजली । वूठ – वर्षा । दलौ – दलसिंह । अमरावत – अमरसिंहका वंशज । दूठ – जबरदस्त । जयकार – जय-ध्वनि । रूप – रूपसिंह । सिरदार – सरदारसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अरी घट सावळ अंत अळूझ ।
झिकै[1] 'सकतावत' दारुण[2] झूझ[3] ।
समोभ्रम 'ऊद' धुबै चँद्र हास ।
दळां खळ डोहत मोहन[4] दास ।। ३६७

भळाहळ सेळ घमोड़त[5] 'भांण' ।
पड़ै मुगळांण जुआंण[6] पिठांण ।
सत्रां करि सेल उभेल सरीर ।
वहै[7] वधिखाग[8] 'जसावत' वीर[9] ।। ३६८

सत्रां गहि[10] कंध उडावत सीम[11] ।
भमावत जांणि गजां घड़[12] भीम ।
हिचै भड़ 'माल' वहै[13] खग हाथ ।
निजोड़त रोद[14] समोभ्रम 'नाथ' ।। ३६९

घणूं खग झाट करै झळ घांम ।
जोरावरसींघ[15] 'फतावत' जांम ।
सँमोभ्रम 'केहरि' 'माहवसाह' ।
निजोड़त रोद[16] खगां नरनाह ।। ३७०

---

१ ख. ग. झीकै । २ ख. दारण । ३ ख. झूक । ४ ख. ग. मोहण । ५ ख. ग. धमोडत । ६ ख. जुयांण । ग. जुवांण । ७ ख. बहै । ८ ख. बधिषाग । ९ ख. बीर । १० ख. ग. ग्रहि । ११ क. सीस । १२ ख. धड़ । १३ ख. बहै । १४ क. रोद । १५ ग. सिंघ । १६ क. रौद ।

---

३६७. अरी – अरि, शत्रु । घट – शरीर । अंत – आंतें । सकतावत – शक्तिसिंहका वंशज । झूझ – युद्ध । ऊद – उदयसिंह । धुबै – प्रहार करता है । चँद्र हास – तलवार । डोहत – मथन करता है, ध्वंस करता है ।

३६८. झळाहळ – चमकदार, देदीप्यमान । घमोड़त – प्रहार करता है । भांण – सूरजसिंह । पड़ै – वीर-गति प्राप्त होते हैं । मुगळांण – मुगल, यवन । जुआंण – जवान, युवा । पिठांण – युद्ध । जसावत – जसवंतसिंहका वंशज ।

३६९. गजां घड़ – हाथी दल । भीम – पांडु पुत्र भीम । हिचै – युद्ध करता है । माल – मालदेव या रायमलसिंह । निजोड़त – काटता है, संहार करता है । रोद – यवन, मुसलमान । समोभ्रम – पुत्र । नाथ – नाथूसिंह ।

३७०. फतावत – फतहसिंहका वंशज । केहरि – केसरीसिंह । माहवसाह – माधोसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनौ हरि तेज वणै[1] दइवांण[2] ।
जुड़ खग 'जैत'[3] तणौ जमरांण ।
पछाड़त मुग्गळ[4] चंद्र - प्रहास[5] ।
दिपै 'अणदावत' सूंदरदास ।। ३७१

समोभ्रम 'माहव' 'ग्यांन' सधीर ।
वढै[6] खग झाट थटां वड वीर[7] ।
भिड़ै खग झाट 'गुमांन' भुजाळ ।
'विहारिय'[8] 'संभ्रम' क्रोध विसाळ ।। ३७२

चका चमराळ करै खग चूर ।
सुतं[9] 'सबळेस' 'दुरज्जण'[10] सूर ।
'जसावत' जूटत बाहुग्रजांन ।
दियै[11] खग झाट खळां 'सिवदांन' ।। ३७३

'द्वारावत' सूर 'अनोप' दुझाल ।
खगां झट भांण दिखावत ख्याल ।
तठै धुबियौ[12] जुध लोह अताघ ।
वाहै खग 'भांण' समोभ्रम 'वाघ' ।। ३७४

---

१ ख. बिनै । २ ख. दईवांण । ३ क. झैत । ४ ख. मूंगल । ५ ग. प्रहास्य । ६ ख. बिढ़ै । ७ ख. बीर । ८ ख. बिहारीय । ९ ख. सुत । १० ग. दुरजण । ११ ख. ग. दीयै । १२ ख. धुबीयौ । ग. धुवियौ ।

---

३७१. **अनौ** – अनाड़सिंह । **हरि** – हरिसिंह । **दइवांण** – वीर (?) । **जैत** – जैतसिंह । **जमरांण** – भयंकर रूप । **पछाड़त** – मारता है, काटता है । **चंद्र-प्रहास** – तलवार । **दपै** – शोभायमान होता है । **अणदावत** – आनंदसिंहका वंशज ।

३७२. **माहव** – माधोसिंह । **ग्यांन** – ज्ञानसिंह । **थटां** – दलों, सेनाओं । **गुमांन** – गुमानसिंह । **भुजाळ** – योद्धा, वीर । **विहारिय** – बिहारीसिंह । **संभ्रम** – पुत्र ।

३७३. **चका** – चक्र, सेना । **चमराळ** – मुसलमान । **चूर** – ध्वंस, नाश । **सबळेस** – सबलसिंह । **दुरज्जण** – दुर्जनसिंह । **जसावत** – जसवंतसिंहका वंशज । **जूटत** – भिड़ता है । **बाहुग्रजांन** – आजानबाहु, लंबी भुजाओं वाला, वीर ।

३७४. **द्वारावत** – द्वारकादासका वंशज । **अनोप** – अनोपसिंह । **दुझाल** – वीर । **भांण** – सूर्य । **ख्याल** – कौतुहल । **धुबियौ** – प्रचंड रूपसे हुआ, तीव्र वेगसे हुआ । **अताघ** = अथाग – अपार, असीम । **भांण** – सूरजसिंह । **वाघ** – बाघसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'पीथावत' सूर 'करन्न'[1] प्रचंड ।
खगां झट रोद हणै खरहंड ।
'सवाइय'[2] 'अम्मरसिंघ'[3] सुजाव ।
वाहै[4] खग आतस रूप वणाव ।। ३७५

'अखौ' 'अणदावत' वीजळ ऊक ।
भयंकर मेछ करै जुध भूक ।
घणा खग घाव तुरां घमसाव ।
जुड़ै भड़ 'माहव' *'कन्न' सुजाव ।। ३७६

सवाइय वाहत खाग सक्रोध ।
जुटै इम 'माहव'* संभ्रम जोध ।
विढ़ै[5] करिमाळ करै धजवाह ।
समोभ्रम 'केहरि'[6] 'गाजीयसाह' ।। ३७७

प्रचंडक रोद[7] हणै रुख पाथ[8] ।
नरां पति 'माहय'रौ[9] हरनाथ ।
सकाज 'फतावत' खाग समाथ ।
हुई[10] घण रूक करै हरनाथ[11] ।। ३७८

---

१ ग. करंन्न । २ ख. ग. सवाईय । ३ ख. अंम्मर । ग. अमर । ४ ख. बाहै ।
*···*चिन्हांकित पद्यांश ख. प्रतिमें नहीं है ।
५ ख. वढै । ६ ख. केहर । ७ ग. रौद । ८ ख. माथ । ९ क. माहवरौ । १० क. हुई । ग. हइ । ११ क. हरिनाथ ।

---

३७५. **पीथावत** – पृथ्वीसिंहका वंशज । **करन्न** – करणसिंह । **खरहंड** – सेना, फौज । **सवाइय** – सवाईसिंह । **सुजाव** – पुत्र ।

३७६. **अखौ** – अक्षयसिंह । **अणदावत** – आनंदसिंहका वंशज । **वीजळ** – तलवार । **ऊक** – प्रहार, वार । **मेछ** – म्लेच्छ, यवन । **भूक** – ध्वंस, नाश । **तुरां** – घोड़ों । **घमसाव** – समूह । **माहव** – माधोसिंह । **कन्न** – करणसिंह ।

३७७. **सवाइय** – सवाईसिंह । **संभ्रम** – पुत्र । **जोध** – योद्धा, वीर । **करिमाळ** – तलवार । **धज** – भाला । **वाह** – प्रहार । **समोभ्रम** – पुत्र । **केहरी** – केसरीसिंह । **गाजीयसाह** – गजसिंह ।

३७८. **प्रचंडक** – प्रचंड, महान । **रोद** – यवन । **रुख** – प्रकार । **पाथ** – पार्थ, अर्जुन । **माहवरौ** – माधोसिंहका । **हरनाथ** – हरनाथसिंह । **फतावत** – फतहसिंहका वंशज । **समाथ** – समर्थ, शक्तिशाली । **हुई** – हय, घोड़ा । **रूक** – तलवार ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अड़ीखँभ माधवसींघ[1] अभंग ।
जुड़ै[2] खग 'ऊद तणौ' भड़ जंग ।
'अखा' अचरिज[3] किसौ[4] घर एण ।
सुरागुर[5] पीठ जिके[6] चंद्रसेण[7] ।। ३७९
जोधा भड़ एह पटायत[8] जांणि ।
वधै[9] जुध सूर 'उमेद' वखांणि ।
सभै खळ थाट खगां झट सूर ।
'पतौ' 'महरांण' तणौ व्रद पूर ।। ३८०
तपं खग-पांणि पियै[10] जळ तेम ।
जवन्न घड़ा[11] दधि कुंभज जेम ।
धड़च्छत[12] फील खगां सिरधार* ।
रचै मुकतागळ[13] मांगणिहार[14] ।। ३८१
अटा दछि ज्याग घटा गज[15] ऐम ।
जटाधर क्रोध छुटा[16] गण जेम ।

---

१ ख. माधुव । २ ख. जुटै । ३ ग. अचिरज । ४ क. किसो । ५ ख. सूरांगुर । ६ ख. ग. जिकै । ७ ख. सैण । ८ ख. पटाइत । ९ ख. बधे । ग. वधे । १० ख. पीयं । ११ ख. वडा । १२ ख. धड़फछत । ग. धड़छत ।

*ख. प्रतिमें यह पंक्ति निम्न प्रकार है—
'धडफछत फील सिरां षग धार ।'

१३ ख. मुगतागलि । १४ ख. जोगणिहार । १५ ख. गजि । १६ क. घुट ।

---

३७९. अड़ीखँभ – जबरदस्त, प्रचंड । अभंग – वीर । ऊदतणौ – उदयसिंहका । अखा – 'अक्षयसिंह' अथवा 'कहते हैं' । अचरिज – आश्चर्य । घर – वंस । एण – इस । सुरागुर – सूरवीरोंमें महान । पीठ – पीछे । चंद्रसेन – स्वतन्त्रताका परम उपासी राठौड़ वीर राव चंद्रसेन ।

३८०. पटायत – बड़ी जागीरका स्वामी । पतौ – प्रतापसिंह । महरांण – समुद्रसिंह । तणौ – तनय, पुत्र ।

३८१. तपं – तप, तपस्या या तपस्वी । खग पांणि – खड्गधारी । जवन्न – मुसलमान । दधि = उदधि – समुद्र । कुंभज जेम – अगस्त ऋषि । धड़च्छत – काटता है । फील – हाथी । मुकतागळ = मुक्ता + गल – मोतियोंका समूह । मांगणिहार – याचक ।

३८२. अटा – (?) । दछि – प्रजापति, दक्ष । ज्याग – यज्ञ । जटाधर – महादेव ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इसी[1] विध[2] जूटत जोम अमाप ।
'तेजो' मय 'भांण' बियौ 'परताप' ।। ३८२

जोधा राठौड़–समोभ्रम[3] 'सांमळ' 'जग' सुझेस[4] ।
उकेलत[5] सेल खळां खळां 'अमरेस' ।
'जसावत'[6] सींघ[7] 'सवाइय'[8] जंग ।
बंगाळक खाग करंत बरंग[9] ।। ३८३

किलम्मक[10] थाट हणै खग कोप ।
अँगोभ्रम 'बद्रीयदास' 'अनोप' ।
उठै[11] 'कुसळावत' रोस उमंग ।
जुरावरसींघ[12] धसै[13] मझि जंग ।। ३८४

घटा मिळि फौज[14] त्रंबागळ घोर ।
'जुरा'[15] सिर बूठत लोह सजोर ।
धसै उससै निहसै[16] खग धार ।
वरावत[17] हूर घणा तिण वार ।। ३८५

---

१ ख. इसा । २ ख. बिधि । ३ ग. समोभ्रम । ४ ख. सझेस । ५ ख. ग. उझेलत । ६ ख. जसाउत । ७ ग. सिंघ । ८ ख. सवाई । ग. सवाईय । ९ ग. वरंग । १० ख. किलंमक । ग. किलमक । ११ ग. उठे । १२ ख. ग. जोरावरसिंघ । १३ ख. ग. धसे । १४ ग. फोज । १५ ख. ग. जोरा । १६ ग. निहस्यं । १७ ख. बरात ।

---

३८२. **भांण**–सूरजसिंह । **बियौ**–दूसरा वंशज । **परताप**–प्रतापसिंह ।

३८३. **समोभ्रम**–पुत्र । **सांमळ**–श्यामसिंह । **जग**–जगतसिंह । **उकेलत**–संहार करता है । **अमरेस**–अमरसिंह । **जसावत**–जसवंतसिंहका वंशज । **सींघ सवाइय**–सवाई-सिंह । **बंगाळक**–मुसलमान । **बरंग**–खंड, टूक ।

३८४. **किलम्मक**–मुसलमान । **थाट**–सेना । **अँगोभ्रम**–पुत्र । **अनोप**–अनोपसिंह । **कुसळावत**–कुशलसिंहका वंशज ।

३८५. **त्रंबागळ**–नगाड़ा । **घोर**–ध्वनि । **जुरा**–जोरावरसिंह । **सिर**–ऊपर । **बूठत**... **सजोर**–पूर्ण शक्तिसे जोरावरसिंह पर शस्त्रोंका प्रहार होता है । **धसै...धार**–वह जोरावरसिंह बलात् सैन्य-दलमें घुसता है, जोशपूर्वक प्रहार करता है और अनेक वीरोंको धराशायी कर के अप्सरा वरण करता है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वरै[1] रंभ कंठ धरै[2] वरमाळ[3] ।
चढै[4] खग धार पड़ै[5] कळिचाळ[6] ।
अपच्छर[7] सूर विमांण[8] उडाय ।
जोधहर[9] तांम वसै[10] स्रग[11] जाय ।। ३८६

उदावत राठौड़—जुड़ै[12] इम 'जोधहरां' जजरेत[13] ।
अठा अग्र[14] ऊदहरा अखड़ैत ।
जियां[15] मझि सूर 'हृदौ' जमरांण ।
घणै[16] छक पूर धसै घमसांण ।। ३८७
वहै[17] धज साबळ खाप[18] विहार ।
विढै[19] खळ भूक करै जिणवार ।
समोभ्रम 'राजड़' यूं[20] घमसांण[21] ।
जुनौ[22] भड़ 'रूप' 'अजै-कपि' जांण[23] ।। ३८८
'पतावत' रोळा विसाबळ पांण ।
मरू[24] भड़ तांम छिबै[25] असमांण ।

---

१ ख. बर । ग. वरे । २ ख. ग. धरे । ३ ख. बरमाल । ४ ख. चढ़े । ५ ख. पडे । ६ ख. क. कळिचाल । ७ ख. ग. अपछर । ८ ख. बिमांण । ९ ख. जोधाहर । १० ख. बहे । ११ ख. श्रुगि । १२ ग. जुडे । १३ ख. जजरैत । १४ ख. उग्र । १५ ख. जीयां । १६ ग. घणे । १७ ख. बहै । १८ ख. षाग । १९ ख. बिढ़ै । २० ग. युं । २१ ख. घमसांणि । २२ ख. ग. जूंनौ । २३ ख. ग. जांणि । २४ ख. ग. मारू । २५ ख. छिवे । ग. छिवै ।

---

३८६. कळिचाळ – वीर, योद्धा, युद्धभूमि । जोधहर – राव जोधाके वंशज । तांम – तब । स्रग – स्वर्ग ।

३८७. जजरेत – वीर, योद्धा । अठा अग्र – यहांसे अगाड़ी । ऊदहरा – उदावत शाखाके राठौड़ । जियां…घमसांण – जिनके बीचमें वीर हृदयसिंह जोशपूर्ण भयंकर यमराजके समान रूप धारण कर के युद्ध करता है ।

३८८. धज – भाला । खाप – तलवार या तलवारका म्यान । विढै – काटता है । भूक – ध्वंस । राजड़ – राजसिंह । जुनौ – प्राचीन । रूप – रूपसिंह । अजै-कपि – अंजनी-पुत्र हनुमान ।

३८९. पतावत – राठौड़ वंशकी एक शाखा अथवा इस शाखाका व्यक्ति, प्रतापसिंहका वंशज । रोळा – युद्ध । मरू = मारू – राठौड़ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुछार[1] भुंहार[2] चढ़ै[3] वड मन्न[4] ।
वधै[5] बळि बावळि[6] जांणि विसन्न[7] ।। ३८९

जई छक ऊपण[8] तेज[9] सराज ।
धिख[10] च्चख[11] ऑरवियौ[12] धजराज ।
उडै उर टक्कर[13] थाट अनेक ।
वहै[14] धज साबळ पांणि[15] विछेक ।। ३९०

इसी विधि[16] सेलह[17] पौस[18] उभेल ।
साथह्जि[19] काढत हंस रुसेल ।
करी सिर वेधत[20] काढत कूंत ।
हुबै रत बोळ[21] भँभार वहूंत ।। ३९१

अवा सह खेलत फाग भुग्राळ[22] ।
पतंग कि जांणि खुलैं[23] परनाळ ।
धमं धम वाहत[24] यूं[25] चवधार ।
उथैलत[26] मीर गजां असवार ।। ३९२

---

१ ख. मूंछार । २ ख. बुहार । ३ ख. ग. चढ़े । ४ ख. मंन्न । ५ ख. वधे । ६ ख. ग. वावळि । ७ ख. बिसन्न । ८ ख. उफण । ९ ख. तैज । १० ख. धिखे । ११ ख. ग. चष । १२ ख. ग. ओरवीयौ । १३ ख. ढक्कर । १४ ख. बहै । १५ ख. ग. पांण । १६ ख. बिधि । १७ ख. सिल्लह । ग. सिलह । १८ ख. पोस । ग. पौंस । १९ ख. ग. साथेहीज । २० ख. बेधत । २१ ख. छोल । २२ ख. ग. भुवाळ । २३ ख. षुले । २४ ख. बाहत । २५ ग. यूं । २६ ख. ग. उथेलत ।

---

३८९. मुछार – श्मश्रु, मूछ । वड मन्न – वीर । विसन्न – विष्णु ।

३९०. ऊपण = उफण – उबाल खा कर । धिख च्चख – आंखोंमें क्रोधाग्नि प्रज्वलित करता हुआ । ऑरवियौ – झोंक दिया । धजराज – घोड़ा । विछेक – विशेष ।

३९१. सेलह पौस – अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित अथवा कवचधारी । हंस – प्राण । रुसेल – जोशीला । करी – हाथी । कूंत – भाला । बोळ – लाल । भँभार – छेद, सूराख ।

३९२. पतंग – (?) । परनाळ – छतसे पानी गिरनेका नाला । चवधार – भाला । उथैलत – उलट कर गिरता है । मीर – बड़े-बड़े मुसलमान सरदार ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जगी[1] हवदो[2] भिदि सबळ[3] जांम ।
तुटै[4] जरदैत दुसारण तांम ।
तठै मिळि मेछ चहूंवळ[5] हूंत ।
करां सर[6] खाग अवाहृत[7] कूंत ।। ३९३

मिळै[8] तदि हेक निमख[9] मंझारि ।
चिलंक्कत तूट[10] लगी खग च्यारि ।
असी तह फूट[11] चिलत्तह[12] अंग ।
खुबै[13] हिक साबळ दोय खतंग ।। ३९४

लुहां[14] रत छूट[15] हुवौ रंग लाल ।
गडै[16] करि खेलत फाग गुलाल ।
खुभै[17] अंग लोह छछोह खतंग ।
तिसीहि[18] झ[19] भांत[20] सुरंग तुरंग ।। ३९५

'जसै' धखि क्रोध धरै[21] जमजाळ ।
तठै खिज काठिय[22] खाग उताळ ।
हिलोहळ रोद[23] चहूं-वळ होय ।
दळां खग[24] टूक करै दोय दोय ।। ३९६

---

१ ख. ग. जंगी । २ क. ख. हवदौ । ३ ख. साबळ । ४ ख. तूटौ । ग. तुटो । ५ ख. बल । ६ ख. सिर । ७ ख. अबात । ८ ख. ग. मिले । ९ ख. निमंख । १० ख. तूटि । ११ ख. फूटि । १२ ख. ग. चिलतह । १३ ख. ग. षुभै । १४ ख. ग. लोहां । १५ ख. छूटि । १६ ख. ग. गडे । १७ ख. ग. षुभे । १८ ख. तिसीही । १९ ख. ज । २० ख. भांति । २१ ख. धरे । २२ ख. ग. काढीय । २३ ख. रौद । २४ ग. षळ ।

---

३९३. **हवदौ** – हाथीकी अम्मारी । **जरदैत** – कवचधारी वीर । **दुसारण** – (?) । **चहूंवळहूंत** – चारों ओरसे ।

३९४. **चिलंक्कत** – कवच । **चिलत** – कवच । **खतंग** – तीर, तीर विशेष ।

३९५. **छछोह** – पैना, तीक्ष्ण । **सुरंग** – लाल ।

३९६. **जसै** – जसवंतसिंह । **धखि क्रोध** – क्रोधाग्निमें प्रज्वलित हो कर । **जमजाळ** – बंदूक विशेष (?) । **हिलोहळ** – विलोड़ित, कंपनयुक्त । **रौद** – यवन । **चहूं-वळ** – चारों ओरसे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रिमां[1] दळ बीच 'जसौ' इण रूख ।
समूद्रह[2] वीच[3] जिसौ सुरमुक्ख
वढ़ै जरदैत गु गजबाज ।
जुड़ै इम 'ऊदहरौ' 'जसराज' ।। ३९७

*सवाइय[4] 'मांन' तणौ सिरताज ।
निझोड़त[5] मुगाळ[6] झाट नराज* ।
उठै 'जगरांम'तणौ[7] मझि एक ।
हुवौ[8] 'सुभरांम' समोभ्रम हेक ।। ३९८

तिकौ[9] असवार[10] बिचै तिणवार ।
एकौ[11] भड़ लख जिसौ उणवार ।
हुवै[12] रवि हेक[13] प्रथी[14] तप होय ।
दवै[15] नव लाख तरा[16] ससि दोय ।। ३९९

महाबळ आवत एक मयंद[17] ।
गराजत भाजत लाख गयंद ।
प्रळैझळ एक दमंग प्रचंड ।
खपावत जांणि घणा वन[18] खंड ।। ४००

---

१ ख. रमां । २ ख. ग. समुद्रह । ३ ख. बीचि ।
*···*चिन्हांकित पंक्तियां ख. प्रतिमें नहीं हैं ।
४ ग. सवाईय । ५ ग. निजोड़त । ६ ग. मुगल । ७ ख. जगरांमतणा । ८ ख. हुंतौ । ग. हुतौ । ९ ख. तिकै । ग. तिको । १० ख. असबोर । ११ ख. ग. एको । १२ ख. हुअै । १३ ख. एक । १४ ख. प्रियी । १५ ख. दवै । १६ ख. तारा । १७ ख. मयंव । १८ ख. बन ।

---

३९७. **जसौ** – जसवंतसिंह । **रूख** – प्रकार । **सुरमुक्ख** – अग्नि । **ऊदहरौ** – उदयसिंहका वंशज, उदावत । **जसराज** – यशवंतसिंह ।

३९८. **सवाइय** – सवाईसिंह । **मांन** – मानसिंह । **निझोड़त** – काटता है । **नराज** – तलवार । **जगरांम** – जगरामसिंह उदावत । **सुभरांम** – सुभरामसिंह उदावत ।

४००. **मयंद** – सिंह । **गराजत** – गर्जना करता है । **प्रलेझळ** – प्रलयकालकी अग्नि । **दमंग** – अग्नि-कण ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

दुवाघण देव एकौ[1] जगदीस ।
सको जग जेण नमावत सीस ।
इसी विध[2] 'मांन' महाभड़[3] हेक[4] ।
'उदावत' मुग्गळ[5] थाट अनेक ।। ४०१

विधं[6] धज साबळ चोळ वरन्न[7] ।
तुरस्स[8] जरद्द[9] अँगारक तन्न[10] ।
चठीठत साबळ ढाल चढंत ।
कँदोइय घेवर जांण कढंत* ।। ४०२

पड़ै[11] घण मूगळ सेल प्रचंड ।
खत्री गुर खीज कढी भल खंड ।
निलौ[12] कपि डांण भरंत निराट[13] ।
झड़ै खळ 'मांन' लड़ै खग झाट ।। ४०३

सिलैबँध[14] टूक पड़ंत समंग ।
पड़ै करि पाखर टूक पमंग ।
झळाहळ वीजळ[15] मंगळ झाळ ।
कमंधज वाहत[16] खाग कराळ ।। ४०४

---

१ ख. एको । २ ख. ग. विधि । ३ ख. माहाभड़ । ४ ग. हेक । ५ ख. मूगल । ग. मुगल । ६ ख. बिधै । ७ ख. बरंन्न । ग. वरन । ८ ख. ग. तुरस । ९ ख. ग. जरद । १० ख. तंम्न ।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

११ ख. ग. पाडे । १२ ख. ग. नीलौ । १३ ख. निरा । १४ ख. ग. सिल्हैबंध । १५ ख. बीजक । ग. बीजझ । १६ ख. बाहत ।

---

४०१. **मांन** – मानसिंह । **उदावत** – राठौड़ वंशकी उदावत शाखाका वीर ।

४०२. **चोळ वरन्न** – लाल रंग । **तुरस्स** – ढाल । **जरद्द** – कवच । **अँगारक** – लाल ।

४०३. **निलौ** – रंग विशेषका घोड़ा । **कपि** – वानर । **डांण** – छलांग । **निराट** – बहुत । **मांन** – मानसिंह ।

४०४. **सिलैबँध** – अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित अथवा कवचधारी । **समंग** – पूर्ण अंगों सहित । **पाखर** – घोड़ेका कवच । **पमंग** – घोड़ा । **झळाहळ** – चमकती हुई । **वीजळ** – तलवार । **मंगळ** – अग्नि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इसी विध[1] 'मांन' लड़ंत अबीह ।
जपै[2] कुण वार लहै इक जीह ।
अरी खग झाटत रोस उकंद ।
महाबळ[3] 'सांभळ' उठत[4] 'मुकंद' ॥ ४०५

तठै 'परताप' तणौ खळ तन्न[5] ।
करै खग झाटक सूर 'करन्न'[6] ।
समोभ्रम 'गोयंददास' सकाज ।
देवीचंद ढाहत रोद[7] दराज ॥ ४०६

धमंधम सेल खळां घट धींग ।
सझै[8] 'कुसळावत' पाहड़सींग[9] ।
धुबै 'अजबेस' खळां झळ धूप ।
रिमां धड़ मांहि समोभ्रम 'रूप' ॥ ४०७

मारू खग बाहत[10] 'बाघ'[11] मजेज ।
तठै[12] 'अजबावत' 'जोध' सतेज ।
भँजै खगि मेछ घड़ा घट भेद ।
उठै 'अणवत्त'[13] सूर 'उमेद' ॥ ४०८

जई खग वाढत[14] खांन 'जवांन' ।
दिपै 'सबळेस' तणौ सिवदांन ।

---

१ बिधि । ग. विधि । २. ख. जपे । ३ ख. माहाबळ । ४ ख. ग. ऊत । ५ ख. तंत्र । ६ ख. करंन्न । ७ ख. ग. रौंद । ८ ख. ग. सभैं । ९ ख. ग. पाहड़सींघ । १० ख. वाहत । ११ ख. वाघ । १२ ख. जठै । १३ ख. अणदावत । १४ ख. बाढ़त ।

---

४०५. अबीह – वीर, निडर । सांमळ – श्यामसिह । मुकंद – मुकुन्दसिंह ।

४०६. परताप – प्रतापसिंह । तन्न – शरीर । झाटक – प्रहार । करन्न – करणसिंह । ढाहत – मारता है । दराज – महान ।

४०७. घट – शरीर । धींग – वीर । अजबेस – अजबसिंह । धूप – तलवार । रूप – रूपसिंह ।

४०८. मारू – राठोड़ । बाघ – बाघसिंह । मजेज – शीघ्र । अजबावत – अजबसिंहका वंशज । जोध – जोधसिंह । अणवत्त – आनंदसिंहका वंशज । उमेद – उमेदसिंह ।

४०९. जवांन – जवानसिंह । सबळेस – सबलसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विहंडत रोद[1] दळां विकराळ ।
'कलौ' 'हरिनाथ' तणौ कळिचाळ ।। ४०९
खगां झट देत गजां सिरि खीज ।
वणै[2] इम जांणि गिरां पर वीज[3] ।
महा जुध मज्झि छिबै[4] असमांण ।
दुवौ हदमाल लड़ै दइवांण[5] ।। ४१०
मिळै खग झाट हणै मुगळांण ।
जुरावर[6] रैण तणौ जमरांण ।
'हरी' सुत केहरि[7] और[8] हुबास[9] ।
पछाड़त मुग्गळ[10] चँद्रप्रहास ।। ४११
सत्रां घड़ खाग झटां घड़ सोध ।
जुटै मगरूर 'लखावत' जोध ।
उठै खळ[11] तोड़त खाग जरूर ।
'सवाइयसींघ'[12] 'विजावत' सूर ।। ४१२
लड़ै खग झाट[13] लियै कुळलाज ।
समोभ्रम 'रांम' 'अणँद' सकाज ।
वहै[14] खग मूंगल[15] होत वतीत[16] ।
जुगावत[17] 'पेम' लड़ै जुधजीत ।। ४१३

१ ख. ग. रौद । २ ख. ग. वणे । ३ ख. ग. बीज । ४ ख. ग. छिबं । ५ ख. ग. दईवांण । ६ ख. जोरावर । ग. जौरावर । ७ ख. केहर । ८ ख. ओरि । ग. ओर । ९ ख. वास । ग. हवास । १० ख. मूंगल । ग. मुगल । ११ ख. षग । १२ ख. ग. सवाईयसिघ । १३ ख. झाल । १४ ख. बाहै । ग. वहै । १५ ग. मूषल । १६ ख. बितीत । १७ ख. ग. जोगावत ।

४०९. **विहंडत** – काटता है, संहार करता है । **कलौ** – कल्याणसिंह । **कळिचाळ** – वीर ।
४१०. **दुवौ** – दूसरा । **हदमाल** – हृदयसिंह । **दइवांण** – वीर ।
४११. **जुरावर** – जोरावरसिंह । **रैण** – रणछोड़दास । **हरी** – हरिसिंह । **केहरि** – केसरीसिंह । **हुबास** – घोड़ा । **चँद्रप्रहास** – तलवार ।
४१२. **लखावत** – लक्ष्मणसिंहका वंशज । **विजावत** – विजयसिंहका वंशज ।
४१३. **रांम** – रामसिंह । **अणँद** – आनंदसिंह । **जुगावत** – जोगसिंहका वंशज । **पेम** – प्रेमसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उठै खग वाहत रोस[1] उमंग ।
'अखौ' 'बछराज'[2] तणौ अणभंग ।
मंडै[3] खग झाट करै खळ मौत[4] ।
'धनौ' भड़ धूहड़ गोरधनोत[5] ।। ४१४
समोभ्रम जीवणदास समाथ ।
हुवै खळ खाग लड़ै हरनाथ[6] ।
*उदावत[7] सूर पटायत ऐह[8] ।
उमेदक आगळि[9] पांण अछेह ।। ४१५
'बहादर'[10] 'जीवण'रौ[11] रण बोह[12] ।
'लखौ'[13] खळ थाट विभाड़त[14] लोह ।
निजोड़त वीजळ[15] मुग्गळ[16] नेठ ।
'जुरावर'[17] 'जोग' तणौ जग जेठ ।। ४१६
बळा भख वीजळ[18] झोकत बाथ[19]* ।
निजोड़त मेछ 'दिपावत' 'नाथ' ।
तठै 'सबळावत' सूरतसींघ[20] ।
सझै खळ दंगळ मोहणसींघ ।। ४१७

---

१ ख. रौस । २ ग. वछराज । ३ ख. ग. मंडे । ४ ग. मौत । ५ ख. गोरधनोत । ६ ख. हरिनाथ । ७ ख. ऊदावत । ८ ख. ग. एह । ९ ख. आगल । १० ख. बाहादर । ग. बहादर । ११ ग. रो । १२ ग. वोह । १३ ग. लषो । १४ ख. बिभाड़त । १५ ख. प्रतिमें यह शब्द नहीं है । १६ ख. मूंगल । ग. मुगल । १७ ख. ग. जोरावर । १८ ख. बीजल । १९ ग. बाथ ।

*....*ख. प्रतिमें यह पंक्तियां पुनः मिली हैं ।

२० ख. ग. सूरतसिंघ ।

---

४१४. **अखौ** – अक्षयसिंह । **धनौ** - धनराजसिंह । **धूहड़** – राठौड़ ।

४१५. **समाथ** – समर्थ, शक्तिशाली । **आगळि** – अगाड़ी ।

४१६. **बहादर** – बहादुरसिंह । **जीवणरौ** – जीवनसिंहका । **लखौ** – लक्ष्मणसिंह । **विभाड़त** – काटता है । **नेठ** – (बिलकुल ?) । **निजोड़त** – काटता है । **जुरावर** – जोरावरसिंह । **जोग** – जोगसिंह । **जगजेठ** – वीर ।

४१७. **बळा भख** – (?) । **वीजळ** – तलवार । **बाथ** – (?) । **दीपावत** – दीपसिंहका वंशज । **नाथ** – नाथूसिंह । **सबळावत** – सबलसिंहका वंशज । **सझै** – संहार करता है, मारता है । **दंगळ** – युद्ध ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विभाड़त[1] मूगळ खाग विहार[2] ।
समोभ्रम 'भाउ'[3] लड़ै सिरदार ।
सभै जुध ऐह[4] उदावत[5] 'सीह' ।
जैतावत– अठा अग्र 'जैत'हरा अणबोह[6] ।। ४१८

मँडै खग झाट थँडै नग मेर ।
'फतौ' 'भव'[7] 'गोरधनोत'[8] अफेर ।
सभै खग झाट हणै खळ साथ ।
नरां पति 'रूप' तणौ रघुनाथ ।। ४१९

धुबै[9] खळ 'नाहर' बीजळ[10] धार ।
'जुरावरसींघ'[11] तणौ जुधवार ।
रिमां थट वाढत झाट नराज ।
समोभ्रम 'सादल' तेज सकाज ।। ४२०

तछै खळ 'पेम' खगां झट तांम ।
रचै जुध एम समोभ्रम 'रांम' ।
ग्रहै खग वाह करै गजगाह ।
समोभ्रम 'मोहण' 'नाहर साह' ।। ४२१

---

१ ख. बिभाड़त । २ ख. बिहार । ३ ख. ग. भाऊ । ४ ख. ग. एह । ५ ख. ऊदावत । ६ ग. अणवीह । ७ ख. भउ । ८ ख. गोरधनौत । ग. गौरधनोत । ९ ग. धुवै । १० ख. वीजळ । ११ ख. ग. जोरावरसिंघ ।

---

४१८. **भाउ** – भाऊसिंह । **उदावत** – राठौड़ वंशकी शाखा या इस शाखाका व्यक्ति । **सीह** – (?) । **जैतहरा** – जैतावत शाखाके राठौड़ ।

४१९. **थँडै** – धकेलते हैं । **नग** – पैर, चरण । **मेर** – सुमेरु पर्वत । **फतौ** – फतहसिंह । **भव** – भावसिंह । **गोरधनोत** – गोरधनसिंहका वंशज । **अफेर** – वीर । **रूप** – रूपसिंह ।

४२०. **धुबै** – तेज, क्रोधमें होता है । **नाहर** – नाहरसिंह । **झाट** – प्रहार । **नराज** – तलवार । **सादल** – शार्दूलसिंह ।

४२१. **तछै** – काटता है । **पेम** – प्रेमसिंह । **समोभ्रम** – पुत्र । **रांम** – रामसिंह । **गजगाह** – युद्ध । **मोहण** – मोहनसिंह । **नाहर साह** – नाहरसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणी कढ़ वाहृत खाग अपाल ।
दलावतसींघ[1] 'सँग्रांम' दुझाल ।
वहै 'सिरदार' खळां खग वाढ़[2] ।
गरीवहृदास तणौ अवगाढ़ ॥ ४२२

जुड़ै[3] खग गैंद जहीं तळजोड़ ।
'अनावत' सींघउमेद[4] अरोड़ ।
वहै धज साबळ रोद[5] विभाड़[6] ।
'अजावत' साह वखां अवनाड़ ॥ ४२३

विढ़ै[7] 'सत्रसाळ'[8] खगां वरवीर[9] ।
समोभ्रम 'गोवरधन्न'[10] सधीर ।
'पतावत' सूर बहादर[11] पांण ।
मँडे[12] खग झाट खड़ै मुगळांण ॥ ४२४

उडै खग झाटक जंग अथाह ।
सुत[13] 'जयसाह' लड़ै 'इँद्रसाह' ।
मिरां[14] थट खाग झटां मसतांन ।
सझै 'इँद्रभांण' तणौ[15] सिवदांन ॥ ४२५

---

१ ख. ग. दलावतसिंघ । २ ख. बाढ़ । ३ ख. जुटै । ४ ग. सिंघउमेद । ५ ख. रौद । ६ ख. बिभाड़ । ७ ख. बिढ़ै । ८ ख. छत्रसाल । ९ ख. वरबीर । १० ग. गोवरधन । ११ ग. वहादर । १२ ख. मंडे । १३ ख. सुतं । १४ ख. ग. मीरां । १५ ग तणो ।

---

४२२. **अपाल** – बे-रोक-टोक । **सिरदार** – सरदारसिंह । **अवगाढ़** – वीर ।

४२३. **अनावत** – अनाड़सिंहका वंशज । **सींघ उमेद** – उम्मेदसिंह । **अरोड़** – वीर । **अजावत** – अजीतसिंहका वंशज । **वखां** – (?) । **अवनाड़** – वीर ।

४२४. **सत्र साळ** – शत्रुशालसिंह । **गोवरधन्न** – गोरधनसिंह । **पतावत** – प्रतापसिंहका वंशज । **मँडे**···**झाट** – तलवारसे प्रहार करता है । **खड़ै मुगळांण** – मुगल वीर-गतिको प्राप्त होते हैं ।

४२५. **जयसाह** – जयसिंह । **इँद्रसाह** – इंद्रसिंह । **मिरां** – मुसलमान ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

पटायत एह लड़ै अणपार ।
अगै भड़ भूप 'उमेदह' वार ।
धणी थट अग्र 'फतावत' ढाल ।
महाबळ[1] जूटत 'सूरजमाल' ।। ४२६
जुडै खग झाट कळोधर 'जैत' ।
'उरजण'[2] 'सादल'रौ अखड़ैत ।
लियै[3] खळ'[4] थाट हणै खग लाह ।
समोभ्रम 'राजड़' 'जैमलसाह' ।। ४२७
हरी सुत 'ऊदल' 'भांण' हठाल (ळ) ।
चँद्रासक त्रास हणै चमराळ ।
करै खग झाट जड़ै 'कममेस'[5] ।
'दुरज्जणसींघ'[6] तणौ 'पदमेस' ।। ४२८
खळां दळ भूक[7] करै भळ खंड ।
'पतावत' गोपिय[8] नाथ प्रचंड ।
छुटा[9] भड़ बाघ[10] जही[11] छक छोह ।
करणोत राठौड़—लड़ै 'करनोत'[12] झळहळ लोह ।। ४२९
सिरै 'दुरगावत' सूर सधीर ।
वधै[13] तिणवार[14] 'अभौ'[15] नरवीर[16] ।

१ ख. माहाबळ । २ ख. उरज्जण । ३ ख. लीयै । ४ ख. षग । ५ ख. कमेस । ६ ग. दुरजणसिंघ । ७ ख. भू । ८ ख. ग. गोपीय । ९ ख. छूटा । ग. छुटा । १० ग. वाघ । ११ ख. जिही । १२ ख. ग. करनोत । १३ ख. बधै । १४ ख. बार । १५ ग. अभो । १६ ख. नरबीर ।

---

४२६. **पटायत** – बड़ी जागीरका मालिक । **उमेदह** – उमेदसिंह । **थट** – सेना । **फतावत** – फतहसिंहका वंशज । **ढाल** – रक्षक । **सूरजमाल** – सूरजमल ।

४२७. **कळोधर** – वंशज । **जैत** – जैतावत शाखाका राठौड़ । **उरजण** – अर्जुनसिंह । **सादल** – शार्दूलसिंह । **अखड़ैत** – वीर । **राजड़** – राजसिंह । **जैमलसाह** – जैमलसिंह ।

४२८. **भांण** – सूरजभाणसिंह । **हठाल** – वीर । **चँद्रासक** – तलवार । **त्रास** – प्रहार । **चमराळ** – मुसलमान । **कममेस** – करमसिंहोत राठौड़ । **पदमेस** – पदमसिंह ।

४२९. **पतावत** – प्रतापसिंहका वंशज । **करनोत** – राठौड़ वंशकी एक शाखा ।

४३०. **दुरगावत** – प्रसिद्ध देश-भक्त राठौड़ दुर्गादासका पुत्र । **अभौ** – अभयसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निलै त्रिसळैंस चढ़ावत[1] निराट ।
अड़ै[2] सिर अंबर[3] जोम[4] उपाट ॥ ४३०
गई धखि[5] क्रोध झळाहळ[6] जागि ।
उभै चख छूटि झळाहळ आगि ।
विडंगक झाळि पवत्रिय[7] वाग ।
भळाहळ सेल ग्रहै[8] मध्य भाग ॥ ४३१
मिळै[9] भौह मूंछ वदन्न[10] मजीठ ।
निलौ[11] अस[12] कीध गरक्क[13] नत्रीठ[14] ।
करी उर[15] टक्कर ऊडत[16] केक ।
अरी जरदैत तुरीस अनेक ॥ ४३२
वहै[17] सफरी रुख सारत वाग[18] ।
खुरी पर[19] गाय छुरी पर खाग ।
इसै अस[20] 'नीब'हरौ[21] असवार ।
धड़ां गज पार करै चवधार ॥ ४३३
वहै[22] रत छौळ[23] ढहै विकराळ[24] ।
दँतूसळ भूमि खहै दुरदाळ[25] ।

---

१ ख. ग. चढ़ाव । २ ख. अडे । ३ ख. अंव्वर । ४ ग. जौम । ५ ख. घष । ६ ख. हलाहल । ७ ख. पपत्रीय । ८ ख. ग्रहे । ९ ख. मिले । १० ख. बद्दंन । ग. वदन । ११ ख. ग. नीलो । १२ ख. ग. असि । १३ ग. गरक । १४ ख. नतीठ । १५ ख. ग. वुरदाल । १६ ख. उडत । १७ ख. बहै । १८ ख. बाग । १९ ख. षर । २० ख. असि. । २१ ग. हरो । २२ ख. वहै । २३ ख. ग. छोल । २४ ख. बिकराल । २५ ख. ग. उरदाल ।

---

४३०. **निलै** = निटिल – ललाट । **त्रिसळै** – ललाटमें क्रोधादिके कारण होने वाले तीन सलवट ।

४३१. **विडंगक** – घोड़ा । **झळाहळ** – देदीप्यमान, चमकयुक्त ।

४३२. **निलौ अस** – रंग विशेषका घोड़ा । **गरक्क** – तरबतर । **नत्रीठ** – वीर । **जरदैत** – कवचधारी योद्धा ।

४३३. **नीब** – प्रसिद्ध राठौड़ वीर दुर्गादासका पितामह । **चवधार** – भाला ।

४३४. **रत** – रक्त । **छौळ** – प्रवाह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जँगी हवदां खळ सेल जडंत ।
प्रवाळक रूप अंत्राळ पडंत ।। ४३४

हुदां[1] मझि चंड चढै हुलसाय ।
धण[2] रत मुग्गळ[3] पीत[4] अघाय ।
उड़ै ग्रहि अंत ग्रिझां असमांण ।
पलौ[5] हिक झालत जोगणि पांण ।। ४३५

उभी हुय जांणिक गोख* अटारि ।
उडावत गूडिय[6] राजकुमारी[7] ।
इसी विध[8] सेल घपाय अभंग ।
रुळै[9] खग काढय[10] वीजळ[11] रंग ।। ४३६

अनेकह[12] खाग हणै 'अभ' एक ।
'अभा' पर वाहत[13] खाग अनेक ।
तुरी पर[14] तूटत लोह अताळ ।
पड़ै रुधराळतणा[15] पड़नाळ ।। ४३७

---

१ ख. ग. होदां । २ ख. घणा । ३ ख. मूगल । ग. मुगळ । ४ क. ग. पात । ५ ख. वलौ ।
*यहाँ से आगे ख. प्रति में निम्न पद्यांश और मिलता है ।
ल ओरण अघाय ।
लोथी कढ़ि षाग जिसी झल लाय ।
बाहै कुंवरां गुरत्री छण बाढ़ ।
गिडां कंध रौद पड़ै अवगाढ़ ।
लडै सिध क्रम्म इसै जुध लाह ।।'
६ ख. ग. गूडोय । ७ ख. ग. कुमारि । ८ ख. ग. विधि । ९ ख. रौले । ग. रोलै ।
१० ख. ग. काढ़ोय । ११ ख. बीजल । १२ ख. अनेह । १३ ख. बाहत ।
१४ ख. परि । १५ ख. रुधराज ।

---

४३४. प्रवाळक – मूंगा । अंत्राळ – आंतें ।
४३५. चंड – चंडी, रणचंडी । अंत – आंत । ग्रिझां – गिद्धों । पलौ – वस्त्र-छोर, अंचल । जोगणि – रणचंडी । पांण – पाणि, हाथ ।
४३६. जांणिक – मानों । गूडिय – पतंग; कनकौआ । वीजळ – बिजली । रंग – प्रकार ।
४३७. अभ । – वीर राठौड़ दुर्गादासका पुत्र अभयसिंह । अताळ – शीघ्र । रुधराळ-तणा – खूनके । पड़नाळ – परनाला ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एकौ[1] असि तूटि पड़ै अवसांण ।
दुजै[2] असि तांम चढै[3] दइवांण[4] ।
लुहां[5] रत पूर उपै रंग लाल ।
इसी विध[6] सूर लड़ै 'अभमाल' ।। ४३८

एकौ[7] भड़ जोड़ फबै भड़यैंत ।
जुड़ै 'महकन्न'[8] समोभ्रम[9] 'जैंत' ।
बरच्छिय[10] वेधत[11] घाट[12] बराळ[13] ।
मदां छकि जांणि पड़ै[14] मतवाळ[15] ।। ४३९

पड़ै रत वेध[16] दुहूं वज्र[17] पाट[18] ।
वैरी[19] हर हूंस वहै[20] स्रुगि[21] वाट[22] ।
तिता भड़ दांत चढ़ै[23] खग तांण ।
जिता घट फूट[24] पड़ै जमरांण ।। ४४०

वहै[25] इम सेल कढ़ै[26] खग वीज[27] ।
खळां खग झाट करै धर खीज ।
उभा धड़ केयक सीस उडंत ।
लुटै[28] ललरै अहि जेम लुडंत ।। ४४१

---

१ ख. ग. एको । २ ख. ग. दूजे । ३ ख. चढ़े । ४ ख. दईवांण । ५ ख. ग. लोहां । ६ ख. ग. विधि । ७ ख. ग. एको । ८ ख. ग. महक्रन । ९ ग. समोभ्रम । १० ख. बरछीय । ११ ख. बेधत । १२ ख. घाव । १३ ग. वराळ । १४ ख. पडे । १५ ख. मतिबाल । १६ ख. बेध । १७ ख. बज्र । १८ ख. पात । १९ ख. बैरी । २० ख. बहै । २१ ग. सुगि । २२ ख. बाट । २३ ग. चढ़े । २४ ख. फूटि । २५ ख. बाहे । ग. वाहै । २६ ख. कहे । ग. काढ़ै । २७ ख. बीज । २८ ग. लूटै ।

---

४३८. **अभमाल** – वीर राठौड़ दुर्गादासका पुत्र अभयसिंह ।

४३९. **महकन्न** – महकाणसिंह करणोत राठौड़ । **समोभ्रम** – पुत्र । **जैंत** – जैतसिंह । **घाट** – शरीर । **बराळ** – जबरदस्त ।

४४०. **वैरी हर** – शत्रु-वंशज । **स्रुगि** – स्वर्ग ।

४४१. **लुटै ललरै** – भूमि पर पड़े इधर-उधर लेटते हैं व घायल सर्पके समान शरीरको मोड़ते हैं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खळक्कत[1] घाट वहै[2] रतखाळ ।
पियै[3] धक धक्क छक्क[4] पयाळ ।
अडंभग[5] भेख कियां[6] अजरैत ।
जडा रुद्र क्रोध लड़ै इम 'जैत' ।। ४४२
जठै[7] 'अणदौ'[8] भड़ 'तेज' सुतन्न[9] ।
करै युध[10] 'खेम' तणौ 'सिव क्रन्न'[11] ।
वढ़ै[12] 'दुरगावत' भांण वरन्न[13] ।
केवी खग वाढ़त[14] चैन करन्न[15] ।। ४४३
'अभावत' क्रोध सझे[16] अण थाह ।
सिधां धरि साधक ह्वै सिध साह ।
दळां निजहूंत वधै[17] विरदैत[18] ।
खळांमझि हाकलियौ[19] पखरैत ।। ४४४
छड़ां झलि[20] वाह करै छड़ियाळ[21] ।
करै घट पार कड़ां[22] कड़ियाळ ।

---

१ ख. ग. षळकत । २ ख. बहै । ३ ख. पीयै । ४ ख. कछ । ५ ख. अडावंग । ग. अडांबंग । ६ ख. कीयां । ७ ख. तठै । ८ ग. अणदो । ९ ग. सुत्तंन । १० ख. जुध । ११ ख. कंन्न । १२ ख. बिढ़ै । १३ ख. बरंन्न । १४ ख. बाढ़त । १५ ख. करंन्न । १६ ग. सझै । १७ ख. वधे । १८ ख. बिरदैत । १९ ख. ग. हाकलीयौ । २० ख. ग. झिलि । २१ ख. छडीयाल । २२ ग. कडौं ।

---

४४२. **खळक्कत** – कलकल ध्वनि करते हैं। **रतखाळ** – रक्तका नाला। **धक धक्क** – भूमिमें एकाएक तेज गतिसे द्रव पदार्थको सोखनेसे होनेवाली क्रिया या ध्वनि । **पयाळ** – पाताल । **अडभंग** – मस्त, मदोन्मत्त । **भेख** – वेश । **अजरैत** – जबरदस्त, उद्दण्ड ।

४४३. **अणदौ** – आनंदसिंह करणोत राठौड़ । **तेज** – तेजसिंह करणोत जो वीर दुर्गादासका पुत्र था । **खेम** – क्षेमकरण करणौत राठौड़ । **सिवक्रन्न** – शिवकरणसिंह । **दुरगावत** – वीर राठौड़ दुर्गादासके पुत्र । **भांण** – सूर्य । **वरन्न** – वर्ण । **चैन करन्न** – वीर दुर्गादासका पुत्र चैनकरणसिंह ।

४४४. **अभावत** – अभयसिंह करणौतका पुत्र व राठौड़ दुर्गादासका पौत्र । **सिधसाह** – सिद्धकरणसिंह । **विरदैत** – विरुदधारी, यशस्वी । **हाकलियौ** – हांका । **पखरैत** – कवचधारी घोड़ा ।

४४५. **छड़ां** – भालों । **छड़ियाळ** – भाला धारण करने वाले । **कड़ियाळ** – कवच ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छछोहक स्रोण घडां उछटंत ।
दरू[1] धिख भैंच पजांण[2] दगंत ।। ४४५
इसी विध[3] साबळ[4] स्रोण अखाय[5] ।
लिधी[6] कटि[7] खाग जिसै[8] झळळाय ।
वहै[9] कुवरां[10] गुर त्रीछण वाढ़[11] ।
गिरां कँध रोड़[12] पड़ै अवगाढ ।। ४४६
लड़ै 'सिध क्रन्न'[13] इसै जुध लाह ।
उभै[14] थट देखि कहै भड़ वाह ।
समोभ्रम तेजकरन्न सकाज ।
लड़ै 'किसनेस' भुजां कुळ लाज ।। ४४७
वढै[15] खळ[16] वीजळ[17] चोळ वरन्न[18] ।
करै 'जस करन्न'[19] तणौ[20] दळ क्रन्न[21] ।
इतामझि[22] एक 'उमेद' उकंद ।
मिलै[23] कचरावत लोह 'मुकंद' ।। ४४८
नरां सिणगार इता करणोत[24] ।
करमसोतांरौ वरणण–अगै[25] भड़ सूर करम्मसियोत[26] ।

---

१ ख. ग. दारू । २ ख. ग. पजांणि । ३ ख. बिधि । ग. विधि । ४ ख. ग. सावळ । ५ ख. ग. अघाय । ६ ख. लीधी । ७ ख. ग. कढ़ि । ८ ख. जिसी । ९ ख. बाहै । १० ख. ग. कुंवरां । ११ ख. बाढ़ । १२ ख. रौद । १३ ग. क्रन । १४ ख. उनै । १५ ख. बढ़े । १६ ख. षग । १७ ख. बीजल । ग. वीझळ । १८ ख. बरंन्न । ग. वरन । १९ ख. क्रंन्न । २० ग. तणो । २१ ख. क्रंन्न । २२ ख. इतांमझि । २३ ख. मिले । २४ ख. ग. करणौत । २५ ख. आगै । २६ ख. करम्मसीयौत । ग. करमसीयोत ।

---

४४५. **छछोहक** – तेज । **स्रोण** – शोणित, खून ।

४४६. **झळळाय** – क्रोधमें भर कर । **अवगाढ** – वीर ।

४४७. **सिध क्रन्न** – सिद्धकरणसिंह, यह वीर राठौड़ दुर्गादासका पौत्र था । **उनै** – उस ओर । **थट** – सेना । **तेजकरन्न** – तेजकरणसिंह करणोत राठौड़, यह दुर्गादासका पुत्र था । **किसनेस** – किसनसिंह ।

४४८. **चोळ-वरन्न** – लाल रंग । **कचरावत** – कचरसिंहका पुत्र । **मुकंद** – मुकंदसिंह ।

४४९. **करम्मसियोत** – राठौड़ोंकी एक उपशाखा या इस शाखाका वीर ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिरै भड़ 'ऊदल'[1] तेण समाज ।
वधै[2] गरकाब कियौ[3] जुध बाज[4] ।। ४४६

सुभा[5] बळ गात पराक्रम सीम ।
भयांणख[6] भीम[7] जिसौ हर 'भीम' ।
अमावड़ तेज तुरी असवार ।
पाड़ै दळ[8] चाढ़ि धकै[9] अणपार ।। ४५०

भळाहळ रूप[10] भळाहळ भाय ।
जुड़ै खळ आय तिहा उडि[11] जाय ।
छछोहक वाहत भाल छडाळ[12] ।
दुसारक डाळ पड़ै रवदाळ[13] ।। ४५१

इलोळत स्रोण विचै खळ एम ।
जळाधर बीच[14] तिमंगळ जेम ।
कमंधज वाहि[15] खळां धजकूंत ।
हियै[16] करि पार[17] लियै[18] असिहूंत ।। ४५२

भलौ नट[19] जांणि अगै भुव पाळ ।
बँगाळिय[20] वांस[21] चढावत बाळ ।

---

१ ख. ऊदत । २ ख. बधे । ग. वधे । ३ ख. ग. कीयौ । ४ ग. व्राज । ५ ख. ग. सोभा । ६ ग. भयाणष । ७ ख. भीम । ८ ख. दल । ९ ख. धषै । १० ख. तोप । ११ ग. उड । १२ क. ग. वडाळ । १३ ख. रवदा । १४ ग. बाच । १५ ख. बाहि । १६ ख. ग. हीयैं । १७ ख. पाल । १८ ख. ग. लीयैं । १९ ग. नाट । २० ख. ग. बंगालीय । २१ ख. बांस ।

---

४४९. **ऊदल** – खीमसरका ठाकुर उदयसिंह । **गरकाब** – (?) । **बाज** – घोड़ा ।

४५०. **भीम** – भीमसिंह करमोत राठौड़ । **अमावड़** – अपार ।

४५१. **भळाहळ** – देदीप्यमान । **भळाहळ** – अग्नि । **भाय** – समान । **छडाळ** – भाला । **रवदाळ** – मुसलमान ।

४५२. **इलोळत** – तरंगोंमें डुबकी खाते हैं । **स्रोण** – शोणित, रक्त । **जळाधर** – समुद्र । **तिमंगळ** – एक प्रकारका बड़ा मत्स्य जो तिमि नामक मत्स्यको भी निगल जाता है, तिमिंगल ।

४५३. **बँगाळिय** – बंगालका । **बाळ** – बालक ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वधै[1] गज चाचर साबळ वाहि[2] ।
मुताहळ[3] गंज किया[4] जुध मांहि ।। ४५३
उमा मुकताफळ ले वड[5] वार ।
सभ्मै उणहारतणौ सिणगार[6] ।
भळाहळ[7] रीस चढी अति भाळ ।
महाबळ[8] तांम कटी[9] किरमाळ ।। ४५४
भड़ै[10] खग आतस रूप भिलम्म[11] ।
कटै विहरार अपार किलम्म[12] ।
दुवै दुवै फंट[13] हुवै[14] जरदौत ।
कासि[15] करि तापस[16] लेत[17] करौत ।। ४५५
दुसै फिरि जात चहूंबळ[18] दोळ ।
चहूंवळ[19] वाहत[20] खाग सचोळ[21] ।
समोभ्रम 'नाथ'[22] लड़ै समराथ ।
हुवै जुध भांण सराहत हाथ ।। ४५६
वदै[23] दहुवै[24] घड़ देखि वछेक ।
एकौ[25] भड़ 'ऊदक' ऊद अनेक ।

---

१ ख. बधे । २ ख. बाहि । ३ ख. ग. मोताहळ । ४ ख. कीयां । ५ ख. बड । ६ ख. सिरगार । ७ ख. भूलाह । ८ ख. माहाबल । ९ ख. ग. कढ़ी । १० ख. ग. भाडै । ११ ख. भिलंम्म । १२ ख. किलंम्म । १३ ख. फंव । १४ ख. हुअै । १५ ख. ग. कासी । १६ ख. तापल । १७ ख. सेत । १८ चहूंबल । ग. चहूबळ । १९ ख. चहूंबल । ग. चहूबळ । २० ख. ग. बाहत । २१ ख. ग. सचोल । २२ ख. ना । २३ ख. बदै । २४ ख. ग. दुहुवै । २५ ख. ग. एको ।

---

४५३. **चाचर** – मस्तक । **मुताहळ** – मुक्ताफल, मोती । **गंज** – ढेर ।

४५४. **उमा** – पार्वती । **किरमाळ** – तलवार ।

४५५. **भिलम्म** – युद्धके समय शिर पर धारण करनेका टोप । **दुवै** – दो । **जरदौत** – कवच-धारी योद्धा । **तापस** – तपस्वी । **करौत** – आरा ।

४५६. **चहूंबळ** – चारों ओर । **सचाळ** – वीर । **नाथ** – नाथूसिंह । **समराथ** – समर्थ, वीर ।

४५७. **वदै** – कहते हैं । **दहुवं** – दोनों । **घड़** – सेना । **वछेक** – विशेष । **एकौ**...**ऊदक** – इधर एक ही योद्धा उदयसिंह है, उधर अनेक ऊद (यवन) हैं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सभ्रै[1] जुध 'माहव'रौ 'सिवसाह' ।
लखावत[2] 'ऊद' लियै[3] खग लाह ॥ ४५७
'रासौ' 'कलियांण' तणौ रिण राव ।
घणा[4] जुध बीच[5] करै खग घाव ।
गिरध्दर[6] दास तणौ अवगाढ़ ।
वहै[7] जुध 'गोकळ' वीजळ[8] वाढ़[9] ॥ ४५८
समोभ्रम 'माहव' 'सांमंत' सूर ।
'कितौ' 'हठमाल' सुतन्न[10] करूर ।
जुड़ै 'लखधीर' समोभ्रम 'जैत' ।
'तेजो' भड़[11] 'लाल' तणौ विरदैत[12] ॥ ४५९
'रुघौ' भड़ 'ईसर'रौ[13] चढ़ि रोस[14] ।
जुड़ै मगरूर चढै अति जोस ।
तेगां भड़ पांच लड़ै इम तीख ।
सहै[15] जुध पांडव पांच सरीख ॥ ४६०
खहै 'जसक्रन्न'[16] तणौ 'खड़गेस' ।
जिकै खग झाट ढहै[17] जवनेस ।

---

१ ख. ग. सभ्रै । २ ख. ग. लाखावत । ३ ख. ग. लीयै । ४ ख. घणे । ५ ख. ग. बीच । ६ ख ग. गिरधर । ७ ख. बाहै । ग. वाहै । ८ ख. बीजल । ९ ख. बाढ़ । १० क. सुतंन्न । ग. सतंन्न । ११ ग. भिड़ । १२ ख. बिरदैत । १३ ग. इसररौ । १४ ख. रौस । १५ ख. ग. सहे । १६ ख. जसक्रंन्न । ग. सजक्रन । १७ ख. ढहे ।

---

४५७. **माहवरौ** – माधवसिंहका । **सिवसाह** – शिवदानसिंह । **लखावत** – लक्ष्मणसिंहका वंशज । **ऊद** – उदयसिंह । **लाह** – लाभ, आनंद ।

४५८. **रासौ** – रायसिंह । **कलियांणतणौ** – कल्याणसिंहका पुत्र । **रिण राव** – महावीर । **गोकळ** – गोकुलसिंह । **वाढ़** – काट कर, शस्त्रका पैना भाग ।

४५९. **जुड़ै** – भिड़ता है, युद्ध करता है । **समोभ्रम** – पुत्र । **जैत** – जैतसिंह । **लाल** – लालसिंह । **विरदैत** – यशस्वी, विरुदधारी ।

४६०. **रुघौ** – रघुनाथसिंह । **ईसर** – ईश्वरीसिंह । **मगरूर** – गर्व, गर्वधारी । **तीख** – विशेष, विशेषता । **सरीख** – समान ।

४६१. **खहै** – युद्ध करता है । **जसक्रन्न** – जसकरण, यशकरण । **खड़गेस** – खड्गसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समोभ्रम साहिबखांन समाथ ।
'नगौ'[1] खग जूटत गोपिय[2]-नाथ ।। ४६१

पटायत एह[3] लड़ै खग पांण ।
'उमेदक' जोध अगै दइवांण[4] ।
गिरद्धर[5]-दास तणौ अवगाढ़ ।
वहै[6] खग 'खीम' भळाहळ[7] वाढ[8] ।। ४६२

सभै जुध 'केसव'रौ सिवदांन ।
उडावत हंस[9] खळां असमांन ।
रिमां खग वाहि[10] उभेळि[11] रगत्त[12] ।
सभै जुध 'वीठळऊत' 'सकत्त'[13] ।। ४६३

'अजौ' रुघनाथ' उभै दइवांण[14] ।
'जसावत' खाग हणै जवनांण ।
चुंडावत जूटत यौ[15] कळिचाळ ।
'भदावत' जूटत अग्रज[16] भुग्राळ ।। ४६४

---

१ ख. ग. नगै । २ ख. ग. गोपीय । ३ ग. येह । ४ ख. ग. दईवांण । ५ ग. गिरधरदास । ६ ख. बाहै । ग. वाहै । ७ ख. भालाहल । ८ ख. बाढ़ । ९ ख. संह । ग. हांस । १० ख. बाहि । ११ ख. उभेल । १२ ख. ग. रगत । १३ ख. सकत । १४ ख. दईवांण । १५ ख. यूं । १६ ख. ग. अग्रज ।

---

४६१. **समाथ** – समर्थ, बलवान । **नगौ** – नगराजसिंह । **जूटत** – भिड़ता है ।

४६२. **पटायत** – जागीरका स्वामी । **पांण** – प्राण, बल, शक्ति । **उमेदक** – उमेदसिंह । **जोध** – पुत्र । **दइवांण** – योद्धा, वीर । **अवगाढ़** – वीर, योद्धा । **खीम** – खीमसिंह ।

४६३. **सभै** – संहार करता है । **केसव** – केशवसिंह । **हंस** – प्राण । **रगत्त** – रक्त, खून । **वीठळ ऊत** – वीठलदासका पुत्र । **सकत्त** – शक्तिसिंह ।

४६४. **अजौ** – अजीतसिंह । **रुघनाथ** – रघुनाथसिंह । **उभै** – उभय, दोनों । **जसावत** – जसवंतसिंहका पुत्र । **जवनांण** – मुसलमान, यवन । **चुंडावत** – राव चूंडाके वंशज राठौड़, राठौड़ोंकी एक शाखा । **यौं** – इस प्रकार । **कळिचाळ** – युद्ध, योद्धा । **भदावत** – राठौड़ोंकी एक उपशाखा या इस शाखाका व्यक्ति । **अग्रज** – बड़ा भाई (?) । **भुग्राळ** – राजा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'दलौ' भड़ 'कांन्ह' तणौ दइवांन(ण) ।
भिड़ै खग 'लाल'[1] तणौ 'भगवांन'[2] ।
'उदौ'[3] 'अणदेस' तणौ[4] अणभंग ।
जठै खग वाह्[5] करै रिण जंग ।। ४६५

'उमेद'ह जोध तडै[6] 'अवनाड़' ।
'जसावत' मांडण खाग वजाड़[7] ।
सझै जुध गोरधनोत 'किसन्न'[8] ।
त्यही[9] 'अखमाल' मुहोक[10] सुतन्न ।। ४६६

जुड़े[11] खगझाट 'कलावत' जोध ।
'सँगौ'[12] परताप सुतन्न[13] सक्रोध ।
'समोभ्रम' आणँद झोकि हवास[14] ।
दियै[15] खग झाटक वीठळ[16]-दास ।। ४६७

मनोहरदास सुतन्न[17] 'अमांन' ।
खळां खग बाढ़त[18] नाहरखांन ।

---

१ ख. लांल । २ ग. भगवान । ३ ख. दौ । ग. उदो । ४ ग. तणो । ५ ख. बाह् । ६ ख. लडै । ७ ख. बजाड़ । ८ ग. किसंन । ९ ख. त्यूंही । ग. त्योंही । १० ख. मोहोक । ग. मोहोक । ११ ग. जुडै । १२ ख. सांगौ । ग. सांगो । १३ ख. सुतंन । १४ ख. हुवास । १५ ख. दीयै । १६ ख. बीठलदास । १७ ख. ग. सुतंन । १८ ख. वाढत ।

---

४६५. **दलौ** – दलैसिंह । **कांन्ह** – कान्हसिंह । **दइवांन** – योद्धा । **लाल** – लालसिंह । **भगवांन** – भगवानसिंह । **उदौ** – उदयसिंह । **अणदेस** – आनंदसिंह । **अणभंग** – वीर । **रिण जंग** – युद्धस्थल, युद्ध ।

४६६. **उमेदह** – उम्मेदसिंह । **जोध** – पुत्र । **गोरधनोत** – गोरधनसिंहका पुत्र । **किसन्न** – किसनसिंह । **अखमाल** – अक्षयसिंह । **मुहोक** – मोहकमसिंह ।

४६७. **कलावत** – कल्याणसिंहका पुत्र । **जोध** – योद्धा, वीर । **सँगौ** – संग्रामसिंह । **परताप** – प्रतापसिंह । **आणँद** – आनंदसिंह । **झोकि** – झोंक कर । **हवास** – घोड़ा । **झाटक** – प्रहार ।

४६८. **अमांन** – अमानसिंह । **बाढ़त** – काटता है, संहार करता है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुड़ै[1] खग झाट हणै किलमांण ।
भिड़ै गजसींघ[2] तणौ इँद्रभांण ।। ४६८
रणावत[3] वाह[4] करै किरमाळ ।
लड़ै चतुरावत[5] झूल[6] लंकाळ[7] ।
धुबै[8] खग झाट वजै[9] त्रंब ध्रीह ।
'बद्री' सुत सीह-गुमांन अबीह ।। ४६९
बलावत लोह 'उदावत' बूर ।
'सिवौ' 'परियाग' तणौ जुध सूर ।
हठी सुत रूप कियौ[10] हणुमांन[11] ।
महाबळ[12] बाहत[13] खाग गुमांन* ।। ४७०
धवेचा वाह[14] करै खग[15] धार ।
उठै 'अमरावत' 'भीम' उदार ।
दियै[16] खग झाटह कादमतेस[17] ।
वढै[18] 'सकतेस' तणौ 'विसनेस'[19] ।। ४७१

---

१ ख. ग. मडै । २ ख. ग. गर्जासघ । ३ ख. रांणावत्त । ग. रांणावत । ४ ख. बाह । ५ ख. चुतरावत । ग. चूतरावत । ६ ख. झाझ । ग. झूझ । ७ ख. लंकार । ८ ख. ग. धुवै । ९ ख. बजै । १० ख. कीयां । ११ ख. हणूमांन । १२ ख. माहाबल । ग. महाबळ । १३ ग. वाहत ।

*यहांसे आगे ख. प्रतिमें निम्न पंक्तियां मिली हैं—

'अनो रुघनाथ तणो अणभंग ।
अडे षग झाट लडो लोह अंग ।।',

१४ ख. बाह । १५ ख. धग । १६ ख. दीयै । १७ ख. कांदषतेस । ग. कांदसतेस । १८ ख. बिढै । ग. वदै । १९ ख. बिसनेस ।

---

४६८. **किलमांण** – यवन ।

४६९. **रणावत** – राणावत शाखाका राठौड़ । **चतुरावत** – चतुरसिंहका वंशज । **झूल** – समूह । **लंकाळ** – वीर, योद्धा । **त्रंब** – नगारा । **ध्रीह** – आवाज । **बद्री** – बद्रीदास । **गुमांन** – गुमानसिंह । **अबीह** – योद्धा ।

४७०. **बलावत** – बालूसिंहका पुत्र । **लोह** – शस्त्र । **बूर** – समूह । **सिवौ** – शिवदानसिंह । **परियाग** – प्रयागसिंह । **हठी** – हठीसिंह । **गुमांन** – गुमानसिंह ।

४७१. **धवेचा** – राठोड़ोंकी एक शाखा । **अमरावत** – अमरसिंहका पुत्र । **भीम** – भीमसिंह । **सकतेस** – शक्तिसिंह । **विसनेस** – विसनसिंह ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

तई खग धार हणै खळ तांम ।
महाजुध[1] 'माहव'रौ[2] हरिरांम ।
पड़ै खग दावतणा घणपेच ।
महाबळ[3] खेत लड़ै 'महवेच' ।। ४७२
भळाहळ[4] वीजळ[5] रावळ 'भांण' ।
करै जुध 'जैत' तणौ 'कलियांण' ।
पड़ै गज मुग्गळ[6] बाज[7] अपार ।
बखांणत सूर हथां तिण वार ।। ४७३
'विजावत'[8] उप्रमते[9] असि वाग ।
खत्री गुर 'क्रन्न'[10] वजावत[11] खाग ।
अरी घड़[12] साबळहूंत उथाल ।
सभ्रंत विजावत[13] 'वैरियसाल'[14] ।। ४७४
अड़ै खग 'जैतहमाल' अथाह ।
'नरौ' 'मुकनेस' तणौ नर नाह ।
विढै गिरमेर समोभ्रम 'वैण'[15] ।
रचै जुध 'खेम' विजावत'[16] रैण[17] ।। ४७५

---

१ ख. माहाजुध । २ ख. माहाव । ३ ख. ग. माहाबळ । ४ ख. ग. भळाहळ । ५ ख. बीजल । ६ ख. मूगल । ग. मुगल । ७ ग. वाज । ८ ख. बिजावत । ९ ख. उप्रमतै । ग. ऊप्रमते । १० ख. क्रंत । ग. क्रन । ११ ख. बजावत । १२ ख. ग. घट । १३ ख. बिजावत । १४ ख. वेंरीयसाल । ग. वैरीयसाल । १५ ख. बेण । १६ ख. बिजावत । १७ ख. ग. रेण ।

---

४७२. माहव – माहवसिंह । महवेच – महेचा शाखाका राठौड़ ।

४७३. वीजळ – तलवार । रावळ – रावल, मल्लिनाथकेवंशजोंका पद विशेष । भांण – सूरजभांणसिंह । जैत – रावल मल्लिनाथके पुत्र जैतमाल । कलियांण – कल्याणसिंह । बाज – घोड़ा । बखांणत – प्रशंसा करते हैं ।

४७४. विजावत – विजयसिंहका पुत्र । उप्रमते – विशेष । असि – घोड़ा । क्रन्न – करणसिंह । वैरियसाल – वैरीशालसिंह ।

४७५. जैतहमाल – रावल मल्लिनाथके पुत्र जैतमालके वंशजोंकी एक उपशाखा या इस शाखाका व्यक्ति । नरौ – नरसिंह । मुकनेस – मुकुंदसिंह । विढै – युद्ध करता है । गिरमेर – सुमेरसिंह । वैण – वैणीसिंह । खेम – खेमसिंह । विजावत – विजयसिंहका पुत्र । रैण – रणछोड़दास ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुतं 'जगरूप' व्रजागि समांम[1] ।
रिमां खग फाग[2] रमै भड़ 'रांम' ।
वधै[3] हरिनाथ समोभ्रम 'वांन'[4] ।
खळां खग झाटत साहिबखांन ।। ४७६

तणौ भ्रम 'पूरण' सींघ तराज ।
सझै जुध मोगर[5] सींह सकाज ।
पता[6] भड़ क्रोध झळा उतपन्न[7] ।
सझै जुध 'मेघ' 'किसन्न'[8] 'सुतन्न'[9] ।। ४७७

भयंकर मेछ घड़ा[10] खग भोग ।
जुड़ै 'मुकनेस'[11] समोभ्रम 'जोग' ।
'पिथावत'[12] 'सूरजमाल'[13] प्रचंड ।
खळां सिर वाह[14] करै तळ खंड ।। ४७८

समोभ्रम 'राजड़' 'रैणा'[15] सधीर ।
महाबळ[16] खाग हणै घणमीर ।
भिड़ै सुत 'जोध' खगां इंद्रभांण ।
खगं[17] झट थाट हणै[18] खुरसांण ।। ४७९

---

१ ख. ग. समाम । २ ख. फाम । ३ ख. बधे । ग. वधै । ४ ख. बांन । ५ ख. ग. डूंगर । ६ ख. ग. पाता । ७ ख. ग. उतप्पंन । ८ ख. सुतंन्न । ९ ख. किसन्न । १० ख. घडां । ११ ख. ग. मुकंदेस । १२ ख. ग. पीथावत । १३ ख. सूरिज । १४ ख. बाह । १५ ग. रेण । १६ ख. माहाबळ । १७ ख. षगां । १८ ख. हणे ।

---

४७६. **समांम** – विशेष, बढ़िया । **रिमां** – शत्रुओं । **फाग** – फाल्गुन मासका नृत्य । **वांन** – वनेसिंह ।

४७७. **भ्रम** – पुत्र । **पूरण** – पूर्णसिंह । **तराज** – समान । **पता** – पतावत शाखाका राठौड़ । **मेघ** – मेघसिंह । **किसन्न** – किसनसिंह । **सुतन्न** – पुत्र ।

४७८. **म्लेछ** – मेच्छ, यवन । **घड़ा** – सेना । **मुकनेस** – मुकुन्दसिंह । **जोग** – जोगसिंह । **पिथावत** – पृथ्वीसिंहका पुत्र । **सूरजमाल** – सूर्य्यमल । **तळ खंड** – ध्वंस ।

४७९. **समोभ्रम** – पुत्र । **राजड़** – राजसिंह । **रैणा** – रणछोड़सिंह । **घण** – बहुत । **मीर** – बड़ा सरदार, यवन । **जोध** – जोधसिंह । **झट** – प्रहार । **थाट** – समूह । **खुरसांण** – यवन, मुसलमान ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चका[1] खग झाट हणै चमराळ[2] ।
विढै[3] नर 'पाळ' तणौ[4] विजपाळ[5] ।
रिमां खग झाट करै घटरेज ।
तिकै जुध 'केहरि' संभ्रम 'तेज' ।। ४८०

घणा खळ थाट सिरै खग घाव ।
सझै जुध 'माहव' 'क्रन्न'[6] सुजाव ।
चका खळ भूक करै खग चौज[7] ।
भिड़ै 'अणदेस' समोभ्रम 'भोज' ।। ४८१

अंगोभ्रम 'मेघ' चाढै कुळ ओप ।
'उमेदह' वार लड़ैत[8] 'अनोप' ।
समोभ्रम 'मेघ' 'जमांन' सकाज ।
लड़ै खग झाट लियां[9] कुळ लाज ।। ४८२

सत्रां खग झाटक 'गंग' सझेस ।
समोभ्रम 'मेघ' लड़ै[10] 'कुसळेस' ।
वधावधि[11] राड़ि करै खगवाह[12] ।
सत्रां[13] 'परसावत'[14] 'माहवसाह' ।। ४८३

---

१ ख. चकां । २ ख. मचराल । ३ ख. बिढै । ४ ग. तणो । ५ ख. बिजपाल । ६ ख. क्रंत । ग. क्रन । ७ ख. चोज । ८ ख. लड़ंत । ९ ख. ग. लीयां । १० ग. लडे । ११ ख. बधेबधि । ग. वधेवधि । १२ ख. षगबाह । १३ ग. सत्रा । १४ ख. परसांवंत ।

---

४८०. **चमराळ** – यवन, मुसलमान । **पाळ** – गोपालसिंह । **विजपाळ** – विजयसिंह । **घटरेज** – (?) । **केहरि** – केसरीसिंह । **संभ्रम** – पुत्र । **तेज** – तेजसिंह ।

४८१. **माहव** – माहवसिंह । **क्रन्न** – करणसिंह । **सुजाव** – पुत्र । **चका** – चक्र, सेना । **भूक** – ध्वंस । **चौज** – (?) । **अणदेस** – आनन्दसिंह । **भोज** – भोजराजसिंह ।

४८२. **अंगोभ्रम** – पुत्र । **मेघ** – मेघसिंह । **ओप** – कांति, दीप्ति । **अनोप** – अनोपसिंह ।

४८३. **कुसळेस** – कुशलसिंह । **वधावधि** – बढ़-बढ़ कर । **राड़ि** – युद्ध । **खगवाह** – योद्धा । **माहवसाह** – माहवसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तई[1] हणमंत कळा जुध तांम ।
करै मंडळा सभ्रळा खग कांम ।
'विहारिय'[2] संभ्रम 'केसव' वीर ।
'संगौ'[3] भगवांन सुजाव सधीर ।। ४८४

जुड़ै 'अन्न'[4] पाळ 'किसोर' सुजाव ।
रोळै खग चोळ कियां[5] रिणराव[6] ।
तठै 'बगसावत'[7] जूटत तांम ।
व्रँदावनदास[8] चढ़ै[9] वरियांम[10] ।। ४८५

सभ्रै जुध 'वीदह'रा[11] खळ साळ ।
हिचै खग भाग चँदोत[12] 'हिंदाळ'[13] ।
रचै जुध 'भोज' हरा रिमराह[14] ।
नरावत नाहरखां नरनाह ।। ४८६

मँडै[15] खग भाट खळां घड़-मोड़ ।
'अनावत' सूरतसींघ[16] अरोड़[17] ।

---

१ ग. तइ । २ ख. बिहारीय । ग. विहारीय । ३ ख. सांगौ । ग. सांगो । ४ ख. अन । ५ ख. कीयां । ६ ख. ग. रणराव । ७ ख. बगसावत । ८ ख. वृंदावनदास । ग. वृदावनदास । ९ ख. चंडा । ग. चडं । १० ख. ग. वरीयांम । ११ ख. हलरा । १२ ख. चंदौत । ग. चदौत । १३ हिदाल । १४ ख. दाह । १५ ग. मंडे । १६ ग. सुरतसिंघ । १७ ग. अरोड ।

---

४८४. **हणमंत** – हनुमान । **मंडळा** – राठौड़ोंकी एक उपशाखा । **सभ्रळा** – बढ़िया, श्रेष्ठ । **विहारिय** – विहारीसिंह । **संभ्रम** – पुत्र । **केसव** – केशवसिंह । **संगौ** – संग्रामसिंह । **भगवांन** – भगवानसिंह ।

४८५. **रोळै** – ध्वंस करता है । **रिणराव** – योद्धा । **वरियांम** – श्रेष्ठ ।

४८६. **वीदहरा** – राव वीदाके वंशज, राठौड़ोंकी एक उपशाखा । **हिचै** – युद्ध करता है । **भाग चँदोत** – भागचंदका पुत्र । **भोजहरा** – भोजके वंशज, राठौड़ोंकी एक उपशाखा । **नरावत** – राठौड़ोंकी एक उपशाखा, इस शाखाका वीर ।

४८७. **घड़-मोड़** – सेनाको मोड़ देने वाला, पीछे हटा देने वाला योद्धा । **अनावत** – अनाड़सिंहका पुत्र । **अरोड़** – जबरदस्त ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अड़ै खग[1] भारमलोत[2] अनम्म[3] ।
करै जुध 'भूपति'रौ 'मुहकम्म'[4] ॥ ४८७

अरी खग झाड़ि छिबै[5] असमांन ।
थटां मझि 'भाखर' संभ्रम 'थांन' ।
करै जुध 'भीम' कळोध कंठीर ।
'विहारिय'[6] संभ्रम 'साहब'[7] वीर ॥ ४८८

हुवै खळ वीजळ[8] वाहत हाथ ।
नरांपति[9] 'भोज' तणौ[10] 'जगनाथ' ।
भिड़ै[11] म्रत[12] कीध 'अभा' छळि 'भोज' ।
यूंहीं[13] 'सुरतांण' 'जसा' छळि ओज ॥ ४८९

बिनै[14] जमसूर[15] दादौ अर बाप ।
उवां अधिकोस[16] पराक्रम आप ।
सझै जरदैत खळां घण साथ ।
जगाचख[17] दादि दियै[18] 'जगनाथ' ॥ ४९०

---

१ ख. षगि । २ ख. भारमलौत । ३ ख. अन्नंम । ग. अनम । ४ ख. मौहौकंम्म । ग. मौहौकम्म । ५ ख. ग. छिवै । ६ ख. बिहारीय । ग. विहारीय । ७ ख. ग. साहिब । ८ ख. बीजल । ९ ख. नरौपति । १० ग. तणो । ११ ख. भिडे । १२ ख. मृत । १३ ख. यौंही । ग. यौही । १४ ग. विनै । १५ ख. यम । १६ ख. अधिकौस । १७ ख. ग. जगचख । १८ ख. ग. दीयै ।

---

४८७. **भारमलोत** – राठौड़ोंकी एक उप शाखा, इस शाखाका वीर । **अनम्म** – नहीं झुकने वाला ।

४८८. **भाखर** – भाखरसिंह । **थांन** – थानसिंह । **भीम** – भीमसिंह । **कळोध** – वंशज । **कंठीर** – सिंह । **विहारिय** – बिहारीसिंह । **साहब** – साहबसिंह ।

४८९. **अभा** – महाराजा अभयसिंह । **छळि** – लिए । **भोज** – भोजराजसिंह । **सुरतांण** – सुल्तानसिंह । **जसा** – जसवंतसिंह ।

४९०. **बिनै** – दोनों । **दादौ** – पितामह । **जरदैत** – कवचधारी योद्धा । **जगा चख** – सूर्य । **दादि** – धन्यवाद । **जगनाथ** – जगनाथसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रूपावत जूटत घाट बराड़[1] ।
विजूजळ[2] मुग्गळ[3] थाट विभाड़[4] ।
जुड़ै खग[5] 'गोयंद'[6] रौ[7] जसराज ।
सुतां[8] 'सकतेस' हुमाऊ[9] सकाज ।। ४६१
हिचै 'दुरगावत' झोकि हुबास[10] ।
दुसै खग झाटत बद्रियदास[11] ।
लड़ै भड़ 'गंग' हरा[12] धख लागि ।
'जगावत' सूरतसींघ[13] व्रजागि ।। ४६२
रिमां सिर वाहत[14] वीजळ[15] रूठ ।
'द्वरौ'[16] मुकँदावत[17] जूटत[18] दूठ ।
नरावत खाग हणै जवनेस ।
महाबळ[19] 'चंद'तणौ 'पदमेस' ।। ४६३
धडच्छत[20] मूगळ बीजळ धार ।
'अनौ' 'सहसावत'[21] सूर उदार ।

---

१ ग. वराड । २ ख. बीजूजल । ग. वीजूजल । ३ ख. मूंगल । ग. मुगळ । ४ ख. बिभाड़ । ५ ख. षगि । ६ ख. गोयद । ७ ग. रो । ८ ख. सुतं । ९ ख. हमाउ । ग. हमाऊ । १० ख. हुवास । ११ ख. ग. बद्रीयदास । १२ ख. हरी । १३ ग. सूरतसिंघ । १४ ख. बाहत । १५ ख. बीजल । १६ ख. ग. द्वारौ । १७ ख. मुकंदारत । १८ ख. जूट । १९ ग. माहाबळ । २० ख. धडंछत । ग. धड़छत । २१ ख. संहसावत ।

---

४९१. **रूपावत** – राठौड़ोंकी एक उपशाखा, या इस शाखाका वीर । **घाट बराड़** – भयंकर रूपसे । **विजूजळ** – तलवार । **विभाड़** – संहार करके । **गोयंद** – गोविन्दसिंह । **जसराज** – जसवंतसिंह । **सकतेस** – शक्तिसिंह ।

४९२. **दुरगावत** – दुर्गादासके पुत्र । **झोकि** – झोंक कर । **हुबास** – घोड़ा । **गंग** – गंगासिंह । **धख** – प्रबल जोश ।

४९३. **द्वरौ** – द्वारकादास । **मुकँदावत** – मुकन्दसिंहका पुत्र । **दूठ** – जबरदस्त । **नरावत** – राठौड़ोंकी एक उपशाखा । **जवनेस** – यवन, मुसलमान । **चंद** – चंद्रसिंह । **पदमेस** – पद्मसिंह ।

४९४. **धडच्छत** – काटता है, मारता है । **बीजळ** – तलवार । **अनौ** – अनोपसिंह । **सहसावत** – सहस्रसिंहका पुत्र ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चढ़ावत[1] लोह करै बधिचाळ ।
प्रचंडह 'रूप' तणौ 'विजपाळ'[2] ॥ ४६४

जुड़ै 'रायपाळ'[3] हरौ रण 'जैत' ।
'दुरज्जण'[4] 'नाहर'रौ बिरदैत[5] ।
अड़ै भड़[6] पूरविया[7] अवसांण ।
'दलावत' दूठ[8] जिसा[9] दइवांण[10] ॥ ४६५

सुजावत[11] साहिब-खांन सकाज ।
रिमां सिर झाटत झाट नराज[12] ।
विढै[13] भड़ ऊहड़ लोह विछेक[14] ।
इतां सिरपोस 'वांकौ'[15] भड़ एक ॥ ४६६

'वँके'[16] भड़ औरवियौ[17] जुध बाज[18] ।
सभै खळ साबळहूंत सकाज ।
गडां[19] जिम उलाळियौ[20] दंग[21] रीठ[22] ।
धरा मझि जाय पड़ै चखि[23] धीठ ॥ ४६७

---

१ ख. चूडावत । ग. चंडावत । २ ख. बिजपाळ । ३ ख. रावपाल । ४ ख. दुरज्जण । ग. दुरङ्झण । ५ ख. बिरदैत । ६ ख. भर । ७ ख. पूरबीया । ग. पूरविया । ८ ख. ग. दूद । ९ ख. ग. जिसा । १० ख. 'दईवांण । ११ ख. ग. सूजावत । १२ ख. नाराज । ग. नाराच । १३ ख. बिढ़ै । १४ ख. वछेक । १५ ख. बंको । ग. वांको । १६ ख. बंकै । १७ ख. ओरबीयो । १८ ख. ग. वाज । १९ ख. ग. गाडा । २० ख. ऊललि । ग. ऊलळि । २१ ख. ग. रौद्र । २२ ख. ग. गरीठ । २३ ख. वष ।

---

४६५. जुड़ै – भिड़ता है, युद्ध करता है । दुरज्जण – दुर्जनसिंह । नाहर – नाहरसिंह । पूरविया – चौहान वंशकी एक शाखा । अवसांण – युद्ध । दइवांण – वीर, योद्धा ।

४६६. झाटत – काटता है । नराज – तलवार । विढै – युद्ध करता है । ऊहड़ – राठौड़ वंशकी ऊहड़ शाखाका वीर । सिरपोस – शिरस्त्राण, श्रेष्ठ । वांकौ – विक्रमसिंह ।

४६७. वँकै – विक्रमसिंह । औरवियौ – युद्धमें झोंक दिया । बाज – घोड़ा । सभै – संहार करता है । साबळहूंत – भाला विशेषसे । गडां – (?) । उलाळियौ – गिरा दिया । दंग रीठ – (?) । चखि धीठ – (?) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भयांणक[1] दीसत यौं[2] भमरूत ।
अखाड़थ[3] दत्त[4] जिसा अवधूत ।
रँगै[5] हम सावळ[6] काटिय[7] रूक ।
भयंकर भाट करै खळ भूक ।। ४६८
उडै खग आछर सीस अपार ।
धरै रुंडमाळ विचै जटधार ।
पड़ै असवारतणा धड़ पाय ।
जठै अरि सीस पड़ै लगि जाय ।। ४६६
जुड़ै इम साबळ[8] व्याकुळ जीव ।
हुवा अवतार घणा हयग्रीव ।
करै[9] चुखचुख्ख घणा मुगळांण[10] ।
पोथी जिम वंदर[11] वेद पुरांण ।। ५००
रचै तिण मौसर[12] योगिणी[13] रास ।
सझै इम आरण 'बंकीयदास' ।
तठै 'हरियंद' तणौ[14] मसतांन ।
दियै[15] खग भाट खळां सिवदांन ।। ५०१
जुड़ै तिणवार उदावत[16] 'जैत' ।
पछाड़त मार[17] खगां पखरैत ।

---

१ ग. भयानक । ख. भयांणष । २ ख. यूं । ३ ग. अषाडाय । ४ ख. दत । ५ ख. ग. रंगे । ६ ख. ग. साबळ । ७ ख. ग. काटीय । ८ ख. सोभत । ग. सोबल । ९ ख. करे । १० ख. किलमांण । ११ ख. बंदर । १२ ख. मौसरि । १३ ख. जोगणि । ग. योगणि । १४ ग. तणो । १५ ख. दीयै । १६ ख. ग. ऊदावत । १७ ख. मीर ।

---

४६८. भमरूत – शस्त्र प्रहारोंसे क्षत-विक्षत शरीर वाला । दत्त – दत्तात्रय ऋषि । रूक – तलवार । भूक – ध्वंस ।

४६६. आछर – प्रहार । जटधार – रुद्र, महादेव ।

५००. चुखचुख्ख – खंड-खंड । मुगळांण – मुगल, यवन ।

५०१. मौसर – अवसर । आरण – युद्ध । मसतांन – मस्त ।

५०२. उदावत जैत – उदावत शाखाका राठौड़ जैतसिंह । पछाड़त – गिराता है । पखरैत – कवचधारी योद्धा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'सदौ'[1] 'कुसळावत' जंग सधीर ।
वढै[2] खग झाट तठै वर वीर[3] ।। ५०२

'विहारिय'[4] संभ्रम झोकि व्रहास ।
दळा[5] खळ वीच लड़ै 'गुणदास' ।
विढ़ै[6] 'चंद' 'स्यांम' तणौ विकराळ[7] ।
वहै[8] खग झाट कटंत बंगाळ ।। ५०३

हिचै भड़ सिंधल[9] चंद्रप्रहास ।
समोभ्रम 'वीठल'[10] जीवणदास ।
जुड़ै भड़ खेतसियोत[11] सुजंग ।
'अखौ'[12] धनराज तणौ अणभंग ।। ५०४

विढ़ै भड़ भाटिय[13] यूं जुधवेर[14] ।
मंडोवर आगळ जैसळमेर[15] ।
अणी कढ[16] हाकल[17] बाज[18] उडांण ।
भिड़ै रिणछोड[19] तणौ ऊदभांण[20] ।। ५०५

हकारत सूर वकारत[21] हेक ।
करै जुध भूक अनैक[22] अनैक ।

---

१ ग. सदो । २ ख. बिढ़ै । ३ ख. बीर । ४ ख. बिहारीय । ग. विहारीय । ५ ख. दलां । ग. दळां । ६ ख. बिढ़ै । ७ ख. बिकराल । ८ ख. बाहै । ग. वाहै । ९ ख. सीधल । ग. सिधल । १० ख. बीठल । ११ ख. षेतसीयोत । १२ ग. अषो । १३ ख. ग. भाटीय । १४ ख. युधवेर । १५ ख. ग. जेसलमेर । १६ ख. कट । १७ ख. हाकलि । १८ ग. वाज । १९ ख. रणछोड । २० ख. उदभांण । ग. उदै-भांण । २१ ख. बकारत । २२ ख. ग. अनेक अनेक ।

---

५०२. **सदौ** – शार्दूलसिंह । **कुसळावत** – कुशलसिंहका पुत्र ।

५०३. **विहारिय** – बिहारीदास । **संभ्रम** – पुत्र । **व्रहास** – घोड़ा । **चंद** – चंद्रसिंह । **स्यांम** – श्यामसिंह । **बंगाळ** – यवन, मुसलमान ।

५०४. **हिचै** – युद्ध करते हैं । **सिंघल** – राठोड़ोंकी सिंघल शाखाका वीर, योद्धा । **चंद्रप्रहास** – तलवार । **वीठळ** – विट्ठलदास ।

५०५. **आगळ** – रक्षक रूप, अगाड़ी । **उडांण** – दौड़ । **ऊदभांण** – उदयभाणसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्रां घट भाट[1] दिये[2] समसेर ।
महारिण[3] वीच[4] हुम्रौ[5] गिरमेर ।। ५०६
म्रड़ीखंभ भोक लगै म्रवसांण ।
भटी[6] इम 'भांण' बखांणत[7] भांण ।
समोभ्रम 'सूर' खळां[8] समराक ।
'हठी' म्रसि हाकलियौ[9] करि हाक ।। ५०७
सिलैबँध[10] घाट उभेलत[11] सेल ।
खेलै नट जांणिक भागळ[12] खेल ।
घमंघम चोट करै घमचाळ ।
बँगाळ उलाळ रगत्र बंबाळ[13] ।। ५०८
पड़े भड़ रोद[14] लुहो[15] रँग पूर ।
सुता[16] सिंध[17] जांणिक चाढि सिंदूर ।
पड़ै[18] सिर[19] हेक जुजां[20] दंड[21] पार ।
तढै[22] धरि रोस[23] कढी तरवार ।। ५०९
वहै[24] खग ऐम[25] 'हठी'[26] विकराळ[27] ।
कराळक भाळ म्रताळत काळ ।

---

१ क. छांट । २ ख. ग. दियै । ३ ख. माहारण । ४ ख. वीचि । ५ ग. हुम्रो । ६ ख. ग. भाटी । ७ ग. बषांणत । ८ ख. षलां । ९ ख. हालीयौ । ग. हाकलियौ । १० ख. सिल्है । ११ ख. उभेलत । ग. ऊभेलत । १२ ख. भगल । १३ ग. बबंबाळ । १४ क. रोह । १५ ख. लौही । ग. लोही । १६ ख. सूता । १७ ख. ग. सिध । १८ ख. पडे । १९ ख. सर । २० ख. भुजा । २१ ख. डंड । २२ ख. ग. तठै । २३ ग. रौस । २४ ख. बाहै । ग. वाहै । २५ ख. एम । २६ क. हढी । २७ ख. बिकराळ ।

---

५०७. म्रड़ीखंभ – जबरदस्त । भोक – धन्यवाद । म्रवसांण – युद्ध, म्रवसर । भटी – भाटी वंश । भांण – उदयभाणसिंह । समराक – योद्धा । हठी – हठीसिंह । हाकलियौ – हांका । हाक – जोशपूर्ण तेज म्रावाज ।

५०८. जांणिक – मानों । भागळ खेल – ऐंद्रजालिक खेल । घमचाळ – युद्ध । बँगाळ – यवन । रगत्र – रक्त । बंबाळ – लाल ।

५०९. रोद – मुसलमान ।

५१०. हठी – हठीसिंह । कराळक – भयंकर । म्रताळत – (?) । काळ – यमराज ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

कळाहळ[1] हूंकळ[2] ऊकळ काट ।
झळाहळ वाहत[3] वीजळ[4] झाट ।। ५१०
भळाहळ छूटत[5] स्रोण भभक्क[6] ।
डळाहळ सांस[7] उडै डहचक्क ।
खळाहळ स्रोण तणा घण खाळ ।
'हठी' खग वाहत[8] एम[9] हठाळ ।। ५११
समोभ्रम 'नाहर' जूटत 'सूर' ।
चँद्रासक मेछ करै चकचूर ।
पेखे[10] इम पोरस[11] दारण पूर ।
सराहत[12] 'सूर' तणौ[13] हथ सूर ।। ५१२
कळायण[14] वीच[15] लड़ंत करूर ।
'पतौ'[16] इंद्र भांण तणौ[17] व्रदपूर ।
'नाथौ' 'अमरावत' खाग उनाग ।
'जगावत' जूटत सूर ब्रजागि[18] ।। ५१३
उदावत[19] 'जीवण' वीजळ[20] दाव[21] ।
जुड़ै 'सुरतांण' 'पदम्म'[22] सुजाव ।

---

१ ख. ग. काळाहल । २ ख. हूकल । ३ ख. बाहत । ४ ख. बीजल । ५ ख. छूणत । ६ ग. भभक । ७ ख. सीस । ८ ख. बाहत । ९ ख. ग. येम । १० क. पेषे । ११ ख. पौरस । १२ ग. सराहथ । १३ ख ग. तणा । १४ ख. ग. काळायण । १५ ख. बीचि । १६ ग. पतो । १७ ग. तणो । १८ ख. ब्रजाग । १९ ख. वूदावत । ग. दुदावत । २० ख. ग. बीजल । २१ ख. दास । २२ ख. पदम । ग. पदंम ।

---

५१०. **कळाहळ** – कोलाहल ।

५११. **भळाहळ** – तेज । **स्रोण** – शोणित, रक्त । **भभक्क** – तेज धारा । **डळाहळ** – (?) । **डहंचक्क** – (?) । **खळाहळ** – तेज ध्वनियुक्त प्रवाह । **घण** – बहुत । **खाळ** – नाला । **हठाळ** – अपने हठ पर दृढ़ रहने वाला ।

५१२. **नाहर** – नाहरसिंह । **चँद्रासक** – तलवार । **मेछ** – यवन । **चकचूर** – ध्वंस, संहार । **पेखे** – देख कर । **हथ** – हाथ । **सूर** – सूर्य ।

५१३. **कळायण** – घटा, सेना । **पतौ** – प्रतापसिंह । **उनाग** – नंगी । **ब्रजागि** – जबरदस्त ।

५१४. **उदावत जीवण** – राठोड़ोंकी उदावत शाखाका जीवणसिंह । **सुरतांण** – सुल्तानसिंह । **पदम्म** – पद्मसिंह । **सुजाव** – पुत्र ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'सतावत'[1] 'माल' भड़ंत[2] सुभेद ।
अनै 'व्रजपाळ' सुजाव 'उमेद' ।। ५१४

विढ़ै[3] खग 'पीथल'रौ 'बखतेस' ।
वडा[4] खळ थाट हणै लघुवेस ।
'विजौ'[5] 'पदमेस' तणौ वरवीर[6] ।
मंडे रिण मांझ पड़ै बहु[7] मीर ।। ५१५

'जसावत' सूरतसिंघ[8] अजागि ।
लड़ै 'सिव' 'खेतल'रौ धख लागि ।
'सूरावत' 'देव' लड़ैत समांम ।
सझै जुध साहिब[9] ऊत 'सग्रांम' ।। ५१६

विढ़ै[10] भड़ 'जैत' तणौ बखतेस ।
'लखौ' 'हरियंद' सुजाव लड़ेस ।
'रसावत'[11] 'क्रन्न'[12] लड़ै रिमराह ।
'दलौ' जयसींघ[13] सुजाव दुबाह ।। ५१७

'मधौ' करणोत[14] लड़ै मगरूर ।
समोभ्रम 'नाहर' 'डूंगर' 'सूर' ।

---

१ ख. श्रुतावत । २ ख. लडंत । ग. भड़त । ३ ख. बिढ़ै । ४ ख. बडा । ५ ख. बिजो । ६ ख. बरबीर । ७ ख. बौहौ । ग. वोहृ । ८ ख. सूरतसींघ । ९ ख. साहिव । १० ख. बिढ़ै । ११ ख. ग. वासावत । १२ ख. क्रंन । ग. क्रन । १३ ख. ग. जयसिंघ । १४ ख. ग. करणोत ।

---

५१५. **पीथल** – पृथ्वीराज, या पृथ्वीसिंह । **बखतेस** – बखतसिंह । **विजौ** – विजयसिंह । **पदमेस** – पद्मसिंह ।

५१६. **सिव** – शिवदानसिंह । **खेतल** – खेतसिंह । **धख** - प्रबल इच्छा । **समांम** – बढ़िया, उत्तम । **सग्रांम** – संग्रामसिंह ।

५१७. **जैत** – जैतसिंह । **लखौ** – लक्ष्मणसिंह । **हरियंद** – हरिसिंह । **रसावत** – रायसिंहका पुत्र । **क्रन्न** – कर्णसिंह ।

५१८. **मधौ** – माधोसिंह । **करणोत** – राठौड़ वंशकी उपशाखा । **नाहर** – नाहरसिंह । **डूंगर** – डूंगरसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तठै 'भगवांन' तणौ 'सगतेस' ।
जुड़ै 'अजबेस'[1] तणौ 'जगतेस' ।। ५१८

अनावत[2] दूठ 'गजौ'[3] उणवार ।
जुड़ै 'हरियंद' सुजाव जुंभार[4] ।
अँगोभ्रम 'तेजल' 'बाघ'[5] अबीह ।
समोभ्रम 'रूप' 'अनौ'[6] जुधसीह ।। ५१९

'जगावत' मोकमसींघ[7] सजोस ।
तिकै[8] जुध 'केहरि'[9] 'मांन'[10] तणोस[11] ।
पतावत गोपियनाथ[12] प्रचंड ।
खळां सिर[13] भाट[14] दियै[15] भलखंड ।। ५२०

'अखौ'[16] खग खेल रमै दइवांण[17] ।
समोभ्रम दारुण[18] जोध 'सुजांण' ।
समोभ्रम देव करन्न[19] सुधन्न[20] ।
करै खग भाटक खीव[21] करन्न ।। ५२१

---

१ ग. अजवेस । २ ख. अनाव । ३ ख. जगौ । ४ ख. जुभार । ५ ग. वाघ । ६ ग. अनो । ७ ख. मौकमसींघ । ग. मौकमसिंघ । ८ ख. ग. तिकै । ९ ख. केहरी । १० ख. मांण । ११ ग. तणोस । १२ ख. ग. गोपीयनाथ । १३ सिरि । १४ ख. भाल । १५ ख. ग. दीयै । १६ ख. ग. अषौ । १७ ख. दईवांण । १८ ख. दारण । १९ ख. करंन । २० ख. सुधंन्न । ग. सुधन । २१ ख. षींमकरन । ग. खीमकरन ।

---

५१८. भगवांन – भगवानसिंह । सगतेस – शक्तिसिंह । अजबेस – अजबसिंह । जगतेस – जगतसिंह ।

५१९. अनावत – अनाड़सिंहका पुत्र । दूठ – जबरदस्त । गजौ – गजसिंह । हरियंद – हरिसिंह । जुंभार – जूंभारसिंह । अँगोभ्रम – पुत्र । तेजल – तेजसिंह । बाघ – बाघसिंह । अबीह – निडर, निर्भय, वीर । रूप – रूपसिंह । अनौ – अनाड़सिंह । जुधसीह – जोधसिंह ।

५२०. केहरि – केसरीसिंह । मांन – मानसिंह । पतावत – प्रतापसिंहका पुत्र ।

५२१. अखौ – अक्षयसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समोभ्रम दारुण सूर 'किसोर' ।
जुड़ै फतमाल खगां वरजोर[1] ।
धारूजळ वाहत[2] ग्रीखम धूप ।
मंडै[3] जुध 'देव' क्रनोत[4] 'मनूप' ।। ५२२
विढै[5] भड़ 'माहव'रौ[6] 'विजपाळ'[7] ।
हरौ 'सकताव'[8] सूर हठाळ ।
हिचै 'चतुरेस'तणौ[9] हरिनाथ ।
'नथौ'[10] भड़ गोरधनोत[11] सनाथ ।। ५२३
फतावत 'झूझ' लड़ंत अफेर ।
सत्रां जम सेर जही समसेर ।
'जसौ'[12] सिवदांन तणौ[13] जमरांण ।
'अजौ' भड़ 'केहर'रौ दइवांण[14] ।। ५२४
सुरां[15] गुर 'सांमत'[16] 'सूर' सुजाव ।
'जसावत' 'माहव' क्रोध जगाव ।
समोभ्रम 'मेघ'[17] 'झुंझार'[18] सधीर ।
वढै[19] विरमांण 'जसावत' वीर ।। ५२५

---

१ ख. बरजोर । २ ख. बाहत । ३ ख. ग. मंडे । ४ ख. क्रनौत । ५ ख. बिढै । ६ ख. माहाबरौ । ७ ख. बिजपाल । ८ ख. ग. सकतावत । ९ ग. चतुरेसतणो । १० ख. नाथौ । ग. नाथो । ११ ख ग. गोरधनौत । १२ ग. जसो । १३ ग. तणो । १४ ख. दईवांण । १५ ख ग. सूरां । १६ ग. सामंत । १७ ख. सेष । १८ ख. झूझार । १९ ख. बिढै ।

---

५२२. **किसोर** – किशोरसिंह । **धारूजळ** – तलवार । **ग्रीखम** – ग्रीष्म । **क्रनोत** – करणोत शाखाको । **मनूप** – मनरूपसिंह ।

५२३. **हरौ** – वंशज । **सकताव** – राठौड़ोंकी एक शाखा । **हिचै** – युद्ध करता है । **चतुरेस** – चतुरसिंह । **नथौ** – नाथूसिंह ।

५२४. **फतावत** – फतहसिंहका पुत्र । **झूझ** – युद्ध । **अफेर** – न मुड़ने या पीछे हटने वाला, वीर । **जसौ** – जसवंतसिंह । **जमरांण** – जबरदस्त, यमराज । **अजौ** – अजीतसिंह । **केहर** – केसरीसिंह ।

५२५. **सुरां गुर** – महावीर, बड़ा योद्धा । **सांमत** – सांवतसिंह । **सूर** – सूरसिंह । **सुजाव** – पुत्र । **जसावत** – जसवंतसिंहका पुत्र । **माहव** – माहवसिंह । **मेघ** – मेघसिंह । **झुंझार** – जुंझारसिंह । **विरमांण** – वीरभाणसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समोभ्रम 'सूंदर'[1] सूरजमाल[2] ।
'अजौ' 'हरिनाथ' सुजाव अपाल ।
'अखावत' 'सहसमाल'[3] अरोड़ ।
मिळै[4] घण घाय खळां घड़ मोड़ ।। ५२६

वहै[5] खग आय खळां[6] झळ वेग ।
तुटै घण आप तणै सिर तेग ।
सथी[7] करि मेछ घणा समराथ ।
भटी[8] भड़ तांम पड़ै[9] भाराथ ।। ५२७

सुरत्रिय[10] तांम[11] वरे सस धीर ।
रथां चढि स्रूगि[12] वसै[13] रणधीर ।
अंगोभ्रम 'राजड़' सूर 'अजब्ब'[14] ।
गुडै[15] खळ वीजळ[16] झाट गजब्ब[17] ।। ५२८

समोभ्रम 'गोकळ' 'पातल' साह ।
बिभाड़त रोद खड़ा[18] हळवाह[19] ।

---

१ ख. सुंदर । २ ख. सूरिजमाल । ३ ख. सहस । ४ ख. मिले । ५ बाहै । ग. वाहै । ६ ख. फलां । ७ ख. ग. साथी । ८ ख. ग. भाटी । ९ ख. पडे । १० ख. ग. सुरत्रीय । ११ ख. ग. ताम । १२ ख. स्रुगि । ग. स्रुगि । १३ ख. ग. वसे । १४ ख. अज्जब । ग. अजब । १५ ख. ग. गोडे । १६ ख. बीजल । १७ ख. गज्जब । ग. गजब । १८ ख. षडा । १९ ख. ग. हळबाह ।

---

५२६. **सूंदर** – सुन्दरसिंह । **सूरजमाल** – सूर्य्यमल । **अजौ** – अजीतसिंह । **सुजाव** – पुत्र । **अपाल** – जो किसीका रोका न रुके, वीर । **अखावत** – अक्षयसिंहका पुत्र । **अरोड़** - जबरदस्त । **मिळै···घाय** – बहुतसे घावोंसे क्षतपूर्ण हो गया हो । **खळां···मोड़** – शत्रु-दलको पराजित करने वाला ।

५२७. **तुटै···तेग** – अपने शिर पर बहुत-सी तलवारें तोड़ाता हुआ । **सथी···समराथ** – बहुतसे यवनोंको युद्धस्थलमें अपने साथ गमन करने वाला बना कर । **भटी···भराथ** – तब भाटी योद्धा युद्धस्थलमें धराशायी हुआ ।

५२८. **सुरत्रिय** – अप्सरा । **तांम** – उन, तब । **सस धीर** – (?) । **स्रुगि** – स्वर्ग । **अंगोभ्रम** – पुत्र । **राजड़** – राजसिंह । **अजब्ब** – अजबसिंह ।

५२९. **गोकळ** - गोकुलसिंह । **पातल साह** – प्रतापसिंह । **बिभाड़त** – संहार करता है । **हळवाह** – बलभद्रसिंह (?) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाभड़[1] सूर 'फतावत' 'मांन' ।
तेगां झट रोद[2] हणै मसतांन ।। ५२९

'विजावत'[3] 'रूप' लड़ै रिण वार[4] ।
धुबै[5] खळ थाट सिरै खग धार ।
विहारिय[6] दास तणौ 'चँद' वीर[7] ।
सुरां[8] 'ग्रणदावत' 'लाल' सधीर ।। ५३०

नरावत 'रूप' लड़ै नरनाह ।
'रासौ' भड़ 'खेतल'रौ[9] रिम राह ।
'द्वरावत'[10] वाजत[11] घोर दमांम ।
रमै[12] खग झाट खळां हळिरांम[13] ।। ५३१

'ग्रखौ' 'प्रिथीराज'[14] सुजाव ग्रपाल[15] ।
'ग्रनावत' वेढ[16] करै 'ग्रखमाल' ।
'ग्रजौ'[17] जगमाल सुतन्न[18] ग्रभंग ।
जगावत 'लाल' करै खग जंग ।। ५३२

---

१ ख. ग. महाबळ। २ ख. ग. रौद। ३ ख. बिजावत। ४ ख. बार। ५ ख. ग. धुबै। ६ ख. बिहारीय। ग. विहारीय। ७ ख. बीर। ८ ख. सूरौ। ग. सूरां। ९ ग. रे। १० ख. ग. द्वारावत। ११ ख. बाजत। १२ ख. मरै। १३ ख. हरिरांम। १४ ख. ग. प्रिथी। १५ ख. ग्रपार। १६ ख. बेढ़। १७ ग. ग्रजो। १८ ख. ग. सुत्तंन।

---

५२९. **फतावत** – फतहसिंहका पुत्र। **मांन** – मानसिंह। **रोद** – यवन। **मसतांन** – मस्त।

५३०. **विजावत** – विजयसिंहका पुत्र। **रूप** – रूपसिंह। **चँद** – चंद्रसिंह। **ग्रणदावत** – ग्रानन्दसिंहका पुत्र। **लाल** – लालसिंह।

५३१. **नरावत** – राठोड़ोंकी एक उपशाखा, इस शाखाका वीर। **रूप** – रूपसिंह। **नरनाह** – नरनाथ, यहां वीर ग्रर्थ है। **रासौ** – रायसिंह। **खेतल** – खेतसिंह। **रिम-राह** – शत्रु-ध्वंसक, शत्रु दल पर रास्ता करने वाला। **द्वरावत** – द्वारकादासका पुत्र। **दमांम** – नगाड़ा। **हळिरांम** – बलभद्रसिंह।

५३२. **ग्रखौ** – ग्रक्षयसिंह। **ग्रपाल** – वह जो किसीकी रोकमें न रहे, वीर। **ग्रनावत** – ग्रनाड़सिंहका पुत्र। **ग्रखमाल** – ग्रक्षयसिंह। **ग्रजौ** – ग्रजीतसिंह। **जगावत** – जगतसिंहका पुत्र। **लाल** – लालसिंह। **खग जंग** – तलवारका युद्ध।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करै जुध 'भाखर'रौ 'महि[1] कन्न'[2] ।
'अनौ' 'उगरावत' क्रोध उपन्न[3] ।
वळोवळ[4] मेच्छ खगां चह चंद ।
करै[5] 'सहसावत' सूर 'मुकुंद' ।। ५३३
धमोड़त साबळ मूगळ[6] धींग[7] ।
समोभ्रम 'पातल' अम्मरसींग[8] ।
'जसावत' जीवणदास सजोस ।
रिमांतरवार[9] हणै घण रोस ।। ५३४
समोभ्रम 'दूद' 'विहारिय'[10] सूर ।
'मधावत' 'बखतसी'[11] मगरूर ।
घटां खग लोह करै घमसांण ।
पटायत[12] भाटिय[13] एह प्रमांण ।। ५३५
भिड़ै खळ सूर 'उमेद' भुवाळ[14] ।
'मधावत' जोध 'जगौ' मछराळ ।
अड़ै 'मुकंदौ' भड़ वीर[15] सु अंग ।
'अनावत' जीवणदास अभंग ।। ५३६

---

१ ख. महै । २ ख. क्रंन । ग. क्रन । ३ ख. उप्पंन । ग. उप्पन । ४ ख. वलोवत । ५ ख. करै । ग. केरे । ६ ग. मुगल । ७ ग. धीघ । ८ ख. अंम्मरसींध । ग. अम्मरसीध । ९ ख. रिमांतरवारि । १० ख. बिहारीय । ग. विहारीय । ११ ख. ग. बष्षतसी । १२ ख. पटाइत । १३ ख. ग. भाटीय । १४ ख. भूवाल । १५ ख. बीर ।

---

५३३. **भाखर** – भाखरसिंह । **महिकन्न** – महकरणसिंह । **अनै** – अनाड़सिंह । **उगरावत** – उगरसिंहका पुत्र । **उपन्न** – उत्पन्न । **वळोवळ** – चारों ओर । **सहसावत** – सहससिंहका पुत्र । **मुकुंद** – मुकुन्दसिंह ।

५३४. **धमोड़त** – प्रहार करता है । **साबळ** – भाला विशेष । **पातल** – प्रतापसिंह । **जसावत** – जसवंतसिंहका पुत्र ।

५३५. **दूद** – दुर्जनसिंह । **विहारिय** – बिहारीसिंह । **मधावत** – माधोसिंहका पुत्र । **घमसांण** – युद्ध । **पटायत** – जागीरका स्वामी, जागीरदार । **भाटिय** – भाटी ।

५३६. **उमेद** – उम्मेदसिंह । **भुवाळ** – राजा । **जगौ** – जगतसिंह । **मछराळ** – वीर, योद्धा । **मुकंदौ** – मुकुंदसिंह । **अनावत** – अनाड़सिंहका पुत्र ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

*समोभ्रम[1] 'जैत' ज 'नाहर साह' ।
समोभ्रम 'नाहर' 'रांम' सराह ।
समोभ्रम भाउएदास सकाज ।
तठै भड़ 'रांम' कंठीर तराज* ॥ ५३७

समोभ्रम 'साहिब भांण' सराह ।
सत्रां खग झाट लड़ै 'गजसाह'[2] ।
'हरी' सुत जूटत सूर 'हिंदाळ' ।
झटां खग खेलत पौरस झाळ ॥ ५३८

धुबै[3] खग 'केहर' बीजळ धार ।
भिड़ै 'भगवांन' तणौ[4] गज भार ।
मँडै[5] रण 'सूर' तणौ 'पदमेस' ।
'सुजावत'[6] 'हिम्मत'[7] जंग सझेस ॥ ५३९

भऊ[8] सुत 'हींद'[9] वजै गज भार ।
सझै 'कुसळेस' तणौ 'सिरदार' ।
विढै[10] सुत 'जोग' करै खगवाह[11] ।
सत्रां घड़ सीस 'बहादर'[12] साह' ॥ ५४०

---

१ ख. ग. समोभ्र ।
*....*चिन्हांकित पंक्तियां ख. प्रतिमें नहीं हैं ।
२ ख. गजगाह । ३ ग. धुवै । ४ ग. तणो । ५. ख. ग. मंडे । ६ ग. सूजावत ।
७ ख. हिम्मत । ८ ख. ग. भाऊ । ९ ख. हिंद । १० ख. बिढ़ै । ११ ख. षगबाह ।
१२ ख. ग. बाहादर ।

---

५३७. नाहर – नाहरसिंह । रांम – रामसिंह । कंठीर – सिंह । तराज – समान ।

५३८. गजसाह – गजसिंह । हरी – हरिसिंह । जूटत – भिड़ता है ।

५३९. केहर – केसरीसिंह । बीजळ – तलवार । भगवांन – भगवानसिंह । गज भार – हाथी समूह । सूर – सूरसिंह । पदमेस – पदमसिंह । सूजावत – सूरसिंहका पुत्र । हिम्मत – हिम्मतसिंह ।

५४०. भऊ – भाऊसिंह । हींद – हिन्दूसिंह । कुसळेस – कुशलसिंह । सिरदार – सरदारसिंह । जोग – जोगसिंह । बहादर साह – बहादुरसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समोभ्रम 'रूप' लड़ै 'अमरेस' ।
सत्रां 'सबळावत' वीर[1] सभेस ।
अबीह 'प्रताप' तणौ 'उगरेस' ।
सभै जुध 'सांमत'रौ 'सगतेस' ।। ५४१

मुडै[2] 'उग्रसेण[3] तणौ 'फतमाल' ।
लुहां[4] खळकट[5] करै गंज 'लाल' ।
धिखै भभकै रण क्रोध धियाग[6] ।
खड़ख्खड़[7] ढाल झड़ज्झड़[8] खाग ।। ५४२

उतारत नीर खळां अवगाढ़ ।
महाबळ नीर चढ़ावत 'माढ़' ।
चौहान–विढ़ै[9] चहुवांण जढै विकराळ ।
उजाळत संभर संभरवाळ ।। ५४३

उरै[10] जुध बीच[11] तुरी 'अजबेस'[12] ।
भुहारव[13] ऊपर[14] मूंछ भिड़ेस ।
मुखै[15] चख चोळ सरूप मजीठ ।
धबोड़त[16] साबळ मूगळ[17] धीठ ।। ५४४

---

१ ख. बीर। २ ख. ग. मंडै। ३ ख. सुद्रसेण। ग. उग्रसेण। ४ ख. ग. लोहां। ५ ख. ग. खळट्रक। ६ ख. ग. धियाग। ७ ख. ग. षडषड। ८ ख. झडझड। ९ ख. विढ़ै। १० ख. वोरे। ग. वोरैं। ११ ग. वीच। १२ ग. अजवेस। १३ ख. भौंहारव। १४ ग. उपर। १५ ख. मुष्ष। ग. मुषे। १६ ख. धमोड़त। १७ ग. मुगळ।

---

५४१. रूप – रूपसिंह। अमरेस – अमरसिंह। अबीह – वीर। प्रताप – प्रतापसिंह। उगरेस – उगरसिंह। सांमत – सावंतसिंह। सगतेस – शक्तिसिंह।

५४२. फतमाल – फतहसिंह। लुहां – लोहों, शस्त्रों। खळकट – संहार। लाल – लालसिंह। धिखै – प्रज्वलित होता है। भभकै – उमड़ता है। धियाग – आसमान। खड़ख्खड़ – ध्वनि विशेष। झड़ज्झड़ – कटना क्रिया, कटते हैं।

५४३. नीर – कांति। अवगाढ़ – वीर। माढ़ – जयसलमेर राज्य। संभर – सांभर। संभरवाळ – चौहान।

५४४. उरै – झोंकता है। तुरी – घोड़ा। अजबेस – अजबसिंह। भुहारव – भौंहों। भिड़ेस – स्पर्श करती है। चख – नेत्र। चोळ – लाल। धबोड़त – प्रहार करता है। साबळ – भाला। धीठ – ढीठ, वीर।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवक्कत[1] घाव रगत्र उलाळ ।
काळीभर[2] पत्र पिवंत[3] कराळ ।
हिचै जुध 'लाल' तणौ हरियंद ।
मिळै[4] गज घूमर[5] जांणि मयंद ।। ५४५

सझै खग वाह[6] खळां समराथ ।
नरां सिणगार 'अजावत' 'नाथ' ।
रिमां सिर आछट[7] खाग रंगेस ।
मँडै[8] जुध 'सूर' तणौ 'मुकँदेस' ।। ५४६

असुरां[9] घट बाढ़त खाग अरोड़ ।
छछोहक 'सूर' तणौ रिणछोड[10] ।
वेरीहर[11] वाढ़त[12] वीजळ[13] वाह[14] ।
'मुरारिय[15]' संभ्रम 'माधव साह' ।। ५४७

'दलावत' हीमतसींघ[16] दुबाह ।
'रमौ'[17] अजबेस[18] तणौ रिमराह ।
'कुजावत'[19] 'रत्तन'[20] लोह करत्त[21] ।
विढ़ै[22] 'कुसळावत' सूर 'वखत्त[23]' ।। ५४८

---

१ ख उवक्कत । ग. उवकत । २ ख. कालीभरि । ३ ख. ग. पीवंत । ४ ख. ग. मिले । ५ ख. घूंमर । ६ ख. बाह । ७ ख. ग. आछटि । ८ ख. ग. मंडे । ९ ख. असुरी । १० ख. ग रणछोड । ११ ख. बैरीहर । ग. वेरीहर । १२ ख. ग. ढाहत । १३ ख. बीजल । १४ ख. बाह । १५ ख. ग. मुरारीय । १६ ख. हिंम्मतसिंघ । ग. हिम्मतसिंघ । १७ ख ग. रासौ । १८ ग. अजवेस । १९ ख. ग. कौजावत । २० ख. रमंन । २१ ख. करंत । ग. करत । २२ ख. बिढ़ै । २३ ख. बष्पत । ग. वष्षत ।

---

५४५. **उवक्कत** – उमड़ता है । **उलाळ** – ऊंचा, ऊपर । **लाल** – लालसिंह । **हरियंद** – हरिसिंह । **गज घूमर** – गज-समूह, गज-दल । **जांणि** – मानों । **मयंद** – सिंह ।

५४६ **खग वाह** – तलवारका प्रहार । **समराथ** – समर्थ, वीर । **अजावत** – अजीतसिंहका पुत्र । **नाथ** – नाथूसिंह । **सूर** – सूरजसिंह । **मुकँदेस** – मुकुंदसिंह ।

५४७. **अरोड़** – जबरदस्त । **छछोहक** – तेज । **सूर** – सूरजसिंह । **रिणछोड़** – रिणछोड़-दास नामक वीर । **वेरीहर** – शत्रुवंशज, शत्रु । **वाढ़त** – काटता है । **वीजळ वाह** – तलवारका प्रहार ।

५४८. **कुसलावत** – कुशलसिंहका पुत्र । **रतन** – रत्नसिंह । **वखत्त** – बखतसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'धिरा'हर[1] 'नाहर' मूगळ[2] धींग ।
सभ्भै 'सबळावत' दुरजणसींग[3] ।
झुकै[4] सर साबळ वीजळ[5] झेलि ।
पड़ै[6] रण खेत[7] खळां घण पेलि ॥ ५४९
वरे रँभ ताय उडाय विमांण[8] ।
चढै[9] अमरापुर सूर चह्वांण[10] ।
दुरज्जण[11]-सींघ सुजाव दुबाह[12] ।
वधै[13] मधि राज करै खगवाह[14] ॥ ५५०
लड़ै हरिनाथ तणौ धख लागि ।
वडौ[15] भड़ 'गोवरधन्न' व्रजागि[16] ।
'अभैमल' चाड वडै[17] अवसांण ।
इसी विध[18] जंग करै चहुवांण ॥ ५५१
सोनगरा–मँडै[19] भड़ सोनंगरा[20] जुध मांहि ।
सझै जुध ओरवियौ[21] 'दळसाहि' ।
कढै[22] खग वाह[23] करंत कराळ ।
चका खळ टूक[24] हुवै धखचाळ[25] ॥ ५५२

---

१ ख. ग. धाराहर । २ ख. मूंगल । ग. मुगळ । ३ ख. दुजणसींघ । ग. दुर्जनसिंघ । ४ ख. झुकं । ग. झूकै । ५ ख. ग. बीजल । ६ ख. ग. पडे । ७ ख. ग. षेति । ८ ख. बिमांण । ९ ख. चढ़े । १० ख. चूह्वांण । ११ ग. दुरजण । १२ ग. दुवाह । १३ ख. बधे । १४ ख. षगबाह । १५ ख. बडौ । ग. वडो । १६ ग. व्रज्झागि । १७ ख. बडे । १८ ख. ग. विधि । १९ ख. ग. मंडे । २० ख. सोनगिरा । २१ ख. ग. ओरवीयौ । २२ ख. कटे । ग. कढ़े । २३ ख. बाह । २४ ख. वूक । २५ ख. ग. धकचाळ ।

---

५४९. **धिरा** – धीरसिंह । **नाहर** – नाहरसिंह । **धींग** – जबरदस्त । **सबळावत** – सबलसिंहका पुत्र ।

५५०. **वरे** – वरण कर के । **रँभ** – अप्सरा । **चह्वांण** – चौहान वंशका राजपूत । **दुबाह** – वीर ।

५५१. **धख** – जोश । **अभैमल** – महाराजा अभयसिंह । **चाड** – रक्षा, सहायता । **अवसांण** – अवसर, मौका ।

५५२. **सोनंगरा** – चौहान वंशकी एक शाखा । **चका** – चक्र, सेना । **धखचाळ** – युद्ध ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घणा रत डूब[1] फटा[2] खिळ[3] घाट ।
पड़ै[4] रत चंदण जांणि कपाट ।
उडै बहुबांण[5] परा वज्र[6] ऊक ।
रुकां झट ऊपर[7] बाजत[8] रूक ।। ५५३

सझै खळ मार छतीसैई[9] सार ।
वढै[10] वप[11] घाव करै जिण वार ।
'हरी'सुत[12] झेलत लोह हजार ।
अंगो अंग वाहत[13] लोह अपार ।। ५५४

इसी विध[14] लोह[15] करे अणथाह ।
सुरां[16] गुर खेत पड़ै[17] 'दलसाह' ।
परीवर[18] होय वडौ[19] जस पाय ।
चढै[20] असमांण विमांण[21] चलाय ।। ५५५

सकौधर[22] लोक तजै[23] दुख सोक ।
लहै[24] सुख अम्मर[25] अम्मरलोक[26] ।
मंडै[27] खग झाट खड़ै[28] किलमेस ।
'सुरौ'[29] 'दल साह' तणौ 'किसनेस' ।। ५५६

---

१ क. डब । २ ख. खट । ३ ख. षल । ४ ख. पडे । ५ ख. चहुंवांण । ग. बहूबांण । ६ ख. बज्र । ७ ख. ग. ऊपरि । ८ ग. बाजत । ९ ख. ग. छतीसैई । १० ख. बढ़ै । ११ ख. बप । १२ ख. ग. हरीसुत । १३ ख. ग. बाहुत । १४ ख. बिधि । ग. विधि । १५ ख. जंग । १६ ख. ग. सूरां । १७ ख. पडे । १८ ख. परीवए । १९ ख. बडौ । ग. वडो । २० ख. ग. चढ़े । २१ ख. बिमांण । २२ ख. ग. सकोधर । २३ ग. तजे । २४ ग. लहे । २५ ख. अंम्मर । ग. अमर । २६ ख. अंम्मरलोक । ग. अमरलोक । २७ ख. ग. मंडे । २८ ख. षंडै । २९ ख. ग. सूरौ ।

---

५५३. फटा – फट गये । खिळ – दुष्ट, शत्रु । घाट – शरीर । रुकां – तलवारों । झट – प्रहार ।

५५४. सार – अस्त्र-शस्त्र । वप – वपु, शरीर । लोह – शस्त्र प्रहार ।

५५६. किलमेस – यवन, बादशाह । सुरौ – सूरसिंह । दलसाह – दलसिंह । किसनेस – किसनसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंडोसक[1] वाह[2] करै[3] अणपाल ।
'दलावत' साहिब-खांन दुझाळ ।
रमै खग झाट वडौ रजपूत ।
उठै[4] 'हिमतेस' दुरज्जण[5]-ऊत ॥ ५५७

किलम्मक[6] थाट हणै किरमाळ ।
'हठी' सुत वैरिय[7]- साल हठाळ ।
'सतावत' 'माधव' जंगसजेस[8] ।
महाबळ[9] 'मोहण'रौ[10] 'अमरेस' ॥ ५५८

सतावत[11] अम्मरसींघ[12] छछोह ।
लड़ायक घायक वाहत[13] लोह ।
अणी[14] खग झाट हणै दइवांन[15] ।
जुड़ै सुत दुज्जणसींघ[16] 'जवांन' ॥ ५५९

नरांपति[17] जूटत पौरसनेम ।
'जुरावर'[18] 'वीरम'[19] रांणग'[20] जेम[21] ।

---

१ क. पडासक । २ ख. बाह । ३ ख. करै । ग. कैरै । ४ ख. ऊठै । ग. उठे । ५ ग. दुरजण । ६ ख. किलंमक । ग. किलमक । ७ ख. बैरीय । ग. वैरीय । ८ ख. जंगसझेस । ९ ख. माहाबळ । ग. महावळ । १० ग. रो । ११ ख. ग. छतावत । १२ ख. आमरसींघ । ग. अम्मरसिंघ । १३ ख. बाहत । १४ ख. अरी । १५ ख. दईवांन । १६ ग. दुजणसीध । १७ ग. नरौपति । १८ ख. ग. जोरावर । १९ ख. बीरम । २० ख. रांणंग । ग. रांणग । २१ ख. ग. जेम ।

---

५५७. **पंडोसक** – तलवार । **बाह** – प्रहार । **दलावत** – दलसिंहका पुत्र । **दुझाल** – योद्धा । **हिमतेस** – हिम्मतसिंह । **दुरज्जण-ऊत** – दुर्जनसिंहका पुत्र ।

५५८. **किलम्मक** – यवन, मुसलमान । **थाट** – सेना । **किरमाळ** – तलवार । **हठी** – हठीसिंह । **हठाळ** – अपनी आन पर हठ करने वाला वीर । **सतावत** – शक्तिसिंहका पुत्र । **माधव** – माधोसिंह । **मोहण** – मोहनसिंह । **अमरेस** – अमरसिंह ।

५५९. **लड़ायक** – युद्ध करने वाला । **घायक** – घायल । **लोह** – शस्त्र । **दइवांन** – वीर । **जवांन** – जवानसिंह ।

५६०. **जुरावर** – जोरावरसिंह । **वीरम** – वीरमदेव सोनगरा शाखाका चौहान । **रांणग** – राणगदेव सोनगरा शाखाका चौहान ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रचै धर-गूजर आरण रोस ।
जळंधर[1] नीर चढावत जोस ।। ५६०
जुधहर[2] अगाळ[3] दारुण जोध ।
कछवाह–करै जुध कूरमरा[4] सक्रोध ।
नरूहर ओर[5] तुरी नर नाह ।
सझै[6] जुध 'केहर'रौ[7] 'जयसाह' ।। ५६१
रचै खग आछट पावक रंग ।
बँगाळक[8] ऊडत[9] घाव बरंग[10] ।
खळां पनँगां सिर[11] दाव खगेस ।
करै 'चँद्रभांण' तणौ[12] 'कुसळेस'[13] ।। ५६२
'जगावत' 'माल' खळां जमराव ।
सझै[14] जुध 'चैन'[15] 'पिराग' सुजाव ।
तेगां झट वाहत[16] वाजत[17] त्रंब ।
'अँबानयरेस' चढ़ावत अंब ।। ५६३
उठै चत्रकोट वळा[18] उजवाळ[19] ।
करै जुध नाह[20] इहां[21] कळिचाळ ।

---

१ ख. ग. जालंधर । २ ख. जोधाहरि । ग. जोधाहर । ३ ख. ग. आगलि । ४ ख. ग. राव । ५ ख. ओरि । ६ ख. ग. सझै । ७ ग. रो । ८ ग. वंगाळक । ९ ख. ऊडंत । ग. उडंत । १० ग. वरंग । ११ ख. सिरि । १२ ग. तणो । १३ ख. कुसलेस । १४ ग. सजै । १५ ख. चैत । १६ ख. बाहत । १७ ख. बाजत । १८ ख. ग. छलां । १९ ख. ग. अजुवाल । २० ख. नाग । २१ ख. ब्रहा ।

---

५६०. **धर-गूजर** – गुजरात । **आरण** – युद्ध । **जळंधर** – जालोर नगर ।

५६१. **जुधहर** – राव जोधाके वंशज महाराजा अभयसिंह । **कूरमरा** – कच्छवाह वंशके । **नरूहर** – कच्छवाह वंशके नरूका शाखाका वीर । **केहर** – केसरीसिंह । **जयसाह** – जयसिंह ।

५६२. **खग** – तलवार । **आछट** – प्रहार, वार । **पावक** – अग्नि । **बँगाळक** – मुसलमान । **बरंग** – खंड, टूक । **पनँगां** – नागों । **खगेस** – गरुड़ । **कुसळेस** – कुशलसिंह ।

५६३. **जगावत** – जगरामसिंहका पुत्र । **माल** – मालदेव । **जमराव** – यमराज । **चैन** – चैनसिंह । **पिराग** – प्रयागसिंह । **सुजाव** – पुत्र । **त्रंब** – नगाड़ा । **अँबानयरेस** – आमेर नगर के राजा । **अंब** – कांति, दीप्ति ।

५६४. **चत्रकोट** – चित्तौड़ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'अखावत' मोहणसींघ[1] उदार ।
सत्रां घट काढ़त सेल दुसार ।। ५६४
महाबळ जूटत अम्मलमांण[2] ।
'जुरावर'[3] तेज तणौ जमरांण ।
हिचै 'महिरांण खळां घट हूंत ।
कटै[4] असि[5] हेक लगै[6] वप कूंत[7] ।। ५६५
खगां झट वाहत[8] रौद्रव खूर ।
सझै जुध 'भारथ' संभ्रम 'सूर' ।
हुई दळ मूगळ चाढ़त हीक ।
देवड़ा—महाबळ राड़[9] करै मछरीक ।। ५६६
जसावत दौलतसींघ[10] जगागि ।
'जगावत' 'जैत' लड़ै क्रुध[11] जागि ।
सझै खग झाट निसाट सताब ।
अबूगिर[12] सीस चढ़ावत आब ।। ५६७
बँबाळव लोयण घाट वराड़[13] ।
'इँदौ'[14] भड़ एम लड़ै अवनाड़ ।

---

१ ग. मोहणसिंघ । २ क. अमलमांण । ३ ख. ग. जोरावर । ४ ख. ग. कटे । ५ ख. हसि । ६ ख. लगौ । ७ ग. कूत । ८ ख. बाहत । ९ ख. राडि । १० ग. दोलतसिंघ । ११ ख. ग. कुध । १२ ख. आबूंगिर । ग. आबूगिर । १३ ख. बराड़ । १४ ख. इंदा । ग. इदा ।

---

५६४. अखावत — अक्षयसिंहका पुत्र ।
५६५. अम्मलमांण — वीर, योद्धा । जुरावर — जोरावरसिंह । हिचै — युद्ध करता है । महिरांण — समुद्रसिंह । कूंत — भाला ।
५६६. रौद्रव — यवन, भयंकर । खूर — समूह । भारथ — भारतसिंह । सूर — सूरसिंह । हुई — घोड़ा । हीक — (कम्पन ?) । मछरीक — चौहान वंशका राजपूत ।
५६७. जसावत — जसवंतसिंहका पुत्र । जगावत — जगरामसिंहका पुत्र । जैत — जैतसिंह । निसाट — यवन, मुसलमान । सताब — शीघ्र । अबूगिर — आबू पर्वत । आब — कांति, दीप्ति ।
५६८. बँबाळव — भयंकर, भयावह, जबरदस्त । लोयण — नेत्र । वराड़ — जबरदस्त । इँदौ — इन्द्रसिंह । अवनाड़ — आनाड़सिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'अनौ' भड़ 'जैत' तणौ अणभंग ।
जुड़ै 'करणावत' देदल जंग ।। ५६८
उठै[1] 'जगतेस' खळां अजरैत ।
जुड़ै खग झाट समोभ्रम 'जैत' ।
सुतं मळियागिर[2] ऊदल[3]- साह ।
ग्रहै[4] खग वाह[5] करै गजगाह ।। ५६९

मांगलिया:-'हृदौ'[6] भड़ गोरधनोत[7] हठाळ ।
तठै करमाळ करै रिणताळ ।
सुरां गुर भागचँदोत सकांम ।
रमै खग झाट 'हिरदय[8] रांम' ।। ५७०
वडा[9] खळ ढाहत साबळ[10] वाह ।
'गजावत' 'खीम' करै गजगाह ।
धसै[11] जुध मांगळिया[12] भड़ धूत ।
हुसै[13] दळ मारण नेजम[14] हूंत[15] ।। ५७१
'हरी' 'सबळेस' तणौ[16] करि हाक ।
करै खग भूक घणा किलमाक ।

---

१ ग. उठे। २ ख. ग. मलियागर। ३ ग. उदल। ४ ख. ग्रहे। ५ ख. बाह। ६ ग. हृदो। ७ ख. गोरधनोत। ८ ख. हिरहृय। ९ ख. बडां। १० ख. सावळ। ११ ख. धसे। १२ ग. मांगलीया। १३ ख. हुसे। ग. हूसे। १४ ख. ग. नैजम। १५ ख. ग. हूत। १६ ग. तणो।

---

५६८. **अनौ** – अनाड़सिंह। **जैत** – जैतसिंह। **जुड़ै** – भिड़ता है, युद्ध करता है। **करणावत** – राठौड़ वंशकी करणावत शाखाका वीर। **देदल** – देदलसिंह।

५६९. **जगतेस** – जगतसिंह। **अजरैत** – जबरदस्त, अजयी। **जैत** – जैतसिंह। **सुतं** – पुत्र। **मळियागिर** – चंदनसिंह। **ऊदलसाह** – उदयसिंह। **वाह** – प्रहार। **गजगाह** – युद्ध।

५७०. **हृदौ** – हृदयसिंह। **तठै** – वहां। **करमाळ** – तलवार। **रिणताळ** – युद्ध। **भागचँदोत** – भागचंद्रका पुत्र।

५७१. **ढाहत** – गिरता है, मारता है। **साबळ** – भाला विशेष। **गजावत** – गजसिंहका पुत्र। **खीम** – खीमसिंह। **मांगळिया** – गहलोत वंशकी एक शाखा। **धूत** – मस्त, उन्मत्त। **नेजम** – भाला।

५७२. **हरी** – हरिसिंह। **सबळेस** – सबलसिंह। **हाक** – जोशपूर्ण आवाज।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाबळ वीजळ[1] झाट 'अमांन' ।
खहै 'अमरावत' साहिब - खांन ॥ ५७२
जठै रहियौ रवि कौतक[2] जोय ।
दियै[3] खग झाट जठै हुल दोय ।
'अजावत' साहिबसींघ[4] 'अनोप'[5] ।
उमेदहवार लड़ै भड़ ओप ॥ ५७३
विढै[6] इक भायण तेग बुहांण[7] ।
सुतं[8] 'रतनागर' दूठ 'सुजांण' ।
पुरोहित केसरीसिंह- सभै सिवड़ांपति दारण सूर ।
पिरोहित 'केहरियौ[9]' रसपूर[10] ॥ ५७४
वडां[11] घर एह सदा लगि वीर ।
धणी छळ आवत कांम सधीर ।
ददौ[12] इण 'केहररौ' दइवांण[13] ।
उजैणिय[14] खेत वडै[15] अवसांण ॥ ५७५
'जसा' छळ[16] पौरस झाळ जगत्ति[17] ।
दिलीपतहूंत[18] लड़ै 'दळपत्ति' ।

---

१ ख. बीजल । २ ख. कौतिग । ग. कौतिक । ३ ख. दीयै । ४ ख. ग. साहिबसिंघ । ५ ग. अनोप । ६ ख. बढ़ै । ७ ख. वहांण । ग. बहांण । ८ ग. सुत । ९ ख. केहर । १० ख. पौरस । ११ ख. बडौ । ग वडौ । १२ ख. ग. दादौ । १३ ख. ग. दईवांण । १४ ख. ग. उजेणीय । १५ ख. बडै । १६ ख. ग. छळि । १७ ख. ग. जगति । १८ ख. ग. दिलीपतिहूंत ।

---

५७२. **खहै** – युद्ध करता है । **अमरावत** – अमरसिंहका पुत्र ।
५७३. **जठै** – जहां । **हुल** – (?) । **अजावत** – अजीतसिंहका पुत्र । **अनोप** – अनोपसिंह ।
५७४. **भायण** – (?) । **बुहांण** – प्रहार होने पर । **रतनागर** – समुद्रसिंह । **दूठ** – जबरदस्त । **सुजांण** – सुजानसिंह । **सिवड़ांपति** – सिवड़ शाखाका राजगुरु पुरोहित । **पिरोहित** – पुरोहित । **केहरियौ** – केसरीसिंह ।
५७५. **घर** – वंश । **सदा लगि** – सदैव, नित्य । **धणी** – स्वामी । **छळ** – लिए, युद्ध । **आवत···सधीर** – युद्धमें वीर गति प्राप्त होते हैं । **ददौ** – पितामह । **केहररौ** – केसरीसिंहका । **दइवांण** – वीर । **अवसांण** – युद्ध ।
५७६. **जसा** – महाराजा जसवंतसिंह । **छळ** – लिए । **दिलीपत** – बादशाह । **दळपति** – दलपतसिंह पुरोहित जो केसरीसिंह पुरोहितका पितामह था ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झटां खग 'औरंग' धूमर[1] झाड़ि ।
पड़े[2] झलि लोह घणा खळ पाड़ि ।। ५७६

परी[3] वरि[4] स्रुग[5] वसै[6] 'दळपत्ति'[7] ।
उसी हिज[8] 'केहर' कीध उकत्ति[9] ।
चढी[10] नह सिल्लह अँग बचाव[11] ।
सादोहिज[12] तांम कटै सिर पाव ।। ५७७

जमद्दढ[13] खाग कसै[14] जमरांण ।
पला भख साबळ[15] रोळवि पांण ।
छुँटै[16] असि तांम चढै[17] छक छोह ।
लिधी[18] नह ढाल वचावण[19] लोह ।। ५७८

सकौ[20] जुधहूंत हरोळ[21] सधीर ।
वधै[22] असि झोक[23] लियौ[24] नरवीर ।
आडा[25] दळ टक्करहूंत उडाय ।
जडा[26] दळ वीच[27] कियौ[28] जुध जाय ।। ५७९

---

१ ख. धूंमर । २ ग. पडै । ३ ग. पारी । ४ ख. बरि । ५ ख. ग. श्रुगि । ६ ख. बसे । ग. वसे । ७ ख. दलपति । ८ ख. हीज । ९ ख. उकति । १० ख. ग. चाढ़ी । ११ ख. बचाउ । ग. वचाउ । १२ ख. ग. सावौहिज । १३ ख. ग. जमंदढ़ । १४ ख. ग. कसे । १५ ग. सावळ । १६ ख. ग. छांटै । १७ ख. चढ़े । १८ ख. लीधी । १९ ख. बचावण । २० ख. ग. सको । २१ ख. ग. हरौल । २२ ख बधे । ग. वधे । २३ ख. ग. झोक । २४ ख. लीयौ । २५ ख. ग. आडा । २६ ख. ग. जाडा । २७ ख. बीचि । २८ ख. ग. कीयौ ।

---

५७६. औरंग – बादशाह औरंगजेब । धूमर – सेना । पड़ै – वीर गतिको प्राप्त हुआ ।

५७७. परी – अप्सरा । वरी – वरण कर के । स्रुग – स्वर्ग । दळपत्ति – दलपतसिंह पुरोहित ।

५७८. लोह – शस्त्र-प्रहार ।

५७९. जडा – घना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घमोड़त मूगळ[1] साबळ *घाय ।
अड़ै बड हाथहुंता घड़ आय ।
लेतां खळ आवत साबळ* लार ।
कांटै जिम खांचत मछ सिकार ।। ५८०

धमंधम वाजत[2] सेल धमोड़ ।
जठै रत छौळ[3] पड़ै जळ जोड़ ।
पियै[4] भरि खप्पर जोगणि पूर ।
सराहत नारद संकर[5] सूर ।। ५८१

सिलेह[6] घड़[7] पाक्खर बंधि[8] सुचंग ।
पड़ै भरळक्कत फूटि पमंग ।
सथे[9] हिज फूटत घाट दुसार ।
उडै हंस[10] बाज अनै[11] असवार ।। ५८२

करै धज वाह[12] वा[13] कड़कंत ।
जई मद नीझर[14] सेल जडंत ।
करां कर[15] जोर छडाळ कढंत ।
अमावड़ घाव भरै[16] उबकंत ।। ५८३

---

१ ग. मुगल ।
*···*चिन्हांकित पद्यांश ख. प्रतिमें नहीं है ।
२ ख. बाजत । ३ ग. छोळ । ४ ख. पीयै । ५ क. सूकर । ६ ख. ग. सिल्है । ७ ख. ग. धड । ८ ख. बेधि । ग. वेधि । ९ ख. साथै । ग. साथे । १० ग. हंसे । ११ ग. अने । १२ ख. बाह । १३ ग. तवा । १४ ग. नीजर । १५ ग. करि । १६ ख. भरे ।

---

५८०. घमोड़त – प्रहार करता है । घाय – प्रहार ।

५८१. धमोड़ – प्रहार । जठै – जहां । रत – रक्त, खून । छौळ – धारा, तरंग । सराहत – सराहना करता है । सूर – सूर्य ।

५८२. सिलेह – कवच । भरळक्कत – प्रहार । पमंग – घोड़ा । हंस – प्राण । बाज – घोड़ा । अनै – और ।

५८३. धज – भाला । सेल जडंत – प्रहार करता है । छडाळ – भाला । अमावड़ – अपार, बहुत । उबकंत – उमड़ता है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जठै रत छीछ गजं[1] सिर जाय ।
लगी किर[2] पाहड़ ऊपर[3] लाय[4] ।
तुटै[5] इम बाहत[6] साबळ तांम ।
कछी[7] खग तांम सुरापण[8] कांम ।। ५८४
पछट्टत[9] बीजळि[10] 'केहर'[11] पांणि ।
सिलह[12] बंध हेक[13] करै घमसांणि[14] ।
जुड़ै चहुंवै-दळ[15] रोद[16] व्रजागि[17] ।
खिवै घण 'केहर' ऊपर[18] खग्गि[19] ।। ५८५
अणी सिर सेल भिड़ै अवगाढ़ि[20] ।
वजै[21] सिर[22] गह्वर[23] धजर[24] वाढ़ि[25] ।
चहच्चह[26] चंड पियै[27] रतचोळ ।
बँबाळव गात हुवै झकबोळ ।। ५८६
जांणै[28] दळ रांमण ऊपरि[29] जाय[30] ।
लड़ै हणमंत सिंदूर लगाय ।

---

१ ख. गजां । २ ख. ग. किरि । ३ ग. उपर । ४ ग. लाई । ५ ख. ग. तूटो । ६ ग. वाहत । ७ ख. कढ़ी । ८ ख. सूरापण । ग. सुरापण । ९ ग. पछटत । १० ख. बीजल । ग. बीजळि । ११ ख. केहरि । १२ ख. ग. सिल्है । १३ ग. एक । १४ ग. घमसांण । १५ ख. बल । ग. वल । १६ ख. रौद । १७ ख. व्रजाग । १८ ख. ऊपरि । ग. उपर । १९ ख. ग. षाग । २० ख. ग. अवगाढ़ । २१ ख. बजै । २२ ख. र । २३ ख. ग. गझ्झर । २४ ख. धज्जर । २५ ख. बाढ़ । २६ ख. ग. चहचह । २७ ख. पीयै । २८ ख. जांणे । २९ ग. उपरि । ३० ख. प्रतिमें नहीं है ।

---

५८४. **जठै** – जहां । **रत** – रक्त । **छींछ** – धार, धारा । **किर** – मानों । **लाय** – आग, अग्नि ।

५८५. **पछट्टत** – प्रहार करता है । **बीजळि** – तलवार । **केहर** – केसरीसिंह । **पांणि** – हाथ । **सिलह बंध** – योद्धा । **रोद** – यवन । **व्रजागि** – जबरदस्त । **खिवै** – चमकती है ।

५८६. **अवगाढ़ि** – वीर, योद्धा । **गह्वर** – तलवार (?) । **धजर** – भाला । **वाढ़ि** – काट कर । **चहच्चह** – द्रव पदार्थको मुंहसे खींच कर पीनेकी क्रिया या इस प्रकारसे पीनेसे होने वाली ध्वनि । **चंड** – रणचंडी, दुर्गा । **रतचोळ** – लाल रक्त, लाल खून । **बँबाळव** – जबरदस्त । **गात** – शरीर । **झकबोळ** – तरबतर ।

५८७. **हणमंत** – हनुमान ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुटी[1] खग रोद[2] घड़ा पर तीख ।
सही[3] जमदाढक झाळ सरीख ।। ५८७

करै उव राव[4] दुसार कटार ।
वहै[5] कंठि हार परी जिण वार[6] ।
लांगौ[7] हणमंत[8] पराक्रम[9] लेखि ।
दियै[10] नह हार जति[11] वप[12] देखि ।। ५८८

झझक्कत[13] वारँग[14] फेर झुकंत ।
हुवै इम चूक[15] मुनेस हसंत ।
उठै दुजराज हसै[16] रिझवार ।
हसंत विलोक[17] करै[18] उरहार[19] ।। ५८९

'अभा' छळि एम लड़ै[20] दइवांण[21] ।
घणा वज्र[22] झेलि पड़ै[23] घमसांण ।
रथां चढि रंभ अनै दुजराज ।
सुरां पुर कीध प्रवेस सकाज ।। ५९०

---

१ ख. ग. तुटो । २ ख. ग. रौद । ३ ख. ग. साही । ४ ख. राब । ५ ख. बाहै । ग. वाहै । ६ ख. बार । ७ ख. लागो । ८ ख. हमंत । ९ ख. पराक्र । १० ख. ग. दीयै । ११ ख. ग. जती । १२ ख. बप । ग. वप । १३ ख. झझकत । १४ ख. बारंग । १५ ख. चौंक । १६ ख. ग. हसे । १७ ख. बिलोकि । ग. विलोकि । १८ ख. धरे । ग. करे । १९ ख. गलिहार । २० ख. लडे । २१ ख. दईवांण । २२ ख. बज्र । २३ ख. पडे ।

---

५८७. रोद – यवन । घड़ा – सेना । जमदाढक – कटार विशेष । झाळ – आगकी लपट । सरीख – समान ।

५८८. जिण वार – जिस समय । जति – जितेन्द्रिय, यति ।

५८९. झझक्कत – चौंकती है । वारँग – अप्सरा । मुनेस – मुनीश, नारद मुनि ।

५९०. अभा – महाराजा अभयसिंह । छळि – लिए, युद्ध । वज्र – तलवार । झेलि – सहन कर के । घमसांण – युद्ध । रंभ – अप्सरा । दुजराज – पुरोहित केसरीसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पितामह पाय[1] लगै[2] सप्रवंति[3] ।
दिवी[4] तदि दादि घणी 'दळपत्ति'[5] ।
'अखावत' एम वसे स्त्रुगि आय ।
जिते धर अंबर नांम न जाय ।। ५६१

चारणरौ जुध करणौ

'जसावत' सूर 'सुभै' अजरंग ।
सभै[6] जुध बीच[7] गरक्क सुरंग ।
वेधै[8] खळ साबळ चोळ वरन्न[9] ।
कहै रवि भोक लड़ै 'सुभकन्न'[10] ।। ५६२
करां 'सुभसाह' वहै[11] किरमाळ ।
बगत्तर[12] पोस कटंत बंगाळ[13] ।
सभै[14] खग ऊजळ भाटक सूर ।
पिळा[15] अखतेस चढावत पूर ।। ५६३
मँडै[16] तिण बार[17] फतै[18] जुध मांह ।
उदावत[19] नाहर खांन दुबाह[20] ।
.... ।
.... ।। ५६४

---

१ क. पाप । २ ख. ग. लगे । ३ ख. सप्रवित्त । ग. सप्रवति । ४ ख. ग. दीवी । ५ ख. ग. दलपति । ६ ख. ग. सभै । ७ ख. वीचि । ग. वीच । ८ ख. बेधे । ग. वेधे । ९ ख. बरंन्न । ग. बरंन । १० ख. सुभकंन्न । ग. सुभकंन । ११ ख. बहै । १२ ख. बगतर । ग. वगत्तर । १३ ख. बंगोळ । ग. बंगाळ । १४ ख. ग. सभै । १५ ख. ग. पीला । १६ ग. मंडे । १७ ख. ग. वार । १८ ख. फतौ । १९ ख. दूदावत । ग. दुदावत । २० ग. दुवाह ।

---

५६१. पाय – चरण । सप्रवंति – शीघ्र । दादि – धन्यवाद । दळपत्ति – दलपतसिंह पुरोहित ।

५६२. जसावत – जयसिंह बारहठ । सुभै – शुभकरण बारहठ । अजरंग – जबरदस्त । सुरंग – घोड़ा । चोळ वरन्न – लाल रंग । रवि – सूर्य । भोक – धन्यवाद ।

५६३. करां – हाथों । सुभसाह – शुभकरण । वहै – चलती है । किरमाळ – तलवार । बगत्तर पोस – कवचधारी । बंगोळ – मुसलमान । पिळा अखतेस – पीले अक्षत । केसर या हल्दीमें रंगे हुए पीले रंगके चावल जो विवाहादि मांगलिक अवसरों पर निमन्त्रण-पत्रके रूपमें इष्ट मित्रों व सम्बन्धियोंके यहां भेजे जाते हैं ।

५६४. (?) ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

हिचै[1] तदि चारण झोक[2] हुवास ।
सिरै व्रत[3] बारट[4] गोरख दास ।
सदा कमधां मुहरै[5] अवसांण ।
रचै जुध दारण रोहड़रांण ।। ५६५
जिकै पित 'केहरि' दारण[6] जंग ।
'अजा'[7] छळ[8] कीध अनेक अभंग ।
विखा मझि मेछ दळां खग[9] वाह[10] ।
सझै[11] बहवार[12] सुणी पतसाह[13] ।। ५६६
इसौ[14] भड़ केहर[15] रौ[16] दइवांण[17] ।
पटोधर[18] जूटत पौरस पांण ।
उडै असि तेज मजेज उपाट ।
झड़ै[19] खळ[20] 'गोरख' वीजळ[21] झाट ।। ५६७
लगी नर है तिल हेक[22] लगांण ।
जरद्द मरद्द कटे जँगमांण ।

---

१ ख. हीचै । २ ख. झोकि । ३ ख. ग. व्रन । ४ ख. बाहर । ५ ख. मोहौरै । ग. मोहौरै । ६ ख. दारुण । ७ ख. अजै । ग. अझा । ८ ख. छलि । ९ ख. षगि । १० ग. बाह । ११ ख. सझे । १२ ख. बोहौवारि । वहौवार । १३ ख. ग. पतिसाह । १४ ख. ग. यसौ । १५ ख. केहरि । १६ ख. ग. रौ । १७ ख. ग. दईवांण । १८ ख. ग. पाटोधर । १९ ख. ग. झाडै । २० ख. षग । २१ ख. बीजल । ग. वीझळ । २२ ग. हैक ।

---

५६५. हिचै – युद्ध करता है । झोक हुवास – धन्यवाद प्राप्त करने योग्य । सिरै व्रत – अपना नियम निभानेमें श्रेष्ठ । दारण – वीर, जबरदस्त । रोहड़ रांण – रोहड़िया शाखाके चारणोंमें सर्व-श्रेष्ठ ।

५६६. जिकै···केहरि – जिसके पिता केसरीसिंहने महाराजा अजीतसिंहकी सेवामें कई युद्ध किए थे । अजा – महाराजा अजीतसिंह । विखा – आपत्तिकाल, संकटका समय । खगवाह – वीर, बहादुर ।

५६७. इसौ – ऐसा । केहररौ – केसरीसिंहका । दइवांण – वीर । पटोधर – पट्टाधिकारी । जूटत – भिड़ता है । पांण = प्राण – बल, शक्ति । मजेज – शीघ्र । झड़ै – वीर-गतिको प्राप्त होते हैं । गोरख – बारहठ केसरीसिंहका बड़ा पुत्र गोरखदान । वीजळ – तलवार । झाट – प्रहार ।

५६८. जरद्द – कवच । मरद्द – मर्द, वीर । जँगमांण – घोड़ा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सदा सिव तांम लिये[1] खळ सीस ।
स्रुणी[2] स्रपी चंड[3] देत असीस ।। ५६८

हुईवर[4] पाय असीसत हूर ।
समोभ्रम 'केहर' कायम सूर ।
सभै[5] जुध वीजळ मूगळ साथ ।
रिधू 'जसराज' तणौ[6] रुघनाथ ।। ५६६

बराछक[7] उपट[8] घाट बराड़[9] ।
धसै[10] जुध[11] पूर विचै 'धधवाड़' ।
धिखै दहुवै[12] चख[13] पावक धांम ।
तीजा चख ईस तणा जिम तांम ।। ६००

मुछार[14] भुहार[15] मिळै[16] मगरूर ।
सोभा मुख जांणक[17] ग्रीखम सूर ।
भयंकर रूप वणै[18] जिम भेस ।
महाभड़[19] 'केसर'रौ 'मुकँदेस' ।। ६०१

---

१ ख. लीये । ग. लियै । २ ख. ग. श्रोणी । ३ ख. वंड । ४ ख. ग. हयीवर । ५ ख. ग. सभ्भै । ६ ग. तणो । ७ ग. वराछक । ८ ख. ऊपट । ९ ग. वराड़ । १० ख. धसे । ११ ग. जूध । १२ ख. दहुंवे । १३ ख. धष । १४ ख. मुंछार । १५ ख. भुंहार । ग. भूहार । १६ ख. मिडे । १७ ख. ग. जांणिक । १८ ख. बणे । ग. वणे । १९ ख. महाबल ।

---

५६८. स्त्र – रक्त, खून । पी – पी कर । चंड – रणचंडी । असीस – आशीर्वाद ।

५६६. हुईवर – योद्धा, वीर । असीसत – आशीर्वाद देती है । हूर – अप्सरा । समोभ्रम – पुत्र । केहर – बारहठ केसरीसिंह । सभै – मारता है, संहार करता है । साथ – सेना, दल । रिधू – अटल, दृढ़ । जसराज तणौ – जयसिंहका पुत्र शुभकरणसिंह बारहठ । रुघनाथ – रुघनाथदान बारहठ ।

६००. बराछक – जबरदस्त, प्रचंड । घाट – रचना, बनावट, शरीर । बराड़ – जबरदस्त । धधवाड़ – द्वारकादास और मुकुन्ददान धधवाड़िया गोत्रके चारण । दहुवै – दोनों । पावक – अग्नि । चख – चक्षु, नेत्र । ईस – रुद्र, महादेव ।

६०१. मुछार – मूछ, श्मश्रु । भुहार – भौहों । मगरूर – वीर । जांणक – मानों । ग्रीखम सूर – ग्रीष्म ऋतुका सूर्य । केसर – केसरीसिंह चारण कवि । मुकँदेस – मुकुंददान धधवाड़िया गोत्रका चारण कवि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वडा खळ वेधत[1] साबळ[2] वाह[3] ।
लियै[4] लटियाळ तुरी कपि लाह ।
जुड़ै[5] धज सेल पड़ै जवनेस ।
दखै[6] रवि तांम भोका 'मुकंदेस' ।। ६०२

छौगौ[7] सिर सोनहरी[8] छवगाळ ।
भळंकत सूरज रूप भलाळ ।
वधै[9] खळ लेत नटां जिम वंस[10] ।
हुई घट फटत छूटत[11] हंस ।। ६०३

मुजाइद[12] सेख तणा सुत मांम ।
नवी[13] बगसीस महम्मद[14] नांम ।
करां खग कढ्ढिक[15] रूप करूर ।
मिळै[16] महिरांण[17] हुता[18] मगरूर ।। ६०४

महम्मद सेख तणै महरांण ।
उभै[19] धज साबळ पांण जवांण[20] ।

---

१ ख. बेधत । २ क. सबळ । ३ ख. ग. बाह । ४ ख. लीयै । ५ ख. जडै । ६ ख. ग. दाखै । ७ ख. ग. छोगो । ८ ख. नहसोरी । ९ ख. बेधे । ग. वेधै । १० ख. बंस । ११ ख. ग. छुटत । १२ ख. मुजाहिद । १३ ग. नबी । १४ ख. महंमद । १५ ख. कट्टीक । १६ ख. ग. मिले । १७ ख. महरांण । १८ ख. हुंता । ग. हुता । १९ ख. ग. जडे । २० ख. जुवाण ।

---

६०२. **वेधत** – संहार करता है । **वाह** – प्रहार । **लटियाळ** – देवी, जटाधारी । **तुरी** – घोड़ा । **कपि** – (?) । **जुड़ै** – प्रहार करता है । **धज** – तलवार । **जवनेस** – यवन, मुसलमान । **दखै** – कहता है । **रवि** – सूर्य । **झोका** – शाबाश, वाहवाह । **मुकंदेस** – मुकुंददान दधवाड़िया गोत्र का चारण कवि ।

६०३. **छौगौ** – अवतंश, श्रेष्ठ । **छवगाळ** – शौकीन । **भळंकत** – चमकता है । **भलाळ** – भाला या भालाधारी । **हुई** – घोड़ा । **हंस** – प्राण ।

६०४. **नवी** – ईश्वरका दूत । **महिरांण** – रणछोड़ । **मगरूर** – गर्व रखने वाला, जोशीला ।

६०५. **महरांण** – समुद्रसिंह । **जवांण** – जवानसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिळै[१] भुज घाट दूजौ भलमार[२] ।
पड़ै[३] खळि[४] भोमि[५] हुवौ[६] खळपार ।। ६०५
नवी बगसीस खिजै नरनाह ।
वाही[७] 'महरांण' परा खग वाह[८] ।
झलै[९] खग हाथ कढी[१०] खग झाळ ।
वाहो[११] 'महरांण' खिजै[१२] विकराळ[१३] ।। ६०६
उभै हुय टूक पड़ै[१४] असुरांण ।
किधा[१५] करिराज सवंटि किसांण[१६] ।
नवी बगसीस पड़ै[१७] सजि[१८] जोड़ ।
तरोवर वीज[१९] गई किर तोड़ ।। ६०७
सोहै[२०] हथ घाव सुरंग सुभेव ।
हुवौ[२१] रंग मेछ धड़ा हथळेव ।
कियां[२२] खग चोळ 'मुकंद' सकाज ।
सझै महराज हुंता[२३] सुभराज ।। ६०८
इसी करतौ[२४] गुण झाट उपाट ।
झड़ै[२५] खळ[२६] खेलि[२७] तसी[२८] खग झाट ।

---

१ ख. सिल्है । ग. सिले । २ ख. ग. भुजसार । ३ ख. पडे । ४ ख. षल । ५ ख. भोम । ६ ख. ग. हुश्रो । ७ ख. बाही । ८ ख. बाह । ९ ख. झले । १० ख. कटी । ११ ख. बाही । १२ ख. षिजे । १३ ग. विकराळ । १४ ग. पडे । १५ ख. ग. कीधी । १६ ग. कसांण । १७ ख. ग. पडे । १८ ख. सनि । ग सजि । १९ ख. बीज । २० ख. ग. सोहै । २१ ख. हूश्रौ । ग. हूश्रो । २२ ख. कीयां । २३ ख. ग. माहाराजहुंत्ता । २४ ग. करतो । २५ ख. झाडे । ग. झाडै । २६ ख. षग । २७ ख. लेष । २८ ख. तिसी ।

---

६०६. **खिजै** – कोप करता है । **वाही** – प्रहार किया ।

६०७. **टूक** – खंड । **पड़ै** – वीर गति प्राप्त हुए । **असुरांण** – यवन । **किसांण** – कृषक । **तरोवर** – तरुवर, वृक्ष । **वीज** – बिजली, उल्का ।

६०८. **सोहै** – शोभा देता है । **हथ घाव** – हाथका प्रहार । **सुरंग** – लाल । **रंग** – आनंद । **मेछ** – यवन । **धड़ा** – सेना । **हथळेव** – पाणि-ग्रहण, पाणि-पीड़न । **मुकंद** – मुकुंददान दधवाड़िया गोत्रका चारण कवि । **सझै**···**सुभराज** – महाराजा अभयसिंहजीसे अभिवादन किया ।

६०९. **इसी** – ऐसी । **गुण** – काव्य, कविता । **झाट** – झड़ी । **उपाट** – विशेष । **झड़ै** – वीर गति प्राप्त कर के । **तसी** – वैसी ही ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'द्वरौ'[1] इण भांत[2] लड़ै दइवांण[3] ।
वँचै[4] कवि लेखहुंता[5] ब्रह्मांण[6] ।। ६०९
तठै छक छोह 'विसन्न'[7] सुतन्न[8] ।
विजूजळ[9] कढ्ढिय[10] लाल वरन्न[11] ।
सहू[12] जुध 'खेतल' दारुण सूर ।
खगां झट ढाहत मूगळ[13] खूर ।। ६१०
जठै खिड़ियौ[14] इक आगि ब्रजागि[15] ।
लुहां[16] झट देति[17] खळां धख लागि ।
तिकौ 'बखतेस'[18] कंठीरव तेम ।
जुड़ै 'अमरा' 'धरमावत' जेम ।। ६११
उठै 'महियार'[19] 'नवल्ल[20]' अपल्ल ।
मँडै[21] जुध बारठ[22] 'सूरजमळ्ळ' ।
जुड़ै खिड़ियौ[23] इक वेस[24] जवांन ।
दियै[25] खग झाट खळां 'सतिदांन' ।। ६१२

---

१ ख. ग. द्वारौ । २ ख. भांति । ३ ख. ग. वईवांण । ४ ख. ग. वचे । ५ ख. लेखहूता । ६ ख. सुभरांण । ग. व्रह्ममांण । ७ ख. बिसंन । ग. विसंन । ८ ख. ग. सुतंन । ९ ख. बीजूजल । १० ख. कढ्ढीय । ग. कढ़ीय । ११ ख. बरन्न । ग. वरंन । १२ ख. ग. सांदू । १३ ख. मूंगल । ग. मुगल । १४ ख. ग. षडीयौ । १५ ख ग. व्रजागि । १६ ख. ग लोहां । १७ ख. ग. देत । १८ ख. बषतेस । १९ ख. ग. महीयार । २० ख. ग. नघल । २१ ख. ग. मंडे । २२ ख. ग. बारट । २३ ख. षडीयौ । ग. षडियौ । २४ ख. बेस । २५ ख. दीयं । ग. दिये ।

---

६०९. **द्वारौ** – द्वारकादास दधवाड़िया गोत्रका चारण कवि । **दइवांण** – वीर ।

६१०. **विसन्न** – कविका नाम । **सुतन्न** – पुत्र । **विजूजळ** – तलवार । **वरन्न** – वर्ण, रंग । **खेतल** – खेतसी नामक सांदू गोत्रका चारण कवि, नाथाका पुत्र । **झट** – प्रहार । **ढाहत** – संहार करता है । **खूर** – समूह, दल ।

६११. **खिड़ियौ** – चारणोंमें खिड़िया गोत्रका चारण कवि । **लुहां** – लोहा, शस्त्र-प्रहारों । **धख** – जोश । **बखतेस** – बखता खिड़िया गोत्रका चारण कवि । **कंठीरव** – सिंह । **अमरा** – महाराजा अजीतसिंहकी सेवामें रहने वाला चारण कवि । **धरमावत** – धरमाका पुत्र ।

६१२. **महियार** – चारणोंका एक गोत्र । **नवल्ल** – नवलदान महियारिया गोत्रका चारण कवि । **मँडै** – रचता है, करता है । **सूरजमळ्ळ** – सूरजमल नामक चारण कवि । **वेस** – वयस, आयु । **सतिदांन** – शक्तिदान नामक खिड़िया गोत्रका चारण कवि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिकौ[1] अचरिज्ज[2] किसौ[3] घर तास ।
दादौ जिण दारण 'भैरवदास'[4] ।
'धिराहर'[5] बाजत 'आसल' धीर ।
'विठू'[6] जयरांम लड़ै नर वीर[7] ।। ६१३

इता भड़ चारण क्रोध असाधि ।
विढ़ै[8] वरदायक[9] वीर[10] विराध[11] ।
खेलै[12] निहचंत झटां भल खंड ।
चहायक हेत सहायक चंड ।। ६१४

तिकै कुळ सूर हुआ[13] तिणवार[14] ।
जिकै[15] व्रद[16] पात कहै जिणवार[17] ।
वडौ[18] खळ थाट हणै[19] गज बोह[20] ।
छतीसह वंस[21] चाढवण[22] छोह ।। ६१५

कहै व्रद[23] आय खळां दळ काप ।
प्रिथीपति धूहड़ लूण प्रताप ।

इति चारण जुध ।

---

१ ख. ग. तिको । २ ख. ग. अचिरज । ३ ग. किसो । ४ ग. भैरुवदास । ५ ख. ग. धाराहर । ६ ख. बीठू । ग. वीठू । ७ ख. बीर । ८ ख. बिढ़ै । ९ ख. बरदायक । १० ख. बीर । ११ ख. बीराध । १२ ख. ग. षेल्है । १३ ख. ग. हुवा । १४ ख. तिणबार । १५ ख. ग. जिके । १६ ग. व्रिद । १७ ख. जिणबार । १८ ख. बडो । १९ ख. हणे । २० वीह । २१ ख. बंस । २२ ख. ग. चढ़ावत । २३ ख. ग. व्रिद ।

---

६१३. अचरिज्ज – आश्चर्य । दादौ – पितामह । दारण – जबरदस्त । धिराहर – कविका नाम । आसल धीर – आसिया गोत्रका धीरजराम चारण कवि । विठू जयरांम – चारणोंमें रोहड़िया गोत्रका वीठू शाखाका जयराम कवि ।

६१४. असाधि – असाध्य, अपार । विढ़ै – युद्ध करते हैं । वरदायक – विरुदायक, जोश दिलाने वाले, विरुदाने वाले । वीर विराध – महावीर । चहायक – चाहने वाला । चंड – रणचंडी, दुर्गा ।

६१५. पात – चारण कवि । थाट – दल, सेना । गजबोह – गजव्यूह । छोह – सोभ, कीर्ति, यश, उमंग ।

६१६. व्रद – विरुद, कीर्ति । धूहड़ – राव धूहड़के वंशज, राठोड़ ।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

ब्राह्मण– भिड़ै ब्रह्म[1] खत्रिय[2] धरम्म[3] अभ्यास ।
वधै[4] जुध स्यांम-ध्रमी पति व्यास ॥ ६१६

'दिपावत'[5] हाथ न लेत उदक्क[6] ।
रुकां बळ[7] लेत पवित्र रिजक्क[8] ।
जिकौ[9] अजवाळ[10] लियै[11] जसवास ।
फतैचँद सूर वाहै खग व्यास* ॥ ६१७

लड़ै[12] तिण वार[13] अड़ीखंभ 'लाल' ।
दळै[14] खळ रांमचँद्रेस दुझाल ।
उदैचँद हाथिय[15] रांम अभंग ।
जुड़ै तदि गाहड़-मल्ल[16] सुजंग ॥ ६१८

अरी सिर तोड़[17] रगत्त[18] उफांण[19] ।
पुजै सिव सग्गति[20] विजळ[21] पांण[22] ।
रमाइण[23] भारथ वांणि रटांण ।
इसी विध[24] व्यास लड़ै दइवांण[25] ॥ ६१९

---

१ ख. ग. व्रह्म । २ ख. षत्रीय । ३ ख. भ्रम । ग. धरम । ४ ख. ग. वधे । ५ ख. ग. दीपावत । ६ ख. ग. उद्दक । ७ ख. बलि । ग. वलि । ८ ख. रिज्जक । ग. रिझ्झक । ९ ख. ग. जिको । १० ख. भुजवाल । ११ ख. ग. लीयै ।

*यह पंक्ति ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न प्रकार है—

'वाहै षग सूर फतेचंद व्यास ।'

१२ ख. लड़े । १३ ख. बार । १४ ख. दलै । १५ ख. ग. हाथीय । १६ ख. गाहड़-माल । ग. मल । १७ ख. तोडि । १८ ख. रगत । १९ ख. उफांणि । २० ख. सक्कति । ग. सगति । २१ ख. बीजल । ग. वीजळ । २२ ख. पांणि । २३ ख. ग. रांमायण । २४ ख. बिधि । ग. विधि । २५ ख. ग. दईवांण ।

---

६१७. **दीपावत** – दीपचंद व्यासका पुत्र फतेहचंद व्यास । **उदक्क** – उदक, जल, जल-संकल्प द्वारा लिया गया दान । **रुकां** – तलवारों । **रिजक्क** – रोजी, जागीर । **अजवाळ** – उज्ज्वल कर के । **जसवास** – यश, कीर्ति ।

६१८. **अड़ीखंभ** – जबरदस्त, शक्तिशाली । **लाल** – लालचन्द । **रांमचँद्रेस** – रामचन्द्र, ब्राह्मण । **उदैचंद** – भाई उदयचंद । **हाथियरांम** – हाथीराम ।

६१९. **रगत्त** – रक्त, खून । **रमाइण** – रामायण । **भारथ** – महाभारत । **रटांण** – रटी गई, पढ़ी गई ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भंडारी– दळां खळ झोकि तुरी हुजदार ।
भँडारिय[1] जूटत जै गज भार ।
सकौ[2] सिरपोस 'गिरद्धर'[3] सूर ।
पटोधर 'ऊद'तणौ छक पूर ।। ६२०
भुहां[4] भिड़ि मूंछ चखां[5] विकराळ[6] ।
काले असि औरवियौ[7] कळिचाळ ।
दियै[8] खग झाट गिरद्धरदास[9] ।
विढै[10] असवार सहेत[11] व्रहास ।। ६२१
सिलै[12] बँध पाखर बँध सँधार[13] ।
भेळा हिज[14] गंज चढ़ै घर भार ।
बहै[15] खळ गाहटतौ जुध बाज[16] ।
करै खग घाव अरोह सकाज ।। ६२२
उडै असि ऊपर लोह अपार ।
वढै[17] असि भोम चढै तिण वार[18] ।
किलम्मक[19] एक जठै कळिचाळ ।
वुही[20] खग टोप कटे[21] विकराळ[22] ।। ६२३

---

१ ख. ग. भंडारीय । २ ख. ग. सको । ३ ख. ग. गिरधर । ४ ख. ग. भौहां । ५ ख. चगां । ६ ख. बिकराल । ७ ख. वोरवीयौ । ग. वोरवियौ । ८ ख. दीयै । ९ ग. गिरधरदास । १० ख. बढ़ै । ११ क. सहेब । १२ ख. सिल्है । १३ ख. सिधार । १४ ख. ग. हीज । १५ ग. वहै । १६ ख. ग. वाज । १७ ख. बढ़ै । १८ ख. जिणबार । १९ ख. किलमक । २० ख. बाही । ग. वाही । २१ ग. कटै । २२ ख. बिकराल ।

---

६२०. **झोकि** – झोंक कर । **तुरी** – घोड़ा । **जदार** – (?) । **सकौ** – सब । **सिरपोस** – शिरत्राण, रक्षक । **गिरद्धर** – गिरधरदास भण्डारी । **पटोधर** – ज्येष्ठ पुत्र । **ऊद** – उदयचंद भंडारी ।
६२१. **भुहां** – भौहों । **भिड़ि** – स्पर्श कर । **औरवियौ** – युद्ध-स्थलमें झोंका । **कळिचाळ** – युद्ध । **व्रहास** – घोड़ा ।
६२२. **सिलै बँध** – अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित । **गंज** – ढेर । **गाहटतौ** – ध्वंस करता हुआ । **बाज** – घोड़ा ।
६२३. **किलम्मक** – मुसलमान । **वुही** – चली ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वुहो[1] झळ ऊपर वीजळ[2] वेगि[3] ।
तठै 'गिरधार' वही[4] घण तेगि[5] ।
उभै हुय टूक पड़ै[6] असुरांण ।
चढ़ै[7] असि साम[8] बियै[9] चहुवांण[10] ॥ ६२४

बिया[11] असि ऊपरि[12] गज्जर[13] बूर[14] ।
सझै खग झाट वळोवळ[15] सूर ।
वहै[16] खग झाट भंडारिय[17] 'वाघ'[18] ।
उडै खळ थाट संघाट[19] अथाघ[20] ॥ ६२५

दुजौ[21] असि जांम कटेस उदार ।
तिजै[22] असि सूर चढ़ै[23] तिण वार[24] ।
लड़ै 'गिरधारिय'[25] अंबर लागि ।
उडै खळ[26] थाट सिरै खग आगि ॥ ६२६

महाबळ[27] हूर वरावत[28] मीर ।
वडौ[29] महराज[30] तणौ स वजीर[31] ।

---

१ ख. बही । २ ख. बीजल । ३ ख. बेग । ४ ख. बीही । ५ ख. ग. तेग । ६ ख. पडे । ७ ख. चढ़े । ८ ख. तांम । ९ ग. विये । १० ख. चहुवांण । ११ ख. बीया । ग. वीया । १२ ख. ऊपर । १३ ग. गजर । १४ ग. बूर । १५ ख. बलोबल । १६ ख. बाहै । ग. वाहै । १७ ख. ग. भंडारीय । १८ ख. वाध । १९ ख. सघाट । २० ख. असाध । २१ ख. दूजौ । ग. दूजो । २२ ख. ग. तीजै । २३ ख. ग. चढ़े । २४ ख. बार । २५ ख. ग. गिरधारीय । २६ ख. सिर । २७ ख. माहाबल । २८ ख. बरावत । २९ ख. बडौ । ग. वडो । ३० ख. ग. माहाराज । ३१ ख. बजीर ।

---

६२४. वेगि – शीघ्र । गिरधार – गिरधरदास भंडारी । असुरांण – यवन, मुसलमान ।

६२५. गज्जर – प्रहार । बूर – प्रहार, समूह । झाट – प्रहार । वळोवळ – चारों ओरसे । सूर – वीर । वाघ – वाघचंद भंडारी (?) । संघाट – समूह । अथाघ – अपार ।

६२६. गिरधारिय – गिरधरदास भंडारी । अंबर – आकास ।

६२७. हूर – अप्सरा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुवै सुत 'ऊद'तणा[1] दइवांण[2] ।
भंडारिय[3] कट्टिया[4] खाग[5] भयांण ।। ६२७
वदन्न[6] मजीठ[7] 'जवांन' 'विजेस'[8] ।
तठै असि ओरवियौ[9] 'रतनेस' ।
जई खग वाहत[10] दारण जोस ।
पड़ै खग झाटक सिल्लह-पोस ।। ६२८
कटै सिर सूर जूटै[11] धड़ केक ।
उभै हुय[12] टूक पड़ंत अनेक ।
पड़ै पग[13] हाथ धरा लपटंत[14] ।
किळा[15] किर[16] राखस बाळ करंत ।। ६२९
'अभै' भुज भार दियौ[17] अणथाह ।
सुतौ[18] उजवाळ कियौ[19] 'रणसाह' ।
भिड़ै 'रतनागर' यूं गर्ज भार ।
वधै[20] असि ओरवियौ[21] त्रिण वार ।। ६३०
'रसा'हर[22] तेण समै रिमराह ।
वधै[23] विकराळ[24] हुता खग वाह[25] ।

---

१ ख. ऊदतणै । २ ख. ग. वईबांण । ३ ख. ग. भडारीय । ४ ख. ग. कट्टीय । ५ ख. ग. षाग । ६ ख. बदंन्न । ग वदन्न । ७ ख. मंजीठ । ८ ख. जवांनीयबेस । ग. जवांनी-वेस । ९ ख. वोरवीयो । ग. वोरवियो । १० ख. बाहत । ११ ख. जुटं । १२ ख. होय । १३ ख. षग । १४ ख. ग. पढंत । १५ ख. कीला । १६ ख. कर । १७ ख. दीयौ । १८ ख. सोतौ । ग. सोतो । १९ ख. कीयौ । २० ख. ग. वधे । २१ ख. वोरवीयो । ग. ओरवियौ । २२ ख. रासाहुण । ग. रासाहुर । २३ ख. बधे । ग वधे । २४ ख. बिकराल । २५ ख. बाहु ।

---

६२७. दुवै – दोनों । ऊद – उदयचंद भंडारी । कट्टिया – काट दी । भयांण – भयानक ।
६२८. वदन्न – मुख । मजीठ – लाल । ओरवियौ – झोंका । रतनेस – रतनसिंह भंडारी । (?) । सिल्लह-पोस – कवचधारी ।
६२९. किळा – क्रीड़ा, लीला । किर – मानों । राखस – राक्षस ।
६३०. अभै – महाराजा अभयसिंह । उजवाळ – उज्ज्वल । रणसाह – (?) । रतनागर – रतनसिंह भंडारी (?) । त्रिण – वीर ।
६३१. रसाहर – रायसिंहका वंशज । रिमराह – शत्रुओंको सीधा करने वाला ।

Jain Education International	For Private & Personal Use Only	www.jainelibrary.org

सत्रां[1] दळ ऊपर[2] धोम सरूप ।
रचै जुध[3] 'पोम' तणौ 'धनरूप' ।। ६३१
गाढांगुर[4] 'खीम'हरौ गजगाह ।
सभै जुध 'थांन' तणौ 'दळसाह' ।
वहै[5] खग 'दीप' दुहां[6] विकराळ ।
पड़ै जरदाळ अनै पखराळ ।। ६३२
उगंतिय[7] मौसर[8] सूर उदार ।
धुवै 'दलसाह' भयंकर धार ।
हलै नह कौतिक बाज हकार[9] ।
उभौ[10] रवि छत्र तणा[11] उणहार[12] ।। ६३३
सराहथ[13] विक्रम देखि समाथ ।
हजारह[14] हाथ धणी दुय[15] हाथ ।
समोभ्रम ठाकुरसीह सधीर ।
'धरा'[16] हर पूर लड़ै लख - धीर ।। ६३४
हिवै दळ पूर कढी[17] चँद्रहास ।
दळां खळ डोहत[18] माहियदास[19] ।

१ ख. सत्रं । २ ख. ऊपरि । ग. उपरि । ३ ग. युध । ४ ख. ग. गाढ़ांगुर । ५ ख. बाहै । ग. वाहै । ६ ख. दुवौ । ग. दुहू । ७ ख. ऊगंतीय । ८ ग. मोसर । ९ ख. हकारि । १० ख. वूभौ । ग. ऊभौ । ११ ख. तणी । १२ ख. उणहारि । १३ ख. ग. सराहत । १४ ग. हभारह । १५ ख. ग. दोय । १६ ख. धारा । १७ ख. कटी । १८ ख. होहत । ग. डोहित । १९ ख. माहीयदास ।

६३१. **धोम** – अग्नि । **सरूप** – समान । **पोम** – पेमराज भंडारी । **धनरूप** – पेमराज भंडारीका पुत्र ।

६३२. **गाढ़ांगुर** – वीर, योद्धा । **खीम** – खीमचंद । **गजगाह** – वीर, योद्धा । **थांन** – थानचन्द । **दळसाह** – दला नामक व्यक्ति । **दीप** – दीपचन्द । **जरदाळ** – कवचधारी योद्धा । **अनै** – और । **पखराळ** – कवचधारी घोड़ा ।

६३३. **मौसर** – श्मश्रुके बाल । **धुवै** – जोशमें युद्ध करता है । **हलै** – चलता है । **कौतिक** – कौतूहल । **बाज** – घोड़ा ।

६३४. **विक्रम** – शौर्य । **समाथ** – समर्थ, वीर । **दुय** – दो ।

६३५. **हिवै** = हयपति – अश्वपति, बादशाह । **दळ** – सेना । **चँद्रहास** – तलवार । **डोहत** – विलोड़ित करता है । **माहियदास** – माईदास भंडारी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सबासण[1] देव सुतन्न[2] सरीन ।
तिसा सिव नेत्र 'लूण'[3] हर तांन[4] ।। ६३५
सुरायण[5] पूर किया[6] रिणसाज[7] ।
बिढ़ै[8] देविचंद[9] अनै बछराज ।
सदा तड़ वंकिय[10] वांकिम[11] सूर ।
मरू[12] मुहणोत[13] मँत्री मगरूर ।। ६३६
समोभ्रम सांमतचंद सकाज ।
वहै[14] खग औरि[15] थटां सिर[16] वाज[17] ।
हिचै 'चंद' मेछ थटां हमगीर ।
धरै ग्रब[18] 'सुंदर'[19] 'नैण'[20] सधीर ।। ६३७
गडीर तुरंग छिबै[21] भुज गैण ।
रचै जुध सूर पणोहित[22] रैण ।
लालंबर[23] नैण अनै मुख लाल ।
उपै[24] वप[25] तेज समुद्र उकाळ ।। ६३८
भिड़ै[26] बक्र[27] उजळ[28] मूछ भुहार[29] ।
उभै ससि बीज तणी उणहार[30] ।

---

१ ख. ग. साबासण । २ ख. सुतंन । ग. सुत्तन । ३ ख. लूंणा । ग. लूणा । ४ ख. ग. तीन । ५ ख. ग. सूरायण । ६ ख. कीयां । ७ ख. ग. रणसाज । ८ ग. विढ़ै । ९ ख. दिवचंद । ग. देवीचंद । १० ख. बंकीय । ग. वंकीय । ११ ख. बांकिम । १२ ख. मारू । १३ ख. मौहौणोत । ग. मौहणोत । १४ ख. छाहै । ग. वाहै । १५ ख. ग. वोरि । १६ ख. सिरि । १७ ख. बाज । १८ ख. ग्रव । १९ ख. ग. सूंदर । २० ख. वैण । २१ ख छिवे । ग. छिवै । २२ ख. पुरोहित । ग. परोहित । २३ ख. लालंबर । ग. लालंबर । २४ ख. ओपै । २५ ख. बप । २६ ख. भिडे । २७ ख. ग. वक्र । ख. ऊजल । ग उजळ । २९ ख. ग. भुंहार । ३० ख. उणिहार ।

---

६३६. अनै – ओर । तड़ – दल, पार्टी । वंकिय – बांकुरी । वांकिम = विक्रम – शौर्य । मरू – मारवाड़ ।

६३७. थटां – दलों, सेनाओं । हिचै – संहार करता है, युद्ध करता है । मेछ – म्लेच्छ, यवन । ग्रब – गर्व । सुंदर – नैणसी मुहणोतका छोटा भाई सुन्दरदास । नैण – नैणसी मुहणोत ।

६३८. गडीर – (?) । तुरंग – घोड़ा । गैण – आकाश । लालंबर – लाल ।

६३९. भुहार – भौंहों । ससि – चंद्रमा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भिड़ै[1] खग 'रैण' करै खळ भूक ।
'रैणायर'[2] ऊपर बाजत[3] रूक ।। ६३९

उडै[4] कटि पेच छिळै[5] जळ ओट ।
चमंकत[6] बादळ[7] बीजळ[8] चोट ।
उपै[9] रत चाचर काचर[10] अंग ।
चलै जळ गंग तरंग[11] सुचंग ।। ६४०

पँडीस[12] बरंग[13] करै खळ पांणि ।
वदै[14] मुखहूंत हरै[15] गंग वांणि[16] ।
तुटै[17] गज फौज[18] 'विळंद'[19] तणीस ।
घणी खग वाहि[20] वहाय[21] घणीस ।। ६४१

तठै पड़ि खेत किया[22] पिंड तत्र[23] ।
रिणा-जळ गंग समेळ रगत्र ।
वडै[24] अवसांण वडा[25] जुध वार ।
धणी छळ झल्लि[26] घणी खग धार ।। ६४२

---

१ ख. भिडे । २ ख. रैणाय । ३ ख. ग. वाजत । ४ ग. उडे । ५ ख. छिले । ६ ख. चमंकर । ७ ख. बादल । ८ ग. वीजळ । ९ ख. ओपै । १० ख. ग. फाचर । ११ ख. नारंग । १२ ख. ग. पांडीस । १३ ग. वरंग । १४ ख. ग. वदै । १५ ख. हुरे । १६ ख. बाणि । १७ ख. तोडे । ग. तोडै । १८ ग. फोज । १९ ख. बिलंद । २० ख. बाहि । २१ ख. बहाय । २२ ख. कीया २३ ख. तंत्र । २४ ख. बडै । २५ ख. बडा । २६ ग. झेलि ।

---

६३९ रैण – रणछोड़दास अथवा समुद्रसिंह । भूक – ध्वंस, संहार । रैणायर – रणछोड़दास । बाजत – प्रहार होता है । रूक – तलवार ।

६४०. बीजळ – बिजली, तलवार । चाचर – मस्तक, शिर । काचर – ककड़ी ।

४४१. पँडीस – यवन अथवा तलवार । बरंग – खंड, टूक । वदै – कहता है । हरै – हर हर महादेवका शब्द अथवा हरि हरि । घणीस – बहुत ।

६४२. पिंड – युद्धमें वीर गति प्राप्त करते समय अपने रक्तके साथ मिट्टीका बांधा हुआ गोल लौंदा जो पितरोंको अर्पित किया जाता है । रिणा-जळ – रणछोड़दास नामक योद्धा । रगत्र – खून ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सरस्सति[1] द्वारमती विचि[2] सूर ।
पयौ[3] अ्रतस[4] 'रैण' वडै ध्रम पूर ।
जठै वरि[5] रंभ करै[6] गढ[7] जोड़ ।
छजै[8] दिव्य देह धरै[9] 'रिणछोड़'[10] ।। ६४३

अयौ[11] वैकूंठ[12] हुंता[13] सु[14] विमांण[15] ।
अयौ[16] सनकादिक ले अवसांण ।
वढै[17] वैकूंठ[18] विमांण[19] चलाय ।
परी उधरी[20] जिण[21] संगति[22] पाय ।। ६४४

वँदै[23] पग लच्छि[24] सहेत विसन्न[25] ।
समीप मुकत्ति[26] ज 'देव' सुतन्न[27] ।
अखै प्रथमी[28] जस एम[29] अथाग[30] ।
'भुरा'[31] धनि तूझ तणौ[32] अ्रत भाग[33] ।। ६४५

---

१ ख. सरसति । ग. सरसत्ति । २ ख. बिचि । ३ ख. ग. पायौ । ४ ख. मृत । ग. मृतस । ५ ख. बरि । ६ ख. करे । ७ ख. गंग । ग. गठ । ८ ख. छजे । ९ ख. ग. धरे । १० ख. रणछोड । ११ ख. ग. आयौ । १२ ख. बयकूंठ । ग. वैकुंठ । १३ ख. ग. हुता । १४ ख. ग. सु । १५ ख. बिमांण । १६ ख. ग. आयौ । १७ ख. ग. वढै । १८ ख. बयकूंठ । ग. वैकुंठ । १९ ख. बिमांण । २० ख. ऊधरी । २१ ख. जिणि । २२ ख. संगति । ग. संगति । २३ ख. बंदे । २४ ख. ग. लछि । २५ ख. बिसंन्न । २६ ख. ग. सामीपमुकति । २७ ख. सुतंन्न । २८ ख. प्रिथमी । २९ ख. येम । ३० ख. आग । ३१ ख. ग. भूरा । ३२ ख. तणे । ३३ ख. ग. मृत ।

---

६४३. **सरस्सति** – साबरमती नदीका एक नाम । **द्वारमती** – द्वारामती, द्वारकानाथ । **पयौ** – प्राप्त किया । **अ्रतस** – मृत्यु, अवसान । **वडै** – महान । **रंभ** – अप्सरा । **गढ-जोड़** – गठ-बंधन । **छजै** – शोभित हो कर ।

६४४. **विमांण** – विमान, वायुयान । **वढै** – गतिमान हुआ । **संगति** – साथ । **पाय** – प्राप्त कर ।

६४५. **लच्छि** – लक्ष्मी । **सहेत** – सहित । **विसन्न** – विष्णु । **समीप मुकत्ति** – एक प्रकारकी मुक्ति जिसमें मुक्त जीवका ईश्वरके निकट पहुँच जाना माना जाता है, सामीप्य मुक्ति । **देव** – देवीसिंह । **सुतन्न** – पुत्र । **अखै** – कहता है, वर्णन करता है । **अथाग** – अपार, असीम । **भुरा** – वीर, योद्धा । **धनि** – धन्य-धन्य । **अ्रत** – मृत्यु ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उरै[1] पित आगळ बाज[2] अपाल[3] ।
*लड़ै तदि 'रैण' तणौ नंदलाल ।
जवज्जव[4] कीध सँघाट जवन्न[5]* ।
तिलत्तिल[6] कीध सिलेह[7] खळ तन्न[8] ॥ ६४६

कटै[9] पळ कमळ[10] स्रीफळ कीध ।
लुही[11] घट[12] काढ[13] जिकौ[14] घ्रत[15] लीध ।
धुवै[16] रणताळ सभाळ नृधोम[17] ।
हकां धुनि वेद[18] करै इम होम ॥ ६४७

वढै[19] तदि आप तणौ[20] निज बाज[21] ।
सभै[22] असमेध जिगन्न[23] समाज ।
हुवै[24] असि तांम चढै[25] सु दुभाळ ।
लुहां[26] अवधूत[27] दियै[28] नँदलाल ॥ ६४८

---

१ ख. ग. ओरे । २ ग. वाज । ३ ख. अपा । ४ ख. जव्वजव । ५ ग. जव्वन ।
*····*चिन्हांकित पंक्तियां ख. प्रतिमें नहीं हैं ।
६ ख. तिल्लतिल । ७ ख. ग. सिल्है । ८ ग. तंन । ९ ख. काटे । ग. काटै । १० ख. कम्मल । ११ ख. ग. लोही । १२ ख. ग. घळ । १३ ख. काढ़ि । १४ ख. ग. जिको । १५ ख. ग. घृत । १६ ख. धुवे । ग. धुवें । १७ ख. ग. नृधोम । १८ ख. बेद । १९ ख. बढ़े । २० ग. तणो । २१ ग. वाज । २२ ख. सभे । २३ ख. जिगांम । ग. जिगन । २४ ख. ग. दुवें । २५ ख. चढ़े । २६ ख. ग. लोहां । २७ ख. अवहूति । ग. अवहूत । २८ ख. दीवें ।

---

६४६. उरै – झोंकता है । पित – पिता । आगळ – अगाड़ी । बाज – घोड़ा । अपाल – बेरोक-टोक, निर्भय । रैण – रणछोड़दास । जवज्जव – खंड-खंड, चूर, ध्वंस । सँघाट – समूह । जवन्न – यवन, मुसलमान । तिलत्तिल – खंड खंड, टूक-टूक, ध्वंस । सिलेह – कवच । तन्न – शरीर ।

६४७. पळ – मांस । कमळ – मस्तक, शिर । स्रीफळ – नारियल । लुही – रक्त । घट – शरीर । धुवै – प्रज्वलित होता है, जोशमें उमड़ता है । रणताळ – युद्ध-स्थल । सभाळ – आगकी लपट सहित । नृधोम – बिना धुंआके । हकां – आवाज । होम – यज्ञ ।

६४८. वढै – काटता है । सभै – सिद्ध करता है, असमेध – अश्वमेध यज्ञ । जिगन्न – यज्ञ । लुहां – शस्त्र-प्रहारों । अवधूत – मस्त सन्यासी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उरै[1] असि पांडव[2] जेम[3] अजन्न[4] ।
करै बगसी जुध बाळकिसन्न[5] ।
जुड़ै खग चोट पड़ै जवनांण ।
पँचोळिय[6] भांण बखांणत पांण ॥ ६४९
वँटै[7] घट मुग्गळ[8] द्रव्य विचार ।
अखै[9] धनि रातळ दाद तियार[10] ।
गिळै पळ मुगळ[11] सांमळ ग्रीध ।
लुहां[12] भर[13] पत्र सकत्तिय[14] लीध ॥ ६५०
करै सुध तीरथ वीर करंक्र[15] ।
चरव्वर[16] जांणिक जोगणि चक्र ।
जुड़ै 'हरियंद' तणौ मझि जंग ।
इसी विध[17] 'बाळ किसन्न'[18] अभंग ॥ ६५१
समझै जुध[19] दारुण दौलतसाह[20] ।
अड़ी खँभ 'माहव' जंग अथाह ।
चमू खळ डोहि ख्युसलहचंद[21] ।
हिचै दुजड़ां मुनसी 'हरियंद' ॥ ६५२

---

१ ख. ओरे। ग. औरे। २ ख. पंडव। ३ ख. जंम। ४ ख. अज्जन। ५ ख. किस्सन। ग. किसन। ६ ख. ग. पंचोलीय। ७ ख. बांटै। ग. वांटे। ८ ख. मूंगल। ग. मुगळ। ९ ख. ग. आखै। १० ख. नियार। ११ ख. मूंगल। १२ ख. ग. लोही। १३ ख. भरि। १४ ख. सकतीय। ग. सकतिय। १५ ख. ग. करक्र। १६ ख. चरव्वण। ग. चरवण। .१७ ख. बिधि। १८ ग. किसन। १९ ग. झुध। २० ग. दोलतसाह। २१ ख. ग. षुस्यालहचंद।

---

६४९. अजन्न – वीर अर्जुन। बगसी – सैनिकोंको वेतन बांटने वाला, कस्बोंमें कर वसूल करने वाला बख्शी। जवनांण – यवन, मुसलमान।

६५०. अखै – कहता है। धनि – धन्य-धन्य, शाबाश। रातळ – एक प्रकारका मांसाहारी पक्षी. दाद – धन्यवाद। तियार – उस समय। सांमळ – एक प्रकारका मांसाहारी पक्षी। लुहां – रक्त, खून। पत्र – देवीका खप्पर। लीध – लिया।

६५१. करंक्र – हड्डियोंकी ठठरी या खोपड़ी। चरव्वर – चुरबन। जांणिक – मानों। जोगणि – रणचंडी। जुड़ै – भिड़ता है, युद्ध करता है। अभंग – पीछे नहीं हटने वाला, वीर।

६५२. चमू – सेना। डोहि – विलोडित कर के। ख्युसलहचंद – खुशालचंद नामक व्यक्ति। हिचै – युद्धमें संहार करता है। दुजड़ां – तलवारों।

विढै[1] चंडिका पुत्र यूं वरणेस ।
कंठीरव पौरस जे-करणैस[2] ।
उरै[3] असि आरण वीर[4] अरोध ।
जुड़ै सिघवी[5] खग झाटक 'जोध' ।। ६५३
विजावत[6] दूठ लड़ै जिणवार ।
तुरी[7] कटि प्रोहित रौ[8] तिणवार[9] ।
'रैणातरऊत' लड़े चढि रैण[10] ।
उठै सुत मित्र[11] विलोकिय[12] एण ।। ६५४
दुबै असि आप चढै[13] सु दुझाल ।
निजां[14] असि चाढवियौ[15] नंदलाल ।
बिहूं[16] झलिया झड़तां खग बूर ।
'पिथा' हर सूर दता व्रद[17] पूर ।। ६५५
बिढै[18] महता जुधि ओर[19] व्रहास[20] ।
दियै[21] खग झाटक गोकळदास ।
वैरीहर[22] बाढत वीजळ[23] वाह[24] ।
'गोपाळ' कराळ करै गजगाह ।। ६५६

---

१ ख. बिढ़ं । २ ख. ग. जयकरणेस । ३ ख. ओरे । ग. ओरैं । ४ ख. बीर । ५ ख. ग. संघवी । ६ ख. बिजावत । ७ ग. तूरी । ८ ग. रो । ९ ख. तिणबार । १० ग. रेण । ११ ख. मित्र । १२ ख. बिलोकिय । १३ ग. चढ़े । १४ ख. निजं । ग. निज । १५ ख. चाढ़वीयो । ग. चाढ़वियो । १६ ख. बिन्हे । ग. बिन्है । १७ ख. ग. वृद । १८ ग. विढ़े । १९ ख. ओरि । ग. ओर । २० ख. ग. वृहास । २१ ख. ग. दीयै । २२ ख. बैरीहर । २३ ख. बीजल । २४ ख. बाह ।

---

६५३. **चंडिका पुत्र** – चारण कवि । **वरणेस** – वर्णन करते हैं । **कंठीरव** – सिंह । **जै-करणेस** – जयकर्ण नामक व्यक्ति । **आरण** – युद्ध । **सिघवी** – ओसवालोंका एक गोत्र । **खग** – तलवार । **झाटक** – प्रहार । **जोध** – सिंघवी जोधमल ।

६५४. **विजावत** - विजयराजका पुत्र । **दूठ** – वीर, जबरदस्त । **तुरी** – घोड़ा । **रैणायर-ऊत** – रणछोड़दासका पुत्र ।

६५५. **दुबै** – दूसरे । **निजां** – अपने निजके । **झलिया** – शोभित हुए । **बूर** – प्रहार, समूह । **व्रद** – विरुद ।

५५६. **ओर** – झोंक कर । **व्रहास** – घोड़ा । **वैरीहर** – शत्रु । **वीजळ** – तलवार । **वाह** – प्रहार । **कराळ** – भयंकर । **गजगाह** – युद्ध ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पछट्टत[1] रौद्रव चंद्रप्रहास[2] ।
दमंगळ मांझल माधवदास ।
वधै[3] असि ओरवियौ[4] जुधवार ।
राजा 'जयसाह'[5] तणौ[6] हुजदार[7] ।। ६५७

'घासी' सुत पौरस ग्रीखम घांम ।
रिमां विहंडै खगि आणंद रांम ।
ओरै[8] असिदूठ छिबै[9] असमांन ।
'नरू' हर 'केहर'रौ परधांन ।। ६५८

गहम्मह[10] सूर धुबै गजगाह ।
'सदौ' खग वाहत[11] दारुण साह ।
हिचै खग दंगळ नौख[12] हुबास[13] ।
खत्री गुर[14] पासहवान खवास ।। ६५९

उदैसिंघ रावत गोकळऊत[15] ।
पछट्टत[16] खाग[17] वडौ रजपूत ।
पछट्टत खाग समोभ्रम 'पाळ' ।
दळै खल खीचिय[18] सूर दयाळ' ।। ६६०

---

१ ख. ग. पछटत । २ ख. चदपहास । ३ ख. बधे । ४ ख. बोरवीयौ । ५ ख. जैयसाह । ६ ख. तणे । ७ ख. दुजदार । ८ ख. ग. ओरे । ९ ख. छिबे । ग. छिवै । १० ख. गहंमह । ग. गहमह । ११ ख. बाहत । १२ ख. नौहष । १३ ख. वास । १४ ख. गुरू । १५ ख. ग. गोकलऊत । १६ ख. पछटते । ग. पछटत । १७ ख. ग । १८ ख. षींचीय । ग. षीचीय ।

---

६५७. पछट्टत – पछाड़ता है । गिराता है । रौद्रव – यवन, मुसलमान । चंद्र प्रहास – तलवार । दमंगळ – युद्ध । मांझल – मध्य, में ।

६५८. घांम – आतप, धूप । विहंडै – संहार करता है ।

६५९. गहम्मह – समूह, भीड़ । धुबै – जोश पूर्ण तेजीसे युद्ध कर रहे हैं । गजगाह – युद्ध । सदौ – सरदारसिंह । दंगळ – युद्ध । नौख – श्रेष्ठ । हुबास – घोड़ा । पासहवान – राजाका कृपा पात्र । खवास – अनुचर ।

६६०. दळै – संहार करता है, ध्वंस करता है । खीचिय – चौहान वंशकी खीची शाखाका व्यक्ति । दयाळ – दयालसिंह ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

वाहै[1] खग[2] 'केहर' रोस[3] वधंत[4] ।
वंकी[5] खग 'केहर' सीस वहंत[6] ।
फिरै खळ गेहरिया जिम फाग ।
खिवै घण 'केहरिया' पर खाग ।। ६६१

वरंगन[7] कंठ धरै[8] वरमाळ ।
रुकां[9] उडी[10] सीस चढै[11] रुंडमाळ ।
अपच्छर[12] सूर जोड़ै[13] हिज[14] आय ।
जई[15] रथ बैठि[16] वसै[17] स्रुगि[18] जाय ।। ६६२

अमावड़ तेज मजेज असाधि[19] ।
वाहै[20] खग धावड़ पौरस[21] वाधि[22] ।
बंगाळक[23] झाटत खाग अबीह ।
सझै[24] जुध दारुण ठाकुरसीह ।। ६६३

दिपै[25] वप[26] लोह वरन्न[27] सिंदूर ।
'सांमावत' जांण[28] उदैगिर सूर ।

---

१ ख. बाहै। २ ख. षगि। ३ ख. रोस। ग. रौस। ४ ख. बधंत। ५ ख. बंकी। ६ ख. बहंत। ७ ख. ग. वारंगन। ८ ख. धरे। ९ ख. रूकां। १० ख. ग. उड़ि। ११ ख. धरे। ग. चढ़े। १२ १२ ख. ग. अपछर। १३ ख. जोडे। १४ ग. हीज। १५ ग. जइ। १६ ख. वैसि। १७ ख. वसै। १८ ग. श्रुगि। १९ ख. ग. असधि। २० ख. बाहै। २१ ग. पोरस। २२ ख. ग. बाधि। २३ ख. बंगाल। २४ ख. ग. सझै। २५ दियै। २६ ख. बपि। २७ ख. बरंन। ग. वरन। २८ ख. जांणि।

---

६६१. **केहर** – केसरीसिंह। **रोस** – जोश। **वंकी** – बांकुरी। **वहंत** – प्रहार होता है। **गेहरिया** – होलिकोत्सव पर डंडा रास रमने वाले। **फाग** – फाग उत्सव। **खिवै** – चमकती है। **केहरिया** – केसरीसिंह।

६६२. **वरंगन** – अप्सरा। **रुकां** – तलवारों। **जोड़ै** – पास। **जई** – उस, उसी, विजयी। **स्रुगि** – स्वर्ग।

६६३. **अमावड़** – अपार, असीम। **मजेज** – शीघ्र। **असाधि** – (असाधारण ?)। **धावड़** – राजकुमारको दूध पिलाने वाली स्त्री [धाय] का पति। **वाधि** – विशेष। **बंगाळक** – मुसलमान।

६६४. **दिपै** – शोभित हो रहे हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इसी[1] विध[2] जेठिय[3] जोम अताळ ।
कणैठिय[4] तास लड़ै कळचाळ[5] ॥ ६६४

झोकै[6] असि देत खळां खग झाड़[7] ।
महापति[8] धावड़ लोह मराड़[9] ।
जिको जुध वार भोजावत जेम ।
उछट्टत[10] बाज निलागर एम* ॥ ६६५

वहै अस्व गाहटतौ धड़ वाधि ।
अळूभत[11] ओयण अंत असाधि[12] ।
अठी[13] हुसनायक[14] सूत इलाज ।
कसी किर राह सिखावण काज ॥ ६६६

हुबै धरि क्रोध गजांथटहूंत ।
करै हथवाह कूंभाथळ कूंत ।
ॐपड़ै रुहिनाळ तणा परनाळ ।
खळक्कत[15] जांणिक गैरुव[16] खाळ ॥ ६६७

---

१ ग. इसि । २ ख. बिधि । ग. विधि । ३ ख. ग. जेठीय । ४ ख. ग. कणैठीय । ५ ख. कलिचांल । ६ ख. झोके । ७ ख. झाट । ८ ख. महपति । ९ ख. मराट । १० ग. उछटत ।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

११ ख. अलूफत । १२ ख. ग. असधि । १३ ख. ग. आटी । १४ ख. ग. हौसनायक । १५ ग. खळकत । १६ ग. गेंरुव ।

ॐ....ॐचिन्हांकित पंक्तियां ख. प्रतिमें नहीं हैं ।

---

६६४. **जेठिय** – ज्येष्ठ, बड़ा । **जोम** – जोश । **अताळ** – असीम । **कणैठिय** – कनिष्ठ, छोटा । **तास** – उसका । **कळचाळ** – युद्ध, योद्धा ।

६६५. **झाड़** – गिरा कर । **लोह** – शस्त्र-प्रहार । **मराड़** = मराट–जबरदस्त । **उछट्टत**–कुदाता है । **बाज** – घोड़ा । **निलागर** – घोड़े का नाम जो रंग विशेष के कारण होता है ।

६६६. **ओयण** – चरण, पैर । **अंत** – आंत । **असाधि** – असंभव ।

६६७. **हुबै** – पूर्ण तेजीसे युद्ध करते हैं । **गजांथटहूंत** – हाथी दलके समूह से । **हथवाह** – प्रहार । **कूंत** – भाला । **रुहिनाळ** – रक्तका नाला । **परनाळ** – नाला । **खळक्कत** – कल-कल शब्द करते हुए पानी आदि चलते हैं । **जांणिक** – मानों । **गैरुव** – गेरू नामक धातु । **खाळ** – नाला ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

तठै करि खीज वहै तरवार[1] ।
अकाळिय[2] बीजतणी उणिहार[3] ।
गजां करि खंडळ तंडळ गात ।
पिवै[4] जिम कोध हुवा वज्रपात[5] ।। ६६८

खुटै जरदैत जिकै[6] इम खांति ।
तुटै तिम साबण दाबण तांति ।
मँडै[7] कट[8] तेग हुवै मसतांन ।
खंडै[9] अँगरेज[10] रु नाहर खांन ।। ६६९

पछट्टत[11] रूक अमोसह[12] पूर ।
हिचै पडि मीर वरी[13] दोय हूर ।
चहच्चह[14] नारद संकर चंड ।
खहै[15] इम गूजर गूजर खंड ।। ६७०

अणी सर साबळ फूटत ऊक ।
रुद्रायण[16] वाह[17] करै घण रूक ।
भयांणख भेख सरां छड़ भार ।
दुहूंवळ[18] धार रगत्त[19] दुसार ।। ६७१

---

१ ख. तरवारि । २ ख ग. अकाळीय । ३ ख. उणिहारि । ग. अणुहार । ४ ख. पवै । ५ ख. बज्रपात । ६ ख. ग. जिके । ७ ख. मंडे । ८ ख. झट । ९ ख. षडे । १० ग. अंगरेझ । ११ ख. पछटत । १२ ख. अमोसम्ह । १३ ख. बरी । १४ ख. ग. चहचह । १५ ख. ग. षहे । १६ ख. रौद्रायण । ग. रोद्रायण १७ ख. बाह । १८ ख. दुहूंबल । १९ ख. रग

---

६६८. खीज – कोप । अकाळिय – असामयिक, अकस्मात । बीजतणी – बिजलीकी, वज्रपातकी । उणिहार – समान । खंडळ – ध्वंस । तंडळ – संहार । गात – शरीर । पिवै = पवै – पर्वत ।

६६९. खुटै – समाप्त हो गये । जरदैत – कवचधारी । साबण – साबुन । तांति – तार ।

६७०. पछट्टत – प्रहार करता है । रूक – तलवार । हूर – अप्सरा । खहै – युद्ध करता है ।

६७१. अणी – नोंक । साबळ – भाला विशेष । ऊक – तेज धार । रुद्रायण – यवन । वाह – प्रहार । भयांणख – भयानक, भयावह । सरां – तीरों । छड़ – भाला । दुहूंवळ – दोनों ओर । रगत्त – खून ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वपां[1] व्रण[2] चोळ वणै[3] तिणवार[4] ।
जोधांपति हूंत[5] सभेस[6] जुहार[7] ।
सभै रवि सेस महेस सराह ।
अखै[8] त्रण[9] वार 'अभैमल' वाह[10] ।। ६७२

तई धख[11] होण[12] परी भरतार ।
विढै[13] असि ओर[14] चवत्थियवार[15] ।
करै महरांपति भाट करोध ।
जुटै घण टूक हुवै खळ जोध ।। ६७३

सुरां[16] गुर पूर झिलै[17] अंगि सार ।
तजै[18] असि भोमि वढै[19] तिणवार ।
हरक्खि[20] कटैज[21] धरै[22] रंभ हार ।
अँत्रावळि पाय रुळंत अपार ।। ६७४

सत्रां महपति[23] करंत संघार ।
धडां पग दे खग वाहत धार ।

---

१ ख. वपं । २ ख. व्रम । ३ ख. बणे । ग. वणे । ४ ख. ग. तृणवार । ५ ख. हूंस । ६ ख ग. सभेसु । ७ ख. ग. जुव्हार । ८ आखे । ९ ख. ग. तृण । १० ख. बाह । ११ ख. धग । ग. धर्ष । १२ ख. ग. होण । १३ ख. बिढ़ै । ग. विढ़े । १४ ख. ओरि । ग. ओर । १५ ख. ग. चवत्थीयवार । १६ ख. सूरां । १७ ख. ग. झिले । १८ ख. तजे । १९ ख. वढे । २० ख. ग. हरषि । २१ ख. कंठेज । ग. कंठेज । २२ ख. ग. धरे । २३ ग. महपत्ति ।

---

६७२. वपां – शरीर पर । व्रण – वर्ण, रंग । चोळ – लाल । जोधांपति – महाराजा अभयसिंह । सभेस – करता है । जुहार – अभिवादन । अखै – कहता है । त्रण – तीन । अभैमल – महाराजा अभयसिंह ।

६७३. धख – प्रबल आकांक्षा । विढै – युद्ध करता है । चवत्थियवार – चौथी बार । महरांपति – गूजर सरदार ।

६७४. हरक्खि – हर्षित हो कर । रंभ – अप्सरा । अँत्राबळि – आंतें, अंत्रसमूह । पाय – पैर, चरण । रुळंत – इधर-उधर गिरते हैं ।

६७५. सत्रां – शत्रुओंका । संघार – संहार । धडां – शरीरों । धार – तलवार ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करै नृप[1] वीर जय जय कार ।
हकां करि जांणि रमे[2] होळियार[3] ।। ६७५
दळां अग्रि भोमि जिकै[4] क्रम दीध ।
कई[5] असमेध जिगांनसु कीध ।
परी चंड ग्रीध जटी हित पूर ।
समावत खेत पड़ै[6] इम सूर ।। ६७६
अयौ[7] रथ बैसि[8] समोसर इंद ।
वसै[9] सुरधांम अपच्छर[10] वींद[11] ।
विढै[12] जुध[13] 'धांधिल' ओरि व्रहास ।
पेखै[14] हथ वाग कसै[15] सपतास ।। ६७७
'अखौ'[16] खग वाहत[17] सूर अबोह ।
सझे[18] खग[19] हाथळ जांणिक सीह ।
ओरै[20] असि बंधव दोय अमांन ।
भिड़ै खग झाट 'नरौ' 'भगवांन' ।। ६७८
जुड़ै मगरूर 'मुकंद' सुजाव ।
दळां झज्र[21] उझळतां दरियाव ।

---

१ ख. नृत । ग. नृप । २ ख. ग. रमै । ३ ख. ग. होलीयार । ४ ख. जिके । ५ ख. केई । ग केइ । ६ ख. ग. पडे । ७ ख. आयौ । ग. आयो । ८ ख. बैसि । ९ ख. बसे । ग. वसे । १० ख. ग. अपछर । ११ ख. ब्यंद । ग. व्यंद । १२ ख. बिढ़ै । १३ ख. जुधि । १४ ख. पेषै । १५ ख. ग. कसें । १६ ग. अषो । १७ ख. बाहत । १८ ख. ग. सझै । १९ ख. ग. गज । २० ख. ग. ओरे । २१ ख. वज्र । ग. व्रज्र ।

---

६७५. हकां – आवाज । होळियार – होलिकोत्सव पर चरचरी नृत्य करने वाला ।

६७६. क्रम – चरण, पैर । दीध – दिये । असमेध – अश्वमेध । जिगांनसु – यज्ञ । चंड – रणचंडी ।

६७७. अयौ – आया । बैसि – बैठ कर । समोसर – बराबर । वींद – दूल्हा । धांधिल – धांधल शाखाका राठौड़ । पेखै – देखता है । सपतास – सप्ताश्व ।

६७८. अखौ – अखैसिंह । हाथळ – सिंहका पंजा जिससे वह प्रहार करता है । अमांन – जबरदस्त । नरौ – नाम है । भगवांन – भगवानसिंह ।

६७९ जुड़ै – भिड़ता है । सुजाव – पुत्र ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्रां दळ वाहृत जंग समाथ ।
सौ सौ खग झेलति हेकणि[1] साथ ।। ६७९

वणै[2] वप कुंदण मांहि वणाव[3] ।
जड़ै[4] सर सावळ[5] घाव जड़ाव ।
धरा[6] पुड़[7] वेधि[8] रंगै[9] अहि धौळ ।
छिलै[10] रुहिराळतणी अति छौळ[11] ।। ६८०

घणा खळ पाड़ि पड़ै[12] घमसांण ।
वरै[13] बिहुवै[14] रंभ बेसि[15] विमांण[16] ।
पिता जिम खाग झटां म्रत[17] पाय ।
किया[18] स्त्रुगि[19] वास सुजस्स कहाय[20] ।। ६८१

हुवा स्त्रुगि[21] वासिय[22] अमर[23] होय ।
पुरासह[24] सराहृत धांधल[25] दोय ।
अखै[26] प्रथमी[27] जस भाग असाधि[28] ।
वणै[29] उण[30] जीवण हूं म्रत[31] वाधि[32] ।। ६८२

---

१ ख. ग. एकणि । २ ख. ग. वणे । ३ ख. बणाव । ४ ख. जठे । ग. जडै । ५ ग. सावळ । ६ ख. धडा । ७ ख. जुध । ८ ख. बेधि । ९ ख. ग. रंगे । १० क. विले । ११ ख. छोल । ग. छोळ । १२ ख. ग. पडे । १३ ख. ग. वरे । १४ ख. बिहुंबे । १५ ख. बैंसि । ग. वैंसि । १६ ख. बिमांण । १७ ख. ग. मृत । १८ ख. कीया । १९ ग. श्रुगि । २० ख. सुझस । २१ ग. श्रुगि । २२ ख. बासीय । २३ ख. अंम्मर । २४ ख. पुराह । ग. दुरासह । २५ ख. धांधिल । २६ ख. ग. आषै । २७ ख. प्रिथमी । २८ ख. ग. असंधि । २९ ख. ग. वणे । ३० ख. घण । ३१ ख. ग. मृत । ३२ ख. बांधि ।

---

६७९. **समाथ** – समर्थ, योद्धा । **हेकणि** – एक ही ।

६८०. **कुंदण** – सोना । **वणाव** – श्रृंगार, सजावट । **घाव** – प्रहार । **जड़ाव** – जटित होनेकी क्रिया या भाव । **अहि** – शेष नाग । **धौळ** – शिर, मस्तक । **छिलै** – उमड़ती है । **रुहिराळतणी** – खूनकी, रक्तकी । **छौळ** – धारा ।

६८१. **घमसांण** – युद्ध । **वरै** – वरण कर के । **रंभ** – अप्सरा । **बेसि** – बैठ कर ।

६८२. **सराहृत** – सराहना करते हैं । **धांधल** – राठौड़ वंशकी धांधल शाखाका वीर । **अखै** – कहता है । **असाधि** – असाध्य, कठिनतासे प्राप्त होने वाला । **वाधि** – विशेष, बढ़ कर ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्रिहूँ खग वाहत[1] आतस ताप ।
प्रचंडक 'आणंद' 'जैत' 'प्रताप' ।
जठै किरमाळ झटां जमरांण ।
भिड़ै गहलोत[2] थंभै[3] रथ भांण ।। ६८३

जोगावत[4] 'ऊदल'[5] ऊझळ जोस ।
पछट्टत[6] खाग हणै वज्र[7] पोस ।
बिहारियदास[8] अभंग व्रजागि ।
लड़ै सुत 'वीरम'[9] अंबर लागि ।। ६८४

नथम्मल[10] नाहर रूप निराट ।
झाड़ै[11] खळ नाहर खां खग झाट ।
हिचै असि औरं[12] खगां पडिहार ।
सहांणिय रांमति मंडत सार ।। ६८५

पछंटत ऊत्तग[13] चँद्रप्रहास ।
साझै[14] खळ[15] मुग्गळ[16] सांमळदास ।
'सुभौ'[17] खग वाहि[18] करंत सकाज ।
जठै खग वाह[19] करै 'जसराज' ।। ६८६

१ ख. बाहत । २ ख. गहलौत । ३ ख. थंभे । ४ ख. जोगाव । ५ ग. उदल । ६ ख. ग. पछटत । ७ ख. बज्र । ८ ख. ग. बिहारीयदास । ९ ख. बीरम । १० ख. ग. नथमल । ११ ख. ग. झाडै । १२ ख. ग्रोरि । ग. ग्रोर । १३ ख. ऊनग । ग. उनग । १४ ख. सझै । १५ ख. खग । १६ ख. मूंगल । ग. मुंगळ । १७ ख. ग. सोभो । १८ ख. बाह । १९ ख. बाह ।

---

६८३. **प्रचंडक** – जबरदस्त । **आणंद** – आनंदसिंह । **जैत** – जैतसिंह । **प्रताप** – प्रतापसिंह । **किरमाळ** – तलवार । **झटां** – प्रहारों । **थंभै** – रोकता है । **भांण** – सूर्य ।

६८४. **ऊदल** – उदयसिंह । **ऊझळ** – उमड़ा हुआ, अपार । **पछट्टत** – प्रहार करता है । **हणै** – संहार करता है । **वज्र पोस** – कवचधारी योद्धा (?) **अभंग** – वीर । **वज्रागि** = वज्राङ्ग – जबरदस्त । **वीरम** – वीरमदेव । **अंबर** – आसमान ।

६८५. **नथम्मल**''' **निराट** – सिंहके समान भयंकर रूप धारण किया हुआ नथमल । **झाड़ै** – काटता है, गिराता है । **खग झाट** – तलवारका प्रहार । **सहांणिय** – घोड़ेकी देख-रेख करने वाला, घोड़ों को शिक्षित करने वाला । **रांमति**–खेल, क्रीड़ा । **सार**–तलवार ।

६८६. **पछंटत** – प्रहार करता है । **ऊतंग** – ऊंच । **चँद्रप्रहास** – तलवार । **साझै** – संहार करता है, मारता है । **सुभौ** – शुभकरण या शुभराम ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करै जुध बीच[1] अडिग कदम्म[2] ।
पछट्टत वीजळ[3] 'मांन' पदम्म[4] ।
मँडै[5] 'बखतेस' अनै भड़ 'माल'[6] ।
दुम्रौ भड़ 'लाल' लडंत दुझाल ।। ६८७

भिड़ै ख(ग)गरूर खत्रीवट भेव ।
दियै[7] खग झाट खळां जयदेव[8] ।
वधै[9] नक[10] ग्रौर[11] घड़ा विचि[12] बाज[13] ।
'सुभावत'[14] वाहत[15] खाग सकाज ।। ६८८

उठै रिणछोड़ सुजाव अरोड़ ।
घड़ां[16] खळ वेधत[17] सेल घमोड़[18] ।
विभाड़त[19] रोद घड़ा[20] हळवाह[21] ।
सराहत राह दुहूंदळ साह ।। ६८९

उझेल बगत्तर[22] पोस अपाल ।
'लखै' धज सेल कियौ[23] रंग लाल ।
जड़ै[24] पहिला खळ साबळ जास ।
दियै[25] खग झाट तुळछियदास ।। ६९०

---

१ ग. वीच । २ ख. कद्दम । ग. कदम । ३ ख. बीजल । ४ ख. ग. पद्दम । ५ ख. लड़ै । ६ ख. लाल । ७ ख. दीयै । ८ ख. जगदेव । ९ ख. बधे । ग. वधे । १० ख. ग. छक । ११ ख. ग्रोरि । १२ ख. बिचि । १३ ख. ग. वाज । १४ ख. ग. सोभावत । १५ ख. बाहत । १६ ख. घडां । १७ ख. बेधत । १८ ख. ग. धमोड । १९ ख. बिभाड़त । २० ख. घंडा । २१ ख. हलबाह । २२ ख. बगतर । २३ ख. कीयो । २४ ख. जडे । २५ ख. दीयै ।

---

६८७. **अडिग** – अटल, दृढ़ । **कदम्म** – पैर, चरण । **मांन** – मानसिंह । **पदम्म** – पद्मसिंह । **दुम्रौ** – दूसरों । **लाल** – लालसिंह ।

६८८. **खत्रीवट** – क्षत्रियत्व । **घड़ा** – सेना । **बाज** – घोड़ा ।

६८९. **सुजाव** – पुत्र । **अरोड़** – जबरदस्त । **वेधत** – छेदन करता है । **घमोड़** – प्रहार । **विभाड़त** – ध्वंस करता है, संहार करता है । **रोद** – यवन । **हळवाह** – बलराम ।

६९०. **उझेल** – उधेड कर, चीर कर । **बगत्तर पोस** – कवचधारी योद्धा । **धज** – घोड़ा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महबळ सूर दिनां मकरंद ।
चखां करि चोळ[1] लड़ै भड़ 'चंद'[2] ।
जठै भड़ 'तेज' हणूमत[3] जाति ।
जुड़ै हरनाथ[4] करूर जमाति[5] ।। ६९१

तती खग भाट[6] खळां सिर तांम ।
सझै अबदार[7] चह्वांण संग्रांम ।
'अबा' हत[8] खाग जिसी झळ अग्गि[9] ।
विहारियखां[10] नर रांम व्रजागि ।। ६९२

गाढागुर[11] गूजर रौस[12] गरूर ।
सझै[13] जुध 'सुंदर[14]' 'खेतल'[15] सूर ।
वकारत[16] रोद खळां[17] हळ वाहि[18] ।
'मन्नौ' हरदास लड़ै जुध मांहि ।। ६९३

'अभैमल' आगळ सूर उदार ।
विढै[19] इम मांगळिया[20] जुध वार[21] ।
हिचै रणछोड़[22] 'लखौ'[23] 'हरियंद' ।
'विजौ'[24] खग वाढत[25] थाट 'विलँद' ।। ६९४

---

१ ख. चौल । ग. चाळ । २ ख. वंद । ३ ख. हणूंमत । ४ ख. हरिनाथ । ५ ख. ग. जमाति । ६ ख. झाल । ७ ख. ग. अवदार । ८ ख. ग. अवाहत । ९ ख. ग. आगि । १० ख. बिहारीयषा । ग. विहारीयषां । ११ ख. गाढ़ांगुर । १२ ख. ग. रोस । १३ ख. सझे । १४ ख. सूंदर । १५ ख. षेलत । १६ ख बकारत । १७ ख. षंडा । १८ ख. बाहि । १९ ख. बिढ़ै । २० ख. ग. मांगळीया । २१ ख. बार । २२ ख. ग. रिण-छोड । २३ ग. लषो । २४ ख. बिजौ । ग. विजो । २५ ख. बाढ़त ।

---

६९१. चखां – नेत्रों । चोळ – लाल । चंद – चंद्रसिंह । तेज – तेजसिंह । हणूमत जाति – हनुमानके वंशज, जेठवा शाखाका वीर ।

६९२. तती – तेज । अबा – अभयसिंह । झळ – आगकी लपट ।

६९३. सुंदर – सुंदरदास गूजर । खेतल – खेतसिंह गूजर ।

६९४. अभैमल – महाराजा अभयसिंह । विढै – युद्ध करते हैं, वीर गति प्राप्त होते हैं । मांगळिया – गहलोत वंशकी मांगलिया शाखाका वीर । थाट – सेना, दल ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धांधू रिणछोड़ वाहै[1] खग धार ।
दगावत तोप चह्वांण उदार ।
जिकौ[2] भड़ 'खेतल'[3] क्रोध जड़ागि ।
खपावत मेछ दळां झट खागि ।। ६६५

'बहादर'[4] 'डूंगर'[5] सेजवदार[6] ।
सत्रां रिण सेल सुं वोहत[7] सार ।
इसो विध[8] लूण[9] प्रताप अपार ।
भिड़ै भड़ रीठ पड़ै गजभार ।। ६६६

कवित्त– ख्वाज-बगस हठिखांन[10] निडर[11] मूजायद[12] नायक ।
बलू खांन अजमति[13] इनतुल्ला[14] अजरायक ।
ताज बळी जल्लाल छोह नाहर जिम छूटा ।
'अभातणा' भड इता जवन जवनांहूं जूटा[15] ।

'भगवंत' हजारी 'धनड़' भड, रण मझि घोड़ा राळिया[16] ।
खुरसांण देस बिहंडै[17] खगां, पूरब देस उजाळिया[18] ।। ६६७

असि 'धनियै' औरियौ[19], 'हरी' 'गोपै' करि हाकां ।
'अखै' 'उद'[20] 'आसड़ै' 'किसन' 'सूजड़ै' काजाकां ।

---

१ ख. ब्वाहै । २ ख. ग. जिको । ३ ख. षेलत । ४ ख. ग. बाहादर । ५ ख. डगर । ६ ख. ग. सेझबरदार । ७ ख. बांणंत । ८ ख. ग. विधि । ९ ख. लूंण । १० ख. हठीषांन । ११ ख. निजर । १२ ख. मुजाहिद । ग. मुजायद । १३ ख. अजम्मति । १४ ख. इनातुल्ला । १५ ख. जूटो । १६ ख. रालीया । १७ ख. बिहंडे । १८ ख. उजालीया । १९ ख. ओरीयौ । ग. ओरियो । २० ख. ऊद ।

---

६६५. धांधू – राठोड़ वंशकी एक उप शाखा । दगावत – तोपें छुड़ाता है । जड़ागि – (?) । खपावत – संहार करता है ।

६६६. सेज वदार – राजा महाराजाओं के पलंग बिछाने वाला, शैया बिछाने वाला ।

६६७. ख्वाज-बगस – ख्वाजाबख्श नामक यवन । मुजायद – (?) इनतुल्ला – इनायतुल्ला खां । अजरायक – जबरदस्त । अभातणा – महाराजा अभयसिंहके । राळिया – झोंक दिये ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महपति 'मुरळी' 'रयण', 'जगड़' 'बगसै' चंद्र जैतै ।
'उगर' खेत दौळिय[1] बहसि[2] 'धनियै'[3] विरदैतै[4] ।
ओरिया[5] तुरंग जूटा अडर, छूटा बाघ[6] छछोहड़ां ।
सिध 'अभातणी'[7] चेळा सकळ, लड़िया[8] वधिवधि[9] लोहड़ां ।। ६६८
वारी[10] भड़ विरदैत[11] वधै[12] 'जीवणौ'[13] विहारी[14] ।
'वछौ'[15] 'विजौ'[16] 'हमीर' 'अणदौ'[17] 'सिवौ'[18] अग्रकारी ।
म्रिधो[19] मवातीखांन[20] सरफ राजखां सिपाही ।
सेख[21] सीदक्क[22] सीम, वधे[23] इतरां खग वाही[24] ।
वरजागि[25] वाढ[26] ओभ्कट[27] वहै[28], आगि खळां सिर[29] ऊपड़ै ।
पीरसा पैक प्यारौ प्रचंड, 'लाल' सहेत[30] जुध[31] लड़ै ।। ६६९
'निजरु' अनै 'करीम' बिन्है[32] पड़दार वहादर[33] ।
नगारची[34] 'नाहरौ' हाक[35] करि ओर[36] 'हैमर'[37] ।
'राजू' सुतन 'जलाल'[38] एक[39] हथि त्रंबक वजावै[40] ।
इक हथ[41] खागां[42] उनाग धाय असुरां दळ धावै ।

१ ख. दौलीयो । ग. दोलियै । २ ग. वहसि । ३ ख. धनीयै । ४ ख. बिरदैतै । ५ ख. ओरीया । ६ ख. वाग । ग. वाघ । ७ ख. ग. अभातणा । ८ ख. लडीया । ९ ख. ग. बधि बधि । १० ख. बारी । ११ ख. विरदैत । १२ ख. बधे । ग. वधे । १३. ग. जीवणो । १४ ख. बिहारी । १५ ख. छठौ । ग. वछो । १६ ख. बिजौ । ग. विजो । १७ ख. अणंद । ग. अणदो । १८ ख. सेवो । १९ ख. म्रिधौ । २० ख. धवातीषांन । २१ ख. ग. सेषर । २२ ख. ग. सोदक । २३ ख. बधे । ग. वधै । २४ ख. बाही । २५ ख. बरजागि । २६ ख. बाढ़ । २७ ख. ग. ओभ्कट । २८ ख. बहै । २९ ख. सिरि । ३० ख. ग. सहैता । ३१ ख. जुधि । ३२ ग. विन्है । ३३ ख. ग. बाहादर । ३४ ख. नागारची । ग. नंगारची । ३५ ख. हवक । ३६ ख. ग. ओरे । ३७ ख. हैम्मर । ग. हैमर । ३८ ख. ग. जलाल । ३९ ग. एके । ४० ख. बजावै । ४१ ख. हत्य । ४२ ख. ग. षाग ।

---

६६८. ओरिया – आगे बढ़ाए ।

६६९. **विरदैत** – विरुदधारी, यशस्वी । **वरजागि** – सुध्ढ़ शरीर वाले, वज्रांग । **ओभ्कट** – भयंकर ।

७००. **बिन्है** – दोनों । **पडदार** = पर्दःदार – छिपाने वाला, द्वारपाल । **नगारची** – नगाड़ा बजाने वाला । **हाक** – जोशपूर्ण आवाज । **ओरै** – झोंकता है । **हैमर** – घोड़ा । **त्रंबक** – नगाड़ा । **उनाग** – नंगी । **धाय** – घाव, प्रहार । **धावै** – संहार करता है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहू[1] श्रौलगां[2] गोळां[3] समर, श्राछटि खग हंस ऊछळि[4] ।
धपी[5] परणी[6] श्रपछर श्रगंज, मलानूर हूंता मिळै ॥ ७००

दूहौ[7] – वडी[8] फौज इण विध[9] विहद[10], वरण[11] कही विसतार[12] ।
इण श्रागळ[13] 'श्रधराज' री, समहर वरणण[14] सार ॥ ७०१

राजाधिराज बखतसींहजीरा जुधरौ वरणण

छंद त्रोटक – जुधि झाल कराळ उठत[15] जठै ।
श्रसि हाकलिया 'बखतेस'[16] श्रठै ।
चख चोळा[17] झळाहळ रीस चडी ।
भुह[18] ऊपर मौसर जाय भिड़ी ॥ ७०२
धर-धारक सीस धम[19] धमिया[20] ।
श्रतळी[21]-बळ वाजिद[22] उप्रमिया[23] ।
विच[24] फौज रेवंत[25] पसाव वहै[26] ।
कवि श्रोपम तास प्रकास कहै ॥ ७०३

---

१ ख. साहु । ग. साहू । २ ग. श्रौळगां । ३ ख. गोलो । ग. गोलौ । ४ ख. ऊछले । ५ ख. गंध्रपी । ६ ख. परणि । ग. परणि । ७ ख. दूहा । ग. दोहौ । ८ ख. बडी । ९ ख. बिधि । १० ख. बिहद । ११ ख. बरण । १२ ख. बिसतार । १३ ख. श्रागलि । १४ ख. बरणण । १५ ख. ग. उडंत । १६ ग. वषतेस । १७ ग. चौळ । १८ ख. ग. भौह । १९ ख. धमं । २० ख. ग. धमीया । २१ ख. श्रतुली । २२ ख. बाजंद । २३ ख. ऊप्रमीया । ग. ऊप्रमीया । २४ ख. बिचि । ग. विचि । २५ ख. रेत । ग. रेवंत । २६ ख. बहै ।

---

७००. समर – युद्ध । हंस – प्राण । मलानूर – (?) ।

७०१. श्रागळ – श्रगाड़ी । श्रधराज – महाराज बखतसिंहकी उपाधि राजाधिराज थी, उसका संक्षिप्त रूप, श्रधिराज । समहर – युद्ध ।

७०२. हाकलिया – हांके, चलाये । बखतेस – नागौरपति महाराज बखतसिंह । झळहळ – अत्यन्त तेज, भयंकर । भुह – भौंहें । मौसर – श्मश्रु, मूंछ । भिड़ी – स्पर्श की ।

७०३. धर-धारक – शेषनाग । धम धमिया – कंपायमान हुये, प्रहारयुक्त किये (?) । श्रतळी-बळ – श्रतुल्य बलशाली । वाजिद – घोड़ा । उप्रमिया – (?) । रेवंत-पसाव – महाराजा बखतसिंहके घोड़ेका नाम ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असवार सरूप सतेज इसौ ।*
जगचक्ख अनै सपतास जिसौ ।
जुधि नेत्र भड़ां रंग जावकरा ।
प्रजळै झळ जांणिक पावकरा ।। ७०४

काढियां[1] खग साबळ[2] झोक कियां[3] ।
लगियां[4] सिर अंबर वाग[5] लियां[6] ।
आविया[7] अजरायळ सूर इसा ।
जमराव तणा उमराव जिसा ।। ७०५

उण घूमर[8] क्रोध झळा ऊझळी ।
अड़िया[9] असुरांण उचार अली ।
सयदांण जुवांण विरांण[10] सजं ।
गुमरांण उफांण अरोह गजं ।। ७०६

करिपांण सुतांण कमांण[11] कसै ।
वरसांण[12] सरांण तणा वरसै[13] ।
कमधांण केकांण उडांण कळा ।
झुकिया[14] घमसांण उफांण झळा ।। ७०७

---

*ख. प्रतिमें यह पंक्ति इस प्रकार है—
'असवार सतेज सरूप इसौ ।'

१ ख. काढ़ीया । २ ग. सावळ । ३ ख. कीयां । ४ ख. लगीयां । ५ ख. बाग । ६ ख. ग. लीयां । ७ ख. आवीया । ८ ख. घूंमर । ९ ख. अडीया । १० ख. बीरांण । ग. वीरांण । ११ ख. कबांण । १२ ख. बरसांण । १३ ख. बरसै । १४ ख. ग. झोकीया ।

---

७०४. जगचक्ख – सूर्य । अनै – और । सपतास – सप्ताश्व । प्रजळै – प्रज्वलित होते हैं । झाळ – आगकी लपट । जांणिक – मानो । पावकरा – अग्निके ।

७०५. साबळ – भाला विशेष । अंबर – आसमान । अजरायळ – जबरदस्त । जमराव – यमराज ।

७०६. घूमर – सेना, दल । झळा – आगकी लपट । ऊझळी – उमड़ी । सयदांण – यवन । जुवांण – जवान, युवा । गुमरांण – गर्व (?)

७०७. सुतांण – तान कर । कमांण – कमान, धनुष । वरसांण – वर्षा । सरांण – तीर, बाण । कमधांण – राठौड़ । केकांण – घोड़ा । झुकिया – संलग्न हुए । उफांण – उबाल ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिलहांण अँगांण वेधांण[1] सरां[2] ।
पखरांण केकांण अभीच परां[3] ।
अति स्रोण उफांण[4] धरांण धसी[5] ।
जगचख्ख उगांण क्रनांण[6] जिसी ।। ७०८

हिंदवांण[7] तुरक्कांण[8] हिचै ।
रिण ढांण वीरांण[9] नृतांण[10] रचै ।
करड़क्क हुवै सिलहक्क कड़ां ।
धमचक्क भचक्कत सेल धड़ां ।। ७०९

वधि[11] चक्क उचक्कत[12] राहवियै[13] ।
करि हक्क[14] कटक्क रटक्क[15] कियै[16] ।
विजळां[17] सिलहक्क जरक्क वहै[18] ।
रथ थांभि[19] अरक्क थरक्क रहै[20] ।। ७१०

---

१ ख. बेधांण । २ ख. सरं । ३ ख. परं । ४ ग. ऊफांण । ५ ख. इसी । ६ ख. क्रनाल । ७ ख. हिंदवांण अनं । ८ ख. ग. तुरकांण । ९ ख. बरांण । १० ख. ग. नृतांण । ११ ख. बंधि । ग. वधि । १२ ख. ग. उचक्कत । १३ ख. बीयं । ग. वीयं । १४ ख. ग. हक्कक । १५ ख. रटक्की । १६ ख. ग. कीयं । १७ ख. बीजलां । ग. वीजलां । १८ ख. बहै । १९ ख. थांभि । २० ख. रहे ।

---

७०८. सिलहांण – कवच, सिलह । अँगांण – शरीर । वेधांण – वेधते हैं । सरां – बाणों । पखरांण – कवच । अभीच – योद्धा (?) । स्रोण – खून । धरांण – भूमि । उगांण – उदय-काल । क्रनांण – किरणों ।

७०९. हिंदवांण – हिंदू । तुरकांण – तुर्क, यवन । हिचै – युद्ध करते हैं । रिण-ढांण – युद्ध-स्थल । वीरांण – युद्धप्रिय भैरव जिनकी संख्या राजस्थानीमें बावन मानी जाती है, अन्यत्र चौसठ ही योगिनिएं और चौसठ ही वीर होते हैं । नृतांण – नृत्य । करड़क्क – ध्वनि विशेष । सिलहक्क – कवच । धमचक्क – युद्ध । भचक्कत – प्रहार या प्रहारकी ध्वनि ।

७१०. वधि – पूर्ण । चक्क – दिशा । उचक्कत – (?) । हक्क – आवाज । रटक्क – आक्रमण, हमला । विजळां – तलवारें । जरक्क – प्रहार । थांभि – रोक कर । अरक्क – सूर्य । थरक्क – चकित हो कर ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चमराळ दळां अति रीस चढी।
करि क्रोध धिराज नराज कढी।
सत्र थाट घड़ां[1] चवगांन सिरै।
कवियांण रैवंत[2] - पसाव करै ॥ ७११

तरवार वहै[3] असवार सठै।
जरदैत हुवै दोय टूक[4] जठै[5]।
करि[6] जीण सपख्खर बाज[7] कटै।
दहोड़ै[8] खळ एम तुरी दवटै[9] ॥ ७१२

आय दांत चढै स्रुगि दैत इतां।
करि झाट उडावत, सीस कितां।
धर हूं अँतरीख करी[10] ग्रिधरै।
करि हार महेस सिगार[11] करै ॥ ७१३

घड़ धार अपार लुहा[12] धररै।
भभरूक[13] भयंकर पत्र[14] भरै।
परिवार सहेत हुवै त्रपती।
जुगणी त्रवसठ[15] सगति जिती ॥ ७१४

कमधज[16] गजां सिर घाव करै।
जुध मारण दारण दाव धरै।

---

१ ख. धड़ां। २ ख. ग. रेवंत। ३ ख. बहै। ४ ख. जूक। ५ ख. ग. जठै। ६ ख. कटि। ग. करी। ७ ग. वाज। ८ ख. ग. दहोडै। ९ दवटै। १० ख. करिग्र। ग. करिग्रि। ११ ख. सिगार। १२ ख. ग. लोही। १३ ख. भभरूत। १४ ख. पत्र। १५ ख. चवसठी। १६ ख. कमधज्ज।

---

७११. चमराळ – यवन, मुसलमान। धिराज – राजाधिराज, महाराजा बखतसिंह। नराज– तलवार। सत्र – शत्रु। थाट – दल। चवगांन – मैदान। कपि – वानर। डांण – छलांग।

७१२. सपख्खर – कवच सहित (घोड़ा)। बाज – घोड़ा। दहोड़ै – दौड़ते हैं। दवटै – दौड़ता है।

७१३. अंतरीख – आकाश। महेस – महादेव।

७१४. भभरूक – राजस्थानी लोक-कथाओं में प्रसिद्ध एक भूत भाभरो। सहेत – सहित। त्रपती – तृप्त होनेका भाव। जुगणी – रणचंडी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लड़तां अँग लोह छछोह लगै[1] ।
जगि[2] जांणिक ज्वाळ अहूति जगै[3] ।। ७१५

अरणांग[4] पतंगज ई उफणै[5] ।
वप[6] स्रोवण[7] घाव जड़ाव वणै[8] ।
सर सोक वजंत[9] परां सणणै ।
तिमहीज[10] जड़ाव तुरंग तणै ।। ७१६

भचकै[11] बखतेस[12] गुसै[13] भरियौ[14] ।
व्रजराज[15] उपासक वीफरियौ[16] ।
जुध[17] जांणिक क्रोध[18] मतै अजरै ।
करि दांमणि धार संग्रांम करै ।। ७१७

करि जांणिक आयुध इंद्र करै ।
धडछै[19] खळ जोम सदेह[20] धरै[21] ।
'अभमाल' कणैठिय[22] तांम[23] इसौ ।
जुध[24] लंक कणैठिय[25] रांम जिसौ ।। ७१८

---

१ ख. लगे । २ ख. जग । ३ ख. ग. जगे । ४ ख. ग. अरणंग । ५ ख. ग. उफणे । ६ ख. बप । ७ ख. ग. सोव्रण । ८ ख. बणे । वणे । ९ ख. व्रजत । १० ख. तिमहींज । ११ ख. ग. भचकै । १२ ग. बषतेस । १३ ख. गुणै । १४ ख. भरीयौ । १५ ख. वृजराज । १६ ख. बीफरीयौ । १७ ख. जुधि । १८ ग. क्रौध । १९ ग. धड़छे । २० संदेह । २१ ख. धरे । २२ ख. ग. कणंठीय । २३ ख. ताम । २४ ख. जुधि । २५ ख. कणंठीय ।

---

७१५. **लोह** – शस्त्र-प्रहार । **छछोह** – तेज, तीक्ष्ण । **अहूति** – आहूति ।

७१६. **अरणांग** – लाल शरीर । **पतंगज** – चिनगारियां सी । **वप** – वपु, शरीर । **स्रोवण** – रक्त, खून । **सर** – बाण । **सोक** – तीरोंके तेज चलनेकी ध्वनि । **परां** – पंख । **सणणै** – ध्वनि करती है ।

७१७. **भचकै** – प्रहार करता है । **बखतेस** – महाराजा बखतसिंह । **व्रजराज उपासक** – श्रीकृष्णकी उपासना करने वाला महाराज बखतसिंह । **वीफरियौ** – तेज क्रोधमें हो गये । **करि** – हाथमें । **दांमणि** – तलवार ।

७१८. **जांणिक** – मानों । **धड़छै** – काटता है, संहार करता है । **जोम** – जोश । **अभमाल** – महाराजा अभयसिंह । **कणैठिय** – कनिष्ठ, छोटा भाई । **तांम** – तब । **लंक** – लंका ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घमसांण करै धरि पांण घणौ ।
तिण मौसर[1] सूर 'अजीत' तणौ ।
लोह वाहत[2] सीस अकास लगै ।
इम जोध लड़ै 'बखतेस' अगै ॥ ७१९

अति वाहत[3] साबळ खाग अडी ।
वप[4] वेसज छोटिय[5] लाज वडी[6] ।
करनोत 'अभावत' सूर 'क्रनं' ।
वधि[7] वाहत[8] साबळ चोळ व्रनं ॥ ७२०

घण वाहत[9] साबळ[10] तेज[11] घणौ ।
तिण वार[12] 'पतौ'[13] 'महक्रन्न'[14] तणौ ।
सुत 'तेज' 'करन्न' दळां सबळां ।
खग झाट करै 'विसनेस' खळां ॥ ७२१

असुरां थट 'देव' क्रनोत[15] अड़ै ।
लोहड़ां झट 'सूरिजमाल' लड़ै ।
'अणदेस' सुजाव लड़ै उरड़ै ।
जवनां 'सगतेस' छड़ाल जड़ै ॥ ७२२

---

१ ख. मोसर । २ ख. बाहत । ३ ख. बाहत । ४ ख. बप । ५ छोय । ग. छोटीय । ६ ख. बडी । ७ ख. बधि । ८ ख. बाहत । ९ ख. बाहत । १० ख. षाग । ग. सावळ । ११ ख. सतेज । १२ ख. बार । १३ ख. पतो । १४ ख. ग. महक्रंन । १५ ख. क्रनोत ।

---

७१९. **घमसांण** – युद्ध । **पांण** – प्राण, शक्ति । **मौसर** – अवसर । **अजीत** – महाराजा अजीतसिंह ।

७२०. **साबळ** – भाला विशेष । **अडी** – आड़ में, रोक में । **वेसज** – आयु । **करनोत** – राठौड़ वंशकी एक शाखा । **अभावत** – अभयसिंह करनोतका पुत्र । **क्रनं** – करणसिंह करणोत । **चोळ** – लाल । **व्रनं** – वर्ण, रंग ।

७२१. **पतौ** – प्रतापसिंह । **महक्रन्न** – महकरणसिंह । **तेज** – तेजसिंह । **करण** – करणसिंह । **विसनेस** – विसनसिंह ।

७२२. **देव** – देवीसिंह । **क्रनोत** – करणोत शाखा के राठौड़ । **लोहड़ां** – शस्त्रों । **झट** – प्रहार । **अणदेस** – आनंदसिंह । **सगतेस** – शक्तिसिंह । **छड़ाळ** – भाला । **जड़ै** – प्रहार करता है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हथियां[1] खग वाहत[2] रिख[3] हसै ।
बळि[4] क्रन्न तणौ 'सुरतौ'[5] बहसै[6] ।
झाटकै खळ पौरस व्रंद[7] झलौ ।
दुजड़ां 'मुकँदावत' सूर 'दलौ' ॥ ७२३

मगरूर[8] जुटै खग आघमणौ ।
तद[9] 'जीवण' जोगियदास[10] तणौ ।
वधि[11] 'नाहर ऊत' खळां विहरै[12]
करिमाळ 'पतौ' घमचाळ[13] करै ॥ ७२४

जुध 'माहव' संभ्रम पाथ जिसौ ।
'अनपाल'[14] करै रिणताळ इसौ ।
मछरीक 'मधावत'[15] 'पेम' मँडै[16] ।
खग[17] झाट खळां थट घाट खँडै ॥ ७२५

'चतुरेस' 'पतावत'[18] खेत चढै[19] ।
विमरीर खळां खग झाट विढै[20] ।

---

१ ख. हथीयां । २ ख. बाहत । ३ रिख्ख । ४ ख. बलिक्रंन । ग. वलिक्रन । ५ ग. सुरतो । ६ ग. वहसै । ७ ख. ग. वृंद । ८ ग. मिगरूर । ९ ख. तदि । १० ख. ग. जोगीयदास । ११ ख. बधि । १२ ख. बिहरै । १३ ख. घण । १४ अनिपाल । १५ ख. बघावत । ग. वधावत । १६ ख. मडै । ग. मंडे । १७ ग. षळ । १८ ख. फतावत । १९ ख. चढ़े । २० ख. बिढ़े ।

---

७२३. **रिख** – नारद ऋषि । **क्रन्न तणौ** – करणोत शाखाका राठौड़ । **सुरतौ** – सूरतसिंह । **बहसै** – जोशमें होता है । **झाटकै** – प्रहार करता है । **व्रंद झलौ** – विरुदको धारण करने वाला । **दुजड़ां** – तलवारों । **मुकँदावत** – मुकुन्दसिंहका पुत्र । **दलौ** – दलसिंह ।

७२४. **मगरूर** – गर्व पूर्ण । **आघमणौ** – जोशपूर्ण, जोशीला । **जीवण** – जीवनसिंह । **नाहर-ऊत** – नाहरसिंहका पुत्र । **विहरै** – संहार करता है । **करिमाळ** – तलवार । **पतौ** – प्रतापसिंह । **घमचाळ** – युद्ध ।

७२५. **माहव** – माधोसिंह । **संभ्रम** – पुत्र । **पाथ** – पार्थ, अर्जुन । **रिणताळ** – युद्ध । **मछ-रीक** – चौहान । **मधावत** – माधोसिंहका पुत्र । **पेम** – प्रेमसिंह ।

७२६. **चतुरेस** – चतुरसिंह । **पतावत** – प्रतापसिंहका पुत्र । **खेत** – युद्धस्थल । **विमरीर** – जबरदस्त, भयंकर । **विढै** – काटता है, युद्ध करता है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घण बीजळ[1] वाहि वहाय[2] घणी ।
पड़ियौ[3] रिण मांहि परी परणी ।। ७२६

नरलोक अखै जस कीध नरां ।
सुरलोक वसै[4] धरि देह सुरां ।
रण मेड़तिया[5] खग झाट रमै ।
भिड़जां चव-बंध अहेस भमै ।। ७२७

'सिरदार' समोभ्रम जेण सिरै ।
किलमां जुध सूरजमाल[6] करै ।
जवनां घट सेल विकट्ट[7] जड़ै ।
पट ऊपर[8] स्रोण उछट पड़ै ।। ७२८

सोहिया[9] घट ऊच[10] स्रोण सबै ।
फुट मद्द रँगट्टचौ दह फबै ।
खळ वाह[11] करै सर सेल[12] खगां ।
लोह वाहत[13] लोह छछोह लगां ।। ७२९

सझि बाजद[14] बद्द दळां सबळां ।
खग झाट उडावत सीस खळां ।

---

१ ख. बीजळ । २ ख. बहाय । ३ ख. पडीयौ । ४ ख. बसे । ग. वसे । ५ ख. ग. मेड़तीया । ६ ख. सूरिजमाल । ७ ग. विकट । ८ ख. ऊपट । ९ ख. ग. सोहीया । १० ख. उछट । ग. ऊछ । ११ ख. बाह । १२ ग. सैल । १३ ख. बाहत । १४ ख. बाजह ।

---

७२६. **बीजळ** – तलवार । **पड़ियौ** – वीर गति प्राप्त हुआ । **परी** – अप्सरा । **परणी** – पाणिग्रहण किया ।

७२७. **अखै** – कहता है । **रण** – युद्ध । **भिड़जां** – घोड़ों । **चव-बंध** – चारों तरफ(?) । **अहेस** – शेष नाग (?) ।

७२८. **सिरदार** – सरदारसिंह । **सिरै** – पंक्तिमें, श्रेष्ठ । **किलमां** – यवनों । **पट** – वस्त्र । **स्रोण** – शोणित, खून ।

७२९. **सोहिया** – सुशोभित हुआ । **घट** – शरीर । **ऊच** – श्रेष्ठ । **फुट मद्द** – (?) । **रँगट्टचौ** – रंगका (?) । **दह** – कुण्ड (?) ।

७३०. **बाजद** – घोड़ा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनिराज महेस कहै मोहिया ।
सांमुहै मुख[1] घाव भला सोहिया[2] ।। ७३०

पछटै खग सिलह[3]-पोस पड़ै ।
लोहड़ां इम सूरजमाल[4] लड़ै ।
तदि रोस व्रजागि भुजंग तखौ ।
असुरां खग[5] झाड़त[6] सूर 'अखौ' ।। ७३१

अतळीबळ[7] 'भोज'[8] सुजाव इसौ[9] ।
जमरूप गजां[10] घड़ भीम जिसौ ।
मगरूर खगां झट पूर मझै ।
सुत 'जैत' दमंगळ 'रांम' सझै ।। ७३२

'गिरमेर' तणौ[11] सिवदांन गजां ।
धमचक्क पछट्टत[12] खाग धजां ।
भवसींघ[13] सुतन्न[14] हरींद[15] भिड़ै[16] ।
पछटै खग जांणिक वीज[17] पड़ै ।। ७३३

---

१ ख. मुषि । २ सोहीया । ग. सोहिया । ३ ख. ग. सिल्लह । ४ ख. सूरिजमाल । ५ ख. षगि । ६ ख. झाटत । ७ ख. अतुळीबल । ८ ख. भौज । ९ ख. इसो । १० ख. जजा । ११ ग. तणो । १२ ग. पछटत । १३ ख. ग. भावसिंघ । १४ ख. ग. सुतंन । १५ ख. हरिंद । १६ ख. भडै । १७ ख. बीज ।

---

७३० मुनिराज – नारदमुनि । महेस – महादेव ।

७३१. पछटै – प्रहार करता है । सिलह-पोस – अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित अथवा कवचधारी योद्धा । लोहड़ां – शस्त्रोंसे । व्रजागि – वज्राग्नि, भयंकर । भुजंग तखौ – तक्षक नागके समान । अखौ – अक्षयसिंह ।

७३२. अतळीबळ – अतुल्य बलशाली । भोज – भोजराजसिंह । सुजाव – पुत्र । मझै – मध्यमें । जैत – जैतसिंह । दमंगळ – युद्ध । रांम – रामसिंह । गिरमेर – सुमेरसिंह ।

७३३. धमचक्क – युद्ध । पछट्टत – गिरता है, प्रहार करता है । धजां – भालों । भवसींघ– भाउसिंह । सुतन्न – पुत्र । हरियंद – हरिसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुध खाग झटां घट पींजरियौ[1] ।
हुय[2] खेलत गेहरियौ[3] 'हरियौ'[4] ।
पमँगेस खगां झट तूटि पड़ै[5] ।
चगथां दळ मांझिळ[6] भूमि चडै ॥ ७३४

अंग ऊपर[7] लोह उडै अजरौ ।
'हरियौ'[8] खग वाहत 'चँद' हरौ ।
कदमेस झड़ै रण लोह करै ।
विफरै होकरड़ै[9] डकरै बकरै ॥ ७३५

गहरै[10] 'रँगरेळ'[11] हरै गुमरै ।
भैरवी रतरै जळ पत्र भरै ।
एक[12] हाथ स हाथ अपच्छररै[13] ।
किलमां इक हाथ जु घाव करै ॥ ७३६

कर[14] झाट सिल्है घट दोय करै ।
लोहरै बोहरै[15] छकी 'केल'[16] हरै ।
जुडियौ[17] इम लंगर राव ज्यूंही[18] ।
मगरूर पड़ै रिण खेत मही ॥ ७३७

---

१ ख. ग. पींजरीयौ । २ ख. ग. होय । ३ ख. गेहरीयौ । ४ ख. हरीयौ । ५ ख. ग. पडे । ६ ख. माझिल । ७ ख. ऊपरि । ८ ख. हइयां । ग. हरयो । ९ ख. होकरै । ग. होकरै । १० ख. गहरै । ११ ख. रंगरैल । १२ ख. यक । १३ ख. ग. अपछररै । १४ ख. करि । ग. कारै । १५ ख. ग. बोहरै । १६ ख. ग. कील । १७ ख. जुडीयौ । ग. जुडियो । १८ ख. ग. जहीं ।

---

७३४. **पींजरियौ** – जिस प्रकारसे रूईको धुनकीसे धुन कर छोटे-छोटे रेशे पृथक कर दिए जाते हैं इसी प्रकार योद्धाका शरीर क्षत-विक्षत कर दिया गया। **गेहरियौ** – "गैर" नृत्यमें नाचने वाला। **हरियौ** – हरिसिंह। **पमंगेस** – घोड़ा। **चगथां** – यवनों, मुसलमानों। **मांझिल** – मध्य।

७३५. **अजरौ** – भयंकर। **हरियौ** – हरिसिंह। **चंदहरौ** – चांदावत शाखाका मेड़तिया। **कदमेस** – पैर, चरण। **झड़ै** – कट जाते हैं। **विफरै** – कोप करता है। **होकरड़ै** – तेज जोशीली आवाज करता है। **डकरै** – दहाड़ करता है। **बकरै**–क्रोधपूर्ण होता है।

७३६. **गहरै** – घना। **भैरवी** – रणचंडी। **रतरै** – रक्तका।

७३७. **छकी** – (मस्त ?) **मगरूर** – वीर, गर्वीला। **रिण-खेत** – युद्ध-स्थल।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खित पिंड[1] करै रत हंस खड़ै[2] ।
चढि रंभ रथां सुरलोक चड़ै[3] ।
दुहड़ै[4] जुधि[5] 'साहिब' मेछ दळां ।
खगझाट रमै सुत 'नाथ' खळां ।। ७३८

सुत 'कांन्ह' स्वरूप वणै[6] सिधरै[7] ।
किलमां भड़ 'मोकम'[8] घाव करै ।
तप 'मोहण' जै छक 'पूर' तणौ ।
तड़छै रवदां खगि 'सूर' तणौ ।। ७३९

जवनां दळ दांति चढंत जवां ।
सुत 'रांम' हणै जमरांण सत्रां ।
धड़च्छै[9] खळ[10] मुग्गळ[11] चाड धणी ।
'अणदौ'[12] 'अमरावत' फौज[13] अणी ।। ७४०

सत्र थाट पळां गळ दे समळां ।
खग झाड़त[14] 'ऊदल' थाट खळां ।
कळहै सुत भूप किसूं कहणौ ।
त्रिजड़ां हथ भ्रात 'हरिंद' तणौ ।। ७४

१. क. पीड़ । २ ख. षडे । ३ ख. चडे । ४ ख. दुहुंवै । ग. दुहंडै । ५ ख. जुध । ६ ख. कीयां । ग. वणे । ७ ख. ग. सिद्धरै । ८ ख. ग. मौकम । ९ ख. ग. धडछै । १० ख. षग । ११ ख. मूंगल । ग. मुंगल । १२ ख. अणंदौ । ग. अणदो । १३ ग. फोज । १४ ख. झाटत ।

७३८. **खित** – क्षिति, भूमि । **पिंड करै रत** – अपने रक्तसे भूमि पर पिंड बनाता है और पितरोंका तर्पण करता है । **हंस** – प्राण । **रंभ** – अप्सरा । **साहिब** – साहिबसिंह । **मेछ** – यवन । **नाथ** – नाथूसिंह ।

७३९. **कांन्ह** – कानसिंह । **किलमां** – यवनों । **मोकम** – मोहकमसिंह । **रवदां** – यवनों । **सूर** – सूरसिंह ।

७४०. **दांति चढंत जवां** – जितने ही उसके सम्मुख आ जाते हैं । **रांम** – रामसिंह । **सत्रां** – शत्रुओं । **धड़च्छै** – संहार करता है । **धणी** – धनुष । **अणदौ** – आनंदसिंह । **अमरावत** – अमरसिंहका पुत्र ।

७४१. **पळां** – मांस । **गळ** – मांस-पिंड । **समळां** – मांसाहारी पक्षी, चील । **ऊदल** – उदयसिंह । **थाट** – दल । **त्रिजड़ां** – तलवारों । **हरियंद** – हरिसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घड़छै खळ वीजळ[1] झाट धजां।
'सहसावत' 'रांम' अणी सकजां।
जम रूप 'अनावत' जोर जुटै।
तिणवार खळां खगि सीस तुटै ॥ ७४२

सुत 'ईसर' 'जोर' कियौ[2] सरसौ।
जवनांण हणै खग पांण 'जसौ'।
सुत 'वीठल' जोर झळां[3] सझियै[4]।
दहवाट[5] खळां खग झाट दियै[6] ॥ ७४३

भिड़ लूण[7] उजासत भूप तणौ।
'मनरूप' महाबळ[8] आघमणौ।
घण घायक[9] पौरस[10] तेज घणौ।
हरिनाथ तणौ[11] खगि रौद[12] हणौ[13] ॥ ७४४

रिम थाट हणै कुळव्रंद रखौ।
अतुळीबळ 'जैत' सुजाव 'अखौ।
तड़छै खळ संभव काज तठै।
जुध संभव 'हींदवऊत' जठै ॥ ७४५

---

१ ख. बीजळ। २ ख. ग. कीयां। ३ ख. झलां। ४ ख. सझीयै। ५ ख. दहबाट। ६ ख. दीयै। ७ ख. लूंण। ८ ख. माहाबल। ९ ख. पायक। १० ख. ग. पोरस। ११ ग. तणो। १२ ग. रोद। १३ ख. हणो। ग. घणो।

---

७४२. **वीजळ**– तलवार। **सहसावत** – सहस्रसिंहका पुत्र। **रांम** – रामसिंह। **अनावत** – अनाड़सिंहका पुत्र।

७४३. **ईसर** – ईसरसिंह। **जोर** – शक्ति, बल। **सरसौ** – पूर्ण। **जवनांण** – यवन। **पांण** – प्राण – बल। **जसौ** – जसवंतसिंह। **वीठल** – वीठलदास। **झळां** – आग। **सझियौ**– सज्जिभूत हुआ। **दहवाट** – ध्वंस।

७४४. **उजासत** – उज्ज्वल करता है। **आघमणौ** – जोशीला। **घायक** – संहार करने वाला। **रोद हणौ** – यवनोंका संहार करता है।

७४५. **रिम थाट** – शत्रु-दल। **कुळव्रंद-रखौ** – कुलके विरुदकी रक्षा करने वाला। **अतुळीबळ** – अतुल्य बलशाली। **जैत** – जैतसिंह। **सुजाव** – पुत्र। **अखौ** – अक्षयसिंह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुत कांन्ह खळां छड़ियाळ[1] 'सलौ'[2] ।
'महिरांण' करै जुध आपमलौ[3] ।
दहलै[4] खगि 'ऊदल' रौद दळां[5] ।
सुत 'दौलतसाह'[6] दळां सबळां ।। ७४६

रवदां झट रूक करै रमणौ ।
तिणवार उदैसिंघ 'वैण'[7] तणौ ।
जुधि[8] वाहि[9] वहाई[10] घणां[11] दुजड़े ।
'पदमौ'[12] रतनावत खेत पड़ै[13] ।। ७४७

हर सीस ग्रहै[14] रिखराज हसै[15] ।
वरि[16] रंभ सुरांपुर मांहि बसै[17] ।
ग्रहि खाग झटां जवनेस गरै ।
'किरतेस' तणौ[18] 'पदमेस' करै ।। ७४८

खत्रियां[19] गुर 'लाल' दुझाल खंडै ।
वधि रांमचंदोत[20] खळां विहंडै[21] ।

---

१ ख. ग. छडीयाल । २ ख. सलौ । ३ ख. ग. आपमलौ । ४ ख. दहंडै । ५ ग. हलां । ६ ग. दोलत । ७ ख. बेण । ग. वेण । ८ ख. जुध । ९ ख. बाहि । १० ख. वहाई । ११ ख. घणी । १२ ग. पदमो । १३ ग. पडे । १४ ख. ग ग्रहे । १५ ख. हसे । १६ ख. वरि । १७ ख. बसे । ग. वसे । १८ ग. तणो । १९ ग षत्रीयां । २० ख. रामचंदौत । २१ ख. बिहंडै ।

---

७४६. **कांन्ह** – कानसिंह । **छड़ियाळ** – भाला । **सलौ** – सलहसिंह । **महिरांण** – महरावणसिंह । **आपमलौ** – योद्धा, वीर । **दहलै** – संहार करता है । **खगि** – तलवारसे । **ऊदल** – उदयसिंह । **दौलतसाह** – दौलतसिंह ।

७४७. **रवदां** – यवनों, मुसलमानों । **रूक** – तलवार । **रमणौ** – खेलना या खेलने वाला । **वैण** – वेणीसिंह । **दुजड़े** – तलवारें । **पदमौ** – पद्मसिंह । **रतनावत** – रतनसिंहका पुत्र ।

७४८. **हर** – रुद्र, महादेव । **रिखराज** – नारद मुनि । **जवनेस** – यवन, बादशाह । **गरै** – समूहमें । **किरतेस** – कीर्तिसिंह । **पदमेस** – पद्मसिंह ।

७४९. **लाल** – लालसिंह । **दुझाल** – वीर । **खंडै** – संहार करता है । **विहंडै** – ध्वंस करता है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घण वाहि[1] वहायज[2] लोह[3] घणौ[4] ।
तदि[5] खेत पड़ै[6] 'दलसाह'[7] तणौ ।। ७४६

मधि चार[8] धरै[9] हर हार मही ।
जुध सीस 'पदम्म'[10] पदम्म जही ।
लड़ि एम बरे रंभ व्रद लियौ[11] ।
कमधज्ज[12] सुरांपुर वास[13] कियौ[14] ।। ७५०

'सिलहेत'[15] तणौ[16] पखरैत सुधौ ।
'बखतावत'[17] बाहत[18] खाग 'बुधौ' ।
'मनरूप तणौ'[19] सिवदांन मँडै[20] ।
खग भाट घणा खळ थाट खंडै[21] ।। ७५१

दुजड़ां हथ वाहत पाव दिढै[22] ।
'बखतेस'[23] तणौ 'हिमतेस' विढै[24] ।
धसि[25] 'सूर' तणौ[26] गयंदां विहरै[27] ।
किरमाळ महाबळ[28] घाव करै ।। ७५२

---

१. ख. बाहि । २ बहायज । ३ ख. लौह । ४ ग. घणो । ५ ग. तद । ६ ख. ग. पडे । ७ ग. साहि । ८ ख. बार । ९ ख. ग. धरे । १० ख. पद्दंम पद्दंम । ग. पदम । ११ ख लीयौ । १२ ग. कमधज । १३ ख. बास । १४ ख. कीयौ । ग. कि‍यो । १५ ख. ग. सिलहैत । १६ ख. ग. हूणं । १७ ग. बषातावत । १८ ग. वाहत । १९ ग. तणो । २० ख. मंडे । २१ ख. षंडे । २२ ख. ग. दिढ़ै । २३ ग. बषतेस । २४ ख. बिढ़ै । २५ ख. बधि । २६ ग. तणो । २७ ख. बिहरै । २८ ख. महाबल । ग. महावल ।

---

७४९. दलसाह – दलसिंह ।

७५०. पदम्म – पद्मसिंह । बरे – वरण कर के । रंभ – रंभा, अप्सरा । व्रद – विरुद, कीर्ति ।

७५१. सिलहेत – सिलहसिंह । पखरैत – कवचधारी घोड़ा । सुधौ – सहित । बखतावत – बखतसिंहका पुत्र । बुधौ – बुधसिंह ।

७५२. दुजड़ां हथ – खड्गधारी योद्धा । पाव दिढै – मजबूत पैर रखा हुआ । बखतेस – बखतसिंह । हिमतेस – हिम्मतसिंह । विढै – युद्ध करता है । सूर – सूरसिंह । गयंद – हाथी । विहरै – विदीर्ण करता है, संहार करता है । किरमाळ – तलवार ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हकड़ां मुड़ि झाट त्रंबाट रुड़ै[1] ।
'जयतेस' तणौ 'फतमाल' जुड़ै ।
'गिरमेर' 'दलावत' मेछ गजां ।
पछटै[2] किरमाळ करै पुरजां ॥ ७५३

असुरां 'अचळावत'[3] 'खीम' इसौ ।
तम पूंज[4] सिरै ग्रहराज तिसौ ।
धुर 'जैत' सुजाव अणीधजरौ ।
उण वार[5] 'गुमांन' लड़ै अजरौ ॥ ७५४

'अनपाळ' तणौ[6] छड़ियाल[7] उरां ।
'सिरदार' दुसार करै असुरां ।
तण 'पीथल' 'काबिलसीघ' तठै ।
जवनांण हणै घमसांण जठै ॥ ७५५

दहड़ै खगि मेछ[8] हकां दखतौ ।
बधि 'सांमळ ऊत' लड़ै 'बखतौ' ।
सुत 'जोग' भयांण हणै सबळां ।
खग झाट 'गुमांन' अमांन[9] खळां ॥ ७५६

---

१ ख. रुडं । २ ख. पछटे । ३ ख. अचलाव । ४ ख. पूज । ग. पुज । ५ ख. ग. उणबार । ६ ग. तणो । ७ ख. छडीयाल । ८ ख. ग. मेछि । ९ ख. ग. अभांन ।

---

७५३. **हकड़ां** – तलवारों । **मुडि झाट** – प्रहार हो कर । **त्रंबाट** – नगाड़ा । **रुड़ै** – बजते । **जयतेस** – जगतसिंह । **फतमाल** – फतेहसिंह । **जुड़ै** – भिड़ता है, युद्ध करता है । **गिरमेर** – सुमेरसिंह । **दलावत** – दलसिंहका पुत्र । **पछटै** – प्रहार करता है । **पुरजां** – पुर्जों, खंड ।

७५४. **असुरां** – यवनों । **अचळावत** – अचलसिंहका पुत्र । **खीम** – खीमसिंह । **तम** – अंधेरा । **पूर** – पूर्ण । **ग्रहराज** – सूर्य । **धुर** – अगाड़ी, प्रथम । **जैत**–जैतसिंह । **अणी** – अनीक, सेना । **धजरौ** – ध्वजाका । **गुमांन** – गुमानसिंह । **अजरौ**–जबरदस्त, महान ।

७५५. **छड़ियाल** – भाला । **सिरदार** – सरदारसिंह । **दुसार** – आरपार, भाला । **पीथल** – पृथ्वीसिंह । **जवनांण** – यवन ।

७५६. **दहड़ै** – ध्वंस करता है । **हकां** – आवाज । **दखतौ** – कहता हुआ । **सांमळ ऊत** – श्यामसिंहका पुत्र । **बखतौ** – बखतसिंह । **जोग** – जोगसिंह । **भयांण** – भयंकर रूपसे । **सबळां** – बलवानोंको । **गुमांन** – गुमानसिंह । **अमांन** – अपार, बहुत ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

मिळ 'रांम' हणै खळ खेत महीं ।
जुधि 'देव क्रनोत'[1] कंठीर जहीं ।
कहै गोकळदास सुजाव किसौ[2] ।
जुधि 'जैत'[3] हणूं विरदेत[4] जिसौ ॥ ७५७

पछटै वरसींघ[5] तणौ प्रघळां[6] ।
खग धार अपार 'झुझार'[7] खळां ।
तिण वार 'सिवौ'[8] चलि[9] खाग तणै[10] ।
हरनाथ तणौ[11] खळ साथ हणै ॥ ७५८

झट खाग रमै घट सीस झड़ै ।
'लखधीर' तणौ 'सरदार' लड़ै ।
धज खग्ग खळां दळ ऊधमणौ ।
तिण वार 'जसौ' 'पंचमुख'[12] तणौ ॥ ७५९

चांपावत– इम जूटत मेड़तिया[13] अजरा ।
हद[14] जूटत दारण 'चांप'[15] हरा ।
खळ थाट सिरै खग झाट खिरै ।
'सुरतौ'[16] 'हरियंद' सुजाव सिरै ॥ ७६०

---

१ ख. ग. क्रनौत । २ ख. किसो । ३ ख. दैत । ४ ख. ग. बिरदैत । ५ ख. बरसिंघ । ग. वरसिंघ । ६ ख. प्रथलां । ७ ख. ग. झूझार । ८ ख. ग. सिवो । ९ ख. बलि । १० ग. तणौ । ११ ग. तणो । १२ ख. पंचमुक्ख । १३ ख. ग. मेडतीया । १४ ख. हब । १५ ख. पांच । १६ ग. सुरतो ।

---

७५७. **देव** – देवीसिंह । **क्रनोत** – करणोत शाखाका राठौड़ । **कंठीर** – सिंह । **हणू** – हनुमान । **विरदैत** – यशस्वी ।

७५८. **पछटै** – गिराता है, मारता है । **प्रघळां** – बहुतोंको । **झुझार** – जुझारसिंह । **सिवौ** – शिवदानसिंह ।

७५९. **झड़ै** – कट कर गिरते हैं । **लखधीर** – लखधीरसिंह । **सरदार** – सरदारसिंह । **धज**··· भाला **ऊधमणौ** – ध्वंस करने वाला । **जसौ**–जसवंतसिंह । **पंचमुख** – पंचायणसिंह ।

७६०. **जूटत** – युद्ध करते हैं । **अजरा** – जबरदस्त । **दारण** – जबरदस्त, वीर । **चांप हरा**– चांपाके वंशज, चांपावत शाखाके राठौड़ । **खिरै** – वीर गति प्राप्त होते हैं । **सुरतौ** – सूरतसिंह । **हरियंद** – हरिसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'अचळावत' 'तेज' लड़ै उरड़ै ।
पिसणां[1] खग झाट अगुट[2] पड़ै ।
विहरंत[3] खळां खग[4] कीत वनौ ।
वधियौ[5] रघुनाथ तणौ 'विसनौ[6]' ।। ७६१

घण घाय वरावत[7] हूर घणां ।
'पदमौ'[8] 'अनपाळ' तणौ प्रिसणां[9] ।
वधि[10] फीळ[11] हणंत[12] धणी वनकौ[13] ।
किलमां खग 'रूप' तणौ 'कनकौ' ।। ७६२

तप तेज खगां जिम भांण तणौ ।
जुध जूटत 'दांन' 'सुजांण' तणौ ।
वधि[14] बाहत वीजळ[15] थाट बिचै ।
'हिमतेस' 'सदावत' सूर हिचै ।। ७६३

जुध खाग वहै[16] झळ जोप तणौ ।
उण मौसर[17] 'बाघ'[18] 'अनोप' तणौ ।

---

१ ख. प्रिसुणां । ग. पिसुणा । २ ख. भृगुट्ट । ग. भृगुट । ३ ख. बिहरंत । ४ ख. षगि । ५ ख. बधीयौ । ६ बिसनौ । ७ ख. बरावत । ८ ग. पदमो । ९ ख. प्रिसुणां । ग. प्रिसणा । १० ख. ग. बधि । ११ ख. फीरा । १२ ख. हृणं । १३ ख. घणी वनिकौ । १४ ख. बधि । १५ ख. ग. बीजळ । १६ ख. बहै । १७ ग. मोसर । १८ ग. बाग ।

---

७६१. अचळावत – अचलसिंहका पुत्र । तेज – तेजसिंह । पिसणां – शत्रुओं । अगुट – शिर, मस्तक । विहरंत – संहार करता है । कीत – कीर्ति । वनौ – दूल्हा, पति । वधियौ – आगे बढ़ा । विसनौ – विसनसिंह ।

७६२. वरावत – वरण कराता है । हूर – अप्सरा । पदमौ – पद्मसिंह । प्रिसणां – शत्रुओं । फील – हाथी । हणंत – संहार करता है । धणी वनकौ – सिंह । किलमां – यवनों । रूप – रूपसिंह । कनकौ – कनकसिंह ।

७६३. दांन – दानसिंह । सुजांण – सुजानसिंह । वधि – बढ़ कर । वाहत – प्रहार करता है । हिमतेस – हिम्मतसिंह । सदावत – शार्दूलसिंहका पुत्र । हिचै – युद्ध करता है, संहार करता है ।

७६४. मौसर – अवसर, मौका । बाघ – बाघसिंह । अनोप – अनोपसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खग[१] पूर 'सुजांण' सुजाव खरै[२] ।
करिमाळ बहादर जंग करै ।। ७६४
दळ रौद विभाड़ण[३] 'पीथ' दुश्रौ ।
हिमतौ[४] भड़ मांडणोत[५] हुश्रौ[६] ।
ग्रहि चंद्र प्रहास झटां चुगलां[७] ।
मुकँदावत सूर हणै मुगळां ।। ७६५
थट मेछ[८] करै धर[९] पाथ रणौ ।
त्रिजड़ां 'अनपाळ' 'सगत्त'[१०] तणौ ।
अणियाळ[११] अंत्राळ[१२] खळां उळझै ।
सुत 'कांन्ह' महाजुध 'खीम' सझै ।। ७६६
चँद्रहास करै जुध चूंप[१३] तणौ ।
तिण वार 'जुरावर'[१४] 'कूंप'[१५] तणौ ।
विहँडै[१६] खळ वाघ[१७] जहीं विरतौ[१८] ।
पछटै खग 'नादलऊत' 'पतौ' ।। ७६७

---

१ ख. धष । २ ख. ग. धरं । ३ ख. बिभाडण । ४ ग. हिमतो । ५ ख. ग. मांडण ऊत । ६ ग. हुश्रो । ७ ख. वगुलां ८ ख. मंच । ग. मेच । ९ ख. ग. थर । १० ख. सगति । ग. सगत । ११ ख. ग. अणीयाल । १२ ख. अत्राल । १३ ख. चुप । १४ ख. ग. जोरावर । १५ ख. कूंप । १६ ख. बिहंडै । १७ ख. बाघ । १८ ख. बिरतौ ।

---

७६४. **सुजांण** – सुजानसिंह । **खरै** – वीर-गति प्राप्त हो गया । **करिमाळ** – तलवार । **जंग** – युद्ध ।

७६५. **दळ** – सेना । **रौद** – यवन । **विभाड़ण** – संहार करनेको । **पीथ** – पृथ्वीसिंह । **दुश्रौ** – दूसरा, वंशज । **हिमतौ** – हिम्मतसिंह । **मांडणोत** – राठौड़ वंशकी मांडणोत शाखाका वीर । **चंद्रप्रहास** – तलवार । **चुगलां** – यवनों । **मुकंदावत** – मुकुंदसिंहका पुत्र ।

७६६. **थट** – सेना, दल । **मेछ** – म्लेच्छ, यवन । **धर** – पृथ्वी । **पाथरणौ** – बिछौना । **त्रिजड़ां** – तलवारों । **सगत्त** – शक्तिसिंह । **अणियाळ** – भाला । **अंत्राळ** – आंतें । **कांन्ह** – कानसिंह । **खीम** – खीमसिंह ।

७६७. **चंद्रहास** – तलवार । **चूंप** – यहाँ चांपावत शाखाका वीर अर्थ ठीक बैठता है । **जुरावर** – जोरावरसिंह । **कूंप** – कूंपावत शाखाका राठौड़ वीर । **विरतौ** – भयंकर रूपयुक्त । **नादल-ऊत** – नादलसिंहका पुत्र । **पतौ** – प्रतापसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इण भांत[1] चांपावत सूर अड़ै ।
लोह झाट कूंपावत[2] एम लड़ै ।
जुध 'सांमत-ऊत' सक्रोध जगां ।
खळ पाड़त देवियसींघ[3] खगां ।। ७६८

सुत 'रांम' खत्रीवट कांम सचै ।
रघुनाथ समाथ भराथ रचै ।
सुत 'सांमत' मेछ हणै सबळा[4] ।
कमधज्ज[5] 'जवांन' भयांन कळा ।। ७६९

खग वीजळ[6] मेघ[7] घड़ा खमतौ[8] ।
हद जूटत 'वाघ'[9] तणौ 'हिमतौ' ।
मगरूर हठावत खेत मही ।
जुध भीम गजां घड़ भीम जही । ७७०

तप दीसत सूरज[10] व्रन[11] तणौ ।
तदि 'लाल' लड़ै 'जसक्रन्न'[12] तणौ ।
वप वेस[13] सवाइय[14] सोभ वधै ।
*सूत 'मांन' 'सवाइय'[15] जंग सधै ।। ७७१

१ ख. भांति । २ ख. ग. कूंपावत । ३ ख. ग. देवीयसिंघ । ४ ग. सवलां । ५ ग. कमधज । ६ ख. बीजल । ७ ख. ग. मेछ । ८ ख. ग. खिमतौ । ९ ख. बाघ । १० ख. सूर । ११ ख. व्रजन । १२ ख. ग. जसक्रंन । १३ ख. बपि बेस । १४ ख. सवाईय । १५ ग. सवाईय ।

---

७६८. **चांपावत** – चांपावत शाखाके राठौड़ । **सूर** – वीर । **कूंपावत** – कूंपावत शाखाके राठौड़ । **सांमत-ऊत** – सांवतसिंहका पुत्र ।

७६९. **रांम** – रामसिंह । **खत्रिवट** – क्षत्रीयत्व । **समाथ** – समर्थ । **भराथ** – युद्ध । **सांमत** – सांवतसिंह । **जवांन** – जवानसिंह । **कळा** – प्रकार ।

७७०. **खमतौ** – सहन करता हुआ । **वाघ** – वाघसिंह । **हिमतौ** – हिम्मतसिंह । **मगरूर** – वीर । **हठावत** – हटाता है । **खेत** – युद्धस्थल ।

७७१. **लाल** – लालसिंह । **जसक्रन्न** – जसकरणसिंह । **वप** = वपु – शरीर । **वेस** – आयु, उम्र । **सवाइय** – सवैया । **सोभ** – शोभा, कीर्ति । **मांन** – मानसिंह । **सवाइय** – सवाईसिंह । **सधै** – प्राप्त करता है ।

***चिन्हांकित पंक्तियां 'ख' प्रतिमें नहीं हैं ।**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धज साबळ वाहत मेछ दहै ।*
'खड़गावत' सूर 'गुमांन' खहै ।
इम जूटत[1] 'कूंपहरा' अजरा ।
हद जूटत घायक जोध हरा ।। ७७२

गज-भार 'महेस' तणौ[2] गहणौ ।
तिण वार 'करन' 'भुझार'[3] तणौ ।
रिण झाट किवांण[4] उफांण रत्रां ।
'सुरतांण' करै घमसांण सत्रां ।। ७७३

असुरां खग[5] झाट हणै उरड़ै ।
'जगतेस' तणौ[6] 'दळसाह' जुड़ै ।
त्रिजड़ां खळ झाटत घाट तठै ।
जुधि 'जोध' तणौ सुरतांण जठै ।। ७७४

पछटै[7] खग चाढ़त देव-पुरां ।
सिवदांन तणौ 'पदमौ' असुरां ।
खग वाहत[8] गैण भुजां खगतौ ।
जवनां सिर 'जैत' तणौ[9] 'जगतौ' ।। ७७५

---

१ ग. जुटत । २ ख. तणं । ३ ग. भूझार । ४ ख. किवां । ५ ख. षगि । ६ ख. तणो । ७ ख. पछटे । ८ ख. बाहत । ९ ग. तणो ।

---

७७२. **धज** – तलवार । **साबळ** – भाला विशेष । **दहै** – वीर-गति प्राप्त होते हैं । **खड़गावत** – खड्गसिहका पुत्र । **गुमांन** – गुमानसिंह । **खहै** – युद्ध करता है । **कूंपहरा**– कूंपावत शाखाके राठौड़ । **घायक** – संहार करने वाला । **जोधहरा** – जोधा शाखाके राठौड़ ।

७७३. **गज-भार** – हाथी-समूह । **महेस** – महादेव । **गहणौ** – आभूषण । **करन** – करण-सिंह । **भुझार** – जुझारसिंह । **रिण** – युद्ध । **झाट** – प्रहार । **किवांण** – कृपाण, तलवार । **उफांण** – उबाल । **रत्रां** – रक्त, खून । **सुरतांण** – सुल्तानसिंह । **घमसांण** – संहार । **सत्रां** – शत्रुओं ।

७७४. **असुरांण** – मुसलमान । **जगतेस** – जगतसिंह । **दळसाह** – दलसिंह । **जुड़ै** – भिड़ता है, युद्ध करता है । **त्रिजड़ां** – तलवारों । **झाटत**–प्रहार करता है । **जोध**– जोधसिंह ।

७७५. **पछटै** – प्रहार करता है । **पदमौ** – पद्मसिंह । **गैण** – आकाश । **खगतौ** – स्पर्श करता हुआ । **जैत** – जैतसिंह । **जगतौ** – जगतसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निजड़ां जड़कै जरदैत नभौ ।
अतळीबळ[1] 'नाथ' सुजाव 'अभौ' ।
'महरांण' 'हरी' सुत राड़[2] महीं ।
जुध[3] जूटत पंडव भीम जहीं ॥ ७७६

'करणौ'[4] 'अणदावत' क्रोध कळा ।
त्रिजड़ां खळ थाट करै तंडळा ।
झळळाहत पावक क्रोध झळा ।
खग वाहत[5] भारथसिंघ[6] खळा ॥ ७७७

जुध धावत सूर घणा वजरै ।
कळचाळ[7] 'अनावत' हाक करै ।
'बहबा'[8] हत[9] वीजळ[10] धार[11] वरौ ।
'सरदार'[12] महाबळ 'सांमत' रौ ॥ ७७८

खग झाटक टूक करै खळ है ।
'करणेस' तणौ 'बखतेस'[13] लहै ।
कमधज्ज[14] खळां गजबोह करै ।
'किसनावत' 'ईसर' लोह करै ॥ ७७९

---

१ ख. अतुलीबल । २ ख. राडि । ३ ग. जूध । ४ ख. करनौ । ग. करणो । ५ ख. बाहत । ६ ख. भारथसींघ । ७ ख. ग. कळिचाल । ८ ख. बदौ । ग. बोहो । ९ ख. ग. बाहत । १० ख. बीजल । ११ ख. धारि । १२ ख. ग. सिरदार । १३ ख. ग. बषतौ । १४ ख. कमधज्ज ।

---

७७६. **निजड़ां** – तलवारों । **जड़कै** – प्रहार करता है । **जरदैत** – कवचधारी योद्धा । **नभौ** = (?) नाथ – नाथूसिंह । **अभौ** – अभयसिंह योद्धा । **महरांण** –समुद्रसिंह । **हरि** – हरिसिंह । **राड़** – युद्ध । **जूटत** – संलग्न होता है, लगता है ।

७७७. **करणौ** – करणसिंह । **अणदावत** – आनंदसिंहका पुत्र । **त्रिजड़ां** – तलवारों । **थाट** – दल । **तंडळा**–ध्वंस, संहार । **झळळाहत**–प्रज्वलित होता है । **झळा**–अग्नि, आग ।

७७८. **धावत** – संहार करते हैं । **वजरै** – जोशमें होते हैं । **कळचाळ** – योद्धा, वीर, युद्ध । **अनावत** – अनाड़सिंहका पुत्र । **हाक** – जोशपूर्ण आवाज, दहाड़ । **वरौ** – वरण करने वाला, स्वीकार करने वाला । **सरदार** – सरदारसिंह । **सामंतरौ**–सांवतसिंहका । **करणेस** – करणसिंह । **बखतेस** – बखतसिंह । **गजबोह** – गज-व्यूह, संहार (?) ।

७७९. **किसनावत** – किसनसिंहका पुत्र । **ईसर** – ईसरसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विहँडै खळ[1] झाटक लोह बहां[2] ।
'दळ क्रन्न'[3] 'प्रताप' तणौ दुसहां ।
सुरनाथ[4] केवांण सुरंग करै ।
कळिचाळ सवाइय[5] जंग करै ।। ७८०

भचकै खग दाखत भांण भलौ ।
दळ मेछ हणै 'करणोत'[6] 'दलौ' ।
तड़छै मुहरै[7] गज ढाल तणौ ।
*त्रजड़ां[8] झट 'हिंदवमाल' तणौ ।। ७८१

धर धूजत सीस धरा-धरनौ ।
कळहै 'ग्रनपाळ' तणौ 'करनौ' ।
घमसांण वीरांण[9] रोसांण[10] घणौ ।*
त्रिजड़ां हथ 'धीरज' 'लाल' तणौ ।। ७८२

खग वाहत[11] हेक जिसा[12] खग सौ ।
बहसै[13] जुध 'दूद' तणौ 'बगसौ' ।

---

१ ख. ग. षग । २ ख. हबहां । ३ ख. ग. क्रंन । ४ ख. सुतनाथ । ५ ख. सवाईय ।
६ ख. करणोत । ७ ख. मोहौरो । ग. मोहौरो । ८ ग. त्रिजड़ां । ९ ग. विरांण ।
*चिन्हांकित पंक्तियाँ 'ख' प्रतिमें नहीं हैं ।
१० ग. रौसांण । ११ ख. बाहत । १२ ख. जिसो । १३ ख. वहसै ।

---

७८०. **दळक्रन्न** – दलकरणसिंह । **प्रताप** – प्रतापसिंह । **दुसहां** – शत्रुग्रों । **सुरनाथ** – इन्द्रसिंह । **केवांण** – तलवार । **सुरंग** – लाल । **सवाइय** – सवाईसिंह ।

७८१. **भचकै** – प्रहार करता है । **दाखत** – कहता है । **भांण** – सूर्य । **भलौ** – उत्तम, बढिया । **दळ मेछ** – यवन सेना । **करणोत** – राठौड़ वंशकी शाखा विशेषका वीर । **दलौ** – दलसिंह । **तड़छै** – काटता है । **मुहरै** – ग्रगाड़ी । **त्रजड़ां** – तलवारों । **झट** – प्रहार । **हिंदवमल** – हिंदूसिंह ।

७८२. **धरा धरनौ** – शेषनागका । **कळहै** – युद्ध करता है । **करनौ** – करणसिंह । **घमसांण** – युद्ध । **वीरांण** – वीरतापूर्ण, शौर्यपूर्ण । **रोसांण** – क्रोध, जोश । **त्रजड़ां-हथ** – खड्गधारी योद्धा । **लाल** – लालसिंह । **धीरज** – धीरजसिंह । **लाल** – लालसिंह ।

७८३. **वाहत** – प्रहार करता है । **बहसै** – जोशपूर्ण होता है । **दूद** – राव दूदाका वंशज, मेड़तिया राठौड़ । **बगसौ** – बख्शीसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्र खाग हणै जम हूं सरसौ ।
'नरसींघ'[1] 'फतावत' 'नाहर' सौ ।। ७८३

जुध मेछ चढांत[2] धकै जमरौ[3] ।
कळि 'सोढ' तणौ भड़ 'सेर' करौ ।
शेखावत– वधि[4] हेक शेखावत फौज वनौ ।
धड़छै खळ 'नधलवूत'[5] 'धनौ' ।। ७८४

तुरकांण हणै खग 'जोर' तणौ ।
तदि जूटत 'रांम' 'किसोर' तणौ ।
जुड़ि 'सोढ' समोभ्रम थाट जड़ां ।
विहँडै[6] खगि संभव सूर वडां ।। ७८५

वढि[7] वाहत[8] खाग झळा वरणौ ।
तदि[9] झूझ[10] लड़ै 'चँद्रभांण' तणौ ।
सुत झूंझ छकां उजळां[11] सबळां ।
खग बाहत 'लाल' दुझाल खळां ।। ७८६
सुझ 'ग्यांन' दलावत तेण समै ।
रिम थाटहुंता खग झाट रमै ।

---

१ ख. ग. नरसिंघ। २ ख. चढ़ंत। ३ ख. ग. जमरै। ४ ख. बधि। ५ ख. नब्बल। ग. नव्वल। ६ ख. बिहंडै। ७ ख. ग. वधि। ८ ख. बाहत। ९ ख. तवि। १० क. ग. भूल। ११ ख. ग. उझलां।

---

७८३ **जमहूं सरसौ** – यमराजके समान भयंकर रूप धारण करने वाला। **नरसिंघ** – नृसिंहावतार। **फतावत** – फतहसिंहका पुत्र।

७८४. **वनौ** – दुल्हा, पति। **धड़छै** – संहार करता है। **नघळवूत** – नंदलालसिंहका पुत्र। **धनौ** – धनसिंह।

७८५. **तुरकांण** – यवन, मुसलमान। **रांम** – रामसिंह। **किसोर** – किशोरसिंह। **जडां** – घने। **विहँडै** – संहार करता है। **संभव** – (?)

७८६. **झळा** – अग्नि। **वरणौ** – वर्णका, रंगका। **झूंझ** – जुझारसिंह। **लाल** – लालसिंह **दुझाल** – वीर।

७८७. **ग्यांन** – ज्ञानसिंह। **दलावत** – दलसिंहका पुत्र। **रिम** – शत्रु। **थाटहुंता** – दलसे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झटकै खग सीस उड़ै झिलमां[1] ।
'रतनावत' 'रूप' वढंत[2] रिमां ॥ ७८७

ग्रह्[3] साबळ सीस उडै गजरौ ।
'अणदावत' सूर 'अभौ'[4] अजरौ ।
सुत 'पीथल' 'माहव' तेण समै ।
रण खाग उनागज फाग रमै ॥ ७८८

पछटै खग मूगळ सीस पड़ै ।
'लखधीर' 'सुजांण' सुजाव लड़ै ।
तदि थाट हणै मुगळांण तणौ[5] ।
त्रिजड़ां हथ 'भोम' 'सुजांण' तणौ ॥ ७८९

सुत सूरजमाल संग्रांम करै ।
किलमां खग[6] तंडळ 'रांम' करै ।
सुत सूर पराक्रम क्रोध सचै ।
रिणढांण[7] खगां 'सुद्रसेण' 'रचै' ॥ ७९०

जुध 'दूजण'[8] 'बाघ' कराळ जसौ ।
जवनां खग बाहत काळ जसौ ।

---

१ ख. झिमलां । २ ख. बाढंत । ३ ख. ग्रहि । ग. ग्रहा । ४ ग. अभो । ५ ख. ग. मुगलांणतणो । ६ ख. ग. षगि । ७ ख. रिणटांण । ८ ख. ग. दुजण ।

---

७८७. **झिलमां** – युद्धके समय शिर पर धारण करनेके टोपों । **रतनावत** – रतनसिंहका पुत्र । **रूप** – रूपसिंह । **रिमां** – शत्रुओं । **गजरौ** – हाथीका ।

७८८. **अणदावत** – आनंदसिंहका पुत्र । **अभौ** – अभयसिंह । **अजरौ** – जबरदस्त । **पीथल** – पृथ्वीसिंह या पृथ्वीराज । **माहव** – माधोसिंह ।

७८९. **लखधीर** – लखधीरसिंह । **सुजांण** – सुजानसिंह । **त्रिजड़ां हथ** – खड्गधारी योद्धा । **भोम** – भोमसिंह ।

७९०. **किलमां** – यवनों, मुसलमानों । **तंडळ** – ध्वंस । **रांम** – रामसिंह । **रिणढांण** – युद्धस्थल । **सुद्रसेण** – सुदर्शन चक्र ।

७९१. **दूजण** – शत्रु । **बाघ** – बाघसिंह । **कराळ** – भयंकर ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रिण रूप[1] कियां बनराव तणौ
तद[2] 'जैत' लड़ै भड़ 'भाउ'[3] तणौ ॥ ७६१

हुय[4] घायक जांणि मजेज हिचै ।
हरिनाथ तणौ इम 'तेज' हिचै ।
सुत 'भाउ'[5] सिवौ[6] उणवार[7] इसौ ।
जुडि भारथ पारथ पिंड[8] जिसौ ॥ ७६२

रिम[9] खाग हणै खगि झेलि रतौ ।
पड़ियौ रिण 'राजड़ऊत' 'पतौ' ।
वरि[10] रंभ रथां चढि नेह वधै[11] ।
सुर लोक आवास[12] निवास सधै[13] ॥ ७६३

रिम[14] थाट सु झाट खगां रण मे[15] ।
रायसींघ[16] तणौ[17] सिवसिंघ रमै ।
वधियौ[18] चित धार[19] परि[20] वरणौ ।
कळ है हरिनाथ तणौ 'करणौ' ॥ ७६४

वढ[21] झाट खगां खळ थाट वहै ।
सर साबळ खाग अथाह[22] सहै ।

---

१ ख. ग. कीयां । २ ख. तदि । ३ ग. भाऊ । ४ ख. ग. होय । ५ ख. ग. भाऊ । ६ ख. ग. सिवो । ७ ख. उणबार । ८ ख. पंड । ९ ग. रिमा । १० ख. बरि । ११ ख. बधे । १२ ख. अवास । १३ ख. सधे । १४ ख. रिमं । १५ ख. ग. मैं । १६ ख. ग. रार्यासघ । १७ ग. तणो । १८ ख. बधीयौ । ग. वधियो । १९ ख. धारि । २० ख. ग. परी । २१ ख. बढ़ । २२ ख. अथाग ।

---

७६१. बनराव – सिंह । जैत – जैतसिंह । भाउ – भाऊसिंह ।

७६२. मजेज – शीघ्र । हिचै – युद्ध करता है । तेज – तेजसिंह । सिवौ – शिवसिंह । भारथ – भारत, युद्ध । पारथ = पार्थ – अर्जुन ।

७६३. रतौ – रक्त, लीन । राजड़ऊत – राजसिंहका पुत्र । पतौ – प्रतापसिंह । सधै – प्राप्त किया ।

७६४. परि – अप्सरा । वरणौ – वरण करना । करणौ – करणसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पड़ियौ[1] रण खेत परि[2] परणे ।
वधि खेड़ रथां सुर देह वणे[3] ।। ७६५

हुब[4] क्रोध लड़ै जम[5] क्रोधहरा[6] ।
उदावत– इण[7] आगळि[8] 'ऊदह' रा[9] 'अजरा' ।
खग झाट करै खळ सीस खिरै ।
सुभरांम समोभ्रम 'चैन' सिरै ।। ७६६

पाड़तां[10] पहुँतौ[11] जवनां प्रचँडां ।
झिलमां सहितां सिर खास झँडां[12] ।
कळिचाळि[13] इसी विध[14] जंग कियँ[15] ।
लुह[16] झेल[17] सुभावत[18] व्रँद[19] लियँ[20] ।। ७६७

अछटै[21] रिम खाग चखां[22] अरणौ ।
तिण मौसर 'ऊद' 'प्रताप' तणौ ।
थट कासिम[23] मोड़[24] विलंद[25] थटां ।
विहँडै[26] गिरमेर तणौ विकटां[27] ।। ७६८

---

१ ख. पडीयौ । २ ख. ग. परी । ३ ख. बणे । ४ ग. हुब । ५ ख. यम । ६ ख. योधहरा । ७ ख. इणि । ८ ख. आगल । ९ ग. उद । १० ख. पाडतौ । ११ ख. ग. पहुँतो । १२ ख. झडां । १३ ख. कलचाल । ग. कलिचाळ । १४ ख. बिधि । ग. विधि । १५ ख. कीयँ । १६ ख. ग. लोह । १७ ख. झोलि । १८ ख. सभावत । १९ ख. ग. वृद । २० ख. लीयँ । २१ ख. पाछटै । २२ ख. चषौ । २३ ख. ग. कासीय । २४ ख. मौड । २५ ख. बिलंद । २६ ख. बिहुंडै । २७ ख. बिकटां ।

---

७६५. **पड़ियौ** – वीरगति प्राप्त हुआ । **परणे** – पाणिग्रहण कर के ।

७६६. **हुब** – जोशमें हो कर, आवेशमें हो कर । **आगळि** – अगाड़ी । **खिरै** – गिरते हैं । **चैन** – चैनसिंह ।

७६७. **पहुंतौ** – पहुंच गया । **झिलमां** – युद्धके समय सिर पर धारण करनेके टोपों । **सुभावत** – शुभरामका पुत्र । **व्रद** – विरुद, यश ।

७६८. **अछटै** – प्रहार करता है । **रिम** – शत्रु । **चखां-अरणौ** – लाल नेत्र । **मौसर** – समय । **ऊद** – उदयसिंह । **प्रताप** – प्रतापसिंह । **थट······बिलंद** – सर-बुलंद । **गिरमेर** – सुमेरसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तदि वाहत[1] खाग झुलाल तनां[2] ।
'किरतेस' समोभ्रम 'खीमक्रनां'[3] ।
जवनांण विचांण[4] पड़ै जुधरै ।
करणोत[5] 'मधौ' वधि[6] लोह करै ॥ ७९९

सबळावत[7] 'सांगण' घाव सझै ।
मुगलांळ पड़ै घमचाळ मझै ।
छक वाहत[8] खाग पतंग छुटै ।
जवनां 'अजबावत' जोर जुटै[9] ॥ ८००

कळहै 'पदमौ' खग बोळ[10] कियै[11] ।
दुसहांण 'दलावत'[12] झाट दियै[13] ।
गहतंत 'अजावत' गेहरियौ[14] ।
करमाळ[15] वजावत[16] 'केहरियौ'[17] ॥ ८०१

विधि[18] वैर[19] हरां अजरां विरतौ[20] ।
हुचकै खग 'रांम' तणौ 'हिमतौ' ।

---

१ ख. बाहत । २ ख. ग. तनं । ३ ख. षीमक्रन । ४ ख. बिचांण । ५ ख. करणौत । ६ ख. बधि । ७ ख. सबलात । ८ ख. बाहत । ९ ग. जुट्टै । १० ख. ग. चोल । ११ ख. कीयै । १२ ख. दलाव । १३ ख. दीयै । १४ ख. गेहरीयौ । १५ ख. करिमाल । १६ ख. बजावत । १७ ख. ग. केहरीयौ । १८ ख. बधि । १९ ख. बैर । २० ख. बिरतौ ।

---

७९९. **झुलाल तनां** – कवचधारी योद्धा । **किरतेस** – कीर्तिसिंह । **खीमक्रनां** – खीमकरणसिंह । **जवनांण** – यवन । **विचांण** – मध्य, बीच । **करणोत मधौ** – माधोसिंह करणोत शाखाका राठौड़ वीर ।

८००. **सबळावत** – सबलसिंहका पुत्र । **सांगण** – संग्रामसिंह । **घमचाळ** – युद्ध । **मझै** – मध्यमें । **छक** – जोश, तेजी । **पतंग** – फँवारा । **अजबावत** – अजबसिंहका पुत्र ।

८०१. **पदमौ** – पद्मसिंह । **खग बोळ किए** – तलवार रक्तरंजित किए हुए । **दुसहांण** – शत्रु । **दलावत** – दलसिंहका पुत्र । **झाट** – प्रहार । **गहतंत** – मस्त, रणोन्मत्त । **गेहरियौ** – होलिका पर 'गैर' नृत्य करने वाला । **करमाळ** = करवाल – तलवार । **वजावत** – प्रहार करता है, ध्वनित करता है । **केहरियौ** – केसरीसिंह ।

८०२. **वैर हरां** – शत्रुओं । **अजरां** – जबरदस्त योद्धाओं । **विरतौ** – भयंकर रूपसे, भयावह रूपसे । **हुचकै** – युद्ध करता है, प्रहार करता है । **रांम** – रामसिंह । **हिमतौ** – हिम्मतसिंह ।

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

'नवलौ'[1] 'हिरदेस' तणौ निजड़ां ।
भभराळ बरंग[2] करंत भड़ां ॥ ८०२

घडछै खळ खाग गजां धखतौ ।
विरतौ[3] 'सदमाल' तणौ 'बखतौ'[4] ।
बहसै[5] 'नवलावत' धार वरै ।
किलमां 'सिरदार' संघार करै ॥ ८०३

छक 'ऊदल' छोह छछोह छळां ।
खग झाट 'कलावत'[6] देत खळां ।
दुसहां खगहूंत वहै[7] दळतौ ।
किसनावत 'ऊदल' कावळतौ ॥ ८०४

अडिगांण लड़ै खगपांण इसौ ।
जुध 'पाहड़'[8] पाहड़ मेर जिसौ ।
करमसिहोत– छक छोह चखां झळ क्रोध छटै[9] ।
जमरांण करम्मसियोत[10] जुटै ॥ ८०५

---

१ ख. नवलो । २ ग. वरंग । ३ ख. बिरतौ । ग. विरतौ । ४ ग. बषतौ । ५ ग. बहसै । ६ ख. तलावत । ७ ख. बहै । ८ ख. पाहाड पाहाड । ९ ख. ग. छुटै । १० ख. ग. करमसीयोत ।

---

८०२. **नवलौ** – नवलसिंह । **हिरदेस** – हृदयसिंह । **निजड़ां** – तलवारों । **भभराळ** – बड़े-बड़े तथा बहुत चौड़े घाव । **बरंग** – खंड, टूक ।

८०३. **धखतौ** – प्रज्वलित होता हुआ । **सदमाल** – शार्दूलसिंह । **बखतौ** – बखतसिंह । **बहसै** – जोशमें आता है । **नवलावत** – नवलसिंहका पुत्र । **सरदार** – सरदारसिंह । **संघार** – संहार, ध्वंस ।

८०४. **ऊदल** – उदयसिंह । **छोह** – कोप । **छळां** – युद्धोंमें । **कलावत** – कल्याणसिंह । **दुसहां** – शत्रुओं । **दळतौ** – ध्वंस करता हुआ । **किसनावत** – किसनसिंहका पुत्र । **ऊदल** – उदयसिंह । **कावळतौ** – विरुद्ध कार्य करता हुआ, (संहार करता हुआ) ।

८०५. **अडिगांज** – अडिग रहने वाला । **खगपांण** – तलवारके बल से । **पाहड़** – पहाड़सिंह । **पाहड़ मेर** – सुमेरु पर्वत । **झळ** – आगकी लपट । **जमरांण** – यमराजके समान । **करम्मसियोत** – करमसिहोत शाखाका राठौड़ वीर ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोह वाहत[1] गैण भुजाळ[2] लगतौ[3] ।
'जवना' 'लख धीर' तणौ 'जगतौ' ।
पछटै खग पौरस पाथ तणौ ।
तिण वार[4] 'सिंभू' हर नाथ तणौ ।। ८०६

झळ क्रोध 'लखावत' क्रोध झळां ।
सबळां[5] चमराळ हणै सबळां ।
भिड़[6] काज सुधारत भूप तणौ ।
तदि 'जोध' लड़ै 'जगरूप' तणौ ।। ८०७

'मुकंदावत' पौरस[7] छाक मतौ ।
जवनां खग झाट करै 'जगतौ' ।
तदी[8] 'भूप' ध्रवै वज्र[9] मीर तही ।
जुध 'मेघ' समोभ्रम मेघ जही ।। ८०८

सुत 'जैत' अथाह लड़ै सबळां ।
खग वाह[10] करै 'सुभसाह' खळां ।
*धज सोभ विहारियदास[11] धजां ।
गहतंत हणै असवार गजां ।।* ८०९

---

१ ख. बाहत । २ ख. भुजां । ३ ख. लषतौ । ४ ख. बार । ५ ख. सबलौ । ग. सबलो । ६ ख. भिडि । ७ ग. पोरस । ८ ख. तदि । ९ ख. बज्र । १० ख. बाह । ११ ग. विहारीयदास ।

*चिन्हांकित पंक्तियां 'ख' प्रतिमें नहीं हैं ।

---

८०६. **लोह** – तलवार, शस्त्र । **गैण** – आकाश । **भुजाळ** – भुजाएँ, वीर । **लगतौ** = निरंतर, लगातार । **लखधीर** – लखधीरसिंह । **जगतौ** – जगतसिंह । **पछटै** – प्रहार करता है । **पाथ** = पार्थ – अर्जुन । **शिंभु** – शंभुसिंह ।

८०७. **झळ क्रोध** – क्रोधाग्नि । **लखावत** – लखधीरका पुत्र । **चमराळ** – मुसलमान । **जोध** – जोधसिंह । **जगरूप** – जगरूपसिंह ।

८०८. **मुकंदावत** – मुकुंदसिंहका पुत्र । **जगतौ** – जगतसिंह । **भूप** – भूपतसिंह । **ध्रवै** – प्रहार करता है, मारता है । **मीर** – यवन, यवन सरदार । **मेघ** – मेघसिंह । **समोभ्रम** – पुत्र । **मेघ** – इन्द्र ।

८०९. **जैत** – जैतसिंह । **अथाह** – अपार । **सुभसाह** – शुभरामसिंह । **धज** – ध्वजा । **सोभ** – शोभा, कीर्ति । **गहतंत** – रणोन्मत्त ।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

इण भांत[1] करम्मसियोत[2] लड़ै[3] ।
लख धूहड़ ऊहड़ एम लड़ै ।
तन पौरस तेज दुभाल तणौ ।
मगरूर करै जुध 'माल' तणौ ॥ ८१०

भड़ 'माहव' 'सुंदरऊत'[4] भड़ां ।
धज सेल जड़ै जरदैत धड़ां ।
लड़ि[5] लोह 'हरिंद' सुजाव 'लखौ' ।
पिसणांण[6] करै घड़ सीस पखौ ॥ ८११

असुरां दळ खागि हणै अपलौ ।
दुति दारण[7] 'सुंदरऊत'[8] 'दलौ' ।
मंडि खेलत खाग झटां 'मंडळौ' ।
सुत 'भारहमाल' 'अभौ' सबळौ[9] ॥ ८१२

हुब वोजळ[10] जूटत 'रूपहरा' ।
धड़छै[11] खळ राळत गंज धरा ।

---

१ ख. भांति । २ ख. करमसीयौत । ग. करमसीयोत । ३ ख. अडै । ४ ख. ऊन । ५ ख. लड । ६ ख. प्रिसणणा । ७ ख. दारुण ८. ख. सूंदर । ग. सूंदर । ९ ग. सुबलौ । १० ख. बोजल । ११ ग. धड़चे ।

---

८१०. धूहड़ – राव धूहड़के वंशज, राठौड़ । ऊहड़ – राठौड़ वंशकी ऊहड़ शाखाका वीर । दुभाल – वीर । मगरूर – वीर । माल – मालदेव ।

८११. माहव – माधोसिंह । सुंदरऊत – सुंदरसिंहका पुत्र । धज – तलवार । सेल – भाला । जरदैत – कवचधारी योद्धा । धड़ां – शरीर । हरिंद – हरिसिंह । सुजाव – पुत्र । लखौ – लक्ष्मणसिंह । पिसणांण – शत्रु । घड़ – सेना । सीस – ऊपर । पखौ – प्रहार (?) ।

८१२. असुरां – यवनों, मुसलमानों । अपलौ – स्वतंत्रतापूर्वक, मुक्तहस्त । सुंदरऊत – सुंदरसिंहका पुत्र । दलौ – दलसिंह । मंडळौ – राठौड़ वंशकी मंडला शाखाका वीर । भारहमाल – भारमल । अभौ – अभयसिंह । सबळौ – बलवान ।

८१३. वोजळ – तलवार । रूपहरा – रूपसिंहका वंशज अर्थात् रूपावत शाखाका राठौड़ । धड़छै – काटता है । राळत – गिराता है, डालता है । गंज – समूह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुध 'केहर' 'ऊद' तणौ[1] जुड़ियौ[2] ।
'अणदौ' दुरगावत आहुड़ियौ[3] ।। ८१३
पिंड पूर 'पतावत' सूरपणौ ।
तदि 'पेम' जुड़ै भड़ 'मेघ' तणौ ।
रायपाळ कळोध खगां रणदौ ।
उरड़ै 'वनराज'[4] तणौ 'अणदौ' ।। ८१४
चौहान – फवजां[5] धज खांन अणी फबियौ[6] ।
पिसणांण[7] हणै[8] जुध पूरबियौ[9] ।
'कुसळावत' 'रूप' वणास[10] कढै[11] ।
चगथां विहंडै[12] रण रूप चढै[13] ।। ८१५
मसतांन[14] गयंद जहीज[15] मुड़ै ।
जिण वार जसावतसिंह[16] जुड़ै ।
कहसै[17] खग घाट खड़ै[18] वाहकौ[19] ।
मगरूर 'चवांण'[20] लड़ै 'मुहकौ'[21] ।। ८१६

---

१ ख. आहुडीयौ । २ ख. बनराज । ३ ख. फबजां । ४ ख. ग. फबीयौ । ५ ख. प्रिसुणांण । ग. पिसुणांण । ६ ख. हणे । ७ ख. पूरबीयो । ग. पूरबीयौ । ८ ख. बणास । ९ ख. कढ़ै । १० ख. बिहंडै । ११ ख. चढ़े । १२ ख. मसतांण । १३ ख. हिज । १४ ख. ग. सीह । १५ ख. बहसे । १६ ग. वहसे । १७ ख. षडे । १८ ख. बौहकौ । १९ ख. चव्हांण । २० ग. मोहकौ ।

---

८१३. **केहर** – केसरीसिंह । **ऊद** – उदयसिंह । **अणदौ** – आनंदसिंह । **दुरगावत** – दुर्गसिंहका पुत्र । **आहुड़ियौ** – युद्ध किया, भिड़ा ।

८१४. **पतावत** – पातावत शाखाका राठौड़ । **सूरपणौ** – शौर्य, वीरता । **पेम** – प्रेमसिंह । **मेघ** – मेघसिंह । **रायपाल** – राठौड़ वंशकी रायपाल शाखाका वीर । **कळोध** – वंशज । **रणदौ** – (?) **उरड़ै** – जोशपूर्वक धसता है । **वनराज** – वनराज सिंह । **अणदौ** – आनंदसिंह ।

८१५. **फवजां** – फौजों । **खांन** – यवन । **अणी** – अनीक, सेना । **फबियौ** – शोभित हुआ, भिड़ा । **पिसणांण** – शत्रु । **पूरबियौ** – पूर्विया शाखाका चौहान । **कुसळावत** – कुशलसिंहका पुत्र । **रूप** – रूपसिंह । **बणास** – तलवार । **चगथां** – यवनों, मुगलों । **विहंडै** – संहार करता है ।

८१६. **मसतांन** – मस्त, उन्मत्त । **गयंद** – हाथी । **जसावतसिंह** – जसवन्तसिंह । **वाहकौ** – घोड़ेको । **मगरूर** – वीर । **चवांण** – चौहान । **मुहकौ** – मोहकमसिंह ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

गज ढाल दुझाल अमीर गरै ।
कवरां गुर 'लाल' सुजाव करै ।
महुऔ[1] सुत 'लाल' करै उमंगां ।
खुरसांण हणै जमरांण खगां ।। ८१७

तुरकां खग घाव अजंबा[2] तणौ ।
तदि 'राजड़' दंत 'अजब्ब' तणौ ।
जवनां घण लोह करंत जठै ।
तण 'लाल' लड़ै इंद्रसींघ तठै ।। ८१८

धुबि 'धीर'[3] 'दलावत' सार धजां ।
गज भार करै सरदार[4] 'गजां' ।
लड़ि 'रांम' समोभ्रम कीत[5] लियौ[6] ।
दुजड़ां झड़ ओझड़ 'तेज' दियै[7] ।। ८१९

हुबि खाग अथाग हणतई[8] ।
तण 'रूप' 'भवानियदास'[9] तई[10] ।
वधि[11] खाग सवाइय'[12] गैबहणौ ।
तदि वाहत[13] सूर 'हरींद'[14] तणौ ।। ८२०

---

१ ख. माहुओ । ग. माहुओ । २ ख. अजब्ब । ग. अजब्व । ३ ख. ग. धार । ४ ख. ग. सिरवार । ५ ख. कीति । ६ ख. ग. लीयै । ७ ख. ग. दीयै । ८ ख. हणंत हुई । ९ ख. ग. भवांनीयदास । १० ग. तइ । ११ ग. वधि । १२ सवाईय । १३ ख. बाहुत । १४ ख. ग हुरिंद ।

---

८१७. **गज ढाल** – युद्धके समय हाथीके मस्तक पर धारण कराया जाने वाला उपकरण विशेष । **गरै** – ढेर लगाता है । **लाल** – लालसिंह । **महुऔ** – माधोसिंह । **लाल** – लालसिंह । **उमंगां** – जोश । **खुरसांण** – यवन, मुसलमान । **जमरांण** – वीर (?)

८१८. **अजंबा** - अजबसिंह । **राजड़** – राजसिंह । **अजब्ब** – अजबसिंह । **तण** – तनय, पुत्र । **लाल** – लालसिंह ।

८१९. **धुबि** – जोशमें आ कर । **धीर** – धीरसिंह । **दलावत** – दळसिंहका पुत्र । **सार** – प्रहार । **सरदार** – सरदारसिंह । **रांम** – रामसिंह । **दुजड़ां** – तलवारों । **झड़** – लवार । **ओझड़** – भयंकर रूपसे । **तेज** – तेजसिंह ।

८२०. **तण** – तनय, पुत्र । **रूप** – रूपसिंह । **भवांनियदास** – भवानीदास । **सवाइय** – सवाईसिंह । **गैबहणौ** – गुप्त रूपसे, अकस्मात । **सूर** – सूरसिंह । **हरींद** – हरिसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुगळां दळ खाग हणै 'अमलौ' ।
सुत सांमळदास लड़ै 'कुसळौ' ।
पछटै खग 'मंछ' पतंग पड़ै ।
इम 'ईसर' 'तेजल' ऊत अड़ै ॥ ८२१

धख हींदवसींघ[1] सुजाव[2] धरै ।
करिमाळ बहादर राड़ि करै ।
रिण एम चुवांण[3] निसांण रुड़ै ।
जिण आगळ[4] जादव वंस जुड़ै ॥ ८२२

जादववंस – झट वीजळ[5] मूगळ सीस झड़ै ।
इम सांमळ 'सूर' सुजाव[6] अड़ै ।
धज धार[7] जुड़ै चवधार धजां ।
गिरमेर सुजाव झुझार गजां ॥ ८२३

मगरूर खगां झट झूझ मलौ ।
कलहै 'सुद्रसेण' सुजाव 'कलौ' ।
'जगमाल' सुजाव दुझाल जठै ।
तडछै खळ 'खेमकरन्नि'[8] तठै ॥ ८२४

---

१ ख. हिंदुव । ग. हींदुव । २ ख. सजाव । ३ ख. ग. चुहाण । ४ ख. आगलि । ग. आग । ५ ख. बीजल । ६ ख. ग. सुजाव (सुझाव) । ७ ग. रार । ८ ख. षेमकरन्न । ग. षेमकरनि ।

---

८२१. **अमलौ** – (?) । **कुसळौ** – कुशलसिंह । **पतंग** – फव्वारा । **ईसर** – ईश्वरीसिंह । **तेजल-ऊत** – तेजसिंहका पुत्र ।

८२२. **धख** – जोश । **हींदवसींघ** – हिंदूसिंह । **सुजाव** – पुत्र । **करिमाळ** = करवाल – तलवार । **राड़ि** – युद्ध । **रिण** – युद्ध । **चुवांण** – चौहान । **निसांण** – नगाड़ा, बाजा विशेष । **रुड़ै** – बजवाता है । **जादव-वंस** – यादव वंश । **जुड़ै** – भिड़ते हैं, युद्ध करते हैं ।

८२३. **झड़ै** – प्रहार करता है । **सांमळ** – श्यामसिंह । **सूर** – सूरसिंह । **धज-धार** – तलवार । **चवधार** – भाला । **गिरमेर** – सुमेरसिंह । **झुझार** – जूझारसिंह ।

८२४. **झूझ मलौ** = युद्ध – मल्ल = योद्धा अथवा झूझारसिंह । **सुद्रसेण** – सुदर्शनसिंह । **कलौ**– कल्याणसिंह । **जगमाल** – जगमालसिंह । **तडच्छै** – काटता है । **खेमकरन्न** – खेमकरणसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणभंग 'मधावत' सूर अड़ै ।
जवनां सिवसींघ छड़ाल जड़ै ।
जुध[1] तेज 'गुमांन' झळाहळसूं ।
सत्र वेधि[2] 'जसावत' साबळसूं[3] ।। ८२५

जुध[4] 'भीम' समोभ्रम जाहरसो ।
हथळै खळ 'नाहर' नाहर सो ।
जगमाल सुजाव लड़ै जुजवौ[5] ।
हुलिका[6] थँभ हिम्मतसींघ[7] हुवौ[8] ।। ८२६

नर मेछ खपंत पडंत नहीं ।
जुध ताळ उडै खग झाट जही ।
विढिया[9] खगि मेछ खगां विढियौ[10] ।
अछरां वरि[11] देवपुरां चढियौ[12] ।। ८२७

सुत 'जैत' 'सरूप' कियौ[13] सधरौ ।
'हरियंद' लड़ै भड़ सेख हरौ ।
धर राज पुरोहित रीत धुरौ ।
उचकंत[14] विजैमल 'माहव'रौ ।। ८२८

---

१ ख. जुधि । २ ख. बोधि । ३ ग. साबळसू । ४ ख. जुधि । ५ ख. ग. जुजवो । ६ ख. ग. हूलिका । ७ ख. हिम्मतसिंघ । ग. हिमंसिंघ । ८ ख. हुआै । ९ ख. बढ़ीया । ग. विढ़ीया । १० ख. बढियौ । ११ ख. बर । १२ ख. चढ़ीयौ । १३ ख. कीयां । १४ ख. ग. हुचकंत ।

---

८२५. **अणभंग** – वीर, योद्धा । **मधावत** – माधोसिंहका पुत्र । **छड़ाल** – भाला । **जड़ै** – प्रहार करता है । **गुमांन** – गुमानसिंह । **झळाहळ** – अग्नि, आग । **जसवंत** – जसवन्तसिंह । **साबळसूं** – भालेसे ।

८२६. **भीम** – भीमसिंह । **हथळै** – प्रहार करता है, मारता है । **नाहर** – नाहरसिंह । **जगमाल** – जगमालसिंह । **सुजाव** – पुत्र । **जुजवौ** – पृथक । **हुलिका** – होलिका ।

८२७. **मेछ** – यवन । **खपंत** – यत्न करते हैं । **ताळ** – समय । **विढिया** – कट गये, वीर गति प्राप्त हुए । **विढियौ** – कट गया, वीर गति प्राप्त हुआ । **अछरां** – अप्सराएँ । **वरी** – वरण कर के । **देवपुरां** – स्वर्गमें ।

८२८. **जैत** – जैतसिंह । **स्वरूप** – स्वरूपसिंह । अथवा अपना रूप । **सधरौ** – दृढ़, अटल । **हरियंद** – हरिसिंह । **सेख हरौ** – शेखावत वंशका वीर । **धर राज** – राजाधिराज, महाराजा बखतसिंह । **धुरौ** – प्रथम, अग्रगण्य । **माहवरौ** – माधोसिंहका ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खगि सावज ध्रज[1] विहंडि[2] खळां ।
अखतेस जरद करै उजळां[3] ।
उण वार खळां थट आहुड़ियौ[4] ।
रिण राव धसै[5] जुध रोहड़ियौ[6] ।। ८२९

पछटै खग हैमर तूट[7] पड़ै ।
लोहड़ां झट बारहट[8] 'क्रन्न'[9] लड़ै ।
गिरजावर पूर करै[10] गहणौ ।
कुळ मारग सूर किसौ कहणौ । ८३०

चढियौ[11] अनि हेमर[12] रोस चड़ै ।
लगियां धख 'केहर' ऊत लड़ै ।
वप[13] पांण उपांण[14] चंडी वरणौ[15] ।
किलमांण वखांण कियौ[16] करणौ[17] ।। ८३१

---

१ ख. ग. धइभ्फ । २ ख. बिहंडी । ३ ख. ग. ऊजलां । ४ ख. ओहड़ीयौ । ५ ख. धसे । ६ ख. ग. रोहडीयौ । ७ ख. तूटि । ८ ख. ग. बारट । ९ ख. ग. क्रन । १० ख. करे । ११ ख. चढ़ीयो । १२ ख. ग. हैभर । १३ ख. बप । १४ ख. उफांण । ग. ऊपांण । १५ ख. वरनौ । १६ ख. कीयौ । १७ ख. ग. करनौ ।

---

८२९. **खगि** – तलवारसे । **सावज** – यहां साबल शब्द होना चाहिए अथवा श्यामज = हाथी । (?) **ध्रज** – भाला । **विहंडि** – संहार करता है । **अखतेस** = अक्षत – अखंडित चावल जो विवाहादि मांगलिक अवसरों पर पीले रंग कर इष्ट-मित्रोंके यहाँ निमंत्रणके रूपमें भेजे जाते हैं । **जरद** – पीला । **उजळा** – उज्ज्वल । **आहुड़ियौ** – भिड़ा, युद्ध किया । **रिण-राव** – वीर । **रोहड़ियौ** – रोहड़िया शाखाका चारण वीर ।

८३०. **पछटै** – प्रहार करता है । **हैमर** – घोड़ा । **लोहड़ां** – तलवारों । **झट-बारहट क्रन्न** – करणीदान बारहठ जो मूंदियाड़ ठाकुरका पूर्वज था । **गिरजावर** – महादेव । **गहणौ** – आभूषण ।

८३१. **अनि** – अन्य । **हेमर** – हयवर, घोड़ा । **धख** – जोश, उमंग । **केहर ऊत** – केसरी-सिंहका पुत्र । **वप** = वपु – शरीर । **पांण** – कांति, दीप्ति । **चंडी वरणौ** – चारण कवि । **किलमांण** – यवन । **वखांण** – प्रशंसा, तारीफ । **करणौ** – करणीदान बारहठ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वधिदेव[1] पराक्रम[2] 'वीर' तणौ ।
तदि जूटत 'आसल' 'धीर' तणौ ।
सांदुवा[3] पति 'पीथ' अणी समही ।
जुड़ियौ[4] 'सबळावत'[5] वाघ[6] जही[7] ॥ ८३२

करनी-कुळ 'माहव' नांम कवी ।
चढि खेत[8] 'हिमत्त'[9] उकत्ति[10] चवी ।
थळ जेम 'कुभावत'[11] भाग थिया[12] ।
कर[13] मेळ झळाहळ लोह किया[14] ॥ ८३३

झड़ औझड़[15] सूत दियै[16] झटकां ।
कर[17] वांणिय[18] हाक खळां कटकां ।
पिसणां[19] रण अंतक गीत पढै ।
चगथां[20] दळ बीजळ[21] पूज चढै ॥ ८३४
पिंड चौसर धार[22] परी परणी ।
सभि राड[23] करी अत[24] सेझ वणी ।

---

१ ख. बधिदेव । २ ग. पुराक्रम । ३ ख. सांदुवां । ग. सांदूवां । ४ ख. जुडीयौ । ५ ग. संवलावत । ६ ख. बाघ । ७ ख. जही । ८ ख. षेति । ९ ख. हिंमति । १० उकति । ११ क. कूभावह । १२ ख. ग. नागथीया । १३ ख. करि । १४ ख. ग. कीया । १५ ग. ओझड । १६ ख. दीयै । १७ ख. करि । १८ ख. बांणीय । १९ ख. प्रिसणां । २० ख. चगयां । २१ ख. बीजळ । २२ ख. धारि । २३ ख. ग. राडि । २४ ख. ग. मृत ।

---

८३२. **आसल** – आसिया गोत्रका चारण । **धीर** – धीर, आसिया गोत्रका चारण । **सांदुवा** – चारणोंकी सांदू गोत्रके वीर – । **पीथ** – पृथ्वीसिंह सांदू । **अणी** = अनीक – सेना । **समही** – सम्मुख । **जुड़ियौ** – भिड़ा । **सबळावत** – सबलसिंहका पुत्र ।

८३३. **करनी-कुळ** – जिस वंशमें करणी देवीने अवतार लिया, चारण वंश । **माहव** – माधोसिंह । **खेत** – युद्ध-स्थल । **हिमत्त** – हिम्मतसिंह । **चवी** – कही ।

८३४. **औझड़** – भयंकर । **झटकां** – प्रहारों । **कर** – हाथ । **वांणिय** = बांण – तलवार । **हाक** – जोशपूर्ण आवाज । **पिसणां** – शत्रुओं । **अंतक** – अंत करने वाला, संहारक । **गीत** – डिंगल भाषाका छंद विशेष । **पढै** – सुनाता है । **चगथां** – मुगलों, यवनों । **पूज** – पूजा ।

८३५. **चौसर** – पुष्पहार । **परी** – अप्सरा । **परणी** – पाणिग्रहण किया । **सेझ** – शय्या ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुत 'जीवण' पात पणौ सभियौ[1] ।
लहि[2] अम्मर लोक उदक्क[3] लियौ[4] ।। ८३५

उण वार लड़ंत 'फतै'[5] अजरौ ।
गह पूर 'हरी' सुत सोनँगिरौ ।
हुचकै[6] जुध 'केहरि' 'ईंद'[7] हरौ ।
बळिवंत 'अनावत' धार बरौ[8] ।। ८३६

भचकै बळ धारि भुजांण तणौ ।
त्रिजड़ां 'विजपाल'[9] 'सुजांण' तणौ ।
हद वाहत[10] खाग झळहळियौ[11] ।
मुगळां सिर[12] 'साहिब' मांगळियौ[13] ।। ८३७

बहसै[14] जुध लोदिय[15] खांन बळां ।
खग वाह[16] करंत सिपाह खळां ।
भचकंत पंचोळिय[17] भूप तणौ[18] ।
रवदाळ[19] हणै वड 'रूप' तणौ ।। ८३८

---

१ ख. सभीयौ । २ ख. ग. लहि । ३ ख. उद्दक्क । ग. उद्दक । ४ ख. ग. लीयौ । ५ ख. ग. फतौ । ६ ख. हचकै । ७ ख. ग. इंद । ८ ख. बरो । ९ ख. बिजपाल । १० ख. बाहत । ११ ख. झलाहलीयौ । १२ ख. सिरि । १३ ख. मांगलीयौ । १४ ग. वहसै । १५ ख. ग. लोदीय । १६ ख. बाह । १७ ख. पचोलीय । १८ ख. ग. तणा । १९ ख. रवदाल ।

---

८३५. **जीवण** – जीवणदास नामके चारण कवि । **पात पणौ** – चारण कविका कार्य । **सभियौ** – प्राप्त किया, सिद्ध किया । **उदक्क** – जल ।

८३६ **फतै** – फतहसिंह । **अजरौ** – जबरदस्त । **गह-पूर** – पूर्ण जोश या गर्व वाला । **हरी** – हरिसिंह । **सोनँगिरौ** – चौहान वंशकी सोनिगरा शाखाका वीर । **हुचकै** – भिड़ता है, युद्ध करता है । **केहरि** – केसरीसिंह । **ईंद** – इन्द्रसिंह । **हरौ** – वंशज । **अनावत** – अनाड़सिंहका पुत्र । **बरौ** – जोश, कांति ।

८३७. **भचकै** – शीघ्र । **भुजांण** – भुजाओं । **त्रिजड़ां** – तलवारों । **विजपाल** – विजयसिंह । **सुजांण** – सुजानसिंह । **झळहळियौ** – पूर्ण जोशमें आया हुआ । **साहिब** – साहिबसिंह । **मांगळियौ** – गहलोत वंशकी मांगळिया शाखाका वीर ।

८३८. **भचकंत** – ध्वंस करता है । **पंचोळिय** – कायस्थ । **रवदाळ** – यवन । **रूप** – रूपचंद ।

Jain Education International	For Private & Personal Use Only	www.jainelibrary.org

वधि 'रूप'[1] कियौ[2] खग चोळ-व्रनौ ।
धड़छै वरदां[3] 'महिक्रन्न'[4] 'धनौ' ।
धख 'लाल' हरींद[5] सुजाव धरै ।
किलमां हुजदार संघार करै ।। ८३९

वधि[6] व्यास दुहूँ[7] रिम थाट बिचै[8] ।
हरिलाल अनै नँदलाल हिचै ।
हद खाग करै जुध वेहदरौ[9] ।
बधि[10] धावड़ चाक लड़ै 'बदरौ' ।। ८४०

हद जूटत धांधल[11] क्रोध हुवै ।
दइवांण[12] 'सुजांण' 'कल्यांण' दुवै ।
अति बाहत[13] खाग छकां उजळौ[14] ।
किलमां 'नरपाळ' सुजाब[15] 'कलौ' ।। ८४१

तद[16] 'धारि' सहांणिय[17] रोस धतौ[18] ।
हुचकै खगि 'नाथ' 'जसौ' 'हिमतौ' ।

---

१ ख. बधिरूप । २ ख. कीयां । ग. कीयौ । ३ ख. रवदां । ४ ख. ग. महिक्रंन । ५ ख. ग. हरिंद । ६ ख. बधि । ७ ख. दुहुँ । ग. यूहू । ८ ग. विचै । ९ ख. बेदहरौ । १० ख. बंध । ग. बंधि । ११ ख. धांधिल । १२ ग. दईवांण । १३ ग. वाहत । १४ ख. उछलौ । ग. उभलौ । १५ ख. ग. सुजाव । १६ ख. तदि । १७ ख. सहाणीय । १८ ख. ततौ । ग. धतो ।

---

८३९. **चोळ-व्रनौ** – लाल वर्ण, लाल रंग । **धड़छै** – संहार करता है । **महिक्रन्न** – महकरण । **धनौ** – धनराज । **धख** – जोश, क्रोध । **हरियंद** – हरिसिंह ।

८४०. **रिम** – शत्रु । **धावड़** – राजाको दूधपान कराने वाली स्त्रीका पति । **बदरौ** – बद्रीदास ।

८४१. **धांधल** – राठौड़ वंशकी एक शाखा । **दूइवांण** – वीर । **सुजांण** – सुजानसिंह । **कल्यांण** – कल्याणसिंह । **दुवै** – दोनों । **नरपाळ** – नरपालसिंह । **कलौ** – कल्याणसिंह ।

८४२. **सहांणिय** – घोड़ेको चाल सिखाने वाला, घोड़ोंका शिक्षक । **रोस-धतौ** – जोशीला । **नाथ** – नाथूसिंह । **जसौ** – जसवंतसिंह । **हिमतौ** – हिम्मतसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अति जूटत पौरस ऊभळियौ[1] ।
महि 'खीचिय'[2] 'सूरज' मांगळियौ[3] ।। ८४२

चहुवांण[4] केवांण रत्रां चरचै ।
रिण[5] साहिब खां अबदार[6] रचै ।
हद वाजत[7] लोह जंगां[8] हवदां ।
रसियौ[9] जिण ठोडि हणै रवदां ।। ८४३

दुति 'ईसर'[10] दौढियदार[11] दळां ।
*खग झाट करै इतिमांम खळां ।
पडिहारज आतस मीर पळां ।*
झटकां 'गिरधीर'[12] हणै दुझलां ।। ८४४

बधियौ[13] गहलोत[14] छकां वणदौ ।
'देवराज' सुजाब[15] लड़ै 'अणदौ' ।
घण वाहत लोह छछोह घणा ।
तिण वार इता 'अधराजतणा' ।। ८४५

---

१ ख. ऊझलीयौ । २ ख. ग. षींचीय । ३ ख. गमलीयौ । ४ ख. चहुंवांण । ५ ख. ग. रिण । ६ ख. अबदार । ७ ख. बाजत । ८ ख. ग. जंगी । ९ ख. रासीयौ । ग. रसियौ । १० ग. इसर । ११ ख. ग. दौढ़ीयदार । १२ ख. गिरधार । १३ ग. बांधियौ । १४ ख. ग. गहलौत । १५ ख. ग. सुजाव ।

*चिन्हांकित पंक्तियां 'ख' प्रतिमें नहीं हैं ।

---

८४२. **पौरस** – पौरुष, बल । **ऊभळियौ** – उभड़ा हुआ । **महि** – महासिंह । **खीचिय**–चौहान वंशकी खीची शाखाका व्यक्ति । **मांगळियौ** – गहलोत वंशकी मांगळिया शाखाका व्यक्ति ।

८४३. **केवांण** – कृपाण, तलवार । **रत्रां** – रक्त, खून । **साहिब खां** – साहिबखानसिंह । **अबदार** – राजा-महाराजाओंको जलपान कराने वाला । **रसियौ** – रसिक । **हणै** – संहार करता है । **रवदां** – यवनों ।

८४४. **दुति** – द्वितीय, दूसरा । **ईसर** – ईसरसिंह । **दोढीदार** – राजा-महाराजाओंके ड्योढ़ी (द्वार) पर देख-रेखका कार्य करने वाला । ड्योढीका अफसर । **गिरधीर**–गिरधारीसिंह । **दुझलां** – योद्धाओं ।

८४५. **वधियौ** – बढा । **छकां** – जोश । **वणदौ** – (?) । **देवराज** – देवराजसिंह । **अणदौ** – आनन्दसिंह । **छछोह**–तेज, फुर्तीला । **अधराजतणा**–राजाधिराज महाराजा बखतसिंहका ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

रिण जूटत सूर त्रँबाळ[1] रुड़ै ।
जुध[2] जांणक[3] दांणव देव जुड़ै ॥ ८४६

दूहौ–[4]

विजयराज–'बखत' थाट इण विध[5] विढै[6], इण[7] अगि[8] क्रोध उपाड़ि ।
बिकट फौज'विजपाळरी'[9], रचै खगां झट[10] राड़ि ॥ ८४७

छंद सारसी–

धुबि राग सींधव बंब[11] धूसां[12] तूर भेरि त्रहक्कए[13] ।
जोगणी चवसठी[14] वीर जय जय चंड वांम चहक्कए[15] ।
हुवि[16] नास सास ब्रहास धमहम स्रोणि[17] धम धम हैखुरां[18] ।
घूघरां पाखर रोळ[19] घम घम झोळ झम झम झज्झरां ॥ ८४८
झड़वांण[20] खड़हड़ ग्रीध झड़फड़ भूत खेचर भूचरा ।
सिकोत्र[21] डाकणि मिळै साकणि करै रास भयंकरा ।

---

१ ग. त्रांबाल । २ ख. जुधि । ३ ख. ग. जांणिक । ४ ख. ग. दोहा । ५ ख. बिधि । ग. विधि । ६ ख. ख. बिढै । ७ ख. इणि । ८ ख. अग्र । ९ ख. बिजपालरी । १० ख. झाटि । ११ ख. वंब । ग. बंब । १२ ख. धूंसां । १३ ख. त्रहक्कए । १४ ख. ग. चवसठि । १५ ख. चहक्कए । १६ ख. हुबि । १७ ख. ग. ष्रोणि । १८ ख. ग. हेषुरा । १९ ग. रौल । २० ख. झडबाण । २१ ख. ग. सीकोत्र ।

---

८४६. **त्रबाळ** – नगाड़ा । **रुड़ै** – बजते हैं । **जांणक** – मानों । **दांणव** – दानव । **जुड़ै** – भिड़े ।

८४७. **बखत** – बखतसिंह । **विढै** – युद्ध करते हैं ।

८४८. **धुवि** – पूर्ण जोशमें हो कर । **सींधव** – वीररस पूर्ण राग । **बंब** – नगाड़ा । **धूसां** – धौंसों । **तूर** – फूंकवाद्य विशेष । **त्रहक्कऐ** – बाजे बजते हैं । **जोगणी** – रणचंडी । **वीर** – युद्धप्रिय भैरव जिनकी संख्या राजस्थानीमें ५२ मानी जाती है । **चंड** – एक प्रकारका युद्धप्रिय पक्षी विशेष । **चहक्कण** – चहचहाते हैं । **नास** – नाक । **सास** – श्वास । **ब्रहास** – घोड़ा । **धमहम** – ध्वनि । **स्रोणि** – क्षोणि = क्षोणी, पृथ्वी । **रोळ** – ध्वनि विशेष । **झोळ** – ध्वनि विशेष । **झज्झरां** – घोड़ेके पैरके आभूषणों ।

८४९. **झड़वांण** – (?) । **खड़हड़** – ध्वनि विशेष । **झड़फड़** – पक्षियोंके पर फड़फड़ाने की क्रिया या ध्वनि । **सिकोत्र** – शाकिनी । **रास** – एक प्रकारका नृत्य ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अरड़ाव घोर अंधार ओद्रव[1] रूप रौद्रव राहरा ।
घण ईस[2] हौफर करै घायल निस गिरवर नाहरा ॥ ८४६

'विजपाळ'[3] हाकलि जेण वेळा[4] सूरवीर सकज्जयं ।
धख पूर धसिया[5] समर धोरग[6] धोम चख कमधज्जयं ।
उण वार सांमतसींघ[7] उरड़ै करै[8] चाळौ काळरौ ।
खुरसांण थाटां वीच[9] खेलै[10] पछट खग 'विजपाळ'[11]रौ ॥ ८५०

उडि बांह मुगळां जिरह ऊगळि नारंग रंग नक्कली[12] ।
बळि[13] कीया[14] जांणै[15] रगतवंसी[16] चील[17] तजि कजि[18] कच्चळी[19] ।
अधसीस धड़ विहरंत[20] असिमर फबै[21] इम खळ फांड़िया[22] ।
वधि[23] जांणि करवत[24] काढ विहरै[25] पाट करि धर पाड़िया[26] ॥ ८५१

अणभंग 'सांमत' धणी आगळ[27] ओपमा[28] वंद[29] आवतौ ।
धावतौ 'हरि' हर धसै घूमर[30] झल लोह भिलावतौ ।

---

१. ख. श्रोद्रव । २ ख. ग. इसा । ३ ख. बिजपाल । ग. विजपाल । ४ ख. बेला । ५ ख. ग. धसीया । ६ ख. ग. धोरंग । ७ ग. सांमतसिंघ । ८ ख. करो । ९ ख. बीचि । ग. बीच । १० ख. षेल्है । ग. षेलें । ११ ख. बिजपालरो । १२ ख. ग. नीकली । १३ ख. बल । १४ ग. कियां । १५ ख. ग. जांणे । १६ ख. बंसी । १७ ख. चाल । १८ ख. तजि । १९ ख. ग. कंच्चली । २० ख. बिहरंत । २१ ख. फवे । २२ ख. फाबीया । व. फाडीया । २३ ख. बाधि । २४ ख. करबत । २५ ख. बिहरे । २६ ख. ग. पाडीया । २७ ख. आगलि । २८ ख. ग. वोपमा । २९ ख. ग. वृंद । ३० ख. घूंमर ।

---

८४९. **अरड़ाव** – ध्वनि विशेष । **ओद्रव** – भयावह । **रौद्रव** – रौद्ररसपूर्ण । **हौफर** – ध्वनि विशेष ।

८५०. **विजपाळ** – संभव है विजयराज भंडारी हो जिसकी सेनामें मेड़तिये राठौड़ोंका बड़ा भारी दल था (?) **हाकलि** – चलाई । **जेण-बेळा** – जिस समय । **धख** – प्रबल जोश । **समर** – युद्ध । **खुरसांण** – यवन, मुसलमान । **थाटां** – दलों, सेनाओं ।

८५१. **जिरह** – कवच । **ऊगळि** – फट गई, टूट गई । **नारंग** – रक्त । **रगत-वंसी-चील** – रक्तवंशी जातिका सर्प विशेष । **कच्चली** – कंचुकी । **असिमर** – तलवार ।

८५२. **अणभंग** – वीर । **सांमत** – सांवतसिंह । **हरि** – हरिसिंह = **हर** – वंशज । **घूमर** – सेना । **झल लोह भिलावतौ** – लोहों (शस्त्रों)का प्रहार सहन करता हुआ और शत्रु पक्ष पर प्रहार करता हुआ ।

'सत्रसाल' भड़ इंद्रसींघ संभ्रम 'दलौ'[1] 'पदमावत' दुवै ।
वधि[2] जांणि खेलै[3] भगळ विद्या[4] जड़लगां धड़ जूजवै[5] ।। ८५२

तिण वार 'जालम'[6] 'केहरी' तण करै खग झट खळ[7] कटै ।
उतबंग[8] असुरां बढै[9] आछट[10] अधर धड़हूं ऊछटै ।
आवता झेलै जटी आयस करण-माळा संज कियै[11] ।
ग्रहि गवड़ विदिया[12] जांणि गोळा लाल बाजीगर लियै[13] ।। ८५३

पग[14] हाथ झड़[15] झड़ जरदपोसां उअर[16] बळधड़ ऊससै ।
बह[17] जांणि राकसतणा बाळक हरख करि करि हूलसै ।
'जालिमां' ऊपरि मीरजादा धहुर सायक धरहरै ।
मूसळां धारी[18] जांणि मंडियौ[19] इंद्र व्रज[20] गिर ऊपरै ।। ८५४

लह लागिया[22] लोहाळ लसकर भयंकर गज भाररौ ।
ब्रहम ही पार न लहै वरणै[23] 'जालमौ'[24] जिण वाररौ ।

---

१ ग. दलो। २ ख. बधि। ३ ख. षेल्है। ४ बिदीया। ग. विदिया। ५ ख. जूजुटै। ग. जूजुवै। ६ ख. जालिम। ७ ख. ग. षलकटै। ८ ख. ग. उतबंग। ९ ख. ग. बाढि। १० ख. ग. आछट। ११ ख. कीयै। १२ ख. बिदीया। १३ ख. लीयै। १४ ख. पगि। १५ ख. झटि झटि। १६ ख. ऊअर। १७ ख. बहौ। ग. बोहो। १८ ख. ग. धारह। १९ ख. ग. मंडीयौ। २० ख. व्रज। ग. वृज। २१ ग. उपरै। २२ ख. लागीया। २३ ख. बरणे। २४ ख. जालिमो।

---

८५२. **दलौ** – दलसिंह। **पदमावत** – पदमसिंहका पुत्र या वंशज। **जड़लगो** – तलवारों। **जूजवै** – पृथक।

८५३. **जालम** – जालिमसिंह। **केहरी** – केसरीसिंह। **उतबंग** = उत्तमाङ्ग – सिर। **बढै** – कटते हैं। **ऊछटै** – उछल कर दूर पड़ते हैं। **जटी-आयस** – महायोगी रुद्र। **करण-माळा** – मुंडमाला बनानेको। **संज** – सामान। **गवड़ विदिया** – ऐन्द्रजालिक विद्या।

८५४. **जरदपोसां** – कवचधारी। **उअर** – उर, वक्षःस्थल। **धड़** – शरीरका मध्यम भाग। **ऊससै** – जोशमें आ कर। **बह** – बहुत। **हूलसै** – उमड़ते हैं, हर्ष कर के उमड़ते हैं। **जालिमां** – जालमसिंह। **मीरजादा** – यवन। **धहुर** – (?)। **सायक** – तीर। **मूसळांधारी** – मूसलके समान भारी धार (जल-धारा)।

५५. **ब्रहम** – ब्रह्मा। **जालमौ** – जालमसिंह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'सुरतेस' दारुण 'सेर' संभ्रम 'पेम' सुत रज पाळयं ।
❀रवदाळ दळ किरमाळ रहचै ^काळ रूप कराळयं ॥❀ ८५५

दइवांण[1] सिभूसिघ दारुण[2] दुसह वारण निरदळै[3] ।
वधि[4] रूक टूक भभूक वध वध, ऊक धारण[5] ऊकळे ।
संभ्रम 'सवाइ'[6] धमक[7] साबळ[8] 'गजण' पाड़ै मूगळां ।
जरदैत रत मझि पड़ै जांणै[9] वारिधी[10] मझि वादळां[11] ॥ ८५६

वाहै[12] 'विजावत'[13] बहादर[14] वधि वाढ[15] झळहळ[16] वीजळै[17] ।
जुधि पड़ै तड़फै मुगळ[18] जांणै[19] ओछि[20] जळ मछ उच्छळै ।
सुत 'हठी' 'सिवपति' घाव साझै तेग पछट सतेजरा ।
*फुट[21] भ्रगुट[22] ऊछट[23] रत फुंहारा जांणि मट रंगरेजरा ॥ *८५७
ईंद्रसींघ[24] सुत भड़ 'जोध' अणभंग 'लाल' 'सुत' 'गजबंध' लड़ै ।
धुबि खाग झड़झड़ नाग धड़-धड़ प्रिसण दड़दड़[25] सिर पड़ै ।

१ ख. ग. दईवांण । २ ख. दारण । ३ ख. ग. निरदलै । ४ ख. धुबि । ग. बुधि ।
❀यह पंक्ति 'ख' प्रतिमें नहीं है ।

५ ख. ऊक आरण । ६ ख. सवाई । ग. सवाइ । ७ ख. कमंध । ८ ग. साबल । ९ ख. जांणे । १० ख. ग. धर । ११ ख. बादलां । १२ ख. बाहै । १३ ख. बिजावत । १४ ख. बाहादर । ग. वाहादर । १५ ख. बाढ़ । १६ ख. जलहल । १७ ख. बीजलै । १८ ख. ग. मुगल । १९ ख. ग. जांणे । २० ख. ग. ओछ । २१ ख. ग. फुट । २२ ग. भृगुट । २३ ग. ऊछट । २४ ख. ग. इंद्रसींघ । २५ ख. ग. दड़दड़ ।
*यह पंक्ति 'ख' प्रतिमें नहीं है ।

८५५. **सुरतेस** – सूरतसिंह । **सेर** – शेरसिंह । **संभ्रम** – पुत्र । **पेम** – पेमसिंह । **किरमाळ** – तलवार । **रहचै** – ध्वंस करता है । **कराळयं** – भयंकर ।

८५६. **दारुण** – भयंकर । **दुसह** – शत्रु । **वारण** – हाथी । **निरदळै** – विध्वंस करता है । **रूक** – तलवार । **टूक** – खंड । **भभूक** – ध्वंस । **ऊक** – (?) । **सवाइ** – सवाईसिंह । **धमक** – प्रहार । **गजण** – गजसिंह । **रत** = रक्त – खून । **वारिधी** – समुद्र ।

८५७. **वाहै** – प्रहार करता है । **वाढ** – शस्त्रका पैना भाग, शस्त्रकी धार । **वीजळै** – तलवारें । **मछ** – मत्स्य, मछली । **हठी** – हठीसिंह । **सिवपति** – शिवसिंह । **तेग** – तलवार । **पछट** – प्रहार कर के । **भ्रगुट** = भृकुटि – मस्तक । **मट** – मिट्टीका बना बड़ा पात्र, पात्र ।

८५८. **जोध** – जोधसिंह । **लाल** – लालसिंह । **गज-बंध** – गजसिंह । **धुबि** – तेज । **नाग** हाथी । **प्रिसण** – शत्रु । **दड़दड़** – गेंदके समान गिरनेकी क्रिया या ध्वनि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'सालिमौ'[1] भड़ 'सरदार' संभ्रम धार खगि खळ धोखळ[1] ।
डमरू[2] डहडुह[3] चंड चहच्चह[4] काळ कह कह कळकळै ॥ ८५८

'अमर'[5] रौ 'मोहकम'[6] 'रा'[7] असूरां बह[8] हणै धड़ बेहड़ां[9] ।
खग[10] झाट जुधि[11] होळियार[12] खेलै[13] हरखि जांणि डंडेहड़ां ।
जिण वार सूर 'गुलाब' जूटै खंडै दळ खुरसांणरौ ।
सत्रु वरै[14] हूरां हंस सूरां भिदै मंडळ भांणरौ ॥ ८५९

उरड़िया[15] मुगळ[16] 'गुलाब' ऊपर[17] रवद रूपड़ रांमणा ।
जागिया[18] भूत मसांण जांणै इसा खळ अध्रियांमणा ।
धमजगर असिमर फूलधारां उडै कमधज[19] ऊपरां ।
सिवराति पूजै जांण[20] संकर भूत-गण[21] भैरा हरा ॥ ८६०

सिर उडै फूटै[22] वहै स्रोणित, लोहि 'हठमल' सुत लड़ै ।
जटहूंत धारा छूट[23] जांणै सदासिव गंग सांपड़ै ।

---

१ ग. धोषलै । २ ख. ग. डंवरू । ३ ख. ग. डहडह । ४ ख. ग. चहचह । ५ ख. ग. अमर । ६ ख. मोहकम । ग. मौहोकम । ७ ख. रांम । ८ ख. ग. बहौ । ९ ख. बेहडां । १० ख. खगि । ११ ख. जुध । १२ ख. ग. डोलीयार । १३ ख. ग. षेलै । १४ ख. बरै । १५ ख. उरडीया । १६ ख. ग. मुगल । १७ ख. ग. ऊपरि । १८ ख. ग. जागीया । १९ ख. ग. कमधज । २० ख. जांणि । २१ ख. ग. भुतगण । २२ ख. फिडै । २३ ख. छूटि । ग. छूट ।

---

८५८. **सालिमौ** – सालमसिंह । **सरदार** – सरदारसिंह । **धोखळै** – ध्वंस करता है, काटता है ।**डहडह** – डमरू वाद्यकी ध्वनि । **चंड** – रणचंडी । **चह-चह** – (?) । **कहकह** – प्रसन्नताकी हँसी या हँसनेकी ध्वनि । **कळकळै** – कोलाहल करते हैं (?)

८५९. **अमरौ** – अमरसिंहका । **मोहकम** – मोहकमसिंह । **बेहड़ां** – एक के ऊपर एक, इस प्रकार ढेर देनेकी क्रिया । **होळियार** – होलिका पर नृत्य करने वाला । **डंडेहड़ां** – होलिका नृत्यमें खेलते समय हाथमें धारण करनेका डंडा । **गुलाब** – गुलाबसिंह ।

८६०. **उरड़िया** – बड़ी तेजीसे जोशमें आकर आक्रमण किया । **रूपड़** – रूप । **रांमणा** – रावण । **अध्रियांमणा** – भयंकर । **धमजगर** – युद्ध । **असिमर** – तलवार । **फूलधारां** – तलवारों **ऊपरां** – ऊपर

८६१. **स्रोणित** = शोणित – रक्त । **हठमल** – हठीसिंह । **गंग** – गंगा । **सांपड़ै** – स्नान करते हैं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खग झळळ दमंगळ भगळ खेले मंगळ रूप अमंगळां ।
रवि[1] मंडळ करि करि तंडळ रवदां[2] कियौ[3] जिम नट कुंडळां ।। ८६१

रसलूध लखि इम घड़ा रवदां अछर घूमर आवियौ[4] ।
चाढिया[5] कंठ 'गुलाब' चौसर वर[6] 'गुलाब' वधावियौ[7] ।
धर पड़ै[8] इम दिव्य देह धारै[9] सूरवीर सकज्जयं[10] ।
दुसमणां सैणां[11] कहै[12] जिण दिन धन्य अत्त[13] कमज्जयं[14] ।। ८६२

संभ्रम 'बहादर'[15] अडर[16] समरथ धोम धरहर धौखळां ।
रहचंत जम जम रूप रवदां समर धम धम साबळां ।
सुत 'बहादर'[17] कुळ विरद[18] 'सालिम' बनी छर छक छोहड़ां ।
उडि पड़ै खळ सिर रत उभाळिम लड़ै 'जालिम' लोहड़ां ।। ८६३

सज्झै[19] 'सवाई'[20] 'सुरत' संभ्रम घटा खळ खग भट घणी ।
भैरवी रत पत्र पीयै भर[21] भर जांम चौसठ[22] जोगणी ।
'सगतेस'[23] गोकळदास संभ्रम जोय अरिजण जांमळां[24] ।
बीजळां झालक खळां विहंडै[25] सिलह धारक सांमळां ।। ८६४

---

१ ख. ग. रवि । २ ख. रवां । ३ ख. ग. कीयौ । ४ ख. आवीयौ । ५ ख. चाढ़ीया । ६ ख. ग. वर । ७ ख. बधावीयौ । ८ ख. पडे । ९ ख. ग. धारे । १० ख. सकझयं । ग. सकझझयं । ११ ख. ग. सयणां । १२ ख. कहे । १३ ख. ग. मत । १४ ख. ग. कमधझ्झयं । १५ ग. बाहादर । १६ ख. अरड । १७ ख. ग. बाहादर । १८ ख. बिरद । १९ ख. सार्झं । २० ग. सवाइ । २१ ख भरि भरि । २२ ख. चौसठि । २३ ख. ग. सकतेस । २४ ख. सामलां । २५ ख. बिहंडे ।

---

८६१. **दमंगळ** – युद्ध । **मंगळ** – अग्नि । **तंडळ** – ध्वंस ।

८६२. **रसलूध** – उलझा हुआ, फंसा हुआ (?)। **घड़ा** – सेना । **अछर** – अप्सरा । **घूमर** – समूह । **चौसर** – पुष्पहार । **वर** – पति । **गुलाब** – गुलाबसिंह ।

८६३. **बहादर** – बहादुरसिंह । **धांम** – अग्नि । **धरहर** – ध्वनि । **धोखळां** – युद्धोंमें, युद्धमें । **रहचंत** – ध्वंस करता है । **जम जम** – जिस प्रकारसे । **समर** – युद्ध । **धम-धम** – प्रहार या प्रहारकी ध्वनि । **साबळां** – भालों । **जालिम** – जालिमसिंह । **लोहड़ां** – तलवारों, शस्त्रों ।

८६४. **सवाई** – सवाईसिंह । **सुरत** – सूरतसिंह । **भैरवी** – रणचंडी । **रत** – रक्त । **जांम** – प्याला, कटोरा (यहाँ देवीके खप्परके लिये प्रयोग हुआ है) । **सगतेस** – सगतसिंह । **अरिजण** – शत्रु । **बीजळां** – तलवारों । **झालक** – धारण करने वाला । **सिलह-धारक** – कवचधारी । **सांमळां** – (?) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिण वार 'भगवंत' 'केहरी' तण बणै[1] त्रिजड़ां वाहतौ[2] ।
'भीमड़ा'[3] पांडव जेम भारथ गज घड़ा भड़ गाहतौ ।
सुध जोध करि खग वाह सत्रां चाह कमळ चढ़ाविया[4] ।
गजगाह[5] ईस अथाह गहणा 'सेर साह' सभ्भाविया[6] ॥ ८६५

हद लड़ै 'सांमत' 'तेज' झळहळ ओप वयळ[7] ऊजासरौ ।
सत्र घड़ां बरघळ करै साबळ दुझल गोकळदासरौ ।
खळ थटां सिर झट बूर खागां करै सूर सकाजरौ ।
कळहणि करूर लड़ंत 'किसनौ' पूर छक प्रथिराजरौ[8] ॥ ८६६

तन जतन न करै लड़ै त्रिजड़ां सझै कारिज सांमरौ ।
खळ नतन करि जस उतन खाटै 'रतन' 'दारण' रांमरौ ।
सुत 'अजन' वाहत[9] दुजड़ सत्रहां इसौ जगपति[10] ओपियौ[11] ।
चांणूर मरदन धकै चाढण 'किसन' जांणिक कोपियौ[12] ॥ ८६७

'सुरतेस' 'अखमल'[13] सुतण साबळ जरद पोसां उर जड़ै[14] ।
'अमर'रौ धीरजसींघ अणभंग उरस छिब[15] भुज आहुड़ै ।

---

१ ख. बणे । २ ख. बाहतौ । ३ ख. ग. भीमडा । ४ ख. ग. चढ़ावीया । ५ ख. गहगाह । ६ ख. ग. सभ्भावीया । ७ ख. बैल । ग. बेयल । ८ ख. ग. प्रिथीराजरौ । ९ ख. बाहत । १० ख. जुगपति । ११ ख. ओपीयौ । १२ ख. ग. कोपीयौ । १३ ख. अषल । १४ ग. झड़ै । १५ ग. छिव ।

---

८६५. भगवंत – भगवंतसिंह । केहरी – केसरीसिंह । त्रिजड़ां – तलवारों । वाहतौ – प्रहार करता हुआ । भीमड़ा – भीम पांडव । गाहतौ – रौंदता हुआ । गजगाह – युद्ध, वीर । ईस – रुद्र, महादेव । सेर-साह – शेरसिंह ।

८६६. सांमत – सांवतसिंह । तेज – तेजसिंह । झळहळ – (प्रभापूर्ण ?) । वयळ – सूर्य । बरघळ – खंड, टूक । झट – प्रहार । बूर – समूह । कळहणि – युद्ध में । किसनौ – किसनसिंह । छक – जोश ।

८६७. जतन – रक्षा । सझै – सिद्ध करता है । सांमरौ – स्वामीका । जस उतन – जन्मभूमिका यश (?) । रतन – रतनसिंह । रांमरौ – रामसिंहका । अजन – अर्जुन । दुजड़ – तलवार । जगपति – जगतसिंह । ओपियौ – शोभायमान हुआ ।

८६८. सुरतेस – सूरतसिंह । अखमल – अक्षयसिंह । अमररौ – अमरसिंहका । उरस – आकाश । छिबि – स्पर्श कर के । आहुड़ै – युद्ध करता है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुत 'भीम' अर सुखराज संभ्रम दहूं 'केहरि' दारणां ।
वधि[1] खीज करी[2] करमाळ[3] बाही[4] बीज[5] हाथळ वारणां ।। ८६८

सुत भावसिंघ 'भगोत'[6] साबळ[7] धड़ जड़ै भड़[8] असि धरा ।
चित्रांम लिखिया[9] जिम नर चालत हंस उडि धुज हेमरा[10] ।
'भूपाळ' देवीसींघ संभ्रम वीच[11] ताळव[12] जांमणौ ।
रवदाळ हण रत्राळ रौद्रव[13] भरै ताळ भयांमणौ ।। ८६९

वंधि 'जसौ' 'संभव' सुतण वाहत चोळ खगि कळि चाळिका ।
किलमांण हय गय पड़ै कटि कटि कहै जय जय काळिका ।
जिणवार[14] 'अरजण'[15] सुतन[16] 'जगपति' पिसण[17] रण घण पाड़तौ ।
सोहियौ[18] दारण तरण समसर झळळ वीजळ[19] झाड़तौ ।। ८७०

वीजळां[20] हाथळ गजां विहंडत करत समहर कांमरौ ।
सादूळसीह सरूप सूरत राजसीह ज 'रांम'रौ ।

---

१ ख. बधि । २ ख. ग. करि । ३ ख. ग. किरमाल । ४ ख. बाही । ५ ख. बीज । ६ ख. भंगोत । ग. भगौत । ७ ख. साबलि । ८ ख. भड़ा । ९ ख. लिषीया । १० ख. ग. हैमरा । ११ ख. बीज । १२ ख. तालब । १३ ख. रोद्रव । १४ ख. जिणबार । १५ ख. अरिजण । १६ ख. सुतण १७ ख. प्रिसण । १८ ख. सोहीयौ । १९ ख. प्रतिमें यह शब्द नहीं है । २० ख. बीजलां ।

---

८६८. भीम – भीमसिंह । केहरी – केसरीसिंह । करमाळ = करवाल – तलवार । हाथळ – हाथका प्रहार । वारणां – हाथियों ।

८६९. भगोत – भगवतीसिंह । जड़ै – प्रहार करता है । असि – तलवार । हंस – प्राण । हेमरा – घोड़ों । भूपाळ – भूपालसिंह । बीज – बिजली । ताळव – (?) । जांमणौ – (?) । रवदाळ – मुसलमान । रत्राळ – रक्त । रौद्रव – भयंकर । भयामणौ – भयंकर ।

८७०. जसौ – जसवंतसिंह । संभव – शंभुसिंह । सुतण – पुत्र । किलमांण – मुसलमान । अरजण – अर्जुनसिंह । जगपति – जगतसिंह । पिसण – शत्रु । पाड़तौ – संहार करता हुआ । सोहियौ – शोभित हुआ । समसर – समान । झळळ – अग्नि । बीजळ – तलवार । झाड़तौ – गिराता हुआ, प्रहार करता हुआ ।

८७१. विहंडत – संहार करता है । समहर – समर, युद्ध । रांमरौ – रामसिंहका ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विमरीर 'भैरव' 'सुतण' 'वैरौ'[1] सूर बहौ खग साहतौ ।
पिसणरा[2] खासा[3] झंडां पहुतौ[4] विखम खग झट वाहतौ[5] ॥ ८७१

वरमाळ[6] गळ अंत्राळ पग विच[7] झाळ व्रन[8] खग ओझटै[9] ।
अति धजर खग सिर गजर उडुत[10] अरण धरहर ऊछटै ।
घूमत्त वाहत[11] लोह व्रिद घण[12] पड़े[13] रिण[14] अत[15] पावियौ[16] ।
रचि देह सुरवरि अछर चढि[17] रथ अमरपुर मझि आवियौ[18] ॥ ८७२

तिण वार 'हिंदव'[19] 'बहादर'[20] तण[21] सेल धड़खळ सालवै ।
जुध सूर चाकै चढै जितरै हूर वर होय हालवै ।
हद सूर 'अखमल' 'सुतन' 'हींदुव' 'सँभु' वधां सीस भ्रमं ।
खग गजर[22] उजबक हणे[23] खाटत अरक मुन्यंद अचंभ्रमं ॥ ८७३

---

१ ख. बैरो। २ ख. प्रिसुण। ग. पिसुण। ३ ख. षा। ४ ख. पड़तौ। ग. पहुतौ। ५ ख. बाहतौ। ६ ख. बरमाल। ७ ख. बिचि। ८ ख. व्रव्रण। ९ ख. ओझटै। १० ख. ग. ऊडत। ११ ख. बाहत। १२ ख. व्रद। १३ ख. पडे। १४ ख. ग. रण। १५ ख. ग. मृत। १६ ख. ग. पावीयौ। १७ ख. चढ़ीरथ। १८ ख. आवीयौ। १९ ख. हींदव। २० ख. ग. बाहादर। २१ ख. ग. तण। २२ ख. ग. जरक। २३ ख. कहणे।

विमरीर – भयंकर, जबरदस्त। **भैरव** – भैरवसिंह। **वैरौ** – वैरीशालसिंह। **साहतौ**– प्रहार करता हुआ। **पिसण** – शत्रु। **पहुंतौ** – पहुंच गया। **वाहतौ** – प्रहार करता हुआ।

८७२. **अंत्राल** – आंतें। **झाळ व्रन** – रक्त वर्ण। **ओझटै** – प्रहार करता है। **धजर** – भाला। **गजर** – प्रहार। **अरण** – रक्त, खून। **ऊछटै** – उछलता है। **पावियौ** – प्राप्त किया। **आवियौ** – आया।

८७३. **हिंदव** – हिंदूसिंह। **बहादर** – बहादुरसिंह। **सालवै** – प्रहार करता है। **जुध ······ हालवै** – युद्धमें शूरवीर जब सेनाका सामना करते हैं ठीक उसी समय वीरगति प्राप्त हो कर और अप्सराका वरण कर के स्वर्गकी ओर चल देते हैं। **अखमल** – अक्षयसिंह। **हींदुव** – हिंदूसिंह। **गजर** – प्रहार। **उजबक** – तातारियोंकी एक जाति या इस जातिका व्यक्ति। **खाटत** – प्राप्त करता है। **अरक** – अर्क, सूर्य (यहां सूर्य-मंडल अर्थ है) **मुन्यंद** – मुनींद्र, महर्षि नारद ऋषि। **अचंभ्रमं** – आश्चर्ययुक्त।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'दांनरौ' 'अभमल' झाट दुजड़ां[1] 'कांन्ह' 'सुत' 'देवौ' करौ ।
'रांम'रौ 'बुध' वधंत[2] रवदां सूर धज फळ सेलरौ[3] ।
'रांम'रौ हिम्मतसींघ[4] रणवट करै खग झट केवियां[5] ।
सेवियां[6] जेम असीस साझत दुरत भर पत्र देवियां[7] ।। ८७४

मगरूर 'मांन'[8] 'अनोप'[9] संभ्रम 'अखौ' 'मांन' 'सुजावयं' ।
खळ थाट क्रोध[10] उपाट[11] खंडत घाट घण खग घावयं ।
इम लड़ै भड़ थट दुझड़[12] ओझट[13] हाथियां घड़[14] हेड़तौ ।
धर[15] वंस[16] धूहड़ गरब धारत मंडोवर गढ मेड़तौ ।। ८७५

दईवांण[17] 'जोध' कळोध दारण हिचै आरण हड़वड़ै[18] ।
'किसन'रै अरि[19] घड़ वसंत[20] कीधौ रूक अवझड़ 'राजड़ै'[21] ।
खग झाट 'किसन' सुजाव खेलत पुणत रवि सिव[22] पारखौ ।
उण वार[23] 'सांमंत' एक अणभंग सोल[24] सांमंत सारिखौ ।। ८७६

---

१ ख. दुझडां । २ ख. ग. वेधंत । ३ ख. सेलरै । ४ ख. हींमतसींघ । ग. हीमत-सिंघ । ५ ख. केवीयां । ६ ख. ग. सेवीयां । ७ ख. ग. देवीयां । ८ ख. मान । ९ ग. अनोप । १० ग. क्रोध । ११ ख. उपाड । १२ ख. ग. दुजड । १३ ख. ओझट । १४ ख. थाहीयां । ग. हाथीयां । १५ ख. ग. धड़ । १६ ख. बंस । १७ ख. ग. दईवांण । १८ ख. ग. हुडहडे । १९ ख. ग. अरि । २० ख. बसत । २१ ख. राजरै । २२ ख. सि । २३ ख. बार । २४ ख. सौल ।

---

८७४. दांन – दानसिंह । अभमाल – अभयसिंह । दुजड़ां – तलवारों । कांन्ह – कानसिंह । देवौ – देवीसिंह । रांमरौ – रामसिंहका । बुध – बुधसिंह । बधंत – संहार करता है । रणवट – युद्ध । केवियां – शत्रुओं । असीस – आशीर्वाद । साझत – प्राप्त करता है । दुरत – जबरदस्त ।

८७५. मगरूर – वीर । मांन – मानसिंह । अनोप – अनोपसिंह । अखौ – अक्षयसिंह । सुजावयं – पुत्र । खंडत – संहार करता है, खंडित करता है । दुझड़ – तलवार । हेड़तौ – हांकता हुआ । धूहड़ – राव धूहड़का वंशज राठौड़ ।

८७६. जोध – राव जोधा । कळोध – वंशज । दारण – जबरदस्त । हिचै – युद्ध करता है । हड़वड़ै – हडबडाते कंपित होते हैं । किसन – किसनसिंह । रूक – तलवार । अवझड़ – प्रहार । राजड़ै – राजसिंह । किसन – किसनसिंह । सुजाव – पुत्र । पुणत – कहते हैं । पारखौ – परीक्षा करने वाला । सामंत – सांवतसिंह । अणभंग – वीर । सांमंत – योद्धा । सारखौ – समान ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समहर 'सवाइय'[१] 'राजसी' सुत भजर खग चवधारका ।
जुड़ि हणै रवदां रायजादौ मीरजादां मारकां ।
पत्र ओक करि करि सगत[२] पीवत घोख रत घट घायलां ।
तायलां मुगळां झाट त्रिजड़ां 'ऊदहर' अजरायलां ।। ८७७
सुत 'कांन्ह' मांनड़ जोस समहर 'नाथ' भड़ रुघनाथरौ ।
'हरिकिसन' अभमल सुतण झळहळ सझै[४] जुध समराथरौ ।
मगरूर 'अभमल' 'सुतन'[५] महपति उरड़ जोम[६] अछेहड़ां ।
जेहड़ां पंडव पंच जूटत[७] 'ऊदहर' भड़ ऐहड़ां[८] ।। ८७८
सुत 'भाउ' झळहळ घाव साबळ रह चंदळ रवदाळरै ।
विच[९] लड़ै 'कूंप'[१०] कळोध 'क्रन्न'[११] बधि चाळबंध घमचाळरै ।
संभरीक 'पातल' 'अभा' संभ्रम 'जोर' सुत बुध जांमळां ।
'सकतौ' विद्रावनदास[१२] संभ्रम बधि[१३] लड़ै झट वीजळां[१४] ।। ८७९
हर सिखर कूरम घणा खळ हणि धजर साबळ[१५] धौहड़ां[१६] ।
'किसनेस' सुतण गज ढाल कळहण 'लाल' त्रिहंडत लोहड़ां ।

१ ख. सवाईय । २ ख. सकत । ३ ख. रघुनाथरौ । ४ ग. सभे । ५ ख. सुतण । ६ ख. जेम । ७ ग. भूटत । ८ ख. ग. एहडा । ९ ख. बिचि । ग बिचि । १० ग. कूप । ११ ख. ग. ऋन । १२ ख. बिंदावनदास । ग. विद्रावनदास । १३ ख. बधि । १४ ख. बीजलां । १५ ख. साबल । १६ ख. ग. धोहडां ।

८७७. **सवाइय** – सवाईसिंह । **राजसी** – राजसिंह । **धजर** – भाला । **चवधार** – भाला । **मारकां** – जबरदस्त । **ओक** – अंजलि । **सगत** – रणचंडी, शक्ति । **घोख** – प्रवाह, धारा, धाराकी ध्वनि । **रत** – रक्त । **तायलां** – आततायी, शत्रु । **त्रिजड़ां** – तलवारों । **ऊदहर** – उदावत शाखाका राठौड़ । **अजरायलां** – जबरदस्त ।

८७८. **कांन्ह** – कानसिंह । **मांनड़** – मानसिंह । **समहर** – युद्ध । **नाथ** – नाथूसिंह । **सुतण** – पुत्र । **अभमल** – अभयसिंह । **उरड़** – साहस । **जोम** – जोश । **अछेहड़ां** – अपार । **पंडव** – पाण्डव । **ऐहड़ा** – ऐसे ।

८७९. **भाउ** – भाऊसिंह । **झळहळ घाव** – घावोंसे परिपूर्ण । **कूंप** – राव कूंपा राठौड़ । **कळोध** – वंशज । **क्रन्न** – करणसिंह । **घमचाळरै**– युद्धके । **संभरीक** – चौहान । **पातल** – प्रतापसिंह । अभा – अभयसिंह । **जोर** – जोरावरसिंह । **सकतौ** –शक्तिसिंह ।

८८०. हर – **वंशज** । **सिखर** – शेखा कछवाह जिसके वंशज शेखावत कहे जाते हैं । **कूरम** – कछवाह । **धोहड़ां** – प्रहारों । **किसनेस** – किसनसिंह । **कळहण** – युद्ध । **लाल** – लालसिंह । **त्रिहंडत** – संहार करता है । **किसनेस** – किशनसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'विसनेस'[1] 'अना' सुजाव वधि[1] वधि विकट[2] खग झट बाहतौ ।
'विलंद'रा[3] खासा गजां विढतौ[4] गयौ खळ दळ गाहतौ ।। ८८०

सर धजर सावळ गजर असिमर असुर सिर पर आछटै ।
धज खंजर पंजर जड़ै जमधर पड़ै नह खग पाछटै ।
उरसहू राळत हार अपछर फूल खग झट फणहणै ।
पळ समर उड्डुत[5] तेण ऊपर भमर[6] रातल[7] भणहणै ।। ८८१

इधिकाय[8] इसड़ौ गजर उडियौ[9] घाय खग जुड़ि[10] घूमरा ।
पहराय न[11] सकै माळ कंठ परि आय न सके[12] अपछरा ।
इण चूक ऊपर हसै मुनि-इंद्र सझै जोगिंद चौसरां ।
रोसरा घाव करंत किरमर[13] मिळै भौहर[14] मौसरां ।। ८८२

इम लड़ै[15] चुख[16] चुख होय पड़ियौ[17] भांण[18] कौतिक[19] भाळियौ[20] ।
तजि देह नर सुर देह को तदि बींद रंभ[21] वरमाळियौ[22] ।

---

१ ख. बधि बधि । २ ख. बिकट । ३ ख. बिलंद । ४ ख. बिढ़तौ । ५ ग. ऊडत । ६ ख. भंमर । ७ क. रायतल । ८ ख. ग. अधिकाय । ९ ख. ग. उडीयौ । १० ख. जडि । ११ ख. ग. न । १२ ख. ग. सकै । १३ ख. किरमल । १४ ख. ग. भौहट । १५ ख. लडे । १६ ग. जषचुष । १७ ग. पडीयौ । १८ ख. भांडि । १९ ग. कौतिग । २० ख. ग. भालीयो । २१ ख रीभ । २२ ख. बरमालीयो । ग. बर-मालीयो ।

---

८८०. **अना** – अनाडसिंह । **विढतौ** – युद्ध करता हुआ । **गाहतौ** – संहार करता हुआ ।

८८१. **सर** – तीर, बांण । **धजर** – भाला विशेष । **गजर** – प्रहार, समूह । **असिमर** – तलवार । **आछटै** – प्रहार करता है । **धज** – तलवार । **पंजर** – शरीर । **जमधर** – कटार । **उरसहू** – आकाशसे । **राळत** – डालती है । **फणहणै** – (?) । **रातल** – मांसाहारी पक्षी विशेष ।

८८२. **इधिकाय** – अधिक हो कर । **इसड़ौ** – ऐसा । **गजर** – प्रहार । **घूमरा** – समूह, दल । **चूक** – संभ्रम, गफलत । **मुनि-इंद्र** – नारदमुनि । **सझै** – तैयार करता है । **जोगिंद** – योगीन्द्र, महादेव । **चौसरा** – मुंड-माला । **किरमर** – तलवार । **भौहर** – भौहें । **मौसरां** – श्मश्रु या श्मश्रुके बाल ।

८८३. **भांण** – सूर्य । **कौतिक** – कौतूहल । **भाळियौ** – देखा । **बींद** – दुल्हा । **वरमाळियौ** – वरमाला पहनाई, पति स्वीकार किया ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चढि रथां चाले[1] हुतां[2] चमरां अमर-पुर निज अंदरां ।
'विसनेस'[3] कूरम एम[4] बसियौ मंजुघोखा[5]-मंदरां ।। ८८३
कळहै नरू हर 'पदंम' कूरम औरिया[6] अजरायकां ।
तायकां मुगळां करे तंडळ घाय[7] खग घण घायकां ।
अणथाह जोम दुबाह उजबक मरद 'पदमै' मारियां[8] ।
गजगाह[9] करिय[10] सराह गजपति[11] तण बखत तरवारियां[12] ।। ८८४
केवांण पांण विभाड़[13] कलमां[14] सार धड़ भड़ साहियां[15] ।
पड़ि खेत रावत लोहपूरां परिहार[16] पराहियां[17] ।
वर अछर अमरापुरां वसियौ परम सुख जदि[18] पावियौ[19] ।
धर अमर वातां रहै[20] धूजिम[21] आप वंस[22] अंजसावियौ[23] ।। ८८५
'महिरांण' 'भगवत[24] सुतण असिमर रवद थट पाधोरियौ[25] ।
घूंमरै जाडै बीच[26] घोड़ौ[27] एक[28] हाडै[29] औरियौ[30] ।। ८८६

---

१ ख. चोले । २ ख. हुंतां । ३ ख. बिसनेस । ४ ख. ग. येम । ५ ख. जंमघोषां ग. मजघोषां । ६ ख. ओरि । ग. औरि । ७ ख. बग । ८ ख. ग. मारीया । ९ ख. ग. ग्राह । १० ख. करे । ११ ख. यहंमति । ग. ग्रहपति । १२ ख. ग. तरवारियां । १३ ख. बिभाड़ । १४ ख. ग. किलमां । १५ ख. ग. साहीया । १६ ख. ग. परीहार १७ ख. ग. पराहीया । १८ क. दीघु । १९ ख. पावीयौ । २० ख. रहे । २१ ख. ग. धूजिम । २२ ख. बंस । २३ ख. ग. अंजसावीयो । २४ ख. ग. भगवंत । २५ ख. ग. पाधोरीयौ । २६ ख. ग. बीचि । २७ ख. घोडो । २८ ख. पेक । २९ ख. हुडै । ३० ख. ओरीयो ।

---

८८३. **अमर-पुर** – स्वर्ग । **अंदरां**– इन्द्रके । **विसनेस** – विष्णुसिंह । **कूरम** – कछवाहा राजपूत । **मंजुघोखा-मंदरां** – मंजुघोषा नामक अप्सराके भवनमें ।

८८४. **नरु** – नरूका । **हर** – वंशज । **पदम** – पद्मसिंह । **औरिया** – झोंक दिये । **अजरायकां** – वीरों । **तायकां** – आततायी, दुष्टों, असुरों । **घायकां** – घाव या प्रहार करने वालों अथवा घायलों । **पदमै** – पद्मसिंह । **गजगाह** – युद्ध । **गजपति** – राजा (?) । **तरवारियां** – तलवारधारी योद्धाओं । **केवांण** – तलवार । **पांण** – प्राण, बल । **विभाड़** – संहार करने वाला । **सार** – तलवार । **साहियां** – धारण किये हुए ।

८८५. **अंजसावियौ** – गर्वयुक्त किया । **महिरांण** – समुद्रसिंह । **भगवत** – भगवतसिंह ।

८८६. **असिमर** – तलवार । **रवद** – मुसलमान । **थट** – सेना । **पाधोरियौ** – सीधा किया, सरल किया । **घूंमरै जाडे-बीच** – घनी सेनाके बीच । **हाडै** – चौहान वंशकी हाड़ा शाखाका वीर ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूहौ[1] —

त्रिहुंवै घड़ 'अभमल' तणी, अर घड़ 'विलँद'[2] असाधि ।
जूटै जिम वरणी[3] जियै[4] वीजळ[5] झाटां वाधि[6] ।। ८८७

छंद रोमकंद—

घड़ भूप 'अभा' र विलँद[7] तणी घड़ रीठ झड़ज्झड़ खाग रमै ।
दळ कंध कड़क्कड़ सीस दड़द्दड़ भीच लड़त्थड़ केक भ्रमै ।
धुभ्र केक बड़ब्बड़ नृत्त[8] धड़ध्धड़ चंडि गड़ग्गड़ रत्त चड़ै ।
'अभमाल' विलँद[9] तणा मुह[10] आगळ लोह इसी विध[11] जोध[12] लड़ै ।।८८८
*होय रिख हड़ाहड़ पावहथज्झड़ धूम त्रवध्धड़ मेछ घड़ां ।
तस रूप तड़त्तड़ नीझक नज्झड़[13] तूटत अंतड़ रोद तड़ां ।
फिफराळ फड़प्फड़ कूद कळज्झड़ आय भड़ब्भड़ मल्ल अड़ै ।
'अभमाल' 'विलँद' तणा मुह आगळ लोह इसी बिध[14] जोध लड़ै* ।। ८८९

---

१. ख. दोहा । ग. दोहो । २ ख. बिलंद । ३ ख. ग्ररणी । ४ ग. जीये । ५ ख. बीजळ । ६ ख. बांधि । ७ ख. बिलंद । ८ ख. ग. नृत । ९ ख. बिलंद । १० ख. मुंह । ११ ख. ग. विधि । १२ ख. जोड । १३ ग. नज्झड । १४ ग. विधि ।

*चिन्हांकित पंक्तियां 'ख' प्रतिमें नहीं है ।

---

८८७. त्रिहुंवै—तीनों । अभमल—महाराजा अभयसिंह । अर—अरि-शत्रु अथवा और । असाधि—असाध्य, अपार । वीजळ—तलवार । झाटां—प्रहारों । वाधि—विशेष ।

८८८. घड़—सेना । अभा—अभयसिंह । झड़ज्झड़—कटाकट, मारकाट । कड़क्कड़—कटाकटकी ध्वनि । दड़द्दड़—गेंदके समान ठुकराये जानेकी क्रिया या ध्वनि । भीच—योद्धा । लड़त्थड़—लड़खड़ाते हैं । धुभ्र—शिर । बड़ब्बड़—बकझक, प्रलाप । नृत—नृत्य, नाच । धड़ध्धड़—बिना शिरका शरीर, अथवा बिना शिर-पैरका शरीरका मध्य भाग । चंडी—रणचंडी । गड़ग्गड़—गटगट । रत्त—रक्त । चड़ै—पान करती है ।

८८९. रिख—नारद ऋषि । हड़ाहड़—हँसनेकी ध्वनि । पावहथज्झड़—पैर और हाथ कट कर गिरते हैं । धूम—कोलाहल । त्रवध्धड़—तीनों ओरकी सेनासे । तस—हाथ । तड़त्तड़—कटनेकी क्रिया या ध्वनि अथवा भूमि पर गिरनेकी ध्वनि । नीझक—(?) । नज्झड़—(?) । अंतड़—आंतें । रोद—यवन । तड़ां—दलों । फिफराळ—फेफड़ा । फड़प्फड़—ध्वनि विशेष । कळज्झड़—कलेजा । भड़ब्भड़—प्रति भट अथवा ध्वनि विशेष । मल्ल—योद्धा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हाथियां[1] घड हूचक भूल अकज्भक रंभ तकत्तक हूर रहै ।
करि केयक कंतक[2] उभक अंत्रक[3] वींद[4] विमांणक[5] धारि बहै[6] ।
आछटै खग सूरवि छाहड़[7] ऊपर पाहड़ ऊपर वीज[8] पड़ै ।
'अभमाल' 'विलँद'[9] तणा मुह आगळि लोह इसी विध[10] जोध लड़ै ।।८६०

बोहौ[11] सीस उडक्क हिचक्क उवासक[12] अंधक[13] केड हुचक्क उडै ।
भुकि[14] जीह सकल्लर नारंग भल्लर रल्लर[15] बासग[16] जेम लड़ै ।
हुचकंत पटंत[17] फटां भगटां[18] हिक घाव करे[19] किरि लोह घड़ै ।
'अभमाल' 'विलँद'[20] तणा मुख[21] आगळि लोह इसी विध[22] जोध लड़ै ।।८६१

उपराळ हौदाळ लंकाळ चढै अति काळ कराळ झळां भभकै ।
वहि[23] खाळ रत्राळ ग्रिभाळ[24] परां[25] वजि छाक बंबाळ लंकाळ छकै ।
मतिवाळ[26] कराळ कराळ महाबळ जोर भुजाळ धराळ जड़ै ।
'अभमाल' विलँद तणा मुंह आगळि[27] लोह इसी विध जोध लड़ै ।।८६२

---

१ ख हाथीयां । २ क. कंत्रक । ३ ख. अंतक । ४ ख. बींद । ५ ख. बिमांणक । ६ ख. बहैं । ७ ख. बेछाहड । ८ ख. बीज । ९ ख. बिलंद । १० ख. विधि । ग. विधि । ११ ख. ग, बौहौ । १२ ख. ग. उवासक्क । १३ ख. ग. अधक्क । १४ ख. झकि । १५ ख. ग. लल्लर । १६ ख. वासग । १७ ख. पटंत । १८ ख. ग. भृगुटां । ९ ख. ग. करै । २० ख. बिलंद । २१ ख. ग. मुंह । २२ ख. ग. विधि । २३ ख. ग. वही । २४ ख ग्रिझाल । २५ क. पळां । २६ ख. मतिबाल । २७ ग. आगल ।

---

८६०. **हूचक** – प्रहार, टक्कर । **अकज्भक** – अस्त-व्यस्त होती है, अलूझती है । **रंभ** – अप्सरा । **तकत्तक** – ताकती है । **कंतक** – कांत, पति । **अंत्रक** – आंतें । **विमांणक**– विमान । **वीज** – वज्र ।

८६१. **बोहौ** – बहुत । **उडक्क** – उड़ते हैं, कट कर गिरते हैं । **हिचक्क**.. **उवासक** – हिचकियां लेते हैं और उबासियां लेते हैं । **अंधक** – अंधकासुर दैत्य । **केड़** – वंश । **हुचक्क** – प्रहार, युद्ध । **सकल्लर** – (?) । **नारंग** – रक्त । **भल्लर** – (?) । **वासग** – वासुकि नाग ।

८६२. **उपराळ** – ऊपर । **हौदाळ** – हौदा, अम्मारी । **लंकाळ** – वीर । **झळां** – आगकी लपटें । **भभकै** – उमड़ती है । **खाळ** – नाला । **रत्राळ** – खून, रक्त । **ग्रिभाळ** – गिद्ध पक्षी । **परां** – पंख, पांखें । **छाक** – प्याला । **बंबाळ** – जबरदस्त । **लंकाळ** – सिंह पर सवारी करने वाली, रणचंडी । **छकै** – तृप्त होती है । **मतिवाळ** – मस्ती । **भुजाळ** – वीर । **धराळ** – भूमि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रवताळ रौदाळ[1] रोसाळ महा रिण[2] झाळ खंडाळ आताळ[3] करै ।
भिलमाळ कंधाळ कराळ पड़ै झड़ि[4] धू मभि माळ जटाळ धरै ।
जटियाळ[5] छुटाळ[6] परै पत्र जोगणि पै जिम खाळ रत्राळ पड़ै ।
'अभमाल' विलँद तणा मुह आगळि लोह इसी विध[7] जोध लड़ै ।। ८९३

*करि काळ भड़ां तिह काळ कितां करिमाळ झड़ां जरदाळ कटै ।
धमचाळ अंत्राळ पगां विचि धौ सळिलूथळ बथां लहु वैन लटै* ।
प्रतिमाळ कराळ जडंत घड़ां पर झाळ चखां विकाराळ झड़ै ।
'अभमाल' विलँदतणा[8] मुंह आगळि लोह इसी विध जोध लड़ै ।। ८९४

करिमाळ[9] झुलाळ बंगाळ घणा कटि केक[10] खराळ झंफाळ कटै[11] ।
विकराळ मंसाळ हाडाळ वळोवळ[12] पंखणि गाळ लियै[13] झपटै ।
रणताळ संपेखत वाग[14] कसै[15] रथ खैंग कनाल जठै न खड़ै ।
अभमाल विलँदतणा[16] मुंह आगळि लोह इसी विध[17] जोध लड़ै ।। ८९५

---

१ ख. ग. रोसाल । २ ख. ग. महारण । ३ ख. आंताल । ४ ख. जडि । ५ ख. ग. जटीयाल । ६ ख. ग. छूटाल । ७ ख. बिधि । ग. विधि । ८ ख. बिलंदतणा ।

*रेखांकित पंक्तियां 'ख' प्रतिमें निम्न प्रकार हैं—

'घमचाल अंत्राल लोहाल लगां घट पांण कराल षगां पछटै ।
बरमाल कंठाल अंत्राल पगां विच्चि लूथबथा लहू अौन लटै ।

९ ख. करमाल । १० ख. कंप । ११ ख. कटे । १२ ख. बलाबल । १२ ख. लीयै । १४ ख. षाग । १५ ख. ग. कसे । १६ ख. बिलंदतणा । १७ ख. बिधि । ग. विधि ।

---

८९३. **रवताळ** – वीर । **रौदाळ** – यवन । **रोसाळ** – रोसपूर्ण । **झाळ** – भयंकर । **खंडाळ** – खंड, टूक । **आताळ** – आंत्र समूह (?) । **भिलमाळ** – युद्धके समय शिर पर धारण करनेका टोप । **कंधाळ** – कंधा । **झड़ि** – गिर कर । **धू** – मस्तक । **मभि** – मध्य । **माळ** – मुंडमाला । **जटाळ** – महादेव । **जटियाळ** – जटा, शिरके बाल । **छुटाळ** – छुटे हुए, बिखरे हुए । **पै** – पर्वत । **रत्राळ** – खून ।

८९४. **तिह** – उस । **करिमाळ** – तलवार । **झड़ां** – प्रहारों । **जरदाळ** – कवच । **धमचाळ**– युद्ध । **अंत्राळ** – आंतें । **सळिलूथ** – (?) । **बथां** – बाहुपाश । **लहु वैन** – रक्तसे (?) । **प्रतिमाळ** – कटार । **जड़ंत** – प्रहार करते हैं । **झाळ** – क्रोधाग्नि । **अभमाल** – महाराजा अभयसिंह ।

८९५. **झुलाळ** – समूह, दल । **बंगाळ** – यवन । **खराळ** – शत्रु । **झंफाळ** – (?) । **मंसाळ** – मांसाहारी, मांसपिंड । **हाडाळ** – हड्डियों । **वळोवळ** – चारों ओर । **पंखणि** – मांसाहारी पक्षी, चिल्ल, गिद्धादि । **गाळ** – कौर । **रणताळ** – युद्धस्थल । **संपेखत** – देखता है । **खैंग** – घोड़ा । **कनाळ** – किरण+आळ (रा.प्र.) सूर्य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धमछट्ट[1] विकट्ट[2] गरट्ट पडै धड़[3] घट्ट उछट्टत भट्ट[4] घणा ।
होय पद्द उपट्ट चौसट्ट पियै[5] हद तट्ट उपट्ट नरद्दतणा ।
खळकट्ट[6] उछट्ट कंधट्ट कहै खग खंजर दहत हंस खड़ै ।
'अभमाल' विलँदतणा[7] मुंह आगळि[8] लोह इसी विध[9] जोध लड़ै ।। ८६६

छप्पै[10] कवित्त[11]

एक वार ओरियौ[12] झाट वीजूजळ[13] झाडै[14] ।
रोद[15] थाट रोसंग[16] प्रिसण[17] पनरासै[18] पाड़ै[19] ।
विखम[20] दूसरी वार ऊक झल खाग अताळे ।
एक सहस[21] एक सौ रवद विहंडै[22] धर[23] राळे[24] ।
'अभमाल' वार तीजी अडर[25] जवन देखि[26] सिर जोरियौ[27] ।
सूरजपसाव[28] धिखते[29] समर औसर तीजै औरियौ[30] ।। ८६७

डसण जजर डोलचां भळळ उजळळ भालां ।
साहि बाहि स्री-हथां लाल समसेर गुलालां ।

---

१ ख धमछट । २ ख. बिकट्ट । ३ ख. धर । ४ ख. सट्ट । ५ ख. ग. पीयै । ६ ख. ग. षलषट्ट । ७ ख. बिलँदतणा । ८ ग. आगळि । ९ ख. बिधि । ग. धि । १० ख. कवित्त । ११ ख. छपै । ग. छंद । १२ ख. ओरीयौ । १३ ख. बीजूमल । १४ ख. ग. झाडे । १५ ख. ग. रौद । १६ ख. ग. रौसंग । १७ ख. ग. प्रि । १८ ख. पनरहसं । ग. पनरेहसै । १९ ख. ग. पाडे । २० ख. विषेम । २१ ख. सहंस । २२ ख. बिहंडे । २३ ख. धव । २४ ग. रालें । २५ ख. अरड । २६ ख. देष । २७ ख. जोरीयौ । २८ ख. सूरिजपसाव । २९ ख. ग. धिषतं । ३० ख. ओरीयौ । ग. औरीयौ ।

---

८६६. धमछट्ट – युद्ध । विकट्ट – भयंकर । गरट्ट – समूह । घट्ट – शरीर । उछट्टत – उछलते हैं । भट्ट – योद्धा । पद्द – पैर । उपट्ट – उमड़ कर । चौसट्ट – रणचंडी । कंधट्ट – कंधा । हंस – प्राण ।

८६७. रोसंग – रोषपूर्ण । प्रिसण – शत्रु । विहंडै – संहार करके । धर – पृथ्वी । राळे – डाल दिये । अभमाल – महाराजा अभयसिंह । सूरजपसाव – महाराजा अभयसिंहके घोड़ेका नाम । धिखते – क्रोधपूर्ण होते हुए । औसर – अवसर, समय ।

८६८. डसण = दशन – दांत । जजर – यमराज । डोलचां – (?) भळळ – देदीप्यमान ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पतंग स्रोणि[1] पिचरकां बोह मद धार दुबारां ।
खेलै[2] पियै[3] खिल्हार पड़ै उजबक्क अपारां ।
पोटलां रीठ गुरजां पड़ै, सिव नारद हसि[4] तिण समै ।
सिर विलंदहूंत[5] 'अभमल' सुपह-रण वसंत ह्वोळी रमै ।। ८९८
परी हूर[6] परणीय तठै नृत[7] भाव वतावै ।
तबल म्रदँग[8] बजि तठै वीण[9] रिख राज वजावै ।
नटवर वीर[10] नचंत तठै रातल पर ताळी ।
गावै जोगण[11] गीत, पढै संगीत[12] कपाळी ।
सिर पड़ै रीझ जेही सत्रां, बीजळ ताळ वजावणौ[13] ।
मारुवां अनै मुगळां मंडै, इसौ खेल अध्रियांमणौ[14] ।। ८९९
पाखर फूटि[15] पमंग बोळ[16] निकळै[17] बरछी ।
काढै जांणै[18] कमळ जाळ झीवर मझि मछी ।
वहै[19] लोह बेझड़ां[20] धजर चवधार धमोड़ां ।
भिदि खिपाट[21] भेवड़ा, घाट फूटै[22] भड़ घोड़ां ।

---

१ ख. ग. श्रोण । २ ख. ग. षेल्है । ३ ख. ग. पीयं । ४ ख. सि । ५ ख. बिलंदहूंत । ६ ख. हूण । ७ ख. ग. नृत । ८ ख. ग. मृदंग । ९ ख. बींण । १० ख. बीर । ११ ख. ग. जोगणि । १२ ख. सीगंत । १३ ख. बजांमणौं । १४ ख. अध्रीयमणौ । १५ ख. फूट । १६ क. छोळ । ग. बोल । १७ ख. ग. नीकलै । १८ ख. ग जांणे । १९ ख. बहै । २० ख. बेफडां । २१ ख. षपाट । २२ ख. षूटं ।

---

८९८. **पतंग** – फव्वारा । **स्रोणि** – शोणित, रक्त । **खिल्हार** – खेलाड़ी । **उजबक्क** – यवन । **पोटलां** – (?) । **रीठ** – प्रहार । **गुरजां** – गुर्ज । **अभमल-सुपह**– महाराजा अभयसिंह ।

८९९. **बीण** – वीणा नामक वाद्य । **रिखराज** – नारद ऋषि । **वीर** – युद्धप्रिय भैरव देव जिनकी संख्या राजस्थानीमें ५२ मानी जाती है । **रातल** – लाल रंगकी चंचु वाला मांसाहारी पक्षी विशेष । **कपाळी** – रुद्र । **बीजळ** – तलवार । **अध्रियांमणौ** – भयंकर, भयावह ।

९००. **पमंग** – घोड़ा । **बोळ** – लाल । **बरछी** – भाला विशेष । **कमळ** – मुख । **झीवर** – मछुआ । **बेझड़ां** – (?) **धजर** – भाला । **चवधार** – चारों ओर पैनी धारका भाला । **धमोड़ां** – प्रहारों । **खि-पाट** – (?) **भेवड़ा** = बेवड़ा—दो तहका ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अति रुधिर धड़क्के उछटै टूक फड़क्के[1] हेमरां[2] ।
तरवारी[3] कड़क्कै बीज तक, हाड बड़क्कै गेमरां[4] ॥ ६००

कमध करै केवांण, झाट दोय विहर[5] झिलमां[6] ।
विहर[7] टोप[8] सिर विहर[9] कंगळ धड़ विहर कलमां[10] ।
विहर सपक्खर जीण, अंग होय विहर[11] उत्तंगां[12] ।
विहर[13] कड़ा वजरंग[14], विहर दुतंग[15] चौतंगां ।
अंग सूर विहर[16] अरधोअरध पमंग विहर पखराइयां ।
अगहटा[17] जांणि[18] कीधा उभै, भाई बंटा भाइयां ॥ ६०१

सरां खगां साबळां, घाव पूरा घट घाया ।
जुधि लोटै जांणजै[19], लाल लोटण लुटवाया[20] ।
यम तड़फड़तां[21] अड़ै, वाहि[22] जम दाद[23] वहाड़ै[24] ।
डाव घाव डोरियां[25], जांणि जगजेठ अखाड़ै ।
पड़ि बत्थ गळत्थिय[26] हथ[27] पड़ी[28], चगदायळ मुख चीबरां ।
बीबरां[29] तबल-बंधा[30] बहसि[31], खांगी बंधां[32] खीमरां[33] ॥ ६०२

---

१ क. फवड़कै । २ ग. हैमरां । ३ ख. ग. तरवारि । ४ ख. ग. गैमरां । ५ ख. बिहर । ६ ख. ग. झिलंम्मां । ७ ख. बिहर । ८ ख. ग. टोप । ९ ख. बिहर । १० ख. ग. किलंम्मां । ११ ख. बिहर । १२ ख. उतंगा । १३ ख. बिहर । १४ ख. बजअंग । १५ ख. ग. दुतंगा । १६ ख. बिर । १७ ख. अंगहठां । १८ ख. जां । १९ ख. जांणिजं । २० ख. लुटवाय । २१ ख. तडफंता । २२ ख. बाहि । २३ ख. ग. दांढ़ । २४ ख. बहाडं । २५ ख. ग. डोरीयां । २६ ख. ग. गलत्थीय । २७ ख. ग. हत्थ । २८ ख. ग. पडि । २९ ख. बीवरां । ३० ख. बंधो । ३१ ग. वहसि । ३२ ख. बंधी । ३३ ख. ग. षीवरां ।

---

६००. **हेमरां** – घोड़ों । **तक** – समान । **गेमरां** – हाथियों ।

६०१. **केवांण** = कृपाण – तलवार । **विहर** – विदीर्ण । **झिलमां** – युद्धके समय धारण करनेका टोप । **कंगळ** – कवच । **कलमां** – मुसलमानों । **सपक्खर** – पाखर सहित । **अगहटा** – चारणोंकी जागीरका गांव ।

६०२. **लोटण** – कबूतर विशेष । **डाव** – दाव, वार । **जग-जेठ** – पहलवान । **गळत्थिय** – गलेकी पकड़ । **चगदायळ** – घावोंसे परिपूर्ण, घायल । **चीबरां** – मुसलमान । **बीबरां** – (?) । **तबल-बंधां** – तबल नामक कुल्हाड़ीके आकारका शस्त्र धारण करने वाला । **बहसि** – (?) । **बंधां** – राठोड़ों । **खीमरां-खी** – अप्सरा । **वरां-पतियों** – योद्धाओं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बरिमाळा गळ बिचै[1], ओयण उभळता[2] अंत्राळा ।
घण घायां[3] घूमतां, करै धमचक कळिचाळा ।
सेलां हियां दुसार लोह वाहै लालरता ।
वीखरता बाबरां[4], अगुट[5] फाटां[6] हौफरता ।
रजपूत मुगळ भभरूप[7] वरणि[8], दुजड़ां झाटक दौढ़िया[9] ।
अवधूत जांणि करि करि अमल, दत्त अखाड़ै पोढ़िया[10] ॥ ९०३

केयक रुधिर-पिंड करै, तड़छ खावै रवताळा ।
माथा विण[11] धड़ मुगळ केयक[12] लोटै[13] कळिचाळा ।
केयक फूटि धड़ कूंत, पड़ै वाहै प्रतिमाळा ।
कियक[14] लोह छाकिया[15], मसत घूमै मतिवाळा ।
जगनाथ तणा अटका[16] जही, बिगसै सिर झटका[17] बहै[18] ।
अहमदाबाद[19] हिंदू[20] असुर, खेध वाद लागा खहै ॥ ९०४

उडि पड़ै अंग अरध, अरध अंग जुड़ै अपछर ।
रांमति जांण[21] रमै, अरध - नारी - नाटेसुर ।

---

१ ग. विचै । २ ख. उलझतां । ३ ख. घावां । ४ ग. वाबरां । ५ ख. भृगुट । ग. भिगुट । ६ क. काटां । ७ ख. भभरूत । ८ ख. ग. तरणि । ९ ख. ग. दौढ़ीया । १० ख. ग. पौढ़ीया । ११ ख. बिण । १२ ख. केय । १३ ग. लाटै । १४ ख. केयक । १५ क. छीकीया । १६ ख. अटकां । १७ ख. फटका । १८ ग. वहै । १९ ख. अहमंदांबाद । २० ख. हींदू । ग. हीदू । २१ ख. जांणे ।

---

९०३. **ओयण** – चरण, पैर । **अंत्राळा** – आंतें । **धमचक** – युद्ध । **कळिचाळा** – वीर । **दुसार** – आरपार । **लालरता** – लड़खड़ाता । **बाबरां** – बालों, केशों । **अगुट** – मुख । **हौफरता** – हांफते हुए । **भभरूप** – भाभरे भूत की भाँति, भयंकर । **वरणि** – वर्ण, रंग । **दुजड़ां** – तलवारों । **झाटक** – प्रहार । **दत्त** – दत्तात्रय ऋषि ।

९०४. **रुधिर-पिंड** – युद्धमें वीर गति प्राप्त होने वाले वीर द्वारा अपने रक्त और मिट्टीके साथ बनाया हुआ पिंड जो पितरोंके तर्पणार्थ अर्पण करता है, इसे राजस्थानमें एक बड़ा पुण्यकार्य मानते थे । **तड़छ** – तड़फड़ाहट । **रवताळा** – योद्धा । **कूंत** – भाला । **प्रतिमाळा** – कटार । **छाकिया** – छके हुए, मस्त । **खहै** – युद्ध करते हैं ।

९०५. **अपछर** – अप्सरा । **रांमति** – खेल, क्रीड़ा । **अरध-नारी-नाटेसुर** – तंत्रमें शिव और पार्वतीका एक रूप ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करै घाव कोपरा, उडै खोपरा अद्धकर[1] ।
जोगि[2] जांणि जमाति, खिजै[3] पट्टकै धर खप्पर ।
के क यक खगां माथा किलम, भिलम टोप सूधा भड़ै ।
जे जांणि बाज तीतर जकड़ि, पकड़ि दाव धरती पड़ै ।। ६०५

बीज हजारां[4] वहै[5] सेल हजारां[6] दुसारां ।
घटां[7] हजारां घाव[8] करद खंजरां कटारां ।
इतौ लोह आंतरौ सुरां असुरां सिरदारां ।
वीसां[9] अपछर वरै[10], हूरवर[11] वरै[12] हजारां ।
नर कंध हज़ारां नीभुड़ै उभै करां जाय[13] न लिया[14] ।
तिण वार लियण[15] सिर तायकां, करह[16] हजारां[17] संकर[18] किया ।। ६०६

साधन कजि सिवराज, सकौ[19] सिर मौहरि[20] सधारै[21] ।
वधि[22] वधि बावन[23] वीर आंणि सिर मौहरि अधारै ।
जुध चौसर[24] जोगणी, अडर सूरां सर[25] आंणै ।
सिरमाळा गिर-सुता, पोय गूंथ परमांणै ।

---

१ ख. ग. अद्धक्कर । २ ख. ग. जोगी । ३ ख. षिजै । ४ ख. हजांरां । ५ ख. बहै । ६ ख. हझ्झार । ७ क. घटा । ८ क. घोव । ९ ख. बीसां । १० ख. बरें । ११ ख. बर । १२ ख. बरै । १३ ख. ग. जाय । १४ ख. ग. लीया । १५ ख. जीवण । ग. लोयण । १६ ख. कर । १७ ख. ग्र. हजार । १८ ख. कीया । १९ ग. सका । २० ख. मौरि । ग. मोहौरि । २१ ख. सधारे । २२ ख. बधि बधि । २३ ख. बांवन । २४ ख. चौसठि । ग. चौसठ । २५ ख. ग. सिर ।

---

६०५. **कोपरा** = कूर्पर – कोंहनी घुटना । **खोपरा** – नारियलकी सूखी गिरीके सम दो भाग । **खिजै** – कोप करता है । **के···धरती पड़ै** – कई यवनोंके मस्तक युद्धस्थलमें भिलम टोप सहित भूमि पर गिर रहे हैं, वे ऐसे प्रतीत होते हैं मानों उड़ते हुए तीतर पक्षीको पकड़ कर बाज पक्षी भूमि पर गिर गया हो ।

६०६. **बीज** – तलवार । **करद** – तलवार । **नीभुड़ै** – कटते हैं, कट कर गिरते हैं । **तायकां** – योद्धाओं ।

६०७. **सिवराज** – शंकर, रुद्र । **सकौ** – वह, सब । **मौहरि** – अगाड़ी, प्रथम । **अधारै** – रखते हैं । **सिरमाळा** - मुंडमाला । **गिर-सुता** – पार्वती ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिव चूणै[1] सीस पूतां सहित भूतां सहित अभ्यासियां[2] ।
तरबूज खेत लूटै तिकरि स्वबळ[3] जमाति सन्यासिया[4] ।। ६०७

जरद पोस जमरांण, छांगि[5] सिर विलँद[6] सभारा[7] ।
खास[8] गज खांनरा, अड़ै उमराव[9] 'अभारा' ।
अति बळ करि आचार[10], कमंध झाटकै किरम्मर[11] ।
चोळ बोळ चाचरा, उडै फाचरा अद्धकर[12] ।
जिण दीह सीस भद्र जातियां[13], जुधि पड़िया[14] कटि जूजवा[15] ।
उण वीर चुगै मोती अमुख[16], हंस ग्रीध भेळा हुआ[17] ।। ६०८

आय आय आछटै, कमध दारण कळिचाळा[18] ।
घूमै घाय त्रिघाय मसत बारण मति[19] बाळा[20] ।
वाढ[21] झडै वीजळां[22] बढ़ै[23] पाखर बेछाड़ां ।
इंद्र वजर[24] वही[25] उडै पंख जांणिजै[26] पहाड़ां ।
वढि[27] सूंडि घणा[28] रत हौद[29] बिचि[30], उडि[31] पडै पडि उछळै[32] ।
जनमेज जाग[33] जांणै[34] भुजंग अगनि कुंड मझि आकुळै[35] ।। ६०९

---

१ ख चुणै । २ ख. ग. अभ्यांसीयां । ३ ख. सबल । ४ ख. संन्यासीयां । ग. सन्यासीयां । ५ ख. छागि । ६ ख. बिलंद । ७ ख. ग. छभारा । ८ ख. षासा । ९ ख. अमराव । १० ख. आचरा । ११ ख. ग. किरंम्मर । १२ ख. ग. अधक्कर । १३ ख. जातीयां । १४ ख. ग. पडीया । १५ ख. ग. जूजुवा । १६ ख. ग. अमष । १७ ख. ग. हुवा । १८ ख. कलिचालौ । ग. कळिचाळ । १९ ख. मत । २० ख. वालौ । ग. वाला । २१ ख. बाट । २२ ख. बीजलां । ग. वीझलां । २३ ख. बढ़े । २४ ख. बजर । २५ ख. बहि । ग. बहि । २६ ख. ग. जांणिजे । २७ ख. ग. बढ़ि । २८ ख. घणो । २९ ख. होत । ३० ख. बिधि । ग. विचि । ३१ ख. ग. ऊडि । ३२ ग. ऊछलै । ३३ ख. ग. ज्याग । ३३ ख. जांणे । ३५ ख. आसलै ।

---

६०७. चूणै – चयन करते हैं । स्वबळ – सबल ।

६०८. जरद-पोस – कवचधारी । जमरांण – योद्धा । छांगि – काट कर । अड़ै – भिड़ते हैं, युद्ध करते हैं । किरम्मर – तलवार । चाचरा – मस्तक । फाचरा – फच्चर, खंड । भद्रजातियां – श्वेत रंगके हाथियों । जूजवा – पृथक । अमुख – आमिष, मांस ।

६०९. घाय – घाव । त्रिघाय – (?) । बारण – हाथी । मतिबाळा – उन्मत्त, मस्त । बाढ – शस्त्रका पैना भाग । झड़ै – कट कर गिरते हैं । बढै – कटते हैं । बेछाड़ां – (?) । घणा – बहुत, अधिक । रत – रक्त । जनमेज – जनमेजय । जाग – यज्ञ । अकुळै – तड़फड़ाते हुए इधर-उधर डोलते हैं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूंडि झाड़ि समसेर, मारि साबळां महावत ।
ओण जांण[1] आधार, एम[2] उभौ[3] है वह रावत ।
जड़ि कपोळ जमदाढ़, ठीक जिण कर ठहरायै[4] ।
*दंतूसळां पग दियै[5], जंगी हौदां चढि जाए[6] ।
घमरोळ[7] मीर खंजरां धजर, पटकै धर इण विध पड़ै[8] ।
किलकिला चोट[9] जांणै[10] करण, गिरिया नट चढ़ि गोखड़ै[11] ॥ ६१०

छिबता उरस छछोह, चुरस वीरारस[12] चाळै ।
एक[13] हत्थी[14] आछटै[15] भांण कौतग[16] रणभाळै ।
पछटि घाव उडि[17] पड़ै, पाव निरलंग पटाझर ।
देवळ कजि डोळियौ[18] खंभ जांणै कारीगर ।
धड़[19] फाड़ वहै धड़ सिंधुरां[20], पड़ि बराड़[21] लोही पड़ै ।
गैरुवां[22] खांनि[23] जांणै[24] गिरां, इंद्र वज्र[25] पड़ि ऊधड़ै । ६११

जुधस्थळरौ समुद्रसूं रूपक बांधणौ

प्रळै काळ घण पड़ै, खाळ रुहिराळ[26] खळक्कै[27] ।
मिळि घटाळ[28] मुगळाळ विहंड[29] झांफाळ वळक्कै[30] ।

---

१ ख. जीण । ग. जाण । २ ग. एेम । ३ ख. उभा । ग. ऊभा । ४ ख. ग. ठहराऐ । ५ ग. दीयै । ६ ग. जाऐ । *यह पंक्ति ख प्रतिमें नहीं है । ७ ख. घमरोलि । ८ ख. बिधि । ग. विध । ९ ख. चोटि । १० ख. ग जांणे । ११ ख. ग. गोषडे । १२ ख. बीरारस । १३ ख. ऐक । १४ ख. ग. हथी । १५ ग. आछटौ । १६ ख. कौतिग । १७ ख. ग. उडि । १८ ख. डोलीयां । ग. डोलियां । १९ ख धज । ग. धझ । २० ख. ग. सींधुरां । २१ ग. वराड़ । २२ ख. गेरूवां । २३ ख. षांणि । २४ ख. जांणे । २५ ख. बजर । २६ ख. ग. रुहिराल । २७ ख. षलक्कै । ग. षळकै । २८ ख. ग थटाल । २९ ख. बिहंड । ३० ग. वलकै ।

---

६१०. **समसेर** – तलवार । **ओण** – पैर । **आधार** – रख कर । **रावत** – योद्धा । **घमरोळ** – प्रहार । **धजर** – भाला । **किलकिला** – (बन्दूक-या तोप ?)

६११. **छछोह** – योद्धा । **चुरस** – श्रेष्ठ । **वीरारस** – वीर रस । **एकहत्थी** – शस्त्र-विशेष । **निरलंग** – पूर्ण रूपसे काटने या कटनेकी क्रिया । **पटाझर** – हाथी । **देवळ......कारीगर** – हाथीके पैरको काट कर इस प्रकार पृथक कर दिया मानों किसी देवालयके निमित्त बढईने किसी बड़े काष्ठके लट्ठको चीर-फाड़ कर साफ-सुथरा उपयोगके लिए बना दिया हो । **सिंधुरां** – हाथियों । **बराड़** – सूराख, छेद, दरार ।

६१२. **रुहिराळ** – रुधिरयुक्त । **खळक्कै** – नाले आदिके प्रवाहकी कलकलकी ध्वनि या क्रिया । **घटाळ** – सेना । **मुगळाळ** – मुसलमान, मुगल । **झांफाळ** – (?) **वळक्कै** – (?)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वहि[1] अनेक विकराळ[2] भांति विकराळ विभत्ती[3] ।
इसौ[4] दाय अणपार, मिळै जाय सावरमत्ती ।
तदि चढै रुधिर नदी[5] गज तिरै रेखग विणि[6] विड[7] रूपरा ।
तारिया[8] जांणि रघुकुळ[9] तिलक[10], गिरवर सरवर ऊपरा ।। ६१२
गज भिड़ज[11] पड़ि गरट्ट[12] प्रगट बंध[13] सुजि[14] पाजां ।
धड़ भड़ मछ कछ ढाल, जंगी हवदां-स जिहाजां ।
मिळि अंत्राबळ सीमाळ, कमळ फूलं[15] खळ कम्मळ[16] ।
हरखि भरै पिणहार[17] जुगिण पत्र घड़ा रुधर[18] जळ ।
हंस जेम ग्रीध पंकती[19] हुई, दीसै घाट डरांमणौ ।
असुरांण विहंड[20] कीधौ[21] 'अभै', रिण[22] समंद[23] अध्रियांमणौ ।। ६१३
पड़े[24] 'अली आबध'[25] 'अली जमाल'[26] बहादर[27] ।
पड़[28] 'तरीन'[29] 'अभरांम' 'मांन' 'चूहड़' खां निडर ।
पड़ै[30] खांन सिरदार, सैद काय[31] मात्र एह[32] सुत ।
पड़ै[33] सेख अलियार[34], जवन बंधव[35] हफत[36] जुत ।

---

१ ख. बहि । २ ख. बिकराल । ३ ख. बिभत्ती । ४ ख. ग. इसै । ५ ख. ग. नदि । ६ ख. बिण । ७ ख. बिड । ८ ख. ग. तारीया । ९ ख. रघुकुल । १० ख. क । ११ ख. भिजड । १२ ख. ग. गरट । १३ ख. ग. बंधे । १४ ख. सुणि । १५ ख. ग. फूले । १६ ख. कंम्मल । १७ ख. पिणहारि । १८ ख. रुधिर । १९ ख. ग. पंकति । २० ख. बिहंड । २१ ग. किधो । २२ ख. रण । २३ ख. ग. समुद्र । २४ ख. पंडे । २५ ख. आवद्द । ग. आबद्द । २६ ख. जंम्माल । ग. जम्माल । २७ ख. बाहादर । २८ ख. ग. पडि । २९ ख. तनीर । ३० ख. ग. पडे । ३१ ख. कायम । ३२ ख. ग. एहै । ३३ ख. ग. पडे । ३४ ख. ग. अलीयार । ३५ ख. फवंधबा । ३६ ग. हफतं ।

---

६१२. विभत्ती – वीभत्स । रेखग – (?) । विड रूपरा – भयावह रूपके । सरवर – समुद्र ।

६१३. गरट्ट – समूह । अंत्रावळ – आंतें । सीमाळ – शैवाल, काई । कम्मळ – शिर । डरांमणौ – भयावना । असुरांण – यवन । विहंड – संहार कर के । अध्रियांमणौ – भयंकर, भयावह ।

६१४. (?) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कसमीरखांन मौतब कुतब, झट[1] खाग महमद झड़ै[2] ।
'फैजुला' हदातुल्ला[3] फरस, पीरसाह काजम पड़ै[4] ॥ ६१४

आसाखां[5] गुलहुसन, मुगळ दरवेस महम्मद[6] ।
सुजि महम्मद[7] इसथांन, 'सेख' मायल[8] हर हमद[9] ।
रहमतुल्ला, पीरोज, अलाबंदा[10] तुक तुमस्स ।
हैदर बेग हुसेन, साह आलम दळ[11] सेरस ।

कुजरक्कबंग[12] गौहर बंदा, उजबक[13] दोय इरांनरा ।
रोसन अलाह अबदुल[14] रजा, खेत पड़े[15] भड़ खांनरा ॥ ६१५

नवलखांन अंगरेज खांन, हमसेर[16] सुनाहर[17] ।
सेर विदारखांन. खांन बहलोल उज्जबर[18] ।
असतखांन अलमसतखांन, बुलाखांन[19] सबघर[20] ।
जमी खांन जमसेरखांन समसेर बहादर ।

सिर विलंदखांन घायल 'समर' झाट लेख[21]बळि नह झड़ै[22] ।
आगा अजाद[23] बचिया[24] उभै, पूर लोह अनि सब पड़ै[25] ॥ ६१६

इसौ ताव ईखियौ[26], घाय मुगळ[27] दळ घावां ।
बोहौ[28] गजि[29] असि उजबकां[30], टूक दीठा उमरावां ।

---

१ ख. झाट । २ ख. झडे । ३ ख. हद्दांतुल्ला । ४ ख. पडे । ५ ख. आसीषां । ६ ख. ग महमद । ७ ख. ग. महमद । ८ ख माफल । ९ ख. ग. हुंमद । १० ख. अलीवंदा । ११ ख. ग. दिल । १२ ख. बुजरक्कबेग । १३ ख. ऊजबक । १४ ख. अवदुल रजा । १५ ख. ग. पडे । १६ ख. हिल षांन । १७ ख. सनाहर । १८ ख. ग. हुजब्बर । १९ ख. बुलषांन । ग. वुलषांन । २० ख. सवब्बर । ग. सबब्बर । २१ ख. षेल । २२ ख. ग. झडे । २३ ख. मुजाब । २४ ख. बंचीया । ग. वचिया । २५ ख. पडे । २६ ख. ईषीयौ । २७ ख. मूगल । २८ ख. ग. वौहौ । २९ ख. गज । ३० ख. उजवकां ।

---

६१४. (?) ।
६१५. (?) ।
६१६. पूर ······पड़ै – शस्त्र-प्रहारोंसे पूर्ण क्षत-विक्षत हो कर अन्य सब वीर-गति प्राप्त हुये ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुड़ै[1] मुगळ जांणियौ[2], मारि नांखै[3] पळ मांहै[4] ।
मांण डांण तजि मुगळ, लाज लंगरा तुड़ाहै[5] ।
वीजळां[6] झाट हाथळ विखम, थाट पड़ै[7] व्याकुळ थयौ ।
'अभमाल' मयंद देखै[8] उरड़, गयंद[9] 'बिलंद'[10] बहुवे[11] गयौ ॥ ६१७

पाळा होय विण[12] पमंग, जवन हालै पमंगा जिम ।
उडै[13] पमंग असवार, तिकै[14] ऊडांण पवन तिम ।
कंध धड़ फूटां किलम, रुधिर छूटां[15] रातंबर ।
जूटा[16] भग्गा जाय केयक[17] तूटा बिहुंवै[18] कर ।
जुध मांहि केयक बाचिया[19] जिके, सर चवधारां संग लिया[20] ।
सिर विलंद[21] खांन तिण समै, हाथी म्रग[22] जिम हालिया[23] ॥ ६१८

आब जोम तजि असुर, सुर विहंडाए[24] साथां ।
नाटौ रांम नबाब, हीण मद पड़तां हाथां ।
जाय किसू[25] जीवतौ, धाय असि 'अभौ' धुबावै[26] ।
लगै न मागां लार, विरद[27] रघुवंस[28] बुलावै ।
नासतां[29] खळां मारै नहीं, 'अभमल' विरद[30] दईव तौ ।
सिर विलँद[31] भाजि अहमद सहर, जिणहूं[32] पहुंतौ जीवतौ ॥ ६१९

---

१ ख. जठै । ग. जुडे । ख. जांणीयौ । ३ ग. नांषे । ४ ख. माये । ५ ख. ग. तुडाए । ६ ख. बीजलां । ७ ख. पडे । ८ ख. ग. देषे । ९ ख. गय । १० ख. विल्लंद । ११ ख. भज्जे । ग. बंझ्के । १२ ख. बिणि । ग. बिण । १३ ख. उडे । १४ ख. ग. तिके । १५ ख. ग. छुटां । १६ ख. ग. जूटां । १७ ख. केय । १८ ख. बिहुं । १९ ख. बंचिया । २० ख. सालीया । २१ ख. बिलंद । २२ ख. ग. मृग । २३ ख. हालीया । २४ ख. बिहंडाए । २५ ख. कीसूं । २६ ख. धुबावै । २७ ख. बिरद । २८ रघुबंस । २९ ख. न्हासतां । ३० ख. बिर । ३१ ख. बिलंद । ३२ ख. जिणहुं ।

---

६१७. **मयंद** – सिंह । **गयंद** – हाथी । **बहुवे गयौ** – भाग गया ।

६१८. **विण** – बिना, रहित । **पमंग** – घोड़ा, हरिण । **रातंबर** – लाल । **बिहुंवे** – दोनों । **कर** – हाथ । **सर** – तीर । **चवधारां** – भालों ।

६१९. **आब** – कांति, दीप्ति । **जोम** – जोश । **असुर** – मुसलमान, सर बुलंदखां । **सुर** – हिन्दू । **विहंडाए** – ध्वंस करवा कर के । **नाटौ** – भाग गया । **पहुँतौ** – पहुँच गया ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कवित्त दोढौ

इम जीतौ 'अभमाल' वार[1] नबत्ति[2] बजाए[3] ।
लूटि आरबा लिया[4] लूटि, असि गज बहौ[5] लाए ।
'विलँद'[6] तणा बाढिया[7], रूक झाटां रवदायण[8] ।
च्यार सहस[9] च्यारसै, असो तेरा असुरायण[10] ।
जिण मझि[11] विवरौ[12] जुदौ, मुगळ पड़ि रूप मयंदा[13] ।
सौ[14] पालखीनसीन[15] आठ असवारां[16] गयंदा ।
अै पड़ै साह जांणै इसा, आवै आंम[17] दीवांणमें ।
ताजीम तणा भड़ तीनसै, घणा अवर घमसांणमें ।। ६२०

छप्पय कवित्त

भड़[18] पयदळ गज भिड़ज पड़ै[19] विलँदरा[20] अपारां ।
नकौ[21] पार[22] घायलां, हुवा लोह मै सुमारां ।
उला[23] भड़ एकसौ बीस पड़िया[24] जिण वारां[25] ।
पमंग पड़ै पंचसै[26], धमक[27] सेलां खग धारां ।
सातसै हुवा घायल सुभट[28], लड़ै[29] 'अभै' जस व्रद[30] लियौ[31] ।
आजरा[32] वार[33] मझि पोहौ[34] अवंर, जुध इम किणै न जीपियौ[35] ।।६२१

---

१ ख. बीर । २ ख. नवबत्ति । ग. नववत्ति । ३ ख. बजाए । ४ ख. लीया । ५ ख. ग. बौहौ । ६ ख बिलंद । ७ ख. बाढ़ीया । ग. वाढ़िया । ८ बरदायण । ९ ख. सहंस । १० ख. असरायण । ११ ख. मझ । १२ ख. बिवरौ । १३ ख. ग. मयंदां । १४ ख. पौ । १५ ख. सालषीनसीन । १६ ख. ग. असवार । १७ ख. ग. आंब । १८ ख. भय । १९ ख. पडे । २० ख. बिलंद । २१ ख. को । २२ ख. पाय । २३ ख. ग. ऊला । २४ ख. ग. पडीया । २५ ख. जिणबारां । २६ ख. पांचसै । २७ ख. धमष । २८ ख. सुभड । २९ ख. लडे । ३० ख. ग. वृद । ३१ ख. लीयौ । ३२ ख. ग. आजरी । ३३ ख. बार । ३४ ख. ग. पौहौ । ३५ ख. जीपीयौ ।

---

६२०. **अभमाल** – महाराजा अभयसिंह । **नबत्ति** – नौबत, नगाड़ा । **आरबा** – तोप । **असि** – अश्व, घोड़ा । **बाढिया** – काट डाले । **रवदायण** – मुसलमान । **असुरायण** – मुसलमान । **विवरौ** – वृतान्त, भेद । **मयंद** – (?) **घमसांण** – युद्ध ।

६२१. **पयदळ** – पदाति, प्यादे । **भिड़ज** – घोड़ा । **धमक** – प्रहारों । **अभै** – महाराजा अभयसिंह । **पोहौ** – प्रभु, राजा । **अवर** – अन्य । **जीपियौ** – जीता, विजयी हुआ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भोमि मिळै धड़ भार, मिळै[1] दळ 'विलँद'[2] 'गिरँदां'[3] ।
ग्रिभ्भां[4] मिळै[5] पळ गूद[6] मिळै[7] हाका सरहद्दां[8] ।
मिळै[9] ईस रुंडमाळ[10], मिळै[11] रत त्रपत सकत्ती[12] ।
मिळै[13] भांण रिख अचंभ, मिळै[14] पीरां बळमत्ती[15] ।
आसीस मिळै[16] दीधी हूतां, रिधु[17] कोड़[18] जुग राजनूं ।
जुध जीत विरद मोटा जिकै[19], मिळै 'अभा' महाराजनूं[20] ॥ ६२२

मिळै[21]'सुवर[22] रंभ हूर, प्रेत भख मिळै[23] अपंपर ।
मिळै[24] भख[25] नहराळ मिळै[26] भख खेचर भूचर ।
सोच मिळै[27] सिर विलँद[28] भीच खळ मिळै[29] मिसत्ती[30] ।
मिळै[31] दाह इरांण[32] मिळै[33] मुरधर कीरत्ती[34] ।
दळ जीत[35] मिळै[36] बंधव दहुं[37] सुभट[38] मिळै[39] समाजनूं ।
जुध जीत विरद[40] मोटा जिकै[41] मिळै[42] 'अभा' महाराजनूं[43] ॥ ६२३

---

१ ख. मिले। २ ख. बिलंद्द। ३ ख. गिरद्दां। ४ ख. ग्रिफा। ५ ख. मिले। ६ ख. गाल। ७ ख. ग. मिले। ८ ग. सरहदां। ९ ख. मिले। १० ख. रुंडमलि। ११ ख. ग. मिले। १२ ख. सकती। १३ ख. मिले। १४ ख. ग. मिले। १५ ख. बलिमत्ती। १६ ख. मिले। १७ ख. रिधू। १८ ख. कोडि। १९ ग. जिके। २० ग. माहाराजनूं। २१ ख मिले। २२ ख. सुबर। २३ ख. मिले। २४ ख. ग. मिले। २५ ख. भष्ष। २६ ख. ग. मिले। २७ ख. ग. मिले। २८ ख. बिलंद। २९ ख. ग. मिले। ३० ख. भसभिसती। ३१ ख. ग. मिले। ३२ ख. ग. ईरांन। ३३ ख. मिले। ३४ ख. कीरती। ३५ ख. जीत। ३६ ख. ग. मिले। ३७ ख. वुंहुं। ग. दुंहूं। ३८ ख. सुभडां। ३९ ख. ग. मिले। ४० ख. बिरद। ४१ ख. जिके। ग. जीके। ४२ ख. मिले। ४३ ख. माहाराजनूँ। ग. राजनूं।

---

६२२. भोम – भूमि। गिरँदां – गर्द, धूलि। ग्रिभ्भां – गिद्ध पक्षी। पळ-गूद – मांस-पिंड। ईस – महादेव। रत – रक्त। त्रपत – तृप्त। भांण – सूर्य। रिख – नारद ऋषि। अचंभ – आश्चर्य। पीरां बळमत्ती – (?)। अभा – महाराजा अभयसिंह।

६२३. सुवर – सुन्दर पति। रंभ – रंभा, अप्सरा। हूर – परी, अप्सरा। नहराळ – मांसाहारी हिंसक पशु। भीच – योद्धा। मिसती – बहिश्त, स्वर्ग। दाह – जलन। कीरत्ती – कीर्त्ति, यश। अभा – महाराजा अभयसिंह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इम जीपै[1] आवियौ[2], महाराजा[3] राजेस्वर[4] ।
सैदांना[5] वाजतां[6] गयंद गाजतां पटाभर ।
फरहरतां गज धजां, घणा ग्रह महतां घूमर ।
घरहरतां कोतिलां, चमर होतां सिर चौसर ।

भरि मुगत थाळ वधावियौ[7], कांमण[8] कळस वँदावियौ[9] ।
अँगू[10] जोम पूर छिबतौ[11] उरस 'अभमल' डेरां आवियौ[12] ।। ६२४

राति वसे[13] महाराज[14] दीत ऊगै[15] सझिया[16] दळ ।
काळ रूप कठिया[17], होय विकराळ[18] झळाहळ ।
अजै[19] 'अभौ' आवियौ[20] पूर वजि[21] विखम त्रंबाळा[22] ।
वप धूजै[23] 'सिर विलँद'[24] वीच[25] फेरे[26] विसटाळा[27] ।

तदि कहे ताप मांने[28] तुरक, तिहूं[29] छक छांडि तराजका ।
महि सरब[30] अराबा दे मिळू, म्है[31] बंदा महाराजका[32] ।। ६२५

---

१ ख. जीपे । २ ख. आवीयो । ३ ख. ग. माहाराज । ४ ख. ग. राजेसुर । ५ ख. सायदांनां । ग. सैदांनां । ६ ख. बाजतां । ७ ख. बाधावीयो । ८ ख. कांमणि । ९ ख. बंधवीयो । १० ख. अंग । ११ ख. छिवतौ । १२ ख. आवीयो । १३ ख. बसे । १४ ख. ग. माहाराज । १५ ख. उगै । १६ ग. सझीया । १७ ख. कठठीयो । १८ ख. बिकराल । १९ ख. अजे । २० ख. आवीयो । २१ ख. बजि । २२ ग. आबाला । २३ ख. धूजे । २४ ख. बिलंद । २५ ख. बीच । २६ ख. फरें । २७ ख. बिसटाला । २८ ग. मांनै । २९ ख. त्रिहूँ । ३० ख. ग. सहर । ३१ ख. ग. मैं । ३२ ग. माहाराजका ।

---

६२४. **जीपै** – विजयी हो कर । **सैदांना** = शादियाना – मंगल वाद्य । **पटाभर** – मस्त हाथी । **फरहरतां** – फहराते हुए । **गहमहतां** – भीड़ या समूह बनाते हुए । **घूमर** – सेना, दल । **चौसर** – चारों ओर । **मुगत** – मोती । **वधावियौ** – स्वागत किया । **कांमण** – कामिनी, स्त्री । **वंदावियौ** – अभिवादन करवाया । **अंगू** – शरीर । **अभमल** – महाराजा अभयसिंह ।

६२५. **दीत** – आदित्य । **कठिया** – प्रस्थान किया, रवाने हुए । **अजै** – (अजय, जिसको कोई जीत न सके ?) । **विखम** – विषम, भयंकर । **त्रंबाळा** – नगाड़ों । **विसटाळा** – मध्यस्थ । **ताप** – रौब, आतंक । **छक** – (?) । **बंदा** – सेवक ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पड़ै[1] पाय सिर विलँद[2], जांणै[3] सरणाय सधारां ।
म्है[4] बंदा हुकमका एम[5] कहियौ[6] उण वारां ।
अवर रखत आरबां किले वंचिया[7] 'अधिकारां' ।
जिकै[8] किया[9] सहौ निजर, किला[10] सहित[11] कोठारां ।
जदि होय रूंख[12] पतझड़ जिही, सुभड़ां विणि[13] दुख सालियौ[14] ।
आगरा दिसी सिर-विलँद[15] इम, हीण मांण होय हालियौ[16] ॥ ६२६

घायल उजबक घणा, मरे[17] मुक्कांम मुक्कांमां[18] ।
तियां[19] हलै[20] गाडतौ[21] गांम ठांमां गढ गांमां ।
मजल मजल मेलतौ[22] मीर खांनां उमरावां ।
हाथियां[23] जिम मदहीण गयौ[24] पौरस[25] तजि गांवां ।
अहमदाबाद[26] बिचि[27] आगरै, घोर[28] हुई मुगळां घणी ।
कहतां न पार आवै तिकौ[29], गिणतां नह[30] जावै[31] गिणी[32] ॥ ६२७

दूहौ[33]

इजति[34] भंग ह्वैगौ असुर, मिळै[35] न तिण मूहमद[36] ।
गयौ दिली तजि आगरै, विध[37] इणहूंत 'विलँद' ॥ ६२८

---

१ ख. ग, पडे । २ ख. बिलंद । ३ ख. ग. जांणि । ४ ख. ग. मै । ५ ग. ऐम । ६ ख ग. कहीयौ । ७ ख. बंचीया । ग. वचीया । ८ ख. ग. जिके । ९ ख. ग कीया । १० ख. किलां । ११ ख. सहिता । १२ ख. ग. रूष । १३ ख. बिणि । १४ ख. ग. सालीयौ । १५ ख. बिलंद । १६ ख. ग. हालीयौ । १७ ख. ग. मरै । १८ ख. ग. मुकांमा । १९ ख. ग. तीयां । २० ख. ग. हले । २१ ख. गागाडतौ । २२ ख. मेल्हतौ । २३ ख. ग. हाथी । २४ ग. गयो । २५ ग. पोरस । २६ ख ग. अहमदाबाद । २७ ग. विचि । २८ ख. घोरि । २९ ख. ग. तिकां । ३० ग. नहें । ३१ ख. जाए । ३२ ख. ग. गणी । ३३ ख. दोहा । ग. दोहौ । ३४ ख. ग. ईजति । ३५ ग. मिले । ३६ ख. महमंद । ग. गहमद । ३७ ख. बिधि । ग. विधि ।

---

६२६. **सरणाय = सधार** – शरणमें आये हुएकी रक्षा करने वाला । **रखत** – धन-दौलत । **आरबा** – तोप, बंदूक, अस्त्र-शस्त्र आदि सामान । **वंचिया** – अवशिष्ट रहे । **सुभड़ां** – योद्धाओं । **हालियौ** – चला, चला गया ।

६२७. **मुक्कांम मुक्कांमां** – स्थान-स्थान पर । **मजल** – यात्रामें ठहरने का स्थान, मंजिल । **घोर** – गोर, कब्र ।

६२८ **इजति** - इज्जत, प्रतिष्ठा । **विध इणहूंत** – इस प्रकारसे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कवित्त छप्पय[1]

अहमदपुर ओपिया[2], अमल वजीर[3] 'अभारा' ।
इळा वधै[4] आणंद प्रजा सुख वधै अपारा ।
धाड़ायत धूजिया[5], सहत मरहटां[6] सकाजा ।
सतरि सहस धर सकळ, मंडै[7] थांणा महाराजा[8] ।
साहरै वाग[9] 'अभमल' सुपह करि मुकांम ऊछब[10] कियौ[11] ।
ज्योतिख[12] त्रिकाळदरसी तियां[13], दीपमाळ मुहरत[14] दियौ[15] ॥६२६

दीपमाळ दिन उभळ[16], सकौ[17] दळ बहळ[18] सिंगारे ।
सहर उछव सिणगार, जरी जवहूर[19] जरतारे ।
आवादान अवास[20] करै[21] छिड़काव[22] गुलाबां ।
साहवांन[23] जरकसी, मंडै[24] पड़दा महरावां ।
छजि[25] गिलम विछायत तखत छत्र, तारकसी चंद्र तांणिया[26] ।
महाराज[27] पधारण मंत्रियां[28], किलां बीच[29] डंबर[30] किया[31] ॥ ६३०

---

१ ख. ग. प्रतियोंमें यह शब्द नहीं है। २ ख. ओपीया। ३ ख. वज्जीर। ४ ख. बधे। ५ ख. धूजीया। ६ ग. मरहाटां। ७ ख. ग. मंडे। ८ ग. माहाराजा। ९ ख. बागि। १० ख. ग. उछव। ११ ख. ग. कीयौ। १२ ख. ग. जोतिष। १३ ख. जीया। ग. दरसीतीयां। १४ ख. ग. महुरत। १५ ख. ग. दीयौ। १६ क. युभल। १७ ख. ग. सको। १८ ख. वह। १९ ख. जहूर। ग. जव्हर। २० ख. आवास। २१ ख. करे। २२ ख. छडकाव। २३ ख. ग. साईवांन। २४ ख. ग. मंडे। २५ ख. छकि। २६ ख. तागीया। २७ ख. ग. माहाराज। २८ ख. मंत्रीयां। २९ ख. बीचि। ग. बीच। ३० ख. ग. डब्बर। ३१ ख. ग. कीया।

---

६२९. **अभारा** – महाराजा अभयसिंहका। **इळा** – पृथ्वी। **धाड़ायत** – डाकू, डकैत। **अभमल** – महाराजा अभयसिंह। **त्रिकाळदरसी** – त्रिकालको देखने वाले (त्रिकालज्ञ) **दीपमाळ** – दीपावली।

६३०. **महरावां** – द्वार आदिके ऊपर का अर्द्ध-मंडलाकार भाग। **तारकसी** – धातुके तारोंका बना काम। **चंद्र** – चन्दोवा, सायवान (?)। **डंबर** – सजावट।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पहरि[1] तास पौसाक[2], भळळ जवहर धर[3] भूखण ।
अंबर गुलाबां अतर घणा करि डंबर[4] विरद घण ।
साज कनक नग ससत्र[5] करै[6] बुलगार[7] सकाजा ।
सुभट[8] मंत्री दुज सुकवि, महा[9] उछब महाराजा[10] ।
गज भिड़ज जरी जवहर गरक, दीप मुसाळां वणि[11] डंबर ।
उण वार चमर होतां 'अभौ', गज चढियौ[12] धारै[13] गुमर ।। ६३१

वजि[14] नौबत[15] मुरसळां, हलै[16] चतुरंग भळाहळ ।
जोति मुसालां जगै झळळ पोसाक झळाहळ ।
पूरि[17] घरि घरि दीपक[18], कोडि कोडेक अणंकळ ।
अहमदपुर ओपियौ[19], कनक द्वारका[20] तणी कळ ।
आवियौ[21] सहर मझि पोहौ[22] उछप, लखां धमळ मंगळ लभौ ।
*तदि धरै छत्र बैठौ तखति, अहमदपुर छत्रपति अभौ ।। ६३२

---

१ ख. परहि । २ ग. पोसाक । ३ ख धरि । ४ ख. डंब्बर । ५ ख. ग. सस्त्र । ६ ख. कसे । ग करे । ७ ख. बुलगार । ८ ख. सुभड । ९ ख. ग. माहा । १० ख. ग. माहाराजा । ११ ख. बणि । १२ ख. चढ़ीयौ । ग. चढ़ियो । १३ ख. धारे । १४ ख. बजि । १५ ख. नौबति । १६ ख. ग. हुले । १७ ख. ग. पुरि । १८ ख. ग. दीपक्क । १९ ख ओपीयौ । २० ख. द्वारिका । २१ ख. आवीयौ । ग. आवीयो । २२ ख. ग. पौहौ ।

*यह पंक्ति 'ख' प्रतिमें नहीं है ।

---

६३१. **तास** – एक प्रकारका बहुमूल्य जरदोजीका कपड़ा । **भळळ** – देदीप्यमान, चमकयुक्त । **जवहर** – जवाहिरात । **भूखण** – आभूषण । **अंबर** – एक प्रकारकी सुगंधित वस्तु । **बुलगार** – (?) । **मुसाळां** – मोटी बत्ती जिसके नीचे पकड़नेके लिए काठका मोटा दस्ता लगा रहता है, मशाल । **डंबर** – चकाचौंध, प्रकाश । **अभौ** – महाराजा अभयसिंह । **गुमर** – गर्व ।

६३२. **मुरसळां** – वाद्य विशेष । **चतुरंग** – सेना । **भळाहळ** – देदीप्यमान । **झळळ** – चकाचौंध करती हुई, देदीप्यमान । **कोडि** – उमंग, उत्साह । **कोडेक** – उमंगमें । **अणंकळ** – वीर । **ओपियौ** – शोभित हुआ । **कळ** – प्रकार, भांति । **पोहौ** – राजा । **धमळ-मंगल** – मांगलिक गायन । **लभौ** – प्राप्त हुआ । **छत्रपती** – राजा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नृति[1] रंग राग अनेक*, करै नृतिकार[2] कळावंत ।
करै सलांम अनेक, निडर अनमी सिर नावंत[3] ।
असपतिरा आपरा, सुभड़ बहु[4] मंत्री सकाजा ।
साझै निजर सलांम रजै इण विध[5] महाराजा[6] ।
करि करि असीस कवि गुण कहै, सोया ऊच समाजरौ ।
रवि चंद जितै कायम रहौ, राज तेज महाराजरौ[7] ।। ६३३

दूहा[8]

चक्रबति[9] दिन दिन चौगणौ, सुख तप तेज सकाज ।
सतरि सहस मुरधर सहित, मांणै धर महाराज[10] ।। ६३४
जोतां जोड़ न दूसरौ, धर हिंदुवांणां धांम ।
'अभमल' सूर[11] हुवै[12] 'उरै' 'साहू' जसौ संग्रांम ।। ६३५
दातरां दाता दुझल, सूरां सूर सकाज ।
अतुळीबळ राजै 'अभौ', इसे[13] तेज तप आज[14] ।। ६३६

छंद मोतीदांम

सकौ अन राज सदीठ समाज ।
'अभैमल' जोड़ करै कुण[15] आज ।✣

---

१ ख. ग. नृति । २ ग. नृतिकार । ३ ख. नामत । ४ ख. बौहौ । ५ ख. बिधि । ग. विधि । ६ ख. ग. माहाराजा । ७ ख. माहाराजरौ । ८ ख. दोहा । ग. दौहा । ९ ख. ग. चक्रवति । १० ख. ग. माहाराज । ११ ख. ग. सूं । १२ ख. ग. तूहुंवै ।

*चिन्हांकित पद्यांश 'ख.' प्रतिमें नहीं है ।

✣यहांसे आगे 'ख' प्रतिमें निम्न पंक्तियां और प्राप्त हुई हैं--

"साहू पौहौ देषि जिकै तपसार ।
हेलां जिम मोकलियौ हुजदार ।।"

१३ ख. ग. इसै । १४ ख. आप । १५ ख. कुंण ।

नोट:-ये पंक्तियां 'ख' प्रतिमें दो बार लिखी हुई हैं ।

---

६३३. नृतिकार – नृत्य या नाच करने वाला । कळावंत – गायक-समुदाय, दक्ष, प्रवीण । नावंत – झुकाते हैं । रजै – प्रसन्न होता है । असीस – आशीष । गुण – कविता ।
६३४. चक्रबति – राजा । मांणै – उपभोग करता है ।
६३५. जोड़ – समान, तुल्य ।
६३६. दुझल – वीर । राजै – शोभायमान होता है । तप – ऐश्वर्य ।
६३७. सकौ – सब । अन राज – अन्य राजा । अभैमल – महाराजा अभयसिंह । जोड़ – समानता ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहू[1] पहू[2] आप[3] जिसै मँत्रवेस[4] ।
पगां लगि[5] कीध धणी जिम पेस ।। ६३७

छळै दिखणी दळ पौरस बाधि[6] ।
अयौ[7] 'कँठराज' करूर असाधि ।
सूवा[8] जिम[9] मार[10] दिया[11] झट सार ।
सुरत्ति[12] उजैणतणा[13] सिरदार ।। ६३८

इसौ[14] 'कँठराज' जिकौ[15] दइवांण[16] ।
अयौ[17] दळ पूरब[18] छिबै[19] असमांण ।
साम्हां तिण हूंत संग्रांम सकाज ।
मिळै[20] उवराज[21] मंत्री महराज[22] ।। ६३९

जुटा तिणहूंत जिकै[23] जमरांण ।
दळां करि झूझ लुटै[24] दखिणांण ।
लाहां खळमारि[25] डेरां[26] असि लीध ।
कमंधज भूपतणौ जस कीध ।। ६४०
लड़ायक 'कंठ' धिखंतिय[27] लाय ।
भड़ां 'मँत्रिय'[28] सुज[29] दीध भजाय ।

१ ख. ग. साहू । २ ख. ग. पौहौ । ३ ख. आय । ४ ख. मंत्रबेस । ५ ख. लग । ६ क. बधि । ७ ख. ग. आयौ । ८ ख. सूबा । ९ ख. ग. जिण । १० ख. मारि । ११ ख. दीया । १२ ख. सूरत्ति । १३ अजेणतण । ग. उजेण । १४ ख. ईसौ । ग. इसो । १५ ख. ग. जिको । १६ ख. दईवांण । १७ ख. आयौ । ग. आयो । १८ ख. ग. पूर । १९ ख. छिवे । ग. छिवै । २० ख. ग. मिले । २१ ख. युवराज । २२ ख. माहाराज । २३ ख. जिके । ग. तिके । २४ ख. लूटे । ? २५ ग. मार । २६ क. ख. देरां । २७ ख. धिषंतीय । ग. धिषंती । २८ ख. मंत्रीयां । ग. मंत्रीय । २९ ख. सुजि ।

६३७, (?) ।

६३८. **छळै** (वळै) ? **कंठराज** – कंठाजी नामक मरहठा । **सुरत्ति** – सूरत नगर । **दइवांण** – वीर ।

६३९. **सांम्हां** – सामने ।

६४० **जमरांण** – जबरदस्त । **झूझ** – युद्ध । **दखिणांण** – दक्षिण दिशा, दक्षिण दिशा का ।

६४१. **लड़ायक** – लड़ाई करने वाला, लड़ाकू । **कंठ** – कंठाजी । **धिखंतिय** – प्रज्वलित । **लाय** – दावाग्नि, आग । **सुंज** – उस, वह । **दीध** – दिये ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मारै[1] दळ लूटैय[2] पंच[3] मुकांम ।
नवै[4] खंड सीस हुवौ[5] जस नांम ।। ६४१

भंडारिय[6] ता[7] मँत्री कुळिभांण ।
दिली[8] 'अमरेस' हुतौ[9] दइवांण[10] ।
जिकौ[11] पिड[12] सूर दसा परवीण[13] ।
रहै दत[14] स्यांम धरम सु-लीण[15] ।। ६४२

लियां[16] सुत 'खीम' भुजां रज लाज[17] ।
असप्पतिहूंत सूं कोध[18] अरज्ज[19] ।
जिकै विध कीध फतै महाराज[20] ।
कही धर गुज्जर[21] कथ्थ[22] सकाज ।। ६४३

सुणै कथ एह[23] महम्मदसाह[24] ।
अखै[25] आंम[26] खास विचै[27] पह[28] वाह ।

१ ख. ग. मारे। २ ख. ग. लूटेय। ३ ख. पांच। ४ ग. नमै। ५ ख. हूवौ। ग. हुवो। ६ ख. ग. भंडारीय। ७ ख. ताम। ८ ग. दीली। ९ ख. हुंतो। ग. हुतो। १० ख. दईवांण। ११ ख. ग. जिको। १२ ख. पिंड। १३ ख. परवीर। १४ ख. दिढ़। ग. दितु। १५ ग. सुलीन। १६ ख. ग. लीयां। १७ ख. लझ्झ। ग. लज। १८ ख. ग. सुकोध। १९ ख. अरझ्झ। ग. अरज। २० ग. माहाराज। २१ ख. गुझ्झ। ग. गुजर। २२ ख. कत्थ। ग. कथ। २३ ख. ऐह। २४ ख. महंमदसाह। ग. महमदसाह। २५ ख. आषे। ग. आषै। २६ ख. अंब। ग. आंब। २७ ख. बिचै। २८ ख पौहौ। ग. पौह।

६४१. **सीस** – ऊपर, पर।

६४२ **भंडारिय** – ओसवाल वंशका एक गोत्र। **कुळि-भांण** – अपने वंशका सूर्य। **अमरेस** – अमरसिंह भंडारी जो दिल्लीमें बादशाहके पास महाराजा अभयसिंहजीकी ओर से वकीलके रूपमें रहता था। **दइवांण** – दीवान। **जिकौ** – वह (अमरसिंह भंडारी) रहे। **सु-लीण** – वह स्वामिभक्त था।

६४३. **खीम** – अमरसिंह भंडारीका पिता खीमसी भंडारी। **रज** – राज्य। **असप्पतिहूंत** – बादशाहसे। **जिकै** – जिस। **विध** – प्रकार। **कथ्थ** – वृत्तान्त, हाल।

६४४. **अखै** – कहता है। **पह** – प्रभु, राजा। **वाह** – शाबास, धन्य-धन्य।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुणं[1] पह[2] पांण ग्रहंतांइ[3] पांण ।
सझै तिम हीज कहै सुरतांण ।। ९४४

दिया[4] फुरमांण सनेह दिलेस ।
दिया[5] मुनसब[6] बधाराइ देस[7] ।
सारौ[8] जोवतां अनि हिंदुसथांन[9] ।
दुवौ[10] नह जोड़ कौ खग दांन ।। ९४५

फतैपुर झूंझण नाथ अफेर ।
जवन्न[11] नबाब[12] रहै नित जेर ।
विकापुर[13] जेसळमेर विलँद[14] ।
अहैपुर आंन दुरंग उमेद[15] ।। ९४६

वळे[16] पुर डूंगर[17] वांसहवाळ[18] ।
सेवै पग रावळ भेजि रसाळ ।
लुणापुर[19] नायक जेर लगांण ।
रहै पग सेवक चाळक रांण ।। ९४७

---

१ ख. पुणे । २ ख. ग. पोहो । ३ ख. ग. ग्रहंतांई । ४ ख. दीयां । ५ ख. दीया । ६ ख. मुनसप्प । ७ ख. वधाराईदेस । ग. वधाराइवेस । ८ ग. सारो । ९ ख. हीदुसथांन । १० ग. दुवो । ११ ख. जव्वन । ग. जवन । १२ ख. नवाव । १३ ख. बीकापुर । ग. वीकापुर । १४ ख. बिलंद । १५ ख. ग. उमंद । १६ ख. बले । ग. वले । १७ ख. डुंगर । १८ ख. बांसबाहाल । ग. वांसहवाल । १९ ख. लूणापुर ।

---

९४४. **पुणे** – कहता है । **पांण** – ही ।

९४५. **फुरमांण** – परवाना, आज्ञापत्र । **दिलेस** - दिल्लीश, बादशाह । **बधाराइ** – बढ़ती, वृद्धि । **सारौ** – सब । **अनि** – अन्य, दूसरा । **दुवौ** – दूसरा । **जोड़** – समान । **खग-दांन** – वीरता और वदान्यता ।

९४६. **अफेर** – वीर । **जवन्न** – यवन । **जेर** – आधीन । **विकापुर** – बीकानेर । **विलँद** = बुलंद – बड़ा अथवा सर बुलेंद । **अहैपुर** – अहिपुर, नागपुर, नागौर ।

९४७. **वळे** – और, फिर । **पुर डूंगर** – डूंगरपुर । **वांसहवाळा** – वांसवाड़ा । **रसाळ** – भेंट ? **चाळक रांण** – चालुक्य वंशका राजा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिरोहिय[1] ईडर राज समाज ।
रिधू हळवद[2] झालांपति राज ।
जाड़ेचा[3] सिगारज रावळ जांम ।
वळै[4] भुजनेरतणौ[5] वरियांम ॥ ६४८

सुराचँद[6] पारकरेस सधेस ।
हुवै[7] पग[8] सेवक आय हमेस ।
सरां लगि सांभरि तीर समंद ।
नमै पगि आय इता नर इंद ॥ ६४९

भरै डँड रैत[9] तणी विध[10] भाय ।
*प्रथीपति[11] फेरि लगावत पाय ।
सु सौ[12] गजहूंत करंत सलांम ।
महा हम तम्म सहै अतिमांम ॥ ६५०

दखै[13] तदि नीजर[14] दौलतिदास ।*
प्रथीपत[15] दीठ करंत प्रकास ।
इसी[16] विध[17] पाय नमंत अपार ।
जियां पल हूंत करंत जुहार ॥ ६५१

---

१ ख. ग. सीरोहीय । २ ख. हलवद्द । ३ ख. जाडेच । ४ ख. ग. वले । ५ ख. भुजनैरतणो । ६ ख. ग. सूराचंद । ७ ख. हुश्रे । ग. हूश्रे । ८ ख. पगि । ९ ग. रैति ।

*चिन्हांकित पंक्तियां 'ख' प्रतिमें नहीं हैं ।

१० ख. बिधि । ग. विधि । ११ ख. ग. प्रिथीपति । १२ ग. सो । १३ ग. दाषै । १४ ग. निझ्झर । १५ ख. ग. प्रिथीपति । १६ ग. इसि । १७ ख. बिधि । ग. विधि ।

---

६४८. **रिधू** – निश्चय । **जाड़ेचा** – यादव वंशकी एक शाखा । **रावळ-जांम** – जामनगरका राजा जामरावल । **भुजनेर** – भुजनगर । **वरियांम** – श्रेष्ठ ।

६४९. **सुराचँद** – एक प्रदेशका नाम । **पारकरेस** – एक प्रदेशका नाम । **सधेस** – सिंध प्रदेश, सिंधुदेश । **सरां···समंद** – सांभर झीलसे लेकर समुद्रपर्य्यन्त । **पगि** – चरणोंमें । **नर-इंद** – नरेन्द्र, राजा ।

६५०. **विध** – प्रकार । **भाय** – समान । **हम तम्म** – रौब, आतंक । **अति-मांम = एहतमांम** – अधिकार-क्षेत्र अथवा इन्तजाम, प्रबंध (?)

६५१. **दखै** – कहते हैं । **नीजर दौलतिदास** – आपकी नजर - दौलतके हम दास हैं । **जियां** – जैसे । **जुहार** – अभिवादन ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इसै[1] तप तज 'अभैमल' आज ।
रजै 'अजमाल'[2] तणौ महराज[3] ॥ ६५२

कवित्त छप्पै[4]

इसै तेज तपि[5] आज, रजै 'अभमल' महराजा[6] ।
वरण[7] हूंत वसेस[8] सुदन खग राज समाजा[9] ।
सतर सहंस गुजरात धरा नव सहंस मुरद्धर ।
एक[10] सहंस धर अवर, अमल इतरी धर ऊपर[11] ।
वणि समंद हृद[12] चक्रवति विभौ, उरड़ रीझ छक आवियौ[13] ।
सुरिजप्रकास गुण इण[14] समै, कहै स्री मुख[15] कहावियौ[16] ॥ ६५३

खंड-प्रसस्त-बलमीक, हणूं नाटक[17] अध्यातम ।
द्रोण परब[18] रघुवंस[19], सारसुत व्यायकरण[20] हिम ।
हठ प्रदीप अस्टंग[21] वळै[22] तप सार ग्रंथ वर ।
आठ ग्रंथ ज्योतिस[23], सरस संगीतह सागर ।

---

१ ख. इतै । २ ख. रजमाल । ३ ख. महाराज । ग. माहाराज । ४ ख. तथा ग. प्रतियोंमें यह शब्द नहीं है । ५ ख. तन । ६ ख. ग. माहाराजा । ७ ख. वरणण । ८ ख. बिसेष । ग. बसेष । ९ ख. ग. ससाजा । १० ख. ग. एक । ११ ख. ग. उप्पर । १२ ख. ग. हद्द । १३ ख. ग. आवीयौ । १४ ख. इणि । १५ ख. श्रीमुखि । ग. श्रीमुषि । १६ ख. ग. कहावीयौ । १७ ग. नाटिक । १८ ख. परव । १९ ख. ग. रघवंस । २० ख. वैयायकरण । ग. वयायकरण । २१ ख. ग. अष्टंग । २२ ख. ग. वले । २३ ख ग जोतिस ।

---

६५२. **तप** – ऐश्वर्य । **अभैमल** – महाराजा अभयसिंह । **रजै** – शोभायमान होता है । **अजमल** – महाराजा अजीतसिंह ।

६५३. **तपि** – ऐश्वर्य । **रजै** – शोभित होता है । **अभमल** – महाराजा अभयसिंह । **सुदन** – श्रेष्ठ दान । **खग** – तलवार । **मुरद्धर** – मारवाड़ । **अमल** – अधिकार, राज्य, हुकूमत । **विभौ** – वैभव । **उरड़** – साहस । **रीझ** – दान । **छक** – पूर्ण । **सुरिज-प्रकास** – सूरजप्रकास नामक ग्रंथ । **गुण** – काव्य । **कहावियौ** – कहलवाया ।

६५४. **खंड-प्रसस्तबलमीक** – वाल्मीकि रामायण । **हणूं नाटक** – हनुमद् नाटक । **अध्या-तम** – अध्यात्म रामायण । **द्रोण परब** – महाभारतान्तर्गत द्रोण पर्व नामक अंश । **सारसुत** – सारस्वत नामक व्याकरण । **हिम** – हेमचंद्र जैनका व्याकरण । **हठ-प्रदीप** – (योग का ग्रन्थ ?) ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

सूर स्रंगार[१] विनोद[२] वीर[३] धरम[४] सासत्र धारण ।
अलंकार खट भाख, विवध[५] भाखा विसतारण ।
कवि किसब[६] रागमाळा सकळ, ब्रहम गीनांन वतावसी[७] ।
सूरिजप्रकास[८] गुण सीखसी, अतरा गुण तैं आवसी ।। ६५४

कळपव्रिछ सुभ करण, सूर[९] दाता रिझवारां ।
नाट-साल उर तणौ, सूब कायरां गवारां ।
गहर पूर बह[१०] गुणां[११], महा कवितां मन मोहै ।
राजां अनि राइयां[१२], सीस गज अंकुस सोहै ।

प्रगट सी[१३] दस[१४] दिस ऊपर[१५], तिकौ[१६] अमर धर अंबर तिम ।
सूरजिप्रकासि[१७] 'अभसाहरौ', जास सूरज[१८] प्रकास[१९] जिम ।। ६५५

दूहा[२०]

सत्रैसै[२१] समत[२२] सत्यासियै[२३], विजै[२४] दसमी[२५] सनि जीत ।
वदि[२६] कातिक[२७] गुण वरणियौ[२८], दसमी वार अदीत ।
वणियौ[२९] गुण इक वरस[३०] विच[३१], उकति अरथ अणपार ।
छंद अनुस्टुप[३२] करिउ जन, सत पंच सात हजार ।

---

१ ख. ग. शृंगार । २ ख. बिनोद । ३ ख. ग. बीर । ४ ख. ग. ध्रम । ५ ख. विविध । ग. बिबिध । ६ ख. ग. किसव । ७ ख. ग. वतासी । ८ ख. सुरि । ९. ख. सूरि । १० ख. ग. बहौ । ११ ख. गुणि । १२ ख. ग. राईयां । १३ ख. सीस । १४ ख. ग. दसं । १५ ख. ग. ऊपरा । १६ ख. ग. तिको । १७ ख. सूरज-प्रकास । ग. सूरजप्रकासि । १८ ख. सूरिज । १९ ख. ग. परकास । २० ख. बोहा । ग. दौहा । २१ ख. ग. सत्रसं । २२ ख. संबत । २३ ख. ग. सत्यासीयै । २४ ख. बिजं । २५ ख. ग. दसमि । २६ ख. बदि । २७ ख. ग. कातिग । २८ ख. बर-णीयौ । ग. वरणीयौ । २९ ख. ग. बणीयौ । ३० ख. बरस । ३१ ख. ग. बिचि । ३२ ख. अनुष्टुप् । ग अनुष्टुप ।

---

६५४ ब्रहम-गीनांन – ब्रह्म-ज्ञान ।

६५५. कलपव्रिछ – कल्पवृक्ष । नाटसाल – जबरदस्त । गहर – गांभीर्य । अभसाह – महाराजा अभयसिंह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'अभा'तणी सुभ नजर अति, वधि[1] छक सुकवि विधांन[2] ।
कुरव दांन लहियौ[3] अधिक, कहियौ[4] करणीदांन ।। ६५६

कवित्त छप्पय

हरख घणा छक हूंत, कहै गुण घणा कवेसर[5] ।
जंग घणा जीतसी, महाराजा[6] राज[7] ईसुर ।
मुलक घणा दाबसी, घणा करसी सुख व्रिंद घणा ।
घणा लाख पसाव, घणा देसी गज सांसण ।
'अभमाल' घणा करसी उछब, कवि गुण घणा कहावसी ।
इम घणा वरसी[8] तपसी 'अभौ' प्रसिध घणा व्रद[9] पावसी ।। ६५७

दूहा[10]

ध्रुव सुमेर अंबर धरा, सूरज[11] चंद सकाज ।
महाराजा[12] 'अभमाल'रौ, रिधू इता जुगराज ।। ६५८

*सूरज[13] हूंत प्रगट्यौ करण[14], सुण्यौ[15] सवेही[16] लोइ ।
'करणै'[17] सूरज[18] प्रकास किय, रस अदभुत[19] है सोइ[20] ।। ६५९

---

१ ख. बधि । २ ख. ग. बिधांन । ३ ख. ग. लहीयो । ४ ख. ग. कहीयौ । ५ ख. ग. कवेसुर । ६ ख. ग. माहाराजा । ७ ख. राजेसुर । ८ ख. वरस । ९. ख. वृद । ग वृंद । १० ख. प्रति में यह शीर्षक नहीं है । ग. दोहा । ११ ख. सूरिज । ग. सूरझ । १२ ख. ग. भाहाराजा । १३ ग. सूरझ । १४ ग. करन । १५ ग. सुन्यौ ।

*चिन्हांकित पंक्तियां 'ख.' प्रति में नहीं हैं ।

१६ ग. सवैही । १७ ग. करनै । १८ ग. सूर । १९ अद्भूत । २० ग. सोई ।

---

६५६. अभा – महाराजा अभयसिंह । छक – जोश, उत्साह ।

६५७. कवेसर – कवीश्वर, महाकवि, कवि । दाबसी – अधिकार में करेगा । अभमाल – महाराजा अभयसिंह । गुण – काव्य, कविता । तपसी – ऐश्वर्य का उपयोग करेगा । अभौ – महाराजा अभयसिंह

६५८. ध्रुव – ध्रुव । सुमेर – सुमेरू पर्वत । अंबर – आकास । रिधू – अटल ।

६५९. लोइ – लोक । करणै – कवि करणीदान ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ग्रहपति सूर प्रकासतै, बहिर[1] दिवस प्रकास ।
रूपक सूरज प्रकासतै, अंतर नित्त उजास ।। ६६०

इति श्री महाराजाधिराज[2] महाराज[3] राजेस्वर[4] स्री स्री स्री स्री
स्री अभैसींघजी[5] रौ ग्रंथ नांम सूरज[6]-प्रकास कविया[7]
करणीदांन[8] रौ कहियौ संपूरण[9] सं०[10] १८०७....[11]

---

१ ग वाहिर । २ ख. माहाराजाधिराज । ३ ख. ग. महाराजा । ४ ख. राजराजेश्वर । ५ ख. ग. अभैसिंघजी । ६ ख. सूरिज । ग. सूरभ । ७ ख. ग. कवीया । ८ ग. करनीदांन । ९ ख. ग. संपूर्ण । १० 'ख' प्रति में नहीं हैं । संवत १८४१ वर्षे मासोतम । यहां पर 'ख' प्रति में–।। श्री रस्तु ।। ।। श्रुभंभवतु ।। ।। श्री ।।

नोटः– 'ख.' तथा 'ग.' प्रतियों में यहां से आगे लिपिकों के लिखे हुए निम्न वर्णन अलग-अलग मिलते हैं:—

'ख' प्रति में :—

संवत् १८८४ रा फाल्गुण शुक्ला । १५ । शनिवासरे ।। लिखितं बोडा मगदत्त । योध नगरे । मांनसिंह राजे श्रुभम् ।। सूरजप्रकास ग्रंथ संख्या । ६२२४ ।। लेखक पाठकयो ।

'ग.' प्रति में: —

मासे आसाढ़ मासे शुक्ल पक्षे षष्टी ६ तिथौ गुरुवारें पोथी महाराजा श्री श्री श्री श्री अषैसींघजीरी ।। लिषतं । रामचंद सेवक चोथरांम सुध करतव्यं: वष्तनोर नगर मध्ये लिपि कृत चातुर्मास करतव्यं । माहाराजाजी श्री अषैसींघजी दीर्घायु । मंगलं लेषकानांच । पाठकानांच मंगल । मंगलं सर्वलोकांनां भूमि भूपति मंगलं ।। १ ।।

।। कवित्त ।।

तुम प्रवीन विध्य जथा योग्य जानु सब ,
गुन के गहिया हित सब सु विचारौ हौं ।
लीये सुभ रीत विपरीत कहु वीसै नाह्य ,
परम सुग्यांन विध्य सबै उर धारौ हौं ।
पर उपगारी रीत संत सब मिल आई ,
सोय अब तुम धरे कारज्य सुधारौ हौं ।
सकल अरथ ठाकुर श्री अषैसिंघजीकु सुफल ,
फलो थिरता हमारी करौ सबै गुन धारौ हौं । १

इति शुभ भवतु कल्यांणमस्तु लेषक पाठक दीर्घायु वाचै भणै ह्यांनु आसीवचन रांम रांम वाचासीः ।। श्री ।। ।। श्री ।। ।। श्री ।।

---

६६०. ग्रहपति – सूर्य । उजास – प्रकाश ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट १

नामानुक्रमणिका

अ

अंगद ७१,
अंगरेज १८७, २५६
अंगारक ११७
अंतक ४६
अंध (अंधकासुर) २५, २६
अंधक २४६
अंबानयरेस १५८
अखतेस १६६
अखमल २४१, २४३
अखमाल ८६, १३३, १५०
अखा १११
अखावत १४६, १५६, १६६
अखाहर ५२
अखौ ११०, १२०, १४३, १४७, १५०, १८६, २०४, २०७, २४४
अचळावत २१०, २१२
अचळेस ८६
अछर २४७
अच्छरा ४३
अछरा २४७
अजंबा २२७
अंजन २४१
अजन्न ५६, १८२
अजंब २२७
अजबावत ७४, ११८, २२२
अजबेस ६३, ११८, १४७, १५३, १५४
अजब्ब ६२, ६३, ६०, १४६, २२७
अजमति १६४
अजमाल २७२
अजा १६७
अजावत ४५, १२२, १५४, १६१, २२२
अजीत २०१
अजूब १२
अजै-कपि ११३
अजौ १३२, १४८, १४६, १५०
अणंद ६३, ११६
अणंदावत ६६, १०६, ११०, १५०, २१६, २१६
अणंदेस ७१
अणदेस ६१, ६३, १३३, १३७, २०१
अणदौ १२७, १६५, २०६, २२६, २३४
अण-वत ११८
अवीत २७३
अध-राज १६६, २३४
अध्यातम २७२,
अनपाल ६५, २१२, २१३
अना २४६
अनल-पंख ३७
अनोप ६०, १०६, ११२, १३७, १६१, २१२, २४४
अनावत ६४, ७३, ६७, ६६, १२२, १३८, १४७, १५०, २१६
अनुस्टुप २७३, १५०, १५१, २०७, २१६, २३२
अनौ ६३, १०६, १४०, १४७, १५१, १६०
अपच्छर २०५
अपछर २४६, २५४, २५५
अबदार १६३, २३४
अबदुलरजा २५६
अबरस १२
अबलक्ख १२

अबा १६३
अबू गिर १५६
अभ १२५, २७४
अभ-ऊत ६१
अभपत्तिय ३६
अभपती २२
अभमल १, २३, २५, २४४, २४५, २४७, २४८, २५२, २६०, २६२, २६५, २६७, २७२
अभमाल २६, ३७, ४१, ४७, १२६, २००, २४८, २४६, २५०, २५१, २६०, २६१, २७४
अभमुन्य १०६
अभम्मल ६२
अभयसींघ १७
अभ-रांम ८१, २५८
अभरीम ८०
अभसाह ४, ४६, २७३
अभा २१, २४, ४४, ७७, १२५, १३६, १६५, १६४, २४५, २४८, २५६, २६२, २६५
अभायण २
अभावत ८६, १२७, २०१
अभैं ३, २२, २४, २५८, २६१
अभैंमल ४१, ४८, ६५, ६८, ७७, १५५, १६७, १६३, २७२
अभैंसींघ २२, ४४, ४६
अभो २, ४१, ७३, १२३, २१६, २१६, २२५, २६०, २६३, २६६, २७४
अमर २३६, २४१
अमरा १७१
अमरा-पुर १५५
अमरावत १०७, १३४, १४५, १६१
अमरेस ५८, ११२, १५३, १५७, २६६
अमांन १३३, १६१
अमावस ३८
अम्मर ५८, ६४, ७३, १५६
अम्मरलोक ५६
अम्मरसींग १५१
अम्मरसींघ ६८, ११०
अम्मरसोंघ १५७
अरजण २४२
अरज्जण ५७
अरधनारी नाटेसुर २५४
अरब १०, २८
अराबा २६३
अरिज्जण-साह ८६
अलमसतखांन २५६
अली २८, ४०, १०३, १६७
अली-आबध २५८
अली जमाल २५८
अली महमंद १०३
अल्लाह ३४
अल्ली जनांद ४०
अवदार १६३
असटम्मी २
असत-खांन २५६
असपति २६७
असप्पति २६६
असमेघ १८१, १८६
असुर (मुसलमान) ४१, १५४, १६५, २१०, २१५, २२५, २३७, २३६, २४६, २५४, २५५, २६०, २६७
असुरांण (मुसलमान) ६६, १७५, १६७
असुरायण २६१
अस्टंग २७२
अहमंद ७२, ७८
अहमदपुर २६५, २६६
अहमदाबाद २५४, २६४
अहमदसहर २६०
अहिरण १७

आ

आंमखास २६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आमदीवांण २६१
आगरा २६४
आगरै २६४
आगाअजाद २५६
आणंद ६४, ६१, १३३, १६१
आणंदरांम १८४
आणंदसिंघ ६५
आणंदसी ६३
आबनूंसी १३
आरकट्ट ५
आलातीन १०
आवधअली ४०
आसकरन १०५
आसड़े १६४
आसफां ४, ३३
आसल १७२, २३१
आसाखां २५६
आसावरी १६
आसुर (मुसलमान) ४

इ

इंद ३८
इंदर १०७
इंदो १५६
इंद्र २५६, २५७
इंद्रजीत २
इंद्र धांनख ६
इंद्रभांण १३४, १३६, १४५
इद्रसाह १२२
इंद्रसिंघ ६३
इंद्रसींघ २२७, २३७, २३८
इरांण २६२
इरांन २५६
इनतुल्ला १६४
इमांम ४
इसथांन २५६

ई

ईद २३२
ईडर २७१
ईरांन ३०
ईस ७१, २६२
ईसफहां ४
ईसफां ३३
ईसर ७६, ६४, १३१, २०७, २१६, २२८, २३४

उ

उगरावत १५१
उगरेस १५३
उग्रसेण १५३
उजबक २५६
उजबक्क ७७, २५२
उजैणिय १६१
उजेण २६८
उज्जबर २६६
उद १६४
उदावत ७१, ७३, १०४, ११७, १२०, १२१, १३४, १४२, १४५, १६६
उदैगिर १८५
उदैचंद १७३
उदैसिंघ १८४, २०८
उदौ ५८, १३३
उमेद ५७, ६४, ७४, ६२, १११, ११८, १२८, १४६, १५१, २७०
उमेदक ६७, १२०, १३२
उमेदह १२३, १३३, १३७
उरजण १२३
उरज्जणसिंघ ७५

ऊ

ऊद ५३, ६४, १०८, १११, १३०, १३१, १७४, १७६, २२१, २२६
ऊदक १३०

ऊदभांण १४३
ऊदल ६०, ६७, ६८, १२३, १२६, १६१, २०६, २०८, २२३
ऊदलसाह १६०
ऊदह १२१
ऊदहर २४५
ऊदहरा ११३, २२१
ऊदहरौ ११६
ऊदावत ६५
ऊहड़ १४१, २२५
ओरंग १६२

क

कंठ २६८
कंठराज २६८
कचरावत १२८
कछवाह ६२
कछी ११
कजलीवनि ५
काजांकां १६४
कठियांण ११
कनको २१२
कनह १०२
कनोजां ३४
कम ७६
कन्ह ८६
कन्हावत ६६
कपाळी २५२
कपिराज २
कविराजा २, ३७
कबडी ३६
कमंध २, २३, ३० ५७, २५६
कमंधज ८१, ११७, १२६, २६८
कमंधांय ७६
कमध २५३
कमधज १, ४०, १६६, २३६
कमधज्ज ५७, २०६, २१४, २१६
कमधज्जयं २३६, २४०
कमधांण १६७
कममेस १२३
करण २७४
करणसिंह ५१
करणीदांन ७४
करणेस २१६
करणे ७४, २७४
करणोत ६५, १२३, १२८, १४६. २१७, २२२
करणो २१६, २२०, २३०
करन २१५
करनाजळ ५१
करनी २३१
करनोत १२३, २०१
करनौत ७१
करनो २१७
करम ६७, ११०, ११८
करमसिहोत २२३
करम्मसियोत २२३
करीम १६५
कलम (मुसलमान) २४७, २५३
कलम्म ३३, ६७
कलावत ८४, ६७, ६८, १३३, २२३
कलिद्री ६६
कलियांण ५३, ६१, ६४, १३१, १३५
कलो ६१, ७२, ११६, २२८, २३३
कल्यांण २३३
कसमीरखांन २५६
कांन ६६
कांन्ह ६७, १३३, २०६, २१३, २४४, २४५
काजम २५६
कागड़ा १२
कातिक २७३
कावमतेस १३४
काबिलसींघ २१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कायम्म ३, ४०
कासिम २२१
किती १३१
किरतेस ६१, २०८
किलम ४, २८, २०३, २०५, २०६, २१२, २१६, २२३, २३३, २५५, २६०
किलमांण २२, ६६, १३४, २३०, २४२
किलमाक १६०
किलमेस ६३, १५६
किलम्म ३४, ५५, ८६
किलम्मक ११२, १५७, १७४
किलम्मेस ३१
किसन १६४, २४१, २४४
किसनावत ७२, २१६, २२३
किसनेस ५५, ६०, १२८, १५६, २४५
किसनौ २४१
किसन्न ५५, १३३, १३६
किसमसी १२
किसोर ६०, १३८, १४८, २१८
कीरतसिंघ ६४
कुंभ ७४, ६१
कुंभावत २३१
कुजरक्कबंग २५६
कुजावत १५४
कुतब २५६
कुमंत १२
कुरांण २६, ३३, ४०
कुसळसिंह ५०
कुलव्रावत ६६, ११२, ११८, १४३, १५४, २२६
कुलळाहर ८१
कुसळेस ५०, ५१, ६०, ७२, ७४, ७७, ८६, ६०, ६५, १५२, १५८
कुसळौ २२८
कूंप ६८, ८०, २१३
कूंपहरा २१५, २४५
कूंपावत ६६
कूरम १५८, २४५, २४७
केत ४८, ४८
केसरीसिंह १६१
केसव १३८
केहर ५६, ६७, ६८, १४८, १५२, १५८, १६१, १६२, १६४, १६७, १६८, १८४, १८५, २२६, २३०
केहरि ५८, ५६, १०८, ११०, ११६, १३७, १४७, १६७, २३२, २४२
केहरिया १८५
केहरियौ १६१, २२२
केहरी १२, २३७, २४१
कैरवां ३०
कोम २
क्रन २०१
क्रनोत १४८, २०१
क्रन्न ५१, ५७, १०४, ११०, १३५, १३७, १४६, २०१, २०२, २३०, २४५

ख

खंड प्रसत बलमीक २७२
खंडीवन ८०
खधार १०
खंधारी १०
खगेस ६१
खड्गावत २१५
खड्गेस ७२, १३१
खांखो बंधां २५३
खवास १८४
खांन ८१, ८३, ६०, ६१, ६३, ६५, ६८, ११८, २२६, २३२, २५६
खांन बहलोल २५६
खांन सिरदार २५८
खिड़ियौ १७१
खीचिय १८४, २३४

खीम ७६, १६०, १७७, २१०, २१३, २६६
खीव करम्र १४७
खीमक्रनां २२२
खुरसांण ५२, ७१, ८२, ६२, ६८, १३६, १६४, २३६
खुरासांण ४,
खेत १३५, १६५
खेतल १४६, १५०, १७१, १६४
खेतसियोत १४३
खेम ६४, १२७, १३५
खेम करम्रि २२८
ख्युसळहुचंद १८२
ख्वाजा बगस १६४

ग

गंग १६, ८४, १३७, १४०, १७६, २३६
गंग-धार ५४
गंगेव २०
गजण २३८
गजपति २४७
गजबंध २३८
गजसाह ६८, ७४, ६७, १५२
गजसींघ १३४
गजावंत १६०
गजो ६६, १४७
गज्जर १०५
गरीबहदास १२२
गहलोत १६१, २३४
गाजीयसाह ११०
गाहड़मल्ल १७३
गिरद्धर १३१, १७४
गिरद्धरदास १७४
गिरधर २५
गिरधार १७५
गिरधारिय १७५
गिरधीर २३४
गिरमेर ६४, १३५, १४४, २०४, २१०, २२१
गिरसुता २५५
गुजरात २७२
गुज्जर २६६
गुणदास १४३
गुमांन ६०, १००, १०६, १०६, १३४, २१०, २१५, २२६
गुरड २३, २५
गुलजार १२
गुलमीर ३
गुलमीर खांन ३
गुलहसन २५६
गुलाब २३६, २४०
गूजर ३३, १८७
गूजर-खंड १८७
गूजरां ३३
गोकळ ३८, १३१, १४६
गोकळऊत १८४
गोकळदास १८३, २११, २४०, २४१
गोपाळ १८३
गोपियनाथ १२३, १३२, १४७
गोवै १६४
गोयंद ६२, १४०
गोयंददास ६८, ११८
गोरख १६७
गोरखदास १६७
गोरधनोत १२१, १४८, १६०
गोवरधन्न ६१, ६८, १२२, १५५
गोविंद २३
गोदावत ६५
गोरधनोत १२०
गौहर २५६
ग्यांन १०६, २१८
ग्रीखम २४, ७५, १४८, १८४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घ

घासी १८४

च

चंग १०
चंद ७१, ७३, ९६, १४०, १४३, १५०, १७८, १९३, २०५
चंदण ३७
चंदहरौ ८९
चंद्र १९५
चंद्र-भांण १५८, २१८
चंद्र-सेण १११
चंद्रहास ७३
चंपा १३
चंवांण २२६
चकवा १२
चक्रव्यूह १०६
चगथ (चगथां) २२६, २३१
चतुरावत १३४
चतुरेस १४८, २०२
चत्र-कोट १५८
चत्रू-भुज ७१, ८९
चमराळ ४९, १०९, १२३, १३७, १९९ २२४
चरख ६
चरख-दार ८
चहुनई १०
चहवांण १७५
चहुवांण १५५
चह्वांण १५५, १९३, १९४
चाणूर २४१
चांप २११
चांपावत ४९, ५०, ६६, २१४
चांमंड-पूत २०
चारण १६७, १७२
चाळक २७०
चीन ५
चुंडावत १३२
चुगल (चुगलां) २१३
चुवांण २२८
चूंप २१३
चूर-स्यांम १७
चूहड़-खां २५८
चूहड़ खांन ८१
चेचि १०२
चैंन १५८, २२१
चैंनकरन्न १२७
चौडा ४६
चौळावत ६४
चौसट्ठ २५१

छ

छतौ ६२, ७०

ज

जगड़ १९५
जगत २२४
जगतावत ९६
जगतेस ६०, ७६, १४७, २१५
जगतौ २२४
जगनाथ ५७, १३९, २५४
जगतपति २४२
जगमाल १५०, २२८, २२९
जगरांम ६१, ९३, ११६
जगराज ६५
जगरूप ९८, १३६, २२४
जगसाह ९०
जगावत ६३, ९४, १४०, १४५, १४७, १५०, १५८, १५९
जगौ १५१
जटाळ २५०
जटियाळ २५०
जडळग २३७
जनमेज २५६

जमंद १३
जमजाळ ११५
जमधरं २४६
जमसेरखांन २५६
जमांन १३७
जमीखांन २५६
जयचंद १
जयतेस २१०
जयदेव १६२
जयरांम १७२
जयसाह १२२, १५८, १८४
जयसींघ १४६
जरकसीं २६५
जळंधर १५८
जलाल १६५
जली २१६
जल्लाल १६४
जवन २०१, २०३, २१५, २१६, २२१, २२२, २२४, २२७, २२६, २५१, २५८, २६०
जवनांण १८२, २०७, २१०, २२२
जवनेस ५८, १३१, १४०, १६६, २०८
जवन्न १११, १८१, २७०
जवांन ८१, ११८, १५७, १७६, २१४,
जसकरन्न १२८
जसक्रन्न ६५, १३१, २१४
जसराज ८५, ११६, १४०, १६८, १६१
जसव्वंत ५६
जसा ८६, १३६, १६१
जसावत ६१, ७३, ६६, १०८, १०६, ११२, १३३, १४६, १४८, १५१, १५६, १६६, २२६
जसावतसिंह २२६
जसं ११५
जसो ८५, ११६, १४८, २०७, २११, २३३, २४२
जांम २७१
जागावत ६४
जाड़ेचा २७१
जादव २२८
जाळंधर ४५
जालम २३७
जालमो २३७
जालिम २४०
जालिमां २३७
जालिमसाह ६७
जिलहरी १३
जीवण ६६, १२०, १४५, २०२, २३२
जीवणदास ६४, ८८, १२०, १४३, १५१
जीवणो १६५
जुंझार १४७
जुगावत ११६
जुरा ११२
जुगिण २५८
जुड़ ६०
जुजठ्ठल ५२
जुध-हर १५८
जरावर ११६, १२०, १५७, १५६
जुरावरसींघ ११२, १२१
जूहार ६६, २७१
जेठ ३६, ७८
जेसळमेर २७०
जैकरणेस १८३
जैचंद २६
जैत ६०, ६३, ७३, ८४, ८५, ८६, ६७ ६६, १०४, १०६, १२१, १२३, १२६, १२७, १३१, १३५, १४१, १४२, १४६, १५२, १५६, १६०, १६१, २०४, २०७, २१०, २११, २१५, २२०, २२४, २२६
जैतहमाल १३५

जैमलसाह १२३
जैसळमेर १४३
जोग १२०, १३६, १५२, २१०
जोगणि २५०
जोगणी २५५
जोगारंभ ८४
जोगावत ६६, १०५, १६१
जोगियदास २०२
जोध ६५, ७६, ६६, १००, ११०, ११८
१३६, २१५, २२४, २३८, २४४
जोधहदास ८८
जोधहर ११३
जोधहरां ११३
जोधांण १६
जोधा ४५, १११
जोधावत १०४
जोर २००, २१८, २४५
जोरावर ६६, ६८
जोरावरऊंत ७३
जोरावरसिंघ ६१, ६३
जोरावरसींघ ६६, १०८
जोरौ ६८, ६६
ज्योतिख २६५
ज्योतिस २७२
ज्वाळामुखी ३५

झ

झालांपति २७१
झुंझार ६२, १४८
झुंझावत ७१, १०४
झूंझार २११, २१५, २२८
झूंझ १०४
झूंझण २७०
झूंझण २७०
झूंझ २१८

ठ

ठाकुरसीह १७७, १८५

ड

डाकदार ८
डूंगर १४६, १६४, २७०
डूंगरसीह ७४

त

तंग ६६
तखौ २०४
तरबूज २५६
तरियन्न ७६, ८१, ८२
तरीन ८०, ८२, ८३
ताजवली १६४
ताजीम २६१
तिमंगळ १२६
तिडां ३६
तिलोक ६४
तीड ३६
तुरक २२७, २६३
तुरकांण २१८
तुरकी १०
तुरक्कांण १६८
तुलछीवास १६२
तुळसी १६
तेज ५७, १००, १२१, १२७, १३७,
१६३, २०१, २१२, २२०, २२७,
२४१
तेजकरन्न १२८
तेजल १४७, २२८
तेजावत ५६
तेजो ११२, १३१
तोड़ा २१
तोरण १०१
त्रिकाळदरसी २६५

थ

थळी ११
थांन १३६, १७७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द

दइवांण २३८
दईवांण ११६
दईवांन ६०
दक्ष ८४
दज्जोण ३१
दत्त १४२, २५४
दयाळ १८४
दरगह ६
दरगाह २२
दरवेस २५६
दळक्रम्न १२८, २१७
दळपति १६१, १६६
दळसाह ६१, ७४, ७७, १५६, १७७, २१५
दळसाहि १५५
दलावत ७३, १०७, १४१, १५४, १५७ २१८, २२२, २२७
दलावतसींघ १२२
दली ५२
दलौ ५२, ६०, ६३, १०७, १३३, १४६ २०२, २१७, २२५, २३७
दसमी २७३
दसे-कंध ३१
दांन ६८, २१२, २४४
दिपावत १२०, १७३
दिली २६४
दिलीपत १६१
दीप ७७, ६५, १७७
दीपमाळ ३५, २६५
दुज्जणसींघ १५७
दुरंग ७४
दुरकेवा १०
दुरगावत १२३, १४०, २२६
दुरजणसींग १५५
दुरज्जंण १०६
दुरज्जण १४१
दुरज्जणसींघ १२३, १५५
दूजण २१६
दूद १५१, २१७, २४३
दूदहरौ ८७
देव ६५, १४६, १७८, १८०, २०१
देवकरम्न ६४, ६६, १४७
देउक्रनोत १४८, २११
देवपुरां २२६
देवराज २३४
देवावत ७१
देविचंद १७७
देवियसींघ ५६, २१४
देवीचंद ११८
देवोसींघ २४२
दौढियदार २३४
दौलतसाह २०८
दौलतसींघ ६४, १५६
दौलहसींघ १५६
दौलियौ (दौलिय) १६५
द्रगपाळ २३, ३५
द्रोणागिर २३
द्रोणपरब २७२
द्वरावत १५०
द्वरौ १४८
द्वारका २६६
द्वारमती १८०

ध

धधवाड़ १६८
धनड़ १६४
धनराज १४४
धनरूप १७७
धनावत ५८
धनियै १६५
धनियौ १६४
धनौ १२०, २१८, २३३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धर-गूजर ६२, १५८
धरमावत १७१
धरा १७७
धवेचा ७८, १३४
धांधल १६०, २३३
धांधिल १८६
धांधू १६४
धावड़ १८५, १८६
धिरा १५५
धिराज १६६
धिराहर १७२
धीर २३१
धीरज २१७
धीरजसींघ २४१
धूहड़ ५१, ५४, १०६, १२०, १७२, २२५, २४४

न

नंदलाल १८१, १८३, २३३
नंदी ८४
नकीब ४
नगारची १६५
नगो १३२
नथम्मल १६१
नथौ १४८
नधलवूत २१८
नबाब २६, ४०
नब्बाब ६, ३१
नरपाळ २३३
नरसिंघ ४५, ६२
नरांपति १५७
नरायणदास ६०
नरावत १३८, १४०, १५०
नरुहर २४७
नरू १८४
नरूदर १५८
नरो ६०, १३५, १८६
नवकोट ५०, ६२
नवलखांन २५६
नवलावत २२३
नवलो २२३
नवल्ल १७१
नवसहँस २१
नवी १६६
नारेसुर २५५
नाथ ५१, ६३, ८६, ६६, १०८, १२०, १३०, १५४, २०६, २१६, २३३, २४५
नाथौ १४५
नादाळऊत २१३
नायक १६४
नारद २६, ८०, १०६, १६३, १८७, २५२
नाहर ५४, ६०, ६१, १०४, १२१, १४१, १४५, १४६, १५२, १५५, १६१, २२६
नाहरखां १३८, १६१
नाहरखांन १३३, १६६, १८७
नाहरऊत १५२
नाहरसाह १५२
नाहरसीह १२१
नाहरौ १६५
निजरु १६५
निबाब ४५, २७०
निलागर ४६
निसाट १५६
निसार ८६
नीबाहरौ १२४
नैण (नैणसी) १७८
नौकोट ३०

प

पंचकल्यांण १३
पंच-मुख २११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचोळिय १८२, २३२
पंड ५२, ५६
पंडव २१६, २४५
पंडवेस ७१
पड़दार १६५
पड़िहार १६१, २३४
पट-सिचांण १३
पटौ १०१
पठांण ४०
पत-झड़ २६४
पतसाह १६७
पता १३६
पताळ ३५
पतावत ५६, ६७, ११३, १२२, १२३, २०२, २२६
पतौ १००, १०३, १११, १४५, २०१, २०२, २१३, २२०
पथ २१
पदंम २४७
पदमे २४७
पदमेस ५६, ८३, १२३, १४०, १४६, १५२, २०८
पदमौ २०८, २१२, २१५, २२२
पदम्म ५७, ६६, ७३, ७५, १०७, १४५ १६२
परताप ५६, ६१, १०२, ११२, ११८, १३३
परी ८८, १०७, २०३, २५२
पांडव ३०, १३१, १८२, २४१
पातल ६५, १५१, २४५
पातलसाह १४६
पातौ १०३
पाथ ४६ ५८, १०३, ११०, २२४
पारकरेस २७१
पारथ २२०
पारबती २६
पाराथ ३७
पाळ १३७, १८४
पालखी नसीन २६१
पावस ५
पासहवान १८४
पाहड़ २२३
पाहड़सींग ११८
पित १०६
पिथा १८३
पिथावत १३६
पिराग १५८
पिरोहित १६१
पिळा-अखतेस १६६
पीथ २१३, २३१
पीथल ६३, ७०, ६०, १४६, २१०, २१६
पीथल ऊत ६५
पीथावत ११०, १३६
पीर ३३
पीरसा पैक १६५
पीरसाह २५६
पीरोज २५६
पुर डूंगर २७०
पुरांण ३३, १४२
पुरोहित २२६
पूबू ५४
पूर २०६
पूरणसींघ १३६
पूरब १६४
पूरबियौ २२६
पूरबिया १४१
पूरब्ब ५
पेम ६५, ६६, ११६, १२१, २००, २२६, २३८
पोम १७७
पौस ११४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रताण १५३, १६२, २१०
प्रथिराज २४१
प्रथीसिंघ ७०
प्रळैकाळ २
प्रिथीराज १५०
प्रोहित १८३

फ

फतमाल ६३, ७०, १४८, १५३, २१०
फतावत ६४, ६८, ७०, ७५, १०८, ११०, १२३, १४८, १५०, २१७
फतै २३२
फतैचंद १७३
फतैपुर २७०
फतौ ५६, १०४, १२१
फरस २५६
फाग ११४, १२६, १८५
फागण ५०
फातमां ४
फातिया २८
फिरंग ५, २८
फिरंगांन २७
फिरंगिय ३८
फैजुला २५६
फौजदार ६

ब

बंकीयदास १४२
बंगस्स ६५
बंगाळ ३६, ६८, १४३, १४४, १६६, २५०
बँगाळक ६८, ११२, १५८, १८५
बँगाळिय १२६
बखत ६६, २३५
बखतसींह १६६
बखतसी १५१
बखतावत २०६
बखतावर ८२
बखतेस २, ६५, ७३, ६१, ६३, ६५, १४६, १७१, १६२, १६६, २००, २०१, २०६, २१६
बखतौ २१०, २२३
बगसावत १३८
बगसी ३
बगसै १६५
बगसौ ७२, २१७
बछराज १२०, १७८
बदरी २३३
बद्रियदास १४०
बद्रियसिंघ ७१
बद्री ६८, १३४
बद्रीयदास ११२
बलावत १३४
बलि ११४
बलूखांन १६४
बहलीम ८०
बहादर ६२, ६५, ६७, १२०, १६४ २२८, २३८, २४०, २४३
बहादरऊत ७२
बहादरसाह ६५, १५२
बहादरसींघ ६१
बाघ ११८, १४७, २१२, २१६
बारट १६७
बारठ १७१
बारहठ २३०
बालकिसन्न १८२
बावलि ११४
बासग २४६
बाहाबरऊत ८६
बिजावत ८६
बिलंद २६०
बींझ ५
बुध २४४
बुलगार २३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बुधौ २०६
बुंलाखांन २५६
बैताळ २६

भ

भंडारिय १७४, १७५, १७६, २६६
भंडारी १७४
भगवंत ७६, ६१, ६७, १६४, २४१, २४७
भगवांन ६६, ७१, ७६, १३३, १३८, १४७, १५२, १८६
भगोन २४२
भटी १४४, १४६
भदाबत १३२
भव १२१
भवसींघ २०४
भवानियदास २२७
भांज १३६
भांण ५१, ६६, १०८, १०६, ११२, १२३, १३५, १४४
भांण-पसाव ४१
भाउ ७६, ६४, १२१, २२०, २४५
भाउएदास १५२
भाऊ ५७, ६३, ६६, १५२
भाखर १३८, १५१
भागचंदोत १३८, १६०
भागवंत १६, ३३
भाटिय १४३, १५१
भाद्रवा ६, ३४, ३६, ३८
भायण १६१
भारथ १६, ३३, ५६, १५६, १७३
भारथसिंघ २१६
भारमलोत १३६
भारहमल २२५
भिमाजळ ८५
भीम ५७, ६३, ७०, ७१, ७२, १००, १०८, १२६, १३४, १३६, २०४, २१४, २१६, २१६, २२६, २४२
भीमड़ा ११, २४१
भुजनगर ११
भुजनेर २७१
भूंम ८६
भूपति १३६
भूपाळ २४२
भूम ८८
भैरव ५४, २४३
भैरवदास १०२
भोज ७४, ६३, १३७, १३६, २०४
भोजहरा १३८
भोजावत १८६
भोम ८७

म

मंछ २२८
मंजुघोखा २४७
मंडळा १३८
मंडळौ २२५
मंडोर १४३
मंडोवर १४३, २४४
मछरीक १५६, २०२
मदन्न ६४
मघा ७५, ८२
मघावत ६४, ७६, २५१, २०२, २२६
मघौ १४६, २२२
मनरुप २०७, २०६
मनूप १४८
मनोहरदास १३३
मन्नौ १६३
मरू ११३
मलानूर १६६
मलियागिरि १६०
मलेगिर ८७
मवातीखांन १६५
महऋन १२६

महक्रन २०१
महता १८३
महमंद ४, १०३
महम्मद १६६, २५६
महम्मदसाह २६६
महरांण १११, १७०, २१६, १६६
महरांपति १८८
महर्वेच १३५
महापति १८६, १८८
महारिख ६७
महिक्रन १५१
महिक्रन्न १५१, २३३
महियार १७१
महिरांण १५६, २०८, २४७
महीमुरतब ७६
महुश्रो २२७
महोबतसिंघ ६७
महोकमसींघ १००
मांगळिया १६०, १६३
मांगळियो २३२, २३४
मांडण ६४, १३३
मांडणोत २१३
मांणिक १०२
मांन ८८, ६०, ११६, ११७, ११८, १४७, १५०, १६२, २१४, २४४, २५८
मांनड ८१, २४५
मांनड़खांन ८१
माढ १५३
माधव ७३, १५७
माधवदास १८४
माधवसाह १५४
माधवसींघ १११
माधावत ६३
मायल २५६
माखंराव ४६
माहव २५२
मारू ११८
माल ५३, १०८, १४६, १५८, १६२, २२५
मालवी ११
माल-वीख १६
माहव ४६, ५६, ७३, ८८, १०६, ११० १३१, १३५, १३७, १४८, १८२, २०२, २१६, २२५, २२६, २३१
माहवसाह १०८, १३७
माहवसिंह ४६
माहियदास १७७
माहेव ११
मिरां १२२
मीर ५०, ६४, ६७, १०७, ११४, १३६, १४६, १५०, १८७, २३४, २५७, २६४
मुकंद ५३, ११८, १२८, १५१, १७०, १७६
मुकंदावत १४०, २०२, २१३, २२४
मुकदेस ६४, ८५, १५४, १६८, १६६
मुकंदौ १५१
मुकनेस १३५, १३६
मुकन्न ७४
मुगळ २७, १८२, २१३, २३२, २३६, २३८, २३६, २४७, २५२, २५४, २५६, २६०, २६१, २६४
मुगळांण १०८, ११६, १२२, १४२, २१६
मुगळांणियां १
मुगळाळ २२२, २५७
मुग्गळ ५२, ५३, ६६, ७०, ७२, ७७, ७८, ६१, ६५, ६८, १०२, १०६, १०६, ११६, १२५, १३५, १४०, १८२, १६१, २०६
मुजाइंद १६६
मुनि-इंद्र २४६
मुनिराज २०४

मुनेस १६५
मुन्यंद २४३
मुरद्धर २७२
मुरधर २६२, २६७
मुरधरा ११
मुरळी १६५
मुरहरी १३
मुरारिय १५४
मुलाबार ५
मुळावार १०
मुसकी १२
मुसिब १०
मुसैद १०
मुहकी २६६
मुहक्कम १३६
मुहणोत १७८
मुहम्मद २५६
मूंगळ ११६
मूगळ ८४, ११७, १२०, १२१, १४०, १५१, १५३, १५५, १५६, १६३, १६८, १७१, २१६, २२८
मुजायद १६४
मूहम्मद २६४
मेघ १३६, १३७, १४८, २२४, २२६
मेघडंबर ७, २७
मेघडमर ६
मेडतनेर ७७
मेड़तिया ७७, ८२, १००, २०३, २११
मेड़तौ २४४
मेर-गिर २१
मेछ ५१, ६४, १३६, १४६, १५१, १७०, २०६, २१०, २१३, २१४, २१५, २१७
मोकम ५७, २०६
मोकमसींघ १४७
मोकळऊत ८५
मोमना १०
मोहकम २३६
मोहकावत ६४
मोहण १२१, १५७, २०६
मोहणसींघ १२०, १५६
मोहनदास १०८
मौतब २५६
मौहकावत ६३, ६४
मौहक्कम ६१
मौहौकम ऊत ६६
म्रिधौ १६५

र

रंभ ३०, ८८, १०६, ११३, १५५, १६५, १८८, १६०, २०६, २०८, २०६, २२०, २४६, २६२
रंभा ३४
रगतवंसी २३६
रघु ७२, २५८
रघुनाथ ४१, ७८, १२१, १८०, २१२, २१४
रघुपति २४
रघुवंस २७२
रजपूत २५४
रणछोड़ १६३
रणधीर १४६
रणावत १३४
रतन २५, १५४, २४१
रतनागर ७१, १६१, १७६
रतनावत २०८, २१६
रतनेस ६१, ८६, ६६, १७६
रमाइण १७३
रमाकंथ २५
रमायण १६
रयण १६५
रळीयावर ४७
रवद २०६, २०८, २३८, २३६, २४०, २४४, २४५, २४७, २५१

रखवायण २६१
रखवाळ २, ३०, ३५, ४४, ५४, ५७, ६०, ७१, ८६, १२६, २३२, २४२, २४५
रसा १७६
रसावत १४६
रसौ १५४
रहमतुला २५६
रहमांण ६६
रांणइ ६६
रांणग १५७
रांणियवास ६२
रांम २, २८, ३१, ३५, ३७, ४८, ५६, ६३, ६७, ६६, ७०, ८६, ८८, ११६ १२१, १३६, १५२, १६२, २००, २०४, २०६, २०७, २०८, २१०, २११, २१४, २२२, २२८, २४०, २४१, २४२, २४४, २५६
रांमचंद्रेस १७३
रांमचंद्रोत २०८
रांमणा ६४, २३६
रांमनबाब २६०
रांमसी ६३
रांमायण २, ४१, ४८
रांमौ ७३
रांवण २, २८, ४५
राइद्रह ११
राउद्र ११
रागमाळा २७३
राघावत ६५
राजखां १६५
रांजड़ ५१, ५७, ६६, ११३, १२३, १३६, १४६, १६५, २०७
राजड़-ऊत २२०
राजड़ै २४४
राजसी २४५
राजाधिराज १६६
राठौड़ ८०
राफजी २८, ३३
रायपाळ १४१, २२६
रायमलोत ६२, ८५
रायसिंघ ६५
रायसींघ ६६, २२०
रावळ १३५, २७०, २७१
रासावत ५६
रासौ १३१, १५०
राहु ४४
राहुदार १६
रिख ४७, ७६, ८३, २०२, २६२
रिख-राज २०८, २५२
रिण-छोड़ ६२, १४३, १५४, १८०, १६२, १६४
रिणाजळ १७६
रु'डमाळ १०६, १४२
रुघनाथ ६०, ६८, २४५
रुघौ १३१
रुदावत ६२
रुद्र १२७
रुद्रागण ८४
रुद्रायण १८७
रूप १५०, १५३, २३३
रूपहरा २२५
रूपावत १४०
रूमहरी १०
रूम ८२, ८६ ६३, ६६, १०७, ११८, १२१, १४१, १४७, १५०, १५३, २१२, २१६, २२६, २२७, २३२, २३३
रेंणायर ५७
रेंवत पसाव १६६, १६६
रेंण ११६, १३५, १३६, १७८, १७६, १८०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रैणातर-ऊत १८३
रैणायर १७६
रैवा ५
रोद १०८, ११०, ११५, ११८, ११६, १२२, १४४, १४६, १५०, १६५, १६२, १६३, २४८, २५१
रोद्र ५२, ७८
रोसन अलाह २५६
रोसनी १०, १२
रोहड़-रांण १६७
रोहड़ियौ २३०
रौंद ६५
रौद ४६, ६७, २०७, २०८, २१३
रौदाळ २५०
रौद्र ७८
रौद्रव १५६, १८४
रौद्रांण ६

ल

लंक २, २३, २६, ४१, २००
लंकी १७
लखधीर ५८, १३१, १७७, २११, २१६, २२४
लखमण २४
लखावत ११६, १३१, २२४
लखं १६२
लखौ १२०, १४६, १६३, २२५
लछमण २
लाख पसाव २७४
लाखौरी १२
लाल ६५, ७२, १००, १०४, १३१, १५०, १५३, १५४, १७१, १७३, १६५, २०८, २१४, २१७, २१८, २४५
लूणपुर २७०
लोदिय २३२

व

वंकौ १४१
वंदाबनदास १३८
वखत ७१
वखत १५४
वखतावर ७६
वखतेस ५६, ६६
वनराज २२६
वनराव ६७
वनिराज ८६
वमल्लिय ७८
वरंगन १८५
वरसाळ २
वरसींघ २११
वला १५८
वसंत ४१, ८२, २५२
वांकौ १४१
वांसहवाळ २४५
वाघ १०४, १०६, २१४
वाघावत ६३
वाद अहमद २
वायण १६
वारंग १६५
वारी १६५
विकापुर २७०
विजपाळ २२, ६०, १३७, १४१, १४८, २३२, २३५, २३६
विजपाळौ २२, २५
विजावत ६२, ६२, ११६, १३५, १५०, १८३
विजेस १७६
विजैदसमी २७३
विजैमल २२६
विजौ १४६, १६३, १६५
विदांमी १२
विर-मांण १४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विलंद ३८, ३६, ४१, ४४, ४५, ७६, ६६ १७६. १६३, २२१, २४६, २४७, २४६, २५०, २५१, २५२, २५६, २६१, २६२, २६४, २७०
विलंदेस ३१
विल्लायत २७
विसनेस १३४, २०१, २४६, २४७
विसनौ २१२
विसन्न ५८, ११४, १७१
विहारिय १०६, १३८, १३६, १४३, १५१, १६५
विहारियखां १६३
विहारियदास १०४, १६२, २२४
वीझाजळ ६
वीठळ ६८, १४३
वीठळदास ६६, १३३
वीदहुरा १३८
वीर २६, ७०, २३१
वीर-भद्र २६, ३७, २५२, २५५
वीरम ६२, १५७, १६१
वीरांण १६८
वीसहथ २५
वेव १४२, १८१
वेण ६३, १३५, २०८
वेणावत ६५
वेताळ २६
वेरियसाल १३५, १५७
वेरो २४३
व्यास ७३, १७३, २३३
व्रजगिर २३७
व्रजपाळ १४६
व्रजराज २४, २००
व्रह्मांण १७१
व्रिंदावनवास २४५

स

संकर २६, १६३, २२५
संगीत-सार २७२
संगीतहू सागर २७२
संगो १३३, १३८
संग्रांम १२२, १४६
संजाब १२
संभर १५३
संभरवाळ १५३
संभरीक २४५
संभु २४३
समंद १३
सकतावत १०८, १४८
सकतेस ६२, १३४, १४०
सकतो २४५
सगत २१३
सगतावत ५४, ५८
सगतेस ५२, ७३, १०५, १४७, १५३, २०१, २४०
सगतो २१५
सतावत १४६, १५७
सताहू १००
सतिदांन १७१
सत्यासियो २७३
सत्रसाल ६२, १२२, १३७
सदमाल २२३
सदावत ६५, १००, २१२
सदो १४३, १८४
सनकादिक १८०
सनि २७३
सपतास १८, २३, ४७, १८६, १६७
सबज १२
सबळावत ६८, १२०, १५३, १५५, २२२, २३१
सबळेस ५७, ७४, ६२, १०६ ११८, १६०
समीपमुकति १८०
समो ६५
समेळ ६०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समसेर बहादुर २५६ ।
सयद ३, १८, ४०
सयदांण १६७
सरणा १२
सरदार ७७, ८३, ९९, २११ २१६,
२२७
सरफ १९५
सर-बुलंद २५, ३९
सरस्सति १८०
सरियम्न ८१
सरीनह ४०
सरूप ७६, २२६, २४२
सलेम १०३
सलौ २०८
सवाइ २३८
सवाइय ११०, ११२, ११६, २१४,
२२७, २४५
सवाइयसींघ ११९
सवाईं २४०
सवाईसिंघ ८९
सहदेव १८३
सहसमाल १४९
सहसावत १४०, १५१, २०७
सहांणिय १९१
सांगण २२२
सांदुवां २३१
सांभरि २७१
सांभळ ११८
सांमावत १८५
सांम ६५, ९४
सांमंत ७१, ९८, १३१, २१६, २३६,
२४४
सांमत ७२, १००, १४८, १५३, २१४,
२१६
सांमतऊत २१४
सांमत चंद १७८
सांमत साह ६५
सांमत सिंघ ७६
सांमत सींघ २३६
सांमळ ११२
सांमळ ऊत २१०
सांमळदास १९१, २२८
सांवत ९३
सांवळ ६४, ८९, १३५
सांवळदास ७६
साजोति ३६
सातम २
सादल १२१, १२३
सादूळसींह २४२
साबरमत्त ७८
साबरमत्ती २५८
सारसुत व्याकरण २७२
सालांण ५
सालिम २४०
सालिमो २३९
साहसमल ५६
साह ४, १९२
साहग्रालम २५९
साहब १३९
साहवांन २६५
साहिजादौ २
साहिब ९१, १४६, १५२, २०६, २३२
साहिबखां २६४
साहिबखांन ५९, ६५, ७४, १३२, १३६,
१४१, १५७, १६१
साहिबज्यादौ २
साहिबसिंघ १०४
साहिबसींघ १६१
साहू १९०, १९६, २६७
सिंघ-प्रभा १९५
सिंघळदीप ५
सिंघवी १८३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिंदली १२
सिंदूर ६१६
सिंघ १४४
सिंघल १४३
सिंधव १०१
सिंभू ६६, २२४
सिंभूसिंघ २३८
सिखर २४५
सिध गुटका १६
सिरदार ६१, ७०, ७६, ८८, ६८, ६६, १००, १०३, १०७, १२१, १२२, १५२, २०३, २१०, २३३
सिरबिलंदखांन २, २६, २५६, २६०, २६२, २६३, २६४
सिरोहिय २७१
सिव १४६, २५२
सिवड़ांपति १६१
सिवदांन ७२, १०४, १०६, ११८, १२२, १४२, १४८, २०४, २०६, २१५
सिवराज २५५
सिवराति २३६
सिवसाह १३१
सिवसिंघ २२०
सिवसींघ २२६
सिवावत ६५
सिवौ ७३, १३४, १६१, १६५, २११, २२०
सींघ ११२
सींघउमेद १२२
सींघव २३५
सीदक १६५
सीह ११२, १२१
सीह-गुमांन १३४
सुंदर १४६, १७८ १६३
सुंदर-ऊत २२५
सुंदरदास १०६
सुखराज २४२
सुजांण ७४, १४७, १६१, २१२, २१३, २१६, २३३
सुजावत ५३, १४१, १५२
सुजाहर ५३
सुद्रसेण २१६
सुभकम्र १६६
सुभरांम ११६, २२१
सुभसाह ११६, २२४
सुभा १२६
सुभावत १६२, २२१
सुभै १६६
सुभौ १६१
सुमेर २७४
सुरंग १२
सुर (हिंदू) ४, ४१, १०१, २५५, २६०
सुरजपसाव १७
सुरज्ज पसाव ४६
सुरत २४०
सुरतांण ७२, ७३, १३६, १४५, २१५, २७०
सुरतेस ६०, ७४, ६३, २३८, २४१
सुरतौ २०२, २११
सुरनाथ २१७
सुरांपुर १६५
सुराचंद २७१
सुरावत ६०
सुरेस ७४
सुरौ १५६
सूजड़ै १६४
सूजावत ५३
सूर ८५, ६१, १२२, १४४, १४५, १४६, १४८, १४६, १५४, १५६, २०६, २०६, २२८
सूरज पसाव ३७, २५१
सूरजप्रकाश २७४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूरजमल्ल १७१
सूरजमाल १२३, १३६, १४६, २०३, २०४, २१६
सूरजिप्रकास २७३
सूरत २४२
सूरतसिंघ १४६
सूरतसींघ १२०, १३८, १४०
सूरत्ति २६८
सूरप्रकास २७५
सूरावत १४६
सूरिजप्रकास २७२
सूरिजमाल २०१
सूलहरी १३
सेख २८, १६६, १६५, २५६
सेख अलियार २५८
सेखहरौ २२६
सेखावत ६२, २१८
सेज बदार १६४
सेर ७६, ७६, ८०, ८१, ८२, ८३, ६८, २१८, २३८
सेरविदारखां २५६
सेरस २५६
सेर-साह २४१
सैद २५८
सैयद ४०
सोढ २१८
सोनंगरा १५५
सोनंगिरौ २३२
सोभ ६२
सोवना ११
सोसनी १२
स्यांम ६७, १००, १४३
स्वरूप २०६

ह

हंस १२
हंसा १२
हठप्रदीप २७२
हठमल २३६
हठमाल १३१
हठि-खांन १६४
हठी ६२, ६४, ७४, ८६, १०५, १०७, १३४, १४४, १४५, १५७, २३४
हणमंत २३, ३६, १३८, १६४, १६५
हणमत २१
हणूनाटक २७२
हणुमांन १३४
हणूं २११
हणूमत १६३
हदमाल ११६
हदातुल्ला २५६
हवौ ११३, १६०
हमसेर २५६
हमीर १६५
हयग्रीव १४२
हरकिसन ६०
हरदास १६३
हरनाथ ५८, ७१, ७८, १०५, ११०, १२०
हरसींघ ७७, १६३, २११, २२४
हरहमद २५६
हरिद ५६, ७६, ८६, ६३, २०६, २२५
हरि १०६
हरि किसन २४५
हरिनाथ ७७, १३६, १४८, १४६, १५५ २०७, २२०
हरियंद १४२, १४६, १४७, १५४, १८४, १६३, २११, २२६
हरिभांण ६६
हरियौ २०५
हरिरांम १३५
हरिलाल २३३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हरी १३, ६३ ११६ ,१२३, १५२, १५६, १६०, १६४, २१६, २३२
हरेवी १०
हलवद २७१
हलवाह १४६, १६२
हळवाहि १६३
हळिरांम १५०
हाडे २४७
हिंदव २४३
हिंदवमाल २१७
हिंदवसिंघ ८६
हिंदवां ३१
हिंदवांण ४, १६८
हिंदाळ ७७, ८६, १३८, १५२
हिंदुवांण २६७
हिंदु २५४
हिम २३१, २७२
हिमताउत ७४
हिमतेस ६०, १५७, २०६, २१२
हिमतौ २१३, २१४, २२२, २३३
हिम्मत १५२
हिम्मतसींघ २२६, २४४
हींद १५२
हींदवऊत २०७
हींदवसींघ २२८, २४३
हीमतसींघ १५४
हुजदार १७४, २३३
हुमाऊ १४०
हुल १६१
हुसेन २५६
हुसेनाबाद १०
हूर ३४, ४३, ६४, १०४, १०७, ११२, १६८, २१२, २४६, २५२, २५५, २६२
हूरवक ४८
हेदर-बेग २५६
हेम ३५
होलिय ५०
होली २५२

परिशिष्ट २

छंदानुक्रमणिका

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
छप्पय कवित्त	अभमल जयचंद अेम सबळ वळ लियां सकाजा	१	७	१
	असि 'धनियै' ओरियौ 'हरि' 'गोपै' करिहाकां	१६४	७	६६८
	अहमदपुर ओपिया अमल वजीर अभारा	२६५	७	९२९
	आब जोम तजि असुर सुर विहुंडाय साथां	२६०	७	९१९
	आय आय आछटै कमध दारण कळि चाळा	२५६	७	९०९
	आसाखां गुलहुसन मुगळ दरवेस महम्मद	२५९	७	९१५
	इक भाटो आवतो पिये दुब्बार सराबो	२६	७	७०
	इम जोपै आवियो महाराजा राजेस्वर	२६३	७	९२४
	इम त्रिहुंवे घड़ अडर भीच मगरूर 'अभा' रा	२१	७	६१
	इम लड़तां ऊमरां अरज कीधी जिण वारां	४१	७	११४
	इसै तेज तपि आज रजै 'अभमल' महराजा	२७२	७	९५३
	इसी ताव ईखियो, घाय मुगळ वळ घावां	२५९	७	९१७
	उडि पड़ै अंग अरध अरध अंग जुड़ै अपछर	२५४	७	९०५
	उण मौसरि 'अभमाल', सूर हाकलै सकाजा	३७	७	१०१
	एक वार ओरियौ झाट बीजूमळ झाड़ै	२५१	७	८९७
	कमध करै केवांण, झाट दोय विहर झिलमां	२५३	७	९०१
	करि सनांन भ्रम करै धरै भ्रम ध्यांन स्यांम भ्रम	१९	७	५६
	कितां कसै अेराक ऊंच पौसाकां ऊपर	२६	७	७१
	केयक रुधिर पिंड करै तड़च्छ खावै रवताळा	२५४	७	९०४
	कोट तोप कमधजां बिकै लोपै जमरांणां	४०	७	११२
	खंड प्रसस्त बलमीक हणू नाटक अध्यातम	२७२	७	९५४
	खमा खमा बोलता लोक लारां अणपारां	२३	७	६५
	खळळ संकळ मद खळळ मसत घूमत मदगळ	९	७	२६
	ख्वाजा बगस हठीखांन निडर मुजायद नायक	१६४	७	६६७
	गज भिड़ज पड़ि गरट्ट प्रगट बंध सुजि पाजां	२५८	७	९१३
	गहि बंदूक फिरंगांन मेघडंबर भभि मंडे	२७	७	७४
	'गिरधर' 'रतन' गरूर वणै हरवळ 'विजपाळो'	२५	७	६९
	ग्रीव पड़ै सिर गुड़ै भड़ां धड़ पड़ै भिड़ज्जा	१	७	२
	घायल उजबक घणा मरै मुक्कांम सुवकांमां	२६४	७	९२७
	चिलतह झिलम चढ़ाय ससत्र अंग कसे सचेला	२४	७	६७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
छप्पय कवित्त	चढे एम कळिचाळ पूर पखराळ पमंगां	२७	७	७२
	चढे सेल चंदवळां मुगळ वर गोळज गोळां	२८	७	७६
	छिबता उरस छछोह चुरस वीरारस चालै	२५७	७	६११
	जम रुपी जिणवार एक गोळौ गढि आए	३	७	६
	जरद पोसां जमरांण छांगि सिर विलँद सभारा	२५६	७	६०८
	जलां धोय ऊजलां काट कढिया अराबां	१६	७	५५
	डसण जजर डोलचां भळळ उजळळ भालां	२५१	७	८६८
	तीन पहर रवि तपै जियां ऊपर जग जांणै	२१	७	६०
	दगै नाळ रवदाळ जड़ै विकराळ जंजीरां	३५	७	६८
	दीपमाळ दिन उभळ सकौ वळ वळ सिंगारै	२६५	७	६३०
	नख अहिरण धजनळी कळि बाजू पींडा चक	१७	७	५२
	नवल खांन अंगरेज खांन हमसेर सुनाहर	२५६	७	६१६
	'निजरु' अनै 'करीम' बिन्है पडदार वहादर	१६५	७	७००
	निज सरीक पवन रौ धाव धखपंख जिम धावै	१८	७	५३
	नृति रंग राग अनेक करे नृतिकार कळावंत	२६७	७	६३३
	पखरैतां धजपूर सिलह ससत्रां रिण साजा	२५	७	६८
	पड़ै अली आवध अली जमाल बहादर	२५८	७	६१४
	पड़ै पाय सिर विलँद जांणै सरणाय सधारां	२६४	७	६२६
	परी हूर परणिया तठै नृत भाव वतावै	२५२	७	८६६
	पहरि तास पौसाक भळळ जवहर धर भूखण	२६६	७	६३१
	पाखर फूटि पमंग बोळ निकलै बरछी	२५२	७	६००
	पाळा होय विण पमंग जवन हालै पमंगां जिम	२६०	७	६१८
	पूजि सकति 'अभपती' सुरंग चिलतह साधारे	२२	७	६३
	प्रळै काळ घण पड़ै खाळ रुहिराळ खळक्कै	२५७	७	६१२
	प्रळैकाळ घण परै असण घणघोर अंगारां	३६	७	६६
	बरिमाळा गळ बिचै ओयण उभळता अंत्राळां	२५४	७	६०३
	बार हजार बंगाळ विलँद तिण बार वकारै	३६	७	११०
	बीज बचां बांणिकां भरै तीरा भूथारण	२०	७	५८
	बीज हजारां वहै सेल हजारां दुसारां	२५५	७	६०६
	भड़ पय दळ गज भिड़ज पड़ै विलँदरा अपारां	२६१	७	६२१
	मिळै सुवर रंभ हूर प्रेत भख मिळै अपंपर	२६२	७	६२३
	रति वसे महाराज दीत ऊगै सभिया दळ	२६३	७	६२५
	लोह डाच धरि लीण मळे हाथळ दुसमालां	१८	७	५४
	वजि नौबत मुरसलां हले चतुरंग भळाहळ	२६६	७	६३२
	वारी भड़ विरवैत वधै जीवणो विहारी	१६५	७	६६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
	सरा खगां साबळां घाव पूरा घट घाया	२५३	७	६०२
	साकणि डाकणि सकति सकति चवसठी समोसरि	२६	७	७७
	सातम निसा सरब्ब, अनै निसदिन असटम्मी	२	७	४
	साधन कजि सिवराज सको सिर मोहरि सधारै	२५५	७	६०७
	सालांण रा सुचंग सिधळ दीपरा सकाजा	५	७	६
	सिलै ससत्र कसि सूर विढंग चढियौ विजपाळौ	२२	७	६२
	सीसा जांमँग सोर, भार गाडा बांणां भर	२८	७	७५
	सुणे कीध अभसाह किलम ताकीद हुकम्मां	४	७	८
	सुत बगसी साधियौ आप सुत सुणै डरायौ	३	७	७
	सूंडि झाड़ि समसेर मारि साबळां महावत	२५७	७	६१०
	हाळबोळ छकहूंत हले असि चढण झळाहळ	२३	७	६४
	हैदळ पैदळ हसत हले दळ बळ हिलोहळ	३०	७	७६
	होय सिधू दळ हले तूर बाजतां त्रंबालां	२४	७	६६
त्रोटक	अंग ऊपर लोह उडै अजरौ	२०५	७	७३५
	'अचळावत' तेज लड़ै उरड़ै	२१२	७	७६१
	अछटे रिम खाग चखां अरणौ	२२१	७	७६८
	अडिगांण लड़ै खग पांण इसौ	२२३	७	८०५
	अणभंग 'मधावत' सूर अड़ै	२२६	७	८२५
	अतलीबल (भोज) सुजाव इसौ	२०४	७	७३२
	अतिवाहत साबल खाग अड़ी	२०१	७	७२०
	'अनपाल' तणौ छड़ियाल उरा	२१०	७	७५५
	अरणांग पतंग ज ई ऊफणै	२००	७	७१६
	असवार सरूप सतेज इसौ	१६७	७	७०४
	असुरां 'अचलावत' 'खीम' इसौ	२१०	७	७५४
	असुरां खग झाट हणै उरड़ै	२१५	७	७७४
	असुरां थट 'देव' 'कनोत' अड़ै	२०१	७	७२२
	असुरां दळ खागि हणै अपलौ	२२५	७	८१२
	आय दांत चढै लगि दैत इतां	१६६	७	७१३
	इण भांत करम्मसियोत लड़ै	२२५	७	८१०
	इण भांत चांपावत सूर अड़ै	२१४	७	७६८
	इम जूटत मेड़तिया अजरा	२११	७	७६०
	उण घूमर क्रोध झळा ऊझळो	१६७	७	७०६
	उण वार लड़ंत 'फतै' अजरौ	२३२	७	८३६
	कमधज गजां सिर घाव करै	१६६	७	७१५
	कर झाट सिलै घट वोय करै	२०५	७	७३७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
त्रोटक	'करणो' अणबावत क्रोध कळा	२१६	७	७७७
	करनी कुळ 'माहव' नांम कवि	२३१	७	८३३
	करि जांणक आयुध इंद्र करै	२००	७	७१८
	करिवांण सुतांण कमांण कसै	१९७	७	७०७
	कळहै 'पदमो' खग बोळ कियै	२२२	७	८०१
	काढियां खग साबल् झोक कियां	१९७	७	७०५
	खग झाटक टूक करै खळहै	२१६	७	७७६
	खग वाहत हेक जिसा खग सौ	२१७	७	७८३
	खग बीजळ मेघ घड़ा खमतौ	२१४	७	७७०
	खगि सावज भ्रज विहंडि खळां	२३०	७	८२६
	खत्रियां गुर 'लाल' दुझाल खंडै	२०८	७	७४६
	खित पिंड करै रत हंस खड़ै	२०६	७	७३८
	गज ढाल दुझाल अमीर गरै	२२७	७	८१७
	गजभार महेस तणौ गहणौ	२१५	७	७७३
	गहरै 'रंगरेल' हरै गुमरै	२०५	७	७३६
	'गिरमेर' तणौ सिवदांन गजां	२०४	७	७३३
	ग्रह साबल सीस उडै गजरौ	२१९	७	७८८
	घण धाय वरावत हूर घणां	२१२	७	७६२
	घण वाहत साबल 'तेज' घणौ	२०१	७	७२१
	घमसांण करै घरि पांण घणौ	२०१	७	७१९
	चंद्रहास करै जुध चूंप तणौ	२१३	७	७६७
	चढ़ियौ अनि हैमर रोस चडै	२३०	७	८३१
	'चतुरेस' 'पतावत' खेत चढ़ै	२०२	७	७२६
	चमराल् बलां अति रोस चढ़ा	१९९	७	७११
	चहुवांण केवांण रत्रां चरचै	२३४	७	८४३
	छक ऊदल छोह छछोह छळां	२२३	७	८०४
	जवनां दळ दांति चढंत जवां	२०६	७	७४०
	जुध खाग झटां घट पींजरियौ	२०५	७	७३४
	जुध खाग वहै झल् 'जोप' तणौ	२१२	७	७६४
	जुध-'दूजण' 'बाघ' कराळ जिसौ	२१९	७	७९१
	जुध धावत सूर घणा वजरै	२१६	७	७७८
	जुध 'भीम' समोभ्रम जाहर सौ	२२९	७	८२६
	जुध 'माहव' संभ्रम पाथ जिसौ	२०२	७	७२५
	जुध मेछ चढांत धकै जमरौ	२१८	७	७८४
	जुधि झाल् कराळ उठत जठै	१९६	७	७०२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
त्रोटक	झड़ औझड़ सूत दियै झटकां	२३१	७	८३४
	झट खाग रमै घट सीस झड़ै	२११	७	७५६
	झट बीजळ मूगळ सीस पड़ै	२२८	७	८२३
	झळ क्रोध 'लखावत' क्रोध झलां	२२४	७	८०७
	तद धारि सिंहांणिय रोस धतौ	२३३	७	८४२
	तदि वाहत खाग झुलाल तनां	२२२	७	७९९
	तप तेज खगां जिम भांण तणौ	२१२	७	७६३
	तप दीसत सूरज व्रन तणौ	२१४	७	७७१
	तरवार वहै असवार तठै	१९९	७	७१२
	तुरकां खग घाव अजंबा तणौ	२२७	७	८१८
	तुरकांण हणै खग थटै 'जोर' तणौ	२१८	७	७८५
	थट मेछ करै धर पाथरणौं	२१३	७	७६६
	दळ रौद विभाड़त 'पीथ' दुश्रौ	२१३	७	७६५
	दहड़ै खगि मेछ हकां दखतौ	२१०	७	७५६
	दुझड़ां 'हथवाहत' पाव दिढै	२०९	७	७५२
	दुति 'ईसर' दोंढियदार दळां	२३४	७	८४४
	धख हींदवसींघ सुजाव धरै	२२८	७	८२२
	धड़छै खळखाग गजां धखतौ	२२३	७	८०३
	धड़छै खल बीजल झाट धजां	२०७	७	७४२
	धड़ धार लुहा धररै	१९९	७	७१४
	धज साबळ वाहत मेछ दहै	२१५	७	७७२
	धर धावक सीस धम धमिया	१९६	७	७०३
	धर धूजत सीस धरा-धरनौ	२१७	७	७८०
	धुबि धीर 'दलावत' सार धजां	२२७	७	८१९
	'नरमेछ' खपंत पडंत नहीं	२२९	७	८२७
	नरलोक अखै जस कीध नरां	२०३	७	७२७
	निजड़ां जड़कै जरदंत वभौं	२१६	७	७७६
	पछटै खग चाढत देवपुरा	२१५	७	७७५
	पछटै खग मूगळसीस पड़ै	२१९	७	७८९
	पछटै खग सिलह पोस पड़ै	२०४	७	७३१
	पछटै खग हैमर तूट पड़ै	२३०	७	८३०
	पछटै वरसींघ तणौ प्रघळा	२११	७	७५८
	पाड़तौ पहुंतौ जवनां प्रचंडा	२२१	७	७९७
	पिड चौसर धार परी परणी	२३१	७	८३५
	पिड पूर 'पतावत' सूर पणौ	२२६	७	८१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
त्रोटक	फवजां धज खांन अणि फबियौ	२२६	७	८१५
	बहसे जुध लोदिय खांन बळौं	२३२	७	८३८
	भड़ 'माहव' 'सुंदर' ऊत भड़ां	२२५	७	८११
	भचकै खग दाखत भांण भलौ	२१७	७	७८१
	भचकै 'बखतेस' गुसै भरियौ	२००	७	७१७
	भचकै बळ धारि भुजांण तणौ	२३२	७	८३७
	भिड़ लूण उजासत भूपतणौ	२०७	७	७४४
	मगरूर खगां झट झूझमलौ	२२८	७	८२४
	मगरूर जुटै खग आघमणौ	२०२	७	७२४
	मघिचार धरै हर हार मही	२०९	७	७५०
	मसतांन गयंद जहीज मुड़ै	२२६	७	८१६
	मिळ रांम हणै खळ खेत मही	२११	७	७५७
	'मुकंदावत' पौरस छाक मतौ	२२४	७	८०८
	मुगळा दळ खाग हणै अमलौ	२२८	७	८२१
	रवदां झट रूक करै रमणौ	२०८	७	७४७
	रिण झूटत सूर त्रंबाल रुड़ै	२३५	७	८४६
	रिम खाग हणै खगि झेलि रतौ	२२०	७	७९३
	रिम थाट सु झाट खगां रण में	२२०	७	७९४
	रिम थाट हणै कुळ ब्रंद रखौ	२०७	७	७४५
	रुकड़ां मुड़ि झाट त्रंबाट रुड़ै	२१०	७	७५३
	लोह वाहत गैण भुजाळ लगतौ	२२४	७	८०६
	वढ झाट खगां खळ थाट वहै	२२०	७	७९५
	वहि वाहत खाग झळा वरणौ	२१८	७	७८६
	वधि चक्क उचक्कत राहविधै	१९८	७	७१०
	वधि देव पराक्रम 'वीर' तणौ	२३१	७	८३२
	वधियौ गहलोत छकां वणदौ	२३४	७	८४५
	वधिरूप कियौ खग चोळ व्रनौ	२३३	७	८३९
	वधि व्यास वहै रिम थाट विचै	२३३	७	८४०
	विधि वैर हरां अजरौ विरतौ	२२२	७	८०२
	विहंडै खळ झाटक लोह वहां	२१७	७	७८०
	सजि वाजव बद्द दळां सबळां	२०३	७	७३०
	सत्र थाट पळां गळ दे समळां	२०६	७	७४१
	'सबळावत' 'सांगण' घाव सझै	२२२	७	८००
	'सिरदार' समोभ्रम जेण सिरै	२०३	७	७२८
	सिलहांण अंगांण वेधांण सरां	१९८	७	७०८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
त्रोटक	सिलहेत तणौ पखरैत सुधौ	२०९	७	७५१
	सुज ग्यांन 'दलावत' तेण समै	२१८	७	७८७
	सुत 'ईसर' जोर कियौ सरसौ	२०७	७	७४३
	सुत 'कांन्ह' खळां छड़ियाल सलौ	२०८	७	७४६
	सुत 'कांन्ह' स्वरूप वणै सिधरै	२०६	७	७३९
	सुत 'जैत' अथाह लड़ै सबळां	२२४	७	८०९
	सुत 'जैत' 'सरुप' कियौ सधरौ	२२९	७	८२८
	सुत 'रांम' खत्रीवट कांम सचै	२१४	७	७६९
	सुत सूरजमल संग्रांम करै	२१९	७	७९०
	सोहिया घट ऊंच स्रोण सबै	२०३	७	७२९
	हथियां खग वाहत रिख हसै	२०२	७	७२३
	हद जूटत धांधळ क्रोध हुवै	२३३	७	८४१
	हर सीस ग्रहै रिखराज हसै	२०८	७	७४८
	हिंदवांण तुरक्कांण हिच्चै	१९८	७	७०९
	हुब क्रोध लड़ै जम क्रोध हरा	२२१	७	७९६
	हुब बीजळ जूटत रूप हरा	२२५	७	८१२
	हुबि खाग अथाग हुणतई	२२७	७	८२०
	हुय घायक जांणि मजेज हिचै	२२०	७	७९ २
दूहा	इजति भंग ह्वैगौ असुर	२६४	७	९२८
	इम धिकतां रिण ऊमरा	४४	७	१३०
	इसा बाजि वहुंवै बळां	१७	७	७५१
	चक्रबति दिन दिन चौगणौ	२६७	७	९३४
	जोतां जोड़ न दूसरौ	२६७	७	९३५
	त्रिहुंवै धड़ अभमल तणौ	२४८	७	८८७
	दातारां दाता दुजल	२६७	७	९३६
	'बखत' थाट इण विध विहै	२३५	७	८४७
	वड़ी फौज इण विध विहद	१९६	७	७०१
दाढ़ौ	इम जीतौ 'अभमाल' वार नबत्ति बजाए	२६१	७	९२०
	समंद 'बिलंद' दळ सबळ अथग आवियौ 'अभैमल'	४१	७	११३
पद्धरी	आरांम राड़ियां छक उपाट	७	७	१७
	ऊपना असिल अैराक अंग	१०	७	२७
	एहड़ा गयंद खुटहड़ अरोड़	८	७	२३
	अै पहल तेल फेरै अरोह	६	७	१५
	ऐबियां मझै लागा उदार	१६	७	४८
	औद्राव तणा घण के अपाल	७	७	१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
पद्धरी	कंठळ वूठालू रूप कंध	७	७	१६
	कतक्क हार कळहळक्कहाक	६	७	२५
	कसि सिरी गड्ढ निस संध कोध	१५	७	४७
	कूदणा कछी छेकै कुरंग	११	७	३२
	गात रा जिकै तम सिखर गात	६	७	१२
	खेंग सहज्ज मझि डांण खाय	१६	७	५०
	घण घाव घटै नह पांण घाट	११	७	३३
	चख आरण धिखता रूप चोळ	५	७	११
	चहनई हरेवी रूप चंग	१०	७	३०
	जिलहरी आवनूसी जमंद	१३	७	३८
	झाटकि रूमालां गिरद झाड़ि	६	७	१४
	तन रूप घटा भाद्रव तणास	६	७	१३
	तरियलां नजर आंणै तैयार	८	७	२२
	तहदार गादियां धरे तांम	१५	७	४४
	तुरियंद जिसा रथ आपताप	११	७	३४
	तै पीठ धार तांणेस तंग	१५	७	४५
	तै भारण बारह मण सतोल	८	७	२१
	दहुंवै दळ मंगल इसा दूठ	५	७	१०
	दुज राज नयण ससि बीज डाच	१४	७	४१
	दै उवर टकर ढाहै दुरंग	१४	७	४२
	धर फरर चढ़ै नीसांण धार	७	७	१६
	नख उलट कटोरा सम अनोप	१३	७	३९
	पांडवां खुरहरां झपट पाय	१४	७	४३
	बंध जोट वोध कसि जेरबंध	१५	७	४६
	बह अबरस मुसकी अर संजाब	१२	७	३७
	बेखता ताव मुज नस्सबाज	१०	७	२९
	मगरूर हौद जंगियां मझार	८	७	२०
	मझि खगां झाट खेल्है मलंग	१६	७	४९
	रूम हरी हुसेना बाद राति	१०	७	२८
	रोसनी विदांमी पेस रूंद	१२	७	३६
	रौद्रांण भचक भाला गरीठ	९	७	२४
	लाखोरी सुरंग अजूब लेत	१२	७	३५
	सुजि तांम्र तुंड कंधा समाथ	१३	७	४०
	सोवना ताजी च्यार साल	११	७	३१
भुजंगी	अरोहै किता जूंग बेछाड़ अंगा	३२	७	८७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
भुजंगी	असोलां रसी रेहियां हाथ आंणै	३४	७	९३
	अहंकार नव्वाब दज्जोण अेहौ	३१	७	८१
	इसा थाट ईरांन नौ कोट ऽवाळां	३०	७	८०
	उठी धू विलंदेस आयौ अछायौ	३१	७	८३
	उठी राफजी आविया च्यार यारी	३३	७	९०
	उठै ईसफां आसफां नांम आखै	३३	७	९१
	किलम्मां अनै वाद लगो कनौजां	३४	७	९५
	किलम्मेस राजा तणा भीच कोपै	३१	७	८२
	झड़ै फींण घोड़ां मुखे सेत झारा	३२	७	८८
	ढळक्कै गजां चम्मरां स्रीब ढालां	३१	७	८४
	थटै सामंद्रां हाथियां पाळि थाई	३३	७	८९
	भयांणंख गाडा किता जूंग भारू	३२	७	८६
	लळक्कै गजां पोगरां नाळ लोभा	३२	७	८५
	वहै हैमरां सोख जांणै विवांणै	३४	७	९४
	विवांणां परां ता चलां सोख वागी	३४	७	९२
मोतीदांम	अंगोभ्रम 'मेघ' चाढै कुळ ओप	१३७	७	४८२
	'अखा' हर बाहत खाग उनंग	५२	७	१५७
	'अखौ' 'अणदावत' वीजळ ऊक	११०	७	३७६
	'अखौ' खग खेल रमै दइवांण	१४७	७	५२१
	'अखौ' खग वाहत सूर अबीह	१८९	७	६७८
	'अखौ' प्रिथीराज सुजाव अपाल	१५०	७	५३२
	अडि खंभ झोक लगै अवसांण	१४४	७	५०७
	अडी खंभ माधवसींघ अभंग	१११	७	३७९
	अडै खग 'जैतहमल' अथाह	१३५	७	४७५
	अडै भड़ राममलोत 'अजब्ब'	६२	७	१९५
	अडै 'लखधीर' तणौ 'अमरेस'	५८	७	१७९
	अडै सुत गोवरधन्न अठेल	६१	७	१९०
	'अजबावत' साबळ हाथ उपाडि	४५	७	१३५
	'अजो' 'रघुनाथ 'उभै दइवांणं	१३२	७	४६४
	अटा दछि ज्याग घटा गज एम	१११	७	३८२
	अड़ै 'रतनेस' 'मोहौकम' ऊत	९६	७	३२४
	अणो कढ वाहत खाग अपाल	१२२	७	४२२
	अणी कढ 'सूर' तणौ 'परियाग'	९१	७	३०६
	अणी सिर साबळ फूटत ऊक	१८७	७	६७१
	अणी सिर सेल भिडै अवगाढि	१६४	७	५८६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
मोतीदांम	'अनावत 'अम्मर' खाग उनाग	६४	७	२०२
	'अनावत' दूठ 'गजौ' उणवार	१४७	७	५१९
	अनेकह खाग हणे 'अभ' एक	१२५	७	४३७
	'अनौ' 'हरि' 'तेज' वणे दइवांण	१०९	७	३७१
	'अभम्मल' भूप 'उमेद' अभंग	९२	७	३११
	'अभा' छळि एम लड़ै दइवांण	१६५	७	५९०
	'अभा' छळि मेड़तनेर अभंग	७७	७	२५५
	'अभावत' क्रोध सझै अणथाह	१२७	७	४४४
	'अभै' भुजभार दियौ अणथाह	१७६	७	६३०
	'अभैमल' अग्र 'फतावत' एम	६८	७	२१७
	'अभैमल' आगळ जोध अपार	४८	७	१४४
	'अभैमल' आगळ सूर उदार	१९३	७	६९४
	'अभौ' भड़ 'जैत' तणौ अवनाड	७३	७	२३७
	अमावड़ तेज मजेज असाधि	१८५	७	६६३
	'अवा' सह खेलत फाग भुआळ	११४	७	३९२
	अयौ रथ बैसि समोसर इंद	१८९	७	६७७
	अयौ वैकुंठ हुंता सु विमांण	१८०	७	६४४
	अरी खग झाटत धोम अमेळ	९०	७	३०४
	ओर खग झाड़ि छिबै असमांन	१३९	७	४८८
	अरी सिर तोड़ रगत्र उफांण	१७३	७	६१९
	अरी घट साबळ अंत अळूझ	१०८	७	३६७
	अरी थट हूर वराय अनेक	७५	७	२४६
	असुरां घट बाढत खाग अरोड़	१५४	७	५४७
	इखै पित ऊपर लोह अपार	१०६	७	३६२
	इखै रथ थांभि अवीत अचंभ	५५	७	१६९
	इताभड़ चारण क्रोध असाधि	१७२	७	६१४
	इती कहतां गुण लागिय वार	३९	७	१०९
	इलोळत स्रोण विचै खळ एम	१२९	७	४५२
	इसी कर लै गुण झाट उपाट	१७०	७	६०९
	इसी विध 'मांन' लड़ंत अबीह	११८	७	४०५
	इसी विध लोह करै अणथाह	१५६	७	५५५
	इसी विध साबळ स्रोण अखाय	१२८	७	४४६
	इसी विध सेलह पौस उझेल	११४	७	३९१
	इसौ 'कंठराज' जिकौ दईवांण	२६८	७	९३९
	इसौ भड़ 'केहर' रौ दइवांण	१६७	७	५९७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
मोतीदाम	उगा मुख बारह दीत उदार	४५	७	१३२
	उगंतिय मौसर 'सूर' उदार	१७७	७	६३३
	उभेल बगतर पोस अपाल	१९२	७	६९०
	उठै 'किसनेस' सुतन्न 'अनोप'	९०	७	३०५
	उठै 'कुसलेस' तणौ दईवांन	९०	७	३०३
	उठै खग वाहत रोस उमंग	१२०	७	४१४
	उठै 'जगतेस' खळां अजरैत	१६०	७	५६९
	उठै चत्रकोट वळा उजवाळ	१५८	७	५६४
	उठै महियार 'नवल्ल' अपल्ल	१७१	७	६१२
	उठै रिणछोड़ सुजाव अरोड़	१९२	७	६८९
	उडै असि ऊपर लोह अपार	१७४	७	६२३
	उडै कटि पेच छिळै जळ श्रोट	१७९	७	६४०
	उडै खग आछट सीस अपार	१४२	७	४९९
	उडै खग झाटक जंग अथाह	१२२	७	४२५
	उडै झळ-मंगळ झाळ अंगार	३८	७	१०४
	उतारत नीर खळां अवगाढ	१५३	७	५४३
	उदावत 'जोवण' वीजळ दाव	१४५	७	५१४
	उदैसिंघ 'रावत' 'गोकळ' ऊत	१८४	७	६६०
	उपाड़इ वीर बजंग अराधि	५६	७	१७२
	उमा मुक्ताफळ ले वड़वार	१३०	७	४५४
	'उमेवह' जोध लड़ै अवनाड़	१३३	७	४६६
	उभौ हुय जांणिक रोख अटारि	१२५	७	४३६
	उभै हुय टूक पड़ै असुरांण	१७०	७	६०७
	उरै असि पांडव जेम अजन्न	१८२	७	६४९
	उरै पित आगळ बाज अपाल	१८१	७	६४६
	उरै जुध बीच तुरी 'अजबेस'	१५३	७	५४४
	उवक्कत घाव रगत्र उलाळ	१५४	७	५४५
	उबासत सीस लड़ै धड़ एक	८३	७	२७६
	ऊदावत 'सांम' लड़ै अवनाड़	६५	७	२०७
	एको असि तूटि पड़ै अवसांण	१२६	७	४३८
	एको भड़ जोड़ फबै भड़यैत	१२६	७	४३९
	ओरे असि आरण धोम अताळ	४९	७	१४८
	करै घण झाटक लौह कराळ	५४	७	१६४
	कटै जुध बीच अडिग कदम्म	१९२	७	६८७
	कटै पळ कमळ स्त्रीफळ कोध	१८१	७	६४७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
मोतीदाम	कटै सिर खूर जुटै धड़ केक	१७६	७	६२९
	'कन्हावत' 'पेम' रमै खग क्रोध	९६	७	३२५
	करै उवराव दुसार कटार	१६५	७	५८८
	करै करिमाळ झटांपति कांम	६१	७	१६१
	करै खग झाट हणै किलमांण	६९	७	२२१
	करै जुध 'भाखर' री 'महिक्रम'	१५१	७	५३३
	करै धजवाह वा कड़कंत	१६३	७	५८३
	करै सुध तीरथ वीर करंक	१८२	७	६५१
	करां 'सुभ साह' वहै किरमाल	१६६	८	५९३
	'कलायण' बीच लड़ंत करूर	१४५	७	५१३
	'कलावत' लोह करै कलिचाळ	९८	७	३३२
	'कलौ' सिवदांन तणौ कलभूळ	७२	७	२३३
	कसीसत टंक प्रहार कबांण	८२	७	२७२
	कसीसत बांण जुबांण कबांण	३८	७	१०५
	कहै वद आय खळां दळ काप	१७२	७	६१६
	किलम्मक थाट हणै किरमाळ	१५७	७	५५८
	किलम्मक थाट हणै खग कोप	११२	७	३८४
	कितां भड़ सीस पड़े भड़ केक	६७	७	२१४
	कूंभाथळ वेधि कढै धज कूंत	५१	७	१५४
	खगां झट 'नाहर' 'नंद' 'खगेस'	९१	७	३०९
	खगां झट बाहत रौद्रव खूर	१५९	७	५६६
	खगां झट देत गजां सिरि खीज	११९	७	४१०
	खड़ै असि 'सेर' दिसी चढि खाग	८०	८	२६६
	खड़ै हंस 'भोम' पड़ै कटि खांन	८१	७	२७०
	खत्तां अंग तीर फरक्किक पॅखार	५४	७	१६५
	खळक्कत घाट वहै रतखाळ	१२७	७	४४२
	खळां दळ भूक करै भल खंड	१२३	७	४२९
	खहै 'अजबाबत' 'साहि बखांन'	७४	७	२४३
	खहै 'खड़गेस' तणौ 'रघु' खीज	७२	७	२३२
	खहै 'जसक्रम' तणौ 'लड़गेस'	१३१	७	४६१
	खत्री गुर खाप हुता खळकाप	१०२	७	३४८
	खासा गज खांन तणा सिर खीज	८७	७	२९३
	खुटै जरदैत जिकै इम खांति	१८७	७	६६९
	खेगक्क उचक्क खाटक्क खणक्क	४८	८	१४५
	गई घकि क्रोध झळाहळ जागि	१२४	७	४३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
मोतीदाम	गडीर तुरंग छिबै भुजगैण	१७८	७	६३८
	गहम्मह सूर धुबै गज गाह	१८४	७	६५६
	गाढा गुर गूजर रोस गरूर	१९३	७	६९३
	गाढां गुर 'खीम' हरौ गज साह	१७७	७	६३२
	गाहै नर हैमर गैंमर गाहि	५२	७	१५८
	घडच्छत फांक उड़ै खळधूठ	१०२	७	३४९
	घटामिळि फौज त्रंबागळ घोर	११२	७	३८५
	घड़ी दुय एम करै घमसांण	१०६	७	३६१
	घणा खळ पाड़ि पड़ै घमसांण	१९०	७	६८१
	घणा खळ थाट सिरै खग घाव	१३७	७	४८१
	घणा धड़ पै हथ सोभत घाव	८६	७	२९१
	घणा रत डूब फटा खिळ घाट	१५६	७	५५३
	घणू खग झाट करै झळ घांम	१०८	७	३७०
	घमोड़त मुग्गळ साबळ घाय	१६३	७	५८०
	घमोडत सेल गजां परि घाव	९३	७	३१४
	घमोड़त सेल सिलै बंध धींग	९४	७	३२०
	'घासी' सुत पौरस ग्रीखम धांम	१८४	७	६५८
	चका खट झाट हणै चमराळ	१३७	७	४८०
	चका चमराळ करै खगचूर	१०९	७	३७३
	चढै खळ हीक तुरी उर चोट	५०	७	१५२
	चढै रथ नेह 'हठी' वर चाहि	१०७	७	३६५
	चलै मदमत्त पटाझर चाल	१००	७	३४१
	चलै सर बेधि सिलै घट चोळ	३९	७	१०७
	चहूंदळ मेछ करै खग चोट	५१	७	१५६
	'चत्रभुज' 'चंद' तणौ विरचाळ	७१	७	२२९
	चांपावत एम लड़ै किळचाळ	६६	७	२०९
	चावा खळ मुगळ भांजि अछंग	५३	७	१६३
	'चौंड़ा' हर तांम करै चख चोळ	४६	७	१३६
	'चौळावत' मीर झटां खग चौज	६४	७	२०१
	चौड़ा मझि आय वधे छक चाहि	७८	७	२५८
	चौथे दिन खाग झळां कळिचाळ	७८	७	२५७
	छड़ां झलि वाह करै छड़ियाळ	१२७	७	४४५
	छळ दिखणी दळ पौरस बांधि	२६८	७	९३८
	छोगौ सिर सोनहरी छवगाळ	१६९	७	६०३
	जई खग वाढत खांन 'जवांन'	११८	७	४०९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
मोतीदाम	जई छक ऊपण तेज सराज	११४	७	३६०
	जई धख वा मारण जोम	६६	७	२१०
	'जगावत' कीरतसिंघ ब्रजागि	६४	७	३१८
	'जगावत' 'अज्जब' जैत जुहार	६३	७	१६७
	जगावत 'माल' खळां जमराव	१५८	७	५६३
	जगावत मोहकमसिंघ सजोस	१४७	७	५२०
	जगी हवदो भिदि सबळ जांम	११५	७	३६३
	जड़क्कत लोह कड़क्कत संघ	५७	७	१७८
	जड़क्कत सेल भिदे जरदाळ	६८	७	२१६
	जटा रुद्र क्रोध खगां जगवंत	६१	७	३०७
	जठै 'अणदौ' भड़ 'तेज' सुतन्न	१२७	७	४४३
	जठै 'करनाजळ' क्रोध ब्रजाग	५१	७	१५५
	जठै खग वाहत दारुण जैत	८४	७	२८०
	जठै खिड़ियौ इक आगि ब्रजागि	१७१	७	६११
	जठै 'गजसाह' करन्न सुजाव	६७	७	३२८
	जठै धर सीस पड़ै उड़ि जांम	१०६	७	३५६
	जठै प्रथिसिंघ पराक्रम जागि	७०	७	२२५
	जठै रत छींछ गजां सिर जाय	१६४	७	५८४
	जठै रहियौ रवि कौतक जोय	१६१	७	५७३
	जम हूढ खाग कसै जमरांण	१६२	७	५७८
	जमात समेत दुहूं जमरांण	७६	७	२६३
	'जसावत' दौलतसींघ जगाणि	१५६	८	५६७
	'जसावत' 'माधव' दारण जोभ	७३	७	२३८
	'जसावत' सूरतसिंघ ब्रजागि	१४६	७	५१६
	'जसावत' सूर 'सुभै' अजरंग	१६६	७	५६२
	'जसै' धखि क्रोध धरै जमजाळ	११५	७	३६६
	जसौ खत वाहत यूं वहिजाल	८५	७	२८७
	जांणै दळ रांमण ऊपरि जाय	१६४	७	५८७
	जिकै पित 'केहरि' दारण जंग	१६७	७	५६६
	जुटा तिण हूंत जिकै जमरांण	२६८	७	६४०
	जुडंत 'जसावत' आगि ब्रजाग	५४	७	१६६
	जुडै 'अभपाळ' 'किसोर' सुजाव	१३८	७	४८५
	जुडै इम जोध हरां जजरेत	११३	७	३८७
	जुडै इम साबळ व्याकुळ जीव	१४२	७	५००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
मोतीदांम	जुड़े 'कुसळेस' तणौ खग जास	६०	७	१८६
	जुड़े खग गेंद जहीं तळ जोड़	१२२	७	४२३
	जुडे खग झाट 'कलावत' जोध	१३३	७	४६७
	जुड़े खग झाट कळोधर 'जैत'	१२३	७	४२७
	जुड़े गज बाज धिखे गजगाह	८८	७	२९७
	जुड़े छक छोक कंठीरव जेम	६५	७	२२२
	जुड़े भड 'माहव' 'मांन' सुजाव	८८	७	२९८
	जुड़े मगरूर 'मुकंद' सुजाव	१८६	७	६७६
	जुड़े तिण वार 'उदावत' 'जैत'	१४२	७	५०२
	जुड़े 'रतनागर' 'भीम' सुजाव	७१	७	२३०
	जुड़े 'रायपाळ' हरौ रण जेत	१४१	७	४९५
	जुड़े रार्यासंघ चढे घण जोस	९३	७	३३७
	जुड़े वरवा रंभ ऊछब जांणि	५६	७	१८३
	जुड़े 'सिरदार' तणौ वरजाग	७०	७	२२७
	जुड़े सुत 'ऊदल' पौरस जोर	६०	७	१८६
	जुध हर आगळ दारुण जोध	१५८	७	५६१
	'जैसा' छळ पौरिस झाल जगत्ति	१६१	७	५७७
	जोए लुघ ऊपर भाजि न जाय	१०७	७	३६३
	'जोगावत' 'ऊदल' उभझ्कळ जोस	१९१	७	६८४
	'जोगावत' धार घसंत 'जवांन'	१०५	७	३५८
	जोधा भड़ एह पटायत जांणि	१११	७	३८०
	जोधावत साहिब सिंघ सुजोस	१०४	७	३५५
	जोरावर 'ऊदल' संभ्रम जोध	९८	७	३३३
	जोरावरसिंघ 'पदम्म' सुजाव	६६	७	२२३
	जोरौ 'अणदावत' जेत जुहार	९९	७	३३६
	झड़े खग आतस रूप झिलम्म	१३०	७	४५५
	झड़े खग थाट लोहां झिलमिल्ल	१०७	७	३६४
	झझक्कत बारंग फेर झुकंत	१६५	७	५८६
	झपट्टत नाळ दमंग झळास	७६	७	२६०
	झळाहळ 'वीरम' ऊत झुंझार	६२	७	१९३
	झाड़े खळ नाहरखां खग झाट	१९१	७	६८५
	झाळाहळ साबळ वाहत झूल	१०१	७	३४६
	झुके धर हैमर सूर जभार'	३९	७	१०८
	झोके असि देत खळां खग झाड़	१८६	७	६६५
	डोहै रवदाळ झकोळ डंडाळ	४७	७	१४१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
मोतीदांम	तई अध सीस बढं तहताज	८०	७	२६७
	तई खग झाट जुदा सिर तन्न	९६	७	३२७
	तई खग धार हणै खळ तांम	१३८	७	४७२
	तई दळ देखि पटाझर तेम	५९	७	१८२
	तई धक होण परी भरतार	१८८	७	६०३
	तई पर 'सांवत' क्रोध अताळ	९३	७	३१६
	तई भड़ 'साहिब खांन' सुतन्न	६५	७	२०५
	तई भुज साबळ कोध त्रिभाग	६६	७	२११
	तई 'हणमंत' कळा जुध तांम	१३८	७	४८४
	तई हरभांण पछट्टत तेग	६९	७	२२२
	तकै सिर ईस लिये मुसताक	८२	७	२७५
	तछै खळ 'पेम' खगां झट तांम	१२१	७	४२१
	तठै करि खींज वहै तरवारि	१८७	७	६६८
	तठै छक छोह 'विसन्न' सुतन्न	१७१	७	६१०
	तठै पड़ि खेत किया पिंड तत्र	१७९	७	६४२
	तठै 'परताप' तणौ खळ तन्न	११८	७	४०६
	तठै रुघनाथ तणौ 'सुरतेस'	६०	७	१८८
	तठै मोहकावत 'सांम' सतेज	९४	७	३१९
	तठै 'सबळेस' समोभ्रम 'तेज'	५७	७	१७५
	तठै सुत भाउ लड़ंत 'तिलोक'	९४	७	३१७
	तठै हठमाल 'किसोर' सुतन्न	१०५	७	३५७
	तणै 'दलसाह' तणौ 'सुरतेस'	७४	७	२४१
	तणौ भ्रम 'पूरण' सींध तराज	१३६	७	४७७
	तती खग झाट खळां सिर तांम	१९३	७	६९२
	तपं खग पांणि पियै जळ तेम	१११	७	३८१
	तिकै कुळ सूर हुवा तिण वार	१७२	७	६१५
	तिकौ अचरिज्ज किसौ घर तास	१७२	७	६१३
	तिकौ असवार बिचै तिण वार	११६	७	३९९
	तियां इम सोभ फबै रिणताळ	५५	७	१६८
	तुरी जुध मेलि लड़ै 'सगतेस'	५२	७	१५९
	त्रंबागळ ध्रोह त्रह त्रह तूर	९७	७	३३१
	त्रिहुं खग वाहत आतस ताप	१९१	७	६८३
	दखै तदि नीजर दौलतिदास	२७१	७	९५१
	दड़ां जिम सीस उड़ै खग दाव	१०३	७	१५०
	दळां अग्रि भोमि जिके क्रम दीध	१८९	७	६७६

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
मोतीदाम	दळां खळ झोकि तुरी हुजदार	१७४	७	६२०
	'दलावत' सूर 'बिसन्न' दुझाल	५८	७	१८१
	'दलावत' होमतसिंघ दुबाह	१५४	७	५४८
	'दलौ' असि झोकि लड़े दइवांण	५२	७	१६०
	'दलौ' भड़ 'कांन्ह' तणौ दइवांण	१३३	७	४६५
	दहूं-बळ घोर त्रंबागळ डाक	३८	७	१०३
	दिपावत हाथ न लेत उदक्क	१७३	७	६१७
	दिया फुरमांण सनेह दिलेस	२७०	७	६४५
	दियै कपिडांण उडांण दमंग	४६	७	१३८
	दियै खग झाट निसाट दुझाल	८६	७	३०२
	दियै खग झाट 'फतावत' दोय	७०	७	२२६
	दियै 'बखतावर' मांकड़ डांण	८२	७	२७३
	दिपै वप लोह वरन्न सिंदूर	१८५	७	६६४
	दुबाह अनेक लड़े थट दोय	७६	७	२४८
	दुवाधण देव एकौ जगदीस	११७	७	४०१
	दुसै खग झाट पड़े दुरतेस	६३	७	३१५
	दुसै फिरि जात चहूंबळ 'बोल'	१३०	७	४५६
	दूजौ असि जांम कटै स उदार	१७५	७	६२६
	'द्वारावत' सूर 'अनोप' दुझाल	१०६	७	३७४
	धकध्धक स्रोण चंडी पत्र धार	४७	७	१४०
	धडच्छुत मूगळ बीजळ धार	१४०	७	४६४
	धमंधम वाजत सेल धमोड़	१६३	७	५८१
	धमंधम सेल खळां घट धींग	११८	७	४०७
	धमोड़त साबळ मुग्गळ धींग	७७	७	२५२
	धमोड़त साबळ मुग्गळ धींग	१५१	७	५३४
	धरा जरदंत पड़ै खग धार	७६	७	२६१
	धरं असुरां दळ ऊपर धंख	४५	७	१३४
	धवेचा वाह करै खग धार	१३४	७	४७१
	धांधू रिणछोड वाहै खग धार	१६४	७	६६५
	धारूजळ झाट धुबै निरधूम	८६	७	२६०
	'धिरा' हर नाहर मूगळ धींग	१५५	७	५४६
	धुबै खग 'केहर' बीजळ धार	१५२	७	५३६
	धुबै खळ 'नाहर बीजळ' धार	१२१	७	४२०
	धुबै रणधोम अणी घण धार	१००	७	३४२
	ध्रबै खग झाट डंकां बजि ध्रोह	६१	७	३०८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
मोतीदांम	नदी गण जेम तुरंग निहंग	८४	७	२८३
	नरांपति जूटत पौरस नेम	१५७	७	५६०
	नरां सिणगार इता करणोत	१२८	७	४४६
	नरां सिणगार धरै जुध नेत	४८	७	१४३
	'नरावत' 'रूप' लड़ै नरनाह	१५०	७	५३१
	नवी बगसीस खिजै नरनाह	१७०	७	६०६
	निजोड़त मेछ धरै खत्र नेम	६४	७	२०४
	पंजा खग झाट 'पतावत' पांणि	५६	७	१८५
	पंडीस बरंग करै खळ पांणि	१७६	७	६४१
	पंडीसक वाह करै श्रण पाल	१५७	७	५५७
	पछंटत ऊत्तंग चंद्रप्रहास	१६१	७	६८६
	पछट्टत खाग राठौड़ पठांण	८०	७	२६४
	पछट्टत रूक श्रमो सह पूर	१८७	७	६७०
	पछट्टत रोद्रव चंद्रप्रहास	१८४	७	६५७
	पछट्टत बीजळि 'केहर' पांणि	१६४	७	५८५
	पछट्टत लोह थटां पंडवेस	७१	७	२३१
	पछाड़त जंग श्रमीर पमंग	८६	७	२८६
	पटायत एह लड़ै श्रणपार	१२३	७	४२६
	पटायत एह लड़ै खगवांण	१३२	७	४६२
	पटायत सूर इता परमांण	७४	७	२४४
	पड़ै घण मूगळ सेल प्रचंड	११७	७	४०३
	पड़ै भड़ रोद लुही रंग पूर	१४४	७	५०६
	पड़ै भड़ लोहांइ खेत पचीस	८३	७	२७७
	पड़ै रत वेध दुहू वज्रपाट	१२६	७	४४०
	'पतावत' रोळा विसा बळ पांच	११३	७	३८६
	'पतावत' सूर लड़ै प्रणपाळ	५६	७	१७४
	'पतावत' हिंदुवसिंघ प्रचंड	६७	७	३२६
	पमंग बछेक करै श्रणपार	८५	८	२८६
	परी वरि स्रग वसै 'दळपत्ति'	१६२	७	५७७
	पावै कुण पात कहै गुण पार	८३	७	२७८
	पितामह पाय लगै संप्रवंति	१६६	७	५६१
	पिये रत पत्त चंडी भरपूर	६८	७	२१८
	'पीथवंत' सूर 'करन्न' प्रचंड	११०	७	३७५
	पेचां मझि स्रोण वहै श्रणपार	८४	७	२८२
	प्रचंडक रोद हणै रुत पाप	११०	७	३७८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
मोतीदाम	'फतावत' झूंझ लड़ंत अफेर	१४८	७	५२४
	फतेपुर झूंझण नाथ अफेर	२७०	७	६४६
	फौजक्क रोसक्क फारक्क फरक्क	४८	७	१४६
	बंबाळव लोयण घाट वराड़	१५६	७	५६८
	बड़ा उजबक्क हणै खग वाह	७७	७	२५३
	बड़ा खळ रूक हणै अणबीह	७४	७	२४१
	बड़ा खळ रूक हणै अणबीह	७४	७	२४२
	बछेक बछेक 'पतै' जिण वार	१०३	७	३५१
	बढै तदि आप तणौ निज बाज	१८१	७	६४८
	बराछक ऊपर थाट बराड़	१६८	७	६००
	बळा भख बीजळ झोकत बाथ	१२०	७	४१७
	'बलावत' लोह 'उदावत' बूर	१३४	७	४७०
	'बहादर' 'जीवण' रौ रण बोह	१२०	७	४१६
	बहादर 'डूंगर' सेजबदार	१६४	७	६६६
	'बाहादर ऊत' सक्रोध बहास	६२	७	३१२
	बहै अंतरिक्ख अरोहक बाज	४६	७	१३७
	बाहै घण खाग घणीस बुहाड़ि	७२	७	२३५
	बिढै खग झाट करै असि बेव	६५	७	३२१
	बिढै महता जुधि और बहास	१८३	७	६५६
	बिनै जम सूर दादौ अर बाप	१३६	७	४६०
	बिया असि ऊपर गज्जर बूर	१७५	७	६२५
	भंडारिय ता मंत्री कुळि भांण	२६६	७	६४२
	'भऊ' सुत 'हींद' बजै गज भार	१५२	७	५४०
	भयंकर मेछ घड़ा खग भोग	१३६	७	४७८
	भयांणक दीसत यौ भमरूत	१४२	७	४६८
	भरै डंड रैत तणी विध भाय	२७१	७	६५०
	भळाहळ छूटत स्रोण भभक्क	१४५	७	५११
	भळाहळ बीजळ रावळ भांण	१३५	७	४७३
	भळाहळ रूप झळाहळ भाय	१२६	७	४५१
	भळाहळ सेल घमोड़त 'भांण'	१०८	७	३६८
	भलौ नट जांणि अगै भुवपाळ	१२६	७	४५३
	'भाऊ' सुत 'पीथल' भीम भुजाळ	६३	७	१६८
	भिड़ै खळ सूर 'उमेद' भुवाळ	१५१	७	५३६
	भिड़ै ख(ग) गरूर खत्रीवट भेब	१६२	७	६८८
	भिड़ै मुख मुंछ अणी भुंवहार	१०१	७	३४३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
मोतीदांम	भिड़ै बक्र उजळ मूंछ भुंहार	१७८	७	६३६
	भिवै हुंस ऊप्रम मंडळ भांण	६६	७	३३६
	'भिमाजळ' 'मोकल' ऊत भिडंत	८५	७	२८४
	भुजां दुय चारि भुजां बळ भूप	४७	७	१४२
	भुजां बळ 'पाथ' समोभ्रम भूप	४६	७	१४६
	भुहां भिड़ि मूंछ चखां विकराळ	१७४	७	६२१
	मंडै खग झाट खळां घड़ मोड़	१३८	७	४८७
	मंडे खग झाट थंडै नग मेर	१२१	७	४१६
	मंडै खग झाट दियै कवि मौज	१०४	७	३५३
	मंडै जुध 'नाथ' 'तणौ' 'फतमाल'	६३	७	१६६
	मंडै तिण वार फतै जुध माह	१६६	७	५६४
	मंडै भड़ सोनगरा जुध मांहि	१५५	७	५५२
	'मधावत' ईसर लोह मराट	७६	७	२४६
	'मधौ' करणोत लड़ै मगरूर	१४६	७	५१८
	मनोहरदास सुतन्न 'अमांन'	१३३	७	४६८
	महम्मद सेख तणं महारांण	१६६	७	६०५
	महाबळ आवत एक मयंद	११६	७	४००
	महाबळ जूटत अम्मल मांण	१५६	७	५६५
	महाबळ मुग्गळ ढाहि अमाप	१०२	७	३४७
	महाबळ सूर दिनां मकरंद	१६३	७	६६१
	महाबळ हूर बरावत मीर	१७५	७	६२७
	मांमो सत्रसाल तणो मगरूर	६२	७	३१०
	'माधावत' रांमसि लोह मराट	६३	७	२००
	मारू खग बाहत 'बाघ' मजेज	११८	७	४०८
	मारू हथि एम कढी किरमाळ	७८	७	२५६
	मिळै खग झाट हणै मुगळांण	११६	७	४११
	मिळै गळबांहि परी मतवाळ	८८	७	२६६
	मिळै तदि हेक निमख मंझारि	११५	७	२६४
	मिळै भौंह मूंछ वदन्न मजीठ	१२४	७	४३२
	मुछार भुहार मिळै मगरूर	१६८	७	६०१
	मुजद्द सेख तणा सुत मांम	१६६	७	६०४
	मुडै 'उग्रसेण' तणौ 'फतमाल'	१५३	७	५४२
	रचै खग आछट पावक रंग	१५८	७	५६२
	रचै तिण मोसर जोगणि रास	१४२	७	५०१
	'रणावत' वाह करै किरमाळ	१३४	७	४६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
मोतीदांम	'रसाहर' तेण समै रिम राह	१७६	७	६३१
	'रासौ' 'कलियांण' तणौ रिण राव	१३१	७	४५८
	'रासौ' जुध 'माहव' रौ मछराळ	७३	७	२३९
	रिमां खग झाट घणां गजराळि	५५	७	१७०
	रिमां खग झाट हणै जमरूठ	७३	७	२३६
	रिमां घट चोळ करै खग रूप	९८	७	३३४
	रिमां दळ बीच 'जसौ' इण रूख	११६	७	३९७
	रिमां सिर वाहत वीजळ रूठ	१४०	७	४९३
	'रुघौ' भड़ 'ईसर' रौ चढि रोस	१३१	७	४६०
	रुकां झट भूक करै चमराळ	८९	७	२९९
	'रैणायर' 'मोकम' वाहत रूक	५७	७	१७६
	लगी नर है तिल हेक लगांण	१६७	७	५९८
	लगै सर स्रोण जगै लहराज	१०१	७	३४४
	लड़ायक 'कंठ' धिखंतिय लाय	२६८	७	९४१
	लड़ै खग झाट लियै कुळ लाज	११९	७	४१३
	लड़ै तिण वार अड़ीखंभ 'लाल'	१७३	७	६१८
	लड़ै 'अगसौ' घण वाहत लोह	७२	७	२३४
	लड़ै 'सिधकन्न' इसै जुध लाह	१२८	७	४४७
	लड़ै हरिनाथ तणौ धख लागि	१५५	७	५५१
	लाडी जिम रौद घड़ा वप लेख	१०१	७	३४५
	लियां सुत 'खीम' भुजां रज लाज	२६९	७	९४३
	लुहां रत छूट हुवौ रंग लाल	११५	७	३९५
	लोहां झट बाढत रौद लगस्स	९५	७	३२३
	लोही धळ-धक्ख वभक्कत लाल	५१	७	१५३
	लोही वभकत्ति खगां झट लागि	८०	७	२५६
	वंके भड़ ओरवियौ जुध बाज	१४१	७	४९७
	वंटै घट मुग्गळ द्रव्य विचार	१८२	७	६५०
	वंदै पग लंच्छि सहेत 'बिसन्न'	१८०	७	६४५
	वडां घर एह सदां लगी वीर	१६१	७	५७५
	बड़ा खळ ढाहत साबळ वाह	१६०	७	५७१
	वड़ा खळ वेधत साबळ वाह	१६९	७	६०२
	वढै वप बीजळ खंड विहंड	६९	७	२२०
	वढै खळ बीजळ चोळ वरन्न	१२८	७	४४८
	वढै रत फेरत कौच विलम्म	८६	७	२८८
	वणै वप कुंदण मांहि वणाव	१९०	७	६८०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
मोतीदांम	बदम्र मजीठ 'जवांन' 'विजेस'	१७६	७	६२८
	बदे दहुवे घड़ देखि बछेक	१३०	७	४५७
	बधे छक पोरस दूजिय वार	४४	७	१३१
	बधै तरियम्र तणो सबछेक	८२	७	२७४
	बपा व्रण चोळ वणे तिण वार	१८८	७	६७२
	बरंगन कंठ धरै वरमाळ	१८५	७	६६२
	बरै रंभ ताय उडाय विमांण	१५५	७	५५०
	बरै रंभ कंठ धरै वरमाळ	११३	७	३८६
	बरै रंभ बैसि झळस विमांण	८८	७	२०५
	बळे पुर-डूंगर बांसहबाळ	२७०	७	६४७
	बहै अस्व गाहटतो धड़ बाधि	१८६	७	६६६
	बहै इम सैल कहै खग बीज	१२६	७	४४१
	बहै झट झोभट त्रीछण बाढ	५६	७	१७३
	बहै खग आय खळां झळवेग	१४६	७	५२७
	बहै खग एम 'हठी' विकराळ	१४४	७	५१०
	बहै खग रोद हणे जुध वेर	११४	७	२५६
	बहै खग बीज ज्युंही खग वूठ	१०७	७	३६६
	बहै खग धूहड़ सीस विहार	५४	७	१६७
	बहै धज साबळ खप्प विहार	११३	७	३८८
	बहै रत पूर नदी जिम वार	६८	७	२१६
	बहै रत छोळ ढहै विकराळ	१२४	७	४२४
	बहै सफरी रुख सारत बाग	१२४	७	४३३
	बहै सर साबळ धार विहार	८७	७	२६४
	बाहै खग 'केहर' सेस वधंत	१८५	७	६६१
	बाहै खग चूहड़खांन विक्राळ	८१	७	२६६
	बाहै खग मुग्गळ वारोवार	७५	७	२४५
	बिचै खळ थाट करै असि वेव	८३	७	२७६
	'बिजावत' उप्रमते असि वाग	१३५	७	४७४
	'बिजावत' दूठ लड़े जिण वार	१८३	७	६५४
	'बिजावत' 'रूप' लड़े रिणवार	१५०	७	५३०
	बिढै इक भायण तेग बुहांण	१६१	७	५७४
	बिढै खग 'पीथल' रो बखतेस	१४६	७	५१५
	बिढै चंडिका पुत्र यूं वरणेस	१८३	७	६५३
	बिढै जुध मेड़तिया जुध वेर	७७	७	२५४
	बिढै भड़ 'जैत' तणो 'बखतेस'	१४६	७	५१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
मोतीदांम	विढै भड़ माहव रौ 'विजपाळ'	१४८	७	५२३
	विढै भड़ भाटिय यूं जुधवेर	१४३	७	५०५
	विढै 'सत्रसाल' खगां वर वीर	१२२	७	४२४
	'विहारिय' संभ्रम झोकि प्रहास	१४३	७	५०३
	विधै धज साबळ चोळ वरम्म	११७	७	४०२
	विभाड़त मूगळ खाग बिहार	१२१	७	४१८
	विरांण सरूप कियां जिणवार	६६	७	३३८
	विलंद निबाब परा वीरयांम	४५	७	१३३
	वीरवक नचक्क सभक्क सवक्क	४६	७	१४७
	वुही झळ ऊपर वीजळ वेगि	१७५	७	६२४
	वेधे दळ मुग्गळ कूंत वहेत	६६	७	२१२
	'वैणावत' 'पातल' वीजळ वाह	६५	७	२०८
	सकौ 'अनराज' सदीठ समाज	२६७	७	६३७
	सकौ जुध हूंत हरोळ सधीर	१६२	७	५७६
	सकौ धर लोक तजै दुख सोक	१५६	७	५५६
	सत्रां अध घाट कितां अध संध	८७	७	२६२
	सभै खग झाटक कूंडळ साथ	७८	७	२५६
	सभै खग झाट हणै खळ साथ	७१	७	२२८
	सभै खग वाह खळां समराथ	१५४	७	५४६
	सभै खळ मार छतीसैई सार	१५६	७	५५४
	सभै खळ 'सांवळ' रौ 'अचळेस'	८६	७	३०१
	सभै जुध 'केसव' रौ सिवदांन	१३२	७	४६३
	सभै जुध दारुण दौलतसाह	१८२	७	६५२
	सभै जुध 'वीद' हरा खळ साल	१३८	७	४८६
	सभै भड़ तीन लखै सरियन्न	८१	७	२७१
	'सतावत' अम्मरसींघ छछोह	१५७	७	५५६
	'सदावत' सांमत 'स्यांम' सनाह	१००	७	३४०
	समोभ्रम 'केहरि' पाथ समाथ	५८	७	१८०
	समोभ्रम गोकळ पातलसाह	१४६	७	५२६
	समोभ्रम 'गोयंद' अम्मरसिंघ	६२	७	१६६
	समोभ्रम 'चंद' 'सिवौ' धुबि सार	७३	७	२४०
	समोभ्रम जीवणदास सनाथ	१२०	७	४१५
	समोभ्रम 'जैत' ज 'नाहर' साह	१५२	७	५३७
	समोभ्रम दारुण सूर 'किसोर'	१४८	७	५२२
	समोभ्रम 'दूद' 'विहारिय' सूर	१५१	७	५३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
मोतीदाम	समोभ्रम 'नाहर' जूटत 'सूर'	१४५	७	५१२
	समोभ्रम 'पेम' 'हिंदाळ' सकाज	६०	७	१८७
	समोभ्रम 'माहव' सांमंत सूर	१३१	७	४५६
	समोभ्रम 'माहव' ग्यांन सधीर	१०६	७	३७२
	समोभ्रम 'रांम' प्रदीत सराह	६७	७	२१५
	सपोभ्रम 'राजड़' 'पेम' सकाज	५७	७	१७७
	समोभ्रम 'राजड़' 'रेणा' सधीर	१३६	७	४७६
	समोभ्रम 'रूप' लड़े 'अमरेस'	१५३	७	५४१
	समोभ्रम 'वीठळ' 'केहर' सूर	६८	७	३३५
	समोभ्रम 'सांमतचंद' सकाज	१७८	७	६३७
	समोभ्रम 'सांमळ' 'जग' सुभेस	११२	७	३८३
	समोभ्रम साहिबखांन सकाज	५६	७	१८४
	समोभ्रम 'साहिब' भांण सराह	१५२	७	५३८
	समोभ्रम सुंदर सूरजमाल	१४६	७	५२६
	'सवाइय' 'मांन' तणो सिरताज	११६	७	३९८
	'सवाइय' वाहत खाग सक्रोध	११०	७	३७७
	सरस्सति द्वारमती विचि सूर	१८०	७	६४३
	सराहत विक्रम देखि समाथ	१७७	७	६३४
	सराहत सूर हयां खग मे'स	६४	७	२०३
	सहेत भिलम्म पड़े घमसांण	७६	७	२६२
	सहै खग संभ्रम 'सांमत साह'	६५	७	२०६
	सत्रां खग भाटक 'गंग' सभेस	१३७	७	४८३
	सत्रां गहि कंध उठावत सीम	१०८	७	३६९
	सत्रां घड़ खाग झटां घड़ सोध	११९	७	४१२
	सत्रां 'महपति' करंत संघार	१८८	७	६७५
	सांम्है सिर खाग वही घमसांण	८४	७	२८१
	'सिभू' कुसाळावत बीजळ सूर	९६	७	३२६
	सिरै 'दुरगावत' सूर सधीर	१२३	७	४३०
	सिरोहिय ईडर राज समाज	२७१	७	९४८
	सिल्है अंग पाखर बाज दुसार	४७	७	१३९
	सिलेह घड़ पाखर बंधि सुचंग	१६३	७	५८२
	सिलेबंध घाट उभेलत सेल	१४४	७	५०८
	सिलेबंध टूक पड़ंत समंग	११७	७	४०४
	सिलेबंध पाखर बंध सँधार	१७४	७	६२२
	सिल्है खग वाढ़त खांन सरीर	९३	७	३१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
मोतीदांम	सिल्है घट वेधत वाहत सेल	५०	७	१५१
	सुजावत साहिब खांन सकाज	१४१	७	४६६
	'सुजा' हर सूर 'मुकंद' सुतन्न	५३	७	१६२
	सुणै कथ एह 'महम्मद साह'	२६६	७	६४४
	सुतन्न हरिंद' लड़े 'सिरदार'	७६	७	२५०
	सुतं 'जगरूप' अजागि समांम	१३६	७	४७६
	सुतां 'रतनेस' मोहक्कम सूर	६१	७	१६२
	सुतां 'रतनेस' अरिज्जण साहु	८६	७	३००
	सुभां 'बळ' गात पराक्रम सीम	१२६	७	४५०
	सुर त्रिय नांम वरै सस धीर	१४६	७	५२८
	सुरां गुर राय मलोत सकाज	८५	७	२८५
	सुरां गुर पूर झिलै अंग सार	१८८	७	६७४
	सुरां गुर 'सांमत' सूर सुजाव	१४८	७	५२५
	सुराचंद पारकरेस सधेस	२७१	७	६४६
	सुरायण पूर किया रिण साज	१७८	७	६३६
	सुरं 'फतमाल' तणै 'सिरदार'	७०	७	२२४
	सुहै इण भांति लड़ै समराथ	१०३	७	३५२
	सोहै हथ घाव सुरंग सुभेव	१७०	७	६०८
	हुई घड़ खाग झटां घड़ हेक	१०६	७	३६०
	हुई वर पाय असीसत हूर	१६८	७	५६६
	हकारत सूर वकारत हेक	१४३	७	५०६
	'हठी' रिणछोड़ तणो करि हाक	६२	७	१६४
	हणे खग झाट अमीर हरोळ	५३	७	१६१
	'हवौ' भड़ गोरधनोत हटाळ	१६०	७	५७०
	'हरी' 'सबळेस' तणो करि हाक	१६०	७	५७२
	'हरी' सुत 'ऊदल' भांण हठाळ	१२३	७	४२८
	'हरी' सुत केहर जूटत हेक	६७	७	३३०
	हरौळांयहूंत हरोळ हठाळ	५०	७	१५०
	हिचै 'कुसळाहर' घायल होय	८१	७	२६८
	हिचै चंद्रहास रचै रिख हास	७६	७	२५१
	हिचै तदि चारण भोक हुबास	१६७	७	५६५
	हिचै दुरगावत झोकि हुबास	१४०	७	४६२
	हिचै भड़ सिंधल चंद्र प्रहास	१४३	७	५०४
	हिवै दळ पूर कढी चंद्रहास	१७७	७	६३५
	हुवां लगि वासिय अमर होय	१६०	७	६८२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
मोतीदाम	हुदां मझि चंड चढ़ै हुलसाय	१२५	७	४३५
	हुवै घरि क्रोध गजां थट हूंत	१८६	७	६६७
	हुवै खळ बीजळ वाहत हाथ	१३९	७	४८९
	हुवै घण मुग्गळ प्रीखम हेम	७५	७	२४७
	हौदां मझि लोह् करैं करि हाक	६७	७	२१३
रसावला	आछटै अज्जरा	४२	७	११७
	आंवता अंधरा	४३	७	१२४
	उड्डि सीस उरा	४३	७	१२३
	कटीए कल्लरा	४२	७	१२०
	किड्ढ धूबक्करा	४४	७	१२६
	करब्बाहै करा	४२	७	११६
	केतरा राहुरा	४४	७	१२७
	घूमवै घूमरा	४४	७	१२८
	जूडिए जूंगरा	४२	७	११५
	झूलपै झंझरा	४२	७	११९
	डाडरा वीहुरा	४२	७	११८
	त्रक्ख मेटत्तरा	४३	७	१२२
	पिंड नाळप्परा	४३	७	१२१
	बरियांम 'अभा'	४४	७	१२९
	सूरमा चौसरा	४३	७	१२५
रोमकंद	उपराळ होदाळ लंकाळ चढै अतिकाळ कराळ झळां भभकै	२४९	७	८९२
	करिकाळ भड़ां तिह काळ किर्तां करिमाळ झड़ां जरवाळ कटै	२५०	७	८९४
	करिमाळ झुलाळ बंगाळ घणा कटि केक खराळ झंफाळ कटै	२५०	७	८९५
	घड़ भूप 'अभा' र विलैंद तणी घड़ रीठ झड़ज्झड़ खाग रमैं	२४८	७	८८८
	घमछट्ट विकट्ट गरट्ट पड़ै घड़ घट्ठ उछट्टत भट्ट घणां	२५१	७	८९६
	बोहो सीस उडक्क हिचक्क उवासक अंधक केड हुचक्क उडै	२४९	७	८९१
	रवताळ रौदाळ रोसाळ महारिण काळ खंडाळ अाताळ करैं	२५०	७	८९३
	हाथियां घड़ हूचक झूल अकज्झक रंभ तकत्तक हूर रहै	२४९	७	८९०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
रोमकंद	होय रिख हड़ाहड़ पावहथज्झड़ धूम अवध्धड़ मेछ घड़ां	२४८	७	८८९
सारसी	अणभंग 'सांमंत' धणी आगळ ओपमा ब्रंद आवतौ	२३६	७	८५२
	'अमर' रौ 'मोहकम' रा असूरां बह हणै धड़ बेहड़ां	२३९	७	८५९
	इधिकाय इसड़ो गजर उडियौ घाय खग जुड़ि घूमरा	२४६	७	८८२
	इम लड़ै चुखचुख होय पड़ियौ भांण कौतिक भाळियौ	२४६	७	८८३
	उडि बांह मुगळा जिरह ऊगळि नारंग रंग नवकली	२३६	७	८५१
	उरड़िया मुगळ 'गुलाब' ऊपर खद रूपड रांमणा	२३९	७	८६०
	ईंद्रसींघ सुतभड़ 'जोध' अणभंग 'लाल' 'सुत' गज- 'बंध' लड़ै	२३८	७	८५८
	कळहै नरूहर 'पदम' कूरम ओरिया अजरायकां	२४७	७	८८४
	केवांण पांण विभाड़ कलमां सार धड़ भड़ साहियां	२४७	७	८८५
	झड़वांण खड़हड़ ग्रीध झड़फड़ भूत खेचर भूचरा	२३५	७	८४९
	तन जतन न करे लड़ै त्रिजड़ां सझै कारिज सांमरौ	२४१	७	८६७
	तिणवार 'जालम' 'केहरी' तण करै खग झट खळ कटै	२३७	७	८५३
	तिणवार 'भगवंत' 'केहरी तण वणै त्रिजड़ां वाहतौ	२४१	७	८६५
	तिणवार 'हिंदव' 'बहादर' तण सेल धड़ खळ साळवै	२४३	७	८७३
	दइवांण सिंभूसिंघ दारुण दुसह वारण निरदळै	२३८	७	८५६
	दईवांण 'जोध' कळोध दारण हिचै आरण हड़वड़ै	२४४	७	८७६
	'दांन' रौ 'अभमल' झाट दुजड़ां 'कांन्ह' 'सुत' 'देवौ' करो	२४४	७	८७४
	धुबि राग सींधव बंब धूसां तूर भेरि अहक्कए	२३५	७	८४८
	पग हाथ झंड़ झड़ जरद पोसां उअर बळधड़ ऊससै	२३७	७	८५४
	मगरूर 'मांन' 'अनोप' संभ्रम 'अखौ' 'मांन' 'सुजावयं'	२४४	७	८७५
	'महिरांण' 'भगवत' सुतण असिमर खद थट पाधोरियौ	२४७	७	८८६
	रसलूध लखि इम घड़ा खदां अछर घूमर आवियौ	२४०	७	८६२
	लह लागिया लोहाळ लसकर भयंकर गज भाररौ	२३७	७	८५५
	वधि 'जसौ' 'संभव' सुतण वाहत चोळ खगि कळि चाळिका	२४२	७	८७०
	वरमाळ गळ अंत्राळ पग विच झाळ व्रन खग ओझड़ै	२४३	७	८७२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छंद का नाम	प्रथम पंक्ति	पृ०	प्रकरण	पद्यांक
सारसी	वाहै 'विजावत' बहादर वधि वाढ़ झळहळ वीजळै	२३८	७	८५७
	'विजपाळ' हाकलि जेण वेळा सूरवीर सकज्जयं	२३६	७	८५०
	वीजळां हाथळ गजां विहंडत करत समहर कांमरौ	२४२	७	८७१
	संभ्रम 'बहादर' अडर समरथ घोम धरहर धौवळां	२४०	७	८६३
	सज्भै 'सवाई' 'सुरत' संभ्रम घटा खळ खग भट घणी	२४०	७	८६४
	समहर 'सवाइय' 'राजसी' सुत धजर खग चवधारका	२४५	७	८७७
	सर धजर साबळ गजर असिमर असुर सिर पर आछटै	२४६	७	८८१
	सिर उडै फूटै वहै स्रोणित लोहि हठमल सुत लड़ै	२३९	७	८६१
	सुत 'कांन्ह' 'मांनड़' जोस समहर 'नाथ' भड़ रघनाथरौ	२४५	७	८७८
	सुत 'भाउ' झळहळ घाव साबळ रह चंदळ रवदाळरै	२४५	७	८७९
	सुत भावसिंघ 'भगोत' साबळ धड़ जड़ै भड़ असिधरा	२४२	७	८६९
	'सुरतेस' 'अखमल' सुतण साबळ जरद पोसां उर जड़ै	२४१	७	८६८
	हद लड़ै 'सांमंत' 'तेज' झळहळ श्रोप वयळ ऊजासरौ	२४१	७	८६६
	हर सिखर कूरम घणा खळ हणि धजर साबळ धोहड़ां	२४५	७	८८०

परिशिष्ट ३

भौगोलिक टिप्पणियाँ

[सूरजप्रकास के तीनों भागों में आये हुए ऐतिहासिक महत्व के स्थानों आदि का परिचय]

अजमेर

राजस्थान के अजमेर जिले का मुख्य नगर है, जो अरावली पर्वत श्रेणी की तारागढ़ पहाड़ी की ढाल पर स्थित है। यह नगर १०४५ ई० में अजयपाल नामक चौहान राजा द्वारा बसाया गया था। ई० सन् १३६५ में मेवाड़ के शासक, १५५६ में अकबर और १७७० से १८८० तक मेवाड़ तथा मारवाड़ के भिन्न-भिन्न शासकों द्वारा शासित हो कर अंत में १८८१ में अंग्रेजों के आधिपत्य में चला गया।

अन्हिलवाड़ (अणिहलवाड़ा)

यह अन्हिल पाटन गुजरात के सोलंकी वंश के राजाओं की राजधानी था। इसे प्रसिद्ध चालुक्य मूलराज ने बसाया था और यह महमूद गजनी के हमले के पूर्व तक सोलंकी राजाओं की राजधानी बना रहा। सोमनाथ का प्रसिद्ध शिव मंदिर भी वहीं था जिसे महमूद गजनी ने १०२४-२५ ई० में आक्रमण कर के नष्ट कर दिया था। उसके बाद पुनः इस पर चालुक्यों का अधिकार हो गया और उन्होंने पर्याप्त काल तक राज्य किया। बाद में बाघेलों ने इसे जीत कर अपना राजकुल वहां प्रतिष्ठित किया। यह नगर वैभव की चरम सीमा तक पहुँच चुका था। १३वीं सदी के अंत में अल्लाउद्दीन खिलजी ने गुजरात पर आक्रमण कर के उसे जीता, तब यह उसी के साम्राज्य का नगर बन गया।

अरब

एशिया के दक्षिण पश्चिम में एक प्रायद्वीपी पठारी भाग है जो १२^0 उत्तर अक्षांश से ३२^0 उ० अ० तक तथा ३५^0 पूर्वी देशान्तर से ६६^0 पू० दे० तक फैला हुआ है। इसका क्षेत्रफल दश लाख वर्गमील है। यह संसार का अति उष्ण प्रदेश है। इसकी गणना संसार के प्रसिद्ध मरुस्थलों में की जाती है। यमन, असीर एवं ओमान के क्षेत्रों को छोड़ सम्पूर्ण अरब शुष्क एवं उष्ण है। यहाँ वर्षा बहुत कम होती है। कुछ भागों में सर्दियों में वर्षा होने से पैदावार हो जाती है। रियाध सऊदी अरब गणराज्य की राजधानी है। यह प्रायद्वीप खनिज तेल का भंडार है। यहां के लोग घोड़ा ऊंट, बकरी, भेड़, गदहा आदि पशु अधिक पालते हैं। मुसलमानों के पवित्र तीर्थ-स्थान मक्का और मदीना इसी देश के हेजाज प्रान्त में हैं।

आडौ-वळौ (अरावली)

यह एक भंजित पहाड़ है जो पृथ्वी के प्रारंभिक काल में ऊपर उठा था। यह पर्वत-श्रेणी समस्त गुजरात राजस्थान से ले कर देहली तक, उत्तर पूर्व से ले कर दक्षिण पश्चिम तक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लगभग ४०० मील की लम्बाई में फैली हुई है। इसकी औसत ऊँचाई १००० फीट से लेकर ३००० फीट तक है। इसका सर्वोच्च शिखर आबू पर्वत है जो ५६५० फीट ऊँचा है। इसका अधिकांश भाग वनपूर्ण है और आबादी भी अल्प है। इसके विस्तृत क्षेत्र अधिकांश में मध्यस्थ घाटियाँ एवं बालू के मरुस्थल हैं। इस पर्वत की कई विच्छिन्न-शृंखलायें भी बन गई हैं, जिनका ढाल तीव्र है और शिखर समतल है। इसमें पाई जाने वाली शिलाओं में स्लेट, शिस्ट, नाइस, संगमरमर, क्वार्ट जाइट, शेल और ग्रेनाइट विशेष हैं।

अवधपुरी (अयोध्या)

उत्तरप्रदेश का एक भाग जो प्राचीन काल में कौशल राज कहलाता था। इसकी राजधानी अवधपुरी (अयोध्या) थी। यह नगर घाघरा (सरयू) नदी के दाहिने किनारे पर फैजाबाद जिले में स्थित है। इसका महत्त्व इसके प्राचीन इतिहास में ही निहित है। प्राचीन उल्लेखों के अनुसार इसका क्षेत्रफल ९६ वर्ग मील था। सातवीं शताब्दी में चीनी यात्री ह्वेनसांग यहां आया था। उसके लेखानुसार यहाँ बीस बौद्ध मन्दिर थे तथा ३००० भिक्षु रहते थे। इस प्राचीन नगर के अवशेष अब खंडहरों के रूप में रह गये हैं, जिसमें कहीं-कहीं कुछ अच्छे मंदिर भी हैं। इनमें सीता-रसोई तथा हनुमान-गढ़ी प्रसिद्ध हैं। अब अयोध्या एक तीर्थस्थान के रूप में रह गया है।

अहमदाबाद

यह नगर २३°१" उत्तर अक्षांश और ७२°३७" पूर्व देशान्तर गुजरात राज्य में बम्बई से ३०९ मील उत्तर में साबरमती नदी के बायें तट पर स्थित है। यह प्रमुख औद्योगिक, व्यापारिक तथा वितरण केन्द्र है।

साबरमती तट पर एक भील सरदार के नाम पर असावल नामक रम्य स्थान था जो युद्ध की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण था, जहाँ ई० स० १४११–१२ तदनुसार वि० सं० १४६९ में तातार खां के पुत्र अहमदशाह ने साँचल नामक ग्राम के स्थान पर अहमदाबाद नगर बसा कर इसे अपनी राजधानी बनाया। १४११ ई० से १५११ ई० तक की मध्य की शताब्दी में इसकी उत्तरोत्तर उन्नति हुई। मुगलकाल में भी यह नगर उन्नति की चरम सीमा पर था। यह व्यापार, शिल्प, चित्र, स्थापत्य आदि विभिन्न कलाओं का केन्द्र था। किन्तु मराठा काल में इसका वैभव चौपट हो गया जिसका अंग्रेजी शासन काल में पुनरुत्थान हुआ।

आंबेर

यह नगर जयपुर से सात मील उत्तर में पहाड़ों के बीच बसा हुआ है। नगर के पश्चिमी किनारे पर आंबेर का सुदृढ दुर्ग है और शिलादेवी का मन्दिर है जो बहुत सुन्दर ढंग से बना हुआ है। कछवाहा राजा कांकिल ने वि० सं० १०९३ में सूसावत मीनों से छीन कर आंबेर की नींव डाली। इसका प्राचीन नाम अम्बिकापुर था जिसका अपभ्रंश आंबेर है। यहां प्राचीन समय का बना अम्बिकेश्वर महादेव का मन्दिर भी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आगरा

यमुना नदी के दायें किनारे पर स्थित उत्तरप्रदेश का एक प्रसिद्ध नगर है। वर्तमान आगरा का इतिहास लोदी काल से आरंभ होता है । सिकंदर लोदी और इब्राहीम लोदी के समय में आगरा ही भारत की राजधानी था। वि० सं० १४६६ में यह नगर मुगल-साम्राज्य के संस्थापक 'बाबर' के अधिकार में चला गया। ई० सन १५७१ में अकबर महान ने आगरे के किले का निर्माण कराया। किन्तु किले की अधिकांश इमारतें जहांगीर और शाहजहाँ द्वारा निर्मित हुई हैं। इस काल में नगर की दशा अच्छी थी। नगर में सोलह प्रवेश द्वार थे। नगर का क्षेत्रफल ११ वर्गमील था। आगरा ताजमहल का नगर कहलाता है। यहाँ कई विशाल एवं भव्य इमारतें हैं जिनसे मुगलकालीन वास्तुकला की महत्ता प्रकट होती है। आगरा पश्चिमी-उत्तर प्रदेश का सब से बड़ा शिक्षा-केन्द्र है।

आबू (आबू पर्वत)

आबू का प्राचीन नाम अरबुद्ध है। यह ४००० फीट की ऊँचाई पर बसा है। इसकी सबसे ऊँची चोटी का नाम गुरुशिखर है, जो ५६५० फीट ऊँची है। प्राचीन परम्परा के अनुसार यह वसिष्ठ ऋषि का निवास-स्थान था। आर्यों के गुरु का निवास होने के कारण यह बुद्धिवादियों के आवागमन का केन्द्र हो गया। यहाँ वसिष्ठ द्वारा अनार्यों की शुद्धि की जा कर उन्हें आर्य बनाया जाता था। इसी से इसे अरबुद्ध कहने लगे। इस पहाड़ का उल्लेख मैगस्थनीज ने भी अपनी भारत-यात्रा में किया था। प्राप्त अभिलेखों के द्वारा यह कहा जा सकता है कि यहाँ पहले शैव मत का प्रभाव था; बाद में यहाँ जैन मत का प्रभाव हो गया। ११वीं शताब्दी में यहाँ परमारवंश के क्षत्रियों का शासन था। इन्हीं पहाड़ियों की सहायता से सिरोही के राव सुरताण अकबर के विरुद्ध गुरिल्ला रणनीति द्वारा मुगलाई फौजों को तंग करता रहा। १९वीं शताब्दी में आबू, अंग्रेजों के पोलिटिकल एजेन्टों का, गर्मी के लिये निवास-स्थान बना रहा। आबू, मंदिरों का गृह और कला का केन्द्र है।

आसोप

यह ठिकाना आसोप का मुख्य नगर है। उत्तरी-रेलवे के गोठन स्टेशन से १५ मील की दूरी पर तथा जोधपुर नगर से ५० मील उत्तर दिशा में स्थित है।

ईडर

यह गुजरात का एक प्राचीन नगर है। इसके उत्तर में सिरोही और मेवाड़, पूर्व में डूंगरपुर, दक्षिण और पश्चिम में अहमदाबाद और गायकवाड़ है। साबरमती नदी इसकी पश्चिमी सीमा बनाती है। ईडर का किला बहुत ऊँची पहाड़ी पर बना हुआ है। यह पहाड़ी अरावली और विंध्य से मिली हुई है। इसको वेणी वच्छराज ने बनवाया था। बाद में यह नगर जंगली भील लोगों का निवास-स्थान रहा। ईडर के परिहार वंश का अंतिम राजा अमरसिंह शहाबुद्दीन गोरी की लड़ाई में पृथ्वीराज के साथ लड़ कर मारा गया और ईडर का राज सांवलिया सोड़ को मिला। बाद में राव सीहा के पुत्र सोनंग ने सांवलिया सोड़ को मार कर वि० सं० १३१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

में ईडर का राज्य अपने अधिकार में कर लिया। इस प्रकार ईडर पर राठौड़ों का अधिकार हो गया। बाद में इस पर मुसलमानों का अधिकार लम्बे अर्से तक रहा। किन्तु ई० स० १७२६ में महाराजा अजीतसिंह के पुत्र आनन्दसिंह व रायसिंह ने ईडर पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार यह पुनः राठौड़ों के अधिकार में आ गया जो भारत स्वतंत्र हुआ तब तक राठौड़ राजाओं के शासन में रहा।

ईरान

पश्चिमी एशिया का अति प्राचीन भाग जो फारस कहा जाता था। इसका प्राचीन नाम आर्याना था। यह फारस, तुर्की, ईराक और रूस आदि देशों से घिरा हुआ है। प्राचीन काल से ही यह कला, सभ्यता और संस्कृति का केन्द्र रहा है। यह एलाम के नाम से पुकारा जाता है। इसका शासन पुरोहितों के हाथों में था। यहाँ की सभ्यता भारत की प्राचीन सभ्यता से मिलती-जुलती थी। ये सूर्य और अग्नि की पूजा करते थे। अरबों की ईरान-विजय से लेकर अब तक इसकी सांस्कृतिक आत्मा अपनी महानता का परिचय देती रही है। ईरान और खुरासान बौद्ध धर्म का केन्द्र रहा है। इस्लाम के आगमन के बाद यह इस्लामी सभ्यता का महान केन्द्र रहा है। इस धर्म का महान विद्वान 'अलगिजाली' यहीं का रहने वाला था, जिसने कई पुस्तकें लिखी हैं। वर्तमान ईरान पेट्रोल, सूखे मेवे, गरम और रेशमी वस्त्रों के उत्पादन करने के कारण संसार भर में प्रसिद्ध है।

उज्जैन

इसका प्राचीन नाम उज्जयिनी था जो उज्जनता संस्कृत के उज्जैन्त का पाली रूपान्तर है। इसकी पुष्टि बौद्धों के पाली साहित्य से होती है। उस समय भारत के सोलह महा-जनपदों में अवंती का विशिष्ठ स्थान था और उज्जयिनी उसकी राजधानी थी। उस समय यह नगर संस्कृति और कला का केन्द्र था। मौर्य काल में भी इसका महत्त्व कम नहीं था। अशोक राजगद्दी पाने के पूर्व यहीं का शासक था। भारत से मध्य देश की ओर आने वाले मार्गों पर होने के कारण इसकी व्यापारिक एवं राजनीतिक महत्ता सदा बनी रही। विक्रमादित्य के समय में यह मालव गणतंत्र की राजधानी थी। यहाँ अनेकों युद्ध हुए, उनमें मुगल-कालीन धरमत का युद्ध इतिहास-प्रसिद्ध है।

मुगलों और अंग्रेजों के समय में इसका राजनीतिक महत्त्व नहीं रहा।

उदयपुर

ई० सन् १५६८ में अकबर द्वारा चितौड़ के विजित होने पर महाराणा उदयसिंह ने अरावली की गिर्वा नामक उपत्यका में उदयपुर बसाया। यह समुद्र की सतह से लगभग २००० फीट ऊँची पहाड़ी पर स्थित है एवं जंगलों द्वारा घिरा है। पहाड़ी के सर्वोच्च शिखर पर महाराणा के राज-प्रासाद हैं, जिनका प्रतिबिंब पिछोला झील में पड़ता है। प्राचीन नगर प्राचीर द्वारा आबद्ध है जिसके चर्तुदिक रक्षा के लिये खाई खुदी है। कुछ दूरी पर दक्षिण में एकलिंग की चोटी पर उदयपुर का प्रसिद्ध किला है। यह राजस्थान के उन्नतिशील नगरों में से एक है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कन्नौज

यह नगर उत्तरप्रदेश के फर्रुखाबाद जिले में है। इसकी स्थिति २७°३" उत्तर अक्षांश तथा ७९°५६" पूरब देशान्तर है। प्राचीन काल में गंगा नदी इस नगर के बाजू में बहती थी। ईसा की पाँचवीं शताब्दी में यह गुप्त साम्राज्य का प्रमुख नगर था। इस नगर को छठी शताब्दी में हूणों ने आक्रमण कर के नष्ट कर दिया था। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी इस नगर का उल्लेख किया है। ११वीं शताब्दी के प्रारंभिक काल में यवनों के आक्रमण के कारण यह नगर नष्ट-भ्रष्ट हो गया। इसके बाद ई० सन् ११९४ में मुहम्मद गोरी ने आक्रमण कर के इस नगर पर अपना अधिकार जमाया। अकबर के समय में भी यह उत्तरप्रदेश के मुख्य नगरों में था। वर्तमान समय में यह नगर सुगंधित इत्र आदि के लिये प्रसिद्ध है।

करौली

यह राजस्थान का छोटा-सा राज्य था जो पूर्वी सीमा पर २६°३" व २६°४९" उत्तर अक्षांश और ७६°३५" व ७७°२६" पूर्व देशान्तर के मध्य में स्थित है। इसका क्षेत्रफल १२०८ वर्ग मील है। इस नगर को वि० सं० १४०५ में राजा अर्जुनदेव ने बसाया था और कल्याणराय के मन्दिर के कारण इसका नाम करौली रक्खा गया। प्राचीन काल में यहाँ मीनों की आबादी अधिक थी। ये लूट-पाट अधिक किया करते थे जिससे इस नगर की तरक्की नहीं हुई। राजा गोपाललाल ने इन मीनों को दबा कर शहर की तरक्की की।

कागौ

यह स्थान जोधपुर से १ मील उत्तर दिशा में स्थित है। प्राचीन ग्रंथों के आधार पर यह कहा जाता है कि यहाँ काकभुसुण्डजी ऋषि ने तपस्या की थी। इसी से इसे कागा कहते हैं। यहाँ का जल बड़ा स्वच्छ तथा स्वास्थ्यप्रद है। यहाँ शीतलादेवी का बड़ा सुन्दर मन्दिर है, जो पहाड़ काट कर उसकी चट्टान के नीचे बनाया गया है। यहाँ प्रति वर्ष चैत्र कृष्णा अष्टमी को शीतला का मेला लगता है, जो तीन-चार दिन तक रहता है। इसके समान जोधपुर में जन-समूह के लिहाज से दूसरा मेला नहीं लगता। यहाँ के पुजारी गहलोत वंश के माली हैं। यहाँ का बाग पहले बड़ा सुन्दर था और इस बाग के अनार भारत भर में प्रसिद्ध थे, किन्तु महाराजा सर प्रतापसिंह के द्वारा यह बाग समूल नष्ट करवा दिया गया। यहाँ एक गौशाला भी है। कागा के पास श्मशान भी हैं। कागा जोधपुर के तीर्थ-स्थानों में गिना जाता है।

किशनगढ़

यह नगर राजस्थान के पूर्वी भाग में बसा हुआ है। मोटा राजा उदयसिंह के १४ पुत्रों में से किसनसिंह जहाँगीर के पास रहता था। बादशाह जहाँगीर ने उसकी सेवाओं से प्रसन्न हो कर सेठोलाव जागीर में दिया था, जिसके खंडहर अब भी किशनगढ़ के पश्चिम की तरफ मौजूद हैं। उसी स्थान पर वि० सं० १६६६ में किसनसिंह ने किसनगढ़ बसाया। यह नगर फुलेरा से अजमेर जाने वाली पश्चिमी रेलवे का स्टेशन है। नगर छोटा होने पर भी बहुत सुन्दर ढंग से बसाया गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोटा

कोटा नगर राजस्थान के पूर्वी दक्षिणी भाग में हाडोती के पठार पर २४°३०" उत्तर अक्षांश और ७५°४० पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। यह नगर राजस्थान की प्रसिद्ध नदी चम्बल के दक्षिणी पूर्वी किनारे पर बसा हुआ है। यह नगर चौदहवीं शताब्दी में कोटिया भील के नाम से बसाया गया था। उस समय यहाँ भीलों का अधिकार था। प्राचीन लेखों के अनुसार यहाँ नागवंशी और मौर्यवंशी राजाओं का भी राज्य रहा है। इसके बाद वि० सं० १६८८ तदनुसार ई० स० १६३१ में यह चहुवान वंश के हाड़ा राजपूत राव रतनसिंह के कनिष्ठ पुत्र माधवसिंह के अधिकार में आ गया। तब से भारत के स्वतन्त्र होने के पूर्व तक यहां इसी वंश का राज्य रहा।

गिरनार

यह बहुत प्राचीन स्थान है। काले पत्थर की पर्वत-श्रेणी जो लगभग १२ मील तक चली गई है। इसके मध्य भाग में एक बड़ा दुर्ग है। इसे ग्रहरिपु ने बनवाया था। इसकी सुन्दर घाटी के मुख पर नेमिनाथ का पवित्र पर्वत गिरनार खड़ा है, जहाँ कई जैन मंदिर हैं।

इसके मुख्य भाग पर ही प्राचीन नगर जूनागढ़ है। पहले यह सोरठ कहलाता था, वहाँ का स्वामी राव खंगार था। इस नगर के दरवाजे से ही यात्रियों के पद-चिन्हों से बनी हुई पगडंडी सोनरेखा नदी के किनारे-किनारे उसके उद्गम स्थान गिरनार के शिखर तक चली गई है, जहाँ समतल भू-भाग है। यहाँ पर जैन तीर्थंकरों के चैत्य बने हुए हैं। इस मैदान से गिरनार के शिखर तक चढ़ने का झाड़ियों में हो कर एक बीहड़ मार्ग अम्बादेवी के मन्दिर तक चला गया है। गिरनार पर्वत की छः अलग-अलग चोटियाँ हैं जिनमें सबसे ऊँची चोटी गोरखनाथ नाम से प्रसिद्ध है।

गोलकुण्डा

बहमनी सुलताना के समय में गोलकुण्डा तैलंगाना प्रदेश की राजधानी था। १५वीं शताब्दी में बारा मलिक कुल कुतुब-उल मुल्क (Barra Malick Kull Kutbul Mulk) जो सुलतान मुहम्मद बहमनी की मातहती में आया, जिसे गाजी का खिताब दिया गया और उसे तैलंगाना का शासक बना दिया। १५१० ई० में यह स्वतंत्र हो गया। उसके बाद १५७६ ई० में सम्राट अकबर ने राजा मानसिंह को भेज कर इसे मुगल साम्राज्य में मिला लिया। शाहजहाँ के सयम में इसके शासक पुनः स्वतंत्र हो गये थे। औरंगजेब ने गोलकुण्डा के नवाब को, जो शिया मुसलमान था, नष्ट कर के गोलकुण्डा को पुनः मुगल-साम्राज्य में विलीन कर दिया।

खेड़

यह प्राचीन नगर उत्तरी रेलवे की बाड़मेर शाखा के बालोतरा स्टेशन से कुछ दूरी पर है। नगर उजड़ी दशा में अब तक मौजूद है। यहाँ के प्राचीन विष्णु और शिव-मन्दिर १२वीं शताब्दी के उत्कृष्ट नमूने हैं। उस समय यहाँ गुहिलों का अधिकार था। डाभी इनके मन्त्री थे। इनका परस्पर वमनस्य था। इस वैमनस्य से लाभ उठाने के लिये राव सीहाजी ने इस

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पर अधिकार करने के लिये आक्रमण किया किन्तु बीच में ही लौटना पड़ा परन्तु उनके पुत्र आसथान ने खेड़ पर अधिकार कर के इसको अपनी राजधानी बनाया ।

खेतड़ी

यह जयपुर राज्य के एक बड़े जागीरदार के ठिकाने की राजधानी का नगर है । यहाँ पहाड़ी पर एक किला है । यहाँ की पहाड़ी में तांबे की खानें हैं ।

चाटसू

यह जयपुर राज्य का एक कस्बा है । यहाँ पर डूंगरी-शेलर माता का बड़ा मेला लगता है ।

चित्तौड़गढ़

यह दुर्ग पहाड़ी पर बना हुआ है जो समुद्र की सतह से १८५० फुट ऊँचा है । इसकी लम्बाई लगभग साढे तीन मील और चौड़ाई करीब आधा मील है । यह अति प्राचीन दुर्ग है । इसको मौर्यवंशी राजा चित्रांगद ने बनवाया था । मौर्यों के बाद विक्रम की आठवीं शताब्दी के अंत में गुहिलवंशीय राजा बाप्पा रावल ने अंतिम मौर्यवंशी राजा मान से छीन लिया था । यह अनेकों बार बसा और उजड़ा है । इस पर कुछ समय तक मालवे के परमारों तथा गुजरात के सोलंकियों व मुसलमानों का आधिपत्य भी रहा है । महाराणा उदयसिंह के समय वि० सं० १६२४ तक यह मेवाड़ की राजधानी भी रहा है ।

जयपुर

राजस्थान का प्रसिद्ध नगर जयपुर जो २६°५६ उत्तर अक्षांश तथा ७५°५८ पूर्व देशान्तर पर स्थित है । इस नगर को महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय ने वि० सं० १७८४ पोष वदि १ बुधवार को बसाया था । इसके पूर्व इस राज्य की राजधानी आंबेर थी जो वर्तमान राजधानी से ७ मील दूर पहाड़ियों से घिरा हुआ है । जयपुर नगर अपनी सुन्दरता और बनावट के लिये भारत भर में प्रसिद्ध है, अतः यह भारत का पेरिस कहलाता है । वर्तमान जयपुर समस्त राजस्थान की राजधानी है । आबादी के लिहाज से यह नगर राजस्थान में सर्व प्रथम है ।

जहाजपुर

यह अति प्राचीन स्थान है । लोगों का कथन है कि जनमेजय का नागयज्ञ यहीं हुआ था, अतः इसका नाम यज्ञपुर हुआ और उसका अपभ्रंश जहाजपुर है । नागेला तालाब और नागदी नदी उस यज्ञ की परिचायिका है । जहाजपुर के इर्दगिर्द अनेकों प्राचीन स्थान हैं, जहाँ चौहानों के शिलालेख मिलते हैं । धौड़ गांव के रूठी राणी के मन्दिर के वि० सं० १२२५ के लेख में पृथ्वीराज की राणी का नाम सुहवदेवी लिखा है जो रूठी राणी के नाम से प्रसिद्ध है । इसके अलावा भी वि० सं० १२२८ और १२२९ के शिलालेख हैं । इस कस्बे के लोहारी व आंवलदा गांवों में वि० सं० १२११ और १२३४ का चौहान राजा वीसलदेव और सोमेश्वरदेव के राज्यकाल के शिलालेख मिले हैं, जिनमें सिंदराज और जेहड़ की मृत्यु का उल्लेख है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जालोर

जोधपुर के जालोर परगने का मुख्य स्थान है और सूकड़ी नदी के किनारे पर बसा हुआ है। प्राचीन सुदृढ़ गढ के भग्नावशेष हैं। पहले इसे परमारों ने बसाया था। बाद में जालोर चौहानों की राजधानी रहा। शिलालेखों के अनुसार इसका नाम जाबालीपुर और किले का नाम सुवर्णगिरि मिलता है। यहां की प्राचीन वस्तुओं में तोपखाना है, जो अलाउद्दीन खिलजी के समय में चौहानों से मुसलमानों के हाथ में चला गया। इसके उत्तरी द्वार पर फारसी में एक लेख है जिसमें मुहम्मद तुगलक का नाम है। इस नगर से जैन तथा हिन्दुओं से सम्बन्ध रखने वाले कई लेख मिले हैं। एक वि० सं० ११७४ का बीसल की राणी मेलरदेवी द्वारा सिन्धु राजेश्वर के मंदिर पर सुवर्ण कलश चढ़ाये जाने का उल्लेख है। इस प्रकार इसकी प्राचीनता के अनेक शिलालेख मिले हैं।

जैतारण

यह प्राचीन स्थान जोधपुर के जैतारण तहसील का मुख्य स्थान है। यहाँ प्राचीन काल में सींधलों का अधिकार था। किन्तु सूजाजी के पाँचवें पुत्र राव ऊदाजी ने वि० सं० १५३६ में सींधलों को हरा कर जैतारण पर अपना नया राज्य कायम किया था। जैतारण राव ऊदा को सूजाजी ने जागीर के रूप में नहीं दिया था वरन् अपने बल-विक्रम से नया राज्य कायम कर के ऊदावत शाखा का इतिहास प्रारम्भ किया। बाद में जैतारण खालसे हो गया और ऊदावतों को नींबाज मिल गया जो आज भी ऊदावतों का बड़ा ठिकाना है। जैतारण वि० सं० १६१४ में ऊदाजी के वंशजों के हाथ से निकल गया और उस पर मुसलमानों का अधिकार हो गया। मुसलमानों से पुनः राठौड़ों ने जीत लिया।

जैसलमेर

यह नगर राजस्थान के पश्चिम में अन्तिम सीमा पर २६°५ उत्तर अक्षांश और ६६°३० पूर्व देशान्तर पर स्थित है। यह नगर इस राज्य की राजधानी है, जिसको चंद्रवंशी भाटी राजपूत रावल जैसल ने वि० सं० १२१२ में बसाया था। इसका प्राचीन नाम जैसल नगर, बल्लदेश और मांड भी मिलता है। ई० स० १२६४ में बादशाह अल्लाउद्दीन खिलजी ने इस पर आक्रमण कर इस नगर को वीरान कर दिया था। इसके बाद ई० स० १२६६ में रावल दूदा द्वारा यह पुनः आबाद किया गया, किन्तु रावल घड़सी के समय में नगर अधिक उन्नत हुआ।

जोधपुर

यह मारवाड़ राज्य की राजधानी था। यह २४°३० व २७°४० उत्तर अक्षांश और ७०° व ७५°२० पूर्व देशान्तर पर स्थित है। इस नगर को राव जोधाजी ने वि० सं० १५१५ तदनुसार ई० स० १४५८ में बसा कर आबाद किया। इसके पूर्व राज्य की राजधानी मंडोवर थी जो जोधपुर नगर से ६ मील दूर है। यह नगर महाराजा यशवन्तसिंह की मृत्यु के बाद कुछ समय तक मुगलों के अधिकार में भी रहा। किन्तु महाराजा अजीतसिंह ने इसे पुनः प्राप्त कर लिया, तब से इस पर उन्हीं के वंशजों का अधिकार रहा। यह आबादी की दृष्टि से राजस्थान का दूसरा नगर है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डीडवाना

यह डीडवाने परगने का मुख्य नगर है। चित्तौड़ के कीर्तिस्तम्भ से ज्ञात होता है कि यह प्रदेश महाराणा कुम्भा के आधीन था और वह यहाँ की नमक की झील व खानों से कर लिया करता था। यह नगर उत्तर रेलवे का रेलवे स्टेशन है। यहाँ के प्राचीन और नवीन मन्दिर व हवेलियाँ देखने योग्य हैं।

डूंगरपुर

यह नगर भूतपूर्व डूंगरपुर राज्य की राजधानी था, जो कि २३°२५" उत्तर अक्षांश और ७३°४०" पूर्व देशान्तर पर स्थित है। इसकी उत्तरी सीमा मेवाड़ और माही नदी से मिलती है। यह नगर चारों ओर पहाड़ियों से ढका है जिस पर कि प्राचीन काल में मेरों का अधिकार था। इन मेरों के स्वामी डूंगरिया मेर को मार कर रावल करण के बेटे माहप ने अपना अधिकार कर डूंगरपुर नगर बसाया। इस नगर को बसाने में राहप ने भी सहायता दी थी; यह मेवाड़ की ख्यातों से प्रमाणित होता है।

ढूंढाड़

ढूँढाड़ जयपुर राज्य का प्राचीन नाम है। इसके विषय में कई कल्पनाएँ की गई हैं। हिन्दी विश्व कोश के अनुसार गलता के ढुंढु दैत्य से ढूंढाड़ विख्यात है।[1] टाड् साहब के अनुसार जोबनेर के एक प्रसिद्ध शिखर ढूँढ़ पर चौहान राजा बीसळदेव ने दैत्य रूप में तपस्या की थी तब से ढूँढाड़ विख्यात हुआ है।[2] जयपुर से १५ मील उत्तर में अचरौल के पास की पहाड़ियों से ढूंढ़ नदी निकलती है। अत: सम्भवत: इस नदी के नाम पर राज्य का नाम ढूंढ़ाड़ हुआ हो।[3] जयपुर के समीप ढूँढ़ नाम की एक बस्ती है और उसी के समीप आमेर के पर्वत का एक अति उच्च शिखर ढुंढ़ाकृति में दृष्टिगोचर होता है, इस कारण से भी आमेर राज्य ढूँढाड़ के नाम से विख्यात हो सकता है।[4]

तारागढ़

यह इतिहास-प्रसिद्ध दुर्ग राजस्थान के अरावली पर्वतश्रेणी की तारागढ़ नामक पहाड़ी पर स्थित है। इसी पहाड़ी की तलहटी में अजमेर नगर बसा हुआ है। कहते हैं कि इस दुर्ग का निर्माण छठी शताब्दी में महाराजा अजयपाल चौहान ने किया था। यह सुदृढ़ और सुरम्य दुर्ग जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह के अधिकार में भी रहा था। मुगलकाल में यह मुगलों के अधिकार में और बाद में अंग्रेजों के अधिकार में चला गया। इस समय यह दुर्ग भारत सरकार के अधिकार में है।

तूरान

फारस के उत्तर पूर्व में आया हुआ मध्य एशिया का भू-भाग जो तुर्क, तातारी, मुगल आदि जातियों का निवास-स्थान है।

---

१ हिन्दी विश्वकोश, पृष्ठ ९३
२ टाड् राजस्थान, पृष्ठ ५६०
३ वीर-विनोद, भाग २ पृष्ठ १२५०
४ जयपुर का इतिहास, भाग १, पृष्ठ १३, ई० सन् १९३७, हनुमान शर्मा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राचीन इतिहास के अनुसार 'शक' तूरानी जाति के ही थे, जिनका ईरान वाले आर्यों से हमेशा युद्ध होता रहता था। ईरानियों ने तूरानियों को पराजित कर कई स्थानों पर अधिकार किया था। प्राचीन तूरानी अग्नि की पूजा करते थे और पशुओं की बलि चढ़ाते थे। वे आर्यों की अपेक्षा असभ्य थे। इन तूरानियों के उत्पातों से एक बार सारा यूरोप और एशिया तंग था। भारत पर आक्रमण करने वाले चंगेजखाँ, तैमूर, उसमान आदि इसी तूरानी जाति के अन्तर्गत थे, जिन्होंने सारे एशिया को अपने अत्याचारों से विचलित कर दिया था।

दिल्ली

भारत का बहुत प्राचीन और प्रसिद्ध नगर जो यमुना नदी के किनारे बसा हुआ है और बहुत समय तक हिन्दू सम्राटों और मुसलमान बादशाहों की राजधानी रहा। यह नगर १९१२ ई० से ब्रिटिश भारत की राजधानी भी बनाया गया। दिल्ली नगर कई बार बसा और कई बार उजड़ा। कहते हैं कि इन्द्रप्रस्थ के मयूरवंशी राजा दिलू ने सर्व प्रथम इसे बसाया था, इसी से इसका नाम दिल्ली पड़ा। यह भी प्रवाद है कि राजा अनंगपाल के पुरोहित द्वारा इस नगर की नींव रखने के पूर्व एक कीली शेष नाग के फण पर गाड़ी गई। राजा के द्वारा निकाले जाने पर लहू-धारा निकली तो राजा ने पुनः उस कील को गाड़ दिया पर वह ढीली रह गई जिससे उसका नाम ढीली पड़ गया जो बिगड़ कर दिल्ली हो गया। वर्तमान समय में यह भारत की राजधानी है।

द्वारका

यह गुजरात व काठियावाड़ की एक प्राचीन नगरी है। पुराणानुसार यह सात पुरियों में मानी जाती है। यह हिन्दुओं के चार धामों में है। हिन्दू तीर्थ-यात्री यहां आ कर बड़ी श्रद्धा से द्वारकानाथ की छाप लेते हैं। राजस्थानी में इसे द्वारामती, द्वारावती भी कहते हैं। श्री कृष्ण भगवान जरासंध के उत्पातों के कारण मथुरा से यहां आ कर बस गये थे और इसे अपनी राजधानी बना ली थी। इसका दूसरा नाम कुशस्थली भी है।

नागौर

नागौर इसी विभाग का मुख्य नगर है और राजस्थान के बहुत प्राचीन नगरों में से एक है। संस्कृत ग्रंथों में इसे अहिछत्रपुर या नागपुर लिखा है। नाम से ही ज्ञात होता है कि यहाँ नागवंशियों का राज्य था और यह जांगल देश की राजधानी था। बिजोल्याँ 'मेवाड़' के वि० सं० १२२६ के शिलालेख से ज्ञात होता है कि यह चौहानों के भी अधिकार में रहा था। यहीं से जा कर चौहानों ने सांभर को अपनी राजधानी बनाया। प्राचीन काल में सांभर, अजमेर और नागौर आदि का राज्य सपादलक्ष कहलाता था, जिसका अपभ्रंश रूप सवाळक (सवाळख) है। नागौर के आसपास के भाग को आज भी सवाळख कहते हैं। नागौर के बरमायों के मंदिर के स्तम्भों पर खुदे ई० स० १५६१ के और १५६४-६५ के हसन कुलीखाँ की मसजिद में और १६७७ के अकबरी मस्जिद के लेख इसकी प्राचीनता के प्रमाण हैं। आईन-ई-अकबरी के लेखक अब्बुल फजल और शेख फैजी नागौर के शेख मुबारक के पुत्र थे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

और अकबर की सभा के नौ रत्नों में थे। यहाँ के कई फारसी लेख शहर के परकोटे की चुनाई में उल्टे-पुल्टे लगे हुए विद्यमान है।

नाडोल (नाडूल)

यह बहुत प्राचीन ऐतिहासिक नगर पश्चिमी रेलवे के राणी स्टेशन से १४ मील की दूरी पर है। यह गोड़वाड़ के जैनों के ५ तीर्थों में से एक है। यह नगर मारवाड़ के चौहानों की मूल राजधानी थी। कर्नल टॉड को इस नगर से वि० सं० १०२४ और १०३९ के चौहान वंश के संस्थापक राजा लक्ष्मण के समय के लेख मिले थे। उसने इनको लंदन की रॉयल सोसायटी को प्रदान कर दिया। पुरातत्त्व की दृष्टि से यहाँ का सूरजपोल नामक दरवाजा महत्त्वपूर्ण है। इसे राव लाखण ने बनवाया था। इसके पास ही नीलकंठ महादेव का मंदिर है जो बहुत प्राचीन है। नगर के बाहर उत्तरी किनारे पर सोमेश्वर का मंदिर है जिसमें वि० सं० ११४७ का चौहान राजा जोजलदेव के समय का लेख है जिसमें यहाँ का पद्मप्रभ का जैन मंदिर भी बहुत प्राचीन और दर्शनीय है। नगर के बाहर के मंदिर अब नष्ट प्रायः हो गये हैं।

नारनौल

पंजाब के पटियाला राज्य में महेन्द्रगढ़ निजामत के अन्तर्गत नारनौळ तहसील का मुख्य नगर जो २८°३″ उत्तर अक्षांश और ७६°–१०″ पूर्व देशान्तर पर छल्लक नदी के किनारे पर स्थित है। पटियाला राज्य में पटियाला के बाद दूसरा यही महत्त्वशाली नगर रहा है। कहते हैं कि राजा लूनकरन ने अपनी स्त्री नारलौन के नाम पर इस नगर का नाम नारनौळ रखा। किन्तु कई लोगों का मत है कि महाभारत-काल में दिल्ली के दक्षिणी भाग का देश नर-राष्ट्र कहलाता था। शायद इसी का अपभ्रंश नारनौल हो। मुसलमान इतिहासकारों का मत है कि यह अलतमस के द्वारा बसाया गया था। यह नगर इतिहास-प्रसिद्ध शेरशाह और इब्राहिम खान की जन्म-भूमि है। इसके दादा की मृत्यु यहीं हुई थी जिसका स्मारक अब भी इस नगर में मौजूद है। यह नगर अनेकों बार उजड़ा और बसा है। महाराजकुमार अभयसिंह ने भी इस नगर को लूटा था।

पालनपुर

यह नगर आबू पर्वत से ३४ मील दूर पाटन जिले में धनेरा के पास माहीकाँटा, सिरोही और दाँता के पूरब में बनास नदी के किनारे पर स्थित है। इस नगर के आसपास सरस्वती आदि अन्य नदियाँ भी बहती हैं। यह नगर समतल मैदान में है। नगर से १२ मील दूर उत्तर में ऊँची पहाड़ियें हैं जो आबू तक चली गई हैं।

प्राचीन समय में यह नगर प्रह्लादन पाटन के नाम से प्रसिद्ध था। चन्द्रावती के राजा धारावर्ष के भाई प्रह्लादनदेव ने इस नगर को बसाया था। किन्तु इसके नष्ट होने के बाद १४ वीं शताब्दी के मध्य में चौहान वंश के राजा पालनसी द्वारा पुनः बसाया गया। कई लोग इसे पाल परमार द्वारा बसाया हुआ मानते हैं। ई० स० १३०३ में देवड़ा चौहानों ने आबू और चंद्रावती पर अधिकार कर लिया था। इसके बाद ई० स०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३७० में झालोरी (जालोरी) अफगान मलिक युसुफ ने जो बिहार का सूबेदार था, मक्का जाते हुए रास्ते में डीसा और पालनपुर पर अधिकार कर लिया। कई लोग इसे वीसलदेव की विधवा पत्नी पोपां बाई से लिया बताते हैं।

पाली

यह पाली जिले का मुख्य नगर है। राजपूताने में रेल का प्रवेश होने के पहले यह नगर व्यापार का केन्द्र था। यहाँ के व्यापारियों की कोठियाँ गुजरात के सूरत, मांडवी, नवानगर और अहमदाबाद तक में थी। पाली के व्यापारी प्राचीनकाल से ही ईरान, अरबिस्तान, अफ्रीका, यूरोप आदि देशों से माल मंगवाते और यहाँ का माल वहाँ भेजते थे। अब भी यहाँ कपड़े की बड़ी मील है व कपड़े की रंगाई व छपाई का काम सुन्दर होता है। यहाँ के ब्राह्मण पालीवाल नाम से प्रसिद्ध हुए। इनमें नंदवाने बोहरे बड़े धनाढ्य थे। यहाँ के प्राचीन मन्दिरों में सोमनाथ का मंदिर मुख्य है। दूसरा आनन्दकरणजी का मंदिर है। तीसरा प्राचीन मंदिर नौलखा है। यहाँ की मूर्तियों के आसनों पर वि० सं० ११४४ से १७०६ तक के जीर्णोद्धार के लेख खुदे हैं।

पीछोला

इस झील को विक्रम की १५ वीं शताब्दी में महाराणा लाखा के समय में पीछोली गांव के निकट बनवाया था। यह उदयपुर के राजमहलों के पश्चिमी किनारे पर विस्तीर्ण सरोवर है। इस झील में कई छोटे-बड़े टापू हैं, जिन पर भिन्न-भिन्न समय के अनेकों सुंदर स्थान बने हुए हैं, जिनमें जग-निवास और जग-मंदिर नामक महल जल के मध्य में बने हुए हैं। इन्हें महाराणा जगतसिंह द्वितीय व महाराणा कर्णसिंह ने बनवाया था। जग-निवास की अपेक्षा जग-मंदिर प्राचीन है और इसमें ऐतिहासिक सामग्री अधिक है। इसमें प्राचीनता ही है– आधुनिक सजावट दृष्टिगोचर नहीं होती। पीछोला के दक्षिणी किनारे पर पहाड़ियों की शृंखला चली गई हैं जहां मत्स्य शैल पर एकलिंग गढ़ नामक प्राचीन दुर्ग बना हुआ है। जिससे तालाब की शोभा और भी बढ़ गई है।

फतहपुर

शेखावाटी जिले का एक प्रमुख नगर है। यह शेखावत कछवाहों का ठिकाना था। इसको रावराजा लक्ष्मणसिंह ने आबाद किया था।

बदनौर

यह मेवाड़ राज्य का प्रथम श्रेणी का ठिकाणा है और राठौड़ वंश की मेड़तिया शाखा के आधीन है। बदनौर पश्चिमी रेलवे के ब्यावर स्टेशन से २६ मील की दूरी पर है। इस नगर के चारों ओर पक्का शहरपनाह है। नगर में प्रवेश के लिए पूर्व दिशा में सूरजपोल नामक दरवाजा है। इसके अलावा रेवतजी का दरवाजा और पश्चिम में चांदपोल दरवाजा भी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बांसवाड़ा

यह राजस्थान के साधारण और छोटे नगरों में है। यह २३°१०" उत्तर अक्षांश और ७४°२" पूर्व देशान्तर पर स्थित है। इसका पश्चिमी भाग ऊपजाऊ और घना बसा हुआ है, शेष भाग चारों तरफ पहाड़ों और जंगलों से घिरा होने के कारण कम आबाद है। इसके आस-पास भीलों की बस्ती अधिक है। प्राचीन शिलालेखों के अनुसार यह नगर वि० सं० १५३६ से पूर्व बसाया गया मालूम होता है जिसकी पुष्टि डूंगरपुर के चितली गांव से मिले शिलालेख से होती है। अकबर के शासनकाल में इस पर मुगलों का अधिकार हो गया था किन्तु थोड़े ही समय बाद पुनः इस पर रावल उग्रसेन ने अधिकार कर लिया।

बीकानेर

राजस्थान का यह मरुस्थलीय नगर इस प्रदेश के ठीक उत्तर में २७°१२" उत्तर अक्षांश और ७२°१५" पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। जोधपुर के राव जोधाजी के पुत्र बीकाजी ने वि० सं० १५४५ में इस प्रदेश के जाटों को दबा कर वहाँ एक नगर बसाया जिसका नाम बीकानेर रक्खा और उसे अपनी राजधानी बनाया। इस नगर के आस पास के इलाके को जांगल प्रदेश कहते हैं। इसीलिये यहां के राजा जंगलधर बादशाह कहलाते थे। यहाँ का पानी खारा है और पानी की बहुत कमी रहती है।

बुरहानपुर

यह ऐतिहासिक नगर भारत के दक्षिणी भाग में खानदेश में स्थित है। मुगलकाल में यह नगर वाणिज्य का केन्द्र था। फरुखीवंश का बादशाह अलीखान के राज्य की राजधानी यही नगर था। यह उस समय रेशम और सूत के व्यापार के लिये प्रसिद्ध था। यह राज्य भारत के प्रसिद्ध सम्राट अकबर के समय में अलग इकाई के रूप में था। ई० सन् १५६१ में शेख फैजी को अकबर ने अपना राजदूत बना कर बुरहानपुर भेजा था।

सवाई राजा सूरसिंह के देहावसान के बाद महाराजा गजसिंह का यहीं राज्याभिषेक हुआ था।

बून्दी नगर

यह नगर राजस्थान के दक्षिण पूर्व में स्थित है। यह नगर प्राचीन काल में एक मुख्य नगर था और कोटा राज्य इसी के अन्तर्गत था। किन्तु ई० सन् १६३१ में कोटा राज्य अलग हो गया। बादशाह शाहजहाँ ने इसे बून्दी के राव रत्नसिंह के दूसरे पुत्र माधवसिंह को सौंप दिया। तब से बून्दी और कोटा दो अलग-अलग राज्य हो गये। प्राचीन काल में बून्दी नगर पर मौर्यवंशी राजाओं का अधिकार था। उनसे चौहान वंश के हाड़ा राजपूतों ने अपने अधिकार में कर लिया। यह नगर तीन ओर पहाड़ियों से घिरा है। इसके उत्तर में तारागढ़ नामक सुदृढ़ दुर्ग बना हुआ है और इसके नीचे ही बून्दी नगर बसा हुआ है। इस दुर्ग को राव नरसिंह ने वि० सं० १४११ में बनवाया था।

भीनमाल (श्रीमाल नगर)

यह जालोर जिले का प्राचीन नगर है जो जसवन्तपुरा से २० मील उत्तर पश्चिम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

में बसा हुआ है। इसको श्रीमाल नगर भी कहते थे। यहाँ के निवासी ब्राह्मण श्रीमाली नाम से अब तक प्रसिद्ध हैं। वि० सं० ६९७ के करीब प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वानसांग गुजरात होता हुआ यहाँ आया था। उस समय यह नगर गुजरात की राजधानी था। यहाँ वैदिक धर्म को मानने वालों की संख्या अधिक थी। यह नगर विद्या की भी एक पीठ था। 'ब्राह्मस्फुट-सिद्धान्त' के रचियता ब्रह्मगुप्त ने वि० सं० ६८५ में इसी नगर में उपरोक्त ग्रन्थ की रचना की थी। 'शिशुपाल-वध' महाकाव्य का कर्ता माघ कवि यहीं का रहने वाला था। यहाँ अति प्राचीन जय स्वामी नामक सूर्य का मन्दिर है, जिसका जिर्णोद्धार वि० सं० ११९७ में परमार वंशीय राजा कृष्णराज के समय में हुआ था। विक्रम की ११ वीं शताब्दी के आस-पास बने जैन मन्दिर भी देखने योग्य हैं।

मंडोर

यह जोधपुर नगर से ५ मील उत्तर में है। यहाँ का किला पहाड़ी पर है। इसका प्राचीन नाम मांडवपुर मिलता है। कहते हैं कि जहाँ पंचकुण्ड स्थान है, वहाँ मांडव्य ऋषि का आश्रम था। पंचकुण्ड के पास ही राजकीय श्मशान हैं जहां प्राचीन राजाओं और रानियों के स्मारक बने हुए हैं। मंडोर में भी प्राचीन राजाओं के स्मारक बने हुए हैं। जिनमें महाराजा अजीतसिंहजी का देवल विशाल और दर्शनीय है। यहाँ से थोड़ी दूर महाराजा अभयसिंहजी के समय का बना तेतीस करोड़ देवी-देवताओं का देवालय है, जो एक पत्थर की चट्टान काट कर उसके नीचे बनाया गया है। यहाँ १६ मूर्तियाँ हैं जिनमें ७ देवताओं की और ९ बड़े वीर पुरुषों की हैं। इनके पास ही काळा-गोरा भैरू व गणेशजी की बड़ी प्रतिमायें हैं। मंडोर के भग्नावशेषों में एक जैन मन्दिर भी है जो दशवीं शती का प्रतीत होता है। मंडोर का बगीचा बड़ा सुन्दर है। यह पहले नागवंशी क्षत्रियों के अधीन रहा, इसी से इसके पास नागकुण्ड और नागाद्रि नदी है। यहाँ प्रतिवर्ष भादों कृष्णा ५ को नागपंचमी का मेला लगता है। बाद में यह प्रतिहारों (ईदों) और उनसे राठौड़ों को दहेज में मिला। तब से यहाँ राठोड़ों का अधिकार हुआ।

मांडलगढ

मेवाड़ की राजधानी उदयपुर से १०० मील उत्तर पूर्व में मांडलगढ़ का किला है। इसको किसने बनवाया था यह अनिश्चित है। इसकी आकृति मंडल के समान होने से ही यह मांडलगढ़ कहलाया।

यह गढ़ पहले अजमेर के चौहानों के राज्य में था, किन्तु बाद में पृथ्वीराज के भाई हरिराज से कुतुबुद्दीन एबक ने छीन लिया। पुनः इसे हाडौती के चौहानों ने अपने अधिकार में कर लिया। हाड़ों से यह किला मेवाड़ के महाराणा खेता के अधिकार में आया। यह गढ़ १८५० फुट ऊँची पहाड़ी पर बना हुआ है। इसके चारों ओर आधा मील लम्बाई का कोट बना हुआ है। गढ़ में दो जलाशय भी हैं जो दुष्काल में सूख जाते थे, इस कारण इन जलाशयों में दो कुए खुदवा दिये, जिनमें जल कभी नहीं टूटता। यहाँ ऋषभदेव का जैन मन्दिर और ऊँडेश्वर और जलेश्वर के शिवालय दर्शनीय हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेड़ता

यह एक प्राचीन नगर है। इसका प्राचीन नाम मेडन्तक मिलता है, जिसका अपभ्रंश मेड़ता है। मंडोवर के प्रतिहार सामन्त बाउक ने वि० सं० ८९४ में मेड़ते को अपनी राजधानी बनाया था। राव जोधाजी के पुत्र राव दूदाजी को यह नगर जागीर में मिला था। बाद में इसे राव मालदेव ने जैमल मेड़तिया से छीन कर नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था। अब यहाँ प्राचीन वस्तुओं में केवल १२ वीं शताब्दी के आसपास के दो स्तंभ, लक्ष्मी का मंदिर व उसकी प्राचीन मूर्तियें शेष हैं। मुसलमानों के समय की बहुत सी मस्जिदें भी हैं। यहाँ के जैन मंदिर नवीन हैं किन्तु उनकी मूर्तियें प्राचीन हैं जिन पर १५ वीं व १७ वीं शताब्दी के लेख खुदे हुए हैं।

रेवा नदी (नर्मदा)

अति वेगवान प्रवाह वाली यह नदी नर्मदा के नाम से प्रसिद्ध है। इसका प्राचीन ऐतिहासिक नाम रेवा है। यह विन्ध्याचल पर्वत की शाखा अमरकंटक पर्वत से निकल कर गुजरात के पश्चिमी भाग में बहती है। गुजरात प्रान्त का एक प्राचीन व्यापारिक नगर भड़ोंच इसी के किनारे पर स्थित है।

लालकोट

इस नाम के दो प्राचीन किले हैं जिनमें से एक आगरे में और दूसरा दिल्ली में है। इनमें से प्रथम आगरे के किले का निर्माण सम्राट अकबर के समय में हुआ था किन्तु इस किले में कुछ इमारतें जहाँगीर और शाहजहाँ के समय में भी बनी थी। दूसरा किला दिल्ली में शाहजहाँ के समय में बनवाया गया था। ये लाल पत्थर के बने हुए हैं।

विंझगिर (विन्ध्याचल पर्वत)

विन्ध्याद्रि प्रसिद्ध पर्वत श्रेणी जो भारतवर्ष के मध्य भाग में पूर्व से पश्चिम को फैली हुई है। यह पर्वत आर्यावर्त देश की दक्षिण सीमा पर है। इसके दक्षिण का प्रदेश दक्षिण पथ कहलाता है। इससे दो प्रसिद्ध नदियें नर्मदा और ताप्ती दक्षिण और पश्चिम दिशा में बह कर अरब की खाड़ी में गिरती हैं। इस पर्वत की अनेक शाखाएँ सतपुड़ा, हिन्दकुश आदि नाम से विख्यात हैं। पुराणानुसार यह सात कुल पर्वतों में है और मनु के अनुसार मध्य प्रदेश की दक्षिणी सीमा है। यह पर्वत अनेक प्रकार की वनस्पतियों और फल-फूलों से भरा पड़ा है। इसी पर्वत के भाग में एक टीले पर विन्ध्यवासिनी का मंदिर है जो अति प्राचीन प्रतीत होता है।

संखोधार (शंखोद्धार)

यह प्राचीन भू-भाग द्वारिकापुरी के निकट है और ओखा मंडल के नाम से प्रसिद्ध है। पहले यह प्रसिद्ध बंदरगाह था और ओखापोर्ट कहलाता था।

राव आसनाथजी के तीसरे भाई अज ने यहाँ के शासक (स्वामी) भोजराजजी को मार कर अपना अधिकार कर लिया। अज ने स्वयं अपने हाथ से वहाँ के राजा का मस्तक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

काटा था, इसलिए उसके वंश के लोग बाढेल राठोड़ के नाम से प्रसिद्ध हुए जो अब भी उस भाग में कहीं-कहीं आबाद हैं।

सफरा (क्षिप्रा नदी)

भारतीय इतिहास की यह प्रसिद्ध नदी विन्ध्याद्रि पर्वतमाला को क्षिप्र नामक झील से निकल कर मध्य भारत में बहती है। मालव प्रदेश का प्राचीन नगर उज्जयिनी इसी के किनारे है। राठोड़ वंश के देश-भक्त व पराक्रमी वीर दुर्गादास ने अपने जीवन का अंतिम समय यहीं व्ययतीत किया था और उनकी मृत्यु भी इसी के किनारे पर हुई थी। आज भी उनकी छत्री यहाँ मौजूद है।

सरस्वती नदी

यह नदी माही काँटा से निकल कर पालनपुर के दक्षिणी भाग में सिद्धपुर के पास से बहती हुई कुछ दूर पाटण के पास भूमि के अन्दर ही अन्दर बहती है। वहाँ से बनास के साथ साथ अनवरपुर के दक्षिण में बहती हुई पाटण में आती है।

यह वर्षा ऋतु में तेजी से बहती है। शेष समय में इसकी धारा बहुत क्षीण और मंद गति से चलती है और रेतीली भूमि के अन्दर ही अन्दर बहती हुई कच्छ के रन में गिरती है। इसे संस्कृत में अन्तः सलिला कहते हैं।

सांभर

यह नगर जोधपुर और जयपुर राज्यों की सीमा पर राजपूताने में २६°-५५ 'उत्तर अक्षांश और ७५°११' पूर्व देशान्तर सांभर झील के किनारे बसा हुआ है। यहाँ की प्रमुख सांभर झील जो समुद्र की सतह से १२०० फुट ऊँचाई पर है, भरने पर इसका क्षेत्रफल ६० वर्गमील हो जाता है। यहाँ का नमक भारत में सब जगह प्रसिद्ध है। यहाँ चौहानों की कुल देवी शाकंभरी का प्राचीन मंदिर है। इसीलिए शाकंभरी का परिवर्तित रूप नाम साँभर पड़ा। यह नगर ८ वीं शताब्दी से ही चौहानों की प्रधान राजधानी माना जाता है। अतः आज भी चौहानों को साँभर राव, साँभरी, संभरी आदि से सम्बोधित करते हैं। यह १३ वीं शताब्दी से १७०८ ई० तक मुसलमानों के अधिकार में रहा। बाद में जोधपुर और जयपुर के शासकों ने पुनः इसे अपने अधिकार में कर लिया।

साहजहांपुर (शाहजहाँपुर)

यह नगर आगरे के पास हरदोई जिले में है। प्राचीन समय में यह वैभवशाली नगरों में से एक था किन्तु अब यह साधारण नगर है। जोधपुर के महाराजकुमार अभयसिंहजी ने आगरे की ओर जाते हुए इस नगर को लूटा था और इसे बिलकुल नष्ट कर दिया था।

सिरोही

शिवभाण के पुत्र सहस्रमल्ल गद्दीनशीन होकर सहसमल के नाम से प्रसिद्ध हुए। इन्होंने वि० सं० १४८२ (ई० सं० १४२५) में वैशाख सुदी २ को वर्तमान सिरोही नगर बसाया। यह शहर सिरणवा नामक पहाड़ी के नीचे बसाया हुआ है और पूर्व सिरोही

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राज्य की राजधानी है। यह पश्चिमी रेलवे के पिंडवाड़ा स्टेशन से १६ मील दूर है। महाराव सेसमल ने इसे बसाया था। राजमहल पहाड़ पर बसे हुए हैं जिनका सौन्दर्य दूर-दूर से दिखाई देता है। इनमें से मुख्य और पुराना हिस्सा (भाग) जो अपने सौंदर्य के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध है महाराव अखेराज ने बनाया था। शेष हिस्से भिन्न-भिन्न समय में बने हुए हैं। राजमहलों के नीचे थोड़ी दूर पर जैन-मंदिरों का समूह है। जो देरासरी नाम से प्रसिद्ध है। इन जैन-मंदिरों में चौमुखीजी का मन्दिर मुख्य है जो विक्रम सं० १६३४ (ई० सं० १५७७) मार्गशीर्ष सुदी ५ को बना था। यहाँ शिव और विष्णु के मन्दिर भी हैं। शहर के निकट मान-सरोवर नामक एक बड़ा तालाब भी है जो अति सुंदर है।

सिवपुरी (शिवपुरी)

महाराव सिवभांण ने जिनका नाम शोभा था सिरणवा नामक पहाड़ी के नीचे वि० सं० १४६२ में सिवपुरी नामक नगर बसाया और उक्त पहाड़ी पर किला भी बनवाया। यह शहर महाराव सिवभांण के नाम से सिवपुरी कहलाया गया जो वर्तमान सिरोही से अनुमानतः दो मील पूर्व में खण्डहर के रूप में अद्यावधि विद्यमान है जिसको लोग पुरानी सिरोही कहते हैं। कालान्तर में यही सिवपुरी सिरोही कहलाया जाने लगा।

सूरत

यह गुजरात का एक प्रसिद्ध बन्दरगाह था। थेवनोट (Thevenot) के लेखानुसार १६६६ में इसकी आमदनी १२००००० थी। यह बड़ा समृद्धिशाली नगर था। इसका किला ताप्ती नदी पर बना हुआ है जो समुद्र तट से १२ मील दूर है। ह्वेनसांग के कथनानुसार 'सूरत' या 'सौराष्ट्र' सातवीं सदी में उत्थान की चरम सीमा पर था। उस समय यह नगर इस प्रायद्वीप के सम्पूर्ण भाग को घेरे हुए था और बल्लभी नगर भी इसी के अन्तर्गत था। प्राचीन लेखानुसार इसकी ख्याति भी पूर्ण प्रायद्वीप के लिए सन् ६४० तक थी।

सोजत

इस तहसील का मुख्य नगर है। यह पश्चिमी रेलवे के सोजत रोड स्टेशन से करीब ६ मील दूर है। इसका सुदृढ़ प्राचीन किला पहाड़ी पर बना हुआ है। यहाँ प्राचीन समय में सोनगरा वंश के चौहानों का अधिकार था। बाद में महाराजा अजीतसिंह ने इसे अपने कब्जे में कर लिया जो बहुत समय से राठोड़ों के अधिकार में रहा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट ४

[सूरजप्रकाश के तीनों भागों में आये हुए ऐतिहासिक, पौराणिक और साहित्यिक व्यक्तियों का परिचय]

अंधक

इसकी उत्पत्ति पार्वती के पसीने से बताते हैं। हिरण्याक्ष के तप से प्रसन्न होकर शिव ने इसे यही पुत्र दिया था। इसके सहस्र बाहु, सहस्र सिर और दो सहस्र नेत्र थे। यह अंधों की तरह झूम-झूम कर चलता था। इसीसे अंधक कहलाया। पार्वती की अवज्ञा के कारण शिव का इससे घोर युद्ध हुआ। इसके रक्त-बिन्दुओं से अनेकों राक्षस पैदा होने लगे। तब मातृका की उत्पत्ति की गई जो रक्त को पी जाती थी। मातृका के तृप्त होने पर पुनः नये अंधक पैदा होने लगे। विष्णु की युक्ति से सारे अंधक विलीन हो गये। मुख्य अंधक को शिव ने त्रिशूल पर लटका दिया। स्तुति करने पर शिव ने उसको गनाधिपत्य बनाया। मतांतर से यह दिति का पुत्र था। जब दिति के समस्त पुत्रों का वध हो गया तब दिति की प्रार्थना पर अंधक की उत्पति हुई। यह इतना अत्याचारी हुआ कि इसके आतंक से त्रैलोक कांप उठा। अंत में यह शिव के हाथों मारा गया।

कल्याणदास मेहड़ू

ये डिंगल के कवि मेहड़ू जाड़ा के पुत्र थे और जोधपुर के महाराजा गजसिंहजी के कृपा-पात्रों में थे। ये असाधारण गुण-सम्पन्न प्रतिभावान व्यक्ति थे। इनकी रचनाएँ अधिकतर वीर जातियों और वीर पुरुषों की प्रशंसा में लिखी मिलती हैं। इनकी असाधारण काव्य-प्रतिभा के कारण ही महाराजा गजसिंहजी ने इनको लाख पसाव प्रदान किया था।

बूंदी के वीर हाड़ा राव रतनसिंह पर लिखी हुई कविता "राव रतनसिंह री वेलि" इनकी प्रसिद्ध रचना है।

कवि भारवि

जीवन परिचय :— पल्लव राजा सिंह विष्णु वर्मा का सभा-पण्डित था। इसका रचित ग्रन्थ किरातार्जुनीय महाकाव्य है। इसके चरित्र के विषय में लोगों को बहुत कम मालूम है। अवन्ति सुन्दरी कथा के अनुसार भारवि का दूसरा नाम दामोदर था। यह कौशिक गोत्रीय नारायन स्वामी का पुत्र था। यह एलिचपुर (Ellichpore) का था। इसका समय ई० सं० ५७० का अनुमान किया जाता है। ई० सं० ६३४ के आपहोल के शिलालेख में कालि-दास के साथ इसका भी नाम खुदा है। इसलिये सप्तम शतक के आरंभ में भारवि की कीर्ति प्रसृत थी। कीथ के कथनानुसार ई० ६६० के लगभग रचित काशी के वृत्ति ग्रंथ में भारवि का निर्देश आया है। इसलिये यह मान लेना आवश्यक होगा कि ई० ६२४ के कम से कम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०० वर्ष पहले भारवि विद्यमान था। आपहोल के शिलालेख से यह भी अनुमान हो सकता है कि भारवि दक्षिण का निवासी था। कीथ ने भारवि का समय ई० स० ५०० के लगभग माना है। दूसरे ५५० के लगभग मानते हैं।

कालयवन

यह बड़ा पराक्रमी राजा हुआ है। इसके जन्म के विषय में यह कथा प्रचलित है कि महर्षि गार्ग्य को यादवों ने भरी सभा में नपुंसक कह कर अपमानित किया था। इससे क्षुब्ध हो गार्ग्य ने बारह वर्ष तक केवल लोहचूर्ण खा कर पुत्रप्राप्ति के लिये शिव की घोर तपस्या की। इसी के फलस्वरूप गोपाली नाम की अप्सरा के गर्भ से कालयवन का जन्म हुआ। इसका पालन एक यवन राजा ने किया था, इसी से इसका नाम कालयवन पड़ा। काल बड़ा पराक्रमी था। इसने जरासंध के साथ यादवों पर आक्रमण किया, जिससे भयभीत हो सारे यादव कृष्ण के कहने से द्वारिका भाग गये। स्वयं कृष्ण भी हिमालय में जा छिपे। कालयवन भी कृष्ण का पीछा करता हुआ वहाँ पहुँचा, जहाँ मान्धाता का पुत्र मुचकुंद सो रहा था। इसने मुचकुंद को ही कृष्ण समझ कर पाँव की ठोकर मार कर उसे जगाया। निद्रा भंग होने पर मुचकुंद ने नेत्र उठा कर कालयवन की ओर देखा जिससे वह भस्म हो गया।

किसनाजी आढ़ा

दुरसा आढ़ा का पुत्र महान् प्रतिभावान् कवि किसनाजी आढ़ा महाराजा गजसिंह का कृपापात्र था। इसकी फुटकर रचनायें व गीतों का संग्रह मिलता है। इसकी कविता से प्रभावित हो कर महाराजा गजसिंह ने इसको सोजत तहसील का गांव पांचेटिया प्रदान किया।

केसोदास गाडण

यह गाडण शाखा का चारण कवि था। इसका जन्म जोधपुर राज्यान्तर्गत गाडणों की बासणी में सदामल के घर वि० सं० १६१० में हुआ था। यह सदैव साधुओं की तरह गेरुआ वस्त्र पहिनता था। "बेलि कृष्ण रुक्मणी री" के रचयिता राठौड़ पृथ्वीराज ने इसकी प्रशंसा में यह दोहा कहा था—

'केसौ' गोरख नाथ कवि, चेलौ कियौ चकार।
सिध रूपी रहता सबद, गाडण गुण भंडार ॥१॥

केसोदास जोधपुर के महाराजा गजसिंह के कृपापात्रों में था। 'गुण रूपक बंध' की रचना पर प्रसन्न हो कर महाराजा गजसिंह ने इसको लाख पसाव का पुरस्कार दिया था। इसके रचित ग्रंथ (१) गुण रूपक बंध, (२) राव अमरसिंह रा दूहा, (३) नीसांणी विवेक वारता, (४) गज गुण चरित्र आदि हैं।

माघ कवि

इसका समय ई० स० ६६० से ६७५ तक का माना है। संस्कृत साहित्य की प्राचीन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परम्परा में माघ कवि की अत्यन्त प्रशंसा की गई है। इसका विरचित 'शिशुपाल-वध' नामक एक महाकाव्य उपलब्ध है।

माघ कवि ने अपने विषय में बहुत कुछ कहा है। इसके पिता दत्तक सर्वाश्रय और पितामह सुप्रभदेव थे। यह सुप्रभदेव राजा वर्मलात का मंत्री था। इस राजा का उल्लेख ई० स० ६२५ के एक शिलालेख में विद्यमान है इसलिए माघ कवि का समय इसके अनुसार सप्तम शतक का उत्तरार्ध (ई० स० ६५० से ७००) निश्चित होता है। यह कवि गुर्जर देश की उत्तर सीमा पर दक्षिण मारवाड़ में आबू पहाड़ और लूनी नदी के बीच में विद्यमान भीनमाल या श्रीमाल नगर में जन्मा था। इसी गांव का निवासी प्रसिद्ध ज्योतिषी ब्रह्मगुप्त भी था। यह माघ कवि चित्तौड़ के राजा द्वितीय भोज का समकालीन था। भोज नाम के तीन राजा हुए हैं। द्वितीय भोज चितौड़ में ई० स० ६५० से ६७५ तक राज्य करता था। माघ श्रीमाली ब्राह्मण था। यह बड़ा ही दानी था। इसने अन्त समय में भी दान देकर ही प्राण छोड़ा था।

माधोदास दधवाड़िया

केसोदास गाडण के समकालीन भक्त कवियों में माधोदास दधवाड़िया का नाम भी बड़े आदर के साथ लिया जाता है। इसका जन्म जोधपुर राज्य के बलूंदा ग्राम में हुआ था। इसके पिता का नाम चूंडाजी था। इसका जन्मकाल निश्चित तो नहीं है पर कई विद्वान अपनी अटकल से वि० सं० १६१० और १६१५ के मध्य मानते हैं। जोधपुर के नरेश सूरसिंह इसके आश्रयदाता था। पृथ्वीराज राठौड़ से भी इसका परिचय था। 'वेलि' को सुन कर यह बड़ा प्रसन्न हुआ और मुक्त कंठ से इसकी प्रशंसा की, इस पर पृथ्वीराज ने भी इसकी प्रशंसा में यह दोहा कहा—

चूंडै चत्रभुज सेवियो, ततफळ लागौ तास।
चारण जीवौ चार जुग, मरौ न माधोदास॥

इसका रचनाकाल सत्रहवीं शताब्दी का मध्य माना जाता है किन्तु मिश्र बंधुओं ने वि० सं० १६६४ माना है। जीवन के अंतिम काल में यवन इसकी गायें चुरा कर ले गये। पता लगने पर अपने पुत्र सहित उनका पीछा किया और उनसे युद्ध करते हुए वि० सं० १६९० में वीरगति को प्राप्त हुआ।

मुंणोत नैणसी

नैणसी का जन्म वि० सं० १६६७ (ई० स० १६१० ता० ९ नवम्बर) को हुआ था। इसका पिता जयमल महाराजा गजसिंह के शासनकाल में राज्य के दीवान था। नैणसी भी वीर, विद्यानुरागी, नीतिज्ञ और इतिहास-प्रेमी व्यक्ति था। इसने राज्य के विद्रोही सरदारों का दमन कर के अपनी वीरता का परिचय दिया। उसका लिखा हुआ ऐतिहासिक ग्रंथ 'नैणसी री ख्यात' के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें राजपूताना, गुजरात, काठियावाड़, कच्छ, मध्यभारत, बघेलखंड और बुंदेलखंड के इतिहास की पूर्ण सामग्री है। नैणसी का अन्य ग्रंथ 'जोधपुर राज्य का गैजेटियर' है जिसमें इस राज्य के सारे परगनों का हाल है। यही नहीं नैणसी ने जोधपुर की फसलों और आमदनी के लिहाज से मर्दुमशुमारी कर रेखचाकरी नियत की।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इसी कारण से नैणसी को राजपूताने का अब्दुल फजल कहा जाता है। ऐसे वीर पुरुष ने वि० सं० १७२७ (ई० स० १६७० में) अपने पेट में कटार मार कर शरीरांत कर दिया।

राजसिंहजी बारहठ

महाराज गजसिंह के समय के प्रसिद्ध कवि राजसी गांव जालीवाड़ा के रहने वाले थे। इसकी मृत्यु पर महाराजा गजसिंह ने बहुत शोक प्रकट किया। एक समय दिल्ली जाते हुए महाराजा की सवारी जालीवाड़े से निकली तो महाराजा को बारहठ राजसिंह की याद आ गई। महाराजा हाथी से उतरे और चार दोहे मरसिए के कहे—

इण खूनी रहमांण सूं, परतन लागौ पांण।
रतन अमोलक 'राजसी,' जो किम दीजे जांण ॥ १
हथ जोड़ा रहिया हमैं, गढवी काज गरत्थ।
ऊ 'राजड़' छत्रधारियां, गयौ जोड़ावण हत्थ ॥ २
'रोहड़' रूपग रच्चणौ, मो वस करणौ मन्न।
मुरधर रयणायर मांह, 'राजड़' गयौ रतन्न ॥ ३

हेम सामोर

कवि हेम, सामोर गोत्र का चारण बीकानेर राज्यान्तर्गत सीथल गांव का निवासी था। यह जोधपुर के महाराजा गजसिंह का कृपा-पात्र था। संस्कृत, प्राकृत और फारसी का विद्वान् होने के कारण इसका विशेष सम्मान था। इसका रचनाकाल संवत् १६८५ के आसपास माना जा सकता है। इसका लिखा हुआ 'गुण भाखा चरित्र' नामक ग्रंथ मिलता है जिसमें महाराजा गजसिंह का चरित्र वर्णित है।

लखौ बारहठ

यह रोहड़िया शाखा के चारण मारवाड़ राज्य के साकड़ा परगने के गांव नानणियाई के रहने वाले थे। यह बादशाह अकबर के कृपापात्रों में थे। ऐसा कहा जाता है कि बादशाह अकबर ने इनको मथुरा के पास साढे तीन लाख की जागीर प्रदान की थी, और इसे 'चरण पातसाह' की उपाधि भी दी थी। इनका रचित 'पाबू-रासौ' प्रसिद्ध है। जोधपुर के महाराजा सूरसिंह ने इन्हें लाख पसाव दिया था।

संकर बारहठ

सतरहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के कवियों में बारहठ संकर भी उल्लेखनीय कवि हुए हैं। ये रोहड़िया शाखा के चारण थे। वि० सं० १६४३ में जोधपुर के महाराजा उदयसिंहजी के समय राज्य के चारणों ने आऊवा गांव में धरना दिया था उसमें ये भी मौजूद थे। बीकानेर के प्रसिद्ध राजा रायसिंह द्वारा इनको सवा करोड़ का दान दिया गया था जो सर्व प्रसिद्ध है। जोधपुर महाराजा सूरसिंह ने इसकी रचनाओं से प्रभावित होकर इसको लाख पसाव दिया था।

खेतसी लालस

शेरगढ़ तहसील का गांव जुड़िया के रहने वाला था। महाराजा सूरसिंह और उसके

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बाद महाराजा गजसिंह का कृपापात्र रहा। महाराजा गजसिंह ने अपने समय के प्रसिद्ध व प्रतिभावान पन्द्रह कवियों को लाख पसाव प्रदान किए उनमें से एक यह भी था। इसको जोधपुर तहसील का गांव भाटिलाई प्रदान किया गया। यह गांव अब तक इसके वंशजों के अधिकार में रहा।

चांणूर

यह बड़ा पराक्रमी राक्षस हुआ है। यह कंस का अनुचर था। भागवत पुराण की कथा के अनुसार यह पिछले जन्म में मय नामक दानव था। यह मल्ल युद्ध में बड़ा निपुण था। कृष्ण को मारने के लिये कंस ने इसको धनुषयज्ञ के समय मुख्य द्वार पर रक्षक के रूप में रक्खा था, जहाँ इसने कृष्ण को मल्ल युद्ध के लिये ललकारा था। कृष्ण ने वहीं पर चाणूर का वध किया। इसीलिये कृष्ण को चाणूर-सूदन भी कहते हैं।

जालंधर (जलंधर)

शिव के तृतीय नेत्र की अग्नि से उत्पन्न एक अति पराक्रमी राक्षस था। एक समय इन्द्र शिव के दर्शनार्थ कैलाश गया, वहाँ एक भयंकर पुरुष को बैठे देखा, उससे पूछने पर कुछ भी उत्तर न मिला तो इन्द्र ने वज्र-प्रहार किया, जिससे वह नीलकंठ हो गया और भाल का तृतीय नेत्र खुल गया। उसकी ज्वाला इन्द्र को भस्म करने लगी। इन्द्र की प्रार्थना पर शिव ने वह ज्वाला समुद्र में फेंक दी। उससे एक बालक पैदा हुआ जिसके रोने की ध्वनि से संसार बहरा हो गया। उसे ब्रह्मा को सौंपा गया। उसने ब्रह्मा की गोद में लेटे-लेटे ब्रह्मा की मूंछ नोच दी। उसका नाम जालंधर रखा और वर दिया कि शिव के सिवाय उसे कोई मार न सके। इसकी उत्पत्ति गंगा के व समुद्र के संयोग से भी बताते हैं। ब्रह्मा ने इसे असुरों का राज्य दिया। मय दैत्य ने इसकी राजधानी की रचना की। वृन्दा के साथ इसका विवाह हुआ। पार्वती के रूप से मुग्ध हो इसने कैलाश पर आक्रमण किया। उस समय विष्णु ने जालंधर का रूप बना वृन्दा के सतीत्व को नष्ट कर के चक्र द्वारा इसका सिर छेदन किया। वृन्दा सती हो गई और शाप दिया कि त्रेता में विष्णु की पत्नी राक्षस द्वारा अपहरण की जायेगी और विष्णु को बन-बन भटकना पड़ेगा। जालंधर के शव से निसृत तेज शिव के तेज में विलीन हो गया।

दक्ष प्रजापति

सती इनकी पुत्री थी। ये कारणवश शिव से द्वेष रखते थे। एक समय दक्ष के द्वारा रचित यज्ञ में शिव का भाग नहीं रखा गया, न उन्हें निमन्त्रित ही किया गया। सती बिना निमन्त्रित किये भी अपने गणों को साथ लेकर पिता दक्ष के यज्ञ में गई। वहाँ शिव का भाग न देख कर अति क्रोधित हुई। उसी समय यज्ञ कुण्ड में कूद कर जीवन का अंत कर दिया। शिव के गणों ने दक्ष के यज्ञ को विध्वंस कर दिया।

दुरसौ आढ़ौ

दुरसा आढ़ा गोत्र के चारण मेहा का पुत्र था। इसका जन्म संवत् १५९२ में जोधपुर राज्य के धूंदला गांव में हुआ था। इसकी माता धनीबाई ने जो बोगसा गोविन्द की बहिन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थी, निर्धनता के कारण इसका पालन-पोषण बड़ी कठिनता से किया। बगड़ी ठाकुर प्रताप-सिंह सूंडा द्वारा इसका पालन-पोषण व शिक्षा-दीक्षा हुई। इसी का एक दोहा निम्न है—

माथै मावीतांह, जनम तणौ क्यावर जितौ।
'सूंडौ' सुध पातांह, पाळणहार प्रतापसी ॥

इसको बीकानेर के राजा रायसिंह द्वारा चार गांव, एक करोड़ का पुरस्कार और एक हाथी प्राप्त हुआ था। काव्यरचना के फलस्वरूप दुरसा को धन, यश एवं सम्मान बहुत प्राप्त हुआ। अकबर के दरबार में भी इसकी बहुत प्रतिष्ठा थी। इसके रचित ग्रंथों में 'विरुद छिहत्तरी, किरतार बावनी, श्री कुमार अजाजीनी भूचरमोरी नी गजगत' प्रसिद्ध हैं। यह हिन्दू धर्म, हिन्दू जाति और हिन्दू संस्कृति का अनन्य उपासक था। राजस्थानी साहित्य में दुरसा का स्थान बहुत ऊँचा है।

नरहरदास (नरहरिदास)

यह रोहड़िया गोत्र के चारण लक्खा का पुत्र था। इसका जन्म वि० संवत् १६०० के उत्तरार्द्ध में हुआ था। अठारहवीं शताब्दी के प्रारम्भिक काल के भक्त कवियों में इसका नाम उल्लेखनीय है। इसका लिखा हुआ 'अवतार चरित्र' एक प्रसिद्ध ग्रंथ है। इसके अतिरिक्त कवि की राजस्थानी मुक्तक रचनायें भी उपलब्ध हैं। 'अमरसिंह रा दूहा' और अनेक फुटकर गीत इसकी काव्य-प्रतिभा का प्रमाण देने में पूर्ण समर्थ हैं। भक्ति इसका मुख्य विषय था।

मल्लिनाथ

प्रसिद्ध टीकाकार मल्लिनाथ का समय ई० की १४वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध माना गया है। इसका पूरा नाम 'कोलाचल मल्लिनाथ सूरि' था। कृष्णमाचारी के अनुसार यह तेलगु ब्राह्मण था। इसने कई संस्कृत काव्यों की टीका की है। इसके रचित काव्यों में 'रघुवीर चरित' महाकाव्य है जिसमें राम के वनगमन से लेकर राज्याभिषेक तक की कथा है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट ५

(यवनराज्य की कुछ विशेष बातें)

जेजियौ (जजिया कर)

यह एक धार्मिक कर था जो इस्लाम को स्वीकार नहीं करने वाले नागरिकों पर लगाया जाता था। इस्लाम के अनुसार खलीफ़ा धर्म और राज्य दोनों का संचालक माना जाता था। उनका धर्म-ग्रन्थ कुरान ही धर्म और कानून दोनों का प्रतिपादक ग्रन्थ माना जाता है। मुसलमान जिस देश को विजय करते थे वहाँ के नागरिकों से जो इस्लाम को मंजूर नहीं करते थे उनसे एक प्रकार का कर लिया जाता था, जो जजिया कहलाता था। यह कर आमदनी के अनुसार लिया जाता था। यह अधिक आमदनी वालों को अधिक और कम आमदनी वालों को कम देना पड़ता था।

नवरोजौ (नौ रोज का मेला)

यह मुसलमानों का धार्मिक उत्सव था, जो ईरानी प्रथा के अनुसार प्रति वर्ष, वर्ष के प्रारंभ के दिन से मनाया जाता था। पहले यह उत्सव ६ दिन तक चलता था। भारत में यह उत्सव अकबर ने ही अपने राज्य में प्रारंभ किया था और उसने १६ दिन तक बढ़ा दिया था। मुगल शाही के युग में यह उत्सव गर्मियों में मनाया जाता था। इस उत्सव में स्त्रियाँ और पुरुष समान रूप से सम्मिलित होते थे, किन्तु इनके स्थान अलग-अलग होते थे। उस उत्सव के अवसर पर सम्राट् का शानदार दरबार लगता था। इस अवसर पर प्रदर्शनी भी लगती थी। इस नुमाइश में मुगल कारीगरी की अनेकों वस्तुएें बिकने आती थीं। इस उत्सव में मुगल साम्राज्य के अधीनस्थ राजा भी शरीक होते थे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट ६

सूर्य-वंश

[ग्रंथ के प्रथम भाग में आए हुए सूर्यवंश का पुराणानुसार वंश-वृक्ष]

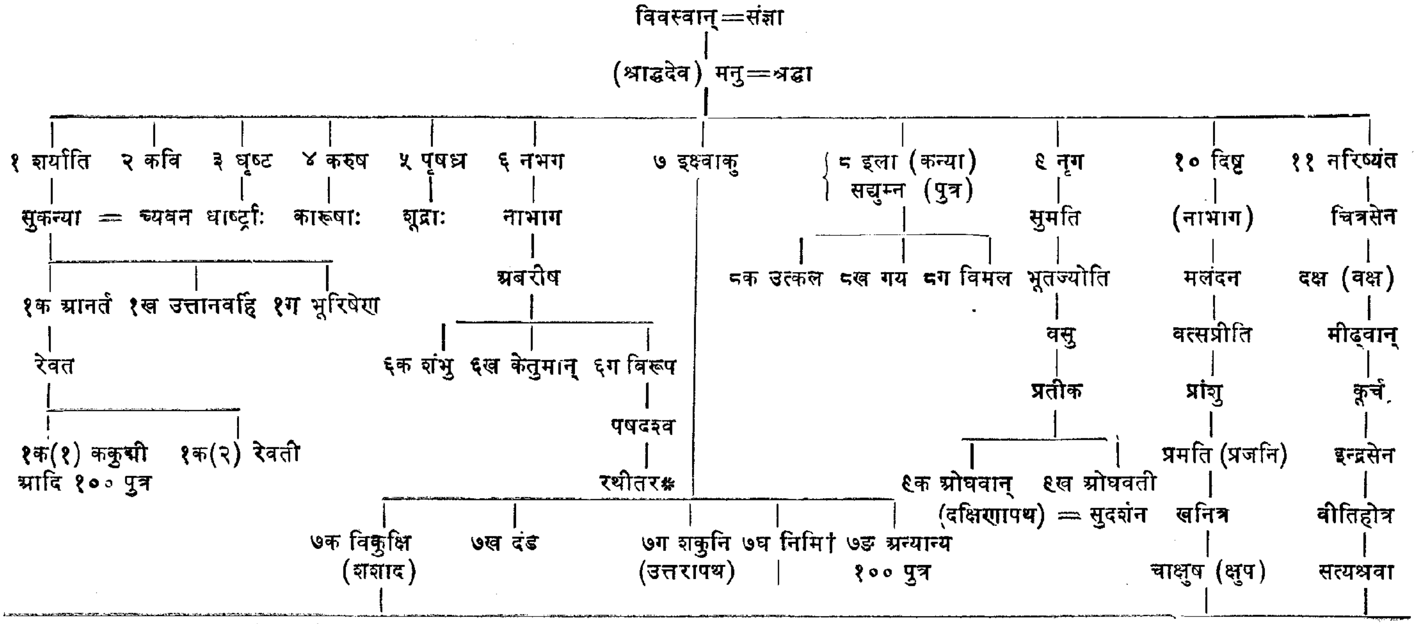

* आंगिरस ब्राह्मण इन्हीं की भार्या से उत्पन्न हुए थे।

† इन्होंने एक हजार सांवत्सरिक सत्र किये थे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७क
ककुत्स्थ (पुरंजय)
अनेनाः
पृथु
विश्वगश्व (विष्टराश्व-विश्वगन्धि)
आर्द्र
युवनाश्व (प्रथम)
शावस्त (श्रावस्त)‡
बृहदश्व
कुवलयाश्व (धुंधुमार)

- ७क(१) कपिलाश्व
- ७क(२) भद्राश्व
- ७क(३) दृढ़ाश्व
  - प्रमोद
  - हर्यश्व (प्रथम)

७घ
मिथि (जनक)
उदावसु*
नन्दिवर्धन
सुकेतु
देवरात
बृहदुक्थ (बृहद्रथ)
महावीर्य
धृतिमंत
सुधृति
धृष्टकेतु
हर्यश्व
मरु

१०
विश
विविंश
खनीनेत्र
करंधम
अविक्षित
मरुत्त (चक्रवर्ती)
नरिष्यंत
दम
राष्ट्रवर्धन (राज्यवर्धन)
सुधृति
नर
केवल

११
ऊरुश्रवा
देवदत्त
अग्निवेश्य
या
कानीन
या
जातूकर्ण्य

* इन्होंने एक हजार सांवत्सरिक सत्र किये थे।

‡ श्रावस्ती नगरी बसाई।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

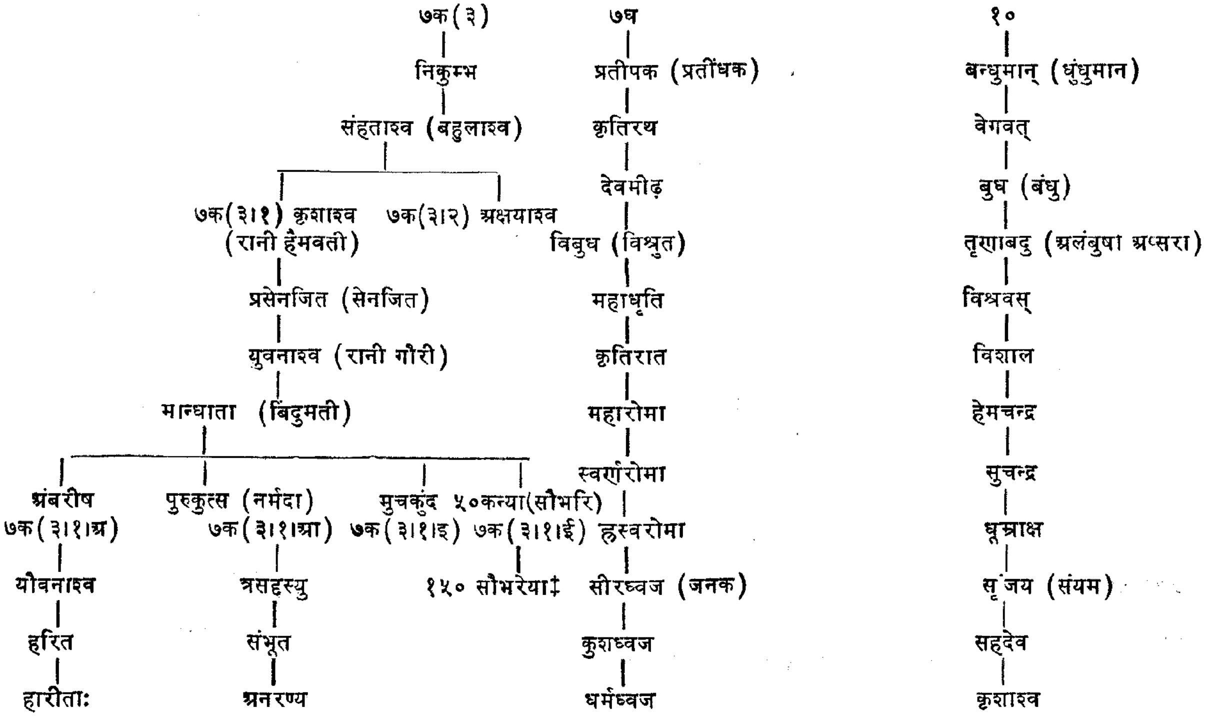

‡ उत्तर-पूर्व एशिया में साइबेरिया के राजागण।

७क (३।१।आ)
|
असदश्व
|
हर्यश्व (द्वितीय) दृषद्वती
|
वसुमना (वसुमत)
|
त्रिधन्वा
|
त्रैयारुण
|
सत्यव्रत (त्रिशंकु) सत्यरता
|
हरिश्चन्द्र
|
रोहित
|
हरित
|
चंचु (चप)
|
- विजय ७क (३।१।आ।१)
  |
  रुरुक (भरुक)
  |
- सुदेव ७क (३।१।आ२)

७घ
|
- ७घ (क१) कृतध्वज
  |
  केशिध्वज
  |
  द्रुत (भीत) (ऋतु)
  |
  भानुमान्
  |
  शतद्युम्न (प्रद्युम्न)
  |
  शुचि मुनि
  |
  सनद्वाज (ऊर्जवह)
  |
  ऊर्ध्वकेतु (शकुनि)
  |
  अज (अंजन)
  |
  पुरुजित् (ऋतुजित्)
  :
  अज
  |
  अरिष्टनेमि
  |
  श्रुतायु
- ७घ (क२) मितध्वज
  |
  खांडिक्य

१०
|
सोमदत्त
|
सुमति (स्वमति)
|
जनमेजय

७क(३।१।आ१)

वृक (धृतक)
|
यादवी=बाहु (असित)
|
केशिनी=सगर=सुमति

केशिनी → साठ हजार पुत्र

सुमति → असमंजस
|
अंशुमान्
|
दिलीप (प्रथम)
|
भगीरथ
|
श्रुत
|
नाभ (नाभाग)
|
अंबरीष
|
सिंधुद्वीप
|
अयुताश्व (अयुतायु, अयुताजित)
|
ऋतुपर्ण
|
सर्वकाम (आर्तपर्णी)

७घ(क१)
|
सुपार्श्वक
|
चित्ररथ
|
क्षेमधि
|
समरथ
|
सत्यरथ
|
उपगुरु
|
उपगुप्त
|
वस्वनंत
|
युयुध
|
सुभाषण
|
श्रुत
|
जय
|
विजय
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७क (३।१।आ१)
|
सुदास
|
(कल्माषपाद) मित्रसह = मदयंती
|
अश्मक
|
मूलक (नारिकवच)
|
शतरथ
|
एलविल
|
विश्वसह
|
दिलीप (द्वितीय) — (खट्वांग) चक्रवर्ती
|
दीर्घबाहु
|
रघु
|
अज
|
कोसल्या — दशरथ — सुमित्रा — कैकेयी
|
राम | लक्ष्मण | शत्रुघ्न | भरत

७घ (क१)
ऋतु
|
सुनक
|
वीतहव्य
|
धृति
|
बहुलाश्व
|
कृति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७क(३-१-आ१क) — लव, कुश

७क(३-१-आ१ख) — अंगद ७क(३-१-आ१ख-१), चन्द्रकेतु ७क(३-१-आ१ख-२)

७क(३-१-आ१ग) — सुबाहु ७क(३-१-आ१ग-१), सूरसेन ७क(३-१-आ१ग-२)

७क(३-१-आ१घ) — तक्ष ७क(३-१आ१घ-१), पुष्कर ७क(-१-आ१घ-२)

कुश	चन्द्रकेतु	सुबाहु	सूरसेन	पुष्कर
	वज्रनाथ	सुसंधि	भातुरथ (भानुमान्	रणंजय
अतिथि	शंखन	मर्ष (मर्षण)	प्रतीकाश्व	संजय
निषध	घ्युषिताश्व	सहस्वान्	सुप्रतीक	शुद्धोधन
नल (नभ)	विश्वसह	विश्रुतवान्	मरुदेव	शाक्य
पुंडरीक	हिरण्यनाभ	बृहद्बल ×	सुनक्षत्र	लांगल (राहुल)
क्षेमधन्वा	पुष्य	बृहद्रथ	किन्नर	प्रसेनजित
देवानीक	ध्रुवसन्धि	बृहत्क्षय	अंतरीक्ष	क्षुद्रक
अहिनगु (अहीन)	सुदर्शन	क्षय	सुतपा (सुपर्ण)	रणक (क्षुलिक)
पारियात्र (पारिपात्र)	अग्निवर्ण	वत्सव्यूह	अमित्रजित	सुरथ
दल	शीघ्र	दिवाकर	बृहद्राज	सुमित्र
बल	मरु	सहदेव	बर्हि (धर्मी)	
औक (शेष कालम २ पर)	प्रसुश्रुत (शेष कालम ३ पर)	बृहदश्व (शेष कालम ४ पर)	कृतंजय (शेष कालम ५ पर)	

× यह महाभारत युद्ध में अभिमन्यु के द्वारा मारा गया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुराणों के अनुसार इक्ष्वाकु वंश सुमित्र से समाप्त हो जाता है। उसके आगे वंशवृक्ष निम्न प्रकार चलता है—

बीकानेर का शिलालेख सं० १६५०	नैणसी की ख्यात	प्राचीन ख्यात सं० १७२५	प्राचीन ख्यात सं० १७१५
...	......	वपुल	पपुल्ली
...	......	ननपाल	नरपाल
तुंगनाथ	तुंगनाथ	सीतुंग	सेतुंग
भरत	भरत	भरत	भरत
पुंजराज	पुंजराज	पुंज	पंज
बंभ	बंभ	बंभ	बंभ
अजेयचंद्र	अजैचंद्र	......	....
अभड यश्व	अभैचंद	अभैचंद	अभयचंद
विजयचंद्र	विजैचंद	उदैचंद	विजयचंद
जयचंद्र	जैचंद	नरपति	जयचंद
...	......	कनकसेन	......
...	......	सहजसेत (सेन)	....
......	....	मेधसेन	......
......	......	वीरभद्र	......
......	......	देवसेन	......
......	......	विमलसेन	......
....	....	दानसेन	....
......	......	मुकुंदसेन	......
....	......	भूधरसेन	......
......	......	राजसेन	......
......	......	थिरपाल	......
......	......	श्रीपुंज	......
वरदायीसेन	वरदाईसेन	वरदाईसेन	वरदाईसेन
सीतराम	सेतराम	सेतराम	सेतराम
सीह	सीहो	सीहो	सीहो
	आसथान	आसथान	आसथान

[1] उपर्युक्त वंशवृक्ष का संबंध दान-पत्रों से मिलने वाले शुद्ध वंशवृक्ष से जोड़ने के साथ दिया गया है। यहां से आगे महाराजा अभयसिंह व महाराजकुमार रामसिंह तक का वंशवृक्ष दान-पत्रों के अनुसार है जो शुद्ध माना जाता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दान-पत्रों के अनुसार शुद्ध वंशावली—

१	यशोविग्रह		(वि० संवत्)	?
२	महीचन्द्र	(नं० १ का पुत्र) —	वि० संवत	?
३	चन्द्रदेव	(नं० २ का पुत्र)	वि० सं०	११४८–११५६
४	मदनपाल	(नं० ३ का पुत्र)	वि० सं०	११५४
५	गोविन्दचन्द्र	(नं० ४ का पुत्र)	,,	११६१–१२११
६	विजयचन्द्र	(नं० ५ का पुत्र)	,,	१२२४
७	जयचन्द्र	(नं० ६ का पुत्र)	,,	१२२६–१२५०
८	हरिश्चन्द्र [हरसू, वरदाईसेन, प्रहस्त]	(नं० ७ का पुत्र)	वि० सं०	१२५३
९	सेतराम	(नं० ८ का पुत्र)	वि० स०	?
१०	राव सीहो	(नं० ९ का पुत्र)	,,	१२६८–१३३०
११	आसथान	(नं० १० का पुत्र)	,,	१३३०–१३४८
१२	धूहड़	(नं० ११ का पुत्र)	,,	१३४८–१३६६
१३	रायपाल	(नं० १२ का पुत्र)	,,	
१४	कनपाल	(नं० १३ का पुत्र)	,,	
१५	जालणसी	(नं० १४ का पुत्र)	,,	
१६	छाड़ो	(नं० १५ का पुत्र)	वि० सं०	१३८५–१४०१
१७	तीड़ो	(नं० १६ का पुत्र)	,,	१४०१–१४१४
१८	सलखो	(नं० १७ का पुत्र)	,,	१४२२–१४३१
१९	वीरम	(नं० १८ का पुत्र)	,,	१४४० ...
२०	चूंडो	(नं० १९ का पुत्र)	,,	१४५१–१४८०
२१	रणमल्ल	(नं० २० का पुत्र)	,,	१४८४–१४९५
२२	जोधो	(नं० २१ का पुत्र)	,,	१५१०–१५४५
२३	सातल	(नं० २२ का पुत्र)	,,	१५४५–१५४८
२४	सूजो	(नं० २३ का भाई)	,,	१५४८–१५७२
२५	राव गांगो	(नं० २४ का पुत्र)	,,	१५७२–१५८८
२६	मालदेव	(नं० २५ का पुत्र)	,,	१५८८–१६१९
२७	चंद्रसेण	(नं० २६ का छोटा पुत्र)	,,	१६१९–१६३७
२८	राजा उदैसिंह	(नं० २६ का ज्येष्ठ पुत्र)	,,	१६४०–१६५१
२९	सूरसिंह	(नं० २८ का पुत्र)	,,	१६५१–१६७६
३०	गजसिंह	(नं० २९ का पुत्र)	,,	१६७६–१६९५
३१	महाराजा जसवन्तसिंह	(नं० ३० का पुत्र)	,,	१६९५–१७३५
३२	अजीतसिंह	(नं० ३१ का पुत्र)	,,	१७६३–१७८१
३३	अभैसिंह	(नं० ३२ का पुत्र)	,,	१७८१–१८०५
३४	रामसिंह	(नं० ३३ का पुत्र)	,,	१८०५–१८०८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला

प्रधान सम्पादक–पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

प्रकाशित ग्रन्थ

१. संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश

१. **प्रमाणमंजरी**, तार्किकचूड़ामणि सर्वदेवाचार्यकृत, सम्पादक – मीमांसान्यायकेसरी पं० पट्टाभिरामशास्त्री, विद्यासागर। मूल्य–६.००

२. **यन्त्रराजरचना**, महाराजा सवाईजयसिंह-कारित। सम्पादक–स्व० पं० केदारनाथ ज्योतिर्विद्, जयपुर। मूल्य–१.७५

३. **महर्षिकुलवैभवम्**, स्व० पं० मधुसूदनओझा-प्रणीत, भाग १, सम्पादक–म० म० पं० गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी। मूल्य–१०.७५

४. **महर्षिकुलवैभवम्**, स्व० पं० मधुसूदन ओझा प्रणीत, भाग २, मूलमात्रम् सम्पादक–पं० श्रीप्रद्युम्न ओझा। मूल्य–४.००

५. **तर्कसंग्रह**, अन्नंभट्टकृत, सम्पादक–डॉ. जितेन्द्र जेटली, एम.ए., पी-एच. डी., मूल्य–३.००

६. **कारकसंबंधोद्योत**, पं० रभसनन्दीकृत, सम्पादक–डॉ० हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी-एच. डी.। मूल्य–१.७५

७. **वृत्तिदीपिका**, मौनिकृष्णभट्टकृत, सम्पादक–स्व.पं. पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य। मूल्य–२.००

८. **शब्दरत्नप्रदीप**, अज्ञातकर्तृक, सम्पादक–डॉ. हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी-एच.डी.। मूल्य–२.००

९. **कृष्णगीति**, कवि सोमनाथविरचित, सम्पादिका–डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्। मूल्य–१.७५

१०. **नृत्तसंग्रह**, अज्ञातकर्तृक, सम्पादिका–डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्। मूल्य–१.७५

११. **शृङ्गारहारावली**, श्रीहर्षकवि-रचित, सम्पादिका–डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच.डी., डी.लिट्। मूल्य–२.७५

१२. **राजविनोदमहाकाव्य**, महाकवि उदयराजप्रणीत, सम्पादक–पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए., उपसञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य–२.२५

१३. **चक्रपाणिविजय महाकाव्य**, भट्टलक्ष्मीधरविरचित, सम्पादक–पं० श्रीकेशवराम काशीराम शास्त्री। मूल्य–३.५०

१४. **नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग)**, महाराणा कुम्भकर्णकृत, सम्पादक–प्रो. रसिकलाल छोटालाल पारिख तथा डॉ० प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्। मूल्य–३.७५

१५. **उक्तिरत्नाकर**, साधुसुन्दरगणिविरचित, सम्पादक–पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजयजी, पुरातत्त्वाचार्य, सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य–४.७५

१६. **दुर्गापुष्पाञ्जलि**, म०म० पं० दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत, सम्पादक–पं० श्रीगङ्गाधर द्विवेदी, साहित्याचार्य। मूल्य–४.२५

१७. **कर्णकुतूहल**, महाकवि भोलानाथविरचित, इन्हीं कविवर की अपर संस्कृत कृति श्रीकृष्णलीलामृत सहित, सम्पादक–पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए., मूल्य–१.५०

१८. **ईश्वरविलासमहाकाव्य**, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक–भट्ट श्रीमथुरानाथशास्त्री, साहित्याचार्य, जयपुर। स्व. पी. के. गोड़े द्वारा अंग्रेजी में प्रस्तावना सहित। मूल्य–११.५०

१९ **रसदीर्घिका**, कविविद्यारामप्रणीत, सम्पादक–पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम.ए. मूल्य–२.००

२०. **पद्यमुक्तावली**, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक–भट्टश्रीमथुरानाथशास्त्री, साहित्याचार्य। मूल्य–४.००

२१ **काव्यप्रकाशसंकेत** भाग १ भट्टसोमेश्वरकृत, सम्पा०–श्रीरसिकलाल छो० पारीख, अंग्रेजी में विस्तृत प्रस्तावना एवं परिशिष्ट सहित मूल्य–१२.००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२२. **काव्यप्रकाशसंकेत, भाग २** भट्टसोमेश्वरकृत, सम्पा०–श्रीरसिकलाल छो० पारीख, मूल्य–८.२५
२३. **वस्तुरत्नकोष**, अज्ञातकर्तृक, सम्पा०–डॉ० प्रियबाला शाह। मूल्य–४.००
२४. **दशकण्ठवधम्**, पं० दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत, सम्पा०–पं० श्रीगङ्गाधर द्विवेदी। मूल्य–४.००
२५. **श्रीभुवनेश्वरीमहास्तोत्र**, सभाष्य, पृथ्वीधराचार्यविरचित, कवि पद्मनाभकृत भाष्य-सहित पूजापञ्चाङ्गादिसंवलित। सम्पा०–पं. श्रीगोपालनारायण बहुरा। मूल्य–३.७५
२६. **रत्नपरीक्षादि-सप्तग्रन्थ-संग्रह**, ठक्कुर फेरू विरचित, संशोधक–पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य। मूल्य–६.२५
२७. **स्वयंभूछन्द**, महाकवि स्वयंभूकृत, सम्पा० प्रो० एच. डी. वेलणकर। विस्तृत भूमिका (अंग्रेजी में) एवं परिशिष्टादि सहित मूल्य–७.७५
२८. **वृत्तजातिसमुच्चय** कवि विरहाङ्करचित, ,, ,, ,, मूल्य–५.२५
२९. **कविदर्पण**, अज्ञातकर्तृक, ,, ,, ,, मूल्य–६.००
३०. **कर्णामृतप्रपा**, भट्टसोमेश्वरकृत सम्पा०–पद्मश्री मुनि जिनविजय। मूल्य–२.२५
३१. **त्रिपुराभारती लघुस्तव**, लघुपण्डितविरचित, सम्पा० ,, मूल्य–३.२५
३२. **पदार्थरत्नमञ्जूषा**, पं० कृष्णमिश्रविरचिता, सम्पा० ,, मूल्य–३.७५
३३. **वृत्तमुक्तावली**, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट कृत; सं० पं० भट्टश्रीमथुरानाथ शास्त्री। मूल्य–३.७५

२. राजस्थानी और हिन्दी

३४. **कान्हडदेप्रबन्ध**, महाकवि पद्मनाभविरचित, सम्पा०–प्रो० के.बी. व्यास, एम. ए.। मूल्य–१२.२५
३५. **क्यामखां-रासा**, कविवर जान-रचित, सम्पा०–डॉ. दशरथ शर्मा और श्रीअगरचन्द नाहटा। मूल्य–४.७५
३६. **लावा-रासा**, चारण कविया गोपालदानविरचित, सम्पा०–श्रीमहताबचन्द खारैड़। मूल्य–३.७५
३७. **बांकीदासरी ख्यात**, कविराजा बांकीदासरचित, सम्पा०–श्रीनरोत्तमदास स्वामी, एम. ए., विद्यामहोदधि। मूल्य–५.५०
३८. **राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग १**, सम्पा०–श्रीनरोत्तमदास स्वामी, एम.ए.। मूल्य–२.२५
३९ **राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग २**, सम्पा०–श्रीपुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम. ए., साहित्यरत्न। मूल्य–२.७५
४० **कवीन्द्र कल्पलता**, कवीन्द्राचार्य सरस्वतीविरचित, सम्पा०–श्रीमती रानी लक्ष्मी-कुमारी चूंडावत। मूल्य–२.००
४१. **जुगलविलास**, महाराज पृथ्वीसिंहकृत, सम्पा०–श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत। मूल्य–१.७५
४२. **भगतमाळ**, ब्रह्मदासजी चारण कृत, सम्पा०–श्री उदैराजजी उज्ज्वल। मूल्य–१.७५
४३. **राजस्थान पुरातत्व मन्दिरके हस्तलिखित ग्रंथोंकी सूची, भाग १।** मूल्य–७.५०
४४. **राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग २।** मूल्य–१२.००
४५ **मुंहता नैणसीरी ख्यात**, भाग १, मुंहता नैणसीकृत, सम्पा०–श्रीबद्रीप्रसाद साकरिया। मूल्य–८.५०
४६. ,, ,, ,, ,, २, ,, ,, ,, मूल्य–९.५०
४७. **रघुवरजसप्रकास**, किसनाजी आढाकृत, सम्पा०–श्री सीताराम लाळस। मूल्य–८.२५
४८. **राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग १** सं० पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय। मूल्य–४.५०
४९. **राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग २**—सम्पा०–श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया एम.ए., साहित्यरत्न। मूल्य–२.७५
५०. **वीरवांण**, ढाढी बादरकृत, सम्पा०–श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत। मूल्य–४.५०
५१. **स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण-ग्रन्थ-संग्रह-सूची**, सम्पा०–श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए. और श्रीलक्ष्मीनारायणगोस्वामी दीक्षित। मूल्य–६.२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५२. सूरजप्रकास, भाग १–कविया करणीदानजी-कृत, सम्पा०–श्री सीताराम लाळस। मूल्य–८.००
५३. " " २ " " " " मूल्य–६.५०
५४. " " ३ " " " " मूल्य–६.७५
५५. नेहतरंग, रावराजा बुधसिंहकृत—सम्पा०-श्रीरामप्रसाद दाधीच, एम.ए. मूल्य–४.००
५६. मत्स्यप्रदेश की हिन्दी-साहित्य को देन, प्रो. मोतीलाल गुप्त,एम.ए.,पी.एच.डी. मूल्य–७.००
५७. वसन्तविलास फागु, अज्ञातकर्तृक, सम्पा०–श्री एम. सी. मोदी। मूल्य–५.५०
५८. राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज–एस. आर. भाण्डारकर, हिन्दी-अनुवादक श्री ब्रह्मदत्त त्रिवेदी, एम. ए., साहित्याचार्य, काव्यतीर्थ मूल्य–३.००
५९. समदर्शी आचार्य हरिभद्र, श्रीसुखलालजी सिंघवी, मूल्य ३.००

प्रेसों में छप रहे ग्रंथ

संस्कृत

१. शकुनप्रदीप, लावण्यशर्मरचित, सम्पा०–पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय।
२. बालशिक्षाव्याकरण, ठक्कुर संग्रामसिंहरचित, सम्पा०–पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय।
३. नन्दोपाख्यान, अज्ञातकर्तृक, सम्पा०–डॉ० बी.जे. सांडेसरा।
४. चान्द्रव्याकरण, आचार्य चन्द्रगोमिविरचित, सम्पा०–श्री बी. डी. दोशी।
५. प्राकृतानन्द, रघुनाथकवि-रचित, सम्पा०–पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय।
६. कविकौस्तुभ, पं० रघुनाथरचित, सम्पा०–श्री एम. एन. गोरे।
७. एकाक्षर नाममाला—सम्पा०–मुनि श्रीरमणिकविजय।
८. नृत्यरत्नकोश, भाग २, महाराणा कुंभकर्णप्रणीत, सम्पा०–श्री आर. सी. पारिख और डॉ. प्रियबाला शाह।
९. इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध, सम्पा०–डॉ. दशरथ शर्मा।
१०. हमीरमहाकाव्यम्, नयचन्द्रसूरिकृत, सम्पा०–पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय।
११. स्थूलिभद्रकाकादि, सम्पा०–डॉ० आत्माराम जाजोदिया।
१२. वासवदत्ता, सुबन्धुकृत, सम्पा०–डॉ० जयदेव मोहनलाल शुक्ल।
१३. आगमरहस्य, स्व० पं० सरयूप्रसादजी द्विवेदी कृत, सम्पा०–प्रो० श्रीगङ्गाधर द्विवेदी।

राजस्थानी और हिन्दी

१४. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग ३, मुंहता नैणसीकृत, सम्पा०–श्रीबद्रीप्रसाद साकरिया।
१५. गोरा बादल पदमिणी चऊपई, कवि हेमरतनकृत सम्पा०–श्रीउदयसिंह भटनागर, एम.ए.
१६. राठौड़ांरी वंशावली, सम्पा०–पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय।
१७. सचित्र राजस्थानी भाषासाहित्यग्रन्थसूची, सम्पा०–पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय।
१८. मीरां-बृहत्-पदावली, स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण द्वारा संकलित, सम्पा०–पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय।
१९. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग ३, संपादक–श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी।
२०. रुक्मिणी-हरण, सांयांजी झूला कृत, सम्पा० श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम.ए.,सा.रत्न
२१. सन्त कवि रज्जब : सम्प्रदाय और साहित्य डॉ० व्रजलाल वर्मा।
२२. पश्चिमी भारत की यात्रा, कर्नल जेम्स टॉड, हिन्दी अनु० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम.ए.
२३. बुद्धिविलास, बखतराम शाहकृत, सम्पा०–श्रीपद्मधर पाठक, एम. ए.

अंग्रेजी

24. Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts Part I, R.O.RI. (Jodhpur Collection), ed., by Padamashree Jinvijaya Muni,. Puratattvacharya.
25. A List of Rare and Reference Books in the R.O.R.I., Jodhpur, compiled by P.D. Pathak, M.A.

विशेष– पुस्तक-विक्रेताओं को २५% कमीशन दिया जाता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org